Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारण पण्डित-मण्डले ... दम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसर... यूस 'मार्तण्ड पञ्चांग' वि... दक...

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पञ्चांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

33

चित्रापक्षीय निरयण, दृक्सिद्ध

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०५५, शक संवत १९२०

सन् १९९८-९९, जय हिन्द सं. ५१-५२

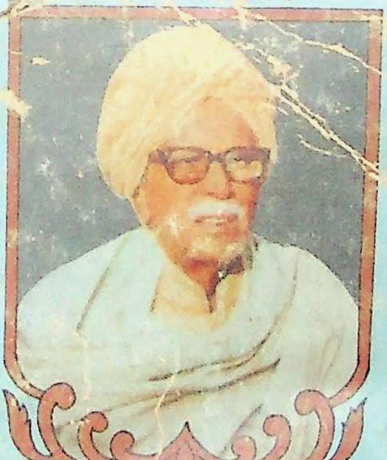

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

...वाली 7... ...प्त ... स्थापित संवत् १९८९

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य ३२.५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिलान सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

(लेखक:-प्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य)

विवाह-सम्बन्ध के निर्णय के लिए लड़के और लड़की के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। ''ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'' पुस्तक इस अभाव की पूरी तरह पूर्ति करती है । इस पुस्तक में दिए अनेक विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए :-

(१) लड़का -लड़की के नक्षत्र चरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान सारणी ३६ बड़े पृष्ठों पर फैली है , जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके अपवाद एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं ।

(२) वर्ण, गण, नाड़ी आदि सभी दोषों के परिहार -वाक्यों का सोपपत्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका वैज्ञानिक, मौलिक विश्लेषण तथा ''नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'' और ''एक -नक्षत्र-जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'' आदि अनेक निराधार परिहार वाक्यों का सप्रमाण निराकरण ।

(३) मंगलीक दोष (कुजदोष) का सांगोपांग विवेचन।

(४) मंगलीदोष के अनेक परिहार वाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं मंगली दोष के अनेक परिहार-वाक्यों का विश्लेषण - पूर्वक सप्रमाण खण्डन, मण्डन।

(५) मंगली दोष का प्रतिशत बल बतलाने वाली अद्भुत मौलिक सारणी, जिसकी सहायता से लड़का-लड़की के मंगलीदोष का बल सूक्ष्मतापूर्वक बिना गणित किए जाना जा सकता है।

(६) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां जो लेखक के विस्तृत गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं ।

(७) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत-मतान्तरों का विश्लेषण।

(८) सन् १९५० ई. से सन् २००० ई. तक (५१ वर्षों में) पैदा हुए वर , कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पंचांग की सहायता के इस पुस्तक में दिए गए अनेक कोष्ठकों द्वारा १०-१५मिनटों में ही स्वयं जानकर दैवज्ञ वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञान वृद्धि करेंगे। ''क्या नाड़ी दोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है?'',''वर कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिष शास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?'' — इस प्रकार की अनेक मिलान-सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्र -प्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है ।

मंगलीदोष का यथार्थरूप में निर्णय करने के लिए ऐसी सारणियां दी गई हैं;जिनकी मदद से मिलान पूरी तरह वैज्ञानिक एवं शुद्धरूप में बिना किसी श्रम के मिनटों में किया जा सकता है । स्पष्टता के लिए अनेकों उदाहरण दिए गए हैं ।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी जो मिलान के लिए अपेक्षित है । इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा, कि मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं, और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है ।

पुस्तक लगभग छप चुकी है । दिसम्बर के अन्त में हम इसेOut (आऊट) करेंगे । ग्राहकों से अब हम इसका पूरा मूल्य ३२५ रु.(डाकव्यय सहित) आमन्त्रित करते हैं । यह पूरी धनराशि जनवरी '९९ के प्रारम्भ में ही हमें मनिआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर ही भेजें। ग्राहकों को पुस्तकें जन '९९ से भेजना हम प्रारम्भ करेंगे । पंचकूला में पोस्टल सुविधाएं सीमित हैं; प्रतिदिन एक व्यक्ति से अधिक से अधिक २०-२५रजिस्टर्ड पार्सल ही पोस्ट आफिस द्वारा स्वीकार किए जाते हैं । अत: फरवरी' ९९ के अंत तक ही हम सभी ग्राहकों को पुस्तकें भेज पाएंगे। इसलिए मनीआर्डर भेजने के बाद फरवरी के अन्त तक कृपया इस बारे में हमसे कोई पूछताछ न करें। फरवरी के अंत तक यदि किसी को पुस्तक प्राप्त न हुई हो, तब उसे हमें अवश्य पत्र द्वारा इसकी सूचना देनी चाहिए। नए ग्राहक भी मनीआर्डर द्वारा पूरा मूल्य भेजकर इसे प्राप्त कर सकते हैं ।

जिन ग्राहकों का एडवांस हमें पहिले ही प्राप्त है, उन्हें हम पत्र द्वारा सूचना दे रहे हैं।

मूल्य ३०० रु. + डाक व्यय २५ रु.

प्रो. प्रियव्रत शर्मा
5५ ६(अभिजित्)P.O. पंचकूला-134 109
(हरियाणा)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री शंकरः शं करोतु। हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु॥ पंचांग प्र...

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

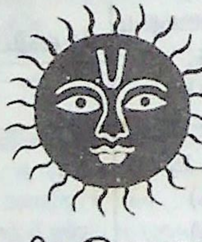

चित्रापक्षीय निरयण, दृक्सिद्ध

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०५५, शक संवत् १९२०

सन् १९९८-९९, जय हिन्द सं० ५१-५२

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शनि

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A), F.R.A.S (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 71 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 दूरभाष: 5731546, 5721403, 5738188

मूल्य
३२.५०

सर्वाधिकार-मै० मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वाधिकार – M/S मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित है।

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.- अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (वाण)।
अं.- अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.- आवश्यकता में।
उ.- उपगन्त, उदित, उत्तर।
उ. गो. - उत्तर गोल।
क. - करण, कर्क, कला।
कृ. - कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रा. सा. - क्रान्तिसाम्य (महापात)
गोधू. - गोधूलि (लग्न)
घ. - घड़ी।
घं. - घण्टा।
चो. - चोर (वाण)
ति. - तिथि ।
द. - दक्षिण।
द. गो. - दक्षिण गोल।
दा. - दान, पूजन।
दि. - दिन।
दि. मा. - दिनमान ।
दि. ल. - दिन का लग्न।
न. - नक्षत्र।
निं. - निम्बार्कों के लिए।
ने. - नेप्च्यून।
नृ. - नृप (वाण)।
प. - पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प्र. - प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा - प्रारम्भ।
भ. - भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
भा. - भाद्रपद।
मा. - मार्गी।
मि. - मिनट, मिथुन।
मृ. - मृगशिरा, मृत्यु (वाण)।
या. - यावत् (=तक)।
रा. - रात्रि, राशि।
रो. - रोग (वाण), रोहिणी।
ल. - लग्न।
व. - वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा. - वार
वि. - विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु. - विवाहमुहूर्त।
वै. - वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।
व्र. स. - व्रत सबके लिए।
शु. - शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
श. - भारत सरकार द्वारा संचालित शक संवत्, तारीख-मास।
स. - समाप्त।
सं. - संक्रान्ति, संवत्।
सां. का. - साम्पातिक काल।
सा. - सायन।
स्मा. - स्मार्तों के लिए।
ल. - लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित Computer Program से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चंन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एंव सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. ८२°/३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नो का समाप्तिकाल बतलाती है।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षयतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भोग नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संक्षिप्त विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
इनर टाईटिल	१
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द एवं आवश्यक निर्देशन	२
विषय सूची	३
श्रद्धेय स्व. गुरुवरों को श्रद्धांजलियां	४
प्रमुख -प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, अवकाश-मेले, पंचक-गण्डमूल, कुम्भपर्व	५-१०
ग्रहण विवरण	११-१३
ग्रहण में विधिनिषेध	१४-१६
शनि की साढ़ेसाती, ढैया	१७-१८
आकाशी कौंसिल (सं. २०५५)	१९-२८
सं. २०५५ का व्यापार-विमर्श, यन्त्र,तन्त्र,मन्त्र आदि	२९-४७
शुक्रास्तविवाद	४८-४९
दिल्ली का पंचांग	५०
इष्टकालिक सूर्यसाधान	५१-५३
समस्त उ.भा. की लग्न सारणियां	५४-५८
दशा प्रवेश का सूक्ष्मकाल	५९-६२
क्या ग्रहों का हम पर प्रभाव पड़ता है ?	६३-६४
ग्रहों के अस्तोदय और उनकी दिशाएं	६५-६६
सूक्ष्म सूर्योदयास्त साधन की प्रक्रियाएं	६७-७८
समस्याएं और समाधान	७९-८३
प्रसूति लग्न विचार, बालारिष्ट, नवग्रह व्रत,	८४-९५
१२ राशियों का मासिक फल (सं. २०५५)	९६-९९
वर्षराजादि फल, संदिग्ध, व्रतपर्व व्यवस्था(सं. २०५५)	१००-१०६
तिथ्यादि २४ पक्ष (सं. २०५५)	१०७-१३०
घंटा-मिनटात्मक तिथ्यादि (सं. २०५५)	१३१-१३८
चन्द्र का नक्षत्रचरणों में प्रवेश (सं. २०५५)	१३९-१४३
दैनिक ग्रहस्पष्ट (सं. २०५५)	१४४-१५८
यूरेनस आदि के भोगांश, ग्रहों के क्रान्तिशर-नक्षत्र राशिचरण प्रवेश आदि (सं. २०५५)	१५९-१६४
चन्द्रोदयास्त, चन्द्रदर्शन(सं. २०५५)	१६५-१६६
दैनिक लग्नसारणी	१६७-१७२
लग्नपरिवर्तन पद्धति, विश्व के देशोंके स्टैं. टा.	१७३-१७८
प्राचीन पद्धति से लग्नदशम साधन	१७९-१८२
सूक्ष्मलग्न दशमसाधन प्रकार	१८३-१८८
दशान्तदर्शी, सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारणी	१८९-१९१
ग्रहशील चक्र, आवश्यक मुहूर्त,	१९२-१९४
मेलापकसारणी, अष्टकूटपरिहार-लता आदि दशदोष चक्र,	१९५-२०८
दिक्शूल, योगिनीवास,चतुर्घटिका, घातचन्द्रवारादि	२०९-२११
शद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०५५)	२१२-२१५
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. २०५५)	२१६-२१७
अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५)	२१८-२१९
उपनयन आदि मुहूर्त्त	२२०-२२२
सर्वार्थसिद्धि आदि योग	२२३-२२४
विज्ञापन	२२५-२२८

अनन्त श्री विभूषित श्री
कांचीकामकोटिपीठाधिपति जगद्गुरु
श्री शंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद
(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य्य-श्रीमच्छंकर-भगवत्पद-प्रतिष्ठित-श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती-श्रीपादादेशानुसारेण श्रीमज्जयेन्द्रसरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिवआप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् "अधुना श्री प्रियव्रतशर्म-श्रीशक्ति धरशर्म-श्रीमदिन्दु शेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणित-रीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणित पद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्र-सम्मतैकमात्र- दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रतपर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्- इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ शक्तिधरः शर्मा ज्योतिषगणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्तण्डपचांगमेतत् स्वर्णजयन्तीमहोत्सवमनुभवत् अशेषास्तिक लोकोपकारकं सद् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् — नारायणस्मृतिः

अनल चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

इस वर्ष के विशेष ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं रोचक नए विषय

१. ग्रहण में विधि -निषेध (ग्रहण में क्या, कब, कैसे करें और क्या न करें।) १४-१६

२. शुक्रास्त विवाद (सन् १९९७ में हुए शुक्रास्त की तिथि में अन्तर का शास्त्रीय विश्लेषण) ४८-४९

३. दिल्ली का पंचांग ५०

४. इष्टकालिक सूर्य साधन की सरलतम विधि (बिना पंचांग के एक मिनट में सूर्य स्पष्ट करें।) ५१-५३

५. समस्त उ.भा. के नगरों की लग्न सारणियां (आधे आधे अक्षांश के अन्तर पर) ५४-५८

६. दशा के प्रारम्भ का सूक्ष्मकाल कैसे जानें ? ५९-६२

७. क्या ग्रहों का हम पर वस्तुतः प्रभाव पड़ता है ? (एक वैज्ञानिक विश्लेषण) ६३-६४

८. ग्रहों का अस्तोदय और इसकी दिशाएं, ६५-६६

९. सूक्ष्म सूर्योदयास्त साधन की गणित प्रक्रियाएं (सैकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल जानिए) ६७-७८

१०. अष्टकूट दोषों के परिहार १९५-१९८

११. चार पृष्ठों पर नई संशोधित विस्तृत मेलापक सारणी १९९-२०२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुरभारती के प्रचार-प्रसार के लिए निःशेषेण अर्पितात्मा, शास्त्रनिष्ठ पाण्डित्य, त्याग, तप एवं चारित्र्य की प्रतिमूर्ति, विग्रहधारी गुरुत्व, श्रद्धा के अतुल संस्थान,' श्री सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय, खन्ना (लुधियाना)' के भूतपूर्व प्रधानाचार्य एवं आजीवन संरक्षक, परमपूज्य गुरुवर्य स्व. आचार्य श्री विश्वनाथ शास्त्री जी को

श्रद्धाञ्जलि

संस्कृत भाषा साहित्य के प्रति ऐसी गभीर निष्ठा कि इसके अतिरिक्त जीवन का कोई और उद्देश्य उनकी चर्या में झलकता भी नहीं था। आजकल के भौतिकवादी वातावरण में इस दिव्य भाषा को प्रचरित एवं बद्धमूल करने के उपायों के चिन्तन में ही उनका पल-पल बीता। इस गीर्वाणवाणी की ज्ञानमयी साहित्यसुधा और प्राचीन आर्य संस्कृति-धर्म की पावनधारा को जन-जन की अन्तरात्मा में पूरी तरह उंडेलने के लिए उनकी व्याकुलता सचमुच अमेय थी। व्याकरण, साहित्य,दर्शन आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके श्री चरणों में सश्रद्ध बैठने वाले उनके सहस्रों अन्तेवासी उनका सद्वृत्त स्वतः आत्मसात् किए बिना नहीं रह पाते थे। उनके अतिलोक प्रभावशाली व्यक्तित्व के परिवेश में आने वाला तद्रूप ही बन जाने के लिए प्रयत्नवान् बन जाता था। शिष्यों के प्रति उनकी ऐसी पुत्रनिर्विशेष आत्मीयता थी, जो उन्हें उनसे समवेत बना डालने की अद्‌भुत क्षमता रखती थी। शिक्षा सम्पन्न कर गृहस्थ में लीन उनके शिष्य अपने गार्हस्थ्य, सांसारिक दुःखों का प्रतीकार उनके तत्त्वदर्शक ज्ञानोपदेश में ही पाते थे। भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों को संस्कृत बनाने वाली ज्ञान, सुवृत्त और स्नेह की वह परमपावन त्रिवेणी उस अनन्त अतल सागर में जा मिली है, जो उसका चरम गन्तव्य था। इस अपरिहार्य घटना पर शोक करना दार्शनिक दृष्टि से विहित तो नहीं है, तथापि हम अज्ञानी सांसारिकों के लिए उनके भौतिक अस्तित्व का यह अभाव वस्तुतः असह्य है। बस, अब तो उस जीवन्मुक्त ब्रह्मलीन आत्मा के निरन्त निर्वाण के लिए हम प्रभु से अन्तरात्मना प्रार्थना करते हैं और उस नित्य आशीर्वचनशील आत्मा से अपने लिए भी यह आशीः चाहते हैं-

संस्कृतं कर्णयो र्वाचि संस्कृतावात्मनः रुचिः ।
अस्माकं सततं स्वान्ते विश्वनाथो विराजताम्

शोकाकुल शिष्यः-

सत्यव्रत - प्रियव्रत-शक्तिधर-इन्दुशेखर

सौम्यता, गाम्भीर्य और स्वाभिमान के समन्वित रूप, अलंकार,व्याकरण, दर्शन आदि शास्त्रों के पारदृश्वा 'महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर' के भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष, वनस्थली विद्यापीठ के वेदविभाग के प्रधानाचार्य ,परमश्रद्धास्पद गुरुवर्य सुगृहीतनामधेय स्व. श्री जगदीश शर्मा जी साहित्याचार्य को

श्रद्धाञ्जलि

ज्योतिषाचार्य में प्रवेश पाने के उद्देश्य से जब हम दोनों भाई राजस्थान की मूर्धन्य संस्कृत संस्था ''महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर'' पहुँचे तो वहां के प्रिंसिपल पद्मभूषण श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी ने हमें परामर्श दिया कि 'भाषा, शैली और अभिव्यक्ति में परिष्कार लाने के लिए साहित्य का परिशीलन अनुपेक्ष्य है, अतः ज्योतिषाचार्य से पहिले साहित्याचार्य परीक्षा आप उत्तीर्ण करें।' उनके इस परामर्श को शिरोधार्य करने के परिणामस्वरूप ही हमें पूज्य गुरुवर्य पं. जगदीश शर्मा जी जैसे नितान्त विरल वैदुष्य वाले महापण्डित के शिष्यत्व का गौरव मिला। साहित्यशास्त्र के काव्यप्रकाश,ध्वन्यालोक, रसगङ्गाधर आदि जटिल अलंकार ग्रन्थों पर तो उनका विस्मयावह आधिपत्य था ही, व्याकरण, दर्शन,न्याय आदि ऐसे अन्य अनेक शास्त्रीय विषयों के दुरूह तत्त्व भी उन्हें करधृतामलकवत् सुस्पष्ट थे, जिन्हें साहित्य विषय को पढ़ाते हुए वे प्रसंगवश अपने शिष्यों को सुविशद किए बिना आगे नहीं बढ़ते थे। संस्कृत भाषा पर उनका अद्‌भुत वाचिक और लैखिक अधिकार था। साहित्य के लगभग सभी मूलग्रन्थ उन्हें आमूलचूड कण्ठाग्र थे। अध्यापन में उनकी आत्मविस्मारक तल्लीनता सचमुच आदर्श थी। पार्श्व में बैठे उनसे शास्त्रचर्चा करते जिज्ञासु लोगों को ऐसे आभास होता था जैसे कि वे ज्ञान के अतल रत्नाकर के तट पर बैठे हैं। वे वस्तुतः संस्कृत साहित्य के मूर्तिमान् विश्वकोष थे। उनके विलय से राजस्थान ही नहीं, अपितु भारत की परम्परीण प्रौढ़ वैदुष्य शृङ्खला की एक सशक्त कड़ी टूट गई है , जिससे हम, उनके सैंकड़ों शिष्यों की अन्तरात्मा को परम वेदना है।

उनसे प्राप्त ज्ञान से प्रदीप्त जीवन पथ पर चलते हुए हम उनकी दिवंगत प्रबुद्ध आत्मा की शाश्वत शान्ति के लिए प्रभु से अहर्निश प्रार्थना करते रहेंगे-

शोकविह्वल शिष्यः -

सत्यव्रत-प्रियव्रत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९८ ई. से १७मार्च १९९९ ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार
माघस्नान प्रारम्भ	१२जन'.९८	चं.
लोहड़ी (पंजाब)	१३ "	मं.
मकर संक्रान्ति	१४ "	बु.
संकट चतुर्थी	१६ "	शु.
मौनी अमावस	२८ '	बु.
तिल चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी	२१ "	श.
बसन्त पंचमी	१ फर.	र.
रथ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी	३ "	मं.
श्री भीष्माष्टमी	४ "	बु.
भीष्म द्वादशी	७ "	श.
माघस्नान समाप्त	११ "	बु.
हरिद्वार कुम्भ पहिला शाही स्नान	२५ "	बु.
श्री महाशिवरात्रि	२५ "	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	५ मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	९ "	चं.
होलिका दहन,	१२ "	गु.
होलाष्टक समाप्त	१३ "	शु.
वारुणी पर्व	२६ "	गु.
शनैश्चरी अमा	२८ "	श.
हरिद्वार कुम्भ दूसरा शाही स्नान	२८ "	श.
सं. २०५४ वि. पूर्ण	२८ "	श.
नवरात्र प्रारम्भ	२८ "	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	३० "	चं.
श्री लक्ष्मी पञ्चमी	१ अप्रै.	बु.
स्कन्दषष्ठी	२ "	गु.
श्री दुर्गाष्टमी	४ "	श.
श्री रामनवमी, नवरात्र समाप्त	५ "	र.
अनङ्ग त्रयोदशी	९ "	गु.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	११ "	श.
वैशाखी (पं.)	१३ "	चं.
हरिद्वार कुम्भ प्रमुख स्नान	१४ "	मं.
श्री परशुराम जयन्ती	२८ "	मं.
अक्षय तृतीया	२८ "	मं.
श्री गंगा जन्म	२ मई	श.
श्री जानकी जयन्ती	४ मई	च.
बुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	११ "	चं.
वैशाख स्नान समाप्त	११ "	चं.

व्रतपर्व	तारीख	वार
भद्रकाली एकादशी (पं.)	२२ मई'९८	शु.
सोमवती अमावस	२५ "	चं.
वट सावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	२५ "	चं.
भावुका अमा.	२५ मई	चं.
रम्भा तृतीया	२८ "	गु.
श्री गंगा दशहरा	४ जून	गु.
निर्जला एकादशी	५ "	शु.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	९ "	मं.
रथयात्रा (पुरी)	२६ "	शु.
कुमार षष्ठी	२९ "	चं.
विवस्वत् सप्तमी	३० "	मं.
चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ	९ जुला.	गु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	९ "	गु.
हरियाली अमावस	२३ "	गु.
मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	२६ "	र.
नाग-पञ्चमी	२८ "	मं.
श्री दुर्गाष्टमी	३१ "	शु.
यजु- उपाकर्म	७ अग.	शु.
ऋग्वेदियों का उपाकर्म	८ "	र.
रक्षा बन्धन (राखी)	८ "	श.
संकष्ट-चतुर्थी	११ "	मं.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	१४ "	शु.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	१५ "	श.
श्री गुग्गा नवमी	१६ "	र.
कुशोत्पाटिनी, पिठोरी अमा.	२१ "	शु.
शनैश्चरी अमा.	२२ "	श.
सूर्य ग्रहण	२२ "	श
हरितालिका तृतीया	२५ "	मं.
कलंक चतुर्थी, वरद चतुर्थी	२५ "	मं.
सिद्धि विनायक व्रत	२६ "	बु.
ऋषि पञ्चमी	२७ "	गु.
सूर्य षष्ठी	२८ "	शु.
श्री राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी	३० "	र.
श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	३० "	र.
श्रीचन्द नवमी	३१ "	चं.
श्री वामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी	३ सितं. '९८	गु.

व्रतपर्व	तारीख	वार
अनन्त चतुर्दशी	५ सित. '९८	श.
श्राद्ध प्रारम्भ	७ "	चं.
श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त	१२ "	श.
श्राद्ध समाप्त	२० "	र.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	२१ "	चं.
उपाङ्ग ललिता व्रत	२५ "	शु.
श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	२९ "	मं.
महानवमी, नवरात्र समाप्त	३० "	बु.
विजया दशमी (दशहरा)	१ अक्तू.	गु.
भरत मिलाप	२ "	शु.
शरत्पूर्णिमा, कोजागरव्रत	५ "	चं.
कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	५ "	चं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	५ "	चं.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	८ "	गु.
अहोई अष्टमी (पं.)	१२ "	चं.
गोवत्स द्वादशी	१६ "	शु.
धन त्रयोदशी	१७ "	श.
नरक चतुर्दशी, श्री हनुमान् ज०	१९ "	चं.
दीपावली	१९ "	चं.
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	२१ "	बु.
यमद्वितीया (भाई दूज)	२२ "	गु.
श्री विश्वकर्मा पूजा	२२ "	गु.
गोपाष्टमी	२८ "	बु.
अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	२९ "	गु.
भीष्मपञ्चक प्रारम्भ	३१ "	श.
तुलसी विवाह	१ नवं.	र.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	२ "	चं.
भीष्मपञ्चक समाप्त, कार्त्तिक स्नान समाप्त, कार्त्तिक- पूर्णिमा श्री गुरुनानक जयन्ती	४ "	बु.
श्री कालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	११ "	बु.
गुहषष्ठी, चम्पाषष्ठी	२५ "	बु.
मित्र सप्तमी	२६ "	गु.
श्री गीता जयन्ती	३० "	चं.
श्री दत्त जयन्ती	३ दिसं.	गु.
इंग्लिश नववर्ष सन् १९९९ ई. प्रारंभ	१ जन. '९९	शु.
माघस्नान प्रारम्भ	२ "	श.

व्रतपर्व	तारीख	वार
संकष्ट चतुर्थी	५जन. '९९	मं.
लोहड़ी (पं.)	१३ "	बु.
मकर संक्रान्ति	१४ "	गु.
मौनी अमावस	१७ "	र.
गौरी तृतीया(गोंत्री)	२० "	बु.
तिलचतुर्थी, कुन्दचतुर्थी	२१ "	गु.
बसंत पंचमी	२२ "	शु.
रथसप्तमी, आरोग्य सप्तमी	२४ "	र.
भीष्माष्टमी	२५ "	चं.
भीष्मद्वादशी	२८ "	गु.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	३१ "	र.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	१४फर.	र.
होलाष्टक प्रारंभ	२२ "	चं.
गोविन्द द्वादशी	२७ "	श.
होलिका दहन	१ मार्च	चं.
होलाष्टक समाप्त	२ "	मं.
संवत् २०५५ वि. पूर्ण	१७ "	बु.

कुम्भ महापर्व, हरिद्वार

इस वर्ष सं. २०५५ वि. में (१४ अप्रैल १९९८ ई. के दिन) हरिद्वार में कुम्भ महापर्व होगा। । इसकी सभी स्नान तिथियों का विस्तृत विवरण तथा अन्य आवश्यक जानकारी आगे पृ० पर दी गई है । इस महापर्व के तीन मुख्य शाही स्नानों की तिथियां इस प्रकार होंगी;-

(१) फाल्गुन कृ. १४ बुध, र.. २०५४ वि., (शिवरात्रि) (२५ फर.९८)

(२) चैत्र कृ.३०, शनि, सं. २०५४ वि., (२८मार्च,९८)

(३) वैशाख कृ.२,चं. सं. २०५५ वि.,प्रमुख स्नान (मेष संक्रान्ति) (१३/१४अप्रै.,९८)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९८ ई. से १७ मार्च १९९९ ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् १९९८ ई.)

पौष शुक्ल	८ जन.
माघ कृष्ण	२४ ".
माघ शुक्ल	७ फरवरी
फाल्गुन कृष्ण	२३ फर.
फाल्गुन शुक्ल	८ मार्च
चैत्र कृष्ण	२४ मार्च
चैत्र शुक्ल	७ अप्रैल
वैशाख कृष्ण(स्मा.)	२२ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	७ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	२२ "
ज्येष्ठ शुक्ल	५ जून
आषाढ़ कृष्ण	२० जून
आषाढ़ शुक्ल	५ जुला.
श्रावण कृष्ण	१९ जुला.
श्रावण शुक्ल	४ अग.
भाद्र कृष्ण	१८ अग.
भाद्र शुक्ल	२ सितं.
आश्वि. कृष्ण	१६ सितं
आश्विन शुक्ल	२ अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	१६ अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	३१ "
मार्गशीर्ष कृष्ण	१४ नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	३० नवं.
पौष कृष्ण	१४ दिसं.
पौष शुक्ल	२९ "
माघ कृष्ण	१३ जन. '९९
माघ शुक्ल (स्मा.)	२७ "
फाल्गुन कृष्ण	१२ फर.
फाल्गुन शुक्ल	२६ फर.
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	१३ मार्च

(स्मा.=स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "(स्मा.)" नहीं लिखा है वह व्रततिथि स्मार्त्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् १९९८ ई.)

माघ कृष्ण	१३ जन.
माघ शुक्ल	२९ "
फाल्गुन कृष्ण	१२ फर.
फाल्गुन शुक्ल	२७ फर.
चैत्र कृष्ण	१४ मार्च
चैत्र शुक्ल	२९ "
वैशाख कृष्ण	१२ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	२७ "
ज्येष्ठ कृष्ण	१२ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	२६ "
आषाढ कृष्ण	११ जून
आषाढ़ शुक्ल	२५ जून.
श्रावण कृष्ण	१० जुला.
श्रावण शुक्ल	२४ "
भाद्रपद कृष्ण	९ अग.
भाद्रपद शुक्ल	२३ "
आश्विन कृष्ण	७ सितं.
आश्विन शुक्ल	२१ "
कार्तिक कृष्ण	६ अक्तू.
कार्तिक शुक्ल.	२१ "
मार्ग कृष्ण	५ नवं
मार्गशीर्ष शुक्ल	२० "
पौष कृष्ण	४ दिसं.
पौष शुक्ल	१९ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

माघ कृष्ण	३ जन.
माघ शुक्ल	१८ जन.
फाल्गुन कृष्ण	१ फर.
फाल्गुन शुक्ल	१७ फर.
चैत्र कृष्ण	३ मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् १९९८ ई.)

पौष	१२ जन.
माघ	१० फर.
फाल्गुन	१२ मार्च
चैत्र	११ अप्रै.
वैशाख	११ मई
ज्येष्ठ	९ जून
आषाढ	९ जुला.
श्रावण	७ अग.
भाद्रपद	६ सितं.
आश्विन	५ अक्तू.
कार्तिक	३ नवं.
मार्गशीर्ष	३ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

पौष	१ जन.
माघ	३१ जन.
फाल्गुन	१ मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)

(सन् १९९८ ई.)

माघ	२८ जन.
फाल्गुन	२६ फर.
चैत्र.(शनैश्चरी)	२८ मार्च
वैशाख	२६ अप्रै.
ज्येष्ठ (सोमवती)	२५ मई
आषाढ़	२४ जून
श्रावण	२३ जुला.
भाद्रपद (शनैश्चरी)	२२ अग.
आश्विन	२० सितं.
कार्तिक (भौम)	२० अक्तू.
मार्गशीर्ष	१९ नवं.
पौष	१८ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

माघ	१७ जन.
फाल्गुन (भौमवती)	१६ फर.
चैत्र	१७मार्च

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् १९९८ ई.)

माघ	१६ जन.
फाल्गुन	१५ फर.
चैत्र	१६ मार्च
वैशाख	१५ अप्रै.
ज्येष्ठ	१५ मई
आषाढ	१३ जून
श्रावण	१२ जुला.
भाद्रपद	११ अग.
आश्विन	९ सितं.
कार्तिक	८ अक्तू.
मार्गशीर्ष	७ नवं.
पौष	६ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

माघ	५ जन.
फाल्गुन	४ फर.
चैत्र	५ मार्च

संक्रान्तियां

(सन् १९९८ ई.)

माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च
वैशाख	१३ अप्रै.
ज्येष्ठ	१४ मई
आषाढ	१५ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१६ अग.
आश्विन	१६ सितं.
कार्तिक	१७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	१६ नवं.
पौष	१५ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च

दशावतार जयन्तियाँ

(सन् १९९८ ई.)

श्री मत्स्य जयन्ती	३० मार्च
श्री रामनवमी	५ अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	२८ अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	९ मई
श्री कूर्म जयन्ती	११ मई
श्री बुद्ध जयन्ती	११ मई
श्री कल्कि जयन्ती	२९ जुला.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	१४ अग.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	१५ अग.
श्री वराह जयन्ती	२४ अग.
श्री वामन जयन्ती	३ सितं.

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् १९९८ ई.)

पूर्णिमा	६ सितं.
प्रतिपदा	७ सितं.
द्वितीया	७ सितं.
तृतीया	८ सितं.
चतुर्थी	९ सितं.
पंचमी	१० सितं.
षष्ठी	११ सितं.
सेसमी	१२ सितं.
अष्टमी	१३ सितं.
नवमी	१४ सितं.
दशमी	१५ सितं.
एकादशी	१६ सितं.
द्वादशी	१७ सितं.
त्रयोदशी	१८ सितं.
चतुर्दशी	२० सितं.
अमावस	२० सितं.
सर्वपितृ	२० सितं.

प्रदोष व्रत

(सन् १९९८ ई.)

पौष शुक्ल (शनि)	१० जन.
माघ कृष्ण	२५ जन.
माघ शुक्ल	८ फर.
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	२४ फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	१० मार्च
चैत्र कृष्ण	२५ मार्च
चैत्र शुक्ल	९ अप्रै.
वैशाख कृष्ण	२४ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	८ मई
ज्येष्ठ कृष्ण (शनि)	२३ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	७ जून
आषाढ कृष्ण	२१ जून
आषाढ शुक्ल (भौम)	७ जुला.
श्रावण कृष्ण (भौम)	२१ जुला.
श्रावण शुक्ल	५ अग.
भाद्रपद कृष्ण	१९ अग.
भाद्रपद शुक्ल	४ सितं.
आश्विन कृष्ण	१८ सितं.
आश्विन शुक्ल (शनि)	३ अक्तू
कार्तिक कृष्ण (शनि)	१७ अक्तू
कार्तिक शुक्ल (सोम)	२ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (सोम)	१६ नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम)	१ दिसं.
पौष कृष्ण	१६ दिसं.
पौष शुक्ल	३० दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

माघ कृष्ण	१५ जन.
माघ शुक्ल	२९ जन.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	१३ फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	२७ फर.
चैत्र कृष्ण (सोम)	१५ मार्च

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९८ ई. से १७ मार्च १९९९ ई. तक)

सिक्ख पर्व अवतार दिन

(सन् १९९८ ई.)

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	५ जन.
श्री गुरु हरराय जी	९ फर.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	१७ अप्रै.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	१९ अप्रै.
श्री गुरु अंगददेव जी	२७ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	१० मई
श्री गुरु हरगोविन्द जी	११ जून
श्री गुरु हरकिशन जी	१७ जुला.
श्री गुरु रामदास जी	७ अक्तू.
श्री गुरु नानकदेव जी	४ नवं.
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	२५दिसं.
श्री गुरु हरराय जी	२९ जन.९९ ई.

गुरयायी मिली

(१९९८ ई.)

श्री गुरु हरराय जी	२६ मार्च
श्री गुरु अमरदास जी	२८ मार्च
श्री गुरु तेग बहादुर जी	१० अप्रै.
श्री गुरु हरगोविन्द जी	१९ मई
श्री गुरु अर्जुन देव जी	२४ अग.
श्री गुरु रामदास जी	४ सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	१० सितं.
श्री गुरु हरकिशन जी	१३ अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	२२नवं.
श्री गुरु हरराय जी	१५ मार्च '९९ई.

जोती जोत समाए

(सन् १९९८ ई.)

श्री गुरु अंगद देव जी	३१ मार्च
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	१ अप्रै.
श्री गुरु हरकिशन जी	१० अप्रै.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	२९ मई
श्री गुरु रामदास जी	२५ अग.
श्री गुरु अमरदास जी	६ सितं.
श्री गुरु नानकदेव जी	१५ सितं.
श्री गुरु हरराय जी	१३ अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	२५अक्तू.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	२४ नवं.

जैन व्रत-पर्व

(सन् १९९८ ई.)

मेरुत्रयोदशी	२६ जन.
मर्यादा महोत्सव	३फरवरी
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	५अप्रै.
श्री जैन महावीर जयन्ती	९अप्रैल
श्री महावीर केवल ज्ञान	६मई
श्री महावीर च्यवन	३०जून
तेरापन्थ स्थापना	९ जुला.
चातुर्मास्य प्रारंभ	९ जुला.
श्री जयाचार्य निर्वाण	१९ अग.
पर्युषण पर्व प्रारंभ	२० अग.
संवत्सरी महापर्व	२७अग.
श्री कालू निर्वाण	२८अग.
आचार्य श्री तुलसीपट्टारोहण	३१अग.
आचार्य भिक्षु निर्वाण	४ सितं.
श्री महावीर निर्वाण	२० अक्तू.
आचार्य श्री तुलसी जन्म	२२ अक्तू.
ज्ञान पंचमी	२५ अक्तू.
चातुर्मास्य समाप्त	४ नवं.
श्री महावीर दीक्षा	१३ नवं.
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	८ दिसं.
जन्म श्री पार्श्वनाथ	१३ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

श्री मेरुत्रयोदशी	१५ जन.
मर्यादा महोत्सव	२४ जन.

क्रिश्चियन त्योहार

(सन् १९९८ ई.)

नयासाल प्रारंभ	१ जन.
गुड फ्राईडे	१० अप्रै.
ईस्टर सण्डे	१२ अप्रै.
क्रिस्मस डे	२५ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

नया साल प्रारंभ	१ जन.

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् १९९८ ई.)

माघ	२६ जन.
फाल्गुन	२५ फर.
चैत्र	२६ मार्च
वैशाख	२४ अप्रै.
ज्येष्ठ	२४ मई
आषाढ	२२ जून
श्रावण	२१ जुला.
भाद्रपद	२० अग.
आश्विन	१८ सितं.
कार्तिक	१८ अक्तू.
मार्गशीर्ष	१७ नवं.
पौष	१७ दिस

(सन् १९९९ ई.)

माघ	१५ जन.
फाल्गुन	१४ फर.
चैत्र	१६मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

सन् १९९८ ई

माघ	२० जन.
फाल्गुन	१९ फर.
चैत्र	२१ मार्च
वैशाख	१९ अप्रै.
ज्येष्ठ	१९ मई
आषाढ	१७ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१४ अग.
आश्विन	१३ सितं.
कार्तिक	१२ अक्तूबर
मार्गशीर्ष	११ नवं.
पौष	१० दिसं.

सन् १९९९ ई.

माघ	९ जन.
फाल्गुन	८ फर.
चैत्र	१० मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् १९९८ ई.)

श्री रामानन्दाचार्य	२० जन.
स्वामी विवेकानन्द जी	२० जन.
नेताजी सुभाष	२३ जन.
लाला लाजपतराय	२८ जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	२९ जन.
श्री गुरु रविदास जी	११ फरवरी
महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५ फर.
श्री रामकृष्ण परमहंस	२८ फर.
श्री चैतन्य महाप्रभु	१३ मार्च
डा. अम्बेडकर	१४ अप्रै.
श्री बल्लभाचार्य	२३ अप्रै.
श्री छत्रपति शिवाजी	२८ अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य	३० अप्रै.
श्री रामानुजाचार्य	१ मई
श्री रवीन्द्रनाथ टैगौर	९ मई
श्री महाराणा प्रताप	२८ मई
लो.मा.बाल गंगाधर तिलक	२३ जुला.
गोस्वा. श्रीतुलसीदास	३० जुला.
स्वामी शिवानन्द	८ सितं.
श्री अग्रसेन जयन्ती	२१ सितं.
श्री माधवाचार्य	१ अक्तू.
श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.
श्री लाल बहादुर शास्त्री	२ अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	२२ अक्तू.
श्री वीर वैरागी	२ नवं.
श्री जवाहर लाल नेहरू	१४ नवं.
भगवान् श्री सतसाई बाबा	२३ नवं.

(सन् १९९९ ई.)

स्वामी विवेकानन्द	८ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	८ जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	१९ जन.
श्री नेताजी सुभाष	२३जन.
लाला लाजपत राय	२८जन.
श्री गुरु रविदास जी	३१ जन.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	१४फर
श्री रामकृष्ण परमहंस	१८ फर.
श्री चैतन्य महाप्रभु	२ मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् १९९८ ई.)

रमज़ान का पहला दिन	१ जन.
शहादत-ए-हज़रतअली	२१जन.
जमतुल विदा	२३ जन.
शब-ए-कद्र	२७ जन.
इदुल फित्र	३० जन.
इदुलज्जुहा	८ अप्रैल
मुहर्रम (ताज़िया)	७ मई
चेल्हम	१५ जून
आखिरी चहार शम्बा	२४ जून
ईद-ए-मिलाद	७ जुला.
ईद-ए-मौलाद	१२ जुला.
फतिहायज़दहुम	५ अग.
जन्म श्री हज़रत अली	३ नवं.
शब-ए-मिराज	१७ नवं.
शब-ए-बारात	५ दिसं.
रमज़ान का पहला दिन	२१ दिसं.

(सन् १९९९ ई.)

शहादत-ए-हज़रतअली	१० जन.
जमतुल विदा	१५ जन.
शब-ए-कद्र	१६ जन.
इदुल फित्र	२० जन.

सूचना

सभी मुस्लिम-त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थान-भेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अंतर संभव है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत सरकार के अवकाश (१ जनवरी सन् १९९८ ई. से १७ मार्च १९९९ ई. तक)

(सूचना : अवकाश की इस सूची को सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए)

इंग्लिश नव वर्षारम्भ (१९९८ ई.)	१ जन.	गु.
अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	५ जन.	चं.
मकर संक्रान्ति	१४ जन.	बु.
पोंगल	१४ जन.	बु.
जमतुल विदा	२३ जन.	शु.
भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन.	चं.
इदुल फित्र	३० ,,	शु.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	११ फर.	बु.
श्री महाशिव रात्रि व्रत	२५ फर.	बु.
गुडी पड़वा	२८ मार्च	श.
श्री रामनवमी	५ अप्रै.	र.

इदुलज़ुहा	८ अप्रै. '९८	बु.
श्री महावीर जयंती	९ अप्रै.	गु.
गुड फ्राईडे	१० अप्रै.	शु.
वैशाखी	१३ अप्रै.	चं.
विशु, केरल	१५ अप्रै.	बु.
मुहर्रम	७ मई	गु.
श्री बुद्ध जयन्ती	११ ,,	चं.
रथ यात्रा (पुरी)	२६ जून	शु.
ईद -ए- मिलाद	७ जुला.	मं.
रक्षा बन्धन	८ अग.	श.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	श.

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	१५ अग. '९८	श.
श्री गणेश चतुर्थी	२६ अग.	बु.
ओनम् (केरल)	५ सितं.	शु.
श्री दुर्गाष्टमी	२९ सितं.	मं.
दशहरा	१ अक्तू.	गु.
जन्म श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.	शु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	५ ,,	चं.
दीपावली	१९ अक्तू.	चं.
भाई दूज	२२ अक्तू.	गु.
जन्म श्री हज़रत अली	३ नवं.	मं.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	४ नवं.	बु.

बलिदान दि. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	२४ नवं. '९८	मं.
क्रिसमस डे	२५ दिसं.	शु.
अव.दि. श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	२५ दिसं.	शु.
इंग्लिश नर्व वर्ष (१९९९ ई.)	१ जन. '९९	शु.
मकर संक्रान्ति	१४ ,,	गु.
पोंगल	१४ ,,	गु.
इदुल फित्र	२० ,,	बु.
भारत गणतंत्र दिवस	२६ ,,	मं.
जन्म श्री गुरु रविदास	३१ जन.	र.
श्री महाशिवरात्रि	१४ फर.	र.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. के मेले (१ जन.१९९८ ई. से १७ मार्च १९९९ ई. तक)

सन् १९९८ ई.

लोहड़ी (दाऊ, बिन्दरख) रोपड़	१४ जन.	बु.
मुक्तसर (पं.)	१४ ,,	बु.
मस्तुआणा (पं)	१ फर.	र.
बसंत पंचमी	१ फर.	र.
श्री महाशिवरात्रि, मण्डी (हि.प्र.) प्रा.	२५ फर.	बु.
श्री नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी, गढ़वाल)	२५ ,,	बु.
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रा.	१४ मार्च	श.
होली श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	१४ ,,	श.
वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	१७ ,,	मं.
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	१८ ,,	बु.
शीतला माता, कुराली (पं.)	१९ ,,	गु.
पिहोवा (हरि.)	२७ मार्च	शु.
ज. बाबा अतर सिंह जी, नानकसर, चीमा	२८ "	श.
माईसर खाना (पं.)	२ अप्रै.	गु.
श्री मनसा देवी (हरि.)	४ ,,	श.
बहुफोर्ट (जम्मू-काश्मीर)	४ ,,	श.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	४ ,,	श.
माता कांसा देवी (कांसल, रोपड़) प्रा.	९ ,,	गु.
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	१० ,,	शु.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू)	१५ ,,	बु.

पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	२८ अप्रै. '९८	मं.
समागम (८ दिन, हरिहर घाट) मणिकर्ण (कुल्लू) प्रा.	५ मई	मं.
आनी आउटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	७ ,,	गु.
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा	१४ ,,	गु.
बंजार (कुल्लू) प्रा.	१४ ,,	गु.
शाढ़ी जातर (नगर, हि.प्र.) प्रा.	१८ ,,	चं.
क्षीर भवानी काश्मीर	२ जून	मं.
श्रीगंगादशहरा	४ ,,	गु.
सपोर यात्रा, धारलदा (ऊधमपुर)	४ ,,	गु.
नमाणी एकादशी, नौमे गुरु बरहे, (बठिण्डा)	५ ,,	शु.
पिपलू (ऊना, हि. प्र.)	५ ,,	शु.
शुद्धमहादेव यात्रा (ऊधमपुर)	१० ,,	बु.
भुन्तर (कुल्लू) प्रा.	१५ जून	चं.
शरीक भवानी (जम्मू-का.)	३ जुला.	शु.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम, कुराली	९ ,,	गु.
बरसी- बाबा सन्तोख सिंह जी नानक सर (चीमा)	९ जुला.	गु.
श्री नैना देवी (हि. प्र.)	३१ जुला.	शु.
श्री चिन्तपूर्णी	[illegible]	[illegible]

कैलाश यात्रा (काश्मीर) प्रा.	२० अग. '९८	गु.
श्री गुसाई आंणा, कुराली (पं.)	२४ अग.	चं.
श्री गणेशोत्सव (मण्डी, हि. प्र.) प्रा.	२६ ,,	बु.
मेला पट (काश्मीर) प्रारम्भ	२७ ,,	गु.
वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	३ सितं.	गु.
बाबा सोढल (जालन्धर)	५ ,,	श.
मेला छपार (पंजाब)	५ ,,	श.
मेला श्री गोईदवाल (पं.)	६ सितं	र.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	१९ ,,	श.
श्री ज्वालामुखी (हि.प्र.)	२९ ,,	मं.
तारा देवी (हि. प्र.)	२९ ,,	मं.
हरचोवाल (गुरादासपुर, पं.)	२९ ,,	मं.
दशहरा (कुल्लू) प्रारम्भ	१ अक्तू.	गु.
श्री शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	४ ,,	र.
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	४ ,,	र.
दीपावली (अमृतसर)	१९ "	चं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.)	३१ अक्तू.	श.
रेणुका (नाहन, हि.प्र.)	३१ "	श.
जन्म श्री वीर वैरागी (नकोदर, पंजाब)	२ नवं.	चं.
श्रीरामतीर्थ अमृतसर (पं.)	४ नवं.	बु.
[illegible] (हरि.)	४ नवं.	बु.

बालमेला	१४ नव. '९८	श.
पुरमण्डल देविका स्नान, (जम्मू)	२९ नवं	र.
जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब (पं) प्रा.	२६ दिसं.	श.
संगीत मेला हरवल्लभ (जालंधर) प्रा.	२७ ,,	र.

सन् १९९९ ई.

लोहड़ी (दाऊं, बिन्दरख, रोपड़)	१४ जन.	गु.
मुक्तसर (पंजाब)	१४ ,,	गु.
वसन्त पंचमी	२२ जन.	शु.
मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.	चं.
श्री महाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	१४ ,,	र.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी, गढ़वाल)	१४ ,,	र.
होला, श्री आनन्दपुर साहेब (पं.)	३ मार्च	बु.
मानकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	३ मार्च	बु.
श्री गुरुराम राय (देहरादून)	७ मार्च	र.
श्रीवीरमदास, बधौछी, (पटियाला)	९ मार्च	मं.
शीतला माता (कुराली, पंजाब)	११ ,,	गु.
पिहोवा (हरियाणा)	१६ ,,	मं.

अपने नगर के प्रसिद्ध मेलों की तिथि, तारीख आदि का स्पष्ट विवरण लिखकर भेजिए हम उसे इस सूची में समाविष्ट करेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पिंजौर(हरि.) २६ अप्रै. र. श्री

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी १९९८ ई० से १७ मार्च १९९९ ई० तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.
५ जन.	१२ ०३	७ जन.	९ ४०	३ मई	११ ११	५ मई	१५ ३५	३०"	१८ १३	१ सितं.	२१ २२	२७दिसं.	२ ४०	२८ दिसं.	२३ २९
१४"	९ ०८	१६ "	१३ १३	१३"	१० ४५	१५ "	१३ ४१	८ "	१२ १८	१० "	७ २६	१९९९ ई.		१९९९ ई.	
२३"	६ ४१	२६ "	६ ४८	२२"	९ ५५	२४ "	५ ०८	१७"	३ १	१९ "	६ २०	४जन. '९९	१० १६	६जन. '९९	१० ३७
१ फर.	१८ १३	३ फर.	१५ ०६	३०"	१९ ३१	१ जून	२२ ५७	२७"	१ ३८	२९ "	५ ४८	१४"	३ ५०	१६ "	७ ४६
१०"	१६ ३४	१२ "	२० ५२	९ जून	१७ २२	११ "	१९ ४२	५ अक्तू.	२२ ४०	७ अक्तू.	१६ ४६	२३"	८ ४	२५ "	५ ३२
२०"	१५ ३९	२२ "	१६ ५५	१८"	१६ ४०	२० "	१३ ११	१४"	८ ३३	१६ "	१२ ५	३१"	२० ९	२ फर.	२० १८
१ मार्च	२ ५८	२ मार्च	२२ १६	२७"	४ ४१	२९ "	७ १७	२४"	७ ५२	२६ "	१२ ३६	१०फर.	१२ १३	१२ "	१६ ३२
९ "	२२ ३६	१२ "	३ २४	७ जुला.	१ ११	९ जुला.	३ ११	२ नवं.	९ ५७	४ नवं.	३ ५५	१९"	१४ १९	२१ "	११ ०
१९"	२३ ००	२२ "	१ ३२	१५"	२२ ४	१७ "	१९ १०	१०"	१५ १३	१२ "	१८ ४	२८"	४ ३	२ मार्च	४ ५३
२८"	१३ ५१	३० "	८ ०१	२४"	१३ २९	२६ "	१५ ५०	२०"	१३ ४२	२२ "	१८ १७	९ मार्च	२० २९	१२ "	१ २९
६ अप्रै.	४ २२	८ अप्रै.	९ १९	३ अग.	९ ४७	५ अग.	१२ ३	२९"	१९ ३८	१ दिसं.	१४ ५०				
१६"	४ ५९	१८ "	८ ८	१२"	४ ६	१४ "	० ३५	८ दिसं.	० ०	१० "	१ ३०				
२५"	० ४८	२६ "	९ ५७	२०"	२० ५८	२२ "	२३ ४०	१७"	२० ११	२० "	० १८				

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी १९९८, ई० से १७ मार्च, १९९९ ई० तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.	१९९८ ई.	घं. मि.
२ जन.	४ ५९	६ जन.	१० ४८	१९मई	२ ४१	२३ मई	७ ३८	२ अक्तू.	१८ २०	६ अक्तू.	१९ ४५	१६फर.	६ १८	२० फर.	१२ ४०
२९"	१३ ३१	२ फर.	१६ ३०	१५जून	८ ८	१९ जून	१५ १	३०अक्तू.	३ ३३	३ नवं.	७ २	१५मार्च	१६ ८	- -	- -
२६फर.	० १२	२ मार्च	० २८	१२जुला.	१४ ९	१६ जुला.	२० ३८	२६नवं.	१० ३०	३० "	१७ २७	पंचकों में घास, लकड़ी का संग्रह एवं खाट आदि का बुनना निषिद्ध है। दक्षिण दिशा की यात्रा भी पंचकों में नहीं करनी चाहिए ।			
२५मार्च	११ ३	२९ "	१० ५१	८ अग.	२२ ६	१३ अग.	२ १७	२३दिसं.	१५ ५८	२८ दिसं.	१ १६				
२१अप्रै.	२० २	२५ अप्रै.	२१ ५५	५ सितं.	७ ५४	९ सितं.	१ ४८	१९जन.	२२ ०६	२४ जन.	६ ५४				

रविवार कैलेण्डर (जनवरी, सन् १९९८ ई० से अप्रैल १९९९ ई०तक)

१९९८ ई.	रविवार की तारीखें					१९९८ ई.	रविवार की तारीखें					१९९८ ई.	रविवार की तारीखें					१९९९ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	४	११	१८	२५	-	मई	३	१०	१७	२४	३१	सितम्बर	६	१३	२०	२७	-	जनवरी	३	१०	१७	२४	३१
फरवरी	१	८	१५	२२	-	जून	-	७	१४	२१	२८	अक्तूबर	४	११	१८	२५	-	फरवरी	७	१४	२१	२७	-
मार्च	१	८	१५	२२	२९	जुलाई	५	१२	१९	२६	-	नवंबर	१	८	१५	२२	२९	मार्च	७	१४	२१	२८	-
अप्रैल	५	१२	१९	२६	-	अगस्त	२	०९	१६	२३	३०	दिसम्बर	६	१३	२०	२७		अप्रैल	४	११	१८	२५	-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१४ अप्रैल सन् १९९८ ई. को हरिद्वार में कुम्भ 'महापर्व'

कुम्भपर्व का माहात्म्य और उसकी स्नान-तिथियां

लेखक - प्रियव्रत शर्मा

समुद्रमन्थन से अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्यदिन (बारह सौर वर्ष) तक धमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए उसे कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक में छिपाया गया। इन चारों स्थलों पर अमृत कलश से अमृत के बिन्दु छलक कर गिरे। इसीलिये इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक-एक बार कुम्भ पर्व मनाया जाता है। इस अमृत कलश को देवासुर संग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (वृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की। यही कारण है, इन दोनों की विशेष-राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि-दैत्य-देवों की छीना-झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदे हरिद्वार आदि में गिरीं। इसीलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाए जाते हैं।

कुम्भ राशिस्थ वृहस्पति में जिस दिन सूर्यदेव मेषराशि में प्रवेश करते हैं, उसदिन हरिद्वार में कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस दिन हरिद्वार में गंगास्नान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। **''कुम्भराशिगते जीवे मेषराशिगते रवौ। हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम् ॥''** इसवर्ष (स. २०५५ में) १३/१४ अप्रैल १९९८ ई. के दिन हरिद्वार में ५७ घटी ४७ पल पर (१४ अप्रैल १९९८ के सूर्योदय से पहिले ५ बजकर ३ मिनट पर) सूर्यदेव मेषराशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय वृहस्पति कुम्भराशि में होगा । इसलिए इसदिन (१४ अप्रै. '९८) को परम्परया हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व पर गंगास्नान एवं दान, जप से महापुण्य प्राप्त होगा । वैसे - १३-१४ अप्रै. '९८ को मेषसंक्रान्ति हरिद्वार में ५७ घ. ४७ पल पर होगी, अतः मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल १४ अप्रैल '९८ को हरिद्वार में मध्याह्न (१२ बतकर १८ मिनट) तक रहेगा। -**''मध्यरात्रात् परतः संक्रांन्तौ परदिनस्य पूर्वार्ध पुण्यम् ॥''** (धर्मसिन्धु) (अर्थात् यदि संक्रान्ति अर्धरात्रि के बाद हो तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन के पूर्वार्ध में रहता है।) क्योंकि संक्रांन्ति के पुण्यकाल में ही तीर्थस्थानों, पवित्र नदियों में स्नान एवं दान-जप आदि का महत्त्व शास्त्रों में स्थान-स्थान पर वर्णित है, अतः हरिद्वार के कुम्भपर्व पर एकत्रित-**धार्मिक लोगों को १४ अप्रैल' ९८ को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में (सूर्योदय से पहिले अरुणोदय काल से लेकर दोपहर के १२ बजकर १८ मिनट तक) हरिद्वार में गंगा स्नान करने से चूकना नहीं चाहिए। शास्त्रीय निर्देश के अनुसार हरिद्वार के इस कुम्भ पर्व का वास्तविक योग १४ अप्रैल'९८ को मेष. संक्रांन्ति के पुण्यकाल में ही बनता है।** शाहीस्नान (जिसमें पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य एवं अखाड़ों के प्रमुख साधुसन्त, महन्तश्री आदि गंगा में स्नान करते हैं) १४ अप्रैल को ही होगा ।

जो लोग किसी कारणवश संक्रान्ति-पुण्यकाल में स्नान न कर सकें तो वे उसके बाद भी स्नानकर सकते है,क्योंकि संक्रांन्ति-पुण्यकाल के बाद के शेष काल को भी उसदिन पुण्यप्रद ही माना गया है।

कुम्भपर्व पर स्नान का माहात्म्य

कुम्भ पर्व पर समस्त भारत ही नहीं, विश्व के विभिन्न देशों से असंख्य ब्रह्मनिष्ठ, तपोधन महात्मा लोग हरिद्वार में एकत्र होकर गंगा में स्नान करने के लिए अपने-अपने सम्प्रदाय के महात्माओं के साथ विशिष्ट साज-सज्जा के साथ शोभायात्रा के रूप में निकलते हैं । जिनके दर्शन से धार्मिक लोग अपने जीवन को कृत-कृत्य करते हैं । इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आत्माओं का यह अपूर्व सम्मेलन वस्तुतः दर्शनीय होता है इसके साथ ही इस महापर्व पर श्री गंगाजी में स्नान से मोक्ष की प्राप्ति तथा सभी प्रकार की लौकिक कामनाओं की उपलब्धि की शास्त्रों में चर्चा है। वस्तुतः इस पर्व पर गंगास्नान से उपलब्ध होने वाले माहात्म्य का बखान करना तो ब्रह्माजी के लिए भी संम्भव नहीं- **''कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगो रविः। हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति-वर्जनम् ॥'' लोके कुम्भ इति ख्यातः जानीयात् सर्वकामदः। गंगायां स्नानमाहात्म्यं नालं वक्तुं चतुर्मुखः ॥** एक परम्परा प्राप्त वाक्य में तो कुम्भपर्व पर किए गए गंगास्नानजन्य फल को हजारों अश्वमेध एवं सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा समस्त पृथ्वी की लाख बार की गई प्रदक्षिणा से प्राप्त फल से भी कहीं बढ़कर बतलाया गया है, - **''अश्वमेध-सहस्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥''**

हरिद्वार कुम्भपर्व पर स्नान

कुम्भपर्व पर स्नान-दान से पुण्यार्जन करने के इच्छुक असंख्य श्रद्धालु लोग तो कुम्भपर्व के प्रधान स्नान-दिनों से दो अढ़ाई मास पूर्व ही श्री गंगा के तट पर आ बसते हैं । ऐसे श्रद्धालुओं के लिए पुण्यार्जन निमित्त किए जा रहे तीर्थ प्रवास के इन दिनों में अनेक विशेष पर्व आते हैं, जिनमें गंगास्नान का परम्परया बहुत विशेष माहात्य माना गया है। इन स्नान-दिनों को कुम्भपर्व का ही अङ्ग माना गया है। इस वर्ष हरिद्वार के इस कुम्भपर्व का प्रमुख स्नान तो १४ अप्रैल को ही होगा, लेकिन इसके अङ्गभूत अन्य स्नानदिन (जिनमें धार्मिक लोग गंगास्नान करके परमपुण्य प्राप्त कर सकेंगे) इस प्रकार हैं -

सन् १९९८ ई. में हरिद्वार कुम्भ महापर्व के विशेष स्नान दिन

(१) वसन्त पंचमी (१फर. '९८), (२) मघी पूर्णिमा (११ फर. '९८), (३) श्री महाशिवरात्रि व्रत (२५ फर.), (४) श्री शिवरात्रि स्नान (२६ फर.) (५) महाविषुव दिन (२१ मार्च' ९८) (६) वारुणी पर्व (सायं ३ घं. ५८ मि. तक २६ मार्च' ९८), (७) चैत्री अमावस एवं नव -' संवत्सरारम्भ (२८ मार्च), (८) श्री रामनवमी (५ अप्रै. '९८) (९) चैत्री पूर्णिमा, (११अप्रै.' ९८), (१०) मेष संक्रान्ति (१३ अप्रै. '९८),(११) मेष संक्रान्ति पुण्यकाल कुम्भपर्व का **प्रमुख स्नान (१४ अप्रै. ' ९८)** ,१४ अप्रैल को हरिद्वार में सूर्योदय ५ बजकर ५६ मि. (भा.स्टै.टा.) पर होगा, (१२) आद्य जगदगुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती (३० अप्रै '९८), (१३) श्री गंगाजन्म (२ मई' ९८), (१४) वैशाखी पूर्णिमा (११ मई' ९८), (१५) वृष संकान्ति पुण्यकाल कुम्भपर्व का अन्तिम स्नान (१५ मई' ९८)।

श्रद्धालु धार्मिक जनता को यह जान लेना चाहिए, कि १४ अप्रै.' ९८ ई को कुम्भपर्व के प्रमुख स्नान का माहात्म्य तो अवर्णनीय है ही, इसके साथ ही इस वर्ष सौभाग्यवश २६ मार्च' ९८ ई को प्रातः से सायं ३ घं. ५८ मि. तक '**वारुणीपर्व**' भी होगा। वारुणी पर्व में गंगास्नान का माहात्म्य करोड़ों सूर्यग्रहणों में गंगास्नान के समान लिखा है ; **''वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्ण त्रयोदशी। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्य ग्रहैः समा॥''** (स्कन्दपुराण) इस शास्त्रवाक्य को ध्यान में रखते हुए धार्मिक लोगों को जहां तक हो सके तो 'वारुणीपर्व' के समय गंगास्नान अवश्य करना चाहिए इसके अतिरिक्त कुम्भ पर्व पर हरिद्वार में प्रवास करने वाले धार्मिक जनों को सभी एकादशी व्रतों के दिनों में भी गंगास्नान का पुण्यलाभ प्राप्त करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण विवरण (सं. २०५५ वि.)

इसवर्ष (सं. २०५५ वि. में) भूमण्डल पर निम्नलिखित दो सूर्यग्रहण ही होंगे:-

(i) कंकण सूर्यग्रहण (२२ अग.'९८ ई.),(ii) कंकण सूर्यग्रहण (१६ फर'९९ ई.)

इस वर्ष भूमण्डल पर कोई चन्द्रग्रहण नहीं होगा। १६ फरवरी' ९९ वाला कंकण सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं पड़ेगा। २२ अगस्त' ९८ वाला कंकण सूर्य ग्रहण एशिया तथा आस्ट्रेलिया में दिखाई देगा। इण्डोनेशिया,मलेशिया के पार्श्ववर्त्ती हिन्द महासागर तथा न्यूगिनी आदि द्वीपों में ही इसकी कंकण आकृति दीखेगी। भारत में इसका खण्डग्रास रूप ही दिखाई पड़ेगा। भारत में इस ग्रहण के स्पर्श मोक्ष आदि का विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

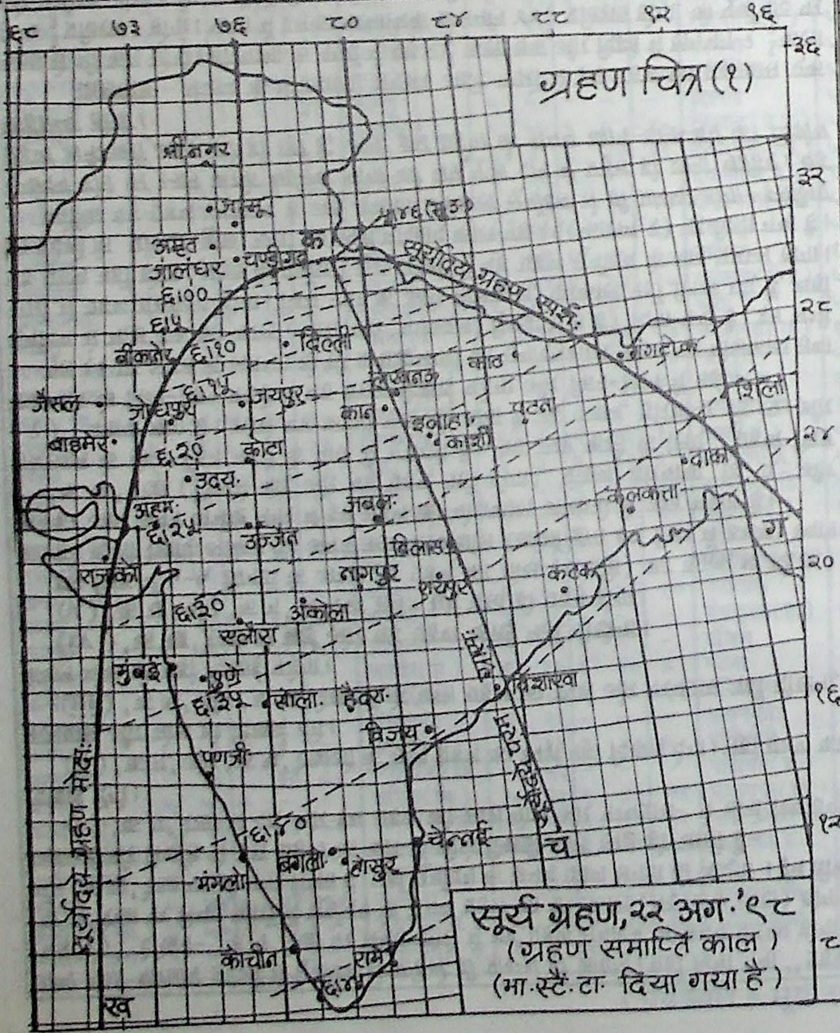

भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विवरण

खण्डग्रास सूर्यग्रहण :- *यह ग्रहण भाद्रपद अमा शनिवार (सं. २०५५ वि.) को २२ अगस्त' ९८ के दिन समस्त जम्मू-काश्मीर तथा पंजाब, हि. प्र., राजस्थान और गुजरात के कुछ भाग को छोड़कर शेष सारे भारत में प्रातः सूर्योदय के समय खण्डग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा, सिक्किम, अरुणाचल,मेघालय,नागालैंड, मणिपुर और आसाम में यह ग्रहण सूर्योदय के बाद और*

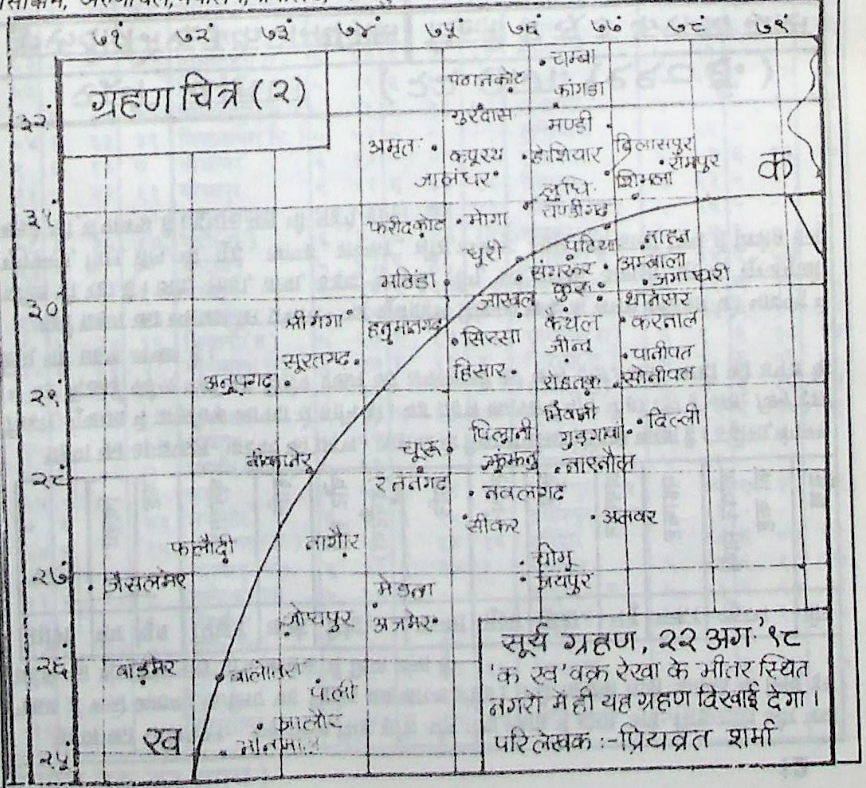

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य सभी भारतीय प्रदेशों में सूर्योदय से पहिले ही प्रारम्भ हो जाएगा। यहाँ दिया गया ''ग्रहण चित्र(१)'' देखिये- 'क ग' रेखा पर स्थित नगरों में यह ग्रहण सूर्योदय के समय प्रारम्भ होगा। 'क च' रेखा पर स्थित नगरों में सूर्योदय के समय ग्रहण का मध्यकाल (परमग्रास काल) होगा, और 'क ख' रेखा पर जो नगर स्थित हैं ,वहाँ सूर्योदय के समय ग्रहण समाप्त हो जाएगा । इन तीन **रेखाओं की स्थिति से इस ग्रहण के बारे में नीचे लिखी बातें स्पष्ट हो जाती हैं-**

(i) 'क ग' रेखा से दाईं ओर इस ग्रहण की स्पर्श,मोक्ष और परमग्रास- ये तीनों स्थितियां दिखाई देंगी।

(ii) 'क ग' और 'क च' रेखाओं के मध्य ग्रहण का स्पर्श नहीं दिखाई देगा। यहां ग्रहण का परमग्रास और मोक्ष ही दिखाई देंगे।

(iii) 'क च' और 'क ख' रेखाओं के मध्य ग्रहण का स्पर्श और परमग्रास नहीं दीखेगा, केवल मोक्ष ही यहां दिखाई पड़ेगा।

(iv) 'क ख' रेखा से बाईं ओर यह ग्रहण कतई नहीं दीखेगा।

(v) 'क ख' और 'क ग' के मध्य सर्वत्र सूर्य ग्रस्त ही उदय होगा।

इस चित्र में ५-५ मिनटों के अन्तर पर ग्रहण का मोक्ष (समाप्ति) का काल(भा.स्टैं.टा.) बतलाने वाली रेखाएं अंकित हैं। अपने नगर के अक्षांश ,रेखांशों द्वारा इस चित्र में उसका स्थान जानकर आप अपने अभीष्ट नगर में इस ग्रहण का मोक्षकाल आसानी से जान सकते हैं।

'क ख' रेखा (जिससे बाईं ओर यह ग्रहण नहीं होगा), पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., और राजस्थान के किन-किन नगरों के पास से गुजरती है- यह स्पष्ट करने के लिए **''ग्रहण चित्र (२)''** बनाया गया है। इससे यह काफी स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. और राजस्थान के किन-किन नगरों में यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा और किन-किन में नहीं।

पृष्ठ १३ पर भारत के लगभग दो सौ प्रसिद्ध नगरों का सूर्योदयकाल, ग्रहण का मोक्षकाल तथा सूर्योदय से मोक्ष तक का काल (जिसे यहाँ 'पर्वकाल' लिखा गया है) दिया गया है। इन सभी नगरों में ग्रहण ग्रस्तोदय होगा। जिस नगर के आगे मोक्षकाल, पर्वकाल नहीं लिखे गए हैं, वहाँ यह ग्रहण नहीं होगा। भारत के पूर्वोत्तरी कुछ प्रदेशों में यह ग्रहण सूर्योदय के बाद प्रारम्भ होगा। इन प्रदेशों के प्रसिद्ध कुछ नगरों का स्पर्श,मोक्षादि काल पृष्ठ १६(कालम २) पर दिया गया है।

क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तोदय है अतः इसका *पर्वकाल सूर्योदय से ही प्रारम्भ होगा।* इसलिए ***सूर्योदय होने पर स्नान करके धार्मिक लोगों को जप,पूजा, दान में प्रवृत्त हो जाना चाहिए। यह ग्रहण शनैश्चरी अमा को हो रहा है, अतः इस ग्रहण के समय स्नान-दान-जप का विशेष माहात्म्य होगा।***

ग्रासमान:- पंजाब के पटियाला, संगरूर आदि नगरों में इस ग्रहण का परमग्रास एक कला से भी कम रहेगा। हरियाणा के नगरों में यह २ $\frac{३}{४}$ कला तक, और दिल्ली में लगभग २ $\frac{१}{२}$ कला (=७ $\frac{१}{२}$ प्रतिशत) होगा। भारत में इसका परमाधिक ग्रासमान ४४ $\frac{१}{२}$ प्रतिशत होगा, जो पूर्वीघाट पर बसे उड़ीसा, बंगाल के नगरों में दिखाई देगा। **चण्डीगढ़ (U.T.) में सूर्योदय के केवल ४ मि. बाद ही यह ग्रहण समाप्त हो जाएगा। यहां ग्रास का मान इतना कम होगा कि इसे देख पाना लगभग असम्भव ही होगा ।**

ग्रहण का सूतक:- इस ग्रहण का सूतक सामान्यतया २१अग.' ९८ के सूर्यास्त के समय से प्रारम्भ हो जाएगा। लेकिन ग्रस्तोदय ग्रहण हो तो सूर्योदयकाल से अन्यथा स्पर्शकाल से ठीक १२ घन्टे पहिले सूतक का वास्तविक प्रारम्भ काल होता है।

ग्रहण का राशिफल:- यह ग्रहण सिंह राशि और मघा नक्षत्र में होगा, अतः सिंह राशि और मघा नक्षत्र में जन्मे जातकों के लिए यह विशेष कष्टकारक होगा। सभी राशियों वाले जातकों के लिए इस ग्रहण का शुभाशुभ फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	चोट लगे (दुर्घटना)	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	जीवन साथी को कष्ट	सुख

ग्रहण का अन्यफल-भाद्रपद का ग्रहण शासकों के लिए समस्याएं उत्पन्न करता है। उड़ीसा,बंगाल, बिहार, गुजरात में प्राकृतिक आपदा से हानि हो। *यह ग्रहण कालसर्प योग में हो रहा है अतः जिन देशों में यह दिखाई पड़ेगा,वहाँ यह विशेष प्रकार की समस्याओं को जन्म देगा।* खेती-बाड़ी की उपज के लिए यह ग्रहण अच्छा है।

सूर्य ग्रहण का व्यापार पर प्रभाव- यह सूर्यग्रहण सिंहस्थ चन्द्र के समय शनिवार को भाद्रपद में घटित हो रहा है। अतः लोहा, तांबा, उड़द, कुलथी, लौंग, रूई, सरसों, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, मूंगफली, तिल, तेल, घी, गुड़ , खाण्ड , शक्कर , सीरा,तम्बाकू, लाल एवं काली मिर्च में विशेष तेजी बनने की संभावना है। दुधारु पशु भी महंगे होंगे।

सूर्य ग्रहण (२२ अग. १९९८ ई.)

कुरुक्षेत्र में सू.उ. के समयग्रास | दिल्ली में सू.उ. के समय ग्रास

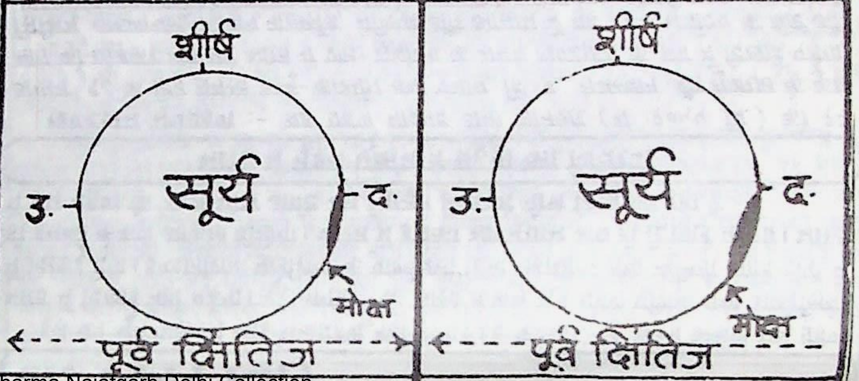

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

घन्टे पहिले सूतक का वास्तविक प्रारम्भ काल होता है

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भारत के प्रसिद्ध कुछ नगरों का सूर्योदय व पर्वकाल (सूर्यग्रहण २२ अग. ९८)

(भा. स्टै. टा. दिया गया है)

नगर	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	पर्वकाल मि.
अगरतला	५	३	६	३८	९५
अजमेर	६	६	६	१९	१३
अनन्तनाग (का.)	५	५४	-	-	-
अनूपशहर(उ.प्र.)	५	५०	६	१६	२६
अमरावती	५	५९	६	३२	३३
अमृतसर	५	५९	-	-	-
अम्बाला	५	५२	६	१	९
अयोध्या	५	३६	६	२३	४७
अर्की (हि.प्र.)	५	५२	-	-	-
अलवर	५	५७	६	१७	२०
अलीगढ़	५	५१	६	१७	२६
अलमोड़ा	५	४३	६	११	२८
अहमदाबाद	६	१८	६	२५	७
आगरा	५	५२	६	१९	२७
आजमगढ़(उ.प्र.)	५	३२	६	२६	५४
आबू (राज.)	६	१६	६	२२	६
आरा (बि.)	५	२८	६	२८	६०
इटारसी	५	५८	६	२९	३१
इटावा	५	४८	६	२१	३३
इन्दौर	६	०६	६	२८	२२
उज्जैन	६	६	६	२७	२१
उदयपुर(राज.)	६	१२	६	२३	११
उधमपुर (का.)	५	५६	-	-	-
ऊना(हि.प्र.)	५	५४	-	-	-
कटक	५	२८	६	३८	७०
कटनी	५	४६	६	२८	४२
कठुआ(का.)	५	५५	-	-	-
कन्नौज	५	४४	६	२१	३७
कपूरथला	५	५७	-	-	-
करनाल	५	५३	६	७	१४
कलकत्ता	५	१६	६	३७	८१
कांगड़ा	५	५३	-	-	-
कांचीपुरम्	५	५९	६	४३	४४
काठमाण्डू(ने.)	५	२६	६	२३	५७
काटियावाड़	६	२६	-	-	-
कानपुर	५	४३	६	२२	३९
कारगिल(का.)	५	५०	-	-	-
कालका(ह.)	५	५२	-	-	-

नगर	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	पर्वकाल मि.
काशी	५	३४	६	२७	५३
किशनगढ़(रा.)	६	२१	-	-	-
कुराली(प.)	५	५३	-	-	-
कुरुक्षेत्र	५	५४	६	४	१०
कुल्लू	५	५०	-	-	-
कैथल(ह.)	५	५५	६	५	१०
कोटा	६	३	६	२२	१९
खन्ना(प.)	५	५५	-	-	-
खुर्जा(उ.प्र.)	५	५२	६	१६	२४
गया	५	२७	६	३०	६३
गाजियाबाद	५	५३	६	१३	२०
गुड़गांव	५	५४	६	१४	२०
गुरदासपुर	५	५६	-	-	-
गोरखपुर	५	३१	६	२४	५३
ग्वालियर	५	५२	६	२२	३०
चण्डीगढ़	५	५३	५	५७	४
चम्बा(हिं.प्र.)	५	५३	-	-	-
चित्तौड़गढ़	६	८	६	२३	१५
चूरू(रा.)	६	३	६	१२	९
चेन्नई	५	५७	६	४२	४५
छपरा(बि.)	५	२७	६	२८	६१
जब्बलपुर	५	४९	६	३०	४१
जम्मू	५	५८	-	-	-
जयपुर	६	१	६	१८	१७
जामनगर	६	२९	-	-	-
जालन्धर	५	५७	-	-	-
जालौर(रा.)	६	१६	६	२०	४
जीन्द(ह.)	५	५६	६	९	१३
जैसलमेर	६	२१	-	-	-
जोधपुर	६	१३	६	१८	५
ज्वालाजी(हि.)	५	५३	-	-	-
झरिया(बि.)	५	२१	६	३३	७२
झांसी(उ. प्र.)	५	५२	६	२४	३२
झालावाड़(रा.)	६	१०	६	२३	१३
झूंझनू(रा.)	६	१	६	१३	१२
टोंक(रा.)	६	२	६	२०	१८
डूंगरपुर(रा.)	६	१३	६	२५	१२
तिरूपति	६	०	६	४२	४२

नगर	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	पर्वकाल मि.
थानेसर(ह.)	५	५३	६	०५	१२
रतिया(म.प्र.)	५	५२	६	२३	३१
दरभंगा	५	२१	६	२८	६७
दार्जिलिंग	५	११	६	२८	७७
दिल्ली	५	५४	६	१३	१९
देवबन्द(उ.प्र.)	५	५०	६	८	१८
देवरिया(उ.प्र.)	५	३०	६	२५	५५
देवास(म.प्र.)	६	४	६	२७	२३
देवप्रयाग(उ.प्र.)	५	४६	६	०६	२०
देहरादून	५	४७	६	०५	१८
द्वारिका	६	३३	-	-	-
धर्मशाला(हि.प्र.)	५	५२	-	-	-
धुरी(पं.)	५	५७	-	-	-
नबलगढ़(रा.)	६	२	६	१५	१३
नागपुर	५	५४	६	३३	३९
नागौर(रा.)	६	९	६	१६	७
नाथद्वारा(रा.)	६	११	६	२२	११
नाभा(पं.)	५	५६	-	-	-
नारनौल(ह.)	५	५८	६	१५	१७
नालागढ़(हि.)	५	५३	-	-	-
नाहन(हि.)	५	५१	६	१	१०
नासिक	६	१७	६	३१	१४
नीमच(म.प्र.)	६	८	६	२४	१६
नैनीताल	५	४४	६	१२	२८
पंचकूला(ह.)	५	५२	५	५७	५
पंजिम	६	२१	६	३८	१७
पटना	५	२५	६	२८	६३
पटियाला	५	५५	६	०२	७
पठानकोट	५	५५	-	-	-
पांडिचेरी	६	०	६	४३	४३
पानीपत(ह.)	५	५४	६	९	१५
पालमपुर(हि.)	५	५२	-	-	-
पार्ल (रा.)	६	१२	६	२०	८
पुंछ(का.)	५	५९	-	-	-
पुणे	६	१८	६	३४	१६
पुरनिया(बि.)	५	१६	६	३०	७४
पुरी(उड़ीसा)	५	२९	६	३९	७०
पोरबन्दर	६	३१	-	-	-

नगर	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	पर्वकाल मि.
प्रतापगढ़(उ.प्र.)	५	३८	६	२५	४७
प्रयाग	५	३८	६	२६	४८
फरीदकोट	६	०	-	-	-
फरीदाबाद	५	५३	६	१५	२२
फाज़िल्का	६	४	-	-	-
फिरोजपुर	६	१	-	-	-
बंगलौर	६	८	६	४२	३४
बठिण्डा(पं)	६	१	-	-	-
बदायूं	५	४६	६	१७	३१
बलिया(उ.प्र.)	५	२९	६	२७	५८
बाड़मेर(रा)	६	२०	-	-	-
बांसवाड़ा(रा)	६	११	६	२५	१४
बिजनौर(उ.प्र)	५	४९	६	११	२२
बिलासपुर(म.प्र)	५	४१	६	३३	५२
बिलासपुर(हि.)	५	५२	-	-	-
बीकानेर	६	१०	-	-	-
बीजापुर	६	१२	६	३७	२५
बुलन्दशहर	५	५२	६	१५	२३
बूंदी(रा.)	६	३	६	२२	१९
वृन्दावन	५	५३	६	१८	२५
भरतपुर	५	५४	६	१८	२४
भागलपुर	५	५४	६	३०	३६
भिवानी(ह)	५	५७	६	१२	१५
मीनमाल(रा)	६	१७	६	२१	४
भुज	६	३१	-	-	-
भुवनेश्वर	५	२८	६	३८	७०
भोपाल	५	५९	६	२८	२९
मण्डी(हि.प्र.)	५	५१	-	-	-
मथुरा	५	५३	६	१८	२५
मन्दसौर	६	७	६	२५	१८
महेन्द्रगढ़(ह.)	५	५८	६	१४	१६
मारवाड़(जं)	६	११	६	२०	९
मलेरकोटला	५	५६	-	-	-
मिर्जापुर	५	३६	६	२७	५१
मुंगेर(बि)	५	२०	६	३०	७०
मुजफ्फरनगर	५	५१	६	१०	१९
मुम्बई	६	२१	६	३३	१२
मुरादाबाद	५	४७	६	१४	२७

नगर	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	मोक्ष घं.	मोक्ष मि.	पर्वकाल मि.
मेरठ	५	५१	६	१२	२१
मोगा(पं.)	५	५९	-	-	-
रतनगढ़(रा)	६	४	६	१३	९
रतलाम	६	८	६	२६	१८
राजकोट	६	२६	-	-	-
रांची(बि)	५	२७	६	३३	६६
रामपुरबुशहर	५	४८	-	-	-
रामेश्वरम्	६	०४	६	४५	४१
रायपुर(म. प्र.)	५	४४	६	३४	५०
रायबरेली	५	४०	६	२४	४४
रीवां	५	४२	६	२८	४६
रोपड़(पं.)	५	५३	-	-	-
रोहतक	५	५६	६	१२	१६
लखनऊ	५	४०	६	२२	४२
लुधियाना	५	५६	-	-	-
शाहदरा	५	५३	६	१३	२०
शिमला	५	५२	-	-	-
श्रीनगर(का)	५	५६	-	-	-
संगरूर(पं)	५	५७	६	०	३
सरहिन्द(पं.)	५	५४	५	५७	३
सहानरपुर	५	५१	६	०६	१५
सागर	५	५३	६	२७	३४
सांगानेर(रा)	६	१	६	१८	१७
सिरसा(ह.)	६	१	६	०६	५
सीकर(रा)	६	३	६	१५	१२
सूरत	६	१९	६	३०	११
सूरतगढ़(रा)	६	६	-	-	-
सोलन(हि.प्र)	५	५१	-	-	-
हमीरपुर(उ.प्र)	५	४५	६	२४	३९
हमीरपुर(हि.प्र)	५	५३	-	-	-
हरिद्वार	५	४८	६	०७	१९
हाथरस	५	५१	६	१८	२७
हापुड़(उ.प्र)	५	५१	६	१३	२२
हांसी(ह)	५	५८	६	१०	१२
हिसार	५	५९	६	०८	९
हैदराबाद	६	०	६	३७	३७
होशंगाबाद	५	५८	६	२९	३१
होशियारपुर	५	५५	-	-	-

(पर्वकाल = सूर्योदय से मोक्ष तक का समय)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण काल में विधि-निषेध

(ग्रहण के समय कब, क्या, कैसे करें और क्या न करें)

लेखक-प्रियव्रत शर्मा

(सूर्य-चन्द्र ग्रहण के दिन खाना, पीना, स्नान, जप, दान आदि के बारे में धर्मशास्त्र का क्या निर्णय है ? व्रत- पर्व के दिन ग्रहण हो जाने पर व्रत-पर्व सम्बन्धी पूजा, पारणा किस प्रकार, कब करनी चाहिए ?-इस प्रकार के प्रश्न पाठकों द्वारा हमसे अनेक बार पूछे जाते हैं। इन सबका स्पष्टीकरण इस लेख द्वारा किया गया है।)

ग्रहण के समय खाना-पीना आदिः- सूर्य ग्रहण के स्पर्श (प्रारम्भ होने) से चार प्रहर (१२ घण्टा) और चन्द्रग्रहण के स्पर्श से तीन प्रहर (९ घण्टा) पहिले ग्रहणवेध (ग्रहणसूतक) प्रारम्भ हो जाता है। ग्रहण के सूतक में और ग्रहण के काल में खाना-पीना और मैथुन वर्जित है। ग्रहण काल में सोना, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग और तैलाभ्यंग भी निषिद्ध है। ग्रहण के सूतक में बाल, वृद्ध और रोगी व्यक्तियों के लिए खाने-पीने, सोने का निषेध नहीं है।

सूर्य ग्रहे तु नाश्नीयात्पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना॥
(वृद्धगौतम)

नाश्नीयादथ तत्काले ग्रस्तयोश्चन्द्रसूर्ययोः।
मुक्तयोश्च कृतस्नानः पश्चाद् भुंज्यात्स्ववेश्मनि॥
(ब्रह्मपुराण)

सूर्येन्दुग्रहणं यावत्तावत्कुर्याज्जपादिकम्।
न स्वपेन्न च भुंजीत स्नात्वा भुंजीत मुक्तयोः॥
(शिव रहस्य)

चन्द्रग्रहण का मोक्ष यदि महानिशा (रात्रि के अष्टम मुहुर्त) से पहिले हो जाए तो स्नान करके महानिशा से पहिले ही भोजन कर लेना चाहिए। महानिशा में एवं महानिशा के बाद भोजन नहीं करना चाहिए। यदि चन्द्रग्रहण महानिशा में या महानिशा के बाद समाप्त हो तो भोजन दूसरे दिन सूर्योदय के अनन्तर ही करना चाहिए।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी व फल ग्रहण काल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें खाना नहीं चाहिए। लेकिन तेल या घी में पका (तला हुआ) अन्न, घी, तेल, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, अचार, चटनी, मुरब्बा में तिल या कुशा रख देने से ग्रहणकाल में ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों (गेहूँ, चना, दाल) आटा आदि में तिल या कुशा डालने की जरूरत नहीं है।

वारितक्रारनालादि तिलदर्भैन दुष्यति

बाद खाया जाने वाला अन्न दूसरे का न हो-यह भी धर्मशास्त्र का निर्देश है (पश्चाद्भुंज्यात्स्ववेश्मनि)।

ग्रस्तोदय एवं ग्रस्तास्त ग्रहण होने पर ग्रहण वेध (ग्रहण सूतक) की अवधि के बारे में ऋषियों का यह विशेष निर्णय है : -

यदि सूर्य ग्रस्तोदय हो तब सूर्योदय से ही चार प्रहर पहिले (यानी पूर्ववर्ती पूरी रात्रि में) ग्रहणसूतक रहता है। यदि चन्द्रमा ग्रस्तोदय हो तो चन्द्रोदय से चार प्रहर पहिले (यानी- पूर्ववर्त्ती पूरे दिन में) ग्रहणसूतक माना गया है। ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण होने पर भी चन्द्रास्त से चार प्रहर पहिले (यानी पूर्ववर्त्ती पूरी रात्रि में) ग्रहणसूतक मानना चाहिए- ऐसा भी कुछेक आचार्यों का मत है ।

ग्रहण काल में स्नान-दानादिः- ग्रहण प्रारम्भ होते ही स्नान करे और तदनन्तर होम, देवार्चन, मन्त्रजप, श्राद्ध आदि करे। जब ग्रहण का मध्य (परमग्रास का) काल हो तब दान देना शुरू करे । ग्रहण का मोक्ष हो जाने पर सचैल स्नान करे-

ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते।
मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्तौ स्नानं विधीयते॥
(स्मृत्यन्तर)

ग्रहण के समय सौभाग्यवती स्त्रियां अशिरःस्नान करें। रजस्वला स्त्री गंगा आदि नदियों या सरोवर में डुबकी न लगाए, अपितु पात्र द्वारा उसका पानी अलग लेकर स्नान करें।

ग्रस्ते स्नायादुदक्यापि तीर्थादुद्धृत्य वारिणा ।

कुछ आचार्यों का मत है कि ग्रहणस्पर्श के समय भी सचैल स्नान करना चाहिए।

ग्रहण के समय गंगा आदि पवित्र नदियों, सरोवरों, स्त्रोतों तथा सागर में स्नान का विशेष माहात्म्य है। मत्स्यपुराण का वचन है कि सूर्यग्रहण के समय गंगा, कनखल, प्रयाग (त्रिवेणी) पुष्कर और कुरुक्षेत्र में स्नान से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है-

गंगा कनखलं पुण्यं प्रयागः पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं तथा पुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे॥
(मत्स्यपुराण)

यदि किसी तीर्थ पर न जा सकें तो स्नान के समय इन तीर्थों के स्मरण से भी पुण्य प्राप्त होता है।

ग्रहण के समय एवं ग्रहण की समाप्ति पर गरम पानी से स्नान करने का धर्मशास्त्रों द्वारा निषेध है।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृते जन्मनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
अस्पृश्य-स्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा॥

यह निषेध रोगियों के लिए नहीं है।

यदि ग्रहण ग्रस्तोदय हो तो सूर्योदय काल या चन्द्रोदय काल को (अर्थात् सूर्य ग्रस्तोदय हो तो सूर्योदय काल को चन्द्रमा ग्रस्तोदय हो चन्द्रोदय काल को) ही ग्रहण का स्पर्शकाल मानकर उसी समय स्नान करके होम, देवार्चन, जप, दान आदि करना चाहिए।

यदि सूर्य ग्रस्तास्त हो तो सूर्योस्त के समय स्नान करें। लेकिन भोजन तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक कि दूसरे दिन प्रातः शुद्ध (ग्रहणमुक्त) सूर्यबिम्ब को देखकर सचैल स्नान नहीं कर लिया जाता। ठीक यही बात ग्रस्तास्त चन्द्र के विषय में भी है। अर्थात् ग्रस्त चन्द्रमा के अस्त काल में स्नान करें और उस दिन सांय सूर्यास्त के अनन्तर शुद्ध (ग्रहणमुक्त) चन्द्रबिम्ब को देखकर सचैल स्नान करके भोजन करे। इस बारे व्यास का यह वाक्य है।

अमुक्तयोरस्तगयोरद्याद् दृष्ट्वा परेऽहनि।
मुक्तिं दृष्ट्वा तु भोक्तव्यं स्नानं कृत्वा ततः परम्॥
(व्यास)

बाल, वृद्ध और रोगियों के लिए यह नियम नहीं है। ग्रस्तास्त ग्रहण की स्थिति में वे तो शुद्ध (ग्रहणमुक्त) सूर्य-चन्द्रबिम्ब को देखने से पहिले भी अन्नग्रहण कर सकते हैं।

ग्रहणकाल में श्राद्ध करने का भारी माहात्म्य लिखा गया है। यद्यपि सन्ध्या और रात्रि काल श्राद्ध के लिए निषिद्ध हैं। लेकिन ग्रहण के समय इन्हें श्राद्ध के लिए ऋषियों ने स्वीकार्य कहा है। इस सम्बन्ध में शातातप का यह वाक्य है-

सन्ध्यारात्र्योर्न कर्त्तव्यं श्राद्धं खलु विचक्षणैः।
द्वयोरपि च कर्त्तव्यं यदि स्याद्राहुदर्शनम्॥
(शातातप)

'ग्रहण वाले दिन (अहोरात्र में) उपवास रखकर स्नान-दान-श्राद्ध जपादि करने से अक्षय पुण्य का लाभ मिला है-' ऐसा शास्त्र कहते हैं-

अयने विषुवे चैव ग्रहणे चन्द्र-सूर्ययोः।
अहोरात्रोषितः स्नातः सर्वपापैः विमुच्यते॥
(दक्ष)

यहाँ उनका यह भी कहना है कि यह उपवास पुत्रवान् गृहस्थी को नहीं करना चाहिए-

आदित्येऽहनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
पारणं चोपवासं च न कुर्यात्पुत्रवान् गृही॥
(शातातप)

ध्यान रहे-ग्रस्तास्त ग्रहण होने पर तो पुत्रवान् गृहस्थी को भी २४ घण्टे का अनशन (उपवास) धर्मशास्त्रोक्त निर्देशानुसार अनिवार्यतः करना ही होता है, क्योंकि पुत्रवान् गृहस्थी के लिए काम्य उपवास ही निषिद्ध है, नैमित्तिक नहीं।

जन्मसूतक (जन्माशौच) और मृताशौच में भी ग्रहण के समय स्नान-दान-जप-श्राद्ध करने चाहिएं- ऐसा शास्त्र कहते हैं।

सूर्यग्रहण के समय बिना मुहूर्त के ही (तिथि-नक्षत्र-लग्न आदि का विचार किए बिना ही) गुरु से मन्त्रदीक्षा लेना अच्छा माना जाता है। मन्त्र दीक्षा के लिए चन्द्रग्रहण का काल निषिद्ध है।

यन्त्र-मन्त्र-साधना के लिए भी सूर्य-चन्द्र के ग्रहणों का समय महत्त्वपूर्ण माना गया है।

ग्रहण-दिन से पूर्ववर्त्ती एक दिन, ग्रहण वाला दिन और इससे परवर्त्ती तीन दिन (ये कुल चार दिन) किसी भी विवाहादि मांगलिक कृत्य के लिए ग्राह्य नहीं माने जाते।

जब सूर्य ग्रहण अन्य प्रदेशों में ही दृश्य हो (अपने निवास स्थान पर वह दिखाई न पड़े) तब उसके लिए स्नान, दान, जप, श्राद्ध आदि का कोई माहात्म्य नहीं माना जाता । इसी प्रकार चन्द्र ग्रहण यदि दिन में घटित हो तो उसका भी स्नान आदि के लिए कोई माहात्म्य नहीं होता-

सूर्यग्रहो यदा रात्रौ दिवा चन्द्रग्रहस्तथा।
तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद्दानं च न क्वचित्॥
(निगम)

ग्रहण के दिन व्रत-पर्वों का अनुष्ठान

उपाकर्म को छोड़कर शेष (सत्यनारायणव्रत, अमावस्या-पूर्णिमा का स्नान-दान, वट-सावित्रीव्रत, गुरुपूर्णिमा, रक्षाबन्धन, नवरात्रारम्भ (घटस्थापन), होलिकादहन आदि) किसी भी व्रत-पर्व से सम्बद्ध अनुष्ठान पर सूर्य या चन्द्रग्रहण को कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन (पूर्णिमा-अमावस्या को घटित होने वाले) व्रत-पर्वों से सम्बद्ध पूजा आदि का अनुष्ठान इनके ठीक अपने-अपने विहित (शास्त्रोक्त) काल में ग्रहण के सूतक और ग्रहण के समय में भी करने चाहिएं- यह धर्मशास्त्रों का निर्देश है। यहां पर धर्मशास्त्रकारों द्वारा केवल यह विशेष बात कही गई है कि व्रत-पर्व से सम्बद्ध पूजादि के अनुष्ठानकाल में ग्रहण लगा हुआ हो तो स्नान करके ही पूजादि करनी चाहिए:-

सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहु दर्शने।
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत्॥

ग्रहण वाले दिन पड़ने वाले व्रत की पारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) के बारे में शास्त्रकारों द्वारा यह निर्देश है-

ग्रहण के सूतक में और ग्रहण के काल में पारणा नहीं करनी चाहिए। ग्रहण समाप्त होने पर ही पारणा की जाए। व्रत वाले दिन प्रातः यदि चन्द्रमा ग्रस्तास्त हुआ हो तो सांय चन्द्रोदय के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनन्तर ग्रहणमुक्त (शुद्ध) चन्द्रबिम्ब को देखकर सचैल स्नान करने के बाद ही अन्नग्रहण करना चाहिए। बाल, वृद्ध, आतुर तो दिन में भी अन्नग्रहण कर सकते हैं। चन्द्रग्रहण यदि महानिशा (रात्रि के अष्टम मुहूर्त) में या महानिशा के बाद समाप्त हो तो दूसरे दिन सूर्योदय के बाद स्नान करके नित्यकर्म से निवृत्त होकर पारणा करे। बाल, वृद्ध, आतुर तो महानिशा के बाद भी अन्नग्रहण कर सकते हैं।

व्रत के दिन सूर्य ग्रस्तास्त हुआ हो तो व्रती को व्रत की पारणा दूसरे दिन सूर्योदय के बाद ग्रहणमुक्त (शुद्ध) सूर्यबिम्ब को देखकर सचैल स्नान करके नित्यकर्म से निवृत्त होकर करनी चाहिए। बाल, वृद्ध आतुर तो सूर्यास्त के बाद भी अन्नग्रहण कर सकते हैं।

ग्रस्त चन्द्रमा के अस्त होने पर प्रातःकालीन और ग्रस्त सूर्य के अस्त होने पर सांय कालीन नित्यकर्म (सन्ध्या-पाठादि) स्नान करके कर लेने चाहिए- ऐसा शास्त्रनिर्णय है। इसी प्रकार ग्रस्तचन्द्र के अस्त होने पर तदनन्तरवर्ती दिन के व्रत-पर्व से सम्बद्ध तथा ग्रस्त सूर्य के अस्त होने पर तदनन्तरवर्त्ती प्रदोष आदि काल में किए जाने वाले व्रत-पर्वसम्बन्धी अनुष्ठान (पूजा आदि) स्नान करके ही करने चाहिएं। जैसे- दीपावली वाले दिन सूर्य ग्रस्तास्त हो तो प्रदोष काल में स्नान करने के बाद ही लक्ष्मी पूजन करना होगा।

ग्रहण वाले दिन उपाकर्म

उपाकर्म के लिए चारों वेदों के अनुयायी धार्मिक के लिए पृथक्-पृथक् मास-तिथि-नक्षत्रों का धर्मशास्त्रों में निर्देश है। जैसे -

(१) ऋग्वेदियों के लिए-

(i) श्रावण मास में श्रवणनक्षत्र (मुख्य उपाकर्म काल)
(ii) श्रावण शुक्ल पंचमी (वैकल्पिककाल)
(iii) श्रावण में हस्त नक्षत्र (वैकल्पिक काल)

(२) यजुर्वेदियों के लिए-

(i) श्रावणी पूर्णिमा (मुख्य काल)
(ii) श्रावण में हस्तनक्षत्र (वैकल्पिक काल)

(३) सामवेदियों के लिए-

(i) भाद्रपद में हस्तनक्षत्र (मुख्यकाल)
(ii) श्रावण में हस्तनक्षत्र (वैकल्पिक काल)
(iii) श्रावणी पूर्णिमा (वैकल्पिक काल)

(४) अथर्ववेदियों के लिए-

श्रावणी पूर्णिमा या भाद्रपद पूर्णिमा } (दोनों मुख्यकाल)

जिस वेद के "मुख्य उपाकर्म काल" वाले दिन सूर्योदय से अर्धरात्रि तक की अवधि में कहीं भी ग्रहणकाल का स्पर्श हो उस दिन उस वेद के अनुयायी को अपने वेद के मुख्य उपाकर्म काल में उपाकर्म नहीं करना चाहिए। इस स्थिति में उसके "वैकल्पिक काल" में ही उपाकर्म करना चाहिए। जिस "वैकल्पिक काल" वाले दिन सूर्यसंक्रान्ति या ग्रहण हो उस वैकल्पिक काल में भी उपाकर्म निषिद्ध है। इस स्थिति में उसके दूसरे वैकल्पिक काल में उपाकर्म करना होगा। यदि मुख्यकाल और वैकल्पिक काल- दोनों ग्रहण एवं संक्रान्ति से दूषित हों तो, शास्त्रकारों का कहना है कि अपने वेद के अतिरिक्त अन्य किसी दूसरे वेद के लिए निर्धारित ग्रहण एवं संक्रान्ति के दोष से मुक्त मुख्य या वैकल्पिक उपाकर्म काल में भी यथेच्छ उपाकर्म किया जा सकता है।

सामवेदियों के मुख्य उपाकर्म वाले दिन (भाद्रपद-हस्त वाले दिन) तो कभी ग्रहण नहीं होता।

ग्रहण के समय सूर्य-चन्द्र बिम्ब का दर्शन-

चन्द्रग्रहण के समय चन्द्र बिम्ब को देखना आंखों के लिए हानिप्रद नहीं है। लेकिन सूर्य ग्रहण के समय सूर्यबिम्ब को देखने से आंखें क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। ग्रस्त सूर्य के बिम्ब को देखने की उत्सुकता हो तो दीपक की ज्वाला से निकलते धुएं से अच्छी तरह काला किए गए काच में से इसे देखा जा सकता है। वैल्डिंग में प्रयोग में लाए जाने वाले गहरे काले ग्लास में से भी इसे देख सकते हैं। ध्यान रहे-बिना इनके नंगी आंख से ग्रस्त सूर्य विम्ब को देखने से व्यक्ति हमेशा के लिए अन्धा हो सकता है-

धर्मशास्त्रकारों का कहना है कि गर्भिणी स्त्रियों को सूर्य और चन्द्र दोनों के ग्रस्त बिम्ब नहीं देखने चाहिएं।

(पृष्ठ १२ का शेष)

सूर्य ग्रहण २२ अग. '९८

इन नगरों में सूर्योदय के बाद ग्रहण प्रारम्भ होगा

(भा. स्टै. टा. दिया गया है)

नगर	सूर्योदय घं.मि.	स्पर्श घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	पर्वकाल मिनट
इम्फाल (मणिपुर)	४ ५१	५ ००	६ ३८	९८
गंगटोक (सिक्किम)	५ ०९	५ १०	६ २८	७८
गोहाटी (आसाम)	४ ५८	५ ७	६ ३३	८६
डिब्रूगढ़ (आसाम)	४ ४४	५ ८	६ ३३	८५
शिलांग (आसाम)	४ ५८	५ ०५	६ ३५	९०
जोरहाट (आसाम)	४ ४८	५ ७	६ ३५	८८
कोहिमा (नागालैण्ड)	४ ४९	५ ०४	६ ३७	९३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. २०५५ वि.)

जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से संबंध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है । यदि चन्द्र शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न ,रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है । यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैया, साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है । यदि जन्म में लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती हैं, व्यापारादि में लाभ होता है । (शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है) । शान्त्यर्थ-सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर, गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें । अष्टगंध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनि यंत्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है ।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है :-

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब है । **वृष** को पहिले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अंत के अढ़ाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढ़ाई वर्ष, **सिंह** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं । **कन्या** को पहिले ५ वर्ष,उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । **तुला** को आखिर के अढ़ाई वर्ष **वृश्चिक** को अंतिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । **धनु** को प्रारंभ के अढ़ाई वर्ष, **मकर** को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी पहिले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुंभ** को आदि एवं अंत के अढ़ाई वर्ष, विशेषत: अंत के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढ़ेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अंत के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं ।

इस वर्ष (सं. २०५५वि.में) १६अप्रै.' ९८तक शनि मीन राशि में ही रहेगा । अत: विभिन्न राशिवालों के लिए मीनस्थ शनि की ढैया, साढ़ेसाती का फल गत वर्ष वाला ही रहेगा। १७ अप्रै'९८ से वर्षान्त तक शनि मेष में ही रहेगा, जिसकी ढैया आदि का फल विभिन्न राशिवालों के लिए नीचे कोष्ठक में दिया गया है। **नोट:-** जिन राशियों का इस कोष्ठक में निर्देश नहीं है उन राशि वालों के लिए मेष स्थित-शनि के काल में ढैया या साढेसाती नहीं हैं ।

मेष राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैया

(१७ अप्रैल १९९८ ई. से संवत् के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैया या साढ़ेसाती	पाद	साढ़ेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मेष	साढ़ेसाती	चाँदी	हृदय	....	व्यापार में वृद्धि, राज सम्मान,यश प्रताप बढ़े , मांगलिक कार्य हों।
वृष	साढ़ेसाती	लोहा	मस्तक	चढ़ती	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
कन्या	ढैया	लोहा	.....	.....	रोगभय, रक्त पिकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मकर	ढैया	लोहा	.....	......	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मीन	साढ़ेसाती	तांबा	पैर	उतरती	सुखसम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख, सन्तान सुख।

"गुरु के संचार का फल"

गुरु गत वर्ष (संवत् २०५४ वि.) से कुम्भ राशि में चल रहा है। २६ मई' ९८ को यह मीन राशि में प्रवेश करेगा, फिर यह वक्री होकर १० सितं'९८ को कुम्भ में आ जाएगा। इसके बाद मार्गी होकर यह १३ जन'९९ को मीन में आकर वर्षान्त तक मीन राशि में ही रहेगा कुम्भ और मीन राशि के गुरु का फल भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए अलग-अलग दो कोष्ठकों में दिया गया है।

कुम्भ राशि के गुरु का शुभशुभ फल

(वर्षारम्भ से २५ मई' ९८ तक, और १० सितं.' ९८ से १२ जन.'९९ तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मीन राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(२६ मई'९८ से १ सितं'९८ तक और १३ जन'९९ से वर्षान्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धनलाभ	भय

राहु के संचार का फल

राहु गतवर्ष (संवत् २०५४ वि.) से सिंह राशि में चल रहा है । १२ जन.'९९ को यह कर्क राशि में आकर वर्षान्त तक इसी राशि में रहेगा। सिंह और कर्क राशि के राहु का भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए शुभाशुभ फल नीचे दो अलग-अलग कोष्टकों में दिया गया है।

सिंह राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(वर्षारम्भ से ११ जन.'९९ तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धन लाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख

कर्क राशि के राहु का शुभाशुभ फल ॥

(१२ जन.'९९ से वर्षान्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धन लाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय

साढेसाती, ढैया ज्ञान सारणी

-प्रियव्रत शर्मा

"शनि किस राशि पर चल रहा है ?-" यह जान लेने पर आप इस सारणी से यह तुरंत जान सकते हैं कि उस समय आपकी राशि पर साढ़ेसाती चल रही है या ढैया। इससे आप यह भी जान लेंगे, कि साढेसाती मस्तष्क पर (चढ़ती)है, हृदय पर है, या पैरों पर (उतरती) है। जैसे - जब शनि मिथुन राशि में हो तब वृष राशि वालों पर साढेसाती पैरों (उतरती), मिथुन राशि वालों पर साढ़ेसाती हृदय पर, कर्क राशि वालों पर, साढ़ेसाती मस्तक पर(चढ़ती)तथा वृश्चिक तथा मीन राशि वालों पर ढैया चल रहा होगा । "

शनि की राशि / जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	सा. ह.	सा. पै		दै				दै				सा. म.
वृष	सा. म.	सा.ह.	सा. पै		दै				दै			
मिथुन		सा. म.	सा. ह	सा. पै		दै				दै		
कर्क			सा. म	सा. ह	सा. पै		दै				दै	
सिंह				सा. म.	सा. ह	सा. पै		दै				दै
कन्या	दै				सा. म.	सा. ह	सा. पै		दै			
तुला		दै				सा. म.	सा. ह	सा. पै		दै		
वृश्चिक			दै				सा. म.	सा. ह.	सा. पै		दै	
धनु				दै				सा. म	सा. ह	सा. पै		दै
मकर	दै				दै				सा. म.	सा. ह	सा. पै	
कुम्भ		दै				दै				सा. म.	सा. ह	सा. पै
मीन	सा. पै		दै				दै				सा. म	सा. ह

सा. - साढेसाती । ढै. - ढैया । हृ.-हृदय पर । पै.= पैरों पर (उतरती)। म= मस्तक पर (चढ़ती)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०५५ वि.)

संसार की सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रह गोचर के अनुसार सर्वेक्षण

(१) सं. २०५५ वि. का राजा शनि है एवं मन्त्री चन्द्र एवं दुर्गेश सूर्य हैं, संवत् का नाम 'खर' है। विश्व में अनेक विध रोगों से कष्ट, राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष उथल-पुथल के योग।

(२) १७ अप्रैल से १४ मई तक शनि-मंगल का मेष राशि में रहना भारी संकट एवं कुछ देशों में युद्धाग्नि से शान्ति भंग। विशेषतः भारत में राजनीतिक उथल-पुथल ।

(३) १७ जून से १० अगस्त तक मिथुनस्थ मंगल पर नीच शनि की दृष्टि है। दक्षिणी अमेरिका एवं दक्षिण पूर्व एशिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया में भारी प्राकृतिक-प्रकोप से कृषि प्रभावित । भारत में बाढ़ आदि से हानि हो।

(४) १२ जनवरी से संवत् के अन्त तक अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप से जनधन-हानि एवं सुदूर पूर्वोत्तरीय क्षेत्र एवं दक्षिण-पश्चिमी समुद्र तट विषद्ग्रस्त।

(५) इस वर्ष की ग्रहस्थिति से भारत के केन्द्र एवं कुछ प्रान्तों में विशेष उथल-पुथल के संकेत।

(६) भारत के सत्तारूढ़ दल एवं राजनैतिक-दलों का भविष्य, आगामी चुनाव की संभावना ।

(७) भारत के प्रधान नेताओं का भविष्य, पंजाब, काश्मीर उत्तर प्रदेश की राजनैतिक स्थिति।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासन-हीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक-विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे ;" - यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही 'ज्योतिष' है। ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह-नक्षत्र है, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते- यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त की प्रमाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है। विज्ञान, कार्य-करण के सिद्धान्त पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं।

सिद्धान्तों के व्यभिचार मात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सब ग्रहों का प्रधान माना गाया है। शुक्ल यजुर्वेद की इस ऋचा पर ध्यान दें -

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥"

अर्थात्- सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा-सूर्य स्थावर जंगम जगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु आकाश किंवा समस्त भचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रुपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध महामारी अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ऋग्वेद में पच्चानवें हजारवर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु शिष्य परस्परा चिन्तन व संशोधन संबर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगति जन्य-संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का ७० वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

आपके इस लोकप्रिय पञ्चाङ्ग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भाविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहर लाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंञ्चाङ्ग अपनी सफल आश्चार्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में सर्वोपरि एवं लोकप्रिय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इससे पहिले कि हम सं. २०५५ की ग्रहस्थिति पर विचार करें, सं. २०५३ वि. में आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुई भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा कर देना उचित समझते हैं। फलित-ज्योतिष की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए ये भविष्यवाणियां पर्याप्त हैं।

(१) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ.१९ पर कालम १ में स्पष्ट घोषणा की गई थी कि -

"१६ सितम्बर से शनि-केतु एवं सूर्य -राहु का समसप्तक योग किसी मुस्लिम देश में जातीय दंगे फिसाद एवं आन्तरिक घोर अशांति का संकेत देता है।"

पाठक इस भविषवाणी की सत्यता से पूर्णतया परिचित हैं, कि २२ सितं. को पाकिस्तान में प्रधानमंत्री -भुट्टो के भाई की गोलीमार कर हत्या कर दी गई और कराची में घोर आन्तरिक अशान्ति का वातावरण बन गया।

(२) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. १०१ पर पाक्षिक फलादेश 'लोक भविष्य' में सितम्बर १३ से २७ के मध्य स्पष्ट घोषणा की गई थी कि -

"(इस पक्ष में) सूर्य-राहु एवं शनि का समसप्तक (योग)कहीं राजनीतिज्ञ के अपदस्थ होने का संकेत भी देता है।"

पाठकों ! २२ सितम्बर को भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव जी को कांग्रेस के प्रधान पद से पृथक् होना पड़ा,- इस भविष्यवाणी की सफलता के बारे में पाठकों ने हमें दूरभाष पर सूचित करते हुए फलितशास्त्र की प्रतिष्ठा को स्वीकारा है।

(३) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २० पर कालम १ में लिखी गई इन पंक्तियों पर ध्यान दें -

"इस वर्ष यहां की शासन सता एवं राजनीतिक दलों के लिए अप्रत्याशित विस्मयकारी घटनाचक्र चलाने वाला है। सत्तासीन पार्टी के सामने ऐसी परिस्थितियां आएंगी, जिससे शासनतंत्र डगमगाएगा, प्रधान नेता ऐसे राजनीतिक चक्रव्यूह में फंस जाएंगे जहां से निकलना कठिन ही प्रतीत होता है"

किञ्च "इस लग्नगत ग्रहस्थिति के अनुसार इस संवत् में प्रमुख नेताओं एवं प्रमुख राजनैतिक दलों को गंभीर राजनैतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। भारतीय राजनीति में विशेष उथल एवं परिवर्तन के संकेत गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट दिखाई द रहे हैं।"

भारतीय राजनीति के बारे में उपरोक्त भविष्यवाणी की सफलता ने पाठकों को अवाक् कर दिया । लोकसभा के परिणाम अप्रत्याशित - विस्मयकारी ही थे। कांग्रेस की अकल्पनीय सत्तामोह भंग हुआ । प्रधान नेता श्री नरसिंराव जी लक्खूभाई धोखाधड़ी के केस में ऐसे उलझे, कि कांग्रेस का प्रधान पर छोड़ने को मजबूर होना पड़ा, फिरभी उस चक्रव्यूह से निकलपाना कठिन प्रतीत होता है,

इसवर्ष के प्रमुख नेता एवं राजनैतिक दल हवाला काण्ड से प्रभावित हुए। पशुचारा काण्ड एवं दूरभाष विभाग के मन्त्री श्री सुखराम जी को भी अप्रत्याशित धन-रखने के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा है, जिससे कांग्रेस, भाजपा एवं लोकदल आदि प्रमुख पार्टियां स्पष्टत- प्रभावित हुई हैं।

(४) सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २० पर गोचर ग्रहस्थिति शीर्षक के अन्तर्गत कालम २ में मोटे अक्षरों में स्पष्ट घोषणा की गई थी.

"वर्ष के मन्त्रिपद पर आसीन शने की दृष्टि उत्तर की तरफ ही रहेगी ।इस ग्रहस्थिति का प्रभाव कहीं राजनीति में नए तालमेल एवं नए समीकरण बनाकर भारतीय शासनतन्त्र में काफी उलटफेर वाला रहेगा।"

पाठक भली भांती जानते है , कि सन् १९९६ ई. में लोकसभा निर्वाचनों के बाद बिल्कुल विरोधी-सिद्धान्तों वाले विभिन्न दलों ने मिलकर केवल सत्ता हथयाने के लिए एक नया समीकरण बना लिया, जिसे- "संयुक्त मोर्चा" नाम दे दिया गया। इस प्रकार भाजपा की सारकार को गिरा कर यह वर्ष विशेष उलटफेर वाला ही रहा है,

(५) केन्द्रीय शासनतन्त्र में परिवर्तन की भविष्यवाणी "भी कम आश्चर्यजनक नहीं थी:, पढ़ें पृष्ट २०, कालम २ की अन्तिम मोटे अक्षरों में छपी ये पंक्तियां"

"पाठक ध्यान दें कि- गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार २० नवम्बर १९९५ से अप्रैल १९९६ तक की ग्रहस्थिति के परिणामस्वरूप शासन तन्त्र एवं केन्द्रीय प्रमुख पार्टियों को एवं प्रधान पदासीन नेताओं को भारी राजनैतिक उलझन का सामना करना होगा । परिणामस्वरूप केन्द्रीय शासनतन्त्र में परिवर्तन के प्रबल योग बनते हैं।"

(६) सवंत् २०५३ के निर्वाचन संग्राम के बारे में की गई भविष्यवाणी, जिसके बारे में भारत के गण्यमान्य नेता भी हमें फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में लिखने के लिए विवश हो उठे -

सं. २०५३ वि. के पंचांग में पृ. २१ पर कालम २ में स्पष्टरूप से 'त्रिशंकु संसद' बनने की घोषणा की गई थी, संदर्भ उद्धृत है :-

"भारत स्वतन्त्रता कुण्डली में सप्तम भावस्थ स्वस्थ शनि संकेत देता है, कि इसवर्ष लोकसभा निर्वाचन में कांग्रेस पार्टी का टकराव सशक्त प्रतिद्वन्द्धी भाजपा से होगा। लेकिन भाजपा एवं कांग्रेस (आई.)" के बीच जबरदस्त मुकाबला होगा, परिणामस्वरूप इस लोकसभा निवार्चन के परिणाम अप्रत्याशि होगें और पूर्ण बहुमत किसी भी पार्टी को प्राप्त न होगा। केन्द्रीय वर्तमान मन्त्रिमंडल में १९९६ ई. के मध्य से पूर्व विशेष परिवर्तन संभावित है।

कांग्रेस (तिवारी) नगण्य रहेगी । वामपन्थी मोर्चा व राष्ट्रीय मार्चा में शमिल विभिन्न घटकों में सैद्धांतिक विरोधाभास व टकराव की स्थिति बनी रहेगी सत्ता प्राप्ति के लिए कुछ घटक प्रमुख पार्टी का बल देंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी निर्वाचन संग्राम में किसी भी पार्टी को बहुमत न मिल सकेगा। परिणामस्वरूप केन्द्र में "त्रिशंकु संसद" बनेगी । जो भी बड़ी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पार्टी नई सरकार बनाएगी वह कोलीशन या गठबंधन वाली ही होगी। ऐसा ग्रहस्थित के आधार पर विचार है, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

इस भविषयवाणी की सफलता पर पंचांग प्रेमी जनता ने हमें पत्रों द्वारा जो उत्साहवर्धन किया है, उसके लिए हम आभारी हैं।

सं. २०५४ वि. के पंचांग में जो भविष्यवाणियां की गई थी, वे भी आश्चर्यचकित कर देने वाली हैं, सभी की चर्चा करना तो यहां संभव नहीं, लेकिन कुछ प्रमुख भविष्यवाणियों की चर्चा कर देना युक्तिसंगत समझते हैं -

(१) 'धमाकेदार स्कैण्डलों' के उजागर होने की भविष्वाणी निम्नांकित शब्दों में की गई थी - देखें सं. २०५४ वि. के पंचांग में पृष्ठ १८ कालम २ से उद्धृत पंक्तियां:-

"सं. २०५४ विक्रमी में सत्तारूढ़ दल को विशेष संकट का सामना करना पड़ेगा, लेकिन देश की प्रभुसत्ता एवं मान सम्मान बना रहेगा। पुराने बोफोर्स आदि मसले पुनः उजागर होंगे, परिणामस्वरूप कई प्रतिष्ठित पुरातन नेताओं की संक्लिप्तता सिद्ध होगी। इन घोटालों में संक्लिप्तता महानायकों के नाम भी प्रकाश में आएंगे, जिससे कुछ अन्य धमाकेदार स्कैण्डल भी सामाने आने के योग है"

स्पष्ट है, कि सत्तारूढ़ प्रमुख दल (जनता दल) के वरिष्ठ श्री लालू प्रसाद जी चारा घोटाले में, कुछ हवाला केस, कुछ यूरिया घोटाले में संक्लिप्त होने से जेल भोग रहे हैं।

(२) १५ दिसं. १९९६ को श्री नरसिंहाराव के बारे में पृ. २०, कालम २ के अन्त में स्पष्ट शब्दों में घोषणा की गई थी -

"बहुचर्चित नेता श्री नरसिंह राव जी की ग्रहस्थिति प्रतिकूल है। जून १९९८ तक का समय इनके लिए अनुकूल नहीं। इनके जीवन में अवांछित घटनांए घटित होंगी। १९९८ ई. इनके लिए अप्रिय घटना क्रम को लेकर आएगा।"

स्पष्ट है, कि श्री नरसिंहराव को धोखाधड़ी के केस में उलझना पड़ा एवं कानूनी विशेष संकटपूर्ण परिस्थिति का सामना करना पड़ा है।

(३) सत्तारूढ़ मोर्चा की स्थिति के बारे में जो लिखा था, वह ठीक घटित हुआ है। पृ. १९, कालम १ पर सं. २०५४ में प्रकाशित पंक्तियां-

"वर्षलग्न में गुरु, शनि अस्त हैं, मुंथेश-बुध, राहु, सूर्य के बीच कर्त्तरी योग से ग्रस्त है, संयुक्तमोर्चा किंवा सामयिक-सत्तारूढ़ दल के घटक पार्टियों के प्रधान-नेताओं एवं राजनैतिक दलों को इस संवत् के पूर्वार्ध में ही भारी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि संवत् का राजा स्वयं मंगल (जोकि वर्ष प्रवेश का लग्नेश भी है) अपनी नीच राशि की तरफ जा रहा है। भारतीय - राजनैतिक दलों एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल पुथल एवं परिवर्तन के संकेत लगभग सं. २०५४ के आरम्भ में ही ग्रहस्थिति के अनुसार स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सं. २०५४ के आरंभ से पूर्व किंवा प्रारम्भिक मासों में ही शासनसत्ता में नाटकीय परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं।"

(४) आगे प्रधानमन्त्री देवगौड़ा जी के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी ने तो पाठकों को स्तब्ध कर दिया। पढ़ें -सं. २०५४ वि. के पंचांग के पृ. १९ कालम २ पर प्रकाशित पंक्तियां पढ़े-

ध्यान दें -कि ५ फरवरी सन् १९९७ ई. को मंगल वक्री भी हो जाता है और १३ मार्च को शनि अस्त हो रहा है। - यह ग्रहस्थिति सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार के लिए पेचीदा है, इस अवधि में प्रधान नेता को विषम चक्रव्यूह से निकलना कठिन होगा, वैसे तो संवत् २०५४ को प्रारम्भ के लगभग केन्द्र सरकार में विशेष परिवर्तन के योग है।

पाठक जानते हैं, कि ११ अप्रैल को देवगौड़ा सरकार भंग हो गई थी। २१ अप्रैल को श्री इन्द्रकुमार गुजराल जी नए प्रधान मन्त्री बने।

(५) कांग्रेस पार्टी में श्रीमती सोनिया गांधी के प्रवेश का संकेत पंचांग में सं. २०५४ पृ. २०, कालम २ पर कांग्रेस शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टरूप से निम्नांकित शब्दों में किया गया था पढ़े-

"कर्मक्षेत्र (कन्या राशि) का स्वामी बुध होने से मीन के गुरु में किसी पुराने कांग्रेसी नेतृत्व- परिवार की मदद मिलने से इस पार्टी को पुनः चेतना मिलने का योग है।"

पाठक जानते हैं, कि ८ मई को श्रीमती सोनिया गांधी ने कांग्रेस में सम्मिलित हो गई।

(६) इसके अतिरिक्त १० मार्च ९७ को नेपाल में नया मन्त्रिमण्डल बना, पुराने कोइराला जी को पदत्याग करना पड़ा - सं. २०५४, पृ. १७ पर, कालम १ पर से निम्नलिखित पंक्तियां उद्धृत हैं -

"किसी देश विशेष में मार्च '९७ के अन्त तक शासन सत्ता में परिवर्तन से राजनैतिक समीकरणों में परिवर्तन आएगा। १२ मार्च' ९७ से आगे २८ मार्च तक पंचग्रही योग भी राजनीति में कहीं विशेष परिवर्तन का ही संकेत देता है।"

(७) ६ मई को दिल्ली में बम ब्लास्ट, १८ मई को तुर्की में १००० कुर्दों को कत्ल कर दिया गया। १०।१२ मई १९९७ को ईरान में भूकम्प से हजारों व्यक्ति मरे। १४ मई को बंगला देश में साइक्लोन से भारी विनाश हुआ। २५ मई को अफगानिस्तान के नेता 'दोस्तम' देश छोड़ कर टर्की भागजाने को विवश हो गए। इस बारे में पढ़े सं. २०५४ के पंचांग में पृ.१७ पर कालम १ का अन्तिम स्टैंजा-

"२४ मार्च से २ जून तक शनि-मंगल का षडष्टक एवं ३ जून तक राहु मंगल का शनि-केतु के साथ समसप्तक योग विश्व के कुछ देशों में अघटित घटनाक्रम को उजागर करेगा। कहीं राजनीति से प्रेरित हत्याकाण्ड होंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोकव्याप्त होगा। किसी जगह अग्निकाण्ड, बम विस्फोट या विमान-यान दुर्घटना में जनधन हानि का समाचार मिलेगा। कुछ राष्ट्र परस्पर सैन्य संघर्ष की स्थिति में आ खडे होंगे - परिणाम स्वरूप स्थिति गंभीर होगी। अफगानिस्तान, पाकिस्तान किंवा खाड़ी के कुछ देश विशेष संकटापन्न स्थिति में अनुभव करेंगे।"

(८) 'अणुशक्ति' के बारे में भारत ने किसी देश के आगे घुटने नहीं टेके, श्री गुजराल ने

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्पष्ट कर दिया, कि 'निरस्त्रीकरण सन्धि' में विषमता स्वीकार्य नहीं, इस बारे में पहले ही भविष्यवाणी की गई थी-पढ़े सं. २०५४, पृ. १७, कालम १ पर -

''अमेरीका, रूस, चीन, जापान, ब्रिटेन आदि देश अपने प्रभुत्व एवं दबदबे की नीति के तहत कुछ उदीयमान देशों को परमाणु 'निरस्त्रीकरण-सन्धि' का आश्रय लेकर दबाने की प्रवृत्ति अपनाएंगे। भारत की नीति इस बारे में स्वतन्त्र विचारधारा वाली रहेगी, जिसे कुछ समय बाद कुछ अन्य देशों का सहयोग भी उपलब्ध हो सकेगा।''

स्पष्ट है, कि अब कुछ मुस्लिम राष्ट्र भी भारत की इस नीति को मान्यता देने लगे हैं।

इस प्रकार अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय गत ६९ वर्षों से आपके इस मार्त्तण्ड पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा यहां कर सकना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है।

पाठको, श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे है, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम । हम उन पाठकों के भी आभारी है जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्वाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

अब सं. २०५५ वि. की ग्रहस्थिति का परिशीलन करके भावी घटनाचक्र के बारे कुछ लिखना भी प्रसंगिक समझते हैं।

सं. २०५५ की ग्रहपरिषद के आधार पर
विश्व का घटना चक्र -

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतान्त्रिक - राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण- कर्म, स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित अकाशीय- शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसार चक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्‌भुत् शक्तिमती आकाशी-कौंसल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलटफेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती है, उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. २०५५ के घटना चक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं ।

सं. २०५५ वि. में आकाशीय ग्रह परिषद् के दशाधिकारियों में ५ अधिकार क्रूरग्रहों को प्राप्त हुए हैं, एवं पांच अधिकार क्षेत्रों पर शुभग्रह प्रभावी हैं। इस संवत् का राजा शनि है, जोकि दलितवर्ग एवं क्रूर प्रकृति किंवा युद्धप्रिय है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

''शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीडपते जनः।
युद्धं नृपाणां गद-तस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्॥''

स्पष्ट है :- इस वर्ष असामयिक किंवा अपर्याप्त वर्षा से कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा। एड्स डंगुज्वर किंवा अनेक प्रकार के असाध्य रोग (महामारी) आदि से जनता संकट का सामना करे। कुछ देशों में परस्पर युद्ध ज्वाला जन्य, जनधन हानि से विश्वशान्ति भंग होगी। लोकतन्त्र राष्ट्रों में कहीं सत्ता परिवर्तन, कहीं सत्तालिप्सा से शक्ति परीक्षण हों और प्रधान-नेतृत्व किंवा दलों के समीकरणों में परिवर्तन हों। कहीं सीमा प्रान्तों पर भयावह युद्ध के बादल गरजें और सैन्य संघर्ष से वातावरण अशान्त होगा। किसी राजनैतिक किंवा युद्धभय से संत्रस्त जनता अपना स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाने के लिए विवश होगी, जिससे पड़ोसी देश प्रभावित हुए बिना न रहेंगे।

इस वर्ष का मन्त्रिपद चन्द्रमा को प्राप्त हुआ है, शनि से चन्द्रमा की शत्रुता है, और शनि के समक्ष चन्द्र हतप्रभ है। स्पष्ट है, कि राजा निरंकुश किंवा सर्वभौम सत्ता से जो भी निर्णय लेगा, वहीं अन्तिम होगा। चन्द्र का मन्त्रित्व प्रभावी निर्णय लेने में असमर्थ रहेगा। इस वर्ष के धान्येश (शीतकालीन फसलों के मालिक) शनि का मंगल शत्रु है। स्पष्ट है जब भी वर्ष में शनि-मंगल का राशि व दृष्टि संबंध होगा, तभी किसानों को परेशानी होगी। देश में राजनैतिक प्रदूषण बढ़ेगा। शासक देशहित की न सोचकर अपनी सत्ता लोलुपता में उलझे रहेंगे। प्रकृति प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। चावल, मक्का आदि मंहगे होंगे, घी तेलाआदि जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी मंहगाई से जनसाधारण में रोष व्याप्त होगा।

इस वर्ष शनि को राजापद के साथ-साथ रसेश पद भी प्राप्त है, जोकि रस (गुड़-घी-दूध) आदि में तेजी बनाएगा। वर्षा की कमी व अभाव से कहीं रोग व अकाल की स्थिति बनेगी। पशुओं में रोग से हानि हो।

इस वर्षग्रह परिषद् में शनि के पिता एवं शत्रु 'सूर्य' को भी फलेश एवं दुर्गेश (फौजों के मालिक) का पद प्राप्त है। इस प्रकार सूर्य महाप्रतापी होने से शनि के महाक्रूर एवं विनाशकारी प्रभाव को कुछ क्षीण कर देता है

ध्यान देने योग्य बात तो यह है , कि-सम्पूर्ण ग्रह परिषद् में सारे पद केवल ६ ग्रहों (शनि, सूर्य, चन्द्र, गुरु, मंगल एवं बुध) को ही प्राप्त हैं। जिनमें महत्त्वपूर्ण पद शनि-सूर्य को प्राप्त हैं। ग्रह परिषद् में सूर्य- चन्द्र मंगल का वर्षेश-शनि शत्रु है, केवल बुध के साथ शनि का मैत्री सम्बन्ध है। **बुध इस वर्ष का कोषाध्यक्ष है, शनि के प्रभाव में बुध स्वतन्त्र किंवा निष्पक्ष कार्य न कर सकेगा। ऐसी ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, कि-इसवर्ष अनेकों घोटाले होंगे एवं प्राचीन बहुचर्चित अनेक घोटालों का भण्डाफोड़ होगा, अनेक नेता प्रधान नेता की कृपावशात् राजनीतिगत दाव पेचों से घोटालों से मुक्ति भी पा लेंगे, कुछ प्रधान नेता के**

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कृपाभाजन न होने से सजा के भागी भी होंगे इस बारे में कई आश्चर्यजनक -घटनाएं सामने आएंगी । ग्रहपरिषद में सूर्य को छोड़कर सभी अधिकारी शनि के साथ समभाव (उदासीन भाव) रखते हैं। लेकिन शनि की ग्रहपरिषद् के अधिकतर अधिकारियों के साथ शत्रुभाव ही है। स्पष्ट है- इस संवत् के प्रारम्भ से पूर्व ही किसी गणतन्त्र प्रजातन्त्र राष्ट्र में शक्ति परीक्षण की स्थिति पैदा होगी और अप्रत्याशित राजनीतिक परिवर्तन होंगे। सूर्य विश्व में न्यायप्रिय शासकों के आगे आने का संकेत देता है। विश्व में प्रगतिप्रद कार्य क्रम हों, शासक एवं शासित में आगे अच्छा तालमेल बने अपने देशों के संविधान के अनुकूल कार्य करने वाले व्यक्ति निर्भय एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। एक बात और भी विचारणीय है, कि इस संवत का राजा शनि १६ अप्रैल तक मीन राशि में एवं बाद में सारे साल मेष राशि में ही रहना है - अतः इसके प्रभाव क्षेत्र में उत्तर पूर्वी भूभाग स्थित देश आते हैं। कहीं आन्तरिक अशान्ति कहीं युद्ध भय व्याप्त हो। चीन-अफगानिस्तान आदि में कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान ज्वालामुखी विस्फोट हो। इसवर्ष के मध्य में यान दुर्घटना, किंवा किसी विशेष राजनेता की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा। पूर्वीगोलार्ध के देशों में कहीं असन्तोष, आन्दोलन, सत्तापरिवर्तन एवं हत्याकाण्ड हों, कहीं राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बने। मेष का शनि बंगलादेश में गृहयुद्ध जैसी स्थिति बना देगा-ऐसा मालूम देता है । मेष राशि के शनि का फल इस प्रकार कहा है :-

''मेषस्थे भानुपुत्रे त्रिभुवन-विदिते याति धान्यं विनाशम्,
तूले तैल्ङ्ग बगे हयखुर दलितं विग्रहस्तीव्र एव।
पाताले नागलोके दिशि विदिशिगता भीत-भीता नरेन्द्राः,
सर्वेलोका विलीना प्रथम गतधना याचमाना व्रजन्ति॥''

धान्य किंवा खड़ी फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। बंगाल लंका कम्बोड़िया इजरायल फिलस्तीन अफगानिस्तान आदि में भंयकर युद्ध का वातावरण बने। अमेरीका व किसी समृद्ध देश में भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। आस्ट्रेलिया, ताइवान, मलेशिया एवं इण्डोनेशिया के आन्तरिक कुछ घटनाक्रम चीन के लिए उलझनपूर्ण सिद्ध होंगे। नाटून एवं सप्रेली द्वीप भी विवाद का कारण बन सकते हैं। कहीं युद्धभय से जनता अपना सब कुछ छोड़ कर स्थानान्तरण करने के लिए विवश होगी। इसवर्ष मेष के शनि में चीन, लंका टर्की, अफगानिस्तान, बंगालादेश, जापान जर्मनी एवं ईरान आदि किसी मुस्लिम राष्ट्र में भयंकर भूकम्प से जनधन हानि होगी। कहीं तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट, कहीं भयंकर प्राकृतिक विनाश लीला का दृश्य भी उपस्थित होने का योग है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के आकस्मिक निधन किंवा हत्या से इसवर्ष शोक व्याप्त होगा।

जगत् लग्न कुण्डली से विश्व का घटना चक्र

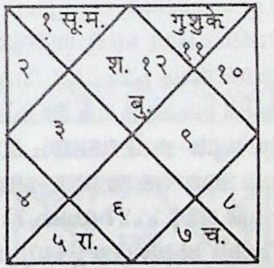

संवत् २०५५ में वैशाख कृष्ण प्रतिपदा चन्द्रवार तदनुसार १३ अप्रैल सन् १९९८ ई. को २९ घं. ३ मिनट पर विशाखा नक्षत्र, सिद्धियोग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय मीन लग्न में सूर्य देव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे ।

लग्नस्थ-शनि इस संवत् का राजा भी है, मित्र ग्रह बुध के साथ मीन राशि में है। लग्नेश गुरु अपनी राशि से बारहवें शनि के क्षेत्र में है। शनि-गुरु का जगत्-कुण्डली में राशि-व्यत्यय विश्व के लिए विशेष असुखद प्रतीत नहीं होगा।

''मीन लग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्न संग्रहः।
मध्यदेशे धान्यनाशः छत्रभंगः क्वचिद् भवेत्॥''

दक्षिणी गोलार्ध के देशों में प्रायः अमन चैन रहे, विकासोन्मुख राष्ट्रों के लिए संयुक्त राष्ट्र-महसभा द्वारा विकास एवं सुरक्षा के विशेष नियम बनेंगे, जिससे छोटे राष्ट्र अपनी अस्मिता एवं अपने राष्ट्रीय रक्षा हेतु अधिकार क्षेत्र को पहिचान सकेंगें।

धनस्थान में धनेश-मंगल, उच्च सूर्य के साथ सम्बन्ध कर रहा है। संकेत मिलता है कि विकासोन्मुख राष्ट्रों के उद्योगों में प्रगति होगी एवं उनकी आर्थिक स्थिति में विशेष उल्लेखनीय सुधार होंगे । शनि-बुध का मीनराशि में एवं मंगल-सूर्य का धनस्थ होना लोकतन्त्र एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि एवं चीन आदि कम्युनिस्ट देशों में युवावर्ग में परिवर्तन के लिए प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा। कहीं राजनैतिक धारणा के विरुद्ध आवाज उठेगी, दमन के लिए हिंसा एवं सैन्यशक्ति का भी आश्रय लेना पड़ेगा। कहीं सत्ता हस्तान्तरण का भी योग है,

जगत् लग्न कुण्डलीगत ग्रहस्थित के अनुसार यह वर्ष कुम्भ, मीन, मेष एवं तुला-राशि वाले नेताओं , राजनीतिज्ञों एवं राष्ट्रों के लिए विशेष घटनापूर्ण सिद्ध होगा। विश्व के देशों के एवं राजनीतिज्ञों (नेताओं) के लिए वैशाख, भाद्रपद, फाल्गुन एवं चैत्रमास विशेष घटनापूर्ण होंगे।

इससे पहिले कि हम सं. २०५५ वि. की ग्रहस्थिति का परिशीलन करके कुछ लिखें, संवत् २०५४ के अन्तिम चरण (मासों की) ग्रहस्थिति की समीक्षा कर लेना प्रासंगिक समझते हैं।

३१ अक्तूबर से ९ दिसम्बर १९९७ ई तक शनि मंगल दानों एक दूसरे को परस्पर विशेष दृष्टि से देख रहे हैं । राजनीतिक दृष्टि से यह समय राजनीतिज्ञों के समक्ष विशेष उलझन पूर्ण है, कहीं शक्तिपरीक्षण का अवसर उपस्थित होगा और कहीं सरकार के पतन का अवसर आएगा । बम विस्फोट भूकम्प, कहीं यान दुर्घटना में जनधन हानि हो। कहीं सीमाप्रांतों पर सुरक्षात्मक-व्यवस्था को सुदृढ़ करना पड़ेगा। एशिया महाद्वीप में कहीं भयंकर रोगों की वृद्धि से चिन्ता व्याप्त होगी। दिसम्बर से ७ जन. '९८ तक गुरु-शुक्र मंगल का एक राशि में होना, तथा २४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फर. से सं. २०५४ के अन्त तक शनि-मंगल का एक साथ मीन राशि में होना भी विश्व के कुछ राष्ट्रों में अप्रत्याशित घटना चक्र को उपस्थित करेगा। कहीं छत्र भंग, कहीं राजनीतिज्ञ की हत्या वा निधन से शोक व्याप्त हो, कहीं साम्प्रदायिक विषयों को लेकर वातावरण क्षुब्ध होगा।

सं. २०५५ वि.की. ग्रहस्थिति जन्य - घटनाओं का सक्षिप्त विशलेषण

संवत् २०५५ का राजा शनि है सवंत् के आरम्भ में ही शनि मंगल राहू के साथ षडष्टक योग ४ अप्रैल तक चलेगा। लेकिन शनि - राहु का षडष्टक योग तो १६ अप्रैल तक लगातार बना रहेगा परिणामस्वरूप अमेरीका की सैन्यशक्ति फ़ारस की खाड़ी पर अपना दबदबा बढ़ाएगी और ईरान आदि किसी मुस्लिम देश के लिए विशेष चेतावनीपूर्ण सिद्ध होगी। ग्रहगोचर के अनुसार ईराक, इजराइल फिलस्तीन, अफगानिस्तान आदि में संवत् २०५५ में संघर्षपूर्ण वातावरण रहेगा। जिससे समीस्थ-देशों की शन्ति भंग होगी। शान्ति के लिए सुरक्षा परिषद् किंवा बड़े राष्ट्रों को हस्ताक्षेप करना पड़ेगा। वैसे भी चैत्रमास में पांच शनिवार होने से पश्चिम-दक्षिण गोलार्ध के देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प से भारी हानि, कहीं अग्निकाण्ड, यान दुर्घटना में जनधन हानि के समाचार मिलेंगे - **"शनेश्च पंचक दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणि:।ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"** लंका के वारिष्ठ नेता के जीवन को इसवर्ष उग्रवादियों से खतरा है। उन्हें सावधान रहना नितान्त आवश्यक है।

४ अप्रैल को मंगल मेष राशि में आएगा। शनि भी १७ अप्रैल को मेष राशि में आकर मंगल के साथ १४ मई तक एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इस समय शनि एवं मंगल दोनों अस्त हैं । इसी बीच ६ अप्रैल को सूर्य बुध एवं १३ अप्रैल को सूर्य शनि की अंशामक युक्ति भी हो रही है। पूर्वोत्तरक्षेत्र में अमेरीका की नीति कहीं वातावरण को क्षुब्ध करे, हथियारों की विक्री से कहीं सम्बन्धों में कटुता बढे। अफ़गानिस्तान किंवा किसी अन्य मुस्लिम राष्ट्र में स्थिति बड़े देशों की कुनीति से बिगड़ेगी। कहीं गृहयुद्ध जैसे हालात बनेंगे। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय किंवा क्षेत्रीय हस्तक्षेप से खून की होली पर अंकुश लगाना आरिहार्य बन जाएगा। मई मध्य के लगभग ब्रिटेन, श्रीलंका, नेपाल, चीन एवं जापान में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि, श्रीलंका नेपाल में राजनैतिक अशान्ति, प्रधान नेता को विरोधी पक्ष से जीवन भय किंवा अपदस्थता का भय बनेगा।

१५ से २४ मई तक शनि-शुक्र एवं बुध की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष अमेरीका, ब्रिटेन आदि कुछ देश तालिबान को प्रोत्साहित करके अफगानिस्तान के वातावरण को खराब कर देंगे। ईरान के साथ भी आन्तरिक-सम्बन्ध ठीक न रहेंगे।

२५ मई को गुरु मीन राशि में पदार्पण करेगा। स्पष्ट है कि गुरु के मीन में रहते रहते लगभग सितम्बर तक संयुक्त राष्ट्र के स्थायी सदस्यों (अमेरिका,ब्रिटेन आदि) की निरंकुश शक्तियों (वीटो पावर) पर अंकुश लगने की आवाज प्रबल होगी और संयुक्त राष्ट्र में नए सदस्यों का समावेश होगा। इस प्रकार संयुक्तराष्ट्र के नवीकरण के प्रश्न पर प्रभावशाली पांचराष्ट्रों में से कुछ विरोध करेंगे और संयुक्त राष्ट्र संघ से कुछ देश विरोधस्वरूप अपनी सदस्यता वापिस लेने पर भी विचार कर सकते है। लेकिन 'संयुक्तराष्ट्र' पर किसी एक ही प्रभावी देश का वर्चस्व समाप्त हो जाएगा। मई से अक्तूबर तक सुरक्षा परिषद् का विस्तार होने पर विकासशील देशों में कुछ प्रमुख देशों को प्रातिनिध्य मिलेगा। लातीनी, अमेरिका के एक देश का सुरक्षा परिषद् का मैम्बर बन जाने का योग भी है ग्रहगोचर के अनुसार तुर्की में कट्टरपन्थी इस्लामिक पार्टियों की वृद्धि होगी। जर्मनी में भी रहने वाले तुर्कों के सामाजिक जीवन में परिवर्तन आएगा । जर्मनी में विदेशी अल्पसंख्यक समुदाय में असुरक्षा की भावना पनपेगी एवं धार्मिक कट्टरवाद बढ़ने लगेगा।

इसी बीच २७ जून से १० अगस्त तक मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। १८ जुलाई को गुरु एवं ३१ जुलाई को बुध वक्री हो रहा है। बुध -शनि एवं गुरु ये सब इस समय मन्दगति में है। इस समय किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा । कहीं अग्निकांड से भारी जन-धन हानि होगी, कहीं अकाल की स्थिति बनेगी। किसी मुस्लिम राष्ट्र में भारी आन्तरिक अशान्ति से हानि के समाचार मिलें एवं कहीं सत्ता में नाटकीय-परिवर्तन आने के योग भी है।

१५ अगस्त को शनि वक्री हो जाएगा एवं २२ अगस्त को शनैश्चरी अमावस वाले दिन खण्डग्रास सूर्य ग्रहण घटित होगा। इस ग्रहण का प्रभाव एशिया महाद्वीप के देशों पर आस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया के पूर्ववर्ती क्षेत्रों पर तथा न्यूगिनी आदि द्वीपों पर दिखाई देगा। कहीं भूकम्प, कहीं अग्निकाण्ड, कहीं समुद्री तूफान आदि से जनधन हानि आदि के योग भी बनते हैं।

लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार यह भी स्पष्ट है, कि इस वर्ष मध्य के लगभग तक ब्रिटेन के धर्मगुरु (पोप) के लिए समय खतरनाक है । ब्रिटेन में किसी गण्यमान्य विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। इस अवधि में १० सितम्बर को गुरु वक्री होकर पुन: कुम्भ राशि में आ जाता है। कुम्भ राशि में स्थित गुरु पर राहु शुक्र बुध की दृष्टि है। इस अवधि में कुछ देशों के व्यापरिक सम्बन्धों में परिवर्तन हो। कहीं राजनयिक- सम्बन्ध बिगड़ें।

. २७ सितम्बर से १५ नवम्बर तक मंगल राहु सिंह राशि में रहेंगे। इन पर इस समय गुरु की दृष्टि है। लेकिन गुरु वक्र चल रहा है। अत: कुछ देशों की आन्तरिक-स्थिति विशेष खराब रहेगी। जापान, टर्की, अफगानिस्तान, इण्डोनेशिया, बंगालदेश किंवा अमेरिका में कहीं भयंकर भूकम्प, चक्रवात, समुद्री-तूफान आदि से हानि संभव है। १६ नवम्बर से ११ जनवरी १९९९ ई तक शनि-मंगल का षडष्टक तथा १२ जनवरी '९९ से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का सम-सप्तक योग विश्व में अघटित घटनाओं को प्रस्तुत करेगा। इस वर्ष संयुक्तराष्ट्र महासभा, सुरक्षा-शान्ति को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठाएगी। बड़े राष्ट्रों का संयुक्त राष्ट्र कुल से एकमात्र प्रभुत्व कम होगा कुछ अन्य राष्ट्रों को भी प्रातिनिध्य प्राप्त होगा। आतंकवाद, अपराध एवं मादक पदार्थों के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष के लिए विशेष प्रावधान बनेंगे। नारी शक्ति को विशेष स्थान उपलब्ध होगा। सुरक्षा परिषद् में वीटो शक्ति पर अंकुश लगे एवं बहुमत से पारित कार्यप्रणाली लागू हो।

नवम्बर' ९८ से मार्च मध्य के लगभग तक शनि-मंगल, गुरु की स्थिति एवं गोचर पोजीशन को को दृष्टि में रखते हुए ज्ञात होता है, कि-इस अवधि में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रिक्त होगा, कहीं सीमाप्रान्तों पर विषम परिस्थिति एवं सेना की गतिविधि से शान्ति भंग होगी। गाड़ी, वायुयान आदि की दुर्घटना एवं कहीं अग्निकांड व प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प आदि से विशेष कष्टप्रद स्थिति बनेगी।

यूरोप के देश

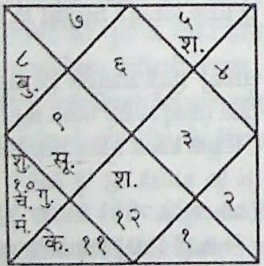

यूरोपीय देशों की कुण्डली में चतुर्थभावस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। पंचम भाव में गुरु-मंगल-शुक्र एवं चन्द्र हैं। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, कि इस वर्ष यूरोप के देशों में व्यावसायिक सम्बन्ध प्रबल होंगे। लेकिन अमेरिका फ्रांस, आयरलैण्ड, ब्रिटेन आदि के लिए यह वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहेगा। जर्मनी, रूस रोम, इटली, स्पेन, डैन्मार्क आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि तथा यूरोपीय देश में कहीं राजनैतिक हत्या से शोक व्याप्त होगा। कुछ देशों में मुद्रास्फीति बढ़ेगी। ब्रिटेन आदि के राजकुल व अन्य आन्तरिक समस्याएं बढ़ेगी। तटवर्ती देशों में कहीं भूकम्प किंवा प्राकृति प्रकोप से जनधन हानि संभव है। मीन एवं कन्या प्रभावराशि वाले देशों को विशेष उलझनपूर्ण स्थिति में से गुजरना होगा कहीं प्राकृतिक आपदा एवं शासन सत्ता में उलटफेर हों।

मुस्लिम देश

हिजरी सन् १४१९ की कुं.

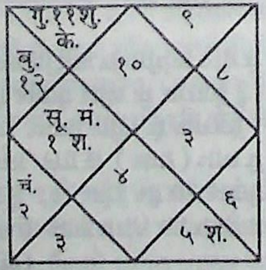

(२८ अप्रै. १९९८ ई.)

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली में गुरु-शु-केतु धन स्थान में हैं तथा चतुर्थ भाव में नीच शनि का मंगल एवं सूर्य के साथ मेल हो रहा है। स्पष्ट है कि यावन राष्ट्रों में ही परस्पर उलझने बढ़ेंगी। विशेषत: इराक, ईरान एवं पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि में आन्तरिक सम्बन्ध मधुर न रहेंगे। इन देशों में कहीं आन्तरिक क्रान्ति, रक्तपात को दृष्टि में रखते हुए सुरक्षा परिषद् को दखल देना पड़े। पाकिस्तान में आन्तरिक फूट से स्थिति उलझेगी और नेतृत्व परिवर्तन के स्पष्ट संकेत मिलेंगे। किसी बड़े नेता को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। बंगला देश, टर्की एवं अफ्रीकी देशों के लिए भी यह वर्ष, भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक-प्रकोप से कष्टप्रद मालूम देता है। २५ मई से १६ अगस्त तक तथा २७ सितम्बर से सम्वत् के अन्त (मार्च) तक की ग्रहस्थिति मुस्लिम-राष्ट्रों के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेगी। कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति की हत्या, कहीं सत्ता हस्तान्तरण, कहीं आन्तरिक क्रान्ति व अशान्ति से विशिष्ट व्यक्ति को पदत्याग करना पड़े। हिजरी सन् का प्रारंभ मंगलवारी होने से विश्व के पूर्वी एवं उत्तरी भूभाग पर अकाल की स्थिति बने। खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी बने। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो।

सं. २०५५ वि. की वर्ष कुण्डलियों के अनुसार

भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का सर्वेक्षण

नववर्ष प्रवेश कुं.

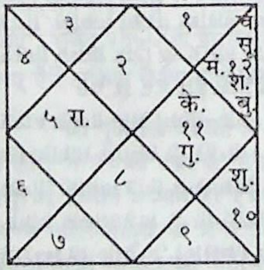

स्वतन्त्र भारत जन्माङ्ग

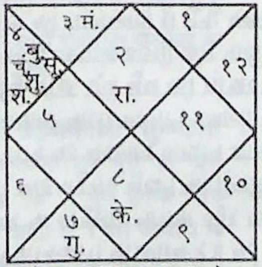

(१५ अग. १९४६)

भारत का ५१ वां वर्ष

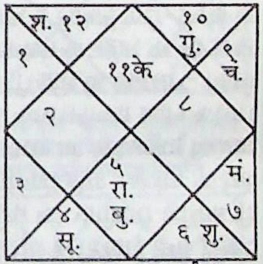

(१५ अग. १९९७ ई.)

गतवर्ष की नवम्बर (१९९७ ई.) से संवत् २०५४ के अन्त तक की ग्रहगति के अनुसार भारतीय-राजनीतिक परिदृश्य पर संक्षेपेण दृष्टिपात करने से एक बात स्पष्ट मालूम देती है, कि भारत के उ.प्र. आदि कुछ प्रांतों में शासन सत्ता के अस्थिर होने एवं सत्ता परिवर्तन के योग हैं। साथ ही केन्द्रीय शासन सत्ता के लिए भी यह समय अग्निपरीक्षा का ही मालूम देता है। कांग्रेस आदि कुछ राजनीतिक दलों के अग्रणी नेता अपनी महत्वाकांक्षा किंवा सैद्धांतिक मतभेदों के कारण केन्द्रीय-शासन सत्ता से कभी भी अलगाव की स्थिति पैदा करके देश में राजनैतिक सन्तुलन को बिगाड़ सकते हैं।

सवंत् २०५५ वि. की वर्ष प्रवेश कुण्डली के अनुसार वृषलग्न में संवत् का उदय हुआ है। पश्चिम में कहीं अकाल की स्थिति बने। पूर्वीय-प्रान्तों में कहीं अवांछित तत्त्व प्रभावी हों। उत्तरी प्रान्तों में कहीं राजनैतिक-अस्थिरता बने। दक्षिणी गोलार्ध में वर्षा, तूफान व प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हो।

नववर्ष कुण्डली के आमदन भाव में सूर्य-शनि-मंगल चन्द्र एवं बुध का एक साथ होना भारत के विशिष्ट राजनीतिक पार्टियों के समक्ष एक विशेष प्रश्नचिह्न बनाता है, आगे नीति-निर्धारण में कई पार्टियां अपना स्वतन्त्र निर्णय लेने में दुविधा में पड़ जाएंगी। सूर्य-शनि-मंगल क्रूर एवं परस्पर शत्रुभाव रखते हैं अत: संयुक्त मोर्चा सरकार एवं अन्य दलों को इस वर्ष निश्चित-रूप से 'मध्यावधि चुनाव' का सामाना करना ही पड़ेगा, परिणाम स्वरूप कुछ विरोधी सिद्धांतों वाले घटक बिखर जाएंगे और सत्तारूढ़ दल क्षीण हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जाएगा। पुनः राजनैतिक अस्थिरता एवं दलों के ध्रवीकरण का प्रश्न सामने आएगा। ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था में इस वर्ष विशेष सुधारात्मक-प्रस्ताव आने पर भी कोई खास उपलब्धि न मिलेगी। सत्तारूढ़ दल को विशेष अर्थशास्त्रियों का मशबरा लेना पड़ेगा। **ध्यान दें :** नववर्ष प्रवेश कुण्डली एवं स्वतन्त्र भारत का जन्माङ्ग दोनों का वृष लग्न है। जो कि इस वर्ष भारतवर्ष के लिए कई अघटित -घटनाओं को जन्म देगा।

स्वतन्त्र भारत के ५१ वें (इक्यानवें) वर्ष लग्नेश-शनि के साथ मंगल का षडष्टक योग बना हुआ है। वर्ष कुण्डली में विशेष ध्यान देने लायक है, कि-कोई भी ग्रह अपनी राशि में स्थित नहीं। लग्नेश-शनि लग्न से दूसरे है। आयेश गुरु, लग्न से (व्यय) भाव में है तथा सप्तमेश-सूर्य अपनी राशि से बारहवें, अष्टमेश-बुध अपनी राशि से बारहवें , भग्येश-शुक्र अपनी राशि से बारहवें तथा कर्मेश मंगल भी अपनी राशि से बारहवें है। ग्रहों का यह चक्रव्यूह भारत में राजनीतिक, आर्थिक किंवा सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से अघटित-घटना चक्र को जन्म देगा।

कांग्रेस का अन्तर्कलह, जनता दल में घटक दलों का सिन्द्धांत वैमत्य,कम्युनिस्टिक-पार्टियों का युनाइटड़ फ्रंट के प्रभावी गुट में न आने की राजनीतिक उद्विग्नता, क्षेत्रीय दलों के बीच अपनी-अपनी राजनैतिक जिम्मेदारी बचाने की बेचैनी, जनतादल में यादवी महत्वकांक्षा अन्य दलों की नगण्यता आदि कारणों से सत्तारूढ़ दल (संयुक्त मोर्चा) में दरार पडेगी, परिणाम दूरगामी एवं निराशाजनक रहेंगे।

स्वतन्त्र भारत के ५१ वें वर्ष लग्न की कुण्डली में सत्तारूढ़ पर्टियों के सदस्य ही विरोध एवं टकराव की स्थिति बना देंगे। **सत्ता से अलग प्रभावी पार्टी अपना हाथ खींच लेगी , परिणामस्वरूप प्रधानशासक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाऐंगे जहां से निकलना संभव न होगा और भारत का केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल शक्ति परीक्षण में असफल सिद्ध होगा।**

स्वतन्त्र भारत के ५२ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार (१५ अगस्त १९९८ ई. के बाद) **कालसर्प योग** बन रहा है ; सभी ग्रह राहु-केतु के अन्तर्गत हैं । स्पष्ट है, कि इसवर्ष जो भी राजनैतिक-परिवर्तन होंगे, वे भी देश की शासन सत्ता को पूर्ण स्थायीत्व प्रदान न कर सकेंगे । हां, दशम भाव में अपनी राशि में स्थित- गुरु से संकेत मिलता है, कि प्रधान नेतृत्व किसी बड़ी पार्टी को प्राप्त होगा, जोकि बाहर से समर्थन न देकर सक्रिय राजसत्ता की भागीदार होगी, जिससे अपेक्षाकृत् स्थायीत्व की आशा की जा सकेगी।

भारत के ४९ वें वर्ष की **गणतन्त्र कुण्डलीगत ग्रहस्थित** पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि - इस वर्ष राष्ट्रपति का राजनीतिक दायित्व बढेगा। शनि का गुरु के क्षेत्र में एवं गुरु का शनि के क्षेत्र में होना विशेष राजनीतिक चिन्तन का भार देश के वरिष्ठ नेता पर निर्भर करता है, वैसे मंगल राहु का समसप्तक योग देश में आर्थिक , औद्योगिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के लिए अच्छा नहीं । भारतीय प्रान्तों एवं केन्द्रीय शासन -सता में प्रछन्न रुप से कुछ बाह्य देश अपनी कुनीति से हलचल पैदा करने का प्रयास करेगें, लेकिन भारत के कुशल-राजनीतिज्ञ स्थिति पर कंट्रोल रखने में सक्षम रहेंगें ।

संवत् २०५५ की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार : संवत् का राजा शनि १६ अप्रैल तक मीन राशि में ही रहेगा । उसके बाद संवत् के अन्त तक मेष राशि में ही रहेगा। अत:१६ अप्रैल तक शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ रहेगी। शनि संवत् का राजा होने से केन्द्रीय शासन सत्ता को भी प्रभावित करता है। उत्तरी भारत में कोई नेष्ट वारदात किसी तीर्थ स्थल पर होने की संभावना बनती है । १३ से २१ अप्रैल के मध्य सूर्य-शनि-मंगल का अश्विनी नक्षत्र में होना शुभ नहीं ।

१७ अप्रैल से १४ मई तक शनि-मंगल का मेष राशि में एक साथ रहना भारतीय गणतंत्र की राजनीति में अकल्पित परिवर्तन का संकेत देता है। मई १९९८ से पूर्व ही कोई प्रभावी पार्टी जनहित के नाम पर कांग्रेस संयुक्त मोर्चा से समर्थन वापिस ले लेगी, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कुछ अन्य राजनीतिक दलों से पुनः तालमेल बनाकर सत्ता प्राप्त करने की नीति अपना सकते हैं, जिसे किसी अन्य राष्ट्रीय -सरकार आदि नाम देकर निर्वाचनों से बचना चाहेंगे । लेकिन निकट भविष्य में चुनाव से बचा नहीं जा सकेगा ।

इस वर्ष की ग्रहगति के अनुसार हम यह स्पष्ट कर देना चाहेंगे, कि - साम्प्रदायिकता-मूलक दल सरकार को सुचारु रूप से न चला सकेंगे । यदि देश की प्रगति चाहते हैं तो राजनीतिक दल सामाजिक, आर्थिक एवं कृषि से सम्बन्धित कार्यक्रमों पर ही होने चाहिएं । भारत में चल रहे सुधारीकरण गति मन्द होने से अन्य देशों को रोजगार उत्पन्न करने में मदद मिलेगी । पश्चिमी उद्यमों के यहां पनपने से भारतीय उद्यमों की साख कमजोर होगी । **भाजपा,भाकपा एवं कांग्रेस का संयुक्त मोर्चे पर आक्रमण नवम्बर मध्य १९९७ ई० से ही प्रारम्भ हो जाएगा, जिसका परिवर्तनकारी परिणाम १४ मई से पूर्व ही दिखाई देगा ।** यदि चुनाव सम्पन्न होते हैं तो ग्रहगोचर के अनुसार भाजपा और कांग्रेस की भागीदारी अधिक ही रहेगी, लेकिन दोनों में से कोई भी स्पष्ट बहुमत जुटाने की स्थिति में नहीं होगा । क्षेत्रीय पार्टियों का आकार सीमित ही रहेगा । पुनरपि यह बदलाव केन्द्रीय शासन सत्ता को अपेक्षाकृत् स्थिरता प्रदान करेगा और मिली-जुली सरकारों वाली वर्तमान प्रणाली को विश्वसनीयता प्रदान करेगा।

१५ से २४ मई तक शनि-शुक्र एवं बुध की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार किसी पुरानी प्रमुख पार्टी के प्रधान के विरुद्ध आवाज उठेगी और पार्टी विघटन के कगार पर आ खड़ी होगी, लेकिन किसी विशिष्ट-व्यक्ति की मध्यस्थता से पुनः एकता बने, लेकिन पार्टी-प्रमुख के परिवर्तन का योग है ।

२५ मई को गुरु मीन राशि में आएगा, गुरु के मीन राशि में रहने किंवा कुछ आगे लगभग (सितम्बर /अक्तूबर) तक भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ किंवा सुरक्षा-परिषद् की सदस्यता प्राप्त होने के योग हैं । संसद सदस्यों के लिए शैक्षिक योग्यता का मापदण्ड निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारण नीति की घोषणा हो ।

इसी मध्य २७ जून से १० अगस्त तक मिथुन राशि के मंगल पर नीच शनि की विशेष दृष्टि है । इस अवधि में गुजरात आसाम आदि प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जनधन हानि, कहीं बाढ़, उत्तरी भारत में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड व तूफान, भयंकर बाढ़ से हानि का योग है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

राजनीतिज्ञ स्थिति पर कंट्रोल रखने में सक्षम रहेंगे । आसाम-गुजरात-महाराष्ट्र में भी भयंकर बाढ़ से हानि होगी ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१५ अगस्त को शनि वक्री होगा तथा २२ अगस्त को शनैश्चरी अमावस वाले दिन भारत में सूर्यग्रहण खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा । शासकों के लिए नानाविध समस्याएं पैदा होंगी । उड़ीसा,बंगाल, बिहार और गुजरात में प्राकृतिक आपदा से हानि होगी । यह ग्रहण कालसर्प योग में घटित हो रहा है, अत: जिन जिन क्षेत्रों में यह दिखाई देगा, वहां विशेष कष्टप्रद किंवा राजनैतिक दृष्टि से विशेष उथल पुथल वाला रहेगा । **१० सितम्बर को गुरु के वक्री होने पर** आसाम में बोडो समस्याओं से, आन्ध्रप्रदेश में आतंकवाद व जनान्दोलन, पश्चिमी बंगाल , काश्मीर में विघटनकारी घटनाएं, पंजाब में राजनीतिक हिलजुल आदि से अनिश्चितता का वातावरण रहेगा । अगस्त किंवा सितम्बर में किसी वरिष्ठ गण्यमान्य व्यक्ति किंवा किसी राजनीतिज्ञ के निधन व हत्या से शोक व्याप्त होगा;- ऐसा ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है ।

२७ सितम्बर से १५ नवम्बर तक मंगल राहु एक ही (सिंह) राशि में रहेंगे । सीमा प्रान्तों पर शत्रु देश से होने वाी अशान्ति से सावधान रहना होगा, पाक देश सीमा प्रान्तों पर गोलावारी व युद्धभय वातावरण बना सकता है । कहीं भूकम्प, तूफान, चक्रावत किंवा भयंकर अग्निकाण्ड, कहीं दुर्भिक्षि से हानि हो ।

१६ नवम्बर से ११ जनवरी (सन् १९९९ई०) तक शनि मंगल का तथा १२ जनवरी'९९ से १७ मार्च'९९ तक शनि-मंगल का समसप्तक भारत की राजनीति में अघटित घटनाओं को जन्म देगा । राजनीतिक दल सत्ता की राजनीति में लिप्त रहेंगे । सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं पर ध्यान न देकर केवल स्वार्थगत नीति पर केन्द्रित दल देश को प्रोन्नत न कर सकेंगे । परमाणु शक्ति के एकाधिपत्य को भारत स्वीकार न करेगा और परमाणु ऊर्जा को सुचारु रूप किंवां प्रगतिप्रद कार्यो के लिए प्रयोगार्थ नये आयाम बनाएगा । इस अवधि में भारत को अपनी प्रतिरक्षात्मक तैय्यारियों में सुसन्नद्ध रहना होगा । परमाणु किंवा परम्परागत हथियारों में अपनी शक्ति बढ़ानी होगी । जम्मू-काश्मीर, कारगिल, उड़ी सैक्टर की तरफ अशान्ति का वातावरण बनेगा । काश्मीर में नियंत्रण रेखा के पास किंवा सियालकोट, किशनगढ़ क्षेत्रों की तरफ शनि-मंगल की दृष्टि होने से पाकिस्तान अशान्ति पैदा करेगा।

सम्पूर्ण संवत् की ग्रहस्थिति को मद्देनजर रखते हुए मालूम होता है, कि संयुक्त मोर्चा (गुजाराल) सरकार सवंत् के प्रारम्भिक मासों में धराशायी हो जायेगी । कांग्रेस एवं जनता दल या संयुक्त मोर्चा के एक वर्ग के मध्य चुनावी गठजोड़ की संभावना बनेगी, जिससे कांग्रेस सरकार का नेतृत्व प्राप्त कर सकेगी;- ऐसी स्थिति में तथाकथित संयुक्त मोर्चा दूसरे दर्जे पर सरकार में स्थान ग्रहण कर सकेगा । लेकिन कांग्रेस की एवं संयुक्त मोर्चा की ग्रहस्थिति के अनुसार ऐसी स्थिति में कांग्रेस में अनेकों मतभेद देखने में आएंगे, जिससे संभावनाएं धूमिल हो सकती हैं । इस वर्ष चुनाव सुधारों की दिशा में विशेष कदम उठाए जाएंगे, जिससे राजनीति में भ्रष्टाचार एवं अपराध पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों प्रभुत्व नगण्य हो जाएगा ।

भारत के प्रमुख राजनैतिक-दल

संयुक्त मोर्चा कुं.

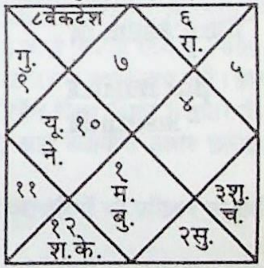

संयुक्त मोर्चा की कुण्डली के अनुसार इसवर्ष सत्तारूढ़ दल (संयुक्त मोर्चा)में संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं । नवम्बर' ९७ से संयुक्त मोर्चा पर अन्य प्रभावी दलों के प्रहार प्रारम्भ होंगे । घटक-दलों में एकता कमजोर होगी और कांग्रेस द्वारा समर्थन छलावा सिद्ध होगा । संवत् २०५५ के प्रारम्भिक-मास गुजराल सरकार के लिए ऐतिहासिक घटना वाले सिद्ध होंगे ।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी के प्रधान मन्त्रि पदार्थ शपथ ग्रहण कालीन ग्रहस्थिति

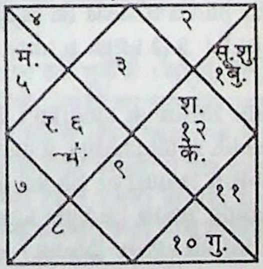

२१ अप्रै., दिन में १० बजे

श्री गुजराल जी की शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टक योग एवं कर्मेश- गुरु की नीच राशि में स्थिति ७ जनवरी १९९८ ई० से पूर्व इनके लिए विषम परिस्थितियों को जन्म देने वाली है । इस अवधि में संयुक्त मोर्चा सरकार की गतिविधि पर विशेष आक्षेप होंगे । कुछ पार्टियां अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए स्वतंत्र सिद्धांतों के कारण विमुख होने लगेंगी । कांग्रेस अपनी कई शर्तें समक्ष रखेंगी और इस प्रकार संवत् के पूर्वार्ध से भी पहिले ही गुजराल सरकार संकट को पार करने में असमर्थ अनुभव करेगी । कदाचित् शनि के मीन में आने पर (७ जनवरी के बाद) यह सरकार चलती है तो ४ अप्रैल से १४ मई तक, तथा १६ नवम्बर से संवत् के अंत तक का समय सत्तारूए पार्टी के लिए तथा प्रधन नेताओं के लिए विशेष घटनापूर्ण किंवा सत्ता से विलग होने वाला सिद्ध होगा ।

भाजपा कण्डली

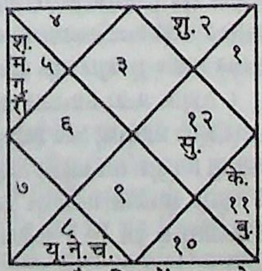

२१ अप्रै., दिन में १० बजे

भारतीय जनता पार्टी - भाजपा की जन्मकालीन एवं गोचर ग्रहस्थिति के कारण इस पार्टी को समता आदि पार्टियों का सहयोग चिरस्थयी मालूम नहीं देता । शनि-मंगल, राहु मंगल की गोचर- ग्रहस्थिति के अनुसार राजनैतिक इच्छाशक्ति, घोषित नीतियों के प्रति प्रतिबद्धता में कमी रहने से जनता का मनोबगल क्षीण होगा । लेकिन भाजपा विरोधी राजनैतिक दलों की तोषणनीति, अवसरवादिता एवं कथनी करनी का अन्तर, देश में विभिन्न धर्मानुरूप संविधान में परिवर्तन आदि से राजनैतिक क्षितिज पर भाजपा का विस्तार होता नजर आएगा । आगामी निर्वाचनों में भाजपा पुन: एक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सशक्त प्रबल पार्टी के रूप में उभरेगी, लेकिन सत्ता प्राप्त करना एक प्रबल चुनौती ही है । राजस्थान, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश में कांग्रेस -मोर्चा की सांझा रणनीति भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बनेगी । देश के राजनैतिक-क्षितिज पर भ्रष्टाचार रूपी प्रदूषण से सांसद वर्ग को शुद्ध करने के लिए भजपा विशेष कदम उठाएगी । राजनीति को अपराधीकरण से मुक्ति दिलाने के लिए भी नए आयाम उपस्थित होंगे।

कांग्रेस - कांग्रेस की स्थापना कालीन ग्रहस्थिति एवं सं० २०५५ की ग्रहस्थिति के अनुसार श्री सीतराम केसरी कांग्रेस को अधिक देर तक प्रातिनिध्य प्रदान न कर सकेंगे ।

२४ मई तक या २७ सितम्बर से १५ नवम्बर किंवा संवत् के अंत तक की ग्रहस्थिति कांग्रेस प्रधान के लिए शुभ नहीं । आगे कांग्रेस अकेले ही सत्ता में न आ सकेगी ।

यह स्पष्ट है कि सं० २०५५ की ग्रहस्थिति गठजोड़ सरकारों का ही संकेत देती है । कांग्रेस के समर्थन व सक्रिय सहयोग की स्थिति में संयुक्त मोर्चा के षटकदल विखण्डित हो सकते हैं । सभी प्रमुख पार्टियों की ग्रहगति के अनुसार सभी राजनीतिक-पार्टियों की कर्मपत्रियां किसी स्थायी, प्रगतिशील भविष्य का संकेत नहीं देती ।

कुछ प्रान्त

पंजाब- प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है । १७ अप्रैल से १४ मई तक शनि-मंगल का मेषराशि में रहना यहां की शान्ति सुरक्षा के लिए चिन्तनीय है । २५ मई को गुरु के मीन राशि में आने पर सितम्बर तक हालात ठीक रहेंगे । आगे १६ नवम्बर से ११ जनवरी १९९९ई० तक शनि-मंगल का षडष्टक यहां राजनैतिक उलझनों को पैदा करेगा । अकालीदल में ही आन्तरिक उलझनें पैदा होंगी, कहीं बम विस्फोट, राजनैतिक हत्याएं भी संभव हैं । ध्यान दें, सं० २०५५ वि० की उपरोक्त ग्रहस्थितियों व अन्य योगायोगों से संकेत मिलता है, कि कुछ आतंकवादी सक्रिय होंगे एवं विशिष्ट-राजनीतिज्ञों, वरिष्ठ अधिकारियों-व्यक्तियों को अपना निशाना बनाने की कोशिश करेंगे, प्रधान नेता सावधान रहें । भगवान् इस प्रान्त को समृद्धि एवं शान्त वातावरण प्रदान करें।

हरियाणा - प्रभाव राशि मीन एवं नाम राशि मिथुन है । मीन राशि पर राहयुत मंगल क विशेष दृष्टि २७ सितम्बर से १५ नवम्बर तक रहेगी । जो कि प्रधान नेता को उलझन में डालेगी । सवंत् के आरंभ से ही मिथुन राशि पर शनि की विशेष दृष्टि है, याहं अफसरशाही से लोग परेशान होने लगेंगे सत्तारूढ़ दल को विशेष कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा । किसान वर्ग शासन से असंतुष्ट रहे,एवं परिवर्तन के लिए विरोधीदल प्रयत्नशील रहें। जुलाई-अगस्त में वर्षा पानी से हानि का योग बनता है । १२ जनवरी सन् १९९९ से संवत् के अंत तक यहां की राजनीतिक पार्टियां नई नई योजनाएं बनाएंगी । वैसे प्रान्त में नई नई योजनाएं प्रगतिप्रद रहेंगी ।

उत्तर प्रदेश इस प्रान्त की प्रभाव राशि धनु एवं नाम राशि वृष है । संवत् २०५५ के प्रारंभ होने से पूर्व ही यहां की शासन सत्ता में परिवर्तन के योग हैं । भाजपा -बसपा गठबंधन छलावामात्र बन कर रह जाएगा । वैसे यहां राष्ट्रपति शासन १४ मई से पूर्व ही प्रभावी हो जाने के योग हैं । १७ अप्रैल से १४ मई तक उत्तराखण्ड का प्रश्न पुनः उजागर हो जाएगा । २५ मई से सितम्बर के मध्य इस विषय में सकारात्मक पग उठेगा और नए प्रान्त की संभावना बलवती होगी। १६ नवम्बर से ११ जनवरी के मध्य यहां राजनीतिक स्थिरता के लिए विशेष पग उठेंगे । निर्वाचन होने पर भाजपा बड़ी पार्टी रहेगी । संवत् के प्रारंभ में ही कुछ विदेशी तत्व विस्फोट आदि से जन धन हानि का कारण बन सकते हैं, विशेषत: धार्मिक स्थानों पर सावधान रहना चाहिए ।

हिमाचल प्रदेश- प्रभाव राशि मीन है । २५ मई को गुरु मीन राशि में आकर लगभग सितम्बर तक इस राशि को प्रभावित किरेगा । प्रधान नेता का प्रभाव यथावत् बना रहेगा । लेकिन २७ सितम्बर से १५ नवम्बर तक विरोधी राजनीतिक-पार्टियां सरगर्म होंगी । इस प्रान्त में वानिकी, फल पर्यटन एवं अन्य नई प्रकार की योजनाएं बनेंगी। १२ जनवरी १९९९ ई० से संवत् के अंत तक का समय प्रधान नेता के लिए कष्टप्रद है ।

जम्मू-काश्मीर- प्रभाव क्षेत्र तुला है । १७ अप्रैल से १४ मई तक शनि -मंगल की तुला राशि पर पूर्ण दृष्टि रहेगी इस अवधि में अग्रवादी घटनाओं से सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति तनावपूर्ण रहेगी । पाकिस्तान से इस समय तनावपूर्ण स्थिति बने । उग्रवादी-संगठन गुप्त रूप से नए कार्यक्रमों से प्रान्त की स्थिति को खराब करें । जर्मनी ब्रिटेन आदि की सरकारें उग्रवादी कश्मीरियों के प्रति नर्म रुख अपनाएंगी । १७ जून से १० अगस्त तक एवं २७ सितम्बर से संवत् के अंत तक का समय यहां की शासन सत्ता के लिए अग्रिपरीक्षा का है । विस्थापितों के पुनर्वास के लिए यहां की स्थिति आशानुरूप अनुकूल सिद्ध नहीं होगी । ग्रहस्थिति के अनुसार सीमा प्रान्तों पर सैन्य-सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए ।

पाठको! अतर्क्य-भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है । पुनरपि ज्योतिष-विज्ञान-दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं । आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं । उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य-लेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है : -

" तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन"!

शुभचिन्तक -
इन्दुशेखर शर्मा

श्री मार्तण्ड पंचांग
कार्यालय,
मु०पो०कुराली(रोपड़) पंजाब

लेख पूर्ण होने की तिथि १५ सितम्बर १९९७ई.
(अनन्त-चतुर्दशी)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार - विमर्श

[संवत् २०५५ वि. की ग्रहस्थित के आधार पर व्यापारिक-वस्तुओं में आने वाली तेजी एवं मंदी का मासिक-विवरण]

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है । जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि भोग करता है , तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक-वस्तुएं, ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तु में परिवर्तन आते हैं, और इन्हीं परितर्वनों से बाजारों में घटा-बढ़ी होती है, जिसे हम 'तेजी मंदी' कहते हैं । व्यापारी 'तेजी-मन्दी' इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है । परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक मनुष्य की स्थिति को कभी बिगाड़ता है,कभी सुधारता है । रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य कभी ऊपर उठता है कभी नीचे गिरता है- ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति:!'' कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा - यह धारणा भ्रामक है । व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार-चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र उत्तम लाभ हो जाए, जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है । अत: किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें, विश्वास रखें, ग्रहस्थित के आधार पर किए गए व्यापार में आप हानि में न रहेंगे । आप भारी हानि से भी बच सकते हैं ।

जीवन में ग्रह स्थिति के प्रभाव का अध्यन करने से यह निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं 'यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्' अर्थात् जो मेरा है वह मिलेगा ही उसे और कोई नहीं ले सकता । अत: जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमता है ।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्यशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें । वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकार-क्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे ।

हाजर एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक-जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार-विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी, मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियो, निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् २०५५ में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि इस साल व्यापार जगत में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आएंगे। गुड़, ज्वार, बाजरा, खांड, जीरी एवं रुई में पहले भयंकर मन्दे की चाल चलेगी । सरसों, तिल, घी,रेयान, कपास, बिनौला एवं चांदी, सोना आदि के भावों में भी जबरदस्त उतार-चढ़ाव आऐंगे । **रुई के व्यापारियों के लिए यह वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण है, ताजा परामर्श से उत्तम लाभ ले सकेंगे** । कहने का तात्पर्य यह है कि इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं । अत: वार्षिक ग्राहक बनकर समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। इस वर्ष ग्रहचाल के खिलाफ चलने वाले व्यापारी भारी हानि में रहेंगे जिस जगह व्यापार के लेख में हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे ।

'व्यापार विमर्श ' लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार-चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. २०४४ वि. में तिलहन एवं तेलों में भयंकर तेजी से व्यापारी लाखों का लाभ उठा चुके हैं और मन्दे की ग्रहचाल बनते ही हमने पृष्ठ ३१ कालम २ में १९ अगस्त के व्यापारिक -फलादेश से व्यापरियों को सरकार की व्यापारिक-नीति को ध्यान में रख कर काम करने की सलाह दी थी एवं तेल तिलहन में जबरदस्त मंदी की घोषणा की थी, तदनुसार तेल एवं तिलहनों में एकदम भंयकर मंदी आई, व्यापारी हानि से बच गए।

सं. २०४६ वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. २०४८ वि. में तो जो व्यपारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए हैं । हमने तेल, सरसों बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली,एवं रुई में अपने व्यापारियों को भंयकर तेजी बताई थी, सौ छ: गुणित लाभ उस साल के व्यापारियों को हमारे परामर्श से प्राप्त हुआ है । सं. २०४९ में तेल, घी, एवं शेयरों के बाजार में जो उथल-पुथल हुई है उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. २०५२-५३ में रुई एवं दालवाना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रूपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं।

सं० २०५४ में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशबरे से भारी हानि से बचे एवं गुड़ के व्यापारी लाखों कमा गए; व्यापारियों से अनुरोध है कि व्यक्ति-गत रूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे। दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं। या एक मास की फीस ५०० रू० भेजकर,टेलीफोन से तेजी,मन्दी जान सकेंगे।

सं. २०५५ में ग्रहों के वक्रमार्ग, युति, गति के अनुसार हम इस वर्ष तेजी मन्दी की विशेष लाईनों का संकेत नीचे लेख में देंगे साथ ही सामयिक तेजीमंदी का विवेचन भी करेंगे । फिर भी व्यापारियों से निवेदन है कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखकर, अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें ।

नोट: वायदा व्यापार या हाजर सौदों के व्यापार की लाईन अगर हमारे लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरंत सौदा काटकर नुकसान से बचें और डाक से या प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशवरा हासिल करें । ऐसी स्थिति में किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते । अर्थात् - व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे, यह नोट कर लें, लाभ होने पर जो व्यापारी लाभांश नहीं भेजते, उनसे आगे पत्र व्यवहार नहीं किया जाता, यह भी नोट कर लें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वायदा- व्यापारियों कि लिए हिदायतें

(१)सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उ०ने की सामर्थ्य हो ।(२)सदैव याद रक्खो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुक्सान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३)व्यापार करते समय ध्यान रहे,- कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रह- गति के आधार पर निर्णय कर लें, कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें । यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावे ।(४) यदि यह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दे के मोटे कारण भी दिखाई देने लगे और व्यापार के वक्त भी बाजार का रूख मन्दे का हो तो एसी स्थिती में हर बढ़े भाव में बचाव करते रहिए थोड़ा - थोड़ा सौदा काट कर नफा से सुलटते रहिए ।(५)व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की - यह जानने के लिए खास वस्तु के भावों को देखना चाहिए । यदि उस वस्तु में हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए-नए भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उछाल में बेच दें।(६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाऐ और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए-नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है ।(७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें । मान लो, आपने तेजी का काम किया । उधर सौदा करते ही मन्दे की लहर चल रही है तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुक्सान से बच जाओगे ।

हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रूख को ध्यान मतें रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है । इसके विरूद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदें का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है ।अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

इस वर्ष के सार्वजनिक व्यापार में तेजी मन्दी पर विचार करने से पूर्व हमें इस वर्ष के नाम एवं राजा, धान्वेश-सस्येश -रसेश पर संक्षेप में विचार कर लेना उचित होगा ।

शास्त्रों के अनुसार (सं० २०५५ वि०) संवत्सर का नाम "खर" है । इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;-

"स्वल्पावृष्टिः स्वल्पधान्यं खण्डवृष्टिःनृपक्षयः ।
छत्रभंगं प्रजापीड़ा खरेऽब्दे खरता जने ॥"

तात्पर्य यह है - वर्षा की अनेकत्र कमी से कृषि प्रभावित होगी । धान्य की कमी, कहीं राजनैतिक अस्थिरता से व्यापार प्रभावित है ।

मेघ महोदय के अनुसार - खरमास में चैत्रादि प्रथम पांच मासों में भारी वर्षा हो । गुड़ खाण्ड, घी, मजीठ, सुहागा में जोरदार तेजी रहे ।

इस वर्ष का राजा शनि होने से वर्षा पर्याप्त न होने का संकेत मिलता है । राजनैतिक-गतिविधि, शासकीय-घोषणाओं एवं राजनीतिक-अस्थिरता से व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा ।

इस वर्ष का **सस्येश-गुरु** होने से घी, गुड़, खाण्ड सहज सुलभ होने का संकेत मिलता है। लेकिन **धान्येश-मंगल** चावल, मक्का, घी, गुड़, खाण्ड, एवं तेल, तिलहन में स्पष्ट तेजी का संकेत देता है । **पुनश्च-शनि रसेश भी है,** जो कि गुड़, घी, दूध आदि रस पदार्थों में तेजी से व्यापारियों को लाभ देगा ।

इस वर्ष शरत्सस्य जातक कुण्डली के अनुसार मूंग, मोठ, बाजरा आदि शरद् धान्यों की खड़ी फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचेगी । परिणामस्वरूप धान्य मंहगे रहेंगे ।

ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली के अनुसार मेष राशि का नीच शनि एवं वृश्चिक - राशि का स्वामी मंगल-राहु के साथ होने से गेहूं, जौ, चना आदि में भी तेजी के अच्छे चांस बनेंगे ।

-शनि, राहु, केतु, गुरु, मंगल आदि ग्रहों के वक्र मार्ग, युतिजप्रतियुति उदयास्त के अनुसार यह वर्ष जौ, चना, रुई, गुड़, खाण्ड, घी एवं दालवाना में भयंकर तेजी एवं मन्दे का है। समयानुसार प्रत्यक्ष मिलकर या पत्रव्यवहार करके पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। आगे हम प्रत्येक मास में होने वाली तेजी एवं मन्दे का विचार ग्रहस्थिति के अनुसार कर रहे हैं । आशा है, व्यापारियों को हमारे इस प्रयास से लाभ होगा ।

पूर्वावलोकन - मार्च मास को अन्तिम ग्रहगोचर के अनुसार ३० मार्च के लगभग बुध का पश्चिम में अस्त होना एवं शनि-बुध की अंशात्मक-युति का प्रभाव वायदा व्यापार पर झटके के साथ तेजी एवं मन्दे का अनुभ होता है । मन्दा आते ही खरीदें और मासान्त तक तेजी आते ही, लाभ ले लें । **३१ मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर गुरु एवं केतु के साथ मेल करेगा । - यहां वायदा व्यापारी दो तरफा व्यापार करके जिधर लाभ लेगे, लें।** - यह बाजार की चाल स्थाई नहीं, जल्दी ही लाभ लें। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, कपास में एक सप्ताह तक तेजी बनने के बाद अचानक मन्दा आ सकता है,- होश्यारी से काम करें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अप्रैल (सन् १९९८ई०)

मासारम्भ में ३ अप्रैल के लगभग गुरु (वृहस्पति) पू०भा० के प्रथम चरण में आ रहा है । **इस समय गुरु कुम्भ राशि में स्थित, शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा । इस समय शनि-मंगल एवं बुध अस्त हैं ।** ग्रहस्थिति के अनुसार दोतरफा घटाबढ़ी चलेगी। धान्यादि दालवाना, गुड़, खाण्ड, चीनी, कपास, रुई, मिल-शेवर्स, पार्ट, जूट, बारदाना में तेजी से निकल जाएं अन्यथा हानि संभव है । इस समय टैम्परेरी तौर पर सोना, चान्दी, सण एवं सूत में तेजी और रुई में सामान्यता मन्दा ही रहेगा ।

४ अप्रैल को मंगल अश्विनी-नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होगा । इस समय मंगल अस्त भी है । ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, गेहूं आदि अनाजों में अचानक मन्दा या तेजी का रिएक्शन आए । लगभग सभी बाजारों में दुतरफा खींचातानी चलेगी । बाजार जिस तरफ चलें उसी तरफ व्यापार बढ़ावें । हमारे विचार से वायदा हाजिर एवं शेयर बाजारों में अच्छी उठा पटक चलेगी । चाँदी, सोना आदि धातु, ऊन, रुई, कपास, पाट, बारदाना तथा गुड़, घी, शक्कर, चीनी, आदि में तेजी बने ।

६ अप्रैल को सूर्य-बुध की अंशात्मक-युति होगी । बुध वक्री एवं मन्द गति भी है । इसी दिन शुक्र शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा । इस समय सूर्य बुध दोनों मीन राशि में स्थित शनि के साथ राशि-सम्बन्ध बना रहे हैं । शनि-बुध दोनों अस्त चल रहे हैं । सूर्य एवं शनि दोनों परस्पर शत्रु भाव रखते हैं । इस समय हाजर एवं वायदा व्यापारी बड़ी सावधानी से काम करें । एरण्ड, सूरजमुखी, अलसी, मूंगफली, सरसों, तेल, हल्दी, काली मिर्च एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी । इस समय गेहूं, गुड़ , खाण्ड, चावल, घी, रुई एवं सोना चाँदी में भी अच्छी तेजी बनने के योग हैं । यह तेजी मासमध्य तक उत्तरम मध्यमरूप से चलेगी ।

१३ अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर मंगल के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएंगा । सूर्य ग्रह तो वायदा व्यापार को तुरन्त प्रभावित करता है ।

<u>ध्यान दें –</u> **इस समय मंगल -सूर्य दोनों अश्विनी नक्षत्र में ही हैं । सूर्य शनि की १३ अप्रैल को अंशात्मक युति भी होगी ।** रुई, कपास, सूत, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, घी, शक्कर, चाँदी, सोना में तेजी बने । गेहूं, चावल, उड़द, मंग, अरहर, चना, जौ, मटर आदि में सामान्यतः मन्दा आकर तेजी बनेगी । १४ अप्रैल को बुध पूर्व में उदित होगा । इस समय बुध मन्दगति भी है । इस दिन कोई अनष्टि घटना घटित होगी , जिससे जन हानि संभव है । व्यापारिक दृष्टि से जब वक्री हालत में बुध उदय होता है तो रुई में पहले कुछ मन्दा होकर २५ दिन के अन्दर तेजी का झटका आएगा । गेहूं, चना, चावल, घी, तिल एवं लाल मिर्च में तेजी बनेगी ।

१७ अप्रैल का दिन व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इस दिन शनि अपनी नीचराशि मेष में लगभग २७ वर्ष बाद प्रवेश करेगा । इस समय मेष राशि में सूर्य मंगल के साथ शनि का मेल राजनैतिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है । समाज किंवा राष्ट्र में आश्चर्यजनक घटनाचक्र चलेंगे, जिसका प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र किंवा शेयर बाजारों पर प्रत्यक्षतः देखा जाएगा । <u>ध्यान दें –</u> १७ अप्रैल से सूर्य-शनि एवं मंगल तीनों २१ अप्रैल तक अश्विनी नक्षत्र पर ही रहेंगे । सूर्य एवं मंगल दोनों शनि के शत्रु हैं । – सोना, चान्दी, ताम्बा आदि धातु, नीलम, मोती, पुखराज आदि रत्न,लौह मशीनरी, मशीनरी के कलपुर्जे, सोयाबीन, मूंगफली, सूरजमुखी, सरसों, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, तेल, घी, रुई, कपास, दालवाना व अन्य अनाजों में तूफानी तेजी की संभावना है । अभी इस बारे में काफी विचार की जरुरत है, इस समय से कुछ पहिले ही ताजा मशबरा प्राप्त करें उत्तम लाभ होगा । <u>ध्यान दें –</u> **मेष राशि का शनि गुड़-खाण्ड में कई बार भारी मन्दा कर देता है अतः सावधानी से काम करें । क्योंकि यहां शनि-मंगल सूर्य एक साथ हैं अतः वायदा व्यापारी गुड़ -खाण्ड में भी तेजी से ही लाभ लेंगे - ऐसा विचार है, फिर भी बाजार के रुख को देख कर काम करने की ही राय है ।**

१९ अप्रैल को शुक्र पू०भा० नक्षत्र में आएगा । इस समय गुरु भी पू०भा० नक्षत्र में ही चल रहा है । गुरु-शुक्र एवं केतु तीनों कुम्भ राशि में ही चल रहे हैं । – इस समय रुई में तेजी का झटका आएगा, अनाजों में साधारण मन्दे का रुख बने । २० अप्रैल को नीच एवं मन्द गति बुध के मार्गी होनेपर बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, सावधानी से काम करें । – रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी हो । चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने । ८ दिन में गेहूं, जौ, चना, आदि अनाज तेज हों । गुड़, खाण्ड, तेल, एरण्ड, बिनौला आदि तिलहन, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी होती है । इस समय सोना में भी तेजी बने

२२ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का मंगल एवं २४ अप्रैल को रेवती नक्षत्र का बुध गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत, केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लाल चन्दन, गेरु एवं लालमिर्च में तेजी बने । गुड़, खाण्ड में तेजी मन्दे की प्रतिक्रिया जारी रहे । २७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का सूर्य सोना,चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल के बर्तन, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, सरसों, गुड़ खाण्ड, घी में तेजी करेगा।

२८ अप्रैल को शुक्र मीन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा । शुक्र विशेष रूप से कापस,रुई, गुड़, खाण्ड तथा चाँदी के बाजारों पर अपना विशेष प्रभाव रखता है । बुध-शुक्र जब दोनों इकट्ठे होते हैं तो बाजारों में जोरदार मन्दा या तेजी बनती है । क्योंकि मीन राशि में शुक्र तेजीकारक माना गया है , इसलिए रुई, कपास, तेलवाना, चाँदी, सोना, गुड़, खाण्ड, आदि सारे बाजारों में तेजी का उछाला आ सकेगा । फिर भी यदि बाजार मन्दे के बनें तो मन्दे का ही काम करें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[वायदा व्यापारी एवं दैनिक तेजी मन्दी के लिए अप्रैल ३,४,६,१३,१४ एवं १७ से २१ अप्रैल तक तथा २८ अप्रैल को तेजी लगाकर लाभ लें ।]

मई

१ मई को मेष राशि का शनि उदय होगा एवं शुक्र उ०भा० नक्षत्र में पदापर्ण करेगा । ८ दिन में रुई, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सूरजमुखी, सोयाबीन व तिल आदि तिलहनों में, चावल, मोती, चाँदी, कपूर, नमक, एवं कापस में मन्दा बने । लोहा, जस्ता, सीसा, रंग, लहसुन एवं गुड़-खाण्ड में कुछ तेजी बने ।

४ मई को मघा ४ में राहु एवं शतभिषा २ में केतु होने से घी, गुड़, खाण्ड, नमक आदि रस प्रायः तेज रहेंगे । इस समय दालवाना आदि अनाजों में भी प्रायः तेजी रहेगी । ६ मई को गुरु पू०भा० के तीसरे चरणमें आएगा । अनाज, सोना, चाँदी, सण, सूत में तेजी एवं रुई में प्रायः मन्दा रहे । ९ मई तक बाजार अस्थिर रहेंगे ।

१० मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आएगा, इसी दिन मंगल कृत्तिका नक्षत्र में एवं वक्री प्लूटो अनुराधा के तीसरे चरण में आएगा । ध्यान दें- **इस समय मेष राशि में सूर्य- शनि-मंगल पहले ही हैं, बुध भी इनके साथ मेल करके अफवाहों के साथ बाजारों में जोरदार तेजी बन सकती है । इस समय शेयर बाजार में विशेष उठापटक होगी, हमारा व्यापारियों से परामर्श है कि- बहुत ही समझ से वायदा या हाजर का काम करें, अन्यथा भारी हानि उठानी पड़ेगी ।** क्योंकि बुध बालग्रह है, जब भी किसी क्रूर ग्रह के साथ बुध मेल करता है तो उसी ग्रह के स्वभाव के मुताबिकि काम करने लगता है । **यहां बुध, सूर्य-मंगल-शनि जैसे तीन महाक्रूर ग्रहों के साथ सम्बन्ध कर रहा है, अतः हमें मन्दे की जगह बाजारों में तेजी ही मालूम देती है ।** सोना, चांदी, गेहूं, चना, जौ आदि अनाज, दालवाना, तिल, तिलहन, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी का चाँस है । इस समय शेयर बाजारों में जोरदार मन्दा आ जाए तो कोई आश्चर्य नहीं । क्योंकि राजनैतिक गतिविधि से वायदा एवं शेयर बाजार प्रभावित होंगे ।

११मई को कृत्तिका नक्षत्र में सूर्य आगए । इस समय मंगल भी कृत्तिका नक्षत्र में ही है । मंगल का विशेष प्रभाव मौसम, हवा, बरसात पर विशेष रूप से अनुभव किया गया है । प्राकृतिक-प्रकोज से कहीं फसलों को हानि आदि की खबर से बाजारों में तेजी के रिएक्शन आते हैं । ग्रह स्थित के अनुसार एरण्ड, मूंगफली, सरसों, तोड़िया, सूरजमुखी, सोयाबीन, तिल आदि तिलहन, रुई, कपास, जूट, चांदी, सोना एवं लोहा एवं बैंकों से संबंधित शेयरों में अच्छी तेजी बनेगी । ११ मई के लगभग घी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ एवं चावल में भी तेजी रहे । १३ मई को रेवती नक्षत्र का शुक्र एवं सूर्य-मंगल की अंशात्मक-युति का प्रभाव रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में मन्दा करे लेकिन दालवाना, तेल एवं तिलहन में तेजी का रुख बनाए ।

१४ मई को सूर्य वृष राशि में संक्रकमण करेगा, इसी दिन शनि अश्विनी नक्षत्र के दूसरे चरण में आ रहा है । साथ ही १५ मई को मंगल भी वृष राशि में आकर सूर्य के साथ राशि-सम्बन्ध बनाए रखता है । सूर्य -मंगल का इस प्रकार राशि सम्बन्ध १४ जून तक लगातार बना रहता है, राजनैतिक-सामाजिक जटिल समस्याओं का सामना राजनीतिज्ञों को करना पड़ेगा, जिससे राजनैतिक एवं व्यापारिक नए नए घोषणापत्र सामने आएंगे, जिससे वायदा बाजार, शेयर बाजार डावांडोल होंगे । सभी बाजारों में तूफानी घटा बढ़ी होगी । सूर्य - मंगल दोनों क्रूर ग्रह हैं, इनका एक राशि सम्बन्ध विशेष शुभ नहीं माना जाता । अतः प्रमुख बाजारों में तेजी ही प्रधान रहेगी । एक मास के अन्दर सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, लाल चन्दन, लाल मिर्च, चावल, चना, गेहूं, मक्का, दालवाना, एवं शेयरों मे तेजी का वातावरण रहेगा । इस समय तेल एवं तिलहन के व्यापारी भी तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे । **[वायदा व्यापारी १४ मई से १८ मई तक तेजी से लाभ ले सकते हैं ।]**

१७ मई को यूरेनस के वक्री होने पर बाजारों का रुख बदल सकता है, सावधानी से काम करें । १९ मई को भरणी नक्षत्र का बुध चावल-गेहूं आदि अनाजों में ८ दिन में तेजी बनाएगा । [तेल, तिलहन एवं अनाजों में २३ तारीख तक उत्तम मध्यम रूप से तेजी मन्दी रहेगी। मन्दे में खरीद करें और तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

२४ मई को शुक्र मेष राशि में आकर शनि , चन्द्र एवं बुध के साथ राशि सम्बन्ध बना रहा है । ध्यान दें - **शुक्र मेष राशि में मन्दे का ट्रेण्ड बनाता है और यदि अकेला शुक्र हो तो जोरदार मन्दा लाता है। जब यह बुध के साथ होता है तब इसके मन्द्रपन की ताकत और बढ़ जाती है । हाँ यदि बाजारों में तेजी का ट्रेंड चल रहा हो, साधारण तेजी का ट्रेण्ड बनाता है ।** मौजूदा ग्रहचाल के मुताबिक यहां शनि के साथ बुध-शुक्र का संबंध है, अतः बाजार के रुख को देखकर व्यापर बढ़ावें । हमारे विचार से जौ, चना, गेहूं आदि अनाज, घी एवं सोना, चाँदी मेंइस समय खास तेजी बनेगी । गुड़, शक्कर, बारदाना, आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। ऊन तिल, तेल, सरसों , अलसी -एरण्ड में कुछ मन्दा रहे ।

२५ मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य एवं इसी दिन पू०भा० ४ मीन राशि में गुरु का आना **विशेष महत्त्वपूर्ण है ।** पू०भा० नक्षत्र तेजीकारक है । मीन का गुरु सभी प्रमुख बाजारों में **तेजी कारक माना गया है ।** इसका विशेष प्रभाव रुई, कपास, पाट, बारदाना, तेल, तिलहन पर होता है। मीन का गुरु विशेषतः रुई, नरमा के बाजारों में जबरदस्त तेजी बनाएगा - ऐसा विचार ... **प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशबरा हालिसल करेंगे, वे विशेष**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लाभ में रहेंगे । - हमारे विचार से रुई में पहले ५० प्रतिशत तेजी आकर ६ अक्तूबर १९९८ के बाद मन्दा आएगा । घी, तेल एवं तिलहन में पहले मीन के गुरु में विशेष मन्दी बाद में तेजी बने । ताजा मशबरा प्राप्त जरुर करें - हानि से बच सकेंगे । गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, कपूर एवं नमक में भी तेजी का वातावरण रहे । २५ मई को सोमवती अमावस कुछ चीजों में मन्दा करेगी, सावधान रहें ।

२७ मई को कृत्तिका नक्षत्र का बुध ८ दिन में चान्दी तथा अफीम में खास बढ़ावढ़ी के बाद मन्दा बनाए । अनाज में साधारण तेजी एवं रुई में विशेष तेजी आएगी ।

२९ मई को वृष राशि में बुध का मेल सूर्य-मंगल के साथ होगा । इसी दिन मंगल रोहिणी नक्षत्र में आ जाता है । रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग, एवं शेयर बाजारों में तेजी बनेगी । गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर में भी तेजी बने ।

३० मई को बुध अस्त हो रहा है । बुध का सूर्य-मंगल के साथ राशि सम्बन्ध है । रुई में घटाबढ़ी चले , पहले तेज, बीच में मन्दी, अंत में फिर तेज हो । सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने ।

[वायदा एवं दैनिक तेजी मन्दी के लिए महत्वपूर्ण तारीखें - मई१,१० से १८,२५,२९ एवं ३० मई को तेजी का व्यापार करके लाभ लें । २४ मई को दुतरफा लगागर व्यापार बढ़ावें । विशेष विचारार्थ प्रत्यक्ष मिलें ।]

जून

३ जून को रोहिणी नक्षत्र का बुध ८ दिन में कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी आती है । ध्यान दें- बुध अतिचारी हो गया है और सूर्य- मंगल के **साथ राशि -सम्बन्ध भी बना रहा है, इसलिए बुध मेंतेजी करने की सामर्थ्य अधिक बन गई है, विचार पर्वूक काम करें ।**

५ जून को मंगल-बुध की अंशात्मक युति एवं भरणी नक्षत्र का शुक्र सोना, चांदी, अफीम, , लाल मिर्च, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द एवं नारियल में मन्दा, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, तूअर में घटाबढ़ी तथा रुई में तेजी का ही रुख रहे ।

८जून को सूर्य एवं ९ जून को बुध भृगशिर नक्षत्र में आकर रूई,सूत, रेशम, सण, कपूर ,कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी में कुछ तेजी एवं मन्दे की प्रतिक्रिया बने । ध्यान दें - **बुध मृगशिरा नक्षत्र में आकर रुई में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा, तथा अनाजों में भी मन्दा बनाता है लेकिन यहां बुध अतिचारी होकर सूर्य एवं मंगल के साथ सम्बन्ध कर रहा है, अतः यहां मन्दे की संभावना न होकर** तेजी ही रहेगी ।

१० जून को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी। बुध, क्रूरग्रहों सूर्य-मगल के साथ है। बुध बालग्रह होने से अपना स्वतन्त्र प्रभाव नहीं रखता। क्रूर ग्रहों के साथ क्रूर एवं सौम्य ग्रहों के साथ सौम्य प्रकृति का परिचय देता है। विशेष बात यह है कि जब बुध अतिचारी होकर सूर्य के साथ अंशात्मक युति करता है तो तिलहन बाजारों पर जोरदार तेजी का असर होता है। जब भी सूर्य बुध की युति होती है तभी बाजारों में एक सप्ताह तक घटा-बढ़ी चलती ही है। बुध प्रचार एवं अफवाहों के माध्यम सेसे बाजारों में घटा-बढ़ी करता है। यद्यपि अस्त बुध वृष राशि में मन्दा करता है, क्रूरग्रह योग से हमें यहां तेजी ही मालूम देती है। फिर भी बाजार के रूख के विपरीत न चलें।

१२ जून को बुध मिथुन राशि में आकर शनि की नजर में आ जाता है। बुध अतिगामी ही है-यह ध्यान रखें। तिलहन बाजारों का जन्माङ्ग मिथुन ही है। हमारा यह निजी अनुभव है, कि जब भी अतिचारी बुध मिथुन राशि में क्रूरग्रह से हष्ट होता है तो एरण्ड, मूंगफली, सरसों, तोड़िया, सोयाबीन, अलसी, बिनौला, सूरजमूखी, तिल आदि तिलहनों में घटाबढ़ी के बाद जोरदार तेजी बनाता है। यह तेजी १५ जून तक जोरदार चल सकती है। [१० से १६ जून तक वायदा व्यापारी तेजी से उत्तम लाभ ले सकते हैं।]

१५ जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर अतिचारी बुध के साथ मेल करेगा, इसी दिन बुध आर्दनिक्षत्र में प्रवेश करेगा, इस समय शनि अश्विनी नक्षत्र के तीसरे चरण में चल रहा है। परिणामस्वरूप बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी,घी, मूंग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाजों में तेजी हो तथा सोना चांदी में भी तेजी करा रूख रहे। ध्यान दें- आद्रानक्षत्र का बुध यद्यपि अनाजों में कुछ मन्दी कारक माना गया है, फिर भी सूर्य-शनि-प्रबल होने से यहां तेजी की ही संभावना है।

१६ जून को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में एवं १७ जून को मंगल मृगशिर नक्षत्र में आकर रूई में घटाबढ़ी, जौ, चावल, हींग, तेल, सरसों, रूई, सूत, सोना में मन्दा बने। तिल एंव चांदी में तेजी मन्दे के रिएशन आएं।

१९ जून को शुक्र वृष राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। तेलवाना, रूई, कपास, जूट, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों पर विशेष प्रभाव इस ग्रहस्थिति का होगा। इस समय रूई, तिलहन एवं सोना चांदी के बाजारों में सटोरिये ज्यादा सक्रिय होंगे। क्योंकि वृष राशि,शुक्र की निजी राशि है इस राशि में शुक्र के साथ मंगल का योग रूई, चांदो एवं सोने के बाजारों में तेजी का विशेष जोर बनेगा। रूई में भी जोरदार तेजी बनेगी। सरकारी ऐलान या निर्यात (एक्सपोर्ट) की पालिसी से रूई आदि में तेजी बन सकती है। ध्यान दें- कभी कभी शुक्र अपनी राशि में आकर मन्दे की लाईन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भी बना देता है, अतः बाजार के रूख को एक दो दिन देखकर काम बढ़ायें। (वायदा व्यापारी- १६ जून को मन्दे में सौदा पकड़ें २० जून तक तेजी से लाभ लें)

२१ जून को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आकर २१ जून को ही उदय हो जाता है। रूई, चांदी, कपास, सूत, सण, एवं शेयर बाजारों में काफी मन्दा आने की संभावना है। २२ जून को सूर्य आर्द्रा में एवं गुरू उ० भा० के प्रथम चरण में आएगा। रुई, सूत, कपास, सण, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं में तेजी बने। सोना चांदी में घटाबढ़ी चले।

२७ जून को बुध कर्क राशि में आकर गुरू की नजर में आ जाता है। इस दिन शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आ जाता है। साथ ही २७ जून को ही मंगल मिथुन राशि में आकर शनि से विशेष रूप से देख गया है। रूई में मन्दा, चांदी में घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, कुसुम्भा, मजीठ तथा लालरंग की चीजों में खासी तेजी आने की संभावना है।

२९ जून को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर १० दिन में सोना-चांदी में मन्दा, रूई में घटाबढ़ी से अच्छा मन्दा बने। मणि, मोती, जवाहारात तथा ऊनी कपड़े का भाव तेज रहे।

जुलाई

जुलाई के प्रथम सप्ताह में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी मन्दी के साधारण रिएशन आयेंगे। ६ जुलाई के लगभग सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में एवं राहु मघा के तीसरे चरण में, केतु शतभिषा के प्रथम चरण में आएगा। रूई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं करयाणा में तेजी बने।

७ जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र का मंगल रूई, सूत, कपास, खल बिनौला, सरसों, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं और चाँनी को तेज करेगा। ८ जुलाई को आश्लेषा नक्षत्र का बुध एवं मृगशिर नक्षत्र का शुक्र, गेहूँ, चना, ज्वार में कुछ मन्दा करें एवं तिल, तेल सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग एवं मूंगफली में तेजी करें।

[७ से १३ जुलाई के व्यापारिक चीजों में सामान्य तेजी-मन्दी के रिएक्षन आयेंगे, मन्दे में खरीदें और तेजी में बेचकर लाभ लें]

१४ जुलाई को मिथुन राशि का शुक्र, मिथुन राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। ध्यान दें- यहां सूर्य मुगल-शुक्र पर शनि की खास नजर है। शुक्र विशेष रूप से कपास, रूई, गुड़, खाण्ड, तथा चांदी के व्यापार को प्रभावित करता है। मंगल विशेष रूप से तिलहन, रूई, कपास, पाट, वारदाना, गुड़, खांड आदि बाजारों को प्रत्यक्षतः प्रभावित करता है। इसलिए शुक्र-मंगल पर शनि की दृष्टि होने से रूई, कपास, सूती कपड़ा, पाट, वारदाना, एरण्ड, तिल, सरसों, बिनौला, सोयाबीन, मूंगफली, सूरजमुखी, अरहर, गुवार, गुड़, घी आदि में अच्छी तेजी या मन्दा बनने की संभावना है। नोट- यद्यपि मिथुन का शुक्र जोरदार मन्दा जाता है, लेकिन यहां पर मंगल का साथ एवं शनि की नजर होने से विशेष मन्दी बनने की संभावना नहीं, हमें कुछ तेजी ही मालूम देती है। बाजार को देखकर काम करें। **[वायदा व्यापारी- १४ जुलाई को दुतरफा व्यापारकरके जिधर लाभ मिले उधर लें। १४-१५ दो दिन तेजी मन्दी खेलकर लाभ लें।]**

१६ जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आएगा एवं इसी दिन मंगल भी उदित हुआ है। कर्क राशि में सूर्य का मेल बुध के साथ हो रहा है और कर्क राशि के सूर्य-बुध पर बृहस्पति की खास नजर है। इसलिए बाजार अनुमान के विपरीत चल सकते हैं। होश्यारी से काम करें। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चांदी सोना में तेजी एवं गेहूँ, चना, जौं, मटर, अरहर, उड़द, मूँग एवं चावल में मन्दा आए।

१८ जुलाई को बृहस्पति वक्री हो रहा है। इस समय गुरू ग्रह [०।६] की मन्द गति में भ्रमण कर रहा है, इस तारीख को व्यापारी अपनी डायरी में विशेष रूप से नोट कर लें। जब भी गुरू मीन राशि में वक्र होता है तब रूई एवं काटन (नरमा आदि) के व्यापार में उत्तम लाभ का चांस बनता है:-

मीन राशि गतो जीवः वक्रतामुपयाति चेत्।
कार्यासस्यार्ध-सम्प्राप्तिः लाभस्तेषां चतुर्गुणः॥

इस समय सरकारी नीति व घोषणा को ध्यान में रखें, क्योंकि मीन राशि में गुरू के वक्री होने पर सिक्के की कीमत गिरने की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। ग्रहगोचर के अनुसार हमें इस समय रूई, कपास, पाट, बारदाना में उत्तम लाभ का चांस मालूम दे रहा है। **व्यापारियों को हम ताजा उत्तम लाभप्रद चांस देंगे। केवल इतना ही जान लेना काफी नहीं है, विचार करना बाकी है। यदि वे प्रत्यक्ष आकर या पूरी फीस भेजकर जानना चाहें। इस समय रूई-नरमा के व्यापारी पिछले सभी नुक्सान भूलकर उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।**

२० जुलाई को पुष्य नक्षत्र में सूर्य, आर्द्रा नक्षत्र में शुक्र एवं इसी दिन मन्दगति बुध मघा सिंह में आकर राहु के साथ मेल करेगा। चांदी, सोना, सूत, रूई व ऊनी वस्त्र, देवदारू व खट्टे पदार्थों में तेजी बने। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, आदि रस पदार्थों मे मन्दी आती है। गेहूँ, चना, जौ में अचानक तेजी या मन्दे के रिएक्शन आयेंगे।

२७ जुलाई को पुनर्वसु नक्षत्र में मंगल दाखल होगा। मंगल पर नीच शनि की दृष्टि है। इस समय शनि मन्दगति है। १७ दिन में रूई, चांदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, में तेजी का रूख रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३१ जुलाई को बुध सिंह राशि में वक्र हो रहा है। ध्यान दें- इस समय बुध का राहु के साथ मेल है । एवं बुध मंद गति से चल रहा है। ठीक ३१ जुलाई को ही शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। रूई, कपास,सूत, सोना, चांदी में मन्दे का वातावरण रहेगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और गेहूं, जौं, चना आदि अनाजों में मन्दा आए। इस समय रूई में विशेष मन्दे का झटका आकर तेजी आए।

नोट- ३१ जुलाई के लगभग बुध के वक्री होने पर बाजारों का रूख अचानक बदल सकता है,- सावधानी से काम करें।

अगस्त

मासारम्भ की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार बुध-गुरू एवं शनि तीनों ग्रह मन्दगति में हैं। बुध-गुरू वक्री भी चल रहे हैं।- इसके मुताबिक बाजार अनिश्चित मालूम देते हैं। कुछ बाजारों में जोरदार मन्दा व कुछ में अच्छी तेजी बनेगी,- मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

२ अगस्त को वक्री नेपच्यून उ. षा. के तीसरे चरण में आएगा और ३ अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में दाखल होगा। १४ दिन में सोना, चांदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च एवं मजीठ के भाव में तेजी बनेगी।

६ अगस्त को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय मन्दगति वक्री बुध, राहु के साथ मेल करता है। दालवाना एवं अन्य अनाज तेज रहें। सोना में घटाबढ़ी के बाद तेजी । रूई में जोरदार मंदे का झटका आ सकता है। यदि मन्दा आए तो खरीदें, आगे फिर अच्छा लाभ मिलेगा।

८ अगस्त को शुक्र कर्क राशि में दाखल होकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बना लेगा। इन पर इस समय गुरू की नजर है। **नोट करें- सूर्य के साथ शुक्र का राशि सम्बन्ध प्राय: तेजीकारक ही माना गया है, लेकिन यहां गुरू की दृष्टि होने से संभावित तेजी न बनेगी, ऐसा विचार है। शुक्र के कर्क में रहते रूई में पहले अच्छी मन्दी, बाद में तेजी आए। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी तथा चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर एवं अरहर में मन्दा हो।**

९ अगस्त को वक्री यूरेनस श्रवण २ में एवं १० अगस्त को वक्री गुरू पू० भा०४ में, साथ ही वक्री बुध आश्लेषा कर्क में दाखल होगा। कर्क राशि में सूर्य शुक्र के साथ बुध का मेल होगा, इन ग्रहों पर इस समय गुरू की दृष्टि भी है - रूई में झटके के साथ मन्दे का रिएक्शन आए। चांदी में घटाबढ़ी से तेजी, रसादि पदार्थों गुड़, घी, शक्कर, तेल, मूंगफली, सरसों आदि तिलहन, एवं सोना में पहले कुछ तेजी बाद में मन्दा बने। इस समय उड़द-मूंग आदि कुछ तेज रहें

११ अगस्त को मंगल कर्क राशि में आकर सूर्य-शुक्र-बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन शुक्र पुष्य नक्षत्र में आ रहा है। कर्क राशि में स्थित मंगलादि ग्रहों पर गुरू की विशेष दृष्टि है। रूई में रूटके के साथ मन्दे का चांस है। सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल आदि में मन्दा बने, चांदी में घटाबढ़ी चले। सब प्रकार के अनाज गुड़, शक्कर, आदि में साधारण तेजी बने।

नोट:- पुष्य नक्षत्र का शुक्र रूई में तेजी करता है अत: रूई के व्यापारी सावधानी से काम करें।

१४ अगस्त को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी। बुध अस्त,वक्री एवं मन्दगति है और १५ अगस्त को शनि वक्री हो रहा है। यहां शनि भी मन्दगति ही है। इस समय शनि-गुरू-बुध वक्री हैं। **ध्यान दें:- जब वक्री होकर बुध सूर्य के साथ युति करता है, तो बाजारों में जोरदार तेजी बना करती है।**

लेकिन बुध गुरू ,की नजर में एवं अस्त है अत: विशेष तेजी की संभावना नहीं बनती। फिर भी कपास, तेलबाना, हल्दी, मसाले (जीरा-धनिया), पटसन, बारदाना, सक्कि, कली, गेहूँ, ज्वार, चावल, घी, तेल, तमाखु, सीमिन्ट में तेजी बनने की संभावना है।

१६ अगस्त को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करके राहु के साथ मेल करेगा । सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन, मूंग, ज्वार, बाजरा, दाख एवं लाल मिर्च में **अच्छी तेजी** बन जाने की संभावना है ।१६ अगस्त को मंगल पुष्य में एवं प्लूटो मार्गी हो रहा है । सोने में जोरदार तेजी आ सकती है ।

२१ अगस्त को शुक्र जो कि मंगल-बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बना रहा है, एवं गुरु से इष्ट भी है आश्लेषा नक्षत्र में दाखल होगा ।१२ दिन में रुई में कुछ मन्दा, चावल, चाँदी एवं कपास नरमा में भी मन्दा बने।

२२ अगस्त को शनैश्चरी अमावस के दिन सिंहस्थ-चन्द्र के समय सूर्य-ग्रहण लगेगा । लोहा, तांबा, उड़द, कुलथी, लौंग, रुई, सरसों, अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, मूंगफली, बिनौला आदि तिलहन, तेल, घी,लाल एवं काली मिर्च में विशेष तेजी का रूख बनेगा ।

२३ अगस्त को बुध मार्गी हो रहा है एवं पूर्व में उदित भी हो रहा है । बुध, मंगल एवं शुक्र के साथ है। गुरु से दृष्ट है । रुई में पहले मन्दी एवं बाद में तेज़ी हो। चाँदी में घटाबढ़ी चले। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हैं। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन आदि में मन्दा बने । घी एवं लाल मिर्च में तेजी का रुख रहे ।

३० अगस्त को पू०फा० नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, रुई, सूत में तेजी का संकेत देता है । चाँदी में इस दिन घटाबढ़ी चले।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर

सितम्बर के प्रारम्भ में शुक्र सिंह राशि तथा मघा नक्षत्र में आकर सूर्य एवं राहु के साथ मेल करेगा । शुक्र का नक्षत्र-राशिचार का विशेष प्रभाव सोना एवं चाँदी पर होता है । **शुक्र जब बुध-सूर्य एवं राहु के साथ मेल करता है तो जनता में खरीदने की मनोवृत्ति प्रबल होती है । सूत, रूई, यार्ना व कपड़ा, नरमा आदि का व्यापार ऊँचे तौर पर होता है । सरकार की निर्यात नीति (एक्सपोर्ट पालिसी) की वजह से या अफवाहों से बाजार तेजी की तरफ रहता है ।**

३ सितम्बर को बुध सिंह राशि में आएगा । सिंह राशि में राहु-सूर्य एवं शुक्र पहिले ही विद्यमान है । झूठी-सच्ची अफवाहों से बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दी के झटके आएंगे । यदि बाजार तेज चलें तो जोरदार तेजी से वरना जोरदार मन्दे से लाभ मिलेगा । हमारे विचार से १ से ५/६ अक्तूबर तक सोना-ताम्बा, जौं, चना, गेहूं, लाल मिर्च, घी में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा । रुई और चाँदी मे मन्दे एवं तेजी के अच्छे रिएक्शन आएंगे ।

६ सितम्बर को आश्लेषा नक्षत्र में मंगल के आने पर चाँदी, रुई में मन्दी, एवं अनाज-दालवाना में तेजी बने ।

७ सितम्बर को राहु मघा २ में केतु धनिष्ठा ४ में आएगा । साथ ही **इस दिन शुक्र-राहु की अंशात्मक-युति भी हो रही है । शुक्र विशेष रूप से कपास-चाँदी, दालवाना, चावल, गुड़ खाण्ड, घी, पाट, बारदाना, एवं तिलहन तेलों के व्यापार को प्रभावित करता है । राहुके साथ मिलकर यह क्रूर हो जाता है, लेकिन गुरु- केतु का शुक्र-राहु के ससाथ समसप्तक योग व्यापारियों के अन्दाजे को गलत कर देगा- ऐसा विचार है । हमारे विचार से यदि तेल-तिलहन, रुई,कपास, बारदाना, चाँदी, चावलों में तेजी के बाजार हैं, तो तेजी ही जोर पकड़ेगी वरना जोरदार मन्दा बनेगा, इसलिए वायदा व्यापारी दुतरफा खेल खेलें,एवं हाजर के व्यापारी मार्कीट के रुख को जाँच कर ही व्यापार बढ़ावें ।**

[(१ से ९ सितम्बर तक बाजारों में जोरदार तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आएंगे, मन्दे में खरीदें और तेजी में छोड़ कर उत्तम लाभ लें सकेंगे ।)]

१० सितम्बर को गुरु वक्री चाल से फिर से कुम्भ राशि में आ जाएगा। इस तारीख को व्यापारी नोट कर लें । कुम्भ राशि को गुरु पू०भा० नक्षत्र में जोरदार तेजी या जोरदार मन्दे की लाईन बना देग । व्यापारियों, नोट कर लो, इस वक्त ताजा मशबरा प्राप्त करो वरना भारी हानि संभव है । वैसे पू०भा० नक्षत्र में गुरु तेजीकारक ही अनुभव किया हे, फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें । क्योंकि इस ११ सितम्बर को बुध अस्त होकर कदाचित् जोरदार मन्दा भी बना सकता है । इस समय हमारे विचार से तो जोरदार तेजी ही बनेगी, **क्योंकि कुम्भ-राशि के (वक्री गुरु पर सूर्य-राहु बुध-शुक्र की समसप्तम दृष्टि है तथा मंगल इस वक्त गुरु को अष्टम (विशेष) दृष्टि से देख रहा है ।** अतः रुई मकें ६ मास तक जोरदार तेजी होकर बाद में मन्दा हो । रुई-चाँदी -चावल के व्यापारी यदि स्टाक करें तो आगे उत्तम लाभ मिलेगा । सोना, तांबा, कासी, पीतल, लोहा एवं सीसा में ३ मास तक मन्दी रहकर बाद में तेजी से लाभ मिलेगा । अनाज , घी में मन्दा चले ।)

११ सितम्बर को बुध शुक्र की अंश-युति हो रही है - यह युति भी तेजी का ही संकेत देती है । १२ सितम्बर को बुध एवं शुक्र दोनों एक साथ पू०भा० नक्षत्र पर आ रहे हैं । ये दोनों गुरु की नजर में हैं । १४ दिन के मध्य गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं गेजूं जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मंग, चना में मन्दा बने एवं रूई में घटाबढ़ी से मन्दा बने ।

१३ सितम्बर को सूर्य उ०फा० में आकर रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, ऐरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मुंज, बांस एवं नील में तेजी आए ।

१६ सितम्बर को कन्या राशि का सूर्य रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल रंग की चीजें तेज हों । चांदी एवं शेयर बाजारों में भी मन्दे का रुख रहे । **(११ को मन्दा एवं १३ से १७ सितम्बर तक तेजी से लाभ लें)**

१९ सितम्बर को उ०फा० नक्षत्र में बुध आ रहा है, जो कि ७ दिनों में उड़द , मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी करे । रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दा हो, चाँदी भी मन्दी रहे । २१ सितम्बर को बुध कन्या राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा । रुई और चान्दीमें मन्दा, गेहूं जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी से लाभ मिले। २३सितम्बर को उ०फा० नक्षत्र का शुक्र गेहूं आदि अनाजों एवं रुई में तेजी, सोना चाँदी में घटा बढ़ी करे ।

२५ सितम्बर को सूर्य -बुध की अंशात्मक -युति एवं २६ सितम्बर को कन्या राशि में शुक्र का आगमन तथा हस्त नक्षत्र में बुध का आना चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी देगा । गेहूं आदि अनाजों, गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी करेगा । इस समय चीनी-चावल चाँदी के व्यापारी उत्तम लाभ में रहें । चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा ।

२७ सितम्बर को मंगल सिंह राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा, इस समय इन पर गुरु की दृष्टि भी है । चाँदी सोना, तांबा, लोहा आदि धातु व शस्त्र , गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूं, अलसी, रुई, लाल मिर्च, धनिया, हल्दी में तेजी बने ।

अक्तूबर

मासारमभ में बाजारों में कुछ तेजी मालूम देती है । ४ अक्तूबर को हस्त नक्षत्र का शुक्र एवं चित्रा नक्षत्र [illegible] में घटाबढ़ी के बाद बाजारों क रूख मन्दे का बनाएं । यदि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh,Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस समय अन्नभाव मन्दे हों तो स्टाक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा । खाण्ड, गुड़, शक्कर में भी घटाबढ़ी चलेगी ।

६ अक्तूबर को गुरु वक्री होकर पू०भा० के दूसरे चरण में चलेगा । अनाज, सोना, चाँदी, सण-सूत में तेजी बने । रुई में कुछ मन्दे का रुख रहे ।

७ अक्तूबर को शुक्र पूर्व में अस्त होगा । इस समय शुक्र-बुध दोनों कन्या राशि में है । इसी दिन गुरु पू०भा० के दूसरे चरण मे आ रहा है । रुई में झटके के साथ मन्दा आए । चाँदी में घटाबढ़ी के बाद देती बने । अनाजों दालवाना में तेजी के बाद मन्दा । सोना, ताम्बा, आदि में तेजी का ही रुख रहे ।

८ अक्तूबर को बुध तुला में शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा । इस समय बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि भी है । रुई, गुड़, खाण्ड, सोना एवं अफीम में तेजी रहे । चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड -बिनौला एवं मूंगफली में मन्दे का वातावरण रहे । **(८ से ११ अक्तूबर तक तेजी से लाभ ले सकते हैं ।)**

१० अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में दाखल होगा । १५ दिन में रुई, सूत, सोना, चांदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं लाल कपड़ा में तेजी बने । **११ अक्तूबर को नेप्च्यून के मार्गी होने पर बाजार का रुख देखकर काम करें, अचानक कुछ चीजों में मन्दी का संचार हो सकता है ।** १२ अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का बुध रुई में कुछ मन्दा आने का संकेत देता है ।

१४ अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का शुक्र सोना चांदी एवं अनाजों के भावों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं करेगा । **हाँ १५ अक्तूबर को बुध के उदय होने पर अनेक प्रकार की अफवाहों से बाजार टूटने लगेंगे और रुई एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में विशेष मन्दे की लाईन बन सकती है - सावधानी से काम करें ।** बुध पर गुरु-शनि की दृष्टि है लेकिन हमें बाजार टूटते मालूम दे रहेहैं । वस्त्र, रुई व शेयर बाजारों में १५ दिन में विशेष मन्दा बन सकता है । **क्योंकि आश्विन में बुध के उदय होने से कपास की उत्पत्ति अधिक होती है और दालवाना एवं अनाजों में मन्दा आता है - '' बुध ऊगे आसोज में कमल-कंकरी होय।''** एक बात और भी नोट करें, कि जब बुध तुला राशि में अकेले ही संचार करता है तो मन्दी के झटके एवं मन्दे की अफवाहों से बाजार में मन्दा आया करता है ।

(वायदा व्यापारी- १४,१५ या लगभग १६ अक्तूबर तक मन्दे का व्यापार करके लाभ ले सकते हैं ।)

१७ अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर बुध के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। इस समय शनि- गुरु की इन पर दृष्टि भी है । तेल एवं तिलहन के व्यापारी बाजार के रुख को देख कर काम करें। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, लाल चन्दन, मजीठ, श्रीफल एवं सुपारी में तेजी का वातावरण रहेगा ।

१८ अक्तूबर को यूरेनस के मार्गी होने पर एवं १९ अक्तूबर को पू०फा० में मंगल एवं वक्री शनि अश्विनी २ में आकर तिल, तेल अलसी, एरण्ड, सूरजमुखी, सोयाबीन, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, चावल, ज्वार, मिर्च (काली), सूत व गेहूं आदि में तेजी आएगी । यह तेजी कुछ दिन ही ठहरेगी, जल्दी लाभ ले लेना चाहिए ।

२० अक्तूबर को शुक्र तुला राशिमें आकर बुध-सूर्य के साथ मेल करेगा । इस समय इन पर शनि की सप्तम दृष्टि एवं गुरु की नवम (विशेष) दृष्टि है । १ मास में रुई, चांदी और चावलों में पहले तेजी और पीछे मन्दी आती है । सोना चांदी में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी गुड़-खाण्ड एवं दालवाना घी में भी तेजी का ही रुख रहेगा । २१ अक्तूबर के लगभग अनाजों में मन्दा, रुई में झटके के साथ काफी मन्दा आ जाने का योग है ।

(१८ से २० अक्तूबर तक वायदा व्यापारी जब मन्दा आए माल पकड़ें और उछाला आते ही सौदा सैटल करके लाभ लेते रहें ।)

२४ अक्तूबर को सूर्य एवं २५ अक्तूबर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर रूई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर बिनौला, सुवारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग एवं गुग्गल मेंतेजी का रुख बनाएगा । इस समय अनाज के भावों में कुछ मन्दा आ सकता है । **२७ अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि मेंआएगा । वृश्चिकस्थ बुध पर मंगल की खास नजर है। मंगल की राशिमेंबुध तेजी का सूचक है । घी तेल सरसों, रुई, चाँदी में तेजी अच्छी आ सकती है ।** इस समय सोना, ताँबा, रुई, गुड़ खाण्ड, में भी तेज बनने की संभावना है । **(एक दिन की तेजी -मन्दी खेलने वाले व्यापारी २४/२५ एवं २७/२८ अक्तूबर को तेजी लगाकर लाभ लें, कदाचित् बाजार विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काट कर हानि से बचें ।)**

३० अक्तूबर को सूर्य शुक्र की अंशात्मक युति हो रही है एवं इसी दिन बुध अनुराधा नक्षत्र में आता है । एरण्ड, अलीसी, सूरजमुखी, सोयाबीन, बिनौला, मूंगफली, तेल, हल्दी, काली मिर्च, दालवाना एवं मोटे अनाजों में तेजी का झटका आ सकता है । अनुराधा नक्षत्र का बुध सूत, सण, रुई, सोना, चांदी, में मन्दा बनाता है, ध्यान से काम करें ।

नवम्बर

मास के आरम्भ में ही बाजार अस्थिर रहेगें । ५ नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का शुक्र १५ दिन में रुई व अनाजों में मन्दा करेगा । ६ नवम्बर को शुक्र एवं नेप्च्यून की अंशात्मक -युति होगी एवंसूर्य विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करेगा । जौ, चावल ,गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, ऐरण्ड, अफीम में तेजी बने । अलसी एवं चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९ नवम्बर को राहु मघा १ एवं केतु धनिष्ठा ३ में आएगा १० को मंगल उ०फा०में एवं बुध ज्येष्ठा नक्षत्र मेंदाखल होगा । इस समय घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक एवं चावलों में तेजी बनेगी। **१२ नवम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा । मंगल की राशिमें आकर शुक्र रुई,सोना, चाँदी के बाजारों कोविशेषरूप से प्रभावित करेगा । अनुभव किया गया है, कि शुक्र अकेला कई बार जोरदार मन्दा बनाता है और जब बुध के साथ मिलता है तो मन्दे को और प्रोत्साहित करता है । इसलिए व्यापारी बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें ।** हमारे विचार के अनुसार यहां वृश्चिक राशि का शुक्र रुई, चाँदी एवं शेयर-बाजार में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी आवे,गुड़ में घटा बढ़ी चले । गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ एवं बाजार आदि अनाजों में तेजी की ही संभावना बनती है, -'' वृश्चिके तु गते शुक्र सर्वधान्यमहर्घता।''१२ नवम्बर को ही प्लूटो अनुराधा के चौथे चरण में आकर तेजी का ही संकेत देता है ।

१३ नवम्बर को गुरु के मार्गी होने पर बाजारों का रुख पलट कर सकता है; सावधानी सेकाम करें । - ३ दिन में रुई में मन्दी आकर फिर तेजी बने । चांदी मन्दी, ८ दिन में चावल, अलसी, सरसों, गुड़ एवं तमाखू तेज रहेंगे । १५ नवम्बर को अनुराधा का शुक्र २२ दिन में गड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि इन पदार्थों में मन्दा करेगा ।

१६ नवम्बर को सूर्य वृश्चिक में एवं इसी दिन मंगल कन्या राशिमें आएगा । वृश्चिक राशि में सूर्य का मेल बुध एवं शुक्र के साथ होगा और कन्या राशि का मंगल, शनि के साथ षडष्टक योग बना रहा है । - यहां बाजारों में अच्छी तेजी आ सकती है । रुई, तांबा, चांदी, सोना व ऊनीवस्त्रों में तेजी बने । रुई एवं चांदी में झटके के साथ तेजी का रिएक्शन आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी एवं लाल मिर्च में अच्छी तेजी आने की संभावना है ।

१९ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र में सूर्य जौ, चना आदि धान्यों, ऊन व सोना-चादी आदि धातुओं में तेजी करेगा । गेहूं, अलसी, मिर्च में तेजी के बाद मन्दा हो ।

२१ नवम्बर को बुध वक्र हो रहा है । इस समय बुध, सूर्य-शुक्र के साथ है । बुध के वक्र होंने पर जिन चीजों में तेजी चल रही होगी उनमें मन्दा आ सकता है तथा जिन चीजों में मन्दा होगा, वे तेज हो सकती हैं । बाजार के रुख को देखकर काम करें । -सामान्यत: घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा आता है । रुई में झटके के साथ तेजी आकर बाद में मन्दा आए । २४ नवम्बर तक बाजार उत्तम-मध्यम रुप से तेजी की तरफ ही रहेंगे ।

२५ नवम्बर को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा । अनाजों एवं दालवाना में तेजी बने, रुई में झटके के साथ अच्छा मन्दा बने, चाँदी तेजी, पाट, हैसियन और शेयर बाजारों में मन्दे का झटका आए । २६ नवम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र एवं सूर्य-बुध-वृश्चिक रही है । १५ दिन में सोना, चाँदी, चावल, गेजूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी एवं रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी हो ।

२८ नवम्बर को बुध -शुक्र की अंशात्मक युति का प्रभाव पहले कुछ मन्दा बाद में तेजी,या पहले तेजी बाद में मन्दा बनेगा, मन्दा अधिक आ सकता है - सावधानी से काम करें । क्योंकि बुध में शुक्र से भी अधिक घटाबढ़ी लाने की शक्ति है । यदि इस समय बाजारों में तेजी का ट्रेण्ड चल रहा है तो जोरदार तेजी बनेगी, यदि बाजार मन्दे हैं तो जोरदार मन्दा आ जाने का योग जान लें ।

२९ नवम्बर को शुक्र पश्चिम में उदय होगा और ३० नवम्बर को वक्री बुध अनुराधा में आएगा। घी, खाण्ड, में मन्दा, रुई, वस्त्र, सूत, सण, सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी बने ।

दिसम्बर

१ दिसम्बर को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी और 2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा में आएगा । सोना, चांदी, चावल,गेहूँ , जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, आदि तिलहन एवं तेल, गुड-खाण्ड में तेजी बनेगी । रुई में मन्दी के बाद तेजी हो । **सूर्य-बुध की अंशात्मक-युति का प्रभाव तेल तिलहन बाजारों पर विशेष रूप से अनुभव होगा ।**

४ दिसम्बर को हस्त नक्षत्र पर मंगल का आगमन दालवाना एवं घी गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी का संकेत देता है । ६ दिसम्बर को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि पर आ रहा है । धनु-राशि के शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है । यद्यपि धनु राशि का शुक्र जनरल बाजारों में मूल **रूप से मन्दे का ही माना जाता है परन्तु शुक्र पर मंगल की दृष्टि से कुछ तेजीकारक बन जाने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता ।** गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चाँदी, सोना, ताम्बा, आदि धातु एवं शेयर बाजासर तेज हों । रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी हो ।

८ दिसम्बर को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा और इसी दिन वक्री शनि अश्विनी के प्रथम चरण में दाखल होगा । रूई में पहले मन्दी होकर झटके के साथ जोरदार तेजी आए । गेहूं, चना आदि अनाजों में भी आगे तेजी बने । घी, तिल, पाट, लाल मिर्च में भी तेजी का वातावरण रहे । गुड़, लाख एवं कासी में भी तेजी ही रहेगी ।

११ दिसम्बर को बुध मार्गी होगा । रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो । गेजूं, जौ, चना, आदि अनाजों में तेजी हो । रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दा आने की संभावना बनती है । इस समय सोना में तेजी संभव है ।

CC-0. In Public Domain. Shrikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१५ दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आएगा । शुक्र पहले ही धनु राशि में चल रहा है । सूर्य-शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है । रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना चांदी आदि तेज हों। अनाजों में कुछ मन्दावन रहे ।

[दैनिक तेजी मन्दी के लिए - दिसम्बर १,८,९,१५ कौ तेजी एवं ११ को दुतरफा लगाकर लाभ लें।]

२० दिसम्बर को पू०षा० नक्षत्र में चन्द्र दर्शन होने से नमक, चावल, गेहूं, चना, जौ, चांदी, कपास,रूई एवं सूत में तेजी से लाभ मिलेगा । गुड़, तेल, सोना, चांदी में भी तेजी रहेगी ।

२१ दिसम्बर को पू०भा० ३ का गुरु अनाज, सोना, चांदी, सण, सूत में तेजी, और रुई में मन्दा बने ।

२२ दिसम्बर को यूरेनस श्रवण नक्षत्र में आएगा और २३ दिसम्बर को बुध ज्येष्ठा में आएगा । घी, गुड़, खाण्ड, एवं चावालों में तेजी से लाभ मिलेगा । श्रवण नक्षत्र का यूरेनस तेल,तिलहन में तेजीकारक ही है । लगभग २३ दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध घी, गुड़, खाण्ड एवं चावलों में तेजी बनाएगा ।

२९ दिसम्बर को सूर्य पू०षा० नक्षत्र में एवं मंगल चित्रा में दाखल होगा । १४ दिन के अन्दर तिल , तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गल, कपूर, ऊन, सण, सोना चांदी, तांबा, पीतल, चावल एवं चना में तेजी बनेगी ।

ध्यान दें , - २९ दिसम्बर को ही शनि मार्गी होगा । १५ अगस्त को शनि वक्री हुआ था । इस समय शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि है । रुई में मन्दा आकर तेजी बने । जीरा, कलौंजी, मेथे, धनिया, गुड़, शक्कर, तिल, तिलहन, हींग एवं मिर्च में तेजी किंवा मन्दे के अच्छे रिएक्शन आएंगे । विचार पूर्वक काम करें ।

३०दिसम्बर को शुक्र मकर-राशि में आएगा। मकरस्थ शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि है । गुड़ खाण्ड, घी, तेल, तिलहन, गेहूं, चना एवं दालवाना, आदि सभी तरह के अनाजों में तेजी से ल ाभ मिलेगा । रूई-चांदी में घटाबढ़ी के बाद अन्त में तेजी रहेगी । [२९ एवं ३०,३१ दिसम्बर को वायदा व्यापारी तेजी का काम करके लाभ ले सकेंगे ।]

जनवरी (सन् १९९९ ई०)

मास के आरम्भ में ही २ जनवरी को बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवष्टि होकर सूर्य के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा । इस समय मंगल की सूर्य-बुध पर विशेष नजर भी पड़ रही है । यद्यपि अकेला धनुराशि का बुध बाजारों में मन्दा बनाता है । परन्तु जब बुध सूर्य के साथ योग करता है तो यह तेजीकारक हो जाता है, यहां तो इन पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः यह योग पूर्ण रूप से तेजी का ही कहा जाएगा । रुई, कपास, सूत, चाँदी, सोना, दालवाना आदि अनाज, एरण्ड, अलसी, मंगफली, बिनौला, हल्दी, काली मिर्च एवं शेयर बाजारों में तेजी का रूख रहेगा । [१ से ६ जनवरी तक बाजारों का रुख देखकर तेजी मन्दी लगाकर लाभ लें। २,३ जनवरी को वायदा बाजार तेज ही रहेंगे।]

७ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का शुक्र चाँदी,सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द एवं अन्य अनाज मन्दे रहें। तिल तेल तेज एवं रुई में मन्दीहोकर फिर तेजी हो ।

११ जनवरी को उ०षा० का सूर्य एवं पू०षा० नक्षत्र का बुध उड़द, मंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लाल शक्कर, कपास, चमड़ा, सरसों, मूंग, सुतली में तेजी करें । इस समय बिनौला तेज, सोना चांदी में खास तेजी मन्दी के झटके आवें ।

ध्यान दें :- ११ जनवरी को ही राहु कर्क में एवं केतु मकर में दाखल होगा । लोहा, जस्ता, तांबा, पीतल, सोना व चाँदी आदि धातु और रुई में पहले ६ मासों में मन्दा आकर बाद में भारी तेजी बनेगी । गेहूं चावल में तेजी, विशेषकर ज्वार में तेजी बने । गुड़ में भी तेजी बनेगी । व्यापारियों को हिदायत है, कि रुई, सूत, कांसा, सोना-चांदी का संग्रह करें, आगे तीन मास बाद ही लाभ मिलने लगेगा । ६ मास बाद उत्तम लाभ मिलेगा । इस समय ताजा मशबरा प्राप्त करें ।

१२ जनवरी को मंगल तुला राशि में आकर मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा इस समय शनि -मंगल दोनों मंद गति में चल रहे हैं । रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, सूरजमुखी, बिनौला, मूंगफली, तिल, तेल , काली -लाल मिर्च, गुड़ खाण्ड, गेहूं, उड़द -मूंग आदि अनाजों में तेजी आती है, मंगल पर शनि की पूर्ण दृष्टि होने से यह तेजी अधिक जोरदार रहे।

ध्यान दें - १२ जनवरी को ही गुरु फिर मीन राशि में आ रहा है । इसलिए यह रुई, नरमा, कपास में पहले ६ मास में जोरदार तेजी बनाए । बाद में मन्दा करे । घी, तिल , तेल, सरसों आदि तिलहन में पहले ५/६ मास तक मन्दे के बादतेजी करे। गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, हाथी के दाँत से बनी चीजें, कपूर, एवं नमक में तेजी आती है ।

खास विचार- इस मास में ११ जनवरी को राहु कर्क में आकर रुई आदि में ६ मास तक मन्दे का योग है तुरन्त १२ जनवरी को गुरु मीन राशि में आकर रुई आदिमें पहले ६ मास तेजी का योग बनाता है ऐसी स्थिति में हमसे प्रत्यक्ष आकर ताजा मशबरा प्राप्त करें वरना उत्तम लाभ का चाँस हाथ से निकल जाएगा-नोट कर लें । इस बारे में हम ताजा विशेष मशबरा देना चाहेंगे ।

१३ जनवरी को गुरु के मीन राशि में आने के साथ ही बुध पूर्व में अस्त हो जाता है। अनाज, घी आदि मन्दे हों । रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज हो । सोने में घटा बढ़ी होकर तेजी हो ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१४ जनवरी को मकर संक्रान्ति १५ मुहूर्ती एवं गुरुवार को लग रही है । इस समय राहु शनि-मंगल की सूर्य पर विशेष दृष्टि है । - यह योग जोरदार तेजी का संकेत देता है। घी, अलसी, एरण्ड, बिनौला, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, सरसों, तोड़िया, सूरजमुखी आदि तिलहन, गुड़ शक्कर, खाण्ड, रुई, काली मिर्च, लाल मिर्च, जीरा, हींग, धनिया में तेजी बने । दालवाना व अन्य अनाजों में भी साधारण तेजी रहे । १८-१९ जनवरी के लगभग चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास में तेजी बने ।

२२ जनवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य-केतु के साथ मेल करेगा । मकर राशि में स्थित इन ग्रहों पर महाक्रूर ग्रह शनि-मंगल एवं राहु की विशेष दृष्टि है । इस समय रुई.सोना, चाँदी, दालवाना, तेल, तिलहनों में, घी एवं मसालों में तेजी बनेगी । **इसी दिन सूर्य-नेपच्यून की अंशात्मकयुति तथा शनि अश्विनी के दूसरे चरण में दाखल होगा । यह योग भी तेजी का ही है । फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें ।**

२३ जनवरी को शुक्र कुम्भ राशि में आकर रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा सफेद चीजों में मन्दा करे। २४ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य भी गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी एवं लौंग में तेजी बनेगी ।

[१४ से २३ जनवरी तक उत्तम-मध्यम रूप से वायदा बाजारों में तेजी रहेगी । (विशेषतः १३ जनवरी को दुतरफा लगावें, वैसे हमारे विचार से मन्दा बने) खास तौर पर १४ से २२ तक तेजी चले। दैनिक तेजी मन्दी वाले १४,१५ एवं २२,२३ को तेजी लगाकर लाभ लें।]

२८ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का बुध एवं स्वाती नक्षत्र का मंगल ऊनी, वस्त्र, गहूं, तिल, तेल तेज हों, चांदी में घटाबढ़ी एवं सोना कुछ मन्दा रहे । २९ जनवरी को शतभिषा नक्षत्र का शुक्र गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों,रुई, एवं सोना, चांदी में तेजी हो ।

२९ जनवरी को उ०भा० के प्रथम चरण में गुरु आने से चाँदी में मन्दा हो, सोना, रुई एवं गेहूं आदि अनाजों में तेजी का रूख बने । उ०भा० का गुरु तेजीकारक माना गया है।

फरवरी

२ फरवरी को सूर्य एवं यूरेनस की अंशात्मक युति होगी एवं ४ फरवरी को बुध-सूर्य का अंशसाम्य व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी देने वाला है । ५ फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र का बुध चावल, सट्टी में तेजी, सोना चांदी में मन्दा और रुई में घटाबढ़ी हो ।

६ फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य १५ दिन में सोना, चाँदी, मोती-मंणि आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों व अलसी रुई में तेजी करे ।

८ फरवरी को पू०भा० नक्षत्र का शुक्र रुई में तेजी और अनाजों में मन्दे का संकेत देता है।

९ फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर शुक्र के साथ - १५ फरवरी तक रहेगा । इस समय जोरदार तेजी या मन्दे का रिएक्शन आएगा । यदि बाजारों में तेजी हो तो तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है वरना मन्दे की । विचारापूर्वक काम करें । वैसे तो कुम्भ राशि का बुध अलसी, रुई में मन्दा, चांदी में मन्दे के बाद तेजी करता है । घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में तेजी तथा अनाजों में समता रहे ।

११ फरवरीको सूर्य-केतु की अंशात्मक, युति एवं १२ फरवरी को कुम्भ राशि में सूर्य का संबंध बुध-शुक्र के साथ बना रहेगा । १२ फरवरी को ही बुध शतभिषा नक्षत्र में दाखल हो रहा है । घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई में तेजी, रुई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दे का योग है । १४ फरवरी को उ०भा० के दूसरे चरण में गुरु के आने पर चाँदी मन्दी, सोना, रुई व गेहूं आदि अनाजों में तेजी आती है ।

१६ फरवरी को मंगलवारी अमावस के दिन शुक्र मीन राशि में दाखल होगा । इस समय गुरु भी मीन राशि में ही है । गुरु शुक्र-शत्रु ग्रह हैं । गुरु अपनी राशि में प्रबल है तथा शुक्र अपनी उच्च राशि में बली है । इस समय बाजारों मेंमन्दे का बोलबाला रहेगा । चांदी में झटके के साथ मन्दा बने । अनाज सरसों, तेल, सारे तिलहन एवं गुड़, खाण्ड में मन्दा बने । इस समय यदि बाजारोंमें मन्दा बनता है तो जोरदार मन्दा बने - सावधानी से काम करें । यह तेजी या मन्दी १८ फरवरी तक चल सकती है ।

१९ फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का सूर्य एवं उ०भा० नक्षत्र का शुक्र सोना, सण, कपड़ा, तिल, तेल, ऐरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं, एवं गुड़ में तेजी का संकेत देता है । चांदी, चावल, मोती, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दा बन सकता है ।

२० फरवरी को पू०भा० का बुध सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाज में मन्दा, एवं रुई में घटाबढ़ी होने का इशारा करता है । **ध्यान दें -** २० फरवरी को ही बुध के पश्चिम में उदय होने पर रुई एवं शेयर बाजारों में १५ दिन में मन्दा बन सकता है ।

२६ फरवरी को मीन राशि के बुध का मेल गुरु एवं शुक्र के साथहोगा । रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा, सोना, चांदी में घटाबढ़ी, बिनौला में तेजी बनेगी । २८ फरवरी को उ०भा० का बुध चांदी में घटाबढ़ी, रुई-गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों के भाव पूर्ववत् रहें ।

मार्च

मासारम्भ में ही मंगल एवं बुध दोनों मंदगति हैं । शनि-मंगल का समय-सप्तक योग चल रहा है । इस स्थिति में बाजारों में तेल-बिनौला आदि तिलहन में तेजी बनेगी । गुड़

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आदि रस पदार्थों घी में भी तेजी ही रहेगी।

२ मार्च को रेवती का शुक्र एवं ३ मार्च को उ०भा० नक्षत्र के तीसरे चरण में गुरु रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दर, कपूर, गुड़, खाण्ड , शक्कर, तथा जवाहरात मन्दे होंगे। ४ मार्च को पू०भा० नक्षत्र का सूर्य रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द , चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल गुड़, खाण्ड, गुग्गल एवं रुईमें कुछ तेजी बनाएगा ।

६ मार्च को शनि ग्रह अश्विनी नक्षत्र के तीसरे चरण में आएगा । पीतल तिल, तेल, अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत व गेहूं आदि में तेजी बने । रुई में कुछ मन्दा बाद में तेजी बने । रुई में कुछ मन्दा आकर बाद में तेजी बने ।

१० मार्च को बुध के वक्री होने पर बाजारों में जोरदार, उथल पुथल हो सकती है। अतः वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, गेहूं आदि अनाजों में तेजी या मन्दे का झटका आए । रुई में झटके की तेजी के बाद मन्दा संभव है ।

१२ मार्च को बुध पश्चिम में अस्त होगा । इस समय बुध एवं मंगल दोनोंमन्द गति **हैं, गुरु अतिचारी चल रहा है ।** रुई में जोरदार तेजी या मन्दे कीलाईन बने । हमें मन्दा मालूम देता है । चांदी तेज रहे। शेयर बाजारों में जोदार तेजी मन्दे के झटके आएं । मन्दा विशेष रह सकता है । क्योंकि बुध वक्री होकर अस्त हुआ है अतः दालवाना आदि अनाजों में तेजी बनेगी- ऐसा विचार है ।

[मास के आरम्भ में १२ मार्च तक बाजार डावांडोल रहेंगे, जब मन्दा आए खरीदें, जब तेजी बने, बेचकर लाभ लें ।]

१३ मार्च को शुक्र मेष राशि में आकर नीच शनि के साथ मेल करेगा । इस समय **शनि-शुक्र पर मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है।** अतः जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ, घी, एवं सोना-चांदी में खास तेजी बनेगी । गुड़, शक्कर, में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी,तेल तिलहन के बाजार अनिश्चित रहें, मन्दा तेजी दोनों चलें ।

१४ मार्च को मीन राशि के सूर्य का मेल बुध गुरु के साथ होगा । मंगल ग्रह की स्थिति भी वक्रता की ओर बन रही है । इसलिए तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर , रुई, सोना में तेजी, प्रत्येक जाति के अनाज भी तेज रहें, चांदी मेंअचानक मन्दे का झटका आए। १५ मार्च को रुई, गुड़ शक्कर, खाण्ड, में वायदा व्यापार में मन्दा बने । १६ मार्च को बाजार तेज रहेंगे। १८ मार्च को उ०भा० का सूर्य चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल, तेज हों । लगभग २१ मार्च को वक्री बुध पू०भा०में आएगा । सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाजों में मन्दा आए । रुई में घटा बढ़ी चलेगी ।

२२ मार्च को लगभग गुरु के अस्त होने पर रुई आदि के बाजारों में जोरदार मन्दा आएगा। २३ मार्च को भरणी नक्षत्र का शुक्र भी तेल, तिलहन, घी, उड़द, नारियल में मन्दा बनेगा। २५ मार्च को बुधोदय होने से रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी झलकेगी । गेहूं, घी, तिल एवं लाल मिर्च में तेजी बने । २५ मार्च को ही वक्री बुध फिर से कुम्भ राशि में आएगा । अलसी, रुई में मन्दा बने । चांदी में मन्दे के बाद तेजी, घी, तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, घी, में तेजी रहे।

२९ मार्च को रेवती के प्रथम चरण में गुरु के आने पर रुई में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। चांदी में पहले मन्दी होकर तेजी हो । अनाजों में भी मन्दा आए ।

३१ मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सुज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं चावल में तेजी बनेगी ।

सज्जनो । हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांच कर तेजी- मन्दी के रुख का बेरवा दिया है, फिर भी ग्रहचाल वश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है, तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे । वैसे हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि आपको व्यापार में **उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे ।**

व्यापारी सज्जनो । यदि आप एक मास का वायदा, हाजरा बाजार का चांस चाहते हैं, या दैनिक तेजी मन्दी चाहते हैं तो एक मास की ५००/- पांच सौ रु० फीस भेजकर प्राप्त करें । प्रत्यक्ष मिलने पर अधिक संतोषजनक बात हो सकेगी । पूरे साल की तेजी मन्दी की प्रमुख चांसों की फीस एक वर्ष के लिए ५०००/- पांच हजार रूपये है। टेलीफोन से भी बात की जा सकती है । पता नीचे लिखा है -

पं० इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, ज्यौतिषाचार्य, एम०ए०,

मार्त्तण्ड भवन,

मु०पो० कुराली (रोपड़) पंजाब,

पिन-140 103

फोन: 01888-33277

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्वपूर्ण काल"

(१ जनवरी सन् १९९८ ई. से १७ मार्च सन् १९९९ ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक बचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। **आचार्य भास्कर ने भी सिद्धान्त शिरोमणि में कहा है** कि-यदि क्रान्तिसाम्य के समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है-**"पात स्थिति कालान्तर्गत मंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप- होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।"** यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे १ जनवरी १९९८ ई.से १७ मार्च १९९९ ई.तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दे रहे हैं। इस कालों में यंत्र-तंत्रों के निर्माण से एवं मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

इस वर्ष २२ अग. ९८ को सूर्य ग्रहण भी होगा, जिसका विवण अन्यत्र दिया गया है। इस ग्रहण के पर्वकाल को भी साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्ति पुण्यकाल क्रान्तिसाम्य और सूर्य-ग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, वारुणी पर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्वपूर्ण माने गये हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कभी-कभी आते हैं। इसवर्ष इन योगों में से कोई भी पर्व नहीं आया है।

सावधान- यंत्र-मंत्र- तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
		सन् १९९८ ई०			
२० जन.	६	१५	२० जन.	१८	१५
१८ फर.	२०	२४	१९ फर.	८	२४
२० मार्च	१९	२४	२१ मार्च	७	२४
२० अप्रैल	६	२७	२० अप्रैल	१८	२७
२१ मई	५	३५	२१ मई	१७	३५
२१ जून	१३	३३	२२ जून	१	३३
२३ जुला.	०	२५	२३ जुला.	१२	२५
२३ अग.	२	२९	२३ अग.	१४	२९
२३ सित.	५	७	२३ सित.	१७	७
२३ अक्तू.	१४	२८	२४ अक्तू.	२	२८
२२ नवं.	१२	४	२३ नवं.	०	४
२२ दिसं.	१	२६	२२ दिसं.	१३	२६
		सन् १९९९ ई०			
२० जन.	१२	७	२१ जन.	०	७
१९ फर.	२	१७	१९ फर.	१४	१७

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
		सन् १९९८ ई०			
५ फर.	१०	७	५ फर.	२०	८
१८ फर	९	२५	१८ फर.	१७	३
२ मार्च	५	४५	२ मार्च	११	१३
१४ मार्च	२३	४२	१५ मार्च	५	५४
२७ मार्च	१३	५६	२७ मार्च	१८	५२
८ अप्रैल	१५	३२	८ अप्रैल	२२	७
२१ अप्रैल	१८	५९	२२ अप्रैल	१	३९
३ मई	२	५७	३मई	१३	७
१४ मई	०	४८	१६ मई	७	४८
३ अग.	११	४०	४ अग.	१	२३
१५ अग.	४	५६	१५ अग.	१२	३१
२८ अग.	०	४	२८ अग.	७	७

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
		सन् १९९८ ई०			
९ सित.	७	२९	९ सित.	१२	४०
२१ सित.	९	२३	२२ सित.	०	२८
४ अक्तू.	१७	९	४ अक्तू.	२२	४
१६ अक्तू	१२	३७	१६ अक्तू.	१९	११
२९ अक्तू	२०	५२	३० अक्तू.	४	०२
९नवं.	२३	३०	१० नवं.	११	११
		सन् १९९९ ई०			
२७ जनवरी	२२	५२	२८ जन.	१४	३८
९ फर	८	४८	९ फर.	१७	२३
२१ फर	१६	४९	२१ फर	२२	४१
६ मार्च	१	४२	६ मार्च	७	४९

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा.स्टै. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मि.	समाप्त तारीख	घं.	मि.
		सन् १९९८ ई०			
१० जन.	६	३१	१० जन.	१८	३१
५अप्रैल	१९	३८	६ अप्रैल	७	३८
३जुला.	२३	३१	४ जुला.	११	३१
१ अक्तू.	४	४९	१ अक्तू.	१६	४९
		सन् १९९९ ई०			
१० जन.	१२	४०	११ जन	०	४०

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य- सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किया जाने वाला क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहाँ दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ - समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है।

ध्यान दें- सामान्यतया मई के मध्य से जुलाई के अन्त एवं नवम्बर के मध्य से लगभग २३ जनवरी तक सूर्य की क्रान्ति प्रतिवर्ष १९ अंश से अधिक रहती है। लेकिन चन्द्रमा की परमक्रान्ति पात(राहु) की स्थिति के अनुसार प्रतिवर्ष न्यूनधिक होती रहती है। इस वर्ष चन्द्रमा की परम क्रान्ति १९ अंश के लगभग रहेगी। अतः उपरोक्त दिनों में चन्द्रक्रान्ति सूर्यक्रान्ति के बराबर नहीं हो सकेगी। यही कारण है- इस वर्ष इन उपरोक्त दिनों में क्रान्तिसाम्य नहीं हो पाया है। यह स्थिति राहु के भोगांशों के अनुसार कुछ वर्षों बाद घटित होती रहती है।

निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

महत्व रखता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यन्त्र मन्त्र तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत 'यन्त्र तन्त्र मन्त्र' गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़निश्चय पूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। ध्यान रहे-दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है:-''सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।''

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिससे दृढ़ इच्छाशक्ति पूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारण मात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिससे अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल प्रच्छन्न-शक्ति प्राप्त होती है। -**''मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धि र्न संशयः।।''**

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलयुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं- **''अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥''** अतः शाबर मन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इसमें न्यूनाधिकता न करें। **नोट**-मन्त्र का पुरश्चरण गुप्त रूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है यह तन्त्रशास्त्रों का निर्देश है **''गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥''**

धन-ऐश्वर्यदाता बीसा यन्त्र

१	९	१०
१४	७ ऐं२ श्रीं ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	६
५	११	४

उल्लिखत यन्त्र को गुरु-पुष्य या रवि पुष्यामृत योग या दीपावली की शुभ रात्रि में अष्टगन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर अथवा त्रिधातु (सोना-चांदी एवं तांबा) के पत्र पर उत्कीर्ण करके विधिवत् पूजन करें। यन्त्र को पुष्प गन्धादि से पूजन करते समय दुर्गा सप्तशती का पाठ, कवच एवं कीलक का पाठ करें। इस यन्त्र को पूजा स्थान पर स्थापित करने या अपने गले में धारण करने से सर्वविधि-वैभव प्राप्ति हो

सर्वतोभद्र यन्त्र

ॐ महालक्ष्म्यै नमः			
अ उ ल ओ	आ ऊँ लृ औ	इ ऋ ए अं	ई ऋ ऐ अः

ॐ महा लक्ष्म्यै नमः

सुख-समृद्धि आर्थिक लाभ व अभियोग (मुकदमे) आदि विवाद में विजयार्थ इस यन्त्र का प्रयोग किया जाता है। इस यन्त्र की स्थापना से धन की वर्षा सी होती अनुभव की गई है। किसी विशिष्ट मुहूर्त्त (अमा, ग्रहण संक्रान्ति-पुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य आदि)में गोराचन, केसर एवं लाल चन्दन के मिश्रण से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखे। यन्त्र को चांदी-धातु की चादर पर भी उत्कीर्ण कराया जा सकता है। इस यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा करके प्रतिदिन लाल पुष्पों से धूप दीप दर्शन पूर्वक पूजा करें। इस यन्त्र को फ्रेम कराकर पुजास्थल में स्थापित करें। इस यन्त्र के प्रातः दर्शनमात्र से ही सुख-सम्पदा की प्राप्ति होने लगती है।

व्यापार में सफलता हेतु मुस्लिम यन्त्र

786

560	555	562
561	559	556
556	563	558

इस यन्त्र को नौचन्दी जुमेरात से १०० यन्त्र बारीक कागज पर रोजाना लिखकर उनकी आटे की गोलियां बनाकर मछली युक्त जल में डालें। चालीस दिन तक बिना नागा यही विधि करें इससे यन्त्र सिद्ध हो जाएगा। इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में ४ अलग अलग कागजों पर लिखकर गत्तों (Card Boards)पर चिपकाकर आफिस या दुकान के चारों कोनों में दरी या कार्पेट के नीचे धूप दीप करके गुप्त रूप में रख दें।

ध्यान रहे-जहां ये यन्त्र कार्पेट (दरी)के नीचे रखे गये हों, वहा इनके ऊपर कोई ऐसी चीजें (गुलदस्ते वगैरह) रख दें जिससे उनके ऊपर किसी का पैर न पड़ सके। एक सप्ताह के अन्दर व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाएगी। यह अनुभूत है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री कुबेर यन्त्र

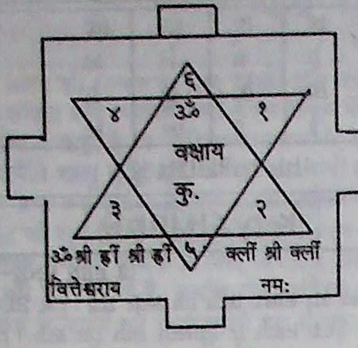

शुभ मुहूर्त्त में (दीपावली, धनत्रयोदशी, बसन्त श्री पंचमी या रविपुष्य योग में) इस यन्त्र का निर्माण करें। इस यन्त्र की संरचना करते समय ''ॐ श्री वित्तेश्वराय नमः ''-इस मन्त्र का जाप करते रहें। प्राणप्रतिष्ठा एवं विधिवत् पूजन के बाद यन्त्र के सामने प्रतिदिन धूपदीप करें। इस प्रकार धन सम्पदा के अधिष्ठाता कुबेर जी की कृपा से हर प्रकार का वैभव सहज ही उपलब्ध हो जाता है।

श्री दुर्गा बीसा यन्त्र

चराचर जगत् की पालिका, आद्याशक्ति जगदम्बा भगवती को यह यन्त्र अत्यधिक प्रिय है। यह यन्त्र को दीपावली या ग्रहण की अवधि में विधिवत् लिखने से सर्वविध-मनोरथों की सिद्धि होती है । राजा भी साधक के समक्ष नतमस्तक हो जाता है-

यन्त्र यह है

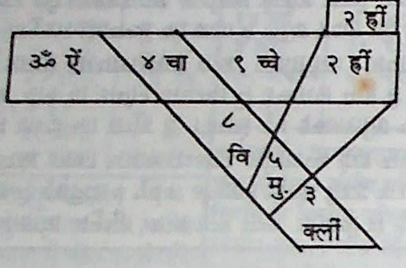

सम्पुटित शिव-महामन्त्र

'ॐ ह्रीं' इस बीज मन्त्र से सम्पुटित इस मन्त्र को शुभ मुहूर्त्त में सवा लाख जप कर सिद्ध करें। मन्त्र जाप के दिनों में भूशयन करे, ब्रह्मचर्य से रहें। सोमवार का उपवास करें। जप समाप्ति पर इस मन्त्र से दशांश हवन करें। ब्राह्मण-बालकों को मीठा भोजन कराके यथा सम्भव दक्षिणा दें। इस मन्त्र की साधना से साधक हर क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रेसर हो जाता है, धन का अभाव दूर होता है, सौभाग्य सन्तान और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मन्त्र- ''ॐ ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं ॐ।''

सुभग कात्यायनी मन्त्र प्रयोग

कात्यायनी मन्त्र का प्रयोग गुरु की देख-रेख में ही करें। यह भगवती का विलक्षण रूप है, जो माता-स्त्री अथवा बहिन के रूप में साधक को दिखाई देता है। जिस रूप में साधक भावना लेकर सिद्धि करेगा, उसी रूप में दिखाई देगी।

विधान-एकान्त में या राजदरबार के किसी स्वच्छ भाग में कम्बलासन पर बैठकर निम्रांकित मन्त्र का आठ हजार जाप करें। तत्पश्चात् कनेर की लकड़ी से अग्नि जलाकर मालती पुष्पों -दही-शहद एवं घी से आठ सौ आहुतियां दे। तब पांच दिनों में ही भूतेश्वरी महाकात्यायनी अपने गणों सहित नुपूर शब्द करती हुई प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं। प्रत्येक इच्छा पूर्ण करके धन धान्य समृद्धि एवं आगामी जन्म में भी राजकुल में जन्म होता है। मन्त्र-ॐ सुरतप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे कांचनमाला-विभूषण-नुपूर-शब्देनाविशाविश पूरय साधकप्रियं स्वाहा।''

जब कात्यायनी भगवती प्रत्यक्ष दर्शन दे तो फूलों से अर्ध देकर माता-पत्नी या बहिन के रूप में स्वीकृति प्रदान करे। बहिन के रूप में राज्य-वैभव-सम्पदा प्रदान करती है। स्त्रीरूप में दिव्यस्त्री सदृश भोग प्रदान करे एवं माता के रूप में स्वास्थ्य-बन्धु सुख एवं सर्व सुखयुक्त दीर्घायु प्रदान करती है।

कर्णपिशाचनी सिद्धि

मन्त्र-''ॐ ह्रीं कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय हूं फट् स्वाहा॥''
विधान-जले हुए दीपक का तेल पैरों में मलकर रात्रि के समय एक लाख मन्त्र जाप करे। ऐसा करने से साधक भूत-भविष्यत एवं वर्तमान का ज्ञाता हो जाता है। यद्यपि इस विधान में पूजा एवं ध्यान का महत्त्व नहीं,पुनरपि यदि निम्नांकित ध्यान करके मन्त्रजाप करें तो सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ध्यान- 'सुवर्णप्रभां रत्नभूषाभिरामां,
जपापुष्पवच्छायवासो युगाद्याम्।
चतुर्दिक्षु दासीगणैःसेवितांघ्रिं,
भजेत् सर्व सौख्यप्रदां यक्षिणीं ताम्॥'

कर्णपिशाचिनी एक अन्य प्रयोग-

''मन्त्र ॐ कर्ण पिशाचिनी पिंगल लोचने स्वाहा''

विधान- इस मन्त्र का एक लाख जाप करे,दशांश हवन करे। साधना के दिनों में एक समय भोजन करे एवं तिल खाएं तो सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। साधक को त्रिकाल का ज्ञान होने लगता है।

वशीकरण के दो तन्त्र प्रयोग

१) अपामार्ग (ओंगा या चिटचिढा) के बीज बकरी के दूध में पीसकर मस्तक पर तिलक करने से जिसके समक्ष जाए, वही वशीभूत हो जाए। ''अपामार्गस्य बीजानि छाग दुग्धेन पेषये अनेन तिलकं भाले सर्वलोक वशंकरम्।''

२) पान का पत्ता, तुलसी का पत्ता कपिला गाय के दूध में पीस कर मस्तक पर तिलक लगाने से सभी वशंवद हो जाते हैं-

''ताम्बूलं तुलसी पत्रं कपिला दुग्ध पेषितम्।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोक वशंकरम्॥''

नोटः-वशीकरण के अनुचित स्थान पर प्रयोग का परिणाम प्रयोक्ता के लिए अन्ततः अच्छा नहीं होता।

वशीकरणार्थ मन्त्र-

''ॐ नमो नारयणाय सर्वलोकान् ममवश्यं कुरु कुरु स्वाहा।''

इलायची, लौंग एवं मिसरी सामने रखकर दस हजार मन्त्र जाप करें। जिसे अनुकूल बनाना हो, उसे पूजावाली इलायची, लौंग या मिसरी देने से व्यक्ति तुरन्त वशंवद हो जाता है।

पति को वश करने के लिए कामाक्षी देवी का मन्त्र

मन्त्र-''ॐ नमः कामाक्ष्यै देव्यै 'अमुकं' में वशं कुरु कुरु स्वाहा।''

इस मन्त्र को दीपावली या ग्रहण के समय सिद्ध करें फिर जिसे वश करना हो उसका नाम 'अमुकं' के स्थान बोलकर मन्त्र जाप करे। शीघ्र ही पति वशीभूत हो जाएगा। इस मन्त्र का प्रयोग अनुचित रूप से करने से भारी हानि होगी।

पुस्तकसमीक्षा-

शनि शत्रु नहीं, मित्र

लेखकः- पं. श्यामसुन्दर लाल वत्स

प्रकाशकः-श्री बजरंग नव ग्रहअनुसन्धान संशोधन केन्द्र
सैक्टरः-११, लघु सचिवालय मार्ग,
फरीदाबाद-१२१००६

मूल्य- २०० रु. (पृष्ठ संख्या २४८+१६)

शनि सर्वदा अनिष्ट करने वाला क्रूर ग्रह ही है- सामान्यजन की इस धारणा का श्री वत्स जी ने प्रतिवाद किया है। इनका कहना है कि सभी क्रूर या शुभ ग्रह जातक के पूर्वार्जित पुण्य-पापों के शुभाशुभ फलों को उसकी जन्मकालिक एवं गोचरस्थिति वश यथासमय घटित करने के लिए प्रकृति द्वारा बाधित हैं। लेकिन जातक इनकी पूजा, जप द्वारा इनके अनिष्ट फल से मुक्त हो, शुभ फल प्राप्त करने की क्षमता रखता है। इनका यह भी मत है कि लगभग सभी वैदिक एवं अन्य संस्कृत मन्त्र अभिशप्त हो जाने से अपना प्रभाव खो बैठे हैं। अतः ग्रहों के शाबर एवं बीज मन्त्रों का जप ही ग्रहजन्य संकटावस्था को दूर करने में सक्षम है। यदि जातक सभी ग्रहों के बीज मन्त्रों का एक-एक करोड़ जप शुद्धिपूर्वक पहले ही कर लेता है, तब उस पर ग्रहों की भावी अशुभ दशा-अन्तर्दशा, गोचर स्थिति का कुप्रभाव कदापि नहीं पड़ सकता- श्री वत्स जी की यह दृढ़ प्रतिज्ञा है।

प्रस्तुत पुस्तक में शनि के कुप्रभाव को दूर करने के लिए सभी प्रकार के वैदिक तथा अन्य पूजन, जप, अनुष्ठान, रत्नधारण आदि का विस्तृत विवेचन तो है ही, इसके अलावा इसमें शनि की आकाशीय स्थिति-चार, शास्त्रोक्त शनि का रूप-वाहन, शनि का जातक-संहितोक्त शुभाशुभ दशा, अन्तर्दशा और गोचर फल, पुराणों में उपलब्ध शनिसम्बन्धी सभी स्तोत्र, उपाख्यान तथा भारत के विभिन्न स्थलों पर उपलब्ध शनि की प्रतिमाएं, मन्दिर आदि का सप्रपंच, सचित्र रोचक विवरण भी है। इसके अतिरिक्त शमी वृक्ष का महत्त्व, मृत्यु का पूर्वाभास, मृत्युञ्जयमन्त्र का माहात्म्य, क्षय रोग का उपचार, कलशमहिमा, रोगोत्पादक कृमि नाशक विधि, मुहूर्त्त-वारों की उत्पत्ति, पितृ महिमा, उत्तम सन्तान प्राप्ति के उपाय आदि बीसों अन्य ऐसे विषयों का भी लेखक ने पुस्तक में समावेश किया है, जिनका प्रकृत प्रतिपाद्य विषय से यद्यपि कोई साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, लेकिन वे पाठक के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक अवश्य हैं।

निःसंदेह शनि के विषय में यह पुस्तक निरवशेष ज्ञान, उसके भयावह कुफल के निवारक उपाय-प्रतिकारों का पूर्ण, सांगोपांग परिचय देने वाला, सुन्दर प्रशंसनीय प्रकाशन है। इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले दैवज्ञों तथा अन्य जिज्ञासुओं के लिए यह प्रकाशन संग्रहणीय है। इस विषय पर ऐसा सर्वंकष विवेचन, जो शनि के बारे में प्रचरित अनेक भ्रान्तियों को निरस्त करता है, शायद ही और कहीं मिले।

—प्रियव्रत शर्मा
59/6 (अभिजित्),पंचकूला-134109

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अमोघ मारुति कवच

(भूत-प्रेत जन्य कष्ट एवं रोगादि से मुक्ति पाने के लिए)

प्रेषक :- स्वामी श्री मनसुखदास शास्त्री

[इस कवच का प्रयोग मैं पिछले ३५ वर्षों से लगातार करता आ रहा हूँ । इससे जो सफलताएं मुझे मिली हैं , मुझे उनसे पूर्ण सन्तोष है। यह प्रयोग मुझे अपनी अपढ़ नानी स्व.श्रीमती भत्ती देवी से मेरी हनुमत् आराधना और अटूट श्रद्धा के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था । इस कवच मन्त्र के कुछ शब्दों का भले ही कोई स्पष्ट अर्थ न निकलता हो , लेकिन श्रद्धापूर्वक किए गए इसके प्रयोग से निश्चित लाभ होता है- ऐसा मेरा अनुभव है — लेखक]

वानरराज हनुमान् जी के इस निम्नोक्त कवच का प्रयोग भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस -शाकिनी डाकिनी - यक्षिणी- यक्ष- वेताल आदि शक्तियों पर तो सिद्धरूप से किया ही जा सकता है, अनेक जटिल और असाध्य रोगों पर भी यह कवच उतना ही कारगर है। यदि मंत्र का पाठ श्री मारुति का दासस्वरूप, जिसमें वीरासन से वे आशीर्वाद मुद्रा में बैठे हैं, उसके चिन्तन के साथ किया जाय तो सफलता २४ घण्टे में मिलती है। मंत्र प्रयोग उन्हीं व्यक्तियों के लिए सच्चा असरदार साबित होगा जो गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज के निम्नांकित वचनों के अनुसार हनुमान् जी के आश्रित हैं तथा सर्वस्व उन्हीं को मानते हैं ।

जैसे :- १.) जय जय जय हनुमान गोसाईं, कृपा करो गुरुदेव की नाईं,

२.)और देवता चित न धरई, हनुमत सेव सर्व सुख करई।

यद्यपि दोनों चौपाइयों का अर्थ साधारण है, परन्तु कवच-साधक (कवच-प्रयोगकर्ता) में इन चौपाइयों के अनुसार श्रीमारुति के प्रति अनन्य भक्ति और आत्मार्पण है या नहीं, यह बात प्रयोग करने से पूर्व वह स्वयं विचार करे । यदि आध्यात्मिक क्षेत्र के उसके गुरु हनुमानजी ही हैं और उसके चित्त में मात्र हनुमानजी के अतिरिक्त और कोई निष्ठा नहीं है तो सफलता शतप्रतिशत मिल जाएगी। कई बार तो सफलता ६ घण्टे में ही मिल जाती है, इसके लिऐ यह इस पर निर्भर करता है कि हनुमान् जी पर साधक की निष्ठा कितनी बलवती है।

कवच का पाठ कैसे करें ? - यदि हनुमान् जी की मूर्ति या चित्र प्राप्य हो तो उसके समक्ष अगरबत्ती जलाएं और ५ मिनट तक 'श्री राम जय राम जय जय राम ' का जप करें । यह १३ अक्षरों का मन्त्रराज है जिसे स्वयं हनुमान् जी भी जपते हैं। इस मन्त्र के जप के समय मारुति , स्वयं अदृश्यरूपमें वहां उपस्थित हो जाएंगे । उसके बाद इस कवच का जप करे , जिसका स्वरूप इस प्रकार है:-

कवच का स्वरूप

ॐ हनुमान हकाला शीश जटाला कागर बैठया किलकारा,
सीताने आणी सब जुग पाणी पान लंगोटी का चाल्या,
धुन्धागढ़ आए भांग चाढ़ भूपाड़े -अंजनीसुत जाये,
राम सराये देखो वीरग बेताला देखो,
लंकम जीताला-हनुमंत हनुमंत बड़ो बलवंत
ध्यारी हांकसू छल छिद्र-भूत प्रेत डाकिन,
स्यारी छत्तीस रोग कटे, महावीर जी के नाम से,
महावीर के डर से महावीर जी के तेज से नाशे ।

मारुति कवच से उपचार

पूजा के समय जलाई गई अगरबत्ती की राख दाहिने हाथ की तर्जनी (अंगूठे के पास वाली अंगुलि) और अंगुष्ठ से उठाकर चटाई पर सीधे लिटाए गए रोगी के ललाट पर थोड़ी सी फैंकिए और वहां से नीचे धीरे-धीरे उसकी दाईं भुजा और फिर बाईं भुजा तक इस भस्म को थोड़ा -थोड़ा बिखेरते हुए एक आवृत्ति पूरी कर दीजिए । दूसरी आवृत्ति में गले से जननेन्द्रिय तक पेट पर उसे बिखेरें । तीसरी आवृत्ति में दाहिने और बाएं पैरों पर उसे बिखेर दें। चौथी आवृत्ति में भस्म को अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़ने के बजाए हथेली पर रखकर नेत्र मूंद कर उस हथेली को कल्पना में (मानसिक क्रिया द्वारा) रोगी के सिर से लेकर पैरों तक सभी अंगो पर कुछ क्षणों तक चलाएं ।

इस प्रयोग के समय साधक (कवच का प्रयोग करने वाले व्यक्ति) को निम्नांकित दो निर्देशों की ओर ध्यान देना चाहिए -

१. रोगी के अंगों पर भस्म बिखेरने की इस प्रक्रिया को करते समय साधक यह भावना करे कि रोगी के अंगों पर भस्म बिखेर रहे उसके हाथ के साथ-साथ मारुति की लम्बी पूंछ भी रोगी के अंगों पर लहरा रही है।

२. भस्म के प्रयोग की इस प्रक्रिया के दौरान साधक अपने हाथ से रोगी के किसी भी अंग

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

को तनिक भी स्पर्श न करे।

उपरोक्त इस प्रक्रिया (प्रयोग) के बाद भस्म की चार चुटकी लेकर उसे कवच मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रोगी को दे दे । छः छः घण्टे के अन्तर पर, 'हनुमानचालिसा' का एक एक पाठ करते या सुनते हुए रोगी इस भस्म को प्रसाद के रूप में तनिक -तनिक ग्रहण करे । अनुभव है कि ऐसा करने पर रोगी भूत-प्रेतादि बाधा से सर्वथा मुक्त हो जाएगा। यदि वह ज्वरादिग्रस्त है तो उसका ज्वरादि निवृत्त अथवा निवृत्ति के उन्मुख होगा । श्रीमारुति भगवान् सद्यः संकटनाशक हैं :- इस दृढ़ आस्था के साथ रोगी द्वारा 'हनुमान चालिसा' का पाठ करना या सुनना इस प्रयोग की सफलता के लिए परम आवश्यक है।

यदि रोगी अधिक अस्वस्थ होने के कारण साधक के पास न आ सकता हो तो साधक उसके घर जाकर यह कवच प्रयोग कर सकता है। ध्यान रहे-साधक को रोगी के घर का अन्न-जल ग्रहण नहीं करना चाहिए ।

कवच की उपरोक्त प्रयोग- प्रक्रिया तीन दिन से अधिक नहीं की जाती । एक दिन साक्षात् रोगी पर यह प्रयोग करने के बाद दूसरे-तीसरे दिन रोगी के चित्र पर भी यह प्रयोग किया जा सकता है। इस स्थिति में 'हनुमान चालिसा' का ६-६ घंटे के अन्तर पर पाठ करते या सुनते हुए रोगी को अभिमन्त्रित भस्म का प्रसाद तो ग्रहण करना ही होगा ।

यदि रोगी दूर देश-विदेश में हो तो उसके चित्र पर भी यह कवच- प्रयोग किया जा सकता है। इस स्थिति में रोगी के दूर देश-विदेश के उस स्थान का पूरा पता चित्र के पीछे लिखना जरूरी है जहाँ वह रहता है। ऐसे रोगी के निमित्त 'हनुमान् चालिसा ' का पाठ उसके माता-पिता, भाई-बन्धु स्वयं कर सकते हैं । अभिमन्त्रित भस्म डाक द्वारा रोगी को भेज देनी चाहिए।

नोट :- कवच के प्रयोग के सम्बन्ध में कोई स्पष्टीकरण अपेक्षित हो तो नीचे लिखे पते पर जबाबी पत्र दें :-

स्वामी श्री मनसुखदास शास्त्री
बजरंग उद्यान
P.O. उदयरामसर
(बीकानेर) (राजस्थान)

संकटनाशन गणपति स्तोत्र
(विघ्न-बाधाओं से मुक्ति के लिए)

किसी एक अज्ञात परोपकारी की ओर से डाक द्वारा भेजा गया यह ''संकट-नाशन-गणपति स्तोत्र '' पाठकों के उपकार के लिए यहां दिया जा रहा है। व्यापार, विद्यार्जन आदि में विघ्न-बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति को छः मास तक प्रतिदिन प्रातः , सायं, हो सके तो मध्याह्न के समय भी, इस स्तोत्र के कम से कम चार-चार पाठ श्रद्धापूर्वक करने चाहिएं। स्तोत्र के जपानुष्ठान के लिए निम्नांकित निर्देशों का पालन करना आवश्यक है-

(१) पूजा के समय श्रीगणेश के साथ-साथ श्री गौरी ओर श्रीशंकर की प्रतिमा या चित्र को भी धूप,दीप, नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।
(२) प्रतिदिन लड्डुओं का भोग लगाकर उन्हें बच्चों में बांट दें।
(३) चूहों को मारे नहीं, और ना ही उन्हें कोई कष्ट पहुचाएं।
(४) प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्थी के दिन श्रीगणेशचतुर्थी का व्रत विधान पूर्वक करें।
(५) इस स्तोत्र की आठ प्रतियां अपने हाथ से सुस्पष्ट लिखकर आठ विद्वान्, आस्तिक ब्राह्मणों को अर्पित करें।

स्तोत्र नीचे दिया जा रहा है -

सङ्कटनाशन-गणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये॥ १॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥ ४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८॥

जपानुष्ठान का प्रारम्भ श्रीगणेशचतुर्थीव्रत वाले दिन से करके छः मास बाद श्रीगणेशचतुर्थी व्रत वाले दिन ही इसे पूर्ण करें। तदनन्तर भी प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ कार्यों को निर्विघ्न बनाएगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एक विश्लेषण

संवत् २०५३ वि. में शुक्र के पूर्वास्त की तारीख के बारे में मतभेद

लेखक- प्रियव्रत शर्मा

संवत् २०५३ वि. में शुक्र फरवरी ९७ के मध्य पूर्व दिशा में अस्त (अदृश्य हुआ था)। इसके अस्त होने की तिथि (तारीख) के बारे में भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रकाशित होने वाले पंचांगों मे काफी भिन्नता थी। इन पंचांगों में शुक्र के पूर्व में अस्त होने की तारीखें अलग- अलग ९ से २८ फरवरी तक लिखी हुई थीं। इससे साधारण ज्योतिषियों और जनता में बहुत दुविधा रही कि किस पंचांग के अनुसार विवाहादि, शुभ कृत्यों का निर्णय किया जाए, क्योंकि गुरु और शुक्र के अस्तकाल और इनके वार्धक्य काल (अस्त होने से पहले तीन दिन) और बाल्यकाल (उदय होने की तारीख के तीन दिन बाद तक) की अवधि में शास्त्रानुसार कोई भी शुभ कृत्य नहीं किया जा सकता। इस अनिर्णय के निवारण के लिए हमारे पास ज्योतिषियों और आम लोगों के बहुत पत्र आए। उन्हें हमने पत्रोतर द्वारा इस बारे में यथा सम्भव स्पष्टीकरण दिया। क्योंकि इस प्रकार गुरु-शुक्र के अस्त और उदय की तिथियों में अलग-अलग प्रदेशों के पंचांगों में अन्तर अक्सर प्रति वर्ष थोड़ा बहुत रहता ही है जिससे दैवज्ञ लोगों और मंगल कृत्य करने वाली साधारण जनता का दुविधा में पड़ जाना स्वाभाविक है। अतः हम यहाँ इस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी देना चाहते हैं। ताकि भविष्य में वे इस विषय में व्यर्थ ही दुविधा का शिकार न हों।

-गुरु-शुक्र के उदयास्त की तारीखों में अक्षांश भेद से अन्तर रहता ही है -

सर्व साधारण जन और अनेक दैवज्ञ भी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि गुरु-शुक्र के अस्तोदय की तारीखों में स्थान भेद (अक्षांश भेद) से कुछ न कुछ अन्तर हमेशा रहता ही है। कई बार तो ऐसे दो नगरों में, जिनके अक्षांशों में एक अंश का ही अन्तर है, शुक्र के अस्तोदय में एक दिन का अन्तर पाया जाता है, जिससे भारत के दक्षिण छोर (रामेश्वरम्, अक्षांश +९°) से उत्तरी छोर (काश्मीर के+३६°अक्षांश) वाले स्थानों में यह अन्तर २४-२५ दिन तक हो जाता है। इस प्रकार का अधिक अन्तर प्रति वर्ष तो नहीं, हाँ कुछ-कुछ वर्षों के अन्तराल पर घटित होता ही रहता है। सं २०५२ वि. में शुक्र का पश्चिम में उदय रामेश्वरम् में पुंछ (काश्मीर) से २४ दिन बाद हुआ था। सं. २०५३ के मध्य शुक्र के पूर्व में अस्त होने की तारीखों में यह अन्तर भारत के उत्तरी और दक्षिणी छोर पर बसे नगरों में २० दिन का था। गुरु के अस्तोदय की तारीखों में अक्षांश भेद से उत्पन्न अन्तर शुक्र की अपेक्षा काफी कम रहता है। यह अन्तर भारत के उत्तरी और दक्षिणी छोर के स्थलों में ९-१० दिन से अधिक नहीं होता। गुरु के अस्तोदय की तारीखों में अक्षांश भेद से उत्पन्न इस प्रकार का परम अन्तर अपेक्षा कृत बड़े अन्तराल पर आया करता है।

-गुरु-शुक्र के उदयास्त की तारीख में अक्षांशभेद से उत्पन्न अन्तर का कारण-

ग्रहों (गुरु, शुक्र एवं मं, बु, श.) के अस्त और उदय के काल (तारीख) का सम्बन्ध पूर्व या पश्चिम में क्रमशः प्रातः (सूर्योदय के समय) या सायं (सूर्यास्त के समय) स्थानीय क्षितिज से इनकी ऊंचाई (उन्नतांशों) पर निर्भर करता है। गुरु पूर्व में प्रातः काल के समय और पश्चिम में सायं क्षितिज से जब ११° ऊपर उठा होता है तभी वह दिखाई देता है इससे कम ऊंचाई होने पर वह सूर्य की प्रभा में अदृश्य (अस्त) हो जाता है-यह नक्षत्र वेत्ताओं ने बार-बार वेध द्वारा ज्ञात किया है। इसी प्रकार शुक्र लगभग ६ $\frac{1}{2}$ अंश पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज से प्रातः या सायं ऊपर उठा होने पर ही दिखाई पड़ता है। इससे कम ऊंचाई होने पर वह भी सूर्य की प्रभा में अदृश्य (अस्त) हो जाता है। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि ग्रहों की क्षितिज से ऊंचाई, अर्थात् उनका उन्नतांश, एक ही समय में (एक ही तारीख को) सभी स्थलों पर समान नहीं होता। एक ही दिन भिन्न-भिन्न अक्षांश वाले स्थानों से देखने पर एक ही ग्रह की क्षितिज से ऊंचाई भिन्न-भिन्न दिखाई देती है। पृथ्वी के गोलाकार धरातल की ओर ध्यान देने से इस भिन्नता का कारण स्पष्ट हो जाता है।

उदाहरणार्थ- यदि आज सायं चण्डीगढ़ में शुक्र की पश्चिम क्षितिज से ऊंचाई ६ $\frac{1}{2}$ अंश हो तो श्रीनगर, दिल्ली आदि अन्य सभी नगरों में आज सायं वहां के पश्चिमी क्षितिज से इसकी ऊंचाई ६ $\frac{1}{2}$ अंश नहीं हो सकती। **ध्यान रहे**-ग्रह के उन्नतांश में अन्तर अक्षांश बदलने पर ही होता है रेखांश बदलने पर नहीं। इस प्रकार स्पष्ट है गुरु, शुक्र या अन्य कोई दूसरा भौम आदि, ग्रह एक ही समय भिन्न-भिन्न अक्षांशीय स्थलों पर एक ही उन्नतांश (क्षितिज से ऊंचाई) नहीं रखता। इससे यह स्पष्ट है कि कोई भी ग्रह एक ही दिन सभी अक्षांशीय स्थलों पर उदय या अस्त नहीं हुआ करता।

अक्षांश भेद से ग्रहों के उन्नतांश में भिन्नता को दृष्टि में रखते हुए हम अपने 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में विवाहादि मुहूर्तों से पहले समयशुद्धि के विवरण में अक्षांश भेद से गुरु और शुक्र के उदयास्त की भिन्न-भिन्न तारीखे दिया करते हैं, ताकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों व नगरों के ज्योतिषी अपने स्थानीय अक्षांशों के अनुसार गुरु-शुक्र के अस्तोदय की ठीक तारीख जानकर तदनुसार ही विवाहादि शुभ कृत्यों का निर्णय कर सकें । लेकिन कई बाद देखा गया है कि कुछ ज्योतिषी लोग स्थानीय अक्षांशों के अनुसार गुरु-शुक्र के अस्तोदय काल की उपेक्षा कर किसी अन्य स्थल के पंचांग में दिए गए अन्यस्थलीय अस्तोदय के काल को ही विवाहादि मुहूर्तों में प्रयोग में ले लेते हैं, जो कि शास्त्र के विरुद्ध है।

सं. २०५३ वि. में, जैसा कि हम ऊपर भी बतला चुके है, शुक्र के पूर्व में अस्त होने की तारीख में अक्षांशभेद से भारत के उत्तरी और दक्षिणी छोर के स्थलों पर परस्पर २० दिनों का अन्तर था (देखिए सं. २०५३ के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' का पृष्ठ १९६, कालम १)। शुक्र का यह पूर्वलोप सूक्ष्म गणित के अनुसार पंजाब, हिमाचल प्रदेश के +३०° अक्षांशीय स्थलों पर १६ फरवरी' ९७ को,+३१° अक्षांशीय स्थलों पर १५ फरवरी' ९७ को तथा ३२ अक्षांशीय स्थलों पर १४ फरवरी' ९७ को हुआ था। दिल्ली (+२८°/३८' अक्षांश) में शुक्र १८ फरवरी' ९७ को अस्त हुआ। नीचे दी गई गणितप्रक्रिया देखिए-इससे +३१°,+३०° और +२८°/३८' अक्षांशों वाले स्थलों पर शुक्र के पूर्वास्त की उपरोक्त तारीखों की यथार्थता सिद्ध हो ही जाती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि.सं. २०५३ (शक १९१८) में शुक्र के पूर्व में अस्त होने की तिथि का गणित द्वारा साधन *

सूर्य शुक्रयुति कालिक स्पष्ट तिथिगण =३५९.६
तिथि शुद्धि =२५.१

उपकरण ↓	अक्षांश +२८°/३८'	अक्षांश +३०°/००'	अक्षांश +३१°/००'
त्रिभोन लग्न व्यस्तक्रान्ति अक्षांश	+२२.० +२८.६	+२२.० +३०.०	+२२.० +३१.०
त्रिभोन लग्नतांश	+५०.६	+५२.०	+५३.०
सन्ध्यारुणसंस्कार (तिथि)	-३८.०	-३९.३	-४०.२
गुणक गुण्य	+१.२१ -६.००	+१.२८ -६.००	+१.३३ -६.००
दृक्कर्म (तिथि) युतिकालिक स्पष्टतर तिथिगण तिथि शुद्धि सन्ध्यारुण संस्कार	-७.३ +३६१.३ +२५.१ -३८.०	-७.७ +३६१.३ +२५.१ -३९.३	-८.० +३६१.३ +२५.१ -४०.२
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से बीती तिथियां	३४१.१ (माघ शुक्ल १२)	३३९.४ (माघ शुक्ल १०)	३३८.२ (माघ शुक्ल ९)
अंग्रेजी तारीख	१८ फर.'९७	१६फर.'९७	१५ फर.'९७

(* यह गणित 'ज्योतिर्गणित' के अनुसार है, जिसे भारत के सभी पंचांगकार प्रामाणिक मानते हैं।)

आश्चर्य की बात है-पंजाब के एक पंचांग में ३१ अक्षांश पर शुक्र के पूर्वास्त होने की तारीख २१ फरवरी' ९७ दर्साई गई। जिसके आधार पर कई भ्रान्त ज्योतिषियों ने १३ फरवरी' ९७ से १८ फरवरी की अवधि में भी विवाहादि मांगलिक कृत्य करवा डाले, जबकि पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश के ३१, ३० अक्षांश वाले स्थानों पर १५-१६ फरवरी' ९७ को शुक्रास्त हो जाने के कारण १२-१३ फरवरी को शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ हो जाने से १२-१३ फरवरी से शुभकृत्य वर्जित हो जाने चाहिएं थे। यह भी आश्चर्य है कि इसी पंचांग के अनुसार दिल्ली में भी, जहाँ वहाँ के अक्षांश के अनुसार शुक्रास्त १८ फरवरी ९७ को ही हो गया था, और तदनुसार वहां शुक्रवार्धक्य १५ फर. ९७ को प्रारम्भ हो चुका था, कुछ ज्योतिषियों ने १५ और १६ फरवरी ९७ को भी अनेकत्र विवाह करवा डाले। इस बारे दिल्ली, पंजाब, हरियाणा के अनेकों विज्ञ ज्योतिषियों ने इन ज्योतिषियों के इस अशास्त्रीय निर्णय की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया और हमें प्रेरित किया कि फरवरी ९७ वाले इस शुक्रास्त की वास्तविक शुद्ध तारीख स्पष्ट कर देने वाली गणित की प्रक्रिया को पंचांग में प्रकाशित किया जाए, ताकि 'नीर-क्षीर विवेक' हो सके। उनकी इसी प्रेरणा के फलस्वरूप ही +३०°, +३१° और +२८° /३८' अक्षांशों के इस शुक्रास्त की पूरी गणित प्रक्रिया 'ज्योति गणित' के अनुसार यहाँ प्रस्तुत की गई है। शेष अक्षांशों की गणित विस्तार भय से यहाँ नहीं दी गई।

सर्व साधारण को इस शुक्रास्त की अक्षांश भेद से भिन्न-भिन्न तारीखों का स्पष्ट निर्देश करने वाला एक वर्ग-चित्र (graph) भी यहाँ दिया जा रहा है। इस वर्ग चित्र से आप +१५° से +३५° अक्षांश वाले भारत के किसी भी स्थान पर शुक्र के इस पूर्वास्त की तारीख जान सकते हैं। वर्ग पत्र के बाईं और पहले कालम में लिखे आपके अभीष्ट अक्षांश वाली रेखा यहां खींची गई "टेढ़ी टूटी रेखा" (---इस प्रकार की रेखा) को जिस तारीख वाली रेखा पर काटती है वही उस अक्षांश वाले आपके अभीष्ट स्थान में शुक्र के इस पूर्वास्त होने की तारीख है। जैसे:- ३१°(उ) अक्षांश वाली रेखा इस टेढ़ी टूटी रेखा को १५ फरवरी ९७ वाली रेखा पर काटती है। इसका अर्थ है ३१ अक्षांश वाले सभी नगरों में शुक्र का यह पूर्वास्त १५ फरवरी' ९७ को हुआ।

सं. २०५३ वि. में अक्षांशभेद से शुक्र से पूर्वास्त की तारीखों का प्रदर्शक वर्गपत्र

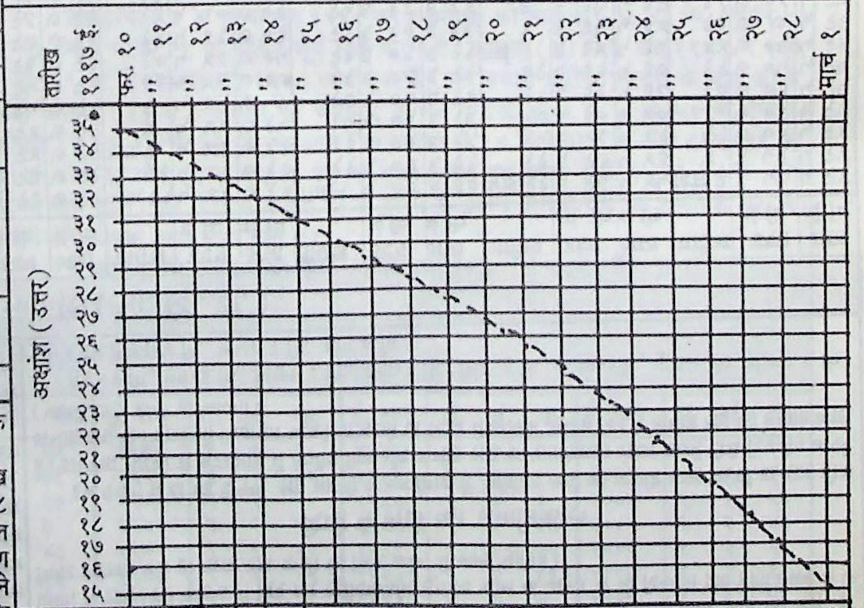

गुरु विशेष कर शुक्र को आकाश में पहिचानना बहुत आसान है। ये दोनों ताराग्रह तारों से कहीं अधिक चमकदार है। इसलिए उदय होने के बाद और अस्त होने से पहिले ये प्रातः या सायं क्षितिज से ऊपर बड़ी आसानी से सर्व साधारण की दृष्टि में आ जाते हैं। अतः कोई भी व्यक्ति जिसे ग्रहदर्शन में थोड़ी से भी रुचि हो, इनके उदय और अस्त होने की तारीखें आकाश में इन्हें देखकर स्वयं भी निश्चित कर सकता है और यह भी निर्णय कर सकता है कि कौन से पंचांग में दी गई इनके उदय-अस्त होने की तारीखें शुद्ध हैं।

ध्यान दें-इस वर्ष (सं. २०५५ वि. में) भी शुक्र के पश्चिमोदय की तारीख में भारत के विभिन्न नगरों में ६-७ दिन का अन्तर रहेगा। इसका स्पष्टीकरण विवाहादिमूहूर्तों से पहिले 'समय शुद्धि' वाले विवरण में दिया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिल्ली का पंचाग

लेखक-प्रियव्रत शर्मा

कुछ लोग हम से अक्सर पूछा करते हैं कि 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' जबकि दिल्ली में भी खूब प्रचलित हैं तब क्या कारण है आप दिल्ली के अक्षांश रेखांश के आधार पर इसे क्यों नहीं बनाते? इस बारे हमारा स्पष्टीकरण इस प्रकार है:-

तिथि, नक्षत्र, योग, करण, भद्रा, तथा ग्रहों के राशि नक्षत्रों में प्रवेश आदि का जो घटी पलों वाला काल पंचागों में दिया रहता है, उसकी गणित किसी एक नगर के सूर्योदय के अनुसार ही की होती हे । जैसे-बनारस के पंचांग में यह बनारस के, दिल्ली के, पंचांग में दिल्ली के और चण्डीगढ़ के पंचाग में चण्डीगढ़ के सूर्योदय से की गई होती है? अतः इन घटी-पलों को यदि हम किसी दूसरे नगर में इस्तेमाल करना चाहते हैं तो इन्हें पंचांग परिवर्तन गणित की प्रक्रिया द्वारा बदलना जरूरी होता है । लेकिन यदि यहाँ घटी पलों की जगह स्टैं. टा. घण्टा, मिनटात्मक को प्रयोग में लाया जाए तो कहीं भी पंचांग परिवर्त्तन की जरूरत नहीं रहती क्योंक स्टैं. टा. के अनुसार तिथि आदि का काल देश के सभी शहरों में एकसा ही रहता है, उसमें स्थानभेद होने पर भी कोई अन्तर नहीं आता। जैसे-सं.२०५५ वि. में चैत्र शुक्ल चतुर्थी ३१ मार्च' ९८ को भा. स्टैं.टा. के अनुसार १८ घं. ५१ मि. पर समाप्त होगी, इसका अर्थ है यह तिथि कलकत्ता चण्डीगढ़ , दिल्ली आदि सभी भारतीय नगरों में ३१ मार्च ९८ को १८ घं. ५१ मि. (सायं ६ घं.५१ मि.) पर ही समाप्त मानी जाएगी। इसी प्रकार इसी वर्ष चन्द्रमा मेष राशि में २५ अप्रै. ९८ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार २१ घं. ५४ मिं. पर प्रवेश करेगा इस का अभिप्राय है भारत के कलाकत्ता आदि सभी नगरों में चन्द्रमा का मेष राशि में प्रवेश २५ अप्रै. ९८ को २१ घं. ५४ मि.(भा.स्टैं. टा.) पर ही होगा।

इस उपरोक्त' स्पष्टीकरण का अभिप्राय यह है कि भा.स्टैं.टा. में तिथि नक्षत्रादि का काल बतलाने वाला पंचांग जो घटी-पलात्मक तिथ्यादि वाले २४ पक्षों के पृष्ठों के बाद इस पंचांग में दिया गया है,वह केवल दिल्ली ही नहीं ,अपितु भारत के बनारस आदि सभी नगरों में ठीक इसी रूप में (बिना किसी पंचांग परिवर्त्तन के) प्रयोग में लाया जा सकता है। स्थान भेद का तिथ्यादिके स्टैं. टा. पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हाँ, सूर्य चन्द्र के उदयास्त और लग्नों के प्रारम्भ-समप्ति काल तो प्रत्येक स्थान के लिए अलग अलग ही होते हैं।

दिल्ली में सूर्योदय, सूर्यास्तकाल

नीचे दिल्ली में सूर्योदय, सूर्यास्त का सूक्ष्म काल (भा.स्टैं.टा.)दिया गया है। यह काल किरण वक्री भवन संस्कार से युक्त है। अतः इष्ट काल बनाने के लिए इस कोष्ठक वाले सूर्योदय काल में ३ मिनट जोड़ कर उसे ही, प्रयोग में लाएं। इस कोष्ठक में दिए गए सूर्योदय और सूर्यास्त काल के अन्तर से जो दिनमान प्राप्त होगा,उसमें से ६ मिनट घटाकर उसे ही दशम लग्न बनाने के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।

दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग में दी गई दैनिक लग्न सारणी से चण्डीगढ़ में प्रतिदिन लग्नों का समाप्ति काल भा.स्टैं.टा. ज्ञात होता है। इस लग्न सारणी से चण्डीगढ़ में अभीष्ट दिन और अभीष्ट लग्न का समप्तिकाल लेकर उसमें नीचे दिए गए अपने अभीष्ट लग्न के मिनटों को चिह्नासार जोड़ने या घटाने पर दिल्ली में आपके अभीष्ट दिन में अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात हो जाएगा -

मेष +३ मि., वृष+३ मि., मिथुन+२ मि., कर्क+१ मि., सिंह-१ मि., कन्या-३मि., तुला-५ मि.,वृश्चिक-६ मि., धनु-६ मि.,मकर-४ मि., कुम्भ-२ मि., मीन ० मि.

दिल्ली में सूर्योदय, सूर्यास्तकाल (भा. स्टैं . टा.)

तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	तारीख	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
जन. १	७ १४	५ ३५	फर. १२	७ ०३	६ ०८	मार्च २५	६ २०	६ ३५	मई ६	५ ३७	६ ५९	जून १७	५ २३	७ २१	जुला. २९	५ ४१	७ १४	सितं. ९	६ ०३	६ ३३	अक्टू. २१	६ २६	५ ४५	दिसं. २	६ ५७	५ २४
३	७ १५	५ ३६	१४	७ ०२	६ १०	२७	६ १७	६ ३६	८	५ ३५	७ ००	१९	५ २३	७ २१	३१	५ ४२	७ १३	११	६ ०४	६ ३१	२३	६ २७	५ ४३	४	६ ५९	५ २४
५	७ १५	५ ३७	१६	७ ००	६ ११	२९	६ १५	६ ३७	१०	५ ३४	७ ०१	२१	५ २४	७ २२	अग. २	५ ४३	७ ११	१३	६ ०५	६ २९	२५	६ २८	५ ४२	६	७ ००	५ २४
७	७ १५	५ ३९	१८	६ ५८	६ १३	३१	६ १३	६ ३८	१२	५ ३२	७ ०३	२३	५ २४	७ २२	४	५ ४४	७ १०	१५	६ ०६	६ २६	२७	६ ३०	५ ४०	८	७ ०२	५ २४
९	७ १५	५ ४०	२०	६ ५६	६ १४	अप्रै. २	६ ११	६ ३९	१४	५ ३१	७ ०४	२५	५ २५	७ २२	६	५ ४५	७ ८	१७	६ ०७	६ २४	२९	६ ३१	५ ३८	१०	७ ०३	५ २५
११	७ १६	५ ४२	२२	६ ५५	६ १५	४	६ ०८	६ ४०	१६	५ ३०	७ ०५	२७	५ २५	७ २३	८	५ ४६	७ ०७	१९	६ ०८	६ २१	३१	६ ३३	५ ३७	१२	७ ०५	५ २५
१३	७ १६	५ ४४	२४	६ ५३	६ १७	६	६ ०६	६ ४२	१८	५ २९	७ ०६	२९	५ २६	७ २३	१०	५ ४८	७ ०५	२१	६ ०९	६ १९	नवं २	६ ३४	५ ३५	१४	७ ०६	५ २६
१५	७ १५	५ ४५	२६	६ ५१	६ १८	८	६ ०४	६ ४३	२०	५ २८	७ ०७	जुला. १	५ २७	७ २३	१२	५ ४९	७ ०३	२३	६ १०	६ १६	४	६ ३५	५ ३४	१६	७ ७	५ २६
१७	७ १५	५ ४७	२८	६ ४९	६ १९	१०	६ ०२	६ ४४	२२	५ २७	७ ०९	३	५ २८	७ २३	१४	५ ५०	७ ०१	२५	६ ११	६ १४	६	६ ३७	५ ३२	१८	७ ०८	५ २७
१९	७ १५	५ ४९	मार्च १	६ ४७	६ २१	१२	५ ५९	६ ४५	२४	५ २६	७ १०	५	५ २८	७ २३	१६	५ ५१	६ ५९	२७	६ १२	६ १२	८	६ ३८	५ ३१	२०	७ ०९	५ २८
२१	७ १४	५ ५०	३	६ ४५	६ २२	१४	५ ५७	६ ४६	२६	५ २५	७ ११	७	५ २९	७ २२	१८	५ ५२	६ ५८	२९	६ १३	६ ०९	१०	६ ४०	५ ३०	२२	७ १०	५ २९
२३	७ १४	५ ५२	५	६ ४३	६ २३	१६	५ ५५	६ ४७	२८	५ २५	७ १२	९	५ ३०	७ २२	२०	५ ५३	६ ५६	अक्टू. १	६ १४	६ ०७	१२	६ ४२	५ २९	२४	७ ११	५ ३०
२५	७ १३	५ ५४	७	६ ४०	६ २५	१८	५ ५३	६ ४८	३०	५ २४	७ १३	११	५ ३१	७ २२	२२	५ ५४	६ ५४	३	६ १५	६ ०५	१४	६ ४३	५ २८	२६	७ १२	५ ३१
२७	७ १३	५ ५५	९	६ ३८	६ २६	२०	५ ५१	६ ५०	जून १	५ २४	७ १४	१३	५ ३२	७ २१	२४	५ ५५	६ ५१	५	६ १६	६ ०२	१६	६ ४५	५ २७	२८	७ १३	५ ३२
२९	७ १२	५ ५७	११	६ ३६	६ २७	२२	५ ४९	६ ५१	३	५ २३	७ १५	१५	५ ३३	७ २१	२६	५ ५६	६ ४९	७	६ १७	६ ००	१८	६ ४६	५ २६	३०	७ १४	५ ३४
३१	७ ११	५ ५९	१३	६ ३४	६ २८	२४	५ ४७	६ ५२	५	५ २३	७ १६	१७	५ ३४	७ २०	२८	५ ५७	६ ४७	९	६ १९	५ ५८	२०	६ ४८	५ २५	जन. १	७ १४	५ ३५
फर. २	७ १०	६ ००	१५	६ ३१	६ २९	२६	५ ४५	६ ५३	७	५ २३	७ १७	१९	५ ३५	७ १९	३०	५ ५८	६ ४५	११	६ २०	५ ५६	२२	६ ४९	५ २५			
४	७ ०९	६ ०२	१७	६ २९	६ ३०	२८	५ ४३	६ ५४	९	५ २३	७ १८	२१	५ ३६	७ १८	सितं. १	५ ५९	६ ४३	१३	६ २१	५ ५४	२४	६ ५१	५ २४			
६	७ ०७	६ ०३	१९	६ २७	६ ३२	३०	५ ४२	६ ५५	११	५ २३	७ १९	२३	५ ३७	७ १७	३	६ ००	६ ४०	१५	६ २२	५ ५१	२६	६ ५३	५ २४			
८	७ ०६	६ ०५	२१	६ २५	६ ३३	मई २	५ ४०	६ ५७	१३	५ २३	७ १९	२५	५ ३९	७ १६	५	६ ०१	६ ३८	१७	६ २३	५ ४९	२८	६ ५४	५ २४			
१०	७ ०५	६ ०६	२३	६ २२	६ ३४	४	५ ३८	६ ५८	१५	५ २३	७ २०	२७	५ ४०	७ १५	७	६ ०२	६ ३६	१९	६ २४	५ ४७	३०	६ ५६	५ २४			

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ईस्वी सन् १९०० से २०१९ तक का स्पष्ट सूर्य

(६-७ सेकण्डों में ही इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कीजिए)

लेखक : प्रियव्रत शर्मा

प्राचीन शैली से लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिए इष्टकालिक सायन स्पष्ट सूर्य की आवश्यकता होती है। यहां दिए गए तीन कोष्ठकों [सूर्य साधन कोष्ठक (१),(२) और (३)] से सन् १९००ई. से सन् २०१९ ई. तक के १२० वर्षों में किसी भी समय का सायन सूर्य छः सात सेकण्डों में ही स्पष्ट किया जा सकता है। इन कोष्ठकों द्वारा जाने गए स्पष्ट सायन सूर्य में २ कला से ज्यादा की स्थूलता नहीं होगी। इसलिए इससे स्पष्ट किए गए लग्न एवं दशम में भी २ कला से अधिक अन्तर नहीं हो सकता। हमारे इष्टकाल में चार सैकण्ड की अशुद्धि होने पर भी लग्न, दशम में एक कला की अशुद्धि आ जाती है। सैकण्डों की तो बात ही क्या, हमारे इष्टकाल में मिनट तक की अशुद्धि अक्सर रहती ही है। अतः इन कोष्ठकों से स्पष्ट किए गए सायन सूर्य द्वारा जो लग्न व दशम स्पष्ट किया जाएगा, वह पर्याप्त सूक्ष्म होगा।

सूर्य स्पष्ट करने की विधि-कोष्ठक नं. (१) से अपने ईस्वी सन् द्वारा, कोष्ठक नं. (२) से अपने महीने की तारीख द्वारा, तथा कोष्ठक न. (३) से अपने इष्टकालिक भा.स्टै.टा. के घण्टा मिनटों और तारीख द्वारा रा.अं.क. उठाएं। इन तीनों का योग (जोड़) ही आपका इष्ट कालिक स्पष्ट सायन सूर्य होगा। योग की राशि १२ हो या १२ से अधिक हो तो उसमें १२ घण्टा घटा दें। यदि आपका वर्ष लीप इयर (लुप्तवर्ष) हो तो सिर्फ फरवरी के बाद के महीनों की तारीख में १ जोड़कर कोष्ठक (२) को प्रयोग में लाएं।

उदाहरण (१)- सन् १९४५ की १३ मई को प्रातः १० घं. ३० मि. भा.स्टै.टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करें। कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४५ के आगे ९ रा. २ अं. १३ क., कोष्ठक (२) में १३ मई को ४ रा. ११ अं. ३९ क. और कोष्ठक (३) में १० घं. २४ मि. के आगे २३ अप्रैल से ३० मई के नीचे ८ अं. १२ क. है। इन तीनों का योग १३ रा. २२ अं. ४ क. हुआ। इसमें से १२ राशि घटाने पर १ रा. २२ अ. ४ क. हमारा इष्ट कालिक सायन स्पष्ट सूर्य हो गया।

उदाहरण (२)- ईस्वी सन् १९४८ की ८ अगस्त को शाम के ५ घं. ४० मि. (यानि १७ घं. ४० मि.) भा.स्टै.टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करना है। कोष्ठक (१) में ई. सन् १९४८ में ९ रा. १ अं. २९ क. है। हमारा सन् १९४८ लीप इयर है, और हमारी तारीख फरवरी के बाद की है, अतः कोष्ठक (२) में ८ अगस्त की जगह ९ अगस्त में देखा तो ७ रा. ५ अं. ५० क. मिली। कोष्ठक (३) में १७ घं. ३६ मि. के आगे ''७ अगस्त से १४ सितम्बर'' के नीचे ८ अं. २९ क. है। इन तीनों का योग १६ रा. १५ अं. ४८ क. हुआ। अतः इस समय ४ रा. १५ अं. ४८ क. स्पष्ट सायन सूर्य हुआ। इसे निरयण बनाना हो तो इसमें से अपने अभीष्ट वर्ष का अयनांश घटा दें। (अयनांश कोष्ठक आगे दिया गया है।)

ये कोष्ठक मेरे अप्रकाशित ग्रन्थ '**गणक मार्त्तण्ड** ' से उद्धृत हैं।

सूर्यसाधन कोष्ठक (१)

ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.	ई. सन्	रा.	अं.	क.
●१९००	९	२	९	१९१७	९	२	१	१९३४	९	१	५४	१९५१	९	१	४५	१९६८	९	१	३८	१९८५	९	२	३१	२००२	९	२	२४
१९०१	९	१	५४	१९१८	९	१	४६	१९३५	९	१	३९	१९५२	९	१	३१	१९६९	९	२	२४	१९८६	९	२	१७	२००३	९	२	१०
१९०२	९	१	३९	१९१९	९	१	३१	१९३६	९	१	२४	१९५३	९	२	१७	१९७०	९	२	९	१९८७	९	२	२	२००४	९	१	५५
१९०३	९	१	२४	१९२०	९	१	१७	१९३७	९	२	१०	१९५४	९	२	२	१९७१	९	१	५४	१९८८	९	१	४७	२००५	९	२	४१
१९०४	९	१	९	१९२१	९	२	३	१९३८	९	१	५५	१९५५	९	१	४८	१९७२	९	१	४०	१९८९	९	२	३४	२००६	९	२	२६
१९०५	९	१	५५	१९२२	९	१	४८	१९३९	९	१	४०	१९५६	९	१	३३	१९७३	९	२	२६	१९९०	९	२	१९	२००७	९	२	११
१९०६	९	१	४०	१९२३	९	१	३३	१९४०	९	१	२५	१९५७	९	२	१९	१९७४	९	२	११	१९९१	९	२	४	२००८	९	१	५६
१९०७	९	१	२५	१९२४	९	१	१८	१९४१	९	२	१२	१९५८	९	२	४	१९७५	९	१	५६	१९९२	९	१	४९	२००९	९	२	४२
१९०८	९	१	११	१९२५	९	२	४	१९४२	९	१	५७	१९५९	९	१	४९	१९७६	९	१	४१	१९९३	९	२	३५	२०१०	९	२	२७
१९०९	९	१	५७	१९२६	९	१	४९	१९४३	९	१	४२	१९६०	९	१	३५	१९७७	९	२	२८	१९९४	९	२	२०	२०११	९	२	१२
१९१०	९	१	४२	१९२७	९	१	३४	१९४४	९	१	२७	१९६१	९	२	२०	१९७८	९	२	१३	१९९५	९	२	५	२०१२	९	१	५७
१९११	९	१	२८	१९२८	९	१	२०	१९४५	९	२	१३	१९६२	९	२	६	१९७९	९	१	५९	१९९६	९	१	५०	२०१३	९	२	४४
१९१२	९	१	१३	१९२९	९	२	६	१९४६	९	१	५८	१९६३	९	१	५१	१९८०	९	१	४४	१९९७	९	२	३६	२०१४	९	२	३०
१९१३	९	१	५९	१९३०	९	१	५१	१९४७	९	१	४४	१९६४	९	१	३६	१९८१	९	२	३०	१९९८	९	२	२२	२०१५	९	२	१५
१९१४	९	१	४५	१९३१	९	१	३७	१९४८	९	१	२९	१९६५	९	२	२३	१९८२	९	२	१५	१९९९	९	२	७	२०१६	९	२	०
१९१५	९	१	३०	१९३२	९	१	२२	१९४९	९	२	१५	१९६६	९	२	८	१९८३	९	२	०	२०००	९	१	५२	२०१७	९	२	४६
१९१६	९	१	१५	१९३३	९	२	८	१९५०	९	२	०	१९६७	९	१	५३	१९८४	९	१	४५	२००१	९	२	३९	२०१८	९	२	३१
																								२०१९	९	२	१६

● ईस्वी सन् १९०० लीप इयर (प्लुत वर्ष) नहीं था।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

* सूर्य साधन कोष्ठक (२)

तारीख	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसंबर			तारीख
↓	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	↓
१	०	०	०	१	१	३३	१	२९	५०	३	०	४१	४	०	३	४	२९	५६	५	२८	३५	६	२८	१०	७	२७	५९	८	२७	१४	९	२७	५९	१०	२८	१३	१
२	०	१	१	१	२	३४	२	०	५०	३	१	४०	४	१	१	५	०	५३	५	२९	३२	६	२९	८	७	२८	५७	८	२८	१३	९	२८	५९	१०	२९	१४	२
३	०	२	२	१	३	३५	२	१	५०	३	२	४०	४	१	५९	५	१	५१	६	०	३०	७	०	५	७	२९	५५	८	२९	१२	१०	०	०	११	०	१५	३
४	०	३	३	१	४	३६	२	२	५०	३	३	३९	४	२	५७	५	२	४८	६	१	२७	७	१	३	८	०	५३	९	०	१२	१०	१	०	११	१	१५	४
५	०	४	५	१	५	३७	२	३	५०	३	४	३८	४	३	५५	५	३	४५	६	२	२४	७	२	०	८	१	५१	९	१	११	१०	२	०	११	२	१६	५
६	०	५	६	१	६	३७	२	४	५०	३	५	३७	४	४	५३	५	४	४३	६	३	२१	७	२	५८	८	२	५०	९	२	१०	१०	३	०	११	३	१७	६
७	०	६	७	१	७	३८	२	५	५०	३	६	३६	४	५	५१	५	५	४०	६	४	१८	७	३	५५	८	३	४८	९	३	९	१०	४	०	११	४	१८	७
८	०	७	८	१	८	३९	२	६	५०	३	७	३५	४	६	४९	५	६	३८	६	५	१६	७	४	५३	८	४	४६	९	४	८	१०	५	०	११	५	१९	८
९	०	८	९	१	९	४०	२	७	५०	३	८	३४	४	७	४७	५	७	३५	६	६	१३	७	५	५०	८	५	४४	९	५	७	१०	६	१	११	६	२०	९
१०	०	९	१०	१	१०	४१	२	८	५०	३	९	३२	४	८	४५	५	८	३२	६	७	१०	७	६	४८	८	६	४३	९	६	७	१०	७	१	११	७	२१	१०
११	०	१०	११	१	११	४१	२	९	५०	३	१०	३१	४	९	४३	५	९	३०	६	८	७	७	७	४५	८	७	४१	९	७	६	१०	८	१	११	८	२२	११
१२	०	११	१२	१	१२	४२	२	१०	५०	३	११	३०	४	१०	४१	५	१०	२७	६	९	४	७	८	४३	८	८	३९	९	८	५	१०	९	२	११	९	२३	१२
१३	०	१२	१४	१	१३	४३	२	११	५०	३	१२	२९	४	११	३९	५	११	२५	६	१०	२	७	९	४०	८	९	३८	९	९	५	१०	१०	२	११	१०	२४	१३
१४	०	१३	१५	१	१४	४३	२	१२	५०	३	१३	२८	४	१२	३७	५	१२	२२	६	१०	५९	७	१०	३८	८	१०	३६	९	१०	४	१०	११	३	११	११	२५	१४
१५	०	१४	१६	१	१५	४४	२	१३	५०	३	१४	२७	४	१३	३५	५	१३	१९	६	११	५६	७	११	३६	८	११	३५	९	११	४	१०	१२	३	११	१२	२६	१५
१६	०	१५	१७	१	१६	४४	२	१४	४९	३	१५	२५	४	१४	३३	५	१४	१७	६	१२	५४	७	१२	३३	८	१२	३३	९	१२	३	१०	१३	३	११	१३	२७	१६
१७	०	१६	१८	१	१७	४५	२	१५	४९	३	१६	२४	४	१५	३१	५	१५	१४	६	१३	५१	७	१३	३१	८	१३	३२	९	१३	३	१०	१४	४	११	१४	२८	१७
१८	०	१७	१९	१	१८	४६	२	१६	४९	३	१७	२३	४	१६	२९	५	१६	११	६	१४	४८	७	१४	२९	८	१४	३०	९	१४	२	१०	१५	४	११	१५	२९	१८
१९	०	१८	२०	१	१९	४६	२	१७	४९	३	१८	२२	४	१७	२६	५	१७	८	६	१५	४५	७	१५	२७	८	१५	२९	९	१५	२	१०	१६	५	११	१६	३१	१९
२०	०	१९	२२	१	२०	४७	२	१८	४८	३	१९	२०	४	१८	२४	५	१८	६	६	१६	४३	७	१६	२४	८	१६	२८	९	१६	२	१०	१७	५	११	१७	३२	२०
२१	०	२०	२३	१	२१	४७	२	१९	४८	३	२०	१९	४	१९	२२	५	१९	३	६	१७	४०	७	१७	२२	८	१७	२६	९	१७	१	१०	१८	६	११	१८	३३	२१
२२	०	२१	२४	१	२२	४८	२	२०	४७	३	२१	१७	४	२०	२०	५	२०	०	६	१८	३७	७	१८	२०	८	१८	२५	९	१८	१	१०	१९	७	११	१९	३४	२२
२३	०	२२	२५	१	२३	४८	२	२१	४७	३	२२	१६	४	२१	१८	५	२०	५८	६	१९	३५	७	१९	१८	८	१९	२४	९	१९	१	१०	२०	७	११	२०	३५	२३
२४	०	२३	२६	१	२४	४८	२	२२	४६	३	२३	१४	४	२२	१५	५	२१	५५	६	२०	३२	७	२०	१६	८	२०	२२	९	२०	०	१०	२१	८	११	२१	३६	२४
२५	०	२४	२७	१	२५	४९	२	२३	४६	३	२४	१३	४	२३	१३	५	२२	५२	६	२१	२९	७	२१	१३	८	२१	२१	९	२१	०	१०	२२	९	११	२२	३७	२५
२६	०	२५	२८	१	२६	४९	२	२४	४५	३	२५	११	४	२४	११	५	२३	४९	६	२२	२६	७	२२	११	८	२२	२०	९	२२	०	१०	२३	९	११	२३	३८	२६
२७	०	२६	२९	१	२७	४९	२	२५	४५	३	२६	९	४	२५	८	५	२४	४६	६	२३	२४	७	२३	९	८	२३	१९	९	२३	०	१०	२४	१०	११	२४	३९	२७
२८	०	२७	३०	१	२८	५०	२	२६	४४	३	२७	८	४	२६	६	५	२५	४४	६	२४	२१	७	२४	७	८	२४	१८	९	२४	०	१०	२५	११	११	२५	४०	२८
२९	०	२८	३१	१	२९	५०	२	२७	४३	३	२८	६	४	२७	३	५	२६	४१	६	२५	१८	७	२५	५	८	२५	१७	९	२५	०	१०	२६	१२	११	२६	४२	२९
३०	०	२९	३२	......			२	२८	४३	३	२९	४	४	२८	१	५	२७	३८	६	२६	१६	७	२६	३	८	२६	१५	९	२५	५९	१०	२७	१२	११	२७	४३	३०
३१	१	०	३२	......			२	२९	४२	....			४	२८	५९	......			६	२७	१३	७	२७	१	....			९	२६	५९	....			११	२८	४४	३१
																																		११	२९	४५	३२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य साधन कोष्ठक (३)

काल (भा. स्टै. टा.)		१ जन. से १९ फर. / १७ नव. से ३१ दिसं.	२० फर. से २३ मार्च / २५ अक्तू. से २६ नव.	२४ मार्च से २२ अप्रै. / २५ सितं. से २४ अक्तू.	२३ अप्रै. से ३० मई / ७ अग. से २४ सितं.	३१ मई से ३० जून / १ जुला. से ६ अग.	काल (भा.स्टै.टा.)		१ जन. से १९ फर. / १७ नव. से ३१ दिसं.	२० फर. से २३ मार्च / २५ अक्तू. से २६ नव.	२४ मार्च से२२ अप्रै. / २५ सितं. से २४ अक्तू.	२३ अप्रै. से ३० मई / ७ अग. से २४ सितं.	३१ मई से ३० जून / १ जुला. से ६ अग.
घं.	मि.	अं.क.	अं.क.	अं.क.	अं.क.	अं. क.	घं.	मि.	अं.क.	अं.क.	अं.क.	अं.क.	अं. क.
०	०	७ ४६	७ ४६	७ ४६	७ ४७	७ ४७	१२	०	८ १६	८ १६	८ १६	८ १५	८ १५
०	२४	७ ४७	७ ४७	७ ४७	७ ४७	७ ४८	१२	२४	८ १७	८ १७	८ १७	८ १६	८ १६
०	४८	७ ४८	७ ४८	७ ४८	७ ४८	७ ४९	१२	४८	८ १८	८ १८	८ १८	८ १७	८ १७
१	१२	७ ४९	७ ४९	७ ४९	७ ४९	७ ५०	१३	१२	८ १९	८ १९	८ १९	८ १८	८ १८
१	३६	७ ५०	७ ५०	७ ५०	७ ५०	७ ५१	१३	३६	८ २०	८ २०	८ २०	८ १९	८ १९
२	०	७ ५१	७ ५१	७ ५१	७ ५१	७ ५१	१४	०	८ २१	८ २१	८ २१	८ २०	८ २०
२	२४	७ ५२	७ ५२	७ ५२	७ ५२	७ ५२	१४	२४	८ २२	८ २२	८ २२	८ २१	८ २१
२	४८	७ ५३	७ ५३	७ ५३	७ ५३	७ ५३	१४	४८	८ २३	८ २३	८ २३	८ २२	८ २२
३	१२	७ ५४	७ ५४	७ ५४	७ ५४	७ ५४	१५	१२	८ २४	८ २४	८ २४	८ २३	८ २३
३	३६	७ ५५	७ ५५	७ ५५	७ ५५	७ ५५	१५	३६	८ २५	८ २५	८ २५	८ २४	८ २४
४	०	७ ५६	७ ५६	७ ५६	७ ५६	७ ५६	१६	०	८ २६	८ २६	८ २६	८ २५	८ २५
४	२४	७ ५७	७ ५७	७ ५७	७ ५७	७ ५७	१६	२४	८ २७	८ २७	८ २७	८ २६	८ २६
४	४८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	७ ५८	१६	४८	८ २८	८ २८	८ २८	८ २७	८ २७
५	१२	७ ५९	७ ५९	७ ५९	७ ५९	७ ५९	१७	१२	८ २९	८ २९	८ २९	८ २८	८ २८
५	३६	८ ०	८ ०	८ ०	८ ०	८ ०	१७	३६	८ ३१	८ ३०	८ २९	८ २९	८ २९
६	०	८ १	८ १	८ १	८ १	८ १	१८	०	८ ३२	८ ३१	८ ३०	८ ३०	८ २९
६	२४	८ २	८ २	८ २	८ २	८ २	१५	२४	८ ३३	८ ३२	८ ३१	८ ३१	८ ३०
६	४८	८ ३	८ ३	८ ३	८ ३	८ ३	१८	४८	८ ३४	८ ३३	८ ३२	८ ३२	८ ३१
७	१२	८ ४	८ ४	८ ४	८ ४	८ ४	१९	१२	८ ३५	८ ३४	८ ३३	८ ३३	८ ३२
७	३६	८ ५	८ ५	८ ५	८ ५	८ ५	१९	३६	८ ३६	८ ३५	८ ३४	८ ३४	८ ३३
८	०	८ ६	८ ६	८ ६	८ ६	८ ६	२०	०	८ ३७	८ ३६	८ ३५	८ ३५	८ ३४
८	२४	८ ७	८ ७	८ ७	८ ७	८ ७	२०	२४	८ ३८	८ ३७	८ ३६	८ ३६	८ ३५
८	४८	८ ८	८ ८	८ ८	८ ८	८ ७	२०	४८	८ ३९	८ ३८	८ ३७	८ ३७	८ ३६
९	१२	८ ९	८ ९	८ ९	८ ९	८ ८	२१	१२	८ ४०	८ ३९	८ ३९	८ ३८	८ ३७
९	३६	८ १०	८ १०	८ १०	८ १०	८ ९	२१	३६	८ ४१	८ ४०	८ ३९	८ ३८	८ ३८
१०	०	८ ११	८ ११	८ ११	८ ११	८ १०	२२	०	८ ४२	८ ४१	८ ४०	८ ४०	८ ३९
१०	२४	८ १२	८ १२	८ १२	८ १२	८ ११	२२	२४	८ ४३	८ ४२	८ ४१	८ ४१	८ ४०
१०	४८	८ १३	८ १३	८ १३	८ १३	८ १२	२२	४८	८ ४४	८ ४३	८ ४२	८ ४२	८ ४१
११	१२	८ १४	८ १४	८ १४	८ १४	८ १३	२३	१२	८ ४५	८ ४४	८ ४३	८ ४३	८ ४२
११	३६	८ १५	८ १५	८ १५	८ १४	८ १४	२३	३६	८ ४६	८ ४५	८ ४४	८ ४४	८ ४३
१२	०	८ १६	८ १६	८ १६	८ १५	८ १५	२४	०	८ ४७	८ ४६	८ ४५	८ ४४	८ ४४

अयनांश कोष्ठक

	अयनांश			अयनांश			अयनांश			अयनांश	
ई. सन्	अं.	क.	ई.सन्	अं.	क.	ई. सन्	अं.	क.	ई. सन्	अं.	क.
१९००	२२	२८	१९३१	२२	५४	१९६२	२३	२०	१९९३	२३	४६
१९०१	२२	२९	१९३२	२२	५४	१९६३	२३	२०	१९९४	२३	४६
१९०२	२२	३०	१९३३	२२	५५	१९६४	२३	२१	१९९५	२३	४७
१९०३	२२	३१	१९३४	२२	५६	१९६५	२३	२२	१९९६	२३	४८
१९०४	२२	३२	१९३५	२२	५७	१९६६	२३	२३	१९९७	२३	४९
१९०५	२२	३२	१९३६	२२	५८	१९६७	२३	२४	१९९८	२३	५०
१९०६	२२	३३	१९३७	२२	५९	१९६८	२३	२५	१९९९	२३	५१
१९०७	२२	३४	१९३८	२२	५९	१९६९	२३	२५	२०००	२३	५१
१९०८	२२	३५	१९३९	२३	००	१९७०	२३	२६	२००१	२३	५२
१९०९	२२	३६	१९४०	२३	०१	१९७१	२३	२७	२००२	२३	५३
१९१०	२२	३६	१९४१	२३	०२	१९७२	२३	२८	२००३	२३	५४
१९११	२२	३७	१९४२	२३	०३	१९७३	२३	२९	२००४	२३	५५
१९१२	२२	३८	१९४३	२३	०४	१९७४	२३	३०	२००५	२३	५६
१९१३	२२	३९	१९४४	२३	०४	१९७५	२३	३०	२००६	२३	५६
१९१४	२२	४०	१९४५	२३	०५	१९७६	२३	३१	२००७	२३	५७
१९१५	२२	४१	१९४६	२३	०६	१९७७	२३	३२	२००८	२३	५८
१९१६	२२	४१	१९४७	२३	०७	१९७८	२३	३३	२००९	२३	५९
१९१७	२२	४२	१९४८	२३	०८	१९७९	२३	३४	२०१०	२४	००
१९१८	२२	४३	१९४९	२३	०९	१९८०	२३	३५	२०११	२४	०१
१९१९	२२	४४	१९५०	२३	१०	१९८१	२३	३५	२०१२	२४	०१
१९२०	२२	४४	१९५१	२३	१०	१९८२	२३	३६	२०१३	२४	०२
१९२१	२२	४५	१९५२	२३	११	१९८३	२३	३७	२०१४	२४	०३
१९२२	२२	४६	१९५३	२३	१२	१९८४	२३	३८	२०१५	२४	०४
१९२३	२२	४७	१९५४	२३	१३	१९८५	२३	३९	२०१६	२४	०५
१९२४	२२	४८	१९५५	२३	१४	१९८६	२३	४०	२०१७	२४	०६
१९२५	२२	४९	१९५६	२३	१५	१९८७	२३	४१	२०१८	२४	०६
१९२६	२२	४९	१९५७	२३	१५	१९८८	२३	४१	२०१९	२४	०७
१९२७	२२	५०	१९५८	२३	१६	१९८९	२३	४२			
१९२८	२२	५१	१९५९	२३	१७	१९९०	२३	४३			
१९२९	२२	५२	१९६०	२३	१८	१९९१	२३	४४			
१९३०	२२	५३	१९६१	२३	१९	१९९२	२३	४५			

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त उत्तर भारत के नगरों की लग्न सारणियाँ

(जम्मू काश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उ.प्र., म.प्र., बिहार, बंगाल, आसाम व नेपाल आदि के लिए)

लेखकः-प्रियव्रत शर्मा

नवीन शैली (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने की विधि इसी पंचांग में आगे दी गई है जो लोग प्राचीन पद्धति (स्पष्ट सूर्य और इष्टकाल) द्वारा ही लग्न स्पष्ट करने का अभ्यास रखते हैं उन्हें हम यहाँ इसी पद्धति से सरलता पूर्वक लग्न साधन करने का प्रकार बतलाएंगे। एतदर्थ हमने यहाँ अगले चार पृष्ठों पर सारे उत्तर भारत (उत्तर अक्षांश २१ से ३५ तक) के लिए उपयोगी लग्न सारणियां दी हैं। इससे इष्टकाल का लग्न इस प्रकार स्पष्ट कीजिए-

इष्टकाल का सायन सूर्य स्पष्ट कीजिए। पिछले तीन पृष्ठों पर दिए गए तीन सूर्य साधन कोष्ठकों से इष्टकालिक सायन सूर्य आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है। इष्टकाल यदि घड़ी पलों में है तो उसे घण्टा मिनटों में बदल लें। अपने नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में (लग्न सारणी के अपने अक्षांश वाले कालम में) इष्टकालिक सायन सूर्य की राशि अंशों से घं.मि. उठाएं। लग्न सारणी ५-५ अंशों के अन्तर पर बनी हुई है। अतः सूर्य की शेष अंश कलाओं को कला बनाकर उन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनटों से गुणा करके ३०० का भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इसे सारणी से उठाए गए घं.मि. में जोड़ दें। अब इन घं.मि. को इष्टकाल के घण्टा मिनटों में जोड़ने पर जो घं.मि. मिलें, इन्हें अपनी (अपने अक्षांश की) लग्न सारणियों में ढूढ़िये। सारणी में जहाँ इनके बराबर या इनके लगभग घं.मि. मिलें, उनके बाई ओर पहले कालम में लिखे राशि अंशों को अलग लिख लें। शेष मिनटों को ५ से गुणा करके उन्हें सारणी में दिए गए अन्तर से भाग देकर दो लब्धियां (अं.क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग लिखे राशि अंशों में जोड़ने पर आपका इष्ट कालिक सायन लग्न स्पष्ट हो जाएगा। इसमें से अपनी ईस्वी सन् का अयनांश (जो पिछले पृष्ठ पर दिए गए अयनांश कोष्ठक से प्राप्त किया जा सकता है) घटा देने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्न सारणियां आधे-आधे अक्षांशों के अन्तर पर दी गई हैं। अपने नगर के अक्षांश के समीपतम अक्षांश वाली लग्न सारणी को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

उदाहरण (1) -चण्डीगढ़ में सन् १९७७ ई. की १५ जून को शाम के ५ बजकर २५ मिनट (भा.स्टै.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य २ रा. २४ अं. १६ क. और इष्टकाल ३० घ. ७ प. और घण्टा मिनटात्मक इष्ट १२ घं. ३ मि. है। चण्डीगढ़ के अक्षांश ३० अं. ४४ क. उत्तर है। अतः इसके समीप के अक्षांश ३० अं. ३० क. वाली लग्न सारणी को प्रयोग में लाएंगे। ३० अं. ३० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य की २ राशि २० अं. के आगे ४ घं. १८ मि. मिले। सायन सूर्य के बाकी ४ अंश और १६ कलाओं का कला बनाया, तो २५६ कलाएं हुई। इन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनट २१ से गुणा करके ३०० का भाग देने पर १८ मिनट मिले। इन्हें सारणी से मिले ४ घं. १८ मिनटों में जोड़ा तो घं. ४ मिनट ३६ बने। इन्हें इष्ट के १२ घं. ३ मि. में जोड़ने पर १६ घं. ३९ मि. हुए। इन्हें ३० अं. ३० क. अक्षांश वाली सारणी में ढूढ़ने पर हमें इसके लगभग बराबर संख्या १६ घं. १७ मि. मिले। इन घण्टा मिनट के बांयी ओर पहले कालम में सारणी में ७ रा. २५ अं. लिखे हैं; -इन्हें अलग नोट किया। शेष २२ मिनटों को ५ से गुणा करके सारणी में दिए गए अन्तर २४मि. से भाग देने पर दो लब्धियां ४ अं. ३५ क. मिली। इन्हें अलग लिखे ७ रा.२५ अं. में जोड़ने पर ७ रा. २९ अं. ३५ क. हमारा इष्टकालिक सायन लग्न स्पष्ट हो गया। सन् १९७७ में अयनांश २३ अं. ३२ क. है। (देखें अयनांश सारणी)। इसे सायन लग्न में घटाने पर ७ रा. ६ अं. ३ क. हमारा इष्टकालिक निरयण लग्न स्पष्ट हो गया।

उदाहरण (२) -आगरा (उ.प्र.) में सन् १९९७ की ८ मार्च को दिन के ११ बजकर ४० मि. (भा.स्टै.टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य ११ रा. १७ अं. ४२ क. और घण्टा-मिनटात्मक इष्ट ५ घं. १ मि. है। आगरा के अक्षांश २७ अं. १० क. (उत्तर) हैं। २७ अं. ०० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य की ११ रा. १५ अं. के आगे २३ घं. १७ मि. है। सायन सूर्य के शेष २ अंश और ४२ कलाओं की कलाएं बनाई तो १६२ कलाएं हुई। इन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनट १४ से गुणा कर ३०० से भाग देने पर लब्धि ८ मिनट मिले। इन्हें २३ घं. १७ मि. में जोड़ने पर २३ घं. २५ मिनट हुए। इसमें इष्ट के ५ घं. १ मिनट जोड़ने पर ४ घं. २६ मिनट मिले। इसे २७ अं. ०० क. अक्षांश वाली लग्न सारणी में ढूढ़ने पर हमें बिल्कुल यही संख्या (४ घं. २६ मि.) २ रा. २० अं. के आगे मिली। इसलिए २ रा. २० अं. ०० क. ही हमारा इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से सन् १९९७ का अयनांश २३ अं. ४९ क. घटा देने पर १रा. २६ अं. ११ क. हमारा इष्टकालिक निरयाण लग्न बन गया।

उदाहरण (३) - कांगड़ा (हि.प्र.) में ३१ अक्तू'९६ को १८ घं.२५ मि. (भा.स्टै.टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय इष्ट काल ११ घं. ४१ मि.,स्पष्ट सायन सूर्य ७ रा. ८ अं. २१ क. है। कांगड़ा का अक्षांश ३२°।५ (उ.) है। ३२° अंक्षाश वाली लग्न सारणी में सायन सूर्य ७ रा. ५ अं. के आगे १४ घं. ४५ मि. और अन्तर २४ मि. है। शेष ३ अ. २१ क.की कलाओं (२०१) को २४ से गुण कर ३०० से भाग देने पर लब्धि १६ मि. मिले। इन्हे १४ घं. ४५ मि. में जोड़ने पर १५ घं. १ मि. हुए। इन्हें इष्टकाल में जोड़ने पर २ घं. ४२ मि. मिले। ३२° अक्षाश वाली लग्न सारणी में २ घं. ४२ मि. के लगभग बराबर संख्या (घं. मि.) २ घं. ४१ मि., १ रा. २५ अं.के आगे है। शेष १ मि. को ५ से गुण कर अन्तर मिनटों (१७) से भाग देने पर दो लब्धियां ० अं. १८ क. मिलीं। इन्हें १ रा. २५ अं. में जोड़ने पर १ रा. २५ अं. १८ क. इष्टकालिक सायन लग्न हुआ। इसमें से इस ? का अयनांश २३ अं.४८ कला घटाने पर १ रा. १ अं. ३० क. इष्ट कालिक निरयण लग्न मिल गया।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग १)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २१° |००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २१° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२° |००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३° |००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४° |००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५° |००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६° |००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६° |३०		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७° |००		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७° |३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८° |००'		अन्तर
रा.अं.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.
० ००	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१५	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४
० ०५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१५	०	१५	१४	०	१४	१४	०	१४	१५	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४
० १०	०	३१	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	३०	१५	०	२९	१५	०	२९	१५	०	२९	१५	०	२९	१४	०	२९	१४	०	२९	१४	०	२८	१४	०	२८	१४
० १५	०	४६	१६	०	४६	१५	०	४६	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४५	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४४	१५	०	४३	१५	०	४३	१४	०	४३	१४	०	४३	१५
० २०	१	०२	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०१	१६	१	०	१६	१	००	१५	०	५९	१५	०	५९	१५	०	५९	१५	०	५८	१५	०	५८	१५	०	५८	१५	०	५७	१५	०	५७	१५
० २५	१	१८	१६	१	१७	१६	१	१७	१६	१	१६	१६	१	१६	१६	१	१६	१६	१	१५	१६	०	१५	१६	१	१४	१५	१	१४	१५	१	१३	१५	१	१३	१५	१	१३	१५	१	१२	१५	१	१२	१५
१ ००	१	३४	१७	१	३३	१७	१	३३	१६	१	३२	१६	१	३२	१६	१	३१	१६	१	३१	१६	१	३०	१६	१	३०	१६	१	२९	१६	१	२९	१६	१	२८	१६	१	२८	१६	१	२७	१६	१	२७	१६
१ ०५	१	५०	१७	१	५०	१७	१	४९	१७	१	४९	१७	१	४८	१६	१	४७	१६	१	४७	१६	१	४६	१६	१	४६	१६	१	४५	१६	१	४५	१६	१	४४	१६	१	४३	१६	१	४३	१६	१	४२	१६
१ १०	२	०७	१७	२	०६	१७	२	६	१७	२	०५	१७	२	०४	१७	२	०४	१७	२	०३	१७	२	०३	१७	२	०२	१७	२	०१	१७	२	०१	१६	२	००	१६	१	५९	१६	१	५९	१६	१	५८	१६
१ १५	२	२४	१८	२	२४	१७	२	२३	१८	२	२२	१८	२	२१	१८	२	२१	१७	२	२०	१७	२	१९	१७	२	१९	१७	२	१८	१७	२	१७	१७	२	१६	१७	२	१६	१७	२	१५	१७	२	१४	१७
१ २०	२	४२	१८	२	४१	१८	२	४०	१८	२	४०	१८	२	३९	१८	२	३८	१८	२	३७	१८	२	३७	१८	२	३६	१८	२	३५	१८	२	३४	१७	२	३३	१७	२	३३	१७	२	३२	१७	२	३१	१७
१ २५	३	००	१९	२	५९	१९	२	५९	१८	२	५८	१८	२	५७	१९	२	५६	१८	२	५५	१८	२	५४	१८	२	५४	१८	२	५३	१८	२	५२	१८	२	५१	१८	२	५०	१८	२	४९	१८	२	४८	१८
२ ००	३	१९	२०	३	१८	१९	३	१७	१९	३	१६	१९	३	१५	१९	३	१४	१९	३	१४	१९	३	१३	१९	३	१२	१९	३	११	१९	३	१०	१९	३	०९	१९	३	०८	१८	३	०७	१८	३	०६	१८
२ ०५	३	३८	२०	३	३७	२०	३	३६	२०	३	३५	२०	३	३४	२०	३	३३	२०	३	३३	२०	३	३२	१९	३	३१	१९	३	३०	१९	३	२९	१९	३	२८	१९	३	२७	१९	३	२६	१९	३	२५	१९
२ १०	३	५८	२०	३	५७	२०	३	५६	२०	३	५५	२०	३	५४	२०	३	५३	२०	३	५२	२०	३	५१	२०	३	५०	२०	३	४९	२०	३	४८	२०	३	४७	२०	३	४६	२०	३	४५	२०	३	४४	२०
२ १५	४	१८	२१	४	१७	२१	४	१६	२१	४	१५	२०	४	१४	२०	४	१३	२१	४	१२	२०	४	११	२१	४	१०	२०	४	०९	२०	४	०८	२०	४	०७	२०	४	०६	२१	४	०५	२०	४	०४	२०
२ २०	४	३९	२१	४	३८	२१	४	३७	२१	४	३६	२१	४	३५	२१	४	३४	२१	४	३३	२१	४	३२	२१	४	३१	२१	४	३०	२१	४	२८	२१	४	२७	२१	४	२६	२१	४	२५	२१	४	२४	२१
२ २५	५	००	२२	४	५९	२२	४	५८	२२	४	५७	२१	४	५६	२२	४	५५	२२	४	५४	२२	४	५३	२१	४	५२	२१	४	५१	२१	४	५०	२२	४	४८	२२	४	४७	२१	४	४६	२२	४	४५	२२
३ ००	५	२२	२२	५	२१	२२	५	२०	२२	५	१९	२२	५	१८	२२	५	१७	२२	५	१६	२२	५	१४	२२	५	१३	२२	५	१२	२२	५	११	२२	५	१०	२२	५	०९	२२	५	०८	२२	५	०७	२२
३ ०५	५	४४	२२	५	४३	२२	५	४२	२२	५	४१	२२	५	३९	२२	५	३८	२३	५	३७	२२	५	३६	२२	५	३५	२२	५	३४	२३	५	३३	२२	५	३२	२२	५	३१	२२	५	३०	२२	५	२९	२३
३ १०	६	०६	२२	६	०५	२२	६	०४	२२	६	३	२२	६	०२	२३	६	१	२३	६	००	२३	५	५९	२३	५	५८	२३	५	५७	२३	५	५५	२३	५	५४	२३	५	५३	२३	५	५२	२३	५	५१	२३
३ १५	६	२८	२३	६	२७	२३	६	२६	२३	६	२५	२३	६	२४	२३	६	२३	२३	६	२२	२३	६	२१	२३	६	२०	२३	६	१९	२३	६	१८	२३	६	१७	२३	६	१६	२३	६	१५	२३	६	१४	२३
३ २०	६	५१	२३	६	५०	२३	६	४९	२३	६	४८	२३	६	४७	२३	६	४६	२३	६	४५	२३	६	४४	२३	६	४३	२३	६	४२	२३	६	४१	२३	६	४०	२३	६	३९	२३	६	३८	२३	६	३७	२३
३ २५	७	१४	२३	७	१३	२३	७	१२	२३	७	११	२३	७	१०	२३	७	०९	२३	७	०८	२३	७	०७	२३	७	०६	२३	७	०५	२३	७	४	२३	७	०३	२३	७	०२	२३	७	०१	२३	७	००	२३
४ ००	७	३६	२३	७	३५	२३	७	३५	२३	७	३४	२३	७	३३	२३	७	३२	२३	७	३१	२३	७	३०	२३	७	२९	२३	७	२८	२३	७	२७	२३	७	२६	२३	७	२६	२३	७	२५	२३	७	२४	२३
४ ०५	७	५९	२२	७	५८	२३	७	५७	२३	७	५७	२३	७	५६	२३	७	५५	२३	७	५४	२३	७	५३	२३	७	५२	२३	७	५१	२३	७	५१	२३	७	५०	२३	७	४९	२३	७	४८	२३	७	४७	२३
४ १०	८	२१	२२	८	२१	२२	८	२०	२२	८	१९	२२	८	१८	२३	८	१८	२३	८	१७	२३	८	१६	२३	८	१५	२३	८	१५	२३	८	१४	२३	८	१३	२३	८	१२	२३	८	११	२३	८	११	२३
४ १५	८	४४	२२	८	४३	२२	८	४३	२२	८	४२	२२	८	४१	२२	८	४०	२३	८	४०	२३	८	३९	२३	८	३८	२३	८	३८	२३	८	३७	२३	८	३६	२३	८	३५	२३	८	३५	२३	८	३४	२३
४ २०	९	०६	२२	९	०६	२२	९	०५	२२	९	०४	२२	९	०४	२२	९	०३	२३	९	०३	२३	९	०२	२३	९	०१	२३	९	०१	२३	९	००	२३	८	५९	२३	८	५९	२३	८	५८	२३	८	५७	२३
४ २५	९	२८	२२	९	२८	२२	९	२७	२२	९	२७	२२	९	२६	२२	९	२६	२२	९	२५	२२	९	२५	२३	९	२४	२३	९	२३	२३	९	२३	२३	९	२२	२३	९	२२	२३	९	२१	२३	९	२०	२३
५ ००	९	५०	२२	९	५०	२२	९	४९	२२	९	४९	२२	९	४९	२२	९	४८	२२	९	४८	२२	९	४७	२२	९	४७	२२	९	४६	२३	९	४६	२२	९	४५	२३	९	४५	२३	९	४४	२३	९	४४	२३
५ ०५	१०	१२	२२	१०	१२	२२	१०	१२	२२	१०	११	२२	१०	११	२२	१०	१०	२२	१०	१०	२२	१०	०९	२२	१०	०९	२२	१०	०९	२२	१०	०८	२२	१०	०८	२३	१०	०७	२३	१०	०७	२३	१०	०७	२३
५ १०	१०	३४	२२	१०	३४	२२	१०	३३	२२	१०	३३	२२	१०	३३	२२	१०	३२	२२	१०	३२	२२	१०	३२	२२	१०	३१	२२	१०	३१	२२	१०	३१	२२	१०	३०	२३	१०	३०	२३	१०	३०	२३	१०	२९	२३
५ १५	१०	५६	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५५	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५४	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२२	१०	५३	२३	१०	५२	२३	१०	५२	२३
५ २०	११	१७	२१	११	१७	२१	११	१७	२२	११	१७	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१६	२२	११	१५	२२	११	१५	२२	११	१५	२२	११	१५	२३	११	१५	२३
५ २५	११	३९	२१	११	३८	२१	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३८	२२	११	३७	२२	११	३७	२२	११	३७	२३	११	३७	२३
६ ००	१२	००	२१	१२	००	२१	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२२	१२	००	२३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग २)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २१°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २१°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २२°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २३°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २४°।००'	अन्तर
रा.अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६ ००	१२ ००	२१	१२ ००	२१	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२
६ ०५	१२ २१	२२	१२ २१	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२
६ १०	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४३	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२
६ १५	१३ ०४	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०५	२२	१३ ०६	२२	१३ ०६	२२
६ २०	१३ २६	२२	१३ २६	२२	१३ २७	२२	१३ २७	२२	१३ २७	२२	१३ २८	२२	१३ २८	२२
६ २५	१३ ४८	२२	१३ ४८	२२	१३ ४८	२२	१३ ४९	२२	१३ ४९	२२	१३ ५०	२२	१३ ५०	२२
७ ००	१४ ०९	२२	१४ १०	२२	१४ १०	२२	१४ ११	२२	१४ ११	२२	१४ १२	२२	१४ १२	२२
७ ०५	१४ ३१	२२	१४ ३२	२२	१४ ३३	२२	१४ ३३	२२	१४ ३४	२२	१४ ३४	२२	१४ ३५	२२
७ १०	१४ ५४	२२	१४ ५४	२२	१४ ५५	२२	१४ ५५	२२	१४ ५६	२२	१४ ५७	२२	१४ ५७	२३
७ १५	१५ १६	२२	१५ १७	२२	१५ १७	२२	१५ १८	२२	१५ १९	२२	१५ १९	२२	१५ २०	२३
७ २०	१५ ३८	२२	१५ ३९	२३	१५ ४०	२३	१५ ४१	२३	१५ ४१	२३	१५ ४२	२३	१५ ४३	२३
७ २५	१६ ०१	२३	१६ ०२	२३	१६ ०३	२३	१६ ०३	२३	१६ ०४	२३	१६ ०५	२३	१६ ०६	२३
८ ००	१६ २४	२३	१६ २५	२३	१६ २५	२३	१६ २६	२३	१६ २७	२३	१६ २८	२३	१६ २९	२३
८ ०५	१६ ४६	२३	१६ ४७	२३	१६ ४८	२३	१६ ४९	२३	१६ ५०	२३	१६ ५१	२३	१६ ५२	२३
८ १०	१७ ०९	२३	१७ १०	२३	१७ ११	२३	१७ १२	२३	१७ १३	२३	१७ १४	२३	१७ १५	२३
८ १५	१७ ३२	२२	१७ ३३	२२	१७ ३४	२२	१७ ३५	२२	१७ ३६	२२	१७ ३७	२२	१७ ३८	२३
८ २०	१७ ५४	२२	१७ ५५	२२	१७ ५६	२२	१७ ५७	२२	१७ ५८	२२	१७ ५९	२२	१८ ००	२२
८ २५	१८ १६	२२	१८ १७	२२	१८ १८	२२	१८ १९	२२	१८ २०	२२	१८ २१	२२	१८ २२	२२
९ ००	१८ ३८	२२	१८ ३९	२२	१८ ४१	२२	१८ ४१	२२	१८ ४२	२२	१८ ४३	२२	१८ ४४	२२
९ ०५	१९ ००	२२	१९ ०१	२१	१९ ०२	२१	१९ ०३	२१	१९ ०४	२१	१९ ०५	२१	१९ ०६	२१
९ १०	१९ २१	२१	१९ २२	२१	१९ २३	२१	१९ २४	२१	१९ २५	२१	१९ २६	२१	१९ २७	२१
९ १५	१९ ४२	२१	१९ ४३	२०	१९ ४४	२०	१९ ४५	२०	१९ ४६	२०	१९ ४७	२०	१९ ४८	२०
९ २०	२० ०२	२०	२० ०३	२०	२० ०४	२०	२० ०५	२०	२० ०६	२०	२० ०७	१९	२० ०८	१९
९ २५	२० २२	१९	२० २३	१९	२० २४	१९	२० २५	१९	२० २६	१९	२० २६	१९	२० २७	१९
१० ००	२० ४१	१९	२० ४२	१९	२० ४३	१९	२० ४४	१९	२० ४५	१९	२० ४५	१९	२० ४६	१९
१० ०५	२१ ००	१८	२१ ०१	१८	२१ ०१	१८	२१ ०२	१८	२१ ०३	१८	२१ ०४	१८	२१ ०५	१८
१० १०	२१ १८	१८	२१ १९	१८	२१ १९	१८	२१ २०	१८	२१ २१	१७	२१ २२	१७	२१ २२	१७
१० १५	२१ ३६	१७	२१ ३६	१७	२१ ३७	१७	२१ ३८	१७	२१ ३८	१७	२१ ३९	१७	२१ ४०	१७
१० २०	२१ ५३	१७	२१ ५४	१७	२१ ५४	१७	२१ ५५	१७	२१ ५५	१७	२१ ५६	१७	२१ ५७	१७
१० २५	२२ १०	१६	२२ ११	१६	२२ ११	१६	२२ ११	१६	२२ १२	१६	२२ १३	१६	२२ १३	१६
११ ००	२२ २६	१६	२२ २७	१६	२२ २७	१६	२२ २८	१६	२२ २८	१६	२२ २९	१६	२२ २९	१६
११ ०५	२२ ४२	१६	२२ ४३	१६	२२ ४३	१५	२२ ४४	१५	२२ ४४	१५	२२ ४४	१५	२२ ४५	१५
११ १०	२२ ५८	१६	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२२ ५९	१५	२३ ००	१५	२३ ००	१५
११ १५	२३ १४	१५	२३ १४	१५	२३ १४	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५	२३ १५	१५
११ २०	२३ २९	१५	२३ २९	१५	२३ ३०	१५	२३ ३०	१५	२३ ३०	१५	२३ ३०	१५	२३ ३०	१५
११ २५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५
१२ ००	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१५

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २४°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २५°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २६°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।००'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २७°।३०'	अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८°।००'	अन्तर
रा.अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६ ००	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२२	१२ ००	२३
६ ०५	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२२	१२ २२	२३	१२ २३	२३
६ १०	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४४	२२	१२ ४५	२२	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३
६ १५	१३ ०६	२२	१३ ०६	२२	१३ ०७	२२	१३ ०७	२२	१३ ०७	२३	१३ ०७	२३	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३
६ २०	१३ २८	२२	१३ २८	२२	१३ २९	२२	१३ २९	२२	१३ ३०	२३	१३ ३०	२३	१३ ३०	२३	१३ ३१	२३
६ २५	१३ ५०	२२	१३ ५१	२२	१३ ५१	२२	१३ ५२	२२	१३ ५२	२३	१३ ५३	२३	१३ ५३	२३	१३ ५३	२३
७ ००	१४ १३	२३	१४ १३	२३	१४ १४	२३	१४ १४	२३	१४ १५	२३	१४ १५	२३	१४ १६	२३	१४ १६	२३
७ ०५	१४ ३५	२३	१४ ३६	२३	१४ ३७	२३	१४ ३७	२३	१४ ३८	२३	१४ ३८	२३	१४ ३९	२३	१४ ३९	२३
७ १०	१४ ५८	२३	१४ ५९	२३	१४ ५९	२३	१५ ००	२३	१५ ०१	२३	१५ ०१	२३	१५ ०२	२३	१५ ०३	२३
७ १५	१५ २१	२३	१५ २२	२३	१५ २२	२३	१५ २३	२३	१५ २४	२३	१५ २४	२३	१५ २५	२३	१५ २६	२३
७ २०	१५ ४४	२३	१५ ४५	२३	१५ ४५	२३	१५ ४६	२३	१५ ४७	२३	१५ ४८	२३	१५ ४९	२३	१५ ४९	२३
७ २५	१६ ०७	२३	१६ ०८	२३	१६ ०८	२३	१६ ०९	२३	१६ १०	२३	१६ ११	२३	१६ १२	२३	१६ १३	२३
८ ००	१६ ३०	२३	१६ ३१	२३	१६ ३१	२३	१६ ३२	२३	१६ ३३	२३	१६ ३४	२३	१६ ३५	२३	१६ ३६	२३
८ ०५	१६ ५३	२३	१६ ५४	२३	१६ ५५	२३	१६ ५६	२३	१६ ५७	२३	१६ ५८	२३	१६ ५९	२३	१७ ००	२३
८ १०	१७ १६	२३	१७ १७	२३	१७ १८	२३	१७ १९	२३	१७ २०	२३	१७ २१	२३	१७ २२	२३	१७ २३	२३
८ १५	१७ ३९	२३	१७ ४०	२३	१७ ४१	२३	१७ ४२	२३	१७ ४३	२३	१७ ४४	२३	१७ ४५	२३	१७ ४६	२३
८ २०	१८ ०१	२३	१८ ०२	२२	१८ ०३	२३	१८ ०४	२३	१८ ०५	२३	१८ ०६	२३	१८ ०८	२३	१८ ०९	२३
८ २५	१८ २४	२२	१८ २५	२२	१८ २६	२२	१८ २७	२२	१८ २८	२२	१८ २९	२२	१८ ३०	२२	१८ ३१	२२
९ ००	१८ ४६	२१	१८ ४७	२२	१८ ४८	२२	१८ ४९	२२	१८ ५०	२२	१८ ५१	२२	१८ ५२	२२	१८ ५३	२२
९ ०५	१९ ०७	२१	१९ ०८	२१	१९ ०९	२१	१९ १०	२१	१९ ११	२१	१९ १३	२१	१९ १४	२१	१९ १४	२१
९ १०	१९ २८	२१	१९ २९	२१	१९ ३०	२१	१९ ३१	२१	१९ ३२	२१	१९ ३४	२१	१९ ३५	२०	१९ ३६	२०
९ १५	१९ ४९	२०	१९ ५०	२०	१९ ५१	२०	१९ ५२	२०	१९ ५३	२०	१९ ५४	२०	१९ ५५	२०	१९ ५६	२०
९ २०	२० ०९	१९	२० १०	१९	२० ११	१९	२० १२	१९	२० १३	१९	२० १४	१९	२० १५	१९	२० १६	१९
९ २५	२० २८	१९	२० २९	१९	२० ३०	१९	२० ३१	१९	२० ३२	१९	२० ३३	१९	२० ३४	१९	२० ३५	१८
१० ००	२० ४७	१९	२० ४८	१८	२० ४९	१८	२० ५०	१८	२० ५१	१८	२० ५२	१८	२० ५३	१८	२० ५४	१८
१० ०५	२१ ०६	१८	२१ ०६	१८	२१ ०७	१८	२१ ०८	१८	२११	१८	२१ १०	१७	२१ ११	१७	२१ १२	१७
१० १०	२१ २४	१७	२१ २४	१७	२१ २५	१७	२१ २६	१७	२१ २७	१७	२१ २७	१७	२१ २८	१७	२१ २९	१७
१० १५	२१ ४१	१७	२१ ४१	१७	२१ ४२	१७	२१ ४३	१६	२१ ४४	१६	२१ ४४	१६	२१ ४५	१६	२१ ४६	१६
१० २०	२१ ५७	१७	२१ ५८	१६	२१ ५९	१६	२१ ५९	१६	२२१०	१६	२२ १	१६	२२ ०१	१६	२२ ०२	१६
१० २५	२२ १४	१६	२२ १४	१६	२२ १५	१६	२२ १५	१६	२२ १६	१६	२२ १७	१५	२२ १७	१५	२२ १८	१५
११ ००	२२ ३०	१६	२२ ३०	१५	२२ ३१	१५	२२ ३१	१५	२२ ३२	१५	२२ ३२	१५	२२ ३३	१५	२२ ३३	१५
११ ०५	२२ ४५	१५	२२ ४६	१५	२२ ४६	१५	२२ ४६	१५	२२ ४७	१५	२२ ४७	१५	२२ ४८	१५	२२ ४८	१५
११ १०	२३ ००	१५	२३ ०१	१५	२३ ०१	१५	२३ ०१	१५	२३ ०२	१५	२३ ०२	१५	२३ ०३	१५	२३ ०३	१५
११ १५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १६	१५	२३ १७	१५	२३ १७	१४	२३ १७	१४	२३ १७	१४
११ २०	२३ ३०	१५	२३ ३१	१५	२३ ३१	१५	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३१	१४	२३ ३२	१४
११ २५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४५	१५	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४
१२ ००	० ००	१५	० ००	१५	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग ३)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २८° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २९° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) २९° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३०° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३०° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३१° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३१° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३२° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३२° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३३° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३३° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३४° ००'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३४° ३०'		अन्तर	अक्षांश (उत्तर) ३५° ००'		अन्तर
रा.अं.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.	घं.	मि.	मि.
० ००	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१४	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३	०	००	१३
० ०५	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१४	१४	०	१३	१४	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३	०	१३	१३
० १०	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२८	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१४	०	२७	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३	०	२६	१३
० १५	०	४३	१४	०	४२	१४	०	४२	१४	०	४२	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४१	१४	०	४०	१४	०	४०	१४	०	४०	१४	०	३९	१३	०	३९	१३	०	३९	१३	०	३८	१३
० २०	०	५७	१५	०	५७	१४	०	५६	१४	०	५६	१४	०	५६	१४	०	५५	१४	०	५५	१४	०	५५	१४	०	५४	१४	०	५४	१४	०	५३	१४	०	५३	१४	०	५३	१४	०	५२	१४	०	५२	१३
० २५	०१	१२	१५	१	११	१५	१	११	१५	१	१०	१५	१	१०	१५	१	०९	१४	१	०९	१४	१	०९	१४	१	०८	१४	१	०८	१४	१	०७	१४	१	०७	१४	१	०६	१४	१	०६	१४	०१	०५	१४
१ ००	१	२७	१५	१	२६	१५	१	२६	१५	१	२५	१५	१	२५	१५	१	२४	१५	१	२४	१५	१	२३	१५	१	२२	१५	१	२२	१४	१	२१	१४	१	२१	१४	१	२०	१४	१	२०	१४	१	१९	१४
१ ०५	१	४२	१६	१	४१	१६	१	४१	१६	१	४०	१६	१	४०	१६	१	३९	१५	१	३८	१५	१	३८	१५	१	३७	१५	१	३६	१५	१	३६	१५	१	३५	१५	१	३४	१५	१	३४	१५	१	३३	१५
१ १०	१	५८	१६	१	५७	१६	१	५७	१६	१	५६	१६	१	५५	१६	१	५४	१६	१	५४	१६	१	५३	१६	१	५२	१६	१	५१	१५	१	५१	१५	१	५०	१५	१	४९	१५	१	४८	१५	१	४८	१५
१ १५	२	१४	१७	२	१३	१७	२	१३	१७	२	१२	१७	२	११	१६	२	१०	१६	२	०९	१६	२	०९	१६	२	०८	१६	२	०७	१६	२	०६	१६	२	०५	१६	२	०४	१६	२	०३	१६	२	०३	१६
१ २०	२	३१	१७	२	३०	१७	२	२९	१७	२	२९	१७	२	२८	१७	२	२७	१७	२	२६	१७	२	२५	१७	२	२४	१७	२	२३	१७	२	२२	१७	२	२१	१७	२	२०	१६	२	१९	१६	२	१८	१६
१ २५	२	४८	१८	२	४७	१८	२	४६	१८	२	४६	१८	२	४५	१८	२	४४	१८	२	४३	१८	२	४२	१८	२	४१	१७	२	४०	१७	२	३९	१७	२	३८	१७	२	३७	१७	२	३६	१७	२	३५	१७
२ ००	३	०६	१९	३	०५	१९	३	०४	१८	३	०३	१८	३	०२	१८	३	०१	१८	३	००	१८	२	५९	१८	२	५८	१८	२	५७	१८	२	५६	१८	२	५५	१८	२	५४	१८	२	५३	१८	२	५२	१८
२ ०५	३	२५	१९	३	२४	१९	३	२३	१९	३	२१	१९	३	२१	१९	३	१९	१९	३	१८	१९	३	१७	१९	३	१६	१९	३	१५	१९	३	१४	१९	३	१३	१९	३	१२	१८	३	११	१८	३	०९	१८
२ १०	३	४४	२०	३	४३	२०	३	४२	२०	३	४०	२०	३	४०	२०	३	३८	२०	३	३७	१९	३	३६	१९	३	३५	१९	३	३४	१९	३	३३	१९	३	३२	१९	३	३०	१९	३	२९	१९	३	२८	१९
२ १५	४	०४	२०	४	०३	२०	४	०१	२०	४	००	२१	३	५९	२०	३	५८	२०	३	५७	२०	३	५६	२०	३	५४	२०	३	५३	२०	३	५२	२०	३	५१	२०	३	५०	२०	३	४८	२०	३	४७	२०
२ २०	४	२४	२१	४	२३	२१	४	२२	२१	४	२१	२१	४	१९	२१	४	१८	२१	४	१७	२१	४	१६	२१	४	१५	२१	४	१३	२१	४	१२	२१	४	११	२१	४	१०	२१	४	०८	२१	४	०७	२१
२ २५	४	४५	२१	४	४४	२१	४	४३	२१	४	४२	२१	४	४०	२१	४	३९	२१	४	३८	२१	४	३७	२१	४	३५	२१	४	३४	२१	४	३३	२१	४	३२	२१	४	३०	२१	४	२९	२१	४	२८	२१
३ ००	५	०७	२२	५	०५	२२	५	०४	२२	५	०३	२२	५	०२	२२	५	०१	२२	५	००	२२	४	५८	२२	४	५७	२२	४	५६	२२	४	५४	२२	४	५३	२२	४	५२	२२	४	५१	२२	४	४९	२२
३ ०५	५	२९	२२	५	२७	२२	५	२६	२२	५	२५	२३	५	२४	२२	५	२३	२२	५	२२	२३	५	२०	२३	५	१९	२३	५	१८	२३	५	१७	२३	५	१५	२३	५	१४	२३	५	१३	२३	५	११	२३
३ १०	५	५१	२३	५	५०	२३	५	४९	२३	५	४८	२३	५	४६	२३	५	४५	२३	५	४४	२३	५	४३	२३	५	४२	२३	५	४१	२३	५	३९	२३	५	३८	२३	५	३७	२३	५	३५	२३	५	३४	२३
३ १५	६	१४	२३	६	१३	२३	६	१२	२३	६	११	२३	६	०९	२३	६	०८	२३	६	०७	२३	६	०६	२३	६	०५	२३	६	०४	२३	६	०२	२३	६	०१	२३	६	००	२३	५	५८	२४	५	५७	२४
३ २०	६	३७	२३	६	३६	२३	६	३५	२३	६	३४	२३	६	३३	२३	६	३२	२३	६	३०	२३	६	२९	२३	६	२८	२४	६	२७	२४	६	२६	२४	६	२४	२४	६	२३	२४	६	२२	२४	६	२१	२४
३ २५	७	००	२३	६	५९	२३	६	५८	२३	६	५७	२३	६	५६	२४	६	५५	२४	६	५४	२४	६	५३	२४	६	५२	२४	६	५१	२४	६	५०	२४	६	४८	२४	६	४७	२४	६	४६	२४	६	४५	२४
४ ००	७	२४	२३	७	२३	२३	७	२२	२३	७	२१	२३	७	२०	२४	७	१९	२४	७	१८	२४	७	१७	२४	७	१६	२४	७	१५	२४	७	१४	२४	७	१२	२४	७	११	२४	७	१०	२४	७	०९	२४
४ ०५	७	४७	२३	७	४६	२३	७	४५	२३	७	४४	२३	७	४३	२४	७	४३	२४	७	४२	२४	७	४१	२४	७	४०	२४	७	३९	२४	७	३८	२४	७	३६	२४	७	३६	२४	७	३५	२४	७	३३	२४
४ १०	८	११	२३	८	१०	२३	८	०९	२३	८	०८	२३	८	०७	२४	८	०६	२४	८	०५	२४	८	०५	२४	८	०४	२४	८	०३	२४	८	०२	२४	८	१	२४	८	००	२४	७	५९	२४	७	५८	२४
४ १५	८	३४	२३	८	३३	२३	८	३२	२३	८	३२	२३	८	३१	२४	८	३०	२४	८	२९	२४	८	२८	२४	८	२८	२४	८	२७	२४	८	२६	२४	८	२५	२४	८	२४	२४	८	२३	२४	८	२२	२४
४ २०	८	५७	२३	८	५७	२३	८	५६	२३	८	५५	२३	८	५४	२४	८	५४	२४	८	५३	२४	८	५२	२४	८	२५	२४	८	५१	२४	८	५१	२४	८	४९	२४	८	४८	२४	८	४८	२४	८	४७	२४
४ २५	९	२०	२३	९	२०	२३	९	१९	२३	९	१९	२३	९	१९	२३	९	१७	२४	९	१७	२४	९	१६	२४	९	१५	२४	९	१५	२४	९	१४	२४	९	१३	२४	९	१३	२४	९	१२	२४	९	११	२४
५ ००	९	४४	२३	९	४३	२३	९	४२	२३	९	४२	२३	९	४१	२३	९	४१	२३	९	४०	२३	९	४०	२४	९	३९	२४	९	३९	२४	९	३८	२४	९	३७	२४	९	३७	२४	९	३६	२४	९	३६	२४
५ ५	१०	०७	२३	१०	०६	२३	१०	०६	२३	१०	०५	२३	१०	०५	२३	१०	०४	२३	१०	०४	२३	१०	०३	२३	१०	३०	२४	१०	०३	२४	१०	०२	२४	१०	२१	२४	१०	०१	२४	१०	००	२४	१०	००	२४
५ १०	१०	२९	२३	१०	२९	२३	१०	२९	२३	१०	२८	२३	१०	२८	२३	१०	२८	२३	१०	२७	२३	१०	२७	२३	१०	२६	२३	१०	२६	२४	१०	२६	२४	१०	२५	२४	१०	२५	२४	१०	२४	२४	१०	२४	२४
५ १५	१०	५२	२३	१०	५२	२३	१०	५२	२३	१०	५१	२३	१०	५१	२३	१०	५१	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२३	१०	५०	२४	१०	५९	२४	१०	४९	२४	१०	४९	२४	१०	४८	२४	१०	४८	२४
५ २०	११	१५	२३	११	१५	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	१४	२३	११	२३	२३	११	१३	२३	११	१३	२४	११	१३	२४	११	१३	२४	११	१२	२४	११	१२	२४	११	१२	२४
५ २५	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३७	२३	११	३६	२३	११	३६	२४	११	३६	२४	११	३६	२४	११	३६	२४
६ ०	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२३	१२	००	२४	१२	००	२४	१२	००	२४	१२	००	२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां (भाग ४)

सायन सूर्य या सायन लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २८° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २९° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) २९° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३०° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३०° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३१° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३१° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३२° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३२° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३३° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३३° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३४° ००'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३४° ३०'	लग्न	अक्षांश (उत्तर) ३५° ००'	लग्न
रा.अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६ ००	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२३	१२ ००	२४	१२ ००	२४	१२ ००	२४	१२ ००	२४
६ ०५	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२३	१२ २३	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४	१२ २४	२४
६ १०	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३	१२ ४५	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४६	२३	१२ ४७	२३	१२ ४७	२३	१२ ४७	२४	१२ ४७	२४	१२ ४७	२४	१२ ४८	२४	१२ ४८	२४
६ १५	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३	१३ ०८	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ ०९	२३	१३ १०	२३	१३ १०	२३	१३ १०	२३	१३ ११	२४	१३ ११	२४	१३ ११	२४	१३ १२	२४	१३ १२	२४
६ २०	१३ ३१	२३	१३ ३१	२३	१३ ३१	२३	१३ ३२	२३	१३ ३२	२३	१३ ३२	२३	१३ ३३	२३	१३ ३३	२३	१३ ३३	२३	१३ ३४	२४	१३ ३४	२४	१३ ३५	२४	१३ ३५	२४	१३ ३६	२४	१३ ३६	२४
६ २५	१३ ५३	२३	१३ ५४	२३	१३ ५४	२३	१३ ५५	२३	१३ ५५	२३	१३ ५६	२३	१३ ५६	२३	१३ ५७	२३	१३ ५७	२४	१३ ५७	२४	१३ ५८	२४	१३ ५९	२४	१३ ५९	२४	१४ ००	२४	१४ ००	२४
७ ००	१४ १६	२३	१४ १७	२३	१४ १७	२३	१४ १८	२३	१४ १८	२३	१४ १९	२३	१४ २०	२३	१४ २०	२४	१४ २१	२४	१४ २१	२४	१४ २२	२४	१४ २३	२४	१४ २३	२४	१४ २४	२४	१४ २४	२४
७ ०५	१४ ३९	२३	१४ ४०	२३	१४ ४१	२३	१४ ४१	२३	१४ ४२	२३	१४ ४३	२३	१४ ४३	२४	१४ ४४	२४	१४ ४५	२४	१४ ४५	२४	१४ ४६	२४	१४ ४७	२४	१४ ४७	२४	१४ ४८	२४	१४ ४९	२४
७ १०	१५ ०३	२३	१५ ०३	२३	१५ ०४	२३	१५ ०५	२३	१५ ०५	२४	१५ ०६	२४	१५ ०७	२४	१५ ०८	२४	१५ ०८	२४	१५ ०९	२४	१५ १०	२४	१५ ११	२४	१५ ११	२४	१५ १२	२४	१५ १३	२४
७ १५	१५ २६	२३	१५ २७	२३	१५ २७	२४	१५ २८	२४	१५ २९	२४	१५ ३०	२४	१५ ३१	२४	१५ ३२	२४	१५ ३२	२४	१५ ३३	२४	१५ ३४	२४	१५ ३५	२४	१५ ३६	२५	१५ ३६	२५	१५ ३७	२५
७ २०	१५ ४९	२३	१५ ५०	२३	१५ ५१	२४	१५ ५२	२४	१५ ५३	२४	१५ ५४	२४	१५ ५५	२४	१५ ५६	२४	१५ ५६	२४	१५ ५७	२४	१५ ५८	२४	१५ ५९	२४	१६ ०१	२४	१६ ०१	२४	१६ ०२	२४
७ २५	१६ १३	२३	१६ १४	२३	१६ १५	२४	१६ १६	२४	१६ १६	२४	१६ १७	२४	१६ १८	२४	१६ १९	२४	१६ २०	२४	१६ २१	२४	१६ २२	२४	१६ २३	२४	१६ २४	२४	१६ २५	२४	१६ २६	२४
८ ००	१६ ३६	२३	१६ ३७	२३	१६ ३८	२४	१६ ३९	२४	१६ ४०	२४	१६ ४१	२४	१६ ४२	२४	१६ ४३	२४	१६ ४४	२४	१६ ४५	२४	१६ ४६	२४	१६ ४७	२४	१६ ४९	२४	१६ ५०	२४	१६ ५१	२४
८ ०५	१७ ००	२३	१७ ०१	२३	१७ ०२	२३	१७ ०३	२३	१७ ०४	२४	१७ ०५	२४	१७ ०६	२४	१७ ०७	२४	१७ ०८	२४	१७ ०९	२४	१७ १०	२४	१७ ११	२४	१७ १३	२४	१७ १४	२४	१७ १५	२४
८ १०	१७ २३	२३	१७ २४	२३	१७ २५	२३	१७ २६	२३	१७ २७	२३	१७ २८	२३	१७ २९	२३	१७ ३१	२३	१७ ३२	२३	१७ ३३	२३	१७ ३४	२३	१७ ३५	२४	१७ ३७	२४	१७ ३८	२४	१७ ३९	२४
८ १५	१७ ४६	२३	१७ ४७	२३	१७ ४८	२३	१७ ४९	२३	१७ ५०	२३	१७ ५२	२३	१७ ५३	२३	१७ ५४	२३	१७ ५५	२३	१७ ५६	२३	१७ ५८	२३	१७ ५९	२३	१८ ००	२३	१८ ०१	२३	१८ ०३	२३
८ २०	१८ ०९	२२	१८ १०	२२	१८ ११	२२	१८ १२	२२	१८ १४	२२	१८ १५	२२	१८ १६	२३	१८ १७	२३	१८ १८	२३	१८ १९	२३	१८ २१	२३	१८ २२	२३	१८ २३	२३	१८ २४	२३	१८ २६	२३
८ २५	१८ ३१	२२	१८ ३२	२२	१८ ३४	२२	१८ ३५	२२	१८ ३६	२२	१८ ३७	२२	१८ ३८	२२	१८ ४०	२२	१८ ४१	२३	१८ ४२	२२	१८ ४३	२२	१८ ४५	२२	१८ ४६	२२	१८ ४७	२२	१८ ४९	२२
९ ००	१८ ५३	२२	१८ ५४	२२	१८ ५६	२२	१८ ५७	२२	१८ ५८	२२	१८ ५९	२२	१९ ००	२२	१९ ०२	२२	१९ ०३	२२	१९ ०४	२२	१९ ०५	२२	१९ ०७	२२	१९ ०८	२१	१९ ०९	२१	१९ ११	२१
९ ०५	१९ १५	२१	१९ १६	२१	१९ १७	२१	१९ १८	२१	१९ २०	२१	१९ २१	२१	१९ २२	२१	१९ २३	२१	१९ २४	२१	१९ २६	२१	१९ २७	२१	१९ २८	२१	१९ २९	२१	१९ ३१	२१	१९ ३२	२१
९ १०	१९ ३६	२०	१९ ३७	२०	१९ ३८	२०	१९ ३९	२०	१९ ४०	२०	१९ ४१	२०	१९ ४३	२०	१९ ४४	२०	१९ ४५	२०	१९ ४७	२०	१९ ४८	२०	१९ ४९	२०	१९ ५०	२०	१९ ५२	२०	१९ ५३	२०
९ १५	१९ ५६	२०	१९ ५७	२०	१९ ५८	२०	१९ ५९	२०	२० ०१	२०	२० ०२	२०	२० ०३	२०	२० ०४	२०	२० ०५	२०	२० ०७	१९	२० ०८	१९	२० ०९	१९	२० १०	१९	२० १२	१९	२० १३	१९
९ २०	२० १६	१९	२० १७	१९	२० १८	१९	२० १९	१९	२० २०	१९	२० २१	१९	२० २३	१९	२० २४	१९	२० २५	१९	२० २६	१९	२० २७	१९	२० २८	१९	२० ३०	१९	२० ३१	१९	२० ३२	१९
९ २५	२० ३५	१८	२० ३६	१८	२० ३७	१८	२० ३८	१८	२० ३९	१८	२० ४०	१८	२० ४१	१८	२० ४३	१८	२० ४४	१८	२० ४५	१८	२० ४६	१८	२० ४७	१८	२० ४८	१८	२० ४९	१८	२० ५१	१८
१० ००	२० ५४	१८	२० ५५	१८	२० ५६	१८	२० ५६	१८	२० ५८	१८	२० ५९	१८	२१ ००	१८	२१ १	१८	२१ ०२	१७	२१ ०३	१७	२१ ०४	१७	२१ ०५	१७	२१ ०६	१७	२१ ०७	१७	२१ ०८	१७
१० ५	२१ १२	१८	२१ १३	१७	२१ १३	१८	२१ १४	१७	२१ १५	१७	२१ १६	१७	२१ १७	१७	२१ १८	१७	२१ १९	१७	२१ २०	१७	२१ २१	१७	२१ २२	१७	२१ २३	१६	२१ २४	१६	२१ २५	१६
१० १०	२१ २९	१७	२१ ३०	१७	२१ ३१	१७	२१ ३१	१७	२१ ३२	१६	२१ ३३	१६	२१ ३४	१६	२१ ३५	१७	२१ ३६	१६	२१ ३७	१६	२१ ३८	१६	२१ ३९	१६	२१ ४०	१६	२१ ४१	१६	२१ ४२	१६
१० १५	२१ ४६	१६	२१ ४६	१६	२१ ४७	१६	२१ ४८	१६	२१ ४९	१६	२१ ४९	१६	२१ ५०	१६	२१ ५१	१६	२१ ५२	१६	२१ ५३	१५	२१ ५४	१६	२१ ५५	१५	२१ ५५	१५	२१ ५६	१५	२१ ५७	१५
१० २०	२२ ०२	१६	२२ ०३	१६	२२ ०३	१६	२२ ४	१६	२२ ०५	१५	२२ ०५	१५	२२ ०६	१५	२२ ०७	१६	२२ ०८	१५	२२ ०८	१५	२२ ०९	१५	२२ १०	१५	२२ ११	१५	२२ ११	१५	२२ १२	१४
१० २५	२२ १८	१५	२२ १९	१५	२२ १९	१५	२२ २०	१५	२२ २०	१५	२२ २१	१५	२२ २१	१५	२२ २२	१५	२२ २३	१५	२२ २३	१५	२२ २४	१४	२२ २५	१४	२२ २५	१४	२२ २६	१४	२२ २७	१४
११ ००	२२ ३३	१५	२२ ३४	१५	२२ ३४	१५	२२ ३५	१५	२२ ३५	१५	२२ ३६	१५	२२ ३६	१५	२२ ३७	१५	२२ ३७	१४	२२ ३८	१४	२२ ३९	१४	२२ ३९	१४	२२ ४०	१४	२२ ४०	१४	२२ ४१	१४
११ ५	२२ ४८	१५	२२ ४९	१५	२२ ४९	१५	२२ ४९	१५	२२ ५०	१४	२२ ५०	१४	२२ ५१	१४	२२ ५२	१४	२२ ५२	१४	२२ ५२	१४	२२ ५३	१४	२२ ५३	१४	२२ ५४	१४	२२ ५४	१४	२२ ५५	१३
११ १०	२३ ०३	१५	२३ ३	१५	२३ ०४	१४	२३ ०४	१४	२३ ०४	१४	२३ ०५	१४	२३ ०५	१४	२३ ०६	१४	२३ ०६	१४	२३ ०६	१४	२३ ०७	१४	२३ ०७	१४	२३ ०७	१३	२३ ०८	१३	२३ ०८	१३
११ १५	२३ १७	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १८	१४	२३ १९	१४	२३ १९	१४	२३ १९	१४	२३ २०	१४	२३ २०	१४	२३ २०	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३	२३ २१	१३
११ २०	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३२	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३३	१४	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३	२३ ३४	१३
११ २५	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४६	१४	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३	२३ ४७	१३
१२ ०	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१४	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३	० ००	१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशा प्रारम्भ का सूक्ष्म काल

लेखकः-प्रियव्रत शर्मा

[दशा की प्रारम्भकालिक लग्न कुण्डली में दशेश आदि की शुभाशुभ स्थिति के आधार पर दशा का शुभाशुभ फल प्रभावित होता है,— ऐसा वराहमिहिर आदि का मत है । दशा की प्रारम्भ-कालिक कुण्डली बनाने के लिए दशा के प्रारम्भ होने (दशा प्रवेश) का काल सूक्ष्म (सर्वथा शुद्ध) होना चाहिए। जन्मपत्रियों में दशाओं के जो प्रारम्भ काल दैवज्ञों द्वारा परम्परया लिखे जाते हैं, उनमें घण्टा-मिनटों या घड़ी-पलों तक की सूक्ष्मता की बात तो छोड़िये, दिन तक की भी सूक्ष्मता नहीं होती। यद्यपि मेरा मत है (जो कि सिद्धान्तानुसार संगत भी है), कि दशा प्रवेशकाल में क्रियात्मक रूप से इतनी सूक्ष्मता लाना लगभग असम्भव है * । पुनरपि यहां गणित द्वारा इसका सूक्ष्मकाल जानने की यथार्थ पद्धति, जिसे मौलिक रूप से मैंने ज्ञात किया है, दे रहा हूँ। इससे उन पाठकों को भी सान्त्वना मिलेगी जो दशा-प्रवेश काल को परम सूक्ष्मता से जानने के लिए मुझे पत्र लिखते रहे हैं]

जन्मकालिक नक्षत्र के भुक्तकाल (भयात) को जन्मकालिक दशेश के पूर्ण दशावर्षों से गुणाकर भभोग से भाग देकर पांच लब्धियां (क्रमशः वर्ष,मास,दिन,घड़ी,पल) प्राप्त करें। यह जन्म कालिक दशेश की दशा का भुक्तकाल होगा। इसे जन्मकालीन दशेश के पूर्णदशावर्षों में से घटाने पर शेष वर्ष,मास,दिन,घड़ी,पल उस (जन्मकालीन) दशेश की दशा के जन्मकालीन **भोग्यवर्ष** आदि होंगे ❋ । इन्हें जन्मकालिक **विक्रमसंवत्**⊕ और जन्मकालिक स्पष्टसूर्य के राशि,अंश,कला, विकलाओं में क्रमशः जोड़ दें। (**अर्थात्**- वि.संवत् में भोग्यवर्ष और जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं में क्रमशः भोग्यमास-दिन-घड़ी-पल जोड़ दें)। यहां जोड़ करते समय **जन्मकालिक** स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश,कला,विकलाओं को क्रमशः मास, दिन, घड़ी, पल मानना होगा- यह ध्यान रहे। इस प्रकार जो योगफल प्राप्त होगा वह जन्मकालिक दशेश की दशा का समाप्तिकालिक क्रमशः वि.संवत् और स्पष्ट सूर्य की राशि, अंश, कला,विकलाएं होंगी ⊕ इस (जन्मकालिक दशेश के दशा समाप्तिकालिक) विक्रम संवत् में परवर्ती दशेशों के पूर्ण दशा वर्षों को उत्तरोत्तर यथाक्रम जोड़ देने पर शेष सभी दशेशों की दशाओं के समाप्तिकालीन वि.संवत् प्राप्त हो जाएंगे। **ध्यान रहे**- इन सभी दशाओं के समाप्ति के समय स्पष्टसूर्य के राश्यादि ठीक वही होंगे, जो जन्मकालीन दशेश की दशा की समाप्ति के समय हैं। नीचे लिया गया **उदाहरण** देखिये-

९ मार्च १९९७ ई. (वि.सं २०५३) को प्रातः ५ घण्टा, ३० मिनट (भा. स्टै. टा.) पर किसी जातक का जन्म हुआ, जबकि स्पष्ट सूर्य १० रा. २४ अं. ३८ कला २५ वि. था। इसके जन्म के समय पू. भा. नक्षत्र और भभोग २१ घं. १० मि. (=१२७० मि.) तथा भयात ६ घण्टा,११ मिनट (= ३७१ मि.) था। इसका जन्मकालिक दशेश गुरु है। गुरु के दशावर्षों (१६) को भयात (३७१ मि.) से गुणा करके भभोग (१२७० मि.) से भाग देकर पांच लब्धियां क्रमशः ४ वर्ष, ८ मास, २ दिन, ३८ घड़ी, ४४ पल मिले। यह जातक के जन्म के समय गुरु की भुक्त दशा है। इसे गुरु के दशा वर्षों (१६) में से घटाने पर ११ वर्ष, ३ मास, २७ दिन, २१ घड़ी, १६ पल मिले। यह जन्म के समय गुरु की भोग्य (शेष) दशा है। दशा के इन भोग्य वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पलों को जन्मकालिक वि.संवत् २०५३ और स्पष्ट सूर्य के राश्यादि १०/२४/३८/२५ (यानि १० मास, २४ दिन, ३८ घड़ी, २५ पल) में क्रमशः जोड़ देने पर योगफल २०६५/२/२१/५९/४१ मिला । जैसे-

वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
२०५३	१०	२४	३८	२५
+ ११	३	२७	२१	१६
२०६५	२	२१	५९	४१

** अपने इस मत का प्रतिपादन मैंने इस लेख के अन्त में किया है , उसे पढ़िए ।*

❋ यहां पाठक को यह बतला देना आवश्यक है कि सूर्य आदि के दशावर्ष (६,१० आदि) सौर वर्ष हैं। सूर्य का भगण काल (१२ राशियों का भोगकाल) सौर वर्ष कहलाता है। उदाहरणार्थ-'' चन्द्रमा के दशावर्ष १० हैं-'' इसका अभिप्राय है कि चन्द्रमा के दशाकाल में सूर्य १० भगण पूरे करता है (१२ राशियों को १० बार भोगता है)। यहां यह भी समझ लेना चाहिए कि सूर्य द्वारा १ राशि का भोगकाल एक सौरमास, १ अंश का भोगकाल १ सौरदिन, १ कला का भोगकाल १ सौर घड़ी और १ विकला का भोगकाल १ सौरपल होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भुक्त-भोग्य दशा के जो वर्ष,मास,दिन,घड़ी,पल,भयात,भभोग द्वारा उपरोक्त गणित से प्राप्त होते हैं, वे क्रमशः सूर्य के भुक्त-भोग्य वर्ष (भगण) राशि,अंश,कला,विकलाएं ही होती हैं। जैसे-यहाँ आगे दिए गए उदाहरण में जातक के जन्म के समय गुरु की दशा का भुक्त काल ४ वर्ष,८ मास, २ दिन, ३८ घड़ी,४४ पल है। इसका अभिप्राय है कि जातक के जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि बीत चुकी है, जितनी अवधि में सूर्य ४ भगण, ८ राशि, २ अंश, ३८ कला और ४४ विकला पार कर जाता है। इसी तरह यहां जन्म के समय गुरु की भोग्यदशा ११ वर्ष, ३ मास, २७ दिन, २१ घड़ी, १६ पल है। इसका अभिप्राय है कि जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि शेष है, जितनी अवधि में सूर्य ११ भगण, ३ राशि, २७ अंश, २१ कला और १६ विकलाएं भोगता है। ध्यान रहे- दशा के भुक्त, भोग्य साधन की प्रक्रिया से प्राप्त सूर्य के भुक्त-भोग्य भगण, राशि, अंश, कला विकलाओं को दैवज्ञ लोग क्रमशः वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल ही कहा करते हैं, जो ठीक ही है। क्योंकि दशा के भुक्त-भोग्य का यह काल सौरवर्ष, मास आदि ही तो हैं। हमने भी इस लेख में इसे गणित-प्रक्रिया के लिए अनेकत्र वर्ष, मास आदि ही लिखा है।

⊕ यहां सर्वत्र विक्रम संवत् का प्रारम्भ मेष संक्रान्ति काल से ही माना जायेगा, चैत्र शु[illegible] प्रतिपदा से नहीं, यह ध्यान रहे ।

⊕ ध्यान दें - यहां दशा के भोग्यकाल (वर्ष आदि) में जन्मकालिक वि. संवत् और स्पष्टसूर्य को जोड़ते समय हमने स्पष्टसूर्य की राशि, अंश, कला, विकलाओं को यद्यपि क्रमशः मास, दिन, घड़ी,पल माना है लेकिन यहां इनके योगफल को हमें स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकला ही मानना होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसका अभिप्राय यह हुआ, कि वि.सं. २०६५ में जब स्पष्टसूर्य के राश्यादि २/२१/५९/४१ होंगे, ठीक उसी समय गुरु की दशा समाप्त हो जाएगी। अब गुरु से अग्रिम दशेशों (शनि, बुध, केतु, शुक्र आदि) के दशावर्षों (१९,१७,७,२० आदि) को गुरुदशा की समाप्ति के वर्ष (वि. सं. २०६५) में क्रमशः उत्तरोत्तर जोड़ देने पर शनि आदि की दशाओं के समाप्तिवर्ष (वि. संवत्) क्रमशः २०८४, २१०१, २१०८, २१२८ आदि ज्ञात हो गए। यहाँ प्रत्येक ग्रह की दशा की समाप्ति के समय स्पष्ट सूर्य के राश्यादि २/२१/५९/४१ ही होंगे,-यह तो पूर्वोक्त निर्देशानुसार स्पष्ट ही है। इसे हम चक्र द्वारा इस भान्ति दर्शा सकते हैं:-

-दशा समाप्तिकालिक वर्ष और स्पष्टसूर्य-

[(जन्म तारीख ९-३-९७, समय प्रातः ५ घं., ३० मि. (भा. स्टैं. टा.)]

दशेश		गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशा समाप्ति वर्ष (वि.सवत्)		२०६५	२०८४	२१०१	२१०८	२१२८	२१३४	२१४४	२१५१
दशा समाप्ति के समय स्पष्टसूर्य	रा.	२	२	२	२	२	२	२	२
	अं.	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
	क.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	वि.	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४१

इस प्रकार प्रत्येक दशा की समाप्ति का वर्ष तो स्पष्टतया ज्ञात हो ही जाता है, लेकिन इनकी समाप्ति का दिन (तारीख) व काल (घं. मि.) तभी मालूम हो सकेगा जब हम यह ज्ञात कर लें, कि दशा समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य (जो सभी दशाओं की समाप्ति के समय समान है), इन भिन्न-भिन्न दशावर्षों में कब-कब (किन-किन तारीखों को किस-किस समय) होगा। इसे ज्ञात करने की विधि इस प्रकार है-

जातक के जन्म के ईस्वी सन् * से पूर्ववर्ती ई. सन् के पंचांग में दिए गए दैनिक स्पष्ट ग्रहों में देखिए, कि हमारा दशासमाप्ति कालीन स्पष्टसूर्य वहाँ किन दो पंक्तियों ⁕ के मध्य पड़ता है। इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर कीजिए (अर्थात् सूर्य कीगति निकालिए)।

*क्योंकि इस्वी सन्, जनवरी आदि मास व स्टै. टा. का ही प्रयोग सर्वसाधारण द्वारा किया जाता है, और इससे गणित प्रक्रिया कुछ सहज भी हो जाती है, अतः अब हम वि.संवत् तथा चैत्र आदि मास व घड़ी-पलों की जगह ई.सन्, जनवरी आदि मास तथा स्टैः टा. में ही दशाओं का समाप्ति काल निकालेंगे।

⁕ स्पष्ट ग्रह पंचांग में जिस दिन (तारीख) का दिया होता है, उस दिन (तारीख) को ग्रह की पंक्ति कहते हैं। पंक्ति के ग्रह पंचांग में जिस समय के दिए रहते हैं, उस समय को 'पंक्तिकाल' कहते हैं। जैसे-'मार्तण्ड पंचांग' में दैनिक स्पष्टग्रह प्रातः ५ घण्टा ३० मि. के दिए रहते हैं, अतः यहाँ 'पंक्तिकाल' प्रातः ५ घं. ३० मि. है।

प्रथम पंक्ति के स्पष्ट सूर्य का दशा समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य से अन्तर कीजिए। इस अन्तर को २४ से गुणा करके सूर्यगति से भाग देकर दो लब्धियां (घं. मि.) प्राप्त कीजिए। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार * तथा काल (घं. मि.) में जोड़िये। इससे जो वार घं. मि. प्राप्त होंगे, उनमें १ वार, ६ घं. ९ मि. जोड़ दें। इससे प्राप्त योगफल (वा. घं. मि.) में 'प्रथम दशा की वर्ष संख्या' ❁ द्वारा **दशा समाप्ति काल कोष्ठक** से प्राप्त वार, घं. मि. जोड़ देने पर जन्मकालीन दशेश की दशा-समाप्ति का वार और काल (घं. मि.) प्राप्त हो जाएंगे। इसमें जन्म कालीन दशेश से अग्रिम (क्रमानुसार परवर्त्ती) दशेश की दशा की वर्षसंख्या द्वारा "दशा समाप्ति काल कोष्ठक" से ही प्राप्त वार, घं. मि.जोड़ देने पर उस परवर्त्ती दशेश की दशा-समाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार क्रमानुसार उससे परवर्त्ती शेष दशेशों की दशाओं की वर्ष संख्याओं द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वार, घं. मि. को उत्तरोत्तर जोड़ते हुए उनकी दशाओं के समाप्ति कालीन वार, घं. मि. (काल) भी मालूम कर लेने चाहिएं।

दशा समाप्ति काल कोष्ठक

वर्ष संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष संख्या	वार	घं.	मि.
०	०	००	००	८	३	०१	१३	१६	६	०२	२७
१	१	६	९	९	४	०७	२२	१७	०	०८	३६
२	२	१२	१८	१०	५	१३	३२	१८	१	१४	४५
३	३	१८	२७	११	६	१९	४१	१९	२	२०	५४
४	५	००	३७	१२	१	०१	५०	२०	४	०३	०३
५	६	०६	४६	१३	२	०७	५९				
६	०	१२	५५	१४	३	१४	०८				
७	१	१९	०४	१५	४	२०	१७				

नीचे उदाहरण देखिए-

हमारे उदाहरण में जन्म के ई.सन् १९९७ से पूर्ववर्ती ई. सन् १९९६ है। इस वर्ष के (ई. सन् १९९६ वाले) पंचांग में हमारा दशासमाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य २/२१/५९/४१ (राश्यादि) ७ और ८ जुलाई वाली पंक्तियों के बीच पड़ता है। ⁕ । इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर (सूर्यगति) ५७/१२ (कलादि) है। प्रथम पंक्ति वाले स्पष्टसूर्य २/२१/२०/५५ और

* यहां वार सर्वत्र पाश्चात्य पद्धति वाला (रात्रि के १२ बजे बदलने वाला) ही लिया जाएगा।

❁ जन्मकालीन दशेश की दशा के समाप्तिकालीन ई. सन् और जन्मकालीन ई.सन् के अन्तर को यहां "प्रथम दशा की वर्ष संख्या" लिखा गया है।

⁕ क्योंकि ७ जुलाई को स्पष्ट सूर्य २।२१।२०।।५५और ८ जुलाई को २।२२।१८।७ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दशासमाप्ति कालीन स्पष्ट सूर्य २/२१/५९/४१ के अन्तर ३८/४६ (कलादि) को २४ से गुणा कर सूर्यगति (५७/१२) से भाग देकर दो लब्धियां १६ घं. १६ मि. मिलीं। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार रविवार (१) और काल ५घं. ३० मि. में जोड़ने पर १ वार २१ घं. ४६ मि. हुए। इसमें १ वार ६ घं. ९ मि. जोड़े तो ३ वार ३ घं. ५५ मि. हुए। इसमें प्रथम दशा (गुरु दशा) की वर्ष संख्या ११ द्वारा ''दशा समाप्ति काल कोष्ठक '' से प्राप्त ६ वार १९ घं. ४१ मि. जोड़ देने पर २ वार २३ घं. ३६ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि गुरु की दशा २ वार (चन्द्रवार) को रात्रि में ११घं. ३६ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर समाप्त होगी। इस में शनिदशा की वर्षसंख्या १९ द्वारा ''दशा समाप्तिकाल कोष्ठक'' से प्राप्त २ वार २० घं. ५४ मि. जोड़ने पर ५ वार २० घं. ३० मिनट हुए। यह शनि दशा की समाप्ति का वार और काल (भा. स्टैं. टा.) है। इसी प्रकार इसमें (शनि दशा की समाप्ति के वार और काल में) बुध दशा की वर्ष संख्या १७ द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वा. घं. मि. जोड़ने पर बुध दशा की समाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार शेष ग्रहों की दशाओं की समाप्ति के वार-काल मालूम हो जाएंगे । नीचे दिए गए चक्र में इस उदाहरण के सभी ग्रहों की दशा समाप्ति के वार और काल दर्शाए गए हैं-

दशा समाप्तिकाल चक्रः-

[जन्म तारीख ९-३-९७, समय प्रातः ५ घं. ३० मि.(भा. स्टै. टा.)]

दशेश -	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशासमाप्ति वर्ष(ई. सन्)	२००८	२०२७	२०४४	२०५१	२०७१	२०७७	२०८७	२०९४
दशा समाप्ति वार	चं.	गु.	शु.	र.	गु.	गु.	बु.	शु.
दशा समाप्तिकाल(घं. मि.) (भा. स्टैं .टा.)	२३।३६	२०।३०	५।६	००।१०	३।१३	१६।८	५।४०	००।४४
दशासमाप्ति तारीख	७ जुला.	८ जुला.	८जुला.	९ जुला.	९ जुला.	८जुला.	९ जुला.	९जुला.

इस प्रकार दशाओं की समाप्ति के वर्ष (ई. सन्) और वार ज्ञात हो जाते हैं । इनकी **तारीखों का निर्णय** इस प्रकार करना चाहिए -

जन्म कालिक ई. सन् से पूर्ववर्ती ई. सन् में जिस तारीख को दशा समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य उपलब्ध होता है, प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग वही तारीख होती है । इस तारीख में अधिक से अधिक दो दिन का अंतर हो सकता है । यथार्थ तारीख का निर्णय दशासमाप्तिकालिक वार द्वारा कर लेना चाहिए (अर्थात् दशा समाप्तिकालिक वार इस तारीख की समीपस्थ जिस तारीख को हो उसे ही दशासमाप्तिकालिक यथार्थ तारीख समझना चाहिए)। हमारे उदाहरण में दशा समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य (२/२१/५९/४१) ई.सन् १९९६ (जन्मवर्ष से पूर्ववर्ती वर्ष) में ७ जुलाई को उपलब्ध होता है । अतः यहाँ प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग ७ जुलाई होगी- यह स्पष्ट है। सभी दशाओं के समाप्तिकालिक वारों के अनुसार दशासमाप्ति काल की यथार्थ तारीखों का निर्णय करके उन्हें ऊपर दिए गए ''दशा समाप्ति कालचक्र'' की अन्तिम पंक्ति में लिख दिया गया है ।

दशा समाप्तिकाल में घं. मि. तक की सूक्ष्मता ला सकना क्या सम्भव है ?

दशा समाप्ति के सूक्ष्मकाल का निर्णय करने की गणितप्रक्रिया ऊपर दे दी गई है । लेकिन इस प्रक्रिया द्वारा तभी अपेक्षित सूक्ष्म परिणाम प्राप्त किया जा सकता है जबकि जन्मकालिक स्पष्ट चन्द्रमा के भोगांश या उसके भयात, भभोग में अपेक्षित सूक्ष्मता हो ।

दशा समाप्ति के काल में मिनट तक की सूक्ष्मता लाना संभव नहीं है,भले ही चन्द्रमा का भोगांश प्रतिविकला तक शुद्ध क्यों न हो। चन्द्र के भोगांश में एक प्रतिविकला की अशुद्धि होने पर सूर्य के दशासमाप्ति काल में १ मिनट और शुक्र के दशा समाप्तिकाल में ४ मिनट की अशुद्धि आती है ।

इष्टकाल में एक सेकण्ड की अशुद्धि से चन्द्रमा के भोगांश में ३३ प्रतिविकला की अशुद्धि उत्पन्न होती है, जिससे सूर्य और शुक्र के दशा समाप्तिकालों में क्रमशः ३० मिनट और २ घण्टे की की अशुद्धि हो जाती है । इसी प्रकार इष्टकाल में २० सेकण्ड की अशुद्धि (जिससे चन्द्र के भोगांश में ११ विकला की अशुद्धि पैदा होती है) सूर्य एवं शुक्र के दशा-समाप्तिकालों में क्रमशः १२ और ४० घण्टे की अशुद्धि पैदा करती है ।

इष्टकाल में सैकण्ड तक की सूक्ष्मता भी तभी संभव है जबकि जातक का जन्मकाल एवं जन्मस्थानीय सूर्योदयकाल सेकण्ड तक शुद्ध हों। क्योंकि जन्मकाल और सूर्योदयकाल घण्टा, मिनटों में ही ज्ञात किए जाते हैं, सेकण्डों की वहाँ उपेक्षा कर दी जाती है, अतः प्रत्येक जातक के जन्मकाल में एक मिनट तक की अशुद्धि हो सकती है । स्थानीय सूर्योदय काल में सेकण्ड तक की सूक्ष्मता ला पाना भारी समस्या है ।

जन्मकाल, इष्टकाल और सूर्योदयकाल में कितनी अशुद्धि होने पर चन्द्रभोगांश एवं दशासमाप्ति काल में कितना अन्तर आता है - यह नीचे दिए गए कोष्ठक में दिखाया गया है -

जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदय काल में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अन्तर	शुक्रदशा में अन्तर
सेकण्ड	वि. प्रतिवि.	घण्टा	दिन-घण्टा
१	०।३३	$\frac{1}{2}$	०।२
५	२।४५	३	०।१०
१०	५।३०	६	०/२०
२०	११।००	१२	१।१६
३०	१६।३०	१८	२।१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस कोष्ठक से स्पष्ट है, कि जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदय काल में कुछ सेकण्डों की अशुद्धि से भी ग्रहों के दशा समाप्तिकाल में इतना अधिक अन्तर आ जाता है जिससे तात्कालिक लग्न का शुद्ध निर्णय नहीं हो सकता; और इसीलिए दशा-प्रवेश-कालिक लग्नकुण्डली द्वारा दशा के शुभाशुभ फल का निर्णय करने वाले सिद्धांत को क्रियान्वित कर पाना संभव नहीं है ।

हमारे प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों (ब्रह्मसिद्धान्त, सूर्यसिद्धांत, ग्रहलाघव आदि) द्वारा अलग-अलग स्पष्ट किए गए एक ही समय के चन्द्रभोगाशों में परस्पर कई कलाओं तक का अन्तर रहता है । अतः इन विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार स्पष्ट किए गए जन्मकालीन चन्द्रभोगांशों में इस अन्तर के कारण जातक के दशा समाप्तिकालों में दिनों, अनेक स्थितियों में तो, मासों का भी अन्तर रहता है- यह बहुत कम दैवज्ञ जानते हैं ।

नवीन (चित्रापक्षीय दृक्सिद्ध) पद्धति(जिसके आधार पर भारत के लगभग शत प्रतिशत पंचांग आजकल तैयार होते हैं) और सूर्यसिद्धांत आदि प्राचीन पद्धतियों (जिनके अनुसार आज से ५०-६० वर्ष पहिले तक सभी भारतीय पंचांग तैयार होते रहे हैं), द्वारा स्पष्ट किए गए चन्द्रभोगाशों में २ अंश से भी अधिक तक का अन्तर पाया जाता है। जिससे इन दोनों (नवीन और प्राचीन) पद्धतियों के अनुसार दशा-समाप्तिकाल अक्सर समान नहीं आते। इनमें ३ वर्ष तक का अन्तर कई बार देखा जाता है। इस अन्तर का प्रभाव दशा समाप्तिकाल पर तो पड़ता ही है, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के समाप्ति कालों पर तो यह प्रभाव अत्यन्त असह्य होता है, जिससे इन दोनों पद्धतियों के अनुसार अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी बिल्कुल बदल जाते हैं और दशा-सम्बन्धी फलादेश बिल्कुल उलट-पुलट हो जाता है।

B.V. Raman (बंगलोर) ने जो अयनांश स्वीकार किए हैं, उनके अनुसार स्पष्ट किये गए चन्द्रभोगांश चित्रापक्षीय चन्द्रभोगांशों से तो हमेशा १ अंश २७ कला अधिक रहते हैं,जिससे B.V. Raman पद्धति और चित्रापक्षीय पद्धति से स्पष्ट किए गए दशासमाप्तिकालों में ८ से २७ महीनों तक का अन्तर हमेशा रहता ही है, जिसके परिणामस्वरूप अन्तर्दशाओं के स्वामी ग्रह इन दोनों पद्धतियों से अक्सर भिन्न-भिन्न होते हैं। प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी तो इन दोनों पद्धतियों से कभी मेल खाते ही नहीं हैं। स्पष्ट है- इन दोनों पद्धतियों से स्पष्ट की गई दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के फलादेश में अनकेत्र भारी विरोध रहता है।

भयात, भभोग या चन्द्र की दैनिक गति द्वारा त्रैराशिक से स्पष्ट किए गए इष्टकालिक चित्रापक्षीय दृक्तुल्य चन्द्रभोगांश में भी ४ कला तक की स्थूलता (अशुद्धि) रहती है, जिससे दशा-समाप्ति काल में ११ से ३६ दिन तक का अन्तर हो जाता है। इस अन्तर के कारण अधिकतर प्रत्यन्तर्दशाओं के काल तो अशुद्ध हो ही जाते हैं।

स्पष्ट चन्द्रमा में कितनी अशुद्धि से दशासमाप्ति काल में कम से कम (दशेश सूर्य की स्थिति में) और अधिक से अधिक (दशेश शुक्र की स्थिति में) उत्पन्न होने वाली अशुद्धि कितनी होगी, इसका विवरण नीचे कोष्ठक में दिया गया है:-

चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि
अं. क	दिन	दिन	अं. क.	दिन	दिन
०/१	३	९	० /२०	५४	१८०
० /२	५	१८	० /३०	८१	२७०
० /३	८	२७	१ /००	१६२	५४०
० /४	११	३६	२ /००	३२४	१०८०
० /१०	२७	९०	३ /००	४८६	१६२०

इस विवेचन का सारांश यह है कि किसी ग्रह के दशासमाप्तिकाल को मिनट या घण्टा तक की सूक्ष्मता से ज्ञात करने का गणितीय प्रयास अर्थहीन है, क्योंकि अनेकत्र तो दिन तक की सूक्ष्मता प्राप्त कर पाना भी सम्भव नहीं है। इतनी सूक्ष्मता प्राप्त करने के लिए जन्मकाल, सूर्योदय काल और चन्द्रभोगांश में जो सूक्ष्मता अपेक्षित हैं, उसे प्राप्त कर सकना गणक के सामर्थ्य से बाहिर है। व्यवहार में लाई जाने वाली काल की सूक्ष्मता की भी एक सीमा है, जिसका अतिक्रमण सम्भव नहीं है। अतः स्पष्ट है दशा-प्रवेश-कालिक लग्नकुण्डली द्वारा दशाफल के निर्धारण के लिए जातकशास्त्रों द्वारा किया गया निर्देश कोई अर्थ ही नहीं रखता। इसलिए यही उचित है कि दशासमाप्ति का लगभग दिन ही ज्ञात कर लिया जाए। दशासमाप्तिकालीन सूर्य के राश्यादि जिस तारीख को पड़ते हैं, उसी तारीख को सभी दशाओं की समाप्ति तारीख मान लेना ही ठीक है।

इस उपरोक्त प्रतिपादन ये यह सिद्ध होता है, कि- "ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के गणितागत प्रारम्भकाल से ही उनका शुभाशुभ प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है" - दैवज्ञों द्वारा इस प्रकार की धारणा रखना सर्वथा अयुक्त है, क्योंकि उल्लिखित अनेक अपरिहार्य कारणों से दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के प्रारम्भिकाल का मास और अनेकदा वर्ष भी, विश्वसनीय, (प्रामाणिक) सिद्ध नहीं होता, दिन और घण्टा-मिनटों की बात तो बहुत दूर की है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में फलित ज्योतिषज्ञों का सम्मेलन

चण्डीगढ़ में गत मार्च २२, १९९७ शाक १९१९ के प्रारम्भ के दिन डी. ए. वी. कालेज में हरे कृष्ण ट्रस्ट के पूज्य स्वामी श्री चिद्घनानन्द जी के सान्निध्य में फलित ज्योतिष विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आयोजन के मुख्य कर्णधार बी. एड. कालेज के प्रिंसीपल डॉ के. ऐस. आर्य ने इस आयोजन को प्रोत्साहित किया और इसके लिये डी. ए. वी. कालेज में अतिथियों को आवास तथा भाषण एवं ज्योतिष विषयक चर्चा के लिये अनुमति दी। डॉ. आर्य पिछले काफी वर्षों से भारतीय संस्कृति के निधि संस्कृतग्रन्थों के संरक्षण तथा संग्रह में लगे हुए हैं। उनका प्रोत्साहन इस आयोजन के लिये सफलता-दायक सिद्ध हुआ।

इस आयोजन में डॉ. अरुण मित्तल जी ने भारतीय संस्कृति तथा भारतीय परम्परा की विज्ञानशाखाओं पर प्रकाश डाला। पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के फिजिक्स विभाग के प्रोफैसर डॉ. आर. सी. वर्मा ने फलित ज्योतिष की सत्यता के विषय में आजकल के पाश्चात्य वैज्ञानिकों के प्राथमिक वैज्ञानिक पद्धतियों से किये गए परीक्षण-विश्लेषणों का सर्वेक्षण किया, जो सभी के लिये ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ। इस आयोजन में भाग लेने वालों ने अपने शोध पत्र पढ़े और अपने उपस्थापनों के विषय में प्रश्नों के उत्तर दिये। डा. सज्जन सिंह लिश्क ने लाल किताब के मूल स्रोत का विवेचन किया । विविध प्रान्तों से आए विद्वानों ने होरा, मुहूर्त तथा वास्तुशास्त्र आदि विषयों पर विवेचन उपस्थापित किये। इस गोष्ठी में एक विशेष प्रश्न तथा चर्चा का सत्र भी आयोजित हुआ जिसमें सभी विद्वानों तथा साधारण जनता ने भाग लिया। यह सम्मेलन विद्वानों के प्रयासों से पूर्णतया सफल रहा।

क्या ग्रह मनुष्य जीवन को प्रभावित करते हैं?

(चण्डीगढ़ में २२ मार्च '९७ को आयोजित ज्योतिष सम्मेलन में डॉ. शक्तिधर द्वारा उपस्थापित भाषण का सारांश)

फलित ज्योतिष पर आजकल बहुत प्रश्न चिह्न लगे हुए हैं। हमारे विचार से ये दो प्रश्न ही अधिक महत्वपूर्ण हैं—

(i) मनुष्य-जीवन पर ग्रहों का प्रभाव है भी या नहीं?

(ii) फलादेश की पद्धतियां क्या वैज्ञानिक दृष्टि से प्रामाणिक है ?

इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में वैज्ञानिक आजकल की विश्लेषण पद्धतियों से इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि मनुष्य जीवन पर ग्रहों का प्रभाव अवश्य है, परन्तु दूसरे प्रश्न के उत्तर में धारणा यह बनी है कि फलादेश पद्धतियां पूर्णतया वैज्ञानिक दृष्टि से मान्य नहीं। इस लेख में आप इन्हीं धारणाओं के विषय में विवेचन पढ़ेंगे।

अधिकांश वैज्ञानिक लोग फलित ज्योतिष, विशेषत: जातक पद्धति, का प्रतिवाद करते हैं। इसके अतिरिक्त आजकल के कुछ मूर्धन्य विद्वानों ने वैज्ञानिक पद्धतियों से विश्लेषणों के आधार पर ग्रहों के प्रभाव के ठोस प्रमाण दिये हैं। इस क्षेत्र में डा. गैंक्वेलिन (Dr. Ganqualin) (फ्रांसिसी वैज्ञानिक) तथा ब्रिटिश ज्योतिषज्ञ पर्सी सिमाऊर (Percy Seymour) तथा प्लेफेयर एवं उनके सहयोगियों के नाम अग्रगण्य हैं। डा. गैंक्वेलिन ने फलित ज्योतिष की सत्यता की परीक्षा के लिये ख्यातिप्राप्त मूर्धन्य लोगों की जीवन घटनाओं को लेकर सांख्यिकी विश्लेषण (Statastical Data Correlation) किया। उनके विश्लेषण में लग्न तथा दशम लग्न में स्थित ग्रहों के प्रभाव बहुत अधिक सिद्ध हुए। इन दोनों बिन्दुओं पर सर्वाधिक प्रभाव Correlation में प्राप्त दो चरम बिन्दुओं (Peaks) से सिद्ध हुआ। वस्तुत: प्रो. गैंक्वेलिन फलितशास्त्र को अप्रामाणिक सिद्ध करने के लिए इस काम में जुटे थे, परन्तु वैज्ञानिक विश्लेषण में नि:सन्देह निर्णय पाकर उन्हें अपनी धारणा को बदलना पड़ा।

डा. गैंक्वेलिन के इस विश्लेषण से प्रभावित होकर डा. पर्सी सिमाऊर ने इस क्षेत्र में और अनुसन्धान किया। डा. सिमाऊर इंगलैण्ड में Plymouth Institute of Technology में प्रोफैसर तथा Willian Day Planetarium के डायरैक्टर हैं। उन्हें छात्रजीवन से ही ग्रहों के प्रभावों पर विश्वास था। परन्तु वे कहते हैं कि उन्होंने अपने विश्वास को तब तक प्रकट नहीं किया जब तक वे उच्चतम वैज्ञानिक पद प्राप्त नहीं कर चुके। उनका भय था कि उनके इस प्रकार के प्रतिपादन से कहीं उन्हें वैज्ञानिक पद से वंचित रहना न पड़ जाए। इस उच्चतम पद पर आने के बाद अब उन्हें किसी भी प्रकार की चिन्ता नही । वे नि:शंक सचाई कहने में झिझकते नहीं। अब वे प्रो. गैंक्वेलिन तथा अपने किये अनुसन्धान तथा विश्लेषणों के आधार पर सर्वत्र वैज्ञानिकों एवं आम जनता में इस धारणा की जोरदार पुष्टि करते हैं। उनकी एतद् विषयक पुस्तक ने वैज्ञानिक क्षेत्रों में खलबली मचा दी। बहुत से वैज्ञानिकों ने इसे इस शताब्दी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक माना है।

गैंक्वेलिन के अनुसार ग्रहों का प्रभाव चुम्बकीय क्षेत्र के माध्यम से अधिक है। गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव इसकी तुलना में नगण्य है। वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य एक चुम्बकीय ताने-बाने से बने पिञ्जरे में है। चुम्बकीय तरङ्गों की विभिन्न आवर्त्तांकिकाएं (Frequencies) सभी को प्रभावित कर रही हैं। इसे विज्ञानी उपेक्ष्य नहीं कह सकते। प्रो. पर्सी के अनुसार इस सम्बन्ध में उपलब्ध दो मुख्य परिणाम निम्नलिखित हैं:-

(१) जब जातक का जन्म होता है तब माता के पेट में भ्रूण को प्रभावित करने में कुछ विशेष आवर्ताङ्किकाओं का ही योगदान होता है। जातक-विशेष के लिये आवर्ताङ्क-विशेष

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

का योगदान ही क्यों होता है ? इसमें वे भाग्य को ही कारण मानते हैं। नाड़ीसंस्थान के माध्यम से जीन्स का विशेष अनुनाद (Resonance) होता है। यही अनुनाद शिशु के भविष्य जीवन की आधारशिला बनता है।

(२) उनके विश्लेषण में राशियों के चिह्नों, संकेतों पर आधारित फलादेश आधार हीन है। परन्तु ग्रहों के लग्न बिन्दुपर उदय तथा दशमलग्न पर याम्योत्तर लंघन एवं ग्रहों के युति आदि योग वस्तुतः प्रभावशाली है। इस प्रतियादन में राशिचक्र एवं नक्षत्र चक्र के आधार पर फलादेश अमान्य ठहरता हे। ध्यान रहे-इन प्रतिपादनों में लग्न, दशमलग्न को फल कथन में उपेक्ष्य तो नहीं माना गया, लेकिन उनके प्रतिपादनों से इनके साथ कालपुरुष के संबंध की परिकल्पना का प्रत्याख्यान होता है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक प्लेफेयर तथा उनके सहयोगी विद्वानों ने सूर्य के प्रभाव का विश्लेषण किया। उन्होंने सौरज्वालाएं, सौरकलङ्क तथा सूर्य से आ रही चुम्बकीय तरङ्गों का महत्व स्पष्ट किया है। सूर्य का ऋतुएं बनाने में तथा पृथ्वी की सभी प्रकार की उपज, खनिज आदि के उद्भव में प्रभाव सभी वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। सौर कलङ्कों का सम्बन्ध वनस्पतियों के साथ उनके तनों के भीतर बने चक्रों से स्पष्ट है। वृक्षों के तनों में बने चक्रों में ११वां चक्र बहुत काला होता है। सूर्य के कलङ्कों का चक्र भी ११ वर्ष का है। इससे सौर कलंकों का वनस्पति जगत् पर प्रभाव स्पष्ट है। आचार्य रजनीश के अनुसार मानुष शरीर में भी चक्र हैं। परन्तु अभी तक उनकी सत्ता को प्रमाणित करने वाले सूक्ष्म वीक्षण यन्त्र (माईक्रोस्कोप) का आविष्कार नहीं हो सका है।

चन्द्रमा तथा सूर्य का ज्वारभाटा लाने में योगदान ९:४ के अनुपात में है। अर्थात् यदि ४ फुट ऊँचाई तक ज्वारभाटा सूर्य के आकर्षण से उठता है तो चन्द्रमा के आकर्षण से ९ फुट तक और अधिक उठेगा। कुल १३ फुट तक ज्वारभाटा आएगा। आयुर्वेद के आचार्य शल्य-चिकित्सा के आविष्कारक सुश्रुत के अनुसार भी पूर्णिमा के दिन शल्य चिकित्सा नहीं करनी चाहिए। आजकल वैज्ञानिकों ने आंकड़ों के विश्लेषण से यह परिणाम पाया है कि आपरेशन थियेटर्स मे आपरेशन करते समय घटित मृत्युओं में से ८२ प्रतिशत मृत्युएं पूर्णिमा के दिन हुई हैं। यह तथ्य टैलेहास्सी स्टेट मेंPro. J.Andrew ने आङ्किक विश्लेषण से सिद्ध किया। यह भी देखा गया है कि आत्महत्याएं, आगजनी, आतंकवाद, पागलपन आदि घटनाएं सभी पूर्णिमा के आसन्न अधिक पाई जाती हैं जिससे आचार्य सुश्रुत के कथन का आधार सत्यापित सिद्ध होता है। ये परिणाम मैडिकल जर्नल्स में परीक्षित होने पर छपे हैं।

स्त्रियों के ऋतुधर्म का सम्बन्ध चन्द्रमा के भगणकाल से है। वस्तुतः मास की इकाई ३० दिन चन्द्रमा की ही देन है। मास शब्द भी प्रायः सभी भाषाओं में चन्द्रमा का पर्यायवाची सा ही रहा है। वात्स्यायन कामसूत्र के अनुसार कामोद्रेक का सम्बन्ध एक तरंग की तरह शरीर को प्रभावित करता माना है। इन विश्लेषणों से मनुष्य जीवन के साथ चन्द्रमा का सम्बन्ध प्रामाणिक रूप से मान्य सिद्ध हुआ है।

गैंक्लेलिन तथा पर्सी सिमाऊर आदि वैज्ञानिकों की उपलब्धियों में आंकडा-विश्लेषण के आधार पर बृहस्पति तथा शनि का मनुष्य जीवन पर प्रभाव महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। प्रख्यात वैज्ञानिकों तथा मैडिकल डाक्टरों की जन्म कुण्डलियों में शनि की विशेष प्रकार की स्थिति पाई गई है। प्रख्यात नाट्य कलाकार एवं मूर्धन्य अभिनेताओं तथा राजनीतिज्ञों की कुण्डलियों में बृहस्पति की स्थिति महत्त्वपूर्ण पाई गई है। बुध ग्रह परम्परागत फलित ज्योतिष में नगण्य प्रभाव का माना गया है। परन्तु फ्रीडा इडिस (Freda Edis) ने अपनी पुस्तक 'गॉड बिटविन ' में कलाकार तथा समाजसेवियों की जन्मकुण्डलियों में इस ग्रह का बहुत प्रभाव सिद्ध किया है। इन ग्रहों के अतिरिक्त मंगल का सम्बन्ध योद्धाओं तथा मिलिटरी के लोगों की कुण्डलियों में प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। शुक्र का सम्बन्ध कला तथा लास्य में प्रख्यात लोगों की कुण्डलियों में महत्त्वपूर्ण पाया गया है।

इन विश्लेषणों से स्पष्ट है कि ग्रहों का मनुष्य जीवन पर प्रभाव प्रमाणसिद्ध है। इस तथ्य का प्रत्याख्यान कोई भी वैज्ञानिक नहीं कर सकता। आधुनिक वैज्ञानिक लोग यह स्वीकार करते हैं कि हमारा पृथ्वी ग्रह एवं इसके वासी सभी प्राणी एवं वनस्पति जगत एक चुम्बकीय क्षेत्र के पिञ्जरे तथा वैद्युत हीटर(Electric Heater) में हैं। अतः फलित ज्योतिष के जातक भाग की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती, भलेही इसकी फलादेश-पद्धतियां अपूर्ण हैं। इनमें विकास अपेक्षित हैं। गैंक्लेलिन, पर्सी एवं प्लेफेयर आदि वैज्ञानिकों के विश्लेषणों में कुछ तथ्य स्पष्ट हुए हैं। जैसे-कि इस शास्त्र में राशि-नक्षत्र चक्र(Zodiac) के आधार पर फलादेश आधारहीन हैं। परन्तु लग्नसाधन के आधार पर ग्रह-स्थिति के विचार से फलादेश की पद्धति को तो इन्होंने भी प्रामाणिक माना है। किञ्च ज्योतिष के अन्य अङ्ग मेदिनी ज्योतिष, वायु-वर्षा आदि के शास्त्र शायद अधिक सत्य माने जायेंगे- ऐसा विचार वैज्ञानिक अवश्य स्वीकार करेंगे। पृथ्वी पर घटित होने वाली प्राकृतिक घटनाओं के सम्बन्ध सूर्य, चन्द्र आदि के साथ अवश्य हैं। सम्भवतः जातकीय फलितज्योतिष का आधार इतना दृढ़, युक्तिसंगत नहीं, जितना कि अन्य फलित शाखाओं के आधार हैं। जातक फलादेश में जन्म सस्कार तथा देश वातावरण आदि का प्रभाव भी बहुत महत्वपूर्ण हैं, इस तथ्य को आचार्य वराह मिहिर ने भी स्पष्ट किया है। आजकल वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे हैं, विज्ञान की सत्यापन पद्धतियां तथा इस क्षेत्र में आविष्कृत किये जा रहे परीक्षणयन्त्र न जाने भविष्य में क्या सिद्ध कर देंगे। कुछ भी हो- मनुष्य एकल इकाई नहीं है। वह ग्रहों (शायद नक्षत्रों तथा आकाशगङ्गाओं, के चुम्बकीय क्षेत्रों के भी प्रभाव में अवश्य हैं, भले ही फलित ज्योतिष की परम्परागत पद्धतियां अपूर्ण हों या भविष्य में भी अपूर्ण रहें।

इस सम्बन्ध में विचारों में उदारता की आवश्यकता है। फलित ज्योतिष की विरोधी आर्यसमाज परम्परा के इस डी. ए. वी. कालेज में यह गोष्ठी आयोजित करवाकर डॉ. आर्य जी ने वैचारिक उदारता का परिचय दिया है, वे इस दृष्टि से विशेषतः धन्यवाद के पात्र हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आकाशीय पिण्डों के उदयास्त एवं इनकी दिशाएं

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

डॉ० शक्तिधर शर्मा

हमारे प्रिय सहयोगी स. ज्ञानी कर्तार सिंह जी को बुध-शुक्र के पूर्व में अस्त तथा पश्चिम में उदय के विषय में भ्रान्ति पैदा हुई। साधारण जनता को ऐसी भ्रान्ति हो जाना स्वाभाविक है। इस विषय में आकाशीय पिण्डों के उदय-अस्त एवं इनकी दिशाओं के विषय में एक व्यापक दृष्टिकोण से विचार करना उचित समझते हैं।

आकाशीय पिण्डों के उदयास्तों को मुख्यत: तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है:-

(१) दैनिक उदय अस्त

(२) सूर्यकेन्द्रिक उदय अस्त

(३) इन दोनों से भिन्न प्रकार का उदय, अस्त

इन तीनों का विवरण इस प्रकार है -

(१) दैनिक उदय एवं अस्त:- पृथ्वी की अपनी अक्षभ्रमण गति के कारण सभी तारा, ग्रह, चन्द्र पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त हो जाते हैं। इस उदयास्त से सभी परिचित ही हैं।

(२) सूर्य कैन्द्रिक उदय अस्त- कोई भी ग्रह जब सूर्य के समीप होता है तो उसकी चमक के कारण वह अदृश्य रहता है। जब ग्रह सूर्य से दूर रहता है तो दृश्य होता है। यदि कोई सूर्य से अधिक गति का ग्रह सूर्य के समीप पहुँचता है तो वह अदृश्य हो जाता है और जब सूर्य को लांघ कर दूसरी ओर सूर्य से दूर पूर्व में चला जाता है तो वह पुन: दीखने लग जाता है। यदि किसी ग्रह की गति सूर्य की गति से कम होती है तो सूर्य उसके पास जब पहुँचता है तो वह अदृश्य हो जाता है और जब उसके साथ युति करके सूर्य दूसरी तरफ पूर्व की और दूर चला जाता है, तो ग्रह दीखने लग जाता है।

बाह्य ग्रहों के उदय एवं अस्त:- मंगल, गुरु एवं शनि की कक्षाएं सूर्य एवं पृथ्वी की कक्षा से बाहर हैं, अत: इन्हें बाह्य ग्रह कहते हैं। इनकी गति सदैव(वक्री मार्गी दोनों स्थितियों में) सूर्य की गति से कम रहती है अत: ये तभी अस्त होते हैं जब सूर्य इनके पास पहुँचता है, (अर्थात् ये अपनी गति से सूर्य को नहीं पकड़ सकते, सूर्य ही इनके पास पहुँचता है, यह स्पष्ट है कि सूर्य अपने एक चक्कर में अधिकांशत: एक बार ही इनके साथ युति करेगा और ये ग्रह लगभग एक वर्ष की अवधि में एक बार ही अस्त एवं उदित होंगे। क्योंकि सूर्य ही इनके पास आकर इन्हें अस्त करेगा अत: ये सदैव सूर्य से राशि चक्र में आगे रहते हुए ही, अर्थात् सूर्य से पूर्व की ओर रहते हुए ही, अस्त होंगे और जब सूर्य इनको लांघ कर इनसे पूर्व की ओर आ जाएगा तभी कुछ अंशों के अन्तर पर ये दृश्य होंगे। यह स्पष्ट है कि ये जब उदित होंगे तो प्रात: पूर्व में दीखेंगे और जब अस्त होंगे तो सांय सूर्यास्त समय ओझल होंगे। अत: ये सदैव पूर्व में उदित, अस्त होने के बाद दृश्य एवं पश्चिम में अस्त, (लुप्त) होंगे।

आभ्यन्तर ग्रहों के उदय एवं अस्त :—

बुध एवं शुक्र सौर परिवार के आभ्यन्तर ग्रह हैं अर्थात् इनकी कक्षाएं सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य रहती है। इनकी गति कभी सूर्य से कम होती है और कभी बढ़कर उससे अधिक हो जाती है और पुन: कम हो जाती है। स्पष्ट है कि ये कभी अपनी गति से सूर्य के पास आकर अस्त होंगे और कभी सूर्य इनके पास पहुंच कर इन्हें अस्त करेगा।

ग्रहों के उदय-अस्त देखने की विधि: -

यदि आप नियम बनालें, कि सूर्योदय से पूर्व एवं सूर्यास्त के बाद ग्रहों को आकाश में ढूंढा जाय और इन्हें देखने का यह क्रम प्रात: (सूर्योदय से पहिले) या सांय (सूर्यास्त के बाद) प्रतिदिन जारी रखा जाए तो इनके सूर्य की चमक में अस्त होने का ज्ञान सरलता से हो सकता है।

कल्पना करें, कि कोई बाह्यग्रह (अर्थात् शनि, गुरु या मंगल) सूर्यास्त बाद सांय पश्चिम में दीखता है, अर्थात् वह राशिचक्र में सूर्य से पीछे है,(क्योंकि राशिएं पश्चिम से पूर्व की ओर स्थित हैं)कुछ दिनों में सूर्य अपनी शीघ्रतर गति से उसके पास पहुँच कर उसे अदृश्य कर देगा। आप देखेंगे-किसी दिन वह दीखना बन्द हो जायेगा, जबकि एक दिन पहिले वह सांयकाल में दीखता था। बस इसी स्थिति को ज्योतिषज्ञ कहते हैं कि यह (बाह्य) ग्रह पश्चिम में अस्त हो गया। अब ग्रह

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

काफी दिनों तक दिखाई नहीं देगा और इन्हीं दिनों में इसकी सूर्य के साथ युति होगी, जोकि कोरी आंख से नहीं देखी जा सकती। इसके बाद ग्रह सूर्य से राशिचक्र में पीछे रह जाएगा और कुछ अंशों का अन्तर आने पर यह पुनः दीखने लगेगा। परन्तु अब यह प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा क्योंकि अब यह राशिचक्र में सूर्य सी पीछे (यानी सूर्य से पश्चिम की ओर) है। क्योंकि अब आगामी दिनों में ग्रह तो सूर्य को नहीं पकड़ सकता, अतः सूर्य का इनसे अन्तर बढ़ता जायेगा और लगभग एक वर्षभर यह ग्रह सूर्य की चमक में नहीं आएगा। अतः यह लगभग वर्षभर दृश्य होगा। कुछ दिन प्रातः सूर्योदय से पहिले पूर्व दिशा में, कुछ दिन बाद रात्रि के समय आकाश के मध्य में और फिर वह प्रातः सूर्योदय से पहिले पश्चिम में चमक रहा होगा। इन अवधियों में यह ग्रह रात्रि के समय आकाश में राशियों में जाता दीखता रहेगा। कुछ दिन ऐसे भी होंगे कि यह सारी रात्रि देखा जा सकेगा।

आभ्यन्तर ग्रह बुध एवं शुक्र की स्थिति भिन्न है। कल्पना करें कि शुक्र प्रातः सूर्योदय से पहिले दीख रहा है और यह मार्गी है एवं इसकी गति बढ़ रही है तो यह ग्रह प्रातः प्रतिदिन एक ही समय पर देखने से पूर्व क्षितिज की ओर आगे बढ़ता दीखेगा और देखते देखते एक दिन ऐसा आएगा कि यह पूर्व में सूर्य की चमक में प्रातः दीखना बन्द हो जायेगा। इस स्थिति में हम यह कहते कि शुक्र पूर्व में अस्त हो गया। इसके बाद यह कुछ दिनों में सूर्य के साथ युति करके राशि चक्र में सूर्य से आगे निकल जाएगा। यदि आप इन दिनों सूर्यास्त बाद पश्चिम की ओर प्रतिदिन देखने का प्रोग्राम बना लें तो एक दिन ऐसा आयेगा, कि शुक्र सूर्यास्त के बाद सूर्य की चमक से बाहर होने के कारण सांय पश्चिम में दीखना शुरु हो जाएगा और प्रतिदिन एक ही समय (सूर्यास्त बाद) देखते रहने पर आपको ज्ञात होगा कि यह पश्चिम में ऊपर उठ रहा है। यह प्रतिदिन ऊपर जरूर उठेगा, परन्तु यह आकाश के मध्य तक नहीं पहुँचेगा। इसका सूर्य से अन्तर ४८ अंश से अधिक नहीं होता। अतः लगभग ४८ अंश तुल्य अन्तर होने पर स्थिर सा होकर वक्री हो जाने के कारण यह पश्चिम की ओर झुकना शुरु हो जाएगा। प्रतिदिन सायं देखने का प्रोग्राम जारी रखने पर यह ज्ञात होगा, कि गृह सूर्य की चमक में आ जाने के कारण अब पश्चिम के क्षितिज की ओर पहुंचने से पहिले ही अदृश्य (अस्त) हो गया। अब आप पूर्व में प्रातः काल देखने का प्रोग्राम शुरु करें। आप देखेंगे कि कुछ दिन बाद यह पूर्व में सूर्योदय से पहिले दीखने लग जाएगा। यह वही स्थिति है जब हम इसे पाहेले पूर्व में देखते थे। इस प्रकार शुक्र पूर्व में अस्त होकर पश्चिम में उदित होगा और फिर पश्चिम में अस्त होकर पूर्व में उदित होगा और पुनः पूर्व में अस्त। इस प्रकार शुक्र दोलक (Pendulum) की तरह सूर्य के दोनों तरफ चलता (झुलता) है। बुध भी इसी तरह उदित-अस्त होता है। परन्तु वह बहुत कम दिखाई देता है। इसका सूर्य से अन्तर २८ अंश से अधिक नहीं होता। श्री भास्कराचार्य ने बुध एवं शुक्र की गति के विषय में कहा है "**बुध-शुक्रौ सूर्यस्यानुचरौ इव**" अर्थात् बुध एवं शुक्र तो सूर्य के नौकरों की तरह है, जो कि आगे पीछे दोनों तरफ चलते रहते हैं। क्योंकि ये दोनों ग्रह प्रातः या सांय के समय ही आकाश में दिखाई पड़ते हैं। अतः जब ये प्रातः दृश्य होते हैं तब इन्हें "**भोर तारा**" और जब सायं दृश्य होते हैं तब "**सायं तारा**" भी कहा जाता है।

ध्यान रहे- आभ्यन्तर ग्रह वक्री होकर पश्चिम में अस्त और पूर्व में उदित होते हैं। मार्गी होने की स्थिति में वे पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदित होते हैं। बाह्य ग्रहों के सूर्यकेन्द्रिक उदय सदैव पूर्व में और अस्त पश्चिम दिशा में होते हैं।

(३) एक तीसरे प्रकार का उदयास्तः- इस प्रकार के उदयास्त धूम्रकेतुओं के होते हैं। क्योंकि ये आकाशीय पिण्ड हमारे ग्रह पृथ्वी एवं सूर्य से बहुत दूर चले जाते हैं । दूर हो जाने के कारण ये आंखों से ओझल हो जाते हैं। जब ये सूर्य (या पृथ्वी) के पास आते हैं तो दीखने लग जाते हैं। इसके बाद सूर्य के अधिक निकट आने पर अस्त हो जाते हैं। कुछ समय बाद सूर्य सापेक्ष नीच बिन्दु पार करने के बाद सूर्य से कुछ दूर जाने पर पुनः दीखने लग जाते हैं और फिर सूर्य (या पृथ्वी) से बहुत दूर हो जाने पर आंखों से ओझल हो जाते हैं। जितना समय वे आंखों से ओझल होते हैं, उसे उनका प्रवासकाल कहा जाता है। इनके उदय एवं अस्त किसी भी दिशा व किसी भी दिशाकोण में हो सकते हैं।

आभार प्रदर्शन

हमारे परममित्र **ज्ञानी करतार सिंह जी,** मालिक कंवल वीडियो और फोटोस्टैट कुराली, श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (कुराली) के मैनेजर श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, चि. दिलबाग शर्मा एवं पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, के **स. तजवीर सिंह जी** ने इस वर्ष पंचांग कार्य में जो मदद की है, उसके लिए हम इनके हृदय से आभारी है -

— सम्पादक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri,Funding by MoE-IKS

सूर्योदय व सूर्यास्त का काल ज्ञात करने की गणित-प्रक्रियाएं

(विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल स्वयं ज्ञात कीजिए।)

लेखक-प्रो० प्रियव्रत शर्मा

"श्री मार्तण्ड पंचांग" में प्रतिवर्ष उत्तर भारतीय विभिन्न प्रदेशों के नगरों के तैयार सूर्योदयास्तकाल हम देते रहे हैं। उन उदयास्त कालों में १यार मिनट की स्थूलता कहीं-कहीं रहती है। वैसे फलित में इतनी स्थूलता से कोई विशेष अन्तर नहीं आता। फिर भी कुछ दैवज्ञों का आग्रह है, कि-अधिक से अधिक सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल ज्ञात करने की विधि भी उन्हें बतलाई जाए। उनके इस आग्रह की पूर्ति के लिए हम यहां दो भिन्न-भिन्न पद्धतियों द्वारा सूर्योदयास्त ज्ञात करना बतलाएगें, जिनसे विश्व के किसी भी नगर-उपनगर का सूर्योदयास्तकाल वे अपनी आवश्यकता या रुचि के अनुसार अपेक्षित शुद्धि या सूक्ष्मता से जान सकेंगे। इन दोनों पद्धतियों का सोदाहरण स्पष्टीकरण नीचे दिया जा रहा है-

सूर्योदयास्त साधन की सामान्य पद्धति

यहाँ आगे छः कोष्ठक दिए गए हैं-

(I) कोष्ठक (१) (सूर्यक्रान्ति)

(II) कोष्ठक (२) (वेलान्तर संस्कार)

(III) 'सूर्योदयास्त कोष्ठक'

(IV) 'चरकोष्ठक'

(V) सहायक कोष्ठक (i)

(VI) सहायक कोष्ठक (ii)

सूर्योदयास्त साधन की इस पद्धति में चर कोष्ठक और दोनों सहायक कोष्ठकों को छोड़कर शेष तीन कोष्ठकों का ही प्रयोग होगा।

कोष्ठक (१) से अभीष्ट तारीख की सूर्यक्रान्ति लीजिए। इस सूर्यक्रान्ति और अभीष्ट स्थान (नगर) के अक्षांशों द्वारा सूर्योदयास्त कोष्ठक से घं.मि. उठाएं। यदि क्रान्ति (सूर्यक्रान्ति) और अक्षांश (अभीष्ट नगर का अक्षांश) दोनों की दिशा एक ही हो तो ये घं. मि. सूर्यास्तकाल के होंगे, अन्यथा (दोनों की दिशाएं भिन्न-भिन्न होने पर) सूर्योदय के काल के। सूर्यास्तकाल और सूर्योदयकाल के घं. मि. को अलग-अलग बारह घण्टों में से घटाने पर क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त का काल प्राप्त होगा। ध्यान रहे- ये सूर्योदय-सूर्यास्तकाल स्पष्ट सौरकाल के अनुसार होंगे। क्योंकि व्यवहार में सर्वत्र स्टैण्डर्ड टाईम का ही प्रयोग होता है। अतः इनमें कोष्ठक (२) से प्राप्त अपनी अभीष्ट तारीख के बेलान्तर संस्कार को चिन्हानुसार तथा अपने अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टै.अ.) को चिन्ह के विपरीत जोड़ने या घटाने पर ये सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार बन जाएंगे। नीचे दिए गए उदाहरण देखने से यह प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी:-

उदाहरण १ - कलकत्ता में ६ जून को सूर्योदय और सूर्यास्त का काल (भा.स्टै.टा) ज्ञात करें।

६ जून को सूर्यक्रान्ति (कोष्ठक(१) से) = उ. २२°।३२'

कलकत्ता के अक्षांश = उ. २२°।३४'

२२°।३२' क्रान्ति और अक्षांश २२°।३४' द्वारा (सूर्योदयास्त कोष्ठक से) = घं. मि. ६ ४०

क्योंकि यहां अक्षांश और क्रान्ति-दोनों एक ही (उत्तर) दिशा की हैं। अतः सूर्योदयास्त कोष्ठक से प्राप्त ये घं.मि. (६ घं. ४० मि.) सूर्यास्त का काल बतलाते हैं। इन्हें १२ घन्टों में से घटाने पर ५ घं. २० मिनट मिले, जो सूर्योदय का काल है। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, ये दोनों सूर्यास्त और सूर्योदय स्पष्ट सौर काल के अनुसार है। इन्हें स्टै.टा. में बदलने के लिए उपरोक्त निर्देश अनुसार वेलान्तर के मि.से. को चिन्ह के अनुसार और स्टै. अं. (स्टैण्डर्ड अन्तर) को चिन्ह के विपरीत इनमें जोड़ना या घटाना होगा। ६ जून का वेलान्तर-१ मिनट ४४ से. और कलकत्ता का स्टैं.अं. (चिन्ह बदलकर)-२३ मि. ३६ से. है। इन दोनों को ऋण होने के कारण स्पष्ट सौरकाल वाले सूर्योदय (५ घं. २० मिनट) और सूर्यास्त (६ घं. ४० मि.) में से घटाने पर क्रमशः ४ घन्टे ५४ मिनट ४० से. और ६ घं. १४ मिनट ४० से. मिले, जो ६ जून को कलकत्ता में भा.स्टै.टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त का समय है।

उदाहरण २- २१ नवम्बर को वाराणसी में सूर्योदय और सूर्यास्त का काल (भा.स्टैं.टा.) जाननाहै।

२१ नवम्बर को सूर्यक्रान्ति =द. १९°।४०'

वाराणसी का अक्षांश =उ. २५°।२१'

१९°।४०' क्रान्ति और २५°।२१' अक्षांश द्वारा ("सूर्योदयास्त कोष्ठक" से) = घं. मि. ६।३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्योंकि यहाँ क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न हैं अतः सूर्योदयास्त कोष्ठक से प्राप्त यह ६ घं. ३९ मि. सूर्योदय का काल है। इस सूर्योदय काल को १२ घं. में से घटाने पर ५ घं. २१ मि. सूर्यास्त काल हुआ। ये दोनों स्पष्ट सौरकाल के अनुसार हैं। अतः २१ नवम्बर के वेलान्तर-१४ मि. २२ से. को इन दोनों में से घटाने तथा वाराणसी के स्टै.अ.+२ मि. को भी चिन्ह के विपरीत घटाने पर २१ नवम्बर को वाराणसी में भा. स्टैं.टा. के अनुसार सूर्योदय काल ६ घं. २२ मि. ३८ से. और सूर्यास्त काल ५ घं. ४ मि. ३८ से. ज्ञात हो गया।

उदाहरण ३ - २९ फरवरी को दिल्ली में सूर्योदय और सूर्यास्त काल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात करें।

* २९ फरवरी को सूर्यक्रान्ति	= द. ८°।०१'
दिल्ली का अक्षांश	= उ. २८°।३८'
८°।०१' क्रान्ति और २८°।३८' अक्षांश द्वारा (''सूर्योदयास्त कोष्ठक'' से)	= घं. मि. ६।१८

क्योंकि यहां क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न हैं, अतः यह ६ घं. १८ मि. सूर्योदय का काल है। इसे १२ घं. में से घटाने पर ५ घं. ४२ मिनट सूर्यास्त काल हुआ। क्योंकि ये सूर्योदय, सूर्यास्त के काल स्पष्टसौर काल के अनुसार हैं। अतः इन दोनों में इस दिन (२९ फरवरी) के वेलान्तर + १२ मि. ४२ से. तथा विपरीत चिन्ह वाले दिल्ली के स्टै.अ. + २१ मि. १२ से. दोनों को धन (+) होने के कारण जोड़ देने पर ६ घं. ५१ मि. ५४ से. और ६ घं. १५ मि. ५४ से. दिल्ली में २९ फरवरी के क्रमशः सूर्योदय, सूर्यास्तकाल (भा.स्टैं.टा.) मालूम हो गए।

उदाहरण ४ - १५ दिसम्बर को टोकियो में जापानी स्टैं.टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्त काल जानिए।

१५ दिसम्बर को सूर्यक्रान्ति	= द. २३°।१३'
टोकियो का अक्षांश	= उ. ३५°।४०'
क्रान्ति और अक्षांश द्वारा (''सूर्योदयास्त कोष्ठक ''से)	= घं. मि. ७।१२

क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं अलग-अलग होने से यह ७ घं. १२ मि. सूर्योदय का काल है। इसे १२ घं. में से घटाने पर ४ घं. ४८ मि. सूर्यास्त काल हुआ। सूर्योदय और सूर्यास्त के इन स्पष्ट सौर कालों में से १५ दिसम्बर के वेलान्तर -५ मि. २२ से. और टोकियो के विपरीत चिन्ह वाले स्टैं.अं.-१९ मि. ० से. दोनों को ऋण (-)होने के कारण घटाने पर १५ दिसम्बर को टोकियो में जापानी स्टैं.टा. के अनुसार ६ घं. ४७ मि. ३८ से. और ४ घं. २३ मि. ३८ से. क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त काल निकल आए।

उदाहरण ५ - १२ मई को सिडनी (आस्ट्रेलिया) में वहां के क्षेत्रीय (zonal)स्टै.टा. के अनुसार सूर्योदय व सूर्यास्तकाल ज्ञात कीजिए।

१२ मई को सूर्यक्रान्ति	= उ. १७°।५०'
सिडनी का अक्षांश	= द. ३३°।५२'
क्रान्ति और अक्षांश द्वारा (''सूर्योदयास्त कोष्ठक'' से)	= घं. मि. ६।५०

यहाँ क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न होने से यह (६ घं. ५० मि.)काल सूर्योदय का है। इसे १२ घं. में से घटाने पर ५ घं. १० मिनट सूर्यास्तकाल मिला। ये दोनों सूर्योदय सूर्यास्तकाल स्पष्ट सौरकाल के अनुसार हैं। इन दोनों में १२ मई के वेलान्तर -३ मि. ४३ से. और सिडनी के विपरीत चिन्ह वाले स्टैं.अं. -४ मि. ४८ से. (दोनों) को चिन्हानुसार घटाने पर क्रमशः ४ घं. ४१ मि. २९ से. और ५ घं. ०१ मि. २९ से. मिले। ये दोनों काल १२ मई को सिडनी (आस्ट्रेलिया) में वहां के क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय, और सूर्यास्त के हैं।

इस पूर्वोक्त पद्धति से प्राप्त भारतीय नगरों के सूर्योदय व सूर्यास्त के काल में सामान्यतः १ मिनट से अधिक की स्थूलता नहीं आती। अधिक अक्षांश वाले अन्य देशों में तो यह स्थूलता कभी-कभी तीन मिनट तक भी चली जाती है। यदि ''सूर्योदयास्त कोष्ठक'' से क्रान्ति और अक्षांशों द्वारा घं. मि. उठाते समय अनुपात (त्रैराशिक) से प्राप्त सेकण्डों की उपेक्षा न की जाए तो उपरोक्त स्थूलता में कुछ कमी अवश्य हो जाएगी। हमने ऊपर दिए गए सभी उदाहरणों में सर्वत्र ''सूर्योदयास्त कोष्ठक'' से घं. मि. उठाते समय लाघव की दृष्टि से इन सेकण्डों की उपेक्षा की है।

जो दैवज्ञ सूर्योदय, सूर्यास्त के काल को अधिक सूक्ष्मता से जानना चाहते हैं। उन्हें नीचे लिखी सूर्योदयास्त साधन की विशेष पद्धति को प्रयोग में लाना चाहिए।

सूर्योदयास्त साधन की विशेष पद्धति

ऊपर बतलाई गई सूर्योदयास्त साधन की सामान्य पद्धति से जिस नगर का जो सूर्योदय, सूर्यास्तकाल जिस अंग्रेजी तारीख के लिए ज्ञात होता है उसे प्रतिवर्ष उस नगर में उसी तारीख के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है,क्योंकि प्रत्येक स्थल (नगर) का सूर्योदयास्तकाल अंग्रेजी तारीख के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग वही रहता है। जो लोग इस विषय में अधिक सूक्ष्मता चाहते हैं उन्हें आगे दी जा रही इस विशेष पद्धति का आश्रय लेना चाहिए-

इस पद्धति से सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त जानने के लिए यहाँ दिए गए छः कोष्ठकों में से

* लीप ईयर में २९ फरवरी के लिए कोष्ठक (१)और कोष्ठक (२) में १ मार्च को प्रयोग में लाया जाएगा। इसीलिए कोष्ठक (१) और कोष्ठक (२) में २९ फरवरी के आगे १ मार्च की ही क्रमशः क्रान्ति और वेलान्तर का निर्देश है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

केवल इन पांच कोष्ठकों को ही हम प्रयोग में लाएंगे-

(I) कोष्ठक (१) (II) कोष्ठक (२)

(III) चर कोष्ठक (IV) सहायक कोष्ठक (i)

(V) सहायक कोष्ठक (ii)

(अर्थात् यहाँ "सूर्योदयास्त कोष्ठक" का प्रयोग नहीं होगा)।

इस विशेष पद्धति से भारत एवं भारत के पड़ौसी देशों तथा भारत से दूरवर्ती देशों के सूक्ष्म सूर्योदयास्त जानने की विधियों में थोड़ा सा अन्तर है। हम पहले भारत एवं भारत के पड़ौसी देशों के नगरों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त जानने का प्रकार देंगे-

भारत एवं भारत के पड़ौसी देशों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त साधन

'सहायक कोष्ठक (i)' से अपने अभीष्ट सन् के आगे लिखा वार * और घण्टे उठाइये। इन्हें हम क्रमशः 'चलितवार' और 'चालन घण्टे' कहेंगे। जैसे- सन् १९९५ के आगे 'सहायक कोष्ठक (i)' में ४ वार १३ घण्टे' लिखा है। इसका अर्थ है यहाँ चलितवार ४ और चालन घण्टे १३ हैं।

अब हम 'मूल तारीख' का निर्णय करेंगे, जिसके द्वारा कोष्ठक (१) और कोष्ठक (२) से क्रमशः सूर्यक्रान्ति व वेलान्तर संस्कार प्राप्त किया जाएगा। 'मूल तारीख' का निर्णय इस प्रकार किया जाएगा-

सहायक कोष्ठक (ii) में अपनी अभीष्ट तारीख (जिस तारीख का सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करना है उस तारीख) के आगे लिखी वार संख्या को चलितवार की संख्या में जोड़िए। यदि यह जोड़ आपके अभीष्ट वार (जिस तारीख का सूर्योदय, सूर्यास्त जानना है उस तारीख के वार) की संख्या के बराबर हो जाए तो आपकी अभीष्ट तारीख को ही मूल तारीख माना जाएगा। यदि यह जोड़ अभीष्ट वार की संख्या के बराबर नहीं होता तब सहायक कोष्ठक (ii) में लिखी अभीष्ट तारीख की समीपतम वह तारीख, जिसकी वार संख्या चलितवार की संख्या में जोड़ने पर अभीष्ट वार की संख्या के बराबर हो जाए, मूल तारीख मानी जाएगी। स्पष्टता के लिए यहां दो उदाहरण दे रहे हैं-

उदाहरण (१) - मान लें -१ जन. १९३६ ई. (बुधवार) को किसी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करना है। यहां हमारी अभीष्ट तारीख १ जन. और अभीष्ट वार बुधवार है। सहायक कोष्ठक (i) में सन् १९३६ के आगे चलित वार १ है, सहायक कोष्ठक (ii) में हमारी अभीष्ट तारीख (१ जन.) को वार ३ लिखा है, इसे चलित वार १ में जोड़ने पर ४ (बुधवार, यानी हमारा अभीष्ट वार) बन गया। अतः यहाँ 'मूल तारीख' १ जन. ही है।

* यहाँ सहायक कोष्ठक (i) में रविवार आदि के लिए क्रमशः १,२,३, आदि संख्याओं का प्रयोग किया गया है। शनिवार के लिए ० (शून्य) लिखा है।

उदाहरण (२) - मान लें, १ मार्च १९७१ ई. (चन्द्रवार) को सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करना है। यहां १ मार्च अभीष्ट तारीख और चन्द्रवार अभीष्ट वार है। सहायक कोष्ठक (i) में सन् १९७१ के आगे चलितवार २ है इसे सहायक कोष्ठक (ii) में लिखे १ मार्च के वार ६ में जोड़ने पर हमारा अभीष्ट वार चन्द्रवार नहीं बनता, अपितु हमारी अभीष्ट तारीख (१मार्च) की समीपतम तारीख २ मार्च को लिखे वार 0 (शून्य) को इस चलितवार २ में जोड़ने पर हमारा अभीष्ट वार २ (चन्द्रवार) बन जाता है अतः यहाँ मूलतारीख २ मार्च मानी जाएगी।

अभीष्ट तारीख और मूल तारीख का अन्तर दो दिन से अधिक नहीं हो सकता। मूल तारीख निश्चित हो जाने के बाद कोष्ठक (१) से मूल तारीख की सूर्यक्रान्ति और उसकी दैनिक गति तथा कोष्ठक (२) से वेलान्तर संस्कार और उसकी दैनिक गति उठा लीजिए। क्रान्ति (सूर्य क्रान्ति) यदि आगे बढ़ रही हो तो उसकी गति (दैनिक गति) धन, अन्यथा ऋण मानी जाएगी। यही बात वेलान्तर संस्कार की गति के बारे में भी है। क्रान्ति की गति कलाओं को चालन घण्टों से गुणा करके २४ से भाग देने पर प्राप्त लब्धि (कलाओं) को, यदि क्रान्तिगति धन है तो सूर्य क्रान्ति में से घटा दें, अन्यथा जोड़ दें। इस प्रकार 'उदयक्रान्ति' (अभीष्ट तारीख की सूर्योदयकालिक सूर्यक्रान्ति) बन जाएगी। इसी तरह वेलान्तर (वेलान्तर संस्कार) की गति को भी चालन घण्टों से गुणा करके २४ से भाग देने पर प्राप्त लब्धि (सेकण्डों) को वेलान्तर गति धन हो तो वेलान्तर संस्कार में से घटा दें, अन्यथा जोड़ दें। इस प्रकार 'उदय बेलान्तर' (अभीष्ट तारीख का सूर्योदय कालिक वेलान्तर) बन जाएगा।

अब 'उदयक्रान्ति' और अभीष्ट नगर के अक्षांशों द्वारा 'चर कोष्ठक' से चर के घं.मि.से. उठा लें यह उदयकालिक चर होगा। * यदि क्रान्ति और अक्षांश एक ही दिशा के हों तो चर के इन घं. मि. से को ६ घं. में से घटाने पर, अन्यथा (क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न होने पर) जोड़ने पर सूर्योदय का स्पष्ट सौरकाल ज्ञात हो जाएगा। इस स्पष्ट सौरकाल में चिन्हानुसार वेलान्तर को और अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर को चिन्ह के विपरीत जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट तारीख का सूक्ष्म सूर्योदयकाल (स्टैं.टा.) ज्ञात हो जाएगा।

सूक्ष्म सूर्यास्त जानने की प्रक्रिया भी सूर्योदय जानने की प्रक्रिया की तरह ही है, लेकिन इसके लिए नीचे लिखी यह विशेष बात ध्यान में रखनी होगी:-

सूर्यक्रान्ति की गति यदि धन है तो उसका आधा (अर्थात् १२ घण्टे की गति को) उदयक्रान्ति में जोड़ देने, अन्यथा घटा देने से "अस्तक्रान्ति" (अभीष्ट तारीख की सूर्यास्तकालिक सूर्यक्रान्ति) बन जाएगी। इस 'अस्तक्रान्ति' की दिशा को बदल देना होगा। (अर्थात् कोष्ठक(१)

* चरकोष्ठक से चर के घं.मि.से. प्राप्त करते समय क्रान्ति और अक्षांशों की कलाओं के लिए त्रैराशिक ठीक से करना आवश्यक है। त्रैराशिक से प्राप्त सैकण्डों को यहां छोड़ना नहीं चाहिए अन्यथा सूर्योदयास्त काल में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ सकेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में यदि इसकी दिशा दक्षिण लिखी है तो इसे उत्तर, यदि उत्तर लिखी है तो इसे दक्षिण मानना होगा)। यहाँ सूर्यास्त साधन की प्रक्रिया में 'उदय वेलान्तर' को भी 'अस्त वेलान्तर' में बदलना होता है, इसके लिए वेलान्तर की धन गति का आधा (अर्थात् १२ घण्टे की गति को) उदय वेलान्तर में जोड़ने और ऋण दैनिक गति का आधा (अर्थात् १२ घण्टे की गति को) घटाने पर 'अस्त वेलान्तर'(अभीष्ट तारीख का सूर्यास्तकालिक वेलान्तर) बन जाएगा। सूर्यास्तकालसाधनार्थ चर कोष्ठक से चर लेने के लिए 'अस्तक्रान्ति' का ही प्रयोग किया जाएगा और यहाँ 'उदय वेलान्तर' की जगह 'अस्त वेलान्तर' का ही प्रयोग होगा। शेष सारी प्रक्रिया ठीक वही होगी जो ऊपर सूर्योदय जानने के लिए अपनाई गई है। सारांश यह है कि अस्त क्रान्ति और अभीष्ट नगर के अक्षांश द्वारा चर कोष्ठक से चर के घं.मि.से. उठाइए। यह 'अस्तकालिक चर' होगा। यदि 'अस्त क्रान्ति' और अक्षांश एक ही दिशा卐 के हैं तो चर के इन घं.मि.से. को ६ घं. में से घटाइए, अन्यथा जोड़िए। इससे स्पष्ट सौरकाल के अनुसार सूर्यास्तकाल मिलेगा। इसमें अस्त वेलान्तर को चिन्हानुसार और अभीष्ट नगर के स्टैं.अं. को चिन्ह के विपरीत जोड़ने या घटाने से स्टैं.टा. के अनुसार सूक्ष्म सूर्यास्तकाल बन जाएगा।

स्पष्टता के लिए यहाँ सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करने का एक भारतीय नगर(वाराणसी) का उदाहरण देते हैं-

उदाहरण:-१७ मार्च १९७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूर्योदय वा सूर्यास्त का सूक्ष्मकाल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात करें।

सूर्योदयकाल साधन

चलितवार	=	५ } [सहायक कोष्ठक (i) से]
चालन घण्टे	=	१६ }
मूल तारीख	=	१८ मार्च [सहायक कोष्ठक (ii) से]
मूल तारीख १८ मार्च की सूर्यक्रान्ति.	=	द. १°। २४' [कोष्ठक (१) से]
सूर्य क्रान्ति की दैनिक गति	=	- २३' [कोष्ठक (१) से]
* उदयक्रान्ति	=	द. १°। ३९'
मूल तारीख १८ मार्च का वेलान्तर	=	मि. से. + ८। ३२ [कोष्ठक (२) से]
१८ मार्च की वेलान्तरगति	=	- १८ से. (कोष्ठक (२) से)
* उदय वेलान्तर	=	+ ८ मि. ४४ से.
उदयकालिक चर (उदयक्रान्ति १°।३९' और वाराणसी के अक्षांश २५°। २१' द्वारा "चर कोष्ठक" से)	=	मि. से. + ३। ०७

क्योंकि उदय क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न हैं अतः यहां चर (३ मि.७ से.) को ६ घं. में जोड़ा तो ६ घं. ३ मिनट ७ से. सूर्योदय का स्पष्ट सौरकाल मिला। इसमें उदय वेलान्तर + ८ मि. ४४ से. को चिन्हानुसार जोड़ने तथा वाराणसी के स्टैं.अं. +२ मि. ०से. को चिन्ह के विपरीत घटाने से ६ घं. ९ मि. ५१ से. मिले। जोकि १७ मार्च'७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूक्ष्म सूर्योदयकाल (भा.स्टैं.टा.) है।

सूर्यास्तकाल साधन

उदय क्रान्ति	=	द. १°। ३९'
१२ घण्टे की क्रान्ति गति	=	- ११'
अस्तक्रान्ति (विपरीत दिशा वाली)	=	उ. १°। २८'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	+ ८। ४४
१२ घं. की वेलान्तरगति (से.)	=	- ९
अस्तवेलान्तर (मि. से.)	=	+ ८। ३५
अस्तकालिक चर (अस्तक्रान्ति और अक्षांश द्वारा चर कोष्ठक से)	=	मि. से. - २। ४६

यहाँ अस्तक्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं एक है, अतः चर (२ मि. ४६ से.) को ६ घं. में से घटाने पर ५ घं. ५७ मि. १४ से. सूर्यास्त का स्पष्ट सौर काल मिला। इसमें अस्तवेलान्तर +८ मि. ३५ से. को चिन्हानुसार जोड़ने तथा वाराणसी के स्टैं.अं. + २ मि. ० से. को चिन्ह के विपरीत घटाने पर ६ घं. ३ मि. ४९ से. मिले। यह १७ मार्च'७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूक्ष्म सूर्यास्तकाल (भा.स्टै.टा.) है।

卐 यहां सूर्यास्त साधन के लिए अस्त क्रांति की बदली हुई दिशा को ही प्रयोग में लाया जाएगा- यह ध्यान में रखें।

* सूर्य क्रांति की दैनिक गति २३' को चालन घं. १६ से गुणा कर २४ से भाग देने पर लब्धि १५' मिली, क्योंकि क्रांतिगति ऋण है, अतः इसे (१५' को) १८ मार्च की सूर्य क्रांति में जोड़ा तो द. १° । ३९' उदय क्रांति मिली।

* वेलान्तर की दैनिक गति १८ से. को चालन घं. १६ से गुणा कर २४ से भाग देने पर लब्धि १२ सेकण्ड मिली। क्योंकि वेलान्तर की गति ऋण है, अतः इसे (१२ से. को) १८ मार्च के वेलांतर में जोड़ने पर 'उदय वेलांतर' ८ मि. ४४ से. बना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Rajaram Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत से दूरवर्ती देशों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल

उपरोक्त प्रक्रिया से केवल भारत और भारत के पड़ौसी देशों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, लंका) के नगरों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल ज्ञात किया जा सकता है। भारत के दूर पूर्व या पश्चिम में बसे अन्य देशों के लिए सहायक कोष्ठक(i) से प्राप्त होने वाले चलित वार और चालन घण्टों में भा.स्टैं.टा. और अभीष्ट देश के स्टैं.टा. के अन्तर का संस्कार करके उन्हें अभीष्ट देशीय चलित वार और चालन घण्टा बनाना जरूरी है। अभीष्ट देशीय चलित वार और चालन घण्टे बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार है-

यदि अभीष्ट देश का स्टैं.टा., भा.स्टैं.टा. से आगे है तो दोनों देशों के स्टैं.टा. के अन्तर के घं. मि. को सहायक कोष्ठक (i) से प्राप्त अभीष्ट सन् वाले चलित वार और चालन घण्टों में जोड़िए, अन्यथा घटा दीजिए। इस प्रकार मिले चलित वार * और चालन घण्टों को उस देश के लिए सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त काल साधनार्थ प्रयोग में लाइए। बस यही विशेष बात अन्य (भारत से दूर बसे देशों के) नगरों का सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करने के लिए ध्यान में रखना जरूरी है। शेष सारी प्रक्रिया ठीक वही है, जो भारत या भारत के पड़ौसी देशों के नगरों के सूर्योदयास्त साधन के लिए ऊपर बतलाई गई है।

स्पष्टता के लिए नीचे दो उदाहरण दिए जा रहे हैं :-

उदाहरण १- औकलैंड (न्यूजीलैंड) में ११ सितम्बर १९८० (गुरुवार) को न्यूजीलैंड के स्टैं.टा. के अनुसार सूक्ष्म सूर्योदय व सूर्यास्त काल ज्ञात करें।

सूर्योदयकाल का साधन

चलितवार और चालन घण्टे [सहायक कोष्ठक (i) से.]	=	वा. घं. ६ । २२
भा.स्टै.टा. से न्यूजीलैण्ड स्टै.टा. का अन्तर (घं. मि.)	=	+ ६ । ३०
अभीष्ट देशीय चलितवार और चालन घण्टे (वा. घं. मि.)	=	० । ४ । ३०

(अर्थात् यहां औकलैंड के लिए चलित वार ० (= शनिवार) और चालन घण्टे ४ है। सूर्योदय-सूर्यास्त साधन की गणित में यहाँ इन्हीं को प्रयोग में लाया जाएगा। यहां हमने ३० मि. छोड़ दिए है, क्योंकि चालन घण्टों के साथ मिनटों का प्रयोग नहीं किया जाता।)

मूल तारीख (सहायक कोष्ठक (ii) से)	=	१२ सितं *
मूल तारीख (१२ सितं)को सूर्यक्रान्ति कोष्ठक (१) से	=	उ. ४° । ३८'
क्रान्ति की दैनिक गति	=	- २३'
मूल तारीख को वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३ । १८
वेलान्तर की दैनिक गति (से.)	=	+ २९
उदयक्रान्ति	=	उ. ४° । ४२'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३ । १५
उदय कालिक चर (मि.से.) (उदयक्रान्ति ४° । ४२' और औकलैंड के अक्षांश ३६° । ५२' द्वारा चर कोष्ठक से)	=	+ १४ ०५
		घं. मि. से. ६ । ०० । ००
उदयकालिक चर (मि. से.)	=	+ १४ । ०५
औकलैंड में ११ सितं '८० को सूर्योदयकाल (घं. मि. से.) (स्पष्ट सौरकाल)	=	६ । १४ । ०५
उदय वेलान्तर (मि.से.)	=	- ३ । १५
		६ । १० । ५०
औकलैंड का स्टै.अं. (विपरीत चिन्ह वाला)(मि.से.)	=	+ २१ । १२
औकलैंड में ११ सितं ८० को सूक्ष्म सूर्योदय काल (न्यू.स्टै.टा.)(घं.मि.से.)	=	६ । ३२ । ०२

* भा.स्टै.टा. और अभीष्ट देश के स्टै. टा. के अन्तर के घं. मि. को जोड़ने या घटाने पर अनेक बार सहायक कोष्ठक (i) से प्राप्त वार (चलित वार) एक दिन आगे या पीछे भी हो जाता है, यह ध्यान रहे।

* सहायक कोष्ठक (ii) में हमारी अभीष्ट तारीख ११ सितं. की समीपतम तारीख १२ सितं. का वार ५ है, जिसे अभीष्ट देशीय चलित वार ० (शून्य) में जोड़ने पर हमारा अभीष्ट वार (गुरुवार) बन जाता है। अत: यहां मूल तारीख १२ सितं. हुई।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में यदि इसकी दिशा दक्षिण लिखी है तो इसे उत्तर, यदि उत्तर लिखी है तो इसे दक्षिण मानना होगा)। यहाँ सूर्यास्त साधन की प्रक्रिया में 'उदय वेलान्तर' को भी 'अस्त वेलान्तर' में बदलना होता है, इसके लिए वेलान्तर की धन गति का आधा (अर्थात् १२ घण्टे की गति को) उदय वेलान्तर में जोड़ने और ऋण दैनिक गति का आधा (अर्थात् १२ घण्टे की गति को) घटाने पर 'अस्त वेलान्तर' (अभीष्ट तारीख का सूर्यास्तकालिक वेलान्तर) बन जाएगा। सूर्यास्तकालसाधनार्थ चर कोष्ठक से चर लेने के लिए 'अस्तक्रान्ति' का ही प्रयोग किया जाएगा और यहाँ 'उदय वेलान्तर' की जगह 'अस्त वेलान्तर' का ही प्रयोग होगा। शेष सारी प्रक्रिया ठीक वही होगी जो ऊपर सूर्योदय जानने के लिए अपनाई गई है। सारांश यह है कि अस्त क्रान्ति और अभीष्ट नगर के अक्षांश द्वारा चर कोष्ठक से चर के घं.मि.से. उठाइए। यह 'अस्तकालिक चर' होगा। यदि 'अस्त क्रान्ति' और अक्षांश एक ही दिशा卐 के हैं तो चर के इन घं.मि.से. को ६ घं. में से घटाइए, अन्यथा जोड़िए। इससे स्पष्ट सौरकाल के अनुसार सूर्यास्तकाल मिलेगा। इसमें अस्त वेलान्तर को चिन्हानुसार और अभीष्ट नगर के स्टैं.अं. को चिन्ह के विपरीत जोड़ने या घटाने से स्टैं.टा. के अनुसार सूक्ष्म सूर्यास्तकाल बन जाएगा।

स्पष्टता के लिए यहाँ सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करने का एक भारतीय नगर (वाराणसी) का उदाहरण देते हैं–

उदाहरण:–१७ मार्च १९७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूर्योदय वा सूर्यास्त का सूक्ष्मकाल (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात करें।

सूर्योदयकाल साधन

चलितवार	=	५	[सहायक कोष्ठक (i) से]
चालन घण्टे	=	१६	
मूल तारीख	=	१८ मार्च	[सहायक कोष्ठक (ii) से]
मूल तारीख १८ मार्च की सूर्यक्रान्ति	=	द. १° । २४'	[कोष्ठक (१) से]
सूर्य क्रान्ति की दैनिक गति	=	– २३'	[कोष्ठक (१) से]
* उदयक्रान्ति	=	द. १° । ३९'	
मूल तारीख १८ मार्च का वेलान्तर	=	मि. से. + ८ । ३२	[कोष्ठक (२) से]
१८ मार्च की वेलान्तरगति	=	– १८ से.	(कोष्ठक (२) से)
* उदय वेलान्तर	=	+ ८ मि. ४४ से.	
उदयकालिक चर (उदयक्रान्ति १° । ३९' और वाराणसी के अक्षांश २५° । २१' द्वारा "चर कोष्ठक" से)	=	मि. से. + ३ । ०७	

क्योंकि उदय क्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं भिन्न-भिन्न हैं अत: यहां चर (३ मि.७ से.) को ६ घं. में जोड़ा तो ६ घं. ३ मिनट ७ से. सूर्योदय का स्पष्ट सौरकाल मिला। इसमें उदय वेलान्तर + ८ मि. ४४ से. को चिन्हानुसार जोड़ने तथा वाराणसी के स्टैं.अं. +२ मि. ०से. को चिन्ह के विपरीत घटाने से ६ घं. ९ मि. ५१ से. मिले। जोकि १७ मार्च '७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूक्ष्म सूर्योदयकाल (भा.स्टैं.टा.) है।

सूर्यास्तकाल साधन

उदय क्रान्ति	=	द. १° । ३९'
१२ घण्टे की क्रान्ति गति	=	– ११'
अस्तक्रान्ति (विपरीत दिशा वाली)	=	उ. १° । २८'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	+ ८ । ४४
१२ घं. की वेलान्तरगति (से.)	=	– ९
अस्तवेलान्तर (मि. से.)	=	+ ८ । ३५
अस्तकालिक चर (अस्तक्रान्ति और अक्षांश द्वारा चर कोष्ठक से)	=	मि. से. – २ । ४६

यहाँ अस्तक्रान्ति और अक्षांश की दिशाएं एक है, अत: चर (२ मि. ४६ से.) को ६ घं. में से घटाने पर ५ घं. ५७ मि. १४ से. सूर्यास्त का स्पष्ट सौर काल मिला। इसमें अस्तवेलान्तर +८ मि. ३५ से. को चिन्हानुसार जोड़ने तथा वाराणसी के स्टैं.अं. + २ मि. ० से. को चिन्ह के विपरीत घटाने पर ६ घं. ३ मि. ४९ से. मिले। यह १७ मार्च '७९ (शनिवार) को वाराणसी में सूक्ष्म सूर्यास्तकाल (भा.स्टै.टा.) है।

卐 यहां सूर्यास्त साधन के लिए अस्त क्रांति की बदली हुई दिशा को ही प्रयोग में लाया जाएगा– यह ध्यान में रखें।

* सूर्य क्रांति की दैनिक गति २३' को चालन घं. १६ से गुणा कर २४ से भाग देने पर लब्धि १५' मिली, क्योंकि क्रांतिगति ऋण है, अत: इसे (१५' को) १८ मार्च की सूर्य क्रांति में जोड़ा तो

* वेलान्तर की दैनिक गति १८ से. को चालन घं. १६ से गुणा कर २४ से भाग देने पर लब्धि १२ सेकण्ड मिली। क्योंकि वेलान्तर की गति ऋण है, अत: इसे (१२ से. को) १८ मार्च के वेलांतर में जोड़ने पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत से दूरवर्त्ती देशों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल

उपरोक्त प्रक्रिया से केवल भारत और भारत के पड़ौसी देशों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, लंका) के नगरों का सूक्ष्म सूर्योदयास्त काल ज्ञात किया जा सकता है। भारत के दूर पूर्व या पश्चिम में बसे अन्य देशों के लिए सहायक कोष्ठक(i) से प्राप्त होने वाले चलित वार और चालन घण्टों में भा.स्टैं.टा. और अभीष्ट देश के स्टैं.टा. के अन्तर का संस्कार करके उन्हें अभीष्ट देशीय चलित वार और चालन घण्टा बनाना जरूरी है। अभीष्ट देशीय चलित वार और चालन घण्टे बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार है-

यदि अभीष्ट देश का स्टैं.टा., भा.स्टैं.टा. से आगे है तो दोनों देशों के स्टैं.टा. के अन्तर के घं. मि. को सहायक कोष्ठक (i) से प्राप्त अभीष्ट सन् वाले चलित वार और चालन घण्टों में जोड़िए, अन्यथा घटा दीजिए। इस प्रकार मिले चलित वार * और चालन घण्टों को उस देश के लिए सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त काल साधनार्थ प्रयोग में लाइए। बस यही विशेष बात अन्य (भारत से दूर बसे देशों के) नगरों का सूक्ष्म सूर्योदय, सूर्यास्त ज्ञात करने के लिए ध्यान में रखना जरूरी है। शेष सारी प्रक्रिया ठीक वही है, जो भारत या भारत के पड़ौसी देशों के नगरों के सूर्योदयास्त साधन के लिए ऊपर बतलाई गई है।

स्पष्टता के लिए नीचे दो उदाहरण दिए जा रहे हैं :-

उदाहरण १- औकलैंड (न्यूजीलैंड) में ११ सितम्बर १९८० (गुरुवार) को न्यूजीलैंड के स्टैं.टा. के अनुसार सूक्ष्म सूर्योदय व सूर्यास्त काल ज्ञात करें।

सूर्योदयकाल का साधन

		वा. घं.
चलितवार और चालन घण्टे [सहायक कोष्ठक (i) से.]	=	६ । २२
भा.स्टै.टा. से न्यूजीलैण्ड स्टै.टा. का अन्तर (घं. मि.)	=	+ ६ । ३०
अभीष्ट देशीय चलितवार और चालन घण्टे (वा. घं. मि.)	=	० । ४ । ३०

(अर्थात् यहां औकलैंड के लिए चलित वार ० (= शनिवार) और चालन घण्टे ४ है। सूर्योदय-सूर्यास्त साधन की गणित में यहाँ इन्हीं को प्रयोग में लाया जाएगा। यहां हमने ३० मि. छोड़ दिए है, क्योंकि चालन घण्टों के साथ मिनटों का प्रयोग नहीं किया जाता।)

मूल तारीख (सहायक कोष्ठक (ii) से)	=	१२ सितं *
मूल तारीख (१२ सितं) को सूर्यक्रान्ति कोष्ठक (१) से	=	उ. ४° । ३८'
क्रान्ति की दैनिक गति	=	- २३'
मूल तारीख को वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३ । १८
वेलान्तर की दैनिक गति (से.)	=	+ २९
उदयक्रान्ति	=	उ. ४° । ४२'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३ । १५
उदय कालिक चर (मि.से.) (उदयक्रान्ति ४° । ४२' और औकलैंड के अक्षांश ३६° । ५२' द्वारा चर कोष्ठक से)	=	+ १४ ०५
		घं. मि. से.
		६ । ०० । ००
उदयकालिक चर (मि. से.)	=	+ १४ । ०५
औकलैंड में ११ सितं '८० को सूर्योदयकाल (घं. मि. से.) (स्पष्ट सौरकाल)	=	६ । १४ । ०५
उदय वेलान्तर (मि.से.)	=	- ३ । १५
		६ । १० । ५०
औकलैंड का स्टै.अं. (विपरीत चिन्ह वाला) (मि.से.)	=	+ २१ । १२
औकलैंड में ११ सितं ८० को सूक्ष्म सूर्योदय काल (न्यू. स्टै.टा.) (घं.मि.से.)	=	६ । ३२ । ०२

* भा.स्टै.टा. और अभीष्ट देश के स्टै. टा. के अन्तर के घं. मि. को जोड़ने या घटाने पर अनेक बार सहायक कोष्टक (i) से प्राप्त वार (चलित वार) एक दिन आगे या पीछे भी हो जाता है, यह ध्यान रहे।

* सहायक कोष्ठक (ii) में हमारी अभीष्ट तारीख ११ सितं. की समीपतम तारीख १२ सितं. का वार ५ है, जिसे अभीष्ट देशीय चलित वार ० (शून्य) में जोड़ने पर हमारा अभीष्ट वार (गुरुवार) बन जाता है। अतः यहां मूल तारीख १२ सितं. हुई।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यास्त काल का साधन

उदय क्रान्ति		उ. ४°।४२'
१२ घं. की क्रान्तिगति		-११'
अस्तक्रान्ति (विपरीत दिशा वाली)	=	द. ४°। ३१'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३।१५
१२ घं. की वेलान्तर गति (से.)	=	+ १०
अस्त वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३।२५
		घं. मि. से.
		६।००।००
अस्तकालिक चर (मि.से.) अस्तक्रान्ति ४°।३१' और अक्षांश ३६°।५२' द्वारा चर कोष्ठक से	=	- १३।३३
औकलैंड ११ सितं ८० को सूर्यास्त काल (स्पष्ट सौर काल)(घं. मि. से.)		५।४६।२७

इस स्पष्ट सौरकाल वाले सूर्यास्तकाल में अस्तवेलान्तर-३ मि. २५ से. को चिन्हानुसार घटाने और औकलैंड के स्टैं.अं. - २९ मि. १२ से. को चिन्ह के विपरीत जोड़ने पर ६ घं. ४ मि. १४ से. मिले जो ११ सितं. '८० को औकलैड में सूर्यास्त का सूक्ष्मकाल (न्यू.स्टैं.टा.) है।

उदाहरण २- २ मई १९६० (चन्द्रवार) को बगदाद (ईराक) में सूक्ष्म सूर्योदय -सूर्यास्तकाल (ईराक स्टैं.टा.) जानना है।

सूर्योदयकाल का साधन

		वा. घं.
चलितवार और चालन घण्टे [सहायक कोष्ठक (i) से]	=	३।०१
भा.स्टैं.टा. से ईराक स्टै.टा. का अन्तर (घं. मि.)	=	- २।३०
बगदाद (ईराक) का चलित वार और चालन घण्टे (वा. घं. मि.)	=	२।२२।३०

(अर्थात् यहां अभीष्ट देशीय चलितवार २ और चलित घण्टे २२ हैं *)

मूल तारीख [सहायक कोष्ठक (ii) से]	=	४ मई *
मूल तारीख (४मई) को सूर्यक्रान्ति (कोष्ठक १ से)	=	उ. १५°।३८'
सूर्य क्रान्ति की दैनिक गति	=	+ १७'
मूल तारीख (४ मई) को वेलान्तर (मि. से.)	=	- ३।१०
वेलान्तर की दैनिक गति (से.)	=	+ ६
उदयक्रान्ति	=	उ. १५°।२२'
उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	-३।०५
उदयकालिक चर (मि.से.) उदयक्रान्ति १५°।२२' और बगदाद के अक्षांश ३३°।२०' द्वारा चर कोष्ठक से	=	- ४१।३९
		घं मि. से.
		६।००।००
उदयकालिक चर (मि. से.)	=	- ४१।३९
बगदाद में २ मई '६० को सूर्योदय (स्पष्ट सौर काल)(घं. मि.से.)	=	५।१८।२१
उदय वेलान्तर (मि.से.)	=	- ३।०५
		५।१५।१६
बगदाद का स्टैं.अं. (विपरीत चिन्ह वाला)(मि.से.)	=	+ २।१६
बगदाद में २ मई '६० को सूक्ष्म सूर्योदयकाल (ईराक स्टैं.टां.)	=	५।१७।३२

सूर्यास्तकाल साधन

उदय क्रान्ति	=	उ. १५°।२२'
१२ घण्टे की क्रान्तिगति		+ ८'
अस्तक्रान्ति (विपरीत दिशा वाली)	=	द. १५'।३०'

* यहां ३० मि. छोड़ दिए गये हैं।

* सहायक कोष्टक (ii) में हमारी अभीष्ट तारीख (२ मई) की समीपतम तारीख ४ मई है, जिसका वार ० (शून्य) अभीष्ट देशीय चलित वार २ में जोड़ने पर हमारा अभीष्ट वार (चन्द्र वार) मिलता है। अतः यहां मूल तारीख ४ मई ली गई है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदय वेलान्तर (मि. से.)	=	-३।०५
११ घं. की वेलान्तर गति (से.)	=	+ ०३
अस्त वेलान्तर (मि. से.)	=	-३।०८
अस्तकालिक चर (मि. से.) अस्तक्रान्ति १५°।३०' और अक्षांश ३३°।२०' द्वारा चर कोष्ठक से	=	+४२।०१
		घं. मि. से.
		६।००।००
अस्तकालिक चर (मि.से.)		+ ४२।०१
बगदाद में २ मई' ६० को सूर्यास्तकाल (स्पष्ट सौर काल) (घं. मि.से.)	=	६।४२।०१
अस्तवेलान्तर (मि.से.)	=	- ३।०८
		६।३८।५३
बगदाद का स्टैं. अं. (विपरीत चिन्ह वाला) (मि. से.)	=	+ २।१६
बगदाद में २ मई' ६० को सूक्ष्म सूर्यास्त काल (ईराक स्टैं.टा.)(घं. मि. से.)	=	६।४१।०९

ध्यान दें :-

वेलान्तर यदि ऋण चिह्न वाला हो तो उसे उदय वेलान्तर या अस्तवेलान्तर बनाने के लिए उसकी गति से उत्पन्न संस्कार (सेकण्डें) को उसमें जोडते या घटाते समय उसके (वेलान्तर के) ऋण चिह्न की उपेक्षा करनी चाहिए और इस जोड़ - घटाव के बाद प्राप्त उदय वेलान्तर या अस्त वेलान्तर ऋण ही रहेगा-यह ध्यान रहे।

उपरोक्त विशेष पद्धति से ज्ञात सूर्योदय, सूर्यास्त के काल पर्याप्त सूक्ष्म होते हैं। इनकी सूक्ष्मता स्थानीय (अभीष्ट नगर के) अक्षांश, रेखांश तथा उदयास्त कालिक सूर्यक्रान्ति व वेलान्तर की सूक्ष्मता पर निर्भर करती है। ये पदार्थ जितने अधिक सूक्ष्म होंगे सूर्योदय, सूर्यास्तकाल भी उतने ही अधिक सूक्ष्म होंगे। सभी एटलसों में मिलने वाले नगरों के अक्षांश, रेखांशों में एक दो कला की स्थूलता तो अक्सर रहती ही है। रेखांश में १ कला की अशुद्धि होने पर विश्व के सभी नगरों के सूर्योदयास्त काल में ४ सेकण्ड़ की अशुद्धि आती है। अक्षांश में एक कला की अशुद्धि होने पर भारतीय नगरों के सूर्योदयास्त काल में ३ सेकण्ड से अधिक की अशुद्धि नहीं आती, जबकि ६० अक्षांश वाले स्थलों पर यह अशुद्धि १० सेकण्ड तक चली जाती है। सूर्यक्रान्ति में भी १ कला की अशुद्धि से भारतीय नगरों में ३ सेकण्ड तक और ६० अक्षांशीय नगरों में १० सेकण्ड तक की अशुद्धि सूर्योदयास्तकाल में आती है। उपरोक्त पद्धति से प्राप्त सूर्यक्रान्ति में सामान्यतः १ कला और वेलान्तर में २ सेकण्ड से अधिक की अशुद्धि नहीं आती। **इस प्रकार हम कह सकते हैं - इस विशेष पद्धति से जाने गए भारतीय नगरों के सूर्योदयास्तकालों में सामान्यतः ७-८ सेकण्ड से और भारत से दूर बसे अधिक अक्षांशों वाले नगरों के सूर्योदयास्तकालों में २६-२७ सेकण्ड से अधिक की अशुद्धि (स्थूलता) नहीं हो सकती है, बशर्ते कि अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश सर्वथा शुद्ध हों।**

वेलान्तर में बहुत ही कम स्थलों पर ५-६ सेकण्ड तक की अशुद्धि इस विशेष पद्धति में हो सकती है। भारत से दूर पूर्व पश्चिम में स्थित देशों में सूर्य क्रान्ति में भी २ कला तक की अशुद्धि इस पद्धति में होगी।

ध्यान दें- उपरोक्त दोनों (सामान्य व विशेष) पद्धतियों से प्राप्त होने वाले सूर्योदय व सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्कार रहित (अर्थात् ज्योतिष शास्त्रीय) होंगे। इन्हें इष्ट, लग्न आदि साधन के लिए बिना किसी प्रकार का संस्कार दिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

B. BHARDWAJ
✆ 569994, 573414 (O)
562279, 573657 (R)

NAMITA COMPUTER
GRAPHICS & DOCUMENT CENTRE

Our Specialization in :
English, Hindi
Punjabi, Sanskrit.

☑ ADVERTISING & DESIGNING
☑ LASER TYPE SETTING
☑ HOROSCOPE
☑ THESIS & BOOK WORK
☑ TRANSLATION WORK

SCO 19, SECTOR 11, PANCHKULA-134 109 (HR.)

HOUSE NO. 1248, SECTOR 11, PANCHKULA-134 109 (HR.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदयास्त कोष्ठक (भाग १)

सूर्य क्रान्ति

क्रमांक ↓	०°	१°	२°	३°	४°	५°	६°	७°	८°	९°	१०°	११°	१२°
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
०	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००
१	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१
२	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२
३	६ ००	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०३
४	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३
५	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०४
६	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०५
७	६ ००	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०५	६ ०६
८	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०७
९	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०८
१०	६ ००	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९
११	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०५	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ ०९
१२	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ ०९	६ १०
१३	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ ११
१४	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ ११	६ १२
१५	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ ११	६ १२	६ १३
१६	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०३	६ ०५	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ १२	६ १३	६ १४
१७	६ ००	६ ०१	६ ०२	६ ०४	६ ०५	६ ०६	६ ०७	६ ०९	६ १०	६ ११	६ १२	६ १४	६ १५
१८	६ ००	६ ०१	६ ०३	६ ०४	६ ०५	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ १२	६ १३	६ १४	६ १६
१९	६ ००	६ ०१	६ ०३	६ ०४	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ १०	६ ११	६ १३	६ १४	६ १५	६ १७
२०	६ ००	६ ०१	६ ०३	६ ०४	६ ०६	६ ०७	६ ०९	६ १०	६ १२	६ १३	६ १५	६ १६	६ १८
२१	६ ००	६ ०२	६ ०३	६ ०५	६ ०६	६ ०८	६ ०९	६ ११	६ १२	६ १४	६ १६	६ १७	६ १९
२२	६ ००	६ ०२	६ ०३	६ ०५	६ ०६	६ ०८	६ १०	६ ११	६ १३	६ १५	६ १६	६ १८	६ २०
२३	६ ००	६ ०२	६ ०३	६ ०५	६ ०७	६ ०९	६ १०	६ १२	६ १४	६ १५	६ १७	६ १९	६ २१
२४	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०५	६ ०७	६ ०९	६ ११	६ १३	६ १४	६ १६	६ १८	६ २०	६ २२
२५	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०६	६ ०७	६ ०९	६ ११	६ १३	६ १५	६ १७	६ १९	६ २१	६ २३
२६	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०६	६ ०८	६ १०	६ १२	६ १४	६ १६	६ १८	६ २०	६ २२	६ २४
२७	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०६	६ ०८	६ १०	६ १२	६ १४	६ १६	६ १९	६ २१	६ २३	६ २५
२८	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०६	६ ०९	६ ११	६ १३	६ १५	६ १७	६ १९	६ २२	६ २४	६ २६
२९	६ ००	६ ०२	६ ०४	६ ०७	६ ०९	६ ११	६ १३	६ १६	६ १८	६ २०	६ २२	६ २५	६ २७
३०	६ ००	६ ०२	६ ०५	६ ०७	६ ०९	६ १२	६ १४	६ १६	६ १९	६ २१	६ २३	६ २६	६ २८

क्रमांक	०°	१°	२°	३°	४°	५°	६°	७°	८°	९°	१०°	११°	१२°
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
३१	६ ००	६ ०२	६ ०५	६ ०७	६ १०	६ १२	६ १४	६ १७	६ १९	६ २२	६ २४	६ २७	६ २९
३२	६ ००	६ ०२	६ ०५	६ ०८	६ १०	६ १३	६ १५	६ १८	६ २०	६ २३	६ २५	६ २८	६ ३१
३३	६ ००	६ ०३	६ ०५	६ ०८	६ १०	६ १३	६ १६	६ १८	६ २१	६ २४	६ २६	६ २९	६ ३२
३४	६ ००	६ ०३	६ ०५	६ ०८	६ ११	६ १४	६ १६	६ १९	६ २२	६ २५	६ २७	६ ३०	६ ३३
३५	६ ००	६ ०३	६ ०६	६ ०८	६ ११	६ १४	६ १७	६ २०	६ २३	६ २५	६ २८	६ ३१	६ ३४
३६	६ ००	६ ०३	६ ०६	६ ०९	६ १२	६ १५	६ १८	६ २०	६ २३	६ २६	६ २९	६ ३२	६ ३६
३७	६ ००	६ ०३	६ ०६	६ ०९	६ १२	६ १५	६ १८	६ २१	६ २४	६ २७	६ ३१	६ ३४	६ ३७
३८	६ ००	६ ०३	६ ०६	६ ०९	६ १३	६ १६	६ १९	६ २२	६ २५	६ २८	६ ३२	६ ३५	६ ३८
३९	६ ००	६ ०३	६ ०६	६ १०	६ १३	६ १६	६ २०	६ २३	६ २६	६ २९	६ ३३	६ ३६	६ ४०
४०	६ ००	६ ०३	६ ०७	६ १०	६ १३	६ १७	६ २०	६ २४	६ २७	६ ३१	६ ३४	६ ३८	६ ४१
४१	६ ००	६ ०३	६ ०७	६ १०	६ १४	६ १७	६ २१	६ २५	६ २८	६ ३२	६ ३५	६ ३९	६ ४३
४२	६ ००	६ ०४	६ ०७	६ ११	६ १४	६ १८	६ २२	६ २५	६ २९	६ ३३	६ ३७	६ ४०	६ ४४
४३	६ ००	६ ०४	६ ०७	६ ११	६ १५	६ १९	६ २२	६ २६	६ ३०	६ ३४	६ ३८	६ ४२	६ ४६
४४	६ ००	६ ०४	६ ०८	६ १२	६ १५	६ १९	६ २३	६ २७	६ ३१	६ ३५	६ ३९	६ ४३	६ ४७
४५	६ ००	६ ०४	६ ०८	६ १२	६ १६	६ २०	६ २४	६ २८	६ ३२	६ ३६	६ ४१	६ ४५	६ ४९
४६	६ ००	६ ०४	६ ०८	६ १२	६ १७	६ २१	६ २५	६ २९	६ ३३	६ ३८	६ ४२	६ ४६	६ ५१
४७	६ ००	६ ०४	६ ०९	६ १३	६ १७	६ २२	६ २६	६ ३०	६ ३५	६ ३९	६ ४४	६ ४८	६ ५३
४८	६ ००	६ ०४	६ ०९	६ १३	६ १८	६ २२	६ २७	६ ३१	६ ३६	६ ४१	६ ४५	६ ५०	६ ५५
४९	६ ००	६ ०५	६ ०९	६ १४	६ १८	६ २३	६ २८	६ ३२	६ ३७	६ ४२	६ ४७	६ ५२	६ ५७
५०	६ ००	६ ०५	६ १०	६ १४	६ १९	६ २४	६ २९	६ ३४	६ ३९	६ ४४	६ ४९	६ ५४	६ ५९
५१	६ ००	६ ०५	६ १०	६ १५	६ २०	६ २५	६ ३०	६ ३५	६ ४०	६ ४५	६ ५०	६ ५६	७ ०१
५२	६ ००	६ ०५	६ १०	६ १५	६ २१	६ २६	६ ३१	६ ३६	६ ४१	६ ४७	६ ५२	६ ५८	७ ०३
५३	६ ००	६ ०५	६ ११	६ १६	६ २१	६ २७	६ ३२	६ ३८	६ ४३	६ ४९	६ ५४	७ ००	७ ०६
५४	६ ००	६ ०६	६ ११	६ १७	६ २२	६ २८	६ ३३	६ ३९	६ ४५	६ ५०	६ ५६	७ ०२	७ ०८
५५	६ ००	६ ०६	६ ११	६ १७	६ २३	६ २९	६ ३५	६ ४०	६ ४६	६ ५२	६ ५८	७ ०४	७ ११
५६	६ ००	६ ०६	६ १२	६ १८	६ २४	६ ३०	६ ३६	६ ४२	६ ४८	६ ५४	७ ०१	७ ०७	७ १३
५७	६ ००	६ ०६	६ १२	६ १९	६ २५	६ ३१	६ ३७	६ ४४	६ ५०	६ ५६	७ ०३	७ १०	७ १६
५८	६ ००	६ ०६	६ १३	६ १९	६ २६	६ ३२	६ ३९	६ ४५	६ ५२	६ ५९	७ ०६	७ १२	७ २०
५९	६ ००	६ ०७	६ १३	६ २०	६ २७	६ ३३	६ ४०	६ ४७	६ ५४	७ ०१	७ ०८	७ १६	७ २३
६०	६ ००	६ ०७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३५	६ ४२	६ ४९	६ ५६	७ ०४	७ ११	७ १९	७ २६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदयास्त कोष्ठक (भाग २)

सूर्य क्रान्ति

अक्षांश	१३°	१४°	१५°	१६°	१७°	१८°	१९°	२०°	२१°	२२°	२३°	२३°२८'
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
०	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००
१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०१	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०२
२	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०२	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३
३	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०३	६ ०४	६ ०४	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०५	६ ०५	६ ०५
४	६ ०४	६ ०४	६ ०४	६ ०५	६ ०५	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०७
५	६ ०५	६ ०५	६ ०५	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०७	६ ०७	६ ०८	६ ०८	६ ०९	६ ०९
६	६ ०६	६ ०६	६ ०६	६ ०७	६ ०७	६ ०८	६ ०८	६ ०९	६ ०९	६ १०	६ १०	६ १०
७	६ ०६	६ ०७	६ ०८	६ ०८	६ ०९	६ ०९	६ १०	६ १०	६ ११	६ ११	६ १२	६ १२
८	६ ०७	६ ०८	६ ०९	६ ०९	६ १०	६ १०	६ ११	६ १२	६ १२	६ १३	६ १४	६ १४
९	६ ०८	६ ०९	६ १०	६ १०	६ ११	६ १२	६ १३	६ १३	६ १४	६ १५	६ १५	६ १६
१०	६ ०९	६ १०	६ ११	६ १२	६ १२	६ १३	६ १४	६ १५	६ १६	६ १६	६ १७	६ १८
११	६ १०	६ ११	६ १२	६ १३	६ १४	६ १४	६ १५	६ १६	६ १७	६ १८	६ १९	६ १९
१२	६ ११	६ १२	६ १३	६ १४	६ १५	६ १६	६ १७	६ १८	६ १९	६ २०	६ २१	६ २१
१३	६ १२	६ १३	६ १४	६ १५	६ १६	६ १७	६ १८	६ १९	६ २०	६ २१	६ २२	६ २३
१४	६ १३	६ १४	६ १५	६ १६	६ १७	६ १९	६ २०	६ २१	६ २२	६ २३	६ २४	६ २५
१५	६ १४	६ १५	६ १६	६ १८	६ १९	६ २०	६ २१	६ २२	६ २४	६ २५	६ २६	६ २७
१६	६ १५	६ १६	६ १८	६ १९	६ २०	६ २१	६ २३	६ २४	६ २५	६ २७	६ २८	६ २९
१७	६ १६	६ १७	६ १९	६ २०	६ २१	६ २३	६ २४	६ २६	६ २७	६ २८	६ ३०	६ ३१
१८	६ १७	६ १९	६ २०	६ २१	६ २३	६ २४	६ २६	६ २७	६ २९	६ ३०	६ ३२	६ ३२
१९	६ १८	६ २०	६ २१	६ २३	६ २४	६ २६	६ २७	६ २९	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३४
२०	६ १९	६ २१	६ २२	६ २४	६ २६	६ २७	६ २९	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३६	६ ३६
२१	६ २०	६ २२	६ २४	६ २५	६ २७	६ २९	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३६	६ ३८	६ ३८
२२	६ २१	६ २३	६ २५	६ २७	६ २८	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३६	६ ३८	६ ४०	६ ४०
२३	६ २२	६ २४	६ २६	६ २८	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३६	६ ३८	६ ३९	६ ४२	६ ४२
२४	६ २४	६ २५	६ २७	६ २९	६ ३१	६ ३३	६ ३५	६ ३७	६ ३९	६ ४१	६ ४४	६ ४५
२५	६ २५	६ २७	६ २९	६ ३१	६ ३३	६ ३५	६ ३७	६ ३९	६ ४१	६ ४३	६ ४६	६ ४७
२६	६ २६	६ २८	६ ३०	६ ३२	६ ३४	६ ३६	६ ३९	६ ४१	६ ४३	६ ४५	६ ४८	६ ४९
२७	६ २७	६ २९	६ ३१	६ ३४	६ ३६	६ ३८	६ ४०	६ ४३	६ ४५	६ ४८	६ ५०	६ ५१
२८	६ २८	६ ३०	६ ३३	६ ३५	६ ३७	६ ४०	६ ४२	६ ४५	६ ४७	६ ५०	६ ५२	६ ५३
२९	६ २९	६ ३२	६ ३४	६ ३७	६ ३९	६ ४२	६ ४४	६ ४७	६ ४९	६ ५२	६ ५४	६ ५६
३०	६ ३१	६ ३३	६ ३६	६ ३८	६ ४१	६ ४३	६ ४६	६ ४९	६ ५१	६ ५४	६ ५७	६ ५८

अक्षांश	१३°	१४°	१५°	१६°	१७°	१८°	१९°	२०°	२१°	२२°	२३°	२३°२८'
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
३१	६ ३२	६ ३४	६ ३७	६ ४०	६ ४२	६ ४५	६ ४८	६ ५१	६ ५३	६ ५६	६ ५९	७ ००
३२	६ ३३	६ ३६	६ ३९	६ ४१	६ ४४	६ ४७	६ ५०	६ ५३	६ ५६	६ ५८	७ ०२	७ ०३
३३	६ ३४	६ ३७	६ ४०	६ ४३	६ ४६	६ ४९	६ ५२	६ ५५	६ ५८	७ ०१	७ ०४	७ ०५
३४	६ ३६	६ ३९	६ ४२	६ ४५	६ ४८	६ ५१	६ ५४	६ ५७	७ ००	७ ०३	७ ०७	७ ०८
३५	६ ३७	६ ४०	६ ४३	६ ४६	६ ४९	६ ५३	६ ५६	६ ५९	७ ०२	७ ०६	७ ०९	७ ११
३६	६ ३९	६ ४२	६ ४५	६ ४८	६ ५१	६ ५५	६ ५८	७ ०१	७ ०५	७ ०८	७ १२	७ १४
३७	६ ४०	६ ४३	६ ४७	६ ५०	६ ५३	६ ५७	७ ००	७ ०४	७ ७	७ ११	७ १५	७ १६
३८	६ ४२	६ ४५	६ ४८	६ ५२	६ ५५	६ ५९	७ ०२	७ ०६	७ १०	७ १४	७ १७	७ १९
३९	६ ४३	६ ४७	६ ५०	६ ५४	६ ५७	७ ०१	७ ०५	७ ०९	७ १२	७ १६	७ २०	७ २२
४०	६ ४५	६ ४८	६ ५२	६ ५६	६ ५९	७ ०३	७ ०७	७ ११	७ १५	७ १९	७ २३	७ २५
४१	६ ४६	६ ५०	६ ५४	६ ५८	७ ०२	७ ०६	७ १०	७ १४	७ १८	७ २२	७ २७	७ २९
४२	६ ४८	६ ५२	६ ५६	७ ००	७ ०४	७ ०८	७ १२	७ १७	७ २१	७ २५	७ ३०	७ ३२
४३	६ ५०	६ ५४	६ ५८	७ ०२	७ ०६	७ ११	७ १५	७ १९	७ २४	७ २९	७ ३३	७ ३६
४४	६ ५२	६ ५६	७ ००	७ ०४	७ ०९	७ १३	७ १८	७ २२	७ २७	७ ३२	७ ३७	७ ३९
४५	६ ५३	६ ५८	७ ०२	७ ०७	७ ११	७ १६	७ २१	७ २५	७ ३०	७ ३५	७ ४०	७ ४३
४६	६ ५५	७ ००	७ ०४	७ ०९	७ १४	७ १९	७ २४	७ २९	७ ३४	७ ३९	७ ४४	७ ४७
४७	६ ५७	७ ०२	७ ०७	७ १२	७ १७	७ २२	७ २७	७ ३२	७ ३७	७ ४३	७ ४८	७ ५१
४८	६ ५९	७ ०४	७ ०९	७ १४	७ १९	७ २५	७ ३०	७ ३५	७ ४१	७ ४७	७ ५३	७ ५५
४९	७ ०२	७ ०७	७ १२	७ १७	७ २२	७ २८	७ ३३	७ ३९	७ ४५	७ ५१	७ ५७	८ ००
५०	७ ०४	७ ०९	७ १४	७ २०	७ २५	७ ३१	७ ३७	७ ४३	७ ४९	७ ५५	८ ०२	८ ०५
५१	७ ०६	७ १२	७ १७	७ २३	७ २९	७ ३४	७ ४१	७ ४७	७ ५३	८ ००	८ ०६	८ १०
५२	७ ०९	७ १४	७ २०	७ २६	७ ३२	७ ३८	७ ४५	७ ५१	७ ५८	८ ०५	८ ११	८ १५
५३	७ ११	७ १७	७ २३	७ २९	७ ३६	७ ४२	७ ४९	७ ५६	८ ०२	८ १०	८ १७	८ २१
५४	७ १४	७ २०	७ २७	७ ३३	७ ४०	७ ४६	७ ५३	८ ००	८ ०८	८ १५	८ २३	८ २७
५५	७ १७	७ २३	७ ३०	७ ३७	७ ४४	७ ५१	७ ५८	८ ०५	८ १३	८ २१	८ २९	८ ३३
५६	७ २०	७ २७	७ ३४	७ ४१	७ ४८	७ ५५	८ ०३	८ ११	८ १९	८ २७	८ ३६	८ ४०
५७	७ २३	७ ३०	७ ३७	७ ४५	७ ५२	८ ००	८ ०८	८ १६	८ २५	८ ३४	८ ४३	८ ४८
५८	७ २७	७ ३४	७ ४२	७ ४९	७ ५७	८ ०५	८ १४	८ २२	८ ३२	८ ४१	८ ५१	८ ५६
५९	७ ३०	७ ३८	७ ४६	७ ५४	८ ०२	८ ११	८ २०	८ २९	८ ३९	८ ४९	९ ००	९ ०५
६०	७ ३४	७ ४२	७ ५१	७ ५९	८ ०८	८ १७	८ २६	८ ३६	८ ४७	८ ५८	९ ०९	९ १४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कोष्ठक (१) (सूर्यक्रान्ति)

उ= उत्तर द= दक्षिण

ता.	जन.		फर		मार्च		अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितं.		अक्टू		नवं.		दिसं.	
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	द२३	०६	द१७	२५	द८	०१	उ४	०६	उ१४	४३	उ२१	५४	उ२३	१२	उ१८	११	उ८	४३	द.२	४४	द१४	०४	द२१	३८
२	२३	०१	१७	०८	७	३८	४	२९	१५	०२	२२	०२	२३	०८	१८	०४	८	२१	३	०७	१४	२३	२१	४७
३	२२	५६	१६	५१	७	१६	४	५२	१५	२०	२२	१०	२३	०४	१७	४९	७	५९	३	३१	१४	४२	२१	५७
४	२२	५१	१६	३४	६	५२	५	१५	१५	३८	२२	१८	२२	५९	१७	३४	७	३७	३	५४	१५	०१	२२	०५
५	२२	४४	१६	१६	६	३०	५	३८	१५	५५	२२	२५	२२	५४	१७	१८	७	१५	४	१७	१५	२०	२२	१४
६	२२	३८	१५	५८	६	०६	६	०१	१६	१३	२२	३२	२२	४९	१७	०२	६	५३	४	४०	१५	३८	२२	२१
७	२२	३१	१५	४०	५	४३	६	२४	१६	३०	२२	३८	२२	४३	१६	४५	६	३१	५	०३	१५	५६	२२	२९
८	२२	२४	१५	२१	५	२०	६	४६	१६	४६	२२	४५	२२	३७	१६	२९	६	०८	५	२६	१६	१४	२२	३६
९	२२	१६	१५	२	४	५७	७	०९	१७	०३	२२	५०	२२	३०	१६	१२	५	४६	५	४९	१६	३२	२२	४३
१०	२२	०८	१४	४३	४	३३	७	३१	१७	१९	२२	५५	२२	२३	१५	५५	५	२३	६	१२	१६	४९	२२	४९
११	२१	५९	१४	२४	४	१०	७	५३	१७	३५	२३	००	२२	१६	१५	३७	५	००	६	३५	१७	०६	२२	५४
१२	२१	५०	१४	०४	३	४६	८	१६	१७	५०	२३	०५	२२	०८	१५	२०	४	३८	६	५८	१७	२३	२३	००
१३	२१	४०	१३	४४	३	२३	८	३८	१८	०६	२३	०९	२२	००	१५	०२	४	१५	७	२०	१७	४०	२३	०४
१४	२१	३०	१३	२४	२	५९	८	५९	१८	२१	२३	१२	२१	५२	१४	४४	३	५२	७	४३	१७	५६	२३	०९
१५	२१	२०	१३	०४	२	३५	९	२१	१८	३५	२३	१६	२१	४३	१४	२५	३	२९	८	०५	१८	१२	२३	१३
१६	२१	०९	१२	४३	२	१२	९	४३	१८	५०	२३	१९	२१	३४	१४	०७	३	०६	८	२८	१८	२७	२३	१६
१७	२०	५८	१२	२३	१	४८	१०	०४	१९	०४	२३	२१	२१	२५	१३	४८	२	४३	८	५०	१८	४२	२३	१९
१८	२०	४६	१२	०२	१	२४	१०	२५	१९	१८	२३	२३	२१	१४	१३	२९	२	२०	९	१२	१८	५७	२३	२२
१९	२०	३४	११	४२	१	०१	१०	४६	१९	३१	२३	२५	२१	०४	१३	१०	१	५६	९	३४	१९	१२	२३	२४
२०	२०	२२	११	२०	०	३७	११	०७	१९	४४	२३	२६	२०	५३	१२	५०	१	३३	९	५५	१९	२६	२३	२५
२१	२०	०९	१०	५८	द०	१३	११	२८	१९	५७	२३	२७	२०	४२	१२	३१	१	१०	१०	१७	१९	४०	२३	२६
२२	१९	५६	१०	३७	उ०	११	११	४८	२०	०९	२३	२७	२०	३१	१२	११	०	४६	१०	३९	१९	५३	२३	२७
२३	१९	४३	१०	१५	०	३४	१२	०९	२०	२१	२३	२७	२०	१९	११	५१	द०	२३	११	००	२०	०६	२३	२७
२४	१९	२९	९	५३	०	५८	१२	२९	२०	३३	२३	२६	२०	०७	११	३१	०	००	११	२१	२०	१९	२३	२७
२५	१९	१५	९	३१	१	२२	१३	४९	२०	४४	२३	२५	१९	५५	११	१०	द०	२४	११	४२	२०	३२	२३	२६
२६	१९	००	९	०९	१	४५	१३	०८	२०	५५	२३	२४	१९	४२	१०	५०	०	४७	१२	०३	२०	४४	२३	२४
२७	१८	४५	८	४६	२	०९	१३	२८	२१	०६	२३	२२	१९	२९	१०	२९	१	११	१२	२४	२०	५५	२३	२३
२८	१८	३०	८	२४	२	३२	१३	४७	२१	१६	२३	२०	१९	१६	१०	०८	१	३४	१२	४४	२१	०६	२३	२०
२९	१८	१४	द८	०१	२	५६	१४	०६	[illegible]	२६	२३	१८	१९	०२	९	४७	१	५७	१३	४	२१	१७	२३	१८
३०	१७	५८			३	१९	उ१४	२५	२१	३६	उ२३	१५	१८	४८	९	२६	द२	२१	१३	२४	द२१	२८	२३	१५
३१	द१७	४२			उ३	४२			उ२१	४५			उ१८	३४	उ९	०४			द१३	४४			द२३	११

कोष्ठक (२) (बेलान्तर संस्कार)

ता.	जन.		फर		मार्च		अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितं.		अक्टू.		नवं.		दिसं.	
	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.
१	+३	७	+१३	३४	+१२	४२	+४	१८	−२	४८	−२	३२	+३	२४	+६	१६	+०	२१	−१०	५५	−१६	१८	−११	२१
२	३	३५	१३	४२	१२	३१	४	००	२	५६	२	२३	३	३६	६	१२	+०	०२	१०	१४	१६	२०	१०	५८
३	४	४	१३	५०	१२	१९	३	४२	३	३	२	१४	३	४८	६	०९	−०	१७	१०	३३	१६	२२	१०	३६
४	४	३१	१३	५७	१२	०७	३	२५	३	१०	२	०४	३	५९	६	०४	०	३६	१०	५२	१६	२२	१०	१२
५	४	५९	१४	३	११	५४	३	०६	३	१६	१	५४	४	१०	६	००	०	५६	११	११	१६	२२	९	४८
६	५	२६	१४	०८	११	४१	२	४९	३	२२	१	४४	४	२०	५	५४	१	१५	११	२९	१६	२१	९	२४
७	५	५३	१४	१२	११	२७	२	३२	३	२७	१	३३	४	३१	५	४८	१	३५	११	४७	१६	१९	८	५९
८	६	१९	१४	१६	११	१३	२	१५	३	३१	१	२२	४	४१	५	४१	१	५५	१२	०४	१६	१६	८	३३
९	६	४५	१४	१९	१०	५८	१	५८	३	३५	१	११	४	५१	५	३४	२	१६	१२	२१	१६	१२	८	०७
१०	७	१०	१४	२१	१०	४३	१	४१	३	३८	१	००	५	००	५	२६	२.	३७	१२	३८	१६	०८	७	४१
११	७	३५	१४	२२	१०	२८	१	२५	३	४१	०	४८	५	०९	५	१७	२	५७	१२	५४	१६	०२	७	१४
१२	७	५९	१४	२३	१०	१२	१	०९	३	४३	०	३६	५	१७	५	०८	३	१८	१३	१०	१५	५६	६	४७
१३	८	२२	१४	२२	९	५६	०	५२	३	४५	०	२४	५	२५	४	५८	३	३९	१३	२५	१५	४९	६	१९
१४	८	४५	१४	२१	९	४०	०	३७	३	४६	−०	१२	५	३२	४	४८	४	०१	१३	४०	१५	४१	५	५१
१५	९	०७	१४	२०	९	२३	०	२२	३	४६	+०	०१	५	३९	४	३७	४	२२	१३	५४	१५	३३	५	२२
१६	९	२९	१४	१७	९	०६	+०	०७	३	४६	०	१३	५	४६	४	२६	४	४३	१४	०८	१५	२३	४	५४
१७	९	५०	१४	१४	८	४९	−०	०८	३	४६	०	२६	५	५२	४	१४	५	०४	१४	२१	१५	१३	४	२५
१८	१०	१०	१४	०९	८	३२	०	२२	३	४५	०	३९	५	५७	४	०१	५	२६	१४	३३	१५	०१	३	५५
१९	१०	२९	१४	०५	८	१४	०	३६	३	४३	०	५२	६	०२	३	४८	५	४७	१४	४५	१४	४९	३	२६
२०	१०	४८	१३	५९	७	५७	०	५०	३	४१	१	०४	६	०६	३	३५	६	०८	१४	५७	१४	३६	२	५६
२१	११	०६	१३	५३	७	३९	१	०३	३	३८	१	१७	६	१०	३	२१	६	३०	१५	०७	१४	२२	२	२६
२२	११	२३	१३	४६	७	२१	१	१६	३	३५	१	३०	६	१३	३	०७	६	५१	१५	१७	१४	०८	१	५६
२३	११	४०	१३	३९	७	०३	१	२८	३	३१	१	४३	६	१६	२	५२	७	१२	१५	२७	१३	५२	१	२६
२४	११	५५	१३	३१	६	४४	१	४०	३	२६	१	५६	६	१९	२	३७	७	३३	१५	३५	१३	३६	०	५६
२५	१२	१०	१३	२२	६	२६	१	५१	३	२१	२	०९	६	२०	२	२१	७	५४	१५	४३	१३	१९	−०	२६
२६	१२	२५	१३	१३	६	०८	२	०२	३	१६	२	२२	६	२१	२	०५	८	१४	१५	५०	१३	०१	+०	०४
२७	१२	३८	१३	०३	५	४९	२	१२	३	१०	२	३५	६	२२	१	४९	८	३५	१५	५७	१२	४२	०	३४
२८	१२	५१	१२	५३	५	३१	२	२२	३	०३	२	४८	६	२२	१	३२	८	५५	१६	०३	१२	२३	१	०३
२९	१३	०२	+१२	४२	५	१३	२	३१	२	५६	३	००	६	२१	१	१५	९	१५	१६	०८	१२	०३	१	३३
३०	१३	१३			४	५५	−२	४०	२	४९	+३	१२	६	२०	०	५७	−९	३५	१६	१२	−११	४२	२	०३
३१	+१३	२३			+४	३६			−२	४१			+६	१८	+०	३९			−१६	१६			+२	३२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सूर्य क्रान्ति

अक्षांश	०°	१°	२°	३°	४°	५°	६°	७°	८°	९°	१०°	११°	१२°	१३°	१४°	१५°	१६°	१७°	१८°		१९°	
अंश	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	घं.	मि. से.	घं.	मि. से.
०°	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	०	० ००	०	० ००
१	० ००	० ०४	० ०८	० १३	० १७	० २१	० २५	० २९	० ३४	० ३८	० ४२	० ४७	० ५१	० ५५	१ ००	१ ०४	१ ०९	१ १३		१ १८		१ २३
२	० ००	० ०८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ०७	१ १६	१ २५	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ००	२ ०९	२ १८	२ २७		२ ३६		२ ४५
३	० ००	० १३	० २५	० ३८	० ५०	१ ०३	१ १६	१ २८	१ ४१	१ ५४	२ ०७	२ २०	२ ३३	२ ४६	३ ००	३ १३	३ २७	३ ४०		३ ५४		४ ०८
४	० ००	० १७	० ३४	० ५०	१ ०७	१ २४	१ ४१	१ ५८	२ १५	२ ३२	२ ५०	३ ०७	३ २४	३ ४२	४ ००	४ १८	४ ३६	४ ५४		५ १२		५ ३१
५	० ००	० २१	० ४२	१ ०३	१ २४	१ ४५	२ ०६	२ २८	२ ४९	३ १०	३ ३२	३ ५४	४ १६	४ ३८	५ ००	५ २२	५ ४५	६ ०८		६ ३१		६ ५४
६	० ००	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ०६	२ ३२	२ ५७	३ २३	३ ४९	४ १५	४ ४१	५ ०७	५ ३४	६ ००	६ २७	६ ५४	७ २२		७ ५०		८ १८
७	० ००	० २९	० ५९	१ २८	१ ५८	२ २८	२ ५७	३ २७	३ ५७	४ २७	४ ५८	५ २८	५ ५९	६ ३०	७ ०१	७ ३२	८ ०४	८ ३६		९ ०९		९ ४२
८	० ००	० ३४	१ ०७	१ ४१	२ १५	२ ४९	३ २३	३ ५७	४ ३२	५ ०६	५ ४१	६ १६	६ ५१	७ २६	८ ०२	८ ३८	९ १४	९ ५१		१० २८		११ ०६
९	० ००	० ३८	१ १६	१ ५४	२ ३२	३ ११	३ ४९	४ २७	५ ६	५ ४५	६ २४	७ ०३	७ ४३	८ २३	९ ०३	९ ४४	१० २५	११ ०६		११ ४८		१२ ३०
१०	० ००	० ४२	१ २५	२ ०७	२ ५०	३ ३२	४ १५	४ ५८	५ ४१	६ २४	७ ०८	७ ५१	८ ३६	९ २०	१० ०४	१० ५०	११ ३६	१२ २२		१३ ०८		१३ ५५
११	० ००	० ४७	१ ३३	२ २०	३ ०७	३ ५४	४ ४१	५ २८	६ १६	७ ०३	७ ५१	८ ४०	९ २८	१० १७	११ ०६	११ ५६	१२ ४७	१३ ३८		१४ २९		१५ २१
१२	० ००	० ५१	१ ४२	२ ३३	३ २४	४ १६	५ ०७	५ ५९	६ ५१	७ ४३	८ ३६	९ २८	१० २१	११ १५	१२ ०९	१३ ०३	१३ ५८	१४ ५४		१५ ५०		१६ ४७
१३	० ००	० ५५	१ ५१	२ ४६	३ ४२	४ ३८	५ ३४	६ ३०	७ २६	८ २३	९ २०	१० १७	११ १५	१२ १३	१३ १२	१४ ११	१५ ११	१६ ११		१७ १२		१८ १४
१४	० ००	१ ००	२ ००	३ ००	४ ००	५ ००	६ ००	७ ०१	८ ०२	९ ०३	१० ०५	११ ०७	१२ ०९	१३ १२	१४ १५	१५ १९	१६ २४	१७ २९		१८ ३५		१९ ४३
१५	० ००	१ ४	२ ०९	३ १३	४ १८	५ २२	६ २७	७ ३२	८ ३८	९ ४४	१० ५०	११ ५७	१३ ०४	१४ ११	१५ १९	१६ २८	१७ ३८	१८ ४८		१९ ५९		२१ ११
१६	० ००	१ ०९	२ १८	३ २७	४ ३६	५ ४५	६ ५४	८ ०४	९ १४	१० २५	११ ३६	१२ ४७	१३ ५९	१५ ११	१६ २४	१७ ३८	१८ ५२	२० ०७		२१ २३		२२ ४०
१७	० ००	१ १३	२ २७	३ ४०	४ ५४	६ ०८	७ २२	८ ३६	९ ५१	११ ०६	१२ २२	१३ ३८	१४ ५४	१६ ११	१७ २९	१८ ४८	२० ०७	२१ २७		२२ ४८		२४ १०
१८	० ०	१ १८	२ ३६	३ ५४	५ १२	६ ३१	७ ५०	९ ०९	१० २८	११ ४८	१३ ०८	१४ २९	१५ ५०	१७ १२	१८ ३५	१९ ५९	२१ २३	२२ ४८		२४ १४		२५ ४२
१९	० ००	१ २३	२ ४५	४ ०८	५ ३१	६ ५४	८ १८	९ ४२	११ ०६	१२ ३०	१३ ५५	१५ २१	१६ ४७	१८ १४	१९ ४२	२१ ११	२२ ४०	२४ १०		२५ ४२		२७ १४
२०	० ००	१ २७	२ ५५	४ २२	५ ५०	७ १८	८ ४६	१० १५	११ ४४	१३ १३	१४ ४३	१६ १४	१७ ४५	१९ १७	२० ५०	२२ २३	२३ ५८	२५ ३३	०	२७ १०	०	२८ ४८
२१	० ००	१ ३२	३ ०४	४ ३७	६ ०९	७ ४२	९ १५	१० ४८	१२ २२	१३ ५७	१५ ३१	१७ ०७	१८ ४३	२० २०	२१ ५९	२३ ३७	२५ १७	२६ ५८		२८ ४०		३० २२
२२	० ००	१ ३७	३ १४	४ ५१	६ २९	८ ०६	९ ४४	११ २२	१३ ०१	१४ ४०	१६ २०	१८ ०१	१९ ४२	२१ २५	२३ ०८	२४ ५२	२६ ३७	२८ २३		३० १०		३१ ५८
२३	० ००	१ ४२	३ २४	५ ०६	६ ४८	८ ३१	१० १४	११ ५७	१३ ४१	१५ २५	१७ १०	१८ ५६	२० ४२	२२ ३०	२४ १८	२६ ०८	२७ ५८	२९ ५०		३१ ४३		३३ ३७
२४	० ००	१ ४७	३ ३४	५ २१	७ ०८	८ ५६	१० ४४	१२ ३२	१४ २१	१६ ११	१८ ०१	१९ ५२	२१ ४३	२३ ३६	२५ ३०	२७ २४	२९ २०	३१ १८		३३ १६		३५ १६
२५	० ००	१ ५२	३ ४४	५ ३६	७ २८	९ २१	११ १४	१३ ०८	१५ ०२	१६ ५७	१८ ५२	२० ४८	२२ ४५	२४ ४३	२६ ४२	२८ ४३	३० ४४	३२ ४७		३४ ५२		३६ ५७
२६	० ००	१ ५७	३ ५४	५ ५२	७ ४९	९ ४७	११ ४५	१३ ४४	१५ ४३	१७ ४४	१९ ४४	२१ ४६	२३ ४८	२५ ५२	२७ ५६	३० ०२	३२ ०९	३४ १८		३६ २८		३८ ४०
२७	० ००	२ ०२	४ ०५	६ ०७	८ १०	१० १३	१२ १७	१४ २१	१६ २६	१८ ३१	२० ३७	२२ ४४	२४ ५२	२७ ०१	२९ १२	३१ २३	३३ ३६	३५ ५१		३८ ०७		४० २५
२८	० ००	२ ०८	४ १५	६ २३	८ ३१	१० ४०	१२ ४९	१४ ५८	१७ ०९	१९ १९	२१ ३१	२३ ४४	२५ ५७	२८ १२	३० २८	३२ ४६	३५ ०५	३७ २५		३९ ४८		४२ १२
२९	० ००	२ १३	४ २६	६ ४०	८ ५३	११ ०७	१३ २२	१५ ३७	१७ ५२	२० ०९	२२ २६	२४ ४४	२७ ०४	२९ २५	३१ ४७	३४ १०	३६ ३५	३९ ०२		४१ ३०		४४ ०१
३०	० ००	२ १९	४ ३७	६ ५६	९ १५	११ ३५	१३ ५५	१६ १६	१८ ३७	२० ५९	२३ २२	२५ ४६	२८ १२	३० ३९	३३ ०६	३५ ३६	३८ ०७	४० ४०	०	४३ १५	०	४५ ५२
३१	० ००	२ २४	४ ४९	७ १३	९ ३८	१२ ०३	१४ २९	१६ ५५	१९ २३	२१ ५१	२४ २०	२६ ५०	२९ २१	३१ ५४	३४ २८	३७ ०४	३९ ४१	४२ २१		४५ ०२		४७ ४६
३२	० ०	२ ३०	५ ००	७ ३०	१० ०१	१२ ३२	१५ ०४	१७ ३६	२० ०९	२२ ४३	२५ १८	२७ ५४	३० ३२	३३ ११	३५ ५१	३८ ३३	४१ १७	४४ ०३		४६ ५२		४९ ४२
३३	० ००	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० २५	१३ ०२	१५ ३९	१८ १८	२० ५७	२३ ३७	२६ १८	२९ ००	३१ ४४	३४ २९	३७ १६	४० ०५	४२ ५६	४५ ४८		४८ ४४		५१ ४१
३४	० ००	२ ४२	५ २४	८ ०६	१० ४९	१३ ३२	१६ १६	१९ ००	२१ ४५	२४ ३२	२७ १९	३० ०८	३२ ५८	३५ ५०	३८ ४४	४१ ३९	४४ ३६	४७ ३६		५० ३८		५३ ४३
३५	० ००	२ ४८	५ ३६	८ २५	११ १४	१४ ०३	१६ ५३	१९ ४४	२२ ३५	२५ २८	२८ २२	३१ १७	३४ १४	३७ १३	४० १३	४३ १५	४६ २०	४९ २७		५२ ३६		५५ ४८
३६	० ००	२ ५४	५ ४९	८ ४४	११ ३९	१४ ३५	१७ ३१	२० २८	२३ २७	२६ २६	२९ २६	३२ २९	३५ ३२	३८ ३७	४१ ४५	४४ ५४	४८ ०६	५१ २०		५४ ३७	०	५७ ५७
३७	० ००	३ ०१	६ ०२	९ ०३	१२ ०५	१५ ०७	१८ १०	२१ १४	२४ १९	२७ २५	३० ३३	३३ ४१	३६ ५२	४० ०४	४३ १९	४६ ३६	४९ ५५	५३ १७		५६ ४१	१	०० ०९
३८	० ००	३ ०८	६ १५	९ २३	१२ ३२	१५ ४१	१८ ५१	२२ ०१	२५ १३	२८ २६	३१ ४०	३४ ५६	३८ १४	४१ ३४	४४ ५६	४८ २०	५१ ४७	५५ १७	०	५८ ४९	१	०२ २५
३९	० ००	३ १४	६ २९	९ ४४	१२ ५९	१६ १५	१९ ३१	२२ ५०	२६ ०८	२९ २९	३२ ५०	३६ १४	३९ ३९	४३ ०६	४६ ३६	५० ०८	५३ ४२	५७ २०	१	०१ ०१	१	०४ ४६
४०	० ००	३ २१	६ ४३	१० ०५	१३ २७	१६ ५०	२० १२	२३ ३९	२७ ०६	३० ३३	३४ ०२	३७ ३३	४१ ०६	४४ ४१	४८ १८	५१ ५८	५५ ४१	५९ २८	१	०३ १७	१	०७ १०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चर कोष्ठक (भाग २)

सूर्य क्रान्ति

अक्षांश	२०°			२१°			२२°			२३°			२३°२७'		
	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
०	०	०	००	०	०	००	०	०	००	०	०	००	०	०	००
१		१	२७		१	३२		१	३७		१	४२	०	१	४४
२		२	५५		३	०४		३	१४		३	२४	०	३	२८
३		४	२२		४	३७		४	५१		५	०६		५	१३
४		५	५०		६	०९		६	२९		६	४८		६	५७
५		७	१८		७	४२		८	०६		८	३१		८	४२
६		८	४६		९	१५		९	४४		१०	१४		१०	२७
७		१०	१५		१०	४८		११	२२		११	५७		१२	१२
८		११	४४		१२	२२		१३	०१		१३	४१		१३	५९
९		१३	१३		१३	५६		१४	४१		१५	२५		१५	४५
१०		१४	४३		१५	३१		१६	२१	०	१७	१०	०	१७	३२
११		१६	१४		१७	०७		१८	०१		१८	५६		१९	२१
१२		१७	४५		१८	४३		१९	४२		२०	४२		२१	०९
१३		१९	१७		२०	२०		२१	२५		२२	३०		२२	५९
१४		२०	५०		२१	५७		२३	०८		२४	१८		२४	५०
१५		२२	२४		२३	३७		२४	५२		२६	०७		२६	४१
१६		२३	५८		२५	१७		२६	३७		२७	५८		२८	३४
१७		२५	३३		२६	५८		२८	२३		२९	५०		३०	२८
१८		२७	१०		२८	४०		३०	१०		३१	४३		३२	२४
१९		२८	४८		३०	२३		३१	५९		३३	३७		३४	२१
२०	०	३०	२७	०	३२	०८	०	३३	४९	०	३५	३३	०	३६	१९
२१		३२	०८		३३	५४		३५	४१		३७	३१		३८	२०
२२		३३	४९		३५	४२		३७	३५		३९	३०		४०	२१
२३		३५	३३		३८	३१		३९	३०		४१	३१		४२	२५
२४		३७	१८		३९	२२		४१	२७		४३	३४		४४	३१
२५		३९	०५		४१	१५		४३	२६		४५	४०		४६	४०
२६		४०	५४		४३	१०		४५	२८		४७	४८		४८	५०
२७		४२	४५		४५	०७		४७	३२		४९	५८		५१	०४
२८		४४	३८		४७	०६		४९	३८		५२	११		५३	२०
२९		४६	३३		४९	०८		५१	४६		५४	२७		५५	३९
३०	०	४८	३१	०	५१	१३	०	५३	५७		५६	४५	०	५८	००
३१		५०	३२		५३	२०		५६	१२	०	५९	०६	१	००	२५
३२		५२	३५		५५	३०	०	५८	३०	१	०१	३१	१	०२	५३
३३		५४	४१	०	५७	४४	१	०	५१	१	०४	००	१	०५	२५
३४		५६	५१	१	००	०१	१	०३	१५	१	०६	३३	१	०८	०२
३५	०	५९	०४	१	०२	२२	१	०५	४४	१	०९	१०	१	१०	४२
३६	१	०१	२०	१	०४	४७	१	०८	१७	१	११	५१	१	१३	२८
३७	१	०३	४०	१	०७	१५	१	१०	५४	१	१४	३७	१	१६	१८
३८	१	०६	०५	१	०९	४८	१	१३	३६	१	१७	२८	१	१९	१३
३९	१	०८	३४	१	१२	२६	१	१६	२३	१	२०	२५	१	२२	१४
४०	१	११	०८	१	१५	१०	१	१९	१६	१	२३	२८	१	२५	२२

सहायक कोष्ठक (*i*)

*वा=चलितवार *घं.=चालन घण्टे

सन्	वा.घं.	सन्	वा.घं.	सन्	वा.घं.	सन्	वा.घं.
१९३५	० ०	१९७८	४ १०	२०२१	१ २०	२०६४	६ ०६
१९३६	१ ०६	१९७९	५ १६	२०२२	३ ०२	२०६५	० १२
१९३७	२ १२	१९८०	६ २२	२०२३	४ ०७	२०६६	१ १७
१९३८	३ १७	१९८१	१ ०३	२०२४	५ १३	२०६७	२ २३
१९३९	४ २३	१९८२	२ ०९	२०२५	६ १९	२०६८	४ ०५
१९४०	६ ०५	१९८३	३ १५	२०२६	१ ०१	२०६९	५ ११
१९४१	० ११	१९८४	४ २१	२०२७	२ ०७	२०७०	६ १७
१९४२	१ १७	१९८५	६ ०३	२०२८	३ १२	२०७१	० २२
१९४३	२ २३	१९८६	० ०८	२०२९	४ १८	२०७२	२ ०४
१९४४	४ ०४	१९८७	१ १४	२०३०	६ ०	२०७३	३ १०
१९४५	५ १०	१९८८	२ २०	२०३१	० ०६	२०७४	४ १६
१९४६	६ १६	१९८९	४ ०२	२०३२	१ १२	२०७५	५ २२
१९४७	० २२	१९९०	५ ०८	२०३३	२ १८	२०७६	० ०३
१९४८	२ ०४	१९९१	६ १३	२०३४	३ २३	२०७७	१ ०९
१९४९	३ ०९	१९९२	० १९	२०३५	५ ०५	२०७८	२ १५
१९५०	४ १५	१९९३	२ ०१	२०३६	६ ११	२०७९	३ २१
१९५१	५ २१	१९९४	३ ०७	२०३७	० १७	२०८०	५ ०३
१९५२	० ३	१९९५	४ १३	२०३८	१ २३	२० ८१	६ ०९
१९५३	१ ०९	१९९६	५ १९	२०३९	३ ०४	२०८२	० १४
१९५४	२ १४	१९९७	० ००	२०४०	४ १०	२०८३	१ २०
१९५५	३ २०	१९९८	१ ०६	२०४१	५ १६	२०८४	३ ०२
१९५६	५ ०२	१९९९	२ १२	२०४२	६ २२	२०८५	४ ०८
१९५७	६ ०८	२०००	३ १८	२०४३	१ ०४	२०८६	५ १४
१९५८	० १४	२००१	५ ००	२०४४	२ १०	२०८७	६ १९
१९५९	१ २०	२००२	६ ०५	२०४५	३ १५	२०८८	१ ०१
१९६०	३ ०१	२००३	० ११	२०४६	४ २१	२०८९	२ ०७
१९६१	४ ०७	२००४	१ १७	२०४७	६ ०३	२०९०	३ १३
१९६२	५ १३	२००५	२ २३	२०४८	० ०९	२०९१	४ १९
१९६३	६ १९	२००६	४ ०५	२०४९	१ १५	२०९२	६ ००
१९६४	१ ०१	२००७	५ १०	२०५०	२ २०	२०९३	० ०६
१९६५	२ ०६	२००८	६ १६	२०५१	४ ०२	२०९४	१ १२
१९६६	३ १२	२००९	० २२	२०५२	५ ०८	२०९५	२ १८
१९६७	४ १८	२०१०	२ ०४	२०५३	६ १४	२०९६	४ ००
१९६८	६ ००	२०११	३ १०	२०५४	० २०	२०९७	५ ०५
१९६९	० ०६	२०१२	४ १६	२०५५	२ ०१	२०९८	६ ११
१९७०	१ ११	२०१३	५ २१	२०५६	३ ०७	२०९९	० १७
१९७१	२ १७	२०१४	० ०३	२०५७	४ १३	२१००	० २३
१९७२	३ २३	२०१५	१ ०९	२०५८	५ १९	२१०१	३ ०५
१९७३	५ ०५	२०१६	२ १५	२०५९	० ०१	२१०२	४ ११
१९७४	६ ११	२०१७	३ २१	२०६०	१ ०६	२१०३	५ १६
१९७५	० १६	२०१८	५ ०२	२०६१	२ १२	२१०४	६ २२
१९७६	१ २२	२०१९	६ ०८	२०६२	३ १८	२१०५	१ ०४
१९७७	३ ०४	२०२०	० १४	२०६३	५ ००	२१०६	२ १०

*इस कोष्ठक में दिए गए ये चलितवार और चालनघण्टे केवल भारत और भारत के पड़ौसी देशों के नगरों के लिए हैं। भारत से दूर स्थित देशों के नगरों के लिए इनमें स्टैं.टा. के अन्तर का संस्कार किया जाता है (उदाहरण देखें)

सहायक कोष्ठक (*ii*)

ता.	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार
१	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
२	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
३	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
४	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
५	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
६	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
७	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
८	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
९	४	०	०	३	५	१	६	६	२	४	०	२
१०	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
११	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
१२	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१३	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
१४	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
१५	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
१६	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
१७	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
१८	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
१९	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२०	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२१	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
२२	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
२३	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
२४	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
२५	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
२६	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२७	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२८	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
२९	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
३०	४		०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
३१	५		१		६		४	०		५		३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्याएं और समाधान

लेखक :- प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पचंकूला -134109

(यद्यपि लगभग प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हाँ ' या 'ना' में भी दिया जा सकता है , लेकिन प्रश्न से सम्बद्ध विषय को तर्क, वितर्क, शास्त्रीय प्रमाण आदि द्वारा सुस्पष्ट कर पाठक को यथासम्भव पूरी तरह संतुष्ट करना ही इस स्तम्भ का उद्देश्य है । प्रश्न से सम्बद्ध किसी अन्य ज्ञातव्य विषय को भी प्रसंगवश पाठक को बतलाना ज्ञानवर्धन की दृष्टि से आवश्यक समझकर मैं कभी - कभी कुछ विषयान्तर में जाना भी दोष नहीं समझता । फलित एवं गणित (सिद्धान्त) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से भी उत्तर देने का मेरा पूरा प्रयास रहता है । लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए । यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं । सीमित समय आदि के कारण मै प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान रहे - मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ, अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह ही भेजिए । इस सम्बन्ध में किसी से मिलता भी नहीं हूँ- प्रियव्रत शर्मा)

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

(१) स्वा. दयानन्द सरस्वती के ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका '' ग्रन्थ में निर्दिष्ट सृष्टि संवत् में त्रुटि और उसका कारण ।

(२) चतुर्दशी तिथि का महालयश्राद्ध अमावस्या को क्यों ?

(३) रिक्ता तिथि में विवाह मुहूर्त्त क्यों ?

(४) गोचर में १२ वें चन्द्र को त्रिबलशुद्धि में ग्राह्य क्यों माना गया ?

(५) मृत्युबाण का निर्णय कैसे करें ?

(६) विंशोत्तरी दशा के भुक्त-भोग्य साधन की गणितप्रक्रिया में सर्वत्र मास के दिन ३० ही क्यों माने जाते हैं ?

(७) जनवरी' ९७ में शुक्र की पूर्वास्तकाल की तारीख के बारे में पंचांगकार सहमत क्यों नहीं थे ?

(८) वर्षप्रवेश का शुद्ध काल कैसे जानें ?

(९) धर्मशास्त्रोक्त कल्पादि,मन्वादि,युगादि तिथियां ज्योतिषसिद्धान्तीय निकष पर ठीक नहीं उतरतीं ।

(१०)मंगल आदि ग्रहों व अगस्त्य आदि तारों के लोप दर्शन के गणितागत काल में दो-तीन दिन की स्थूलता (अशुद्धि) अनेक बार रहती है।

समस्या- इस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (शक सं. १९१९) से प्रारम्भ हुए नव संवत्सर के बधाई पत्रों में हम ''वैदिक यंत्रालय,अजमेर'' से प्रकाशित 'सत्यार्थ प्रकाश ' पर अंकित संख्या के आधार पर सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,०९७ लिख बैठे हैं । लेकिन स्वा. दयानन्द जी द्वारा लिखित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ' के अनुसार यह १,९६,०८,५३,०९७ बनता है । इन दोनों में १,२०,९६,००० वर्षों का अन्तर है, जो २८ कलियुगों के बराबर है। सही सृष्टिसंवत् किसे मानें ?

— श्री यशपाल शास्त्री, नकोदर (पंजाब)

समाधान- इन दोनों में से कोई भी सृष्टिसंवत् (सृष्ट्यादि संवत्) नहीं है । बधाई पत्रों में जो संवत् आपने लिखा है, वह कल्पादि संवत् है । 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ' वाला संवत् भी कल्पादि संवत् है, लेकिन इसमें इस (वर्तमान) कल्प के व्यतीत सात सन्धिकालों का समावेश नहीं किया गया है , जिससे यह कल्पादि संवत् भी शुद्ध नहीं है - नीचे दिए गए विवेचन से यह स्पष्ट हो जाएगा :-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे सिद्धांत ज्योतिष के सूर्यसिद्धांत आदि ग्रन्थों एवं पुराणों से हमें ज्ञात है, कि-एक महायुग ४३,२०,००० वर्षों (सौरवर्षों) का होता है, जिसमें चारों (सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि) युग समाविष्ट होते हैं। महायुग का ४/१० वां भाग (=१७,२८,०००वर्ष)सत्ययुग का ,३/१० वां भाग (=१२,९६,०००वर्ष)त्रेता का, २/१०वां भाग (=८,६४,०००वर्ष) द्वापर का और १/१० वां (=४,३२,०००वर्ष) कलियुग का परिमाण है।७१महायुगों (=७१× ४३,२०,०००= ३०,६७,२०,००० वर्षों) का एक 'मन्वन्तर' कहलाता है । प्रत्येक मन्वन्तर के अंत में एक उसकी सन्धि, अर्थात् सन्धिकाल, होता है, जिसका परिमाण सत्ययुग के बराबर है । ऐसे १४ मन्वन्तरों का एक 'कल्प' होता है । कल्प के प्रारम्भ में भी सत्ययुग के परिमाण की एक सन्धि हुआ करती है । इस प्रकार एक कल्प में कुल ४,३२,००,००,०००सौरवर्ष, यानी १,००० महायुग, होते हैं। ब्रह्मा का दिन एक कल्प के बराबर और रात्रि भी इतनी ही होती है। अर्थात् ब्रह्माका अहोरात्र दो कल्प के बराबर है। ब्रह्मा रात्रि के कल्प में सोते हैं, और उस समय सृष्टि /ब्रह्माण्ड का अभाव रहता है । दिन के कल्प का प्रारम्भ हो जाने पर ब्रह्मा सृष्टि का निर्माण करते हैं। इसके निर्माण में इन्हें १,७०,६४,००० वर्ष लगते हैं। सृष्टि का निर्माण सम्पन्न होते ही जड़-चेतन ब्रह्माण्ड क्रियाशील होता है। यह 'सूर्यसिद्धांत' आदि के अनुसार है।

आजकल हम ब्रह्मा के दिनकल्प में हैं । शास्त्रों से हमें ज्ञात है इस कल्प के छः मन्वन्तर बीत चुके हैं । सातवें वैवस्वत नाम वाले मन्वन्तर के भी २७ महायुग बीत गए हैं, और वर्तमान इस २८ वें महायुग के सत्य, त्रेता और द्वापर युग भी पूरे बीत चुके हैं । शक सवंत् १९१९ के प्रारम्भ (चैत्रशुक्ल प्रतिपदा) तक हमारे इस कलियुग के ५०९८ वर्ष भी बीत गए हैं । कल्प के आदि वाली एक और इन व्यतीत ६ मन्वन्तरों की ६ और सन्धियां भी व्यतीत हो गई हैं । इसके अनुसार इस कल्प के प्रारम्भ से शक संवत् १९१९ के प्रारम्भ तक बीते वर्षों की कुल संख्या (अर्थात् कल्पादि संवत्) की गणना नीचे दिए गए न्यास से स्पष्ट हो जाती है-

इस कल्प के प्रारम्भ से बीते ६ मन्वन्तर = १,८४,०३,२०,०००वर्ष

सातवें वैवस्वत मन्वन्तर के बीते २७ महायुग = ११,६६,४०,०००वर्ष

सातवें मन्वन्तर के इस २८वें महायुग का बीता सत्ययुग = १७,२८,०००वर्ष

सातवें मन्वन्तर के इस २८वें महायुग का त्रेतायुग = १२,९६,००० वर्ष

सातवें मन्वन्तर के इस २८वें महायुग का द्वापर युग = ८,६४,००० वर्ष

सातवें मन्वन्तर के २८वें महायुग के हमारे इस वर्तमान कलियुग के बीते वर्ष (शक संवत् १९१९ के प्रारम्भ तक) = ५०९८ वर्ष

सात सन्धियां (एक कल्प के)आदि की और ६ मन्वन्तरों के अंत की=१,२०,९६,०००वर्ष

कुल योग (= कल्पादि संवत्)= १,९७,२९,४९,०९८ वर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है, आप द्वारा बधाई पत्र पर अंकित संवत् कल्पादि संवत् ही है। (इसमें केवल एकवर्ष की अशुद्धि है)।

'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के अनुसार बना संवत् भी कल्पादि संवत् ही है, लेकिन उसमें ऊपर न्यास में दर्साई गई सात सन्धियों की वर्ष संख्या १,२०,९६,०००जोड़ी नहीं गई। केवल यही इसमें गलती है । ध्यान दें - जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं, एक सन्धि का मान एक सत्ययुग के बराबर होता है । अतः 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' वाले कल्पादि संवत् में सात सत्ययुगों के बराबर वर्षों की कमी है । एक सत्ययुग का मान चार कलियुग के मानों के बराबर होता है । अतः आपका यह लिखना भी ठीक है, कि 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' पर आधारित यह संवत् २८ कलियुगतुल्य कम है ।

जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं, कल्प के आदि में ब्रह्मा को सृष्टि निर्माण में १,७०,६४,०००वर्ष लगते हैं । अतः स्पष्ट है, कल्पादि संवत् में से १,७०,६४,००० वर्ष घटा देने पर सृष्ट्यादि संवत् बनेगा । इसके अनुसार शक संवत् १९१९ के प्रारम्भ वाले कल्पादि संवत् १,९७,२९,४९,०९८ में से सृष्टि रचना काल १,७०,६४,००० घटा देने पर शक सं. १९१९ के प्रारम्भ में सृष्ट्यादि संवत् ,यानी सृष्टि के प्रारम्भ से बीते सौरवर्ष, १,९५,५८,८५,०९८ हुए । हमारे 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' के ''वर्ष राजादिफल विचार'' वाले पृष्ठ पर लिखे जाने वाले कल्पादिसंवत् व सृष्ट्यादि संवत् से भी इसकी तुलना करें ।

ध्यान दें- कल्पादि और सृष्ट्यादि कालों को पृथक्-पृथक् मानने की परम्परा लगभग डेढ हजार वर्षों से चली आ रही है, जिसका स्पष्ट निर्देश सूर्यसिद्धांत में है । लेकिन 'सूर्यसिद्धांत' में ही दी गई ''कल्पभगणों से ग्रहसाधन की प्रक्रिया'' द्वारा कल्पादि काल सृष्ट्यादि काल से भिन्न सिद्ध नहीं होता। (अधिक स्पष्टता के लिए इसी पंचांग में ''समस्याएं और समाधान '' स्तम्भ में श्री भोला दत्त शास्त्री की इसी विषय से सम्बद्ध समस्या का समाधान भी पढ़िए।)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्याः- सं. २०५३ में आश्विन कृष्ण चतुर्दशी ११ अक्तूबर' ९६ को पूरा दिन थी। आपने फिर भी चतुर्दशी का श्राद्ध इस दिन न लगाकर अमावस के दिन (१२ अक्तूबर को) लगाया, जहाँ पूरा दिन अमावस ही थी। यही बात संवत् २०५४ के पंचांग में भी है। ऐसा क्यों?

-पं. ओम्प्रकाश शास्त्री
सपरून, सोलन (हि. प्र.)

समाधान :- चतुर्दशी में मृत व्यक्तियों का महालय श्राद्ध (आश्विनकृष्ण वाला श्राद्ध) चतुर्दशी में नहीं किया जाता। इस तिथि के दिन तो केवल उसी व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है, जिसकी अपमृत्यु (शस्त्रप्रहार, विषभक्षण, सर्पदंश,पर्वत आदि से पतन, वह्निदाह, जलमज्जन, यानदुर्घटना, हिंस्रजन्तु आदि से मृत्यु) हुई हो। अपमृत्यु किसी भी तिथि को क्यों न हुई हो, उसका महालय श्राद्ध चतुर्दशी के दिन ही होता है, यह शास्त्र निर्णय है:-

''विषसर्प-श्वापदाहि-तिर्यग्ब्राह्मणघातिनाम्।
चतुर्दश्यां क्रिया कार्या अन्येषांतु विगर्हिता॥'' (मरीचि)

'नागर खण्ड' का भी वचन है-

''अपमृत्युर्भवेद्येषां शस्त्रमृत्युरथापि वा।
श्राद्धं तेषां प्रकर्त्तव्यं चतुर्दश्यां नराधिप॥''

यह ध्यान रहे -यह नियम केवल महालयश्राद्ध के लिए ही है। अपमृत्यु वाले व्यक्तियों का वार्षिकश्राद्ध तो उसी तिथि को होगा, जिस तिथि को उसकी मृत्यु हुई हो। इस बारे 'धर्मसिंधु' का यह वाक्य है:-

''चतुर्दश्यां मृतस्य महालयः चतुर्दश्यां न कार्यः, ''श्राद्धं शस्त्रहतस्यैव चतुर्दश्यां प्रकीर्त्तितम्''इति नियमेन सर्वतो बलिष्ठेन प्रतिवार्षिक-श्राद्धातिरिक्त-श्राद्धस्य चतुर्दश्यां निषेधात्''।

चतुर्दशी में जिनकी सामान्य मृत्यु हुई हो उनका महालयश्राद्ध द्वादशी,त्रयोदशी या अमावस्या में से किसी एक तिथि को किया जा सकता है-

''चतुर्दशीमृतस्य पौर्णमासीमृतस्य वा महालयः द्वादश्यमावस्यादि तिथिषु कार्यः।'' (धर्मसिन्धुः)

इसी आधार पर चतुर्दशी का श्राद्ध अमा को लिखा जाता है।

जिसकी अपमृत्यु चतुर्दशी के ही दिन हुई हो उसका महालयश्राद्ध तो चतुर्दशी में ही होगा,-यह तो स्पष्ट ही है।

समस्या (i) रिक्तातिथि में विवाह करना वर्जित है, ऐसा मुहूर्त्त ग्रन्थों में लिखा है। लेकिन 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में रिक्ता तिथियों में विवाहमुहूर्त्त लगे होते हैं। ऐसा क्यों?

(ii) गोचर में बारहवां चन्द्र अशुभ माना गया है, लेकिन त्रिबलशुद्धि में आप इसे अशुभ नहीं मानते। क्या कारण है?

- पं. दिनेश कुमार शर्मा
धर्मपुर (मधान), (शिमला)

समाधान (i) रिक्तातिथि को शुभकार्यों के लिए शुभ नहीं माना गया-यह ठीक है। लेकिन विवाहकालिक लग्नकुण्डली में यदि गुरु, शुक्र, बुध में से कोई एक भी केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो रिक्ता, क्षयतिथि आदि अनेक दोष शान्त हो जाते हैं। कश्यप का वचन है-

''अब्दायनर्त्तु-मासोत्त्थाः पक्ष-तिथ्यृक्ष सम्भवाः।
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥'' (कश्यप)॥

'मुहूर्त्तचिन्तामणि' का यह वाक्य भी देखिये-

अब्दायर्त्तु-तिथि-मास-भ- पक्ष- दग्धा-
तिथ्यन्ध-काण-बधिरांगमुखाश्च दोषाः।
नश्यन्ति विद्गुरु-सितेष्विह केन्द्र-कोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्त-नवांश दोषाः॥

('पीयूषधारा' कार ने इसकी व्याख्या में लिखा है- ''तिथिदोषः= रिक्तादिः''।)

(ii) गोचर में बारहवें चन्द्र का फल अधिकतर फलितग्रन्थों में 'व्यय' लिखा है, जो चौथे और आठवें चन्द्र के फल (भय, रोग, बन्धन आदि) के समान अशुभ नहीं है। 'फल दीपिका' कार का यह श्लोक देखिये-

क्रमेण भाग्योदयमर्थहानि-जयौ भयं शोकमरोगतां च।
सुखान्यनिष्टं गदमिष्टसिद्धिं मोदं व्ययं च प्रददाति चन्द्रः॥ (फलदीपिका)

'बृहत्संहिता' में भी द्वादशस्थ चन्द्रमा को व्ययकारक मात्र लिखा है, जबकि वहाँ पञ्चम एवं नवम चन्द्र के फल क्रमशः रोग, शोक और उद्वेग, बन्धन, खेद, उदररोग लिखे हैं।

इन्हीं के आधार पर हमने बारहवें चन्द्र को त्रिबलशुद्धि के प्रसंग में अशुभ कोटि में नहीं रखा। यदि इसके इस सामान्य अशुभफल के आधार पर भी इसे अशुभ कोटि में रखने का कोई आग्रह करे, तब तो उसे पञ्चम एवं नवम चन्द्र को तो परम अशुभ मानना पड़ेगा।

समस्या- मृत्युबाण सूर्य के १, १०, १९, और २८ अंशों पर माना जाता है। इसे कृपया स्पष्ट करें?

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

-पं. कैलाश चन्द्र शर्मा
मानेसर, गुड़गांवा (हरि.)

समाधान :- सूर्य जब मेष आदि किसी भी राशि के १, १०, १९, २८ अंशों को भुक्त (पार) कर इनसे अग्रिम (२, ११, २०, और २९ वें) अंशों में विद्यमान होता है तब मृत्युबाण माना जाता है। उदाहरणार्थ- जब स्पष्ट सूर्य २ रा. १ अं. १५ क. ३० वि. है, तब वह मिथुन के पहिले अंश को भुक्त (पार) करके २ रे अंश में विद्यमान है, अतः इस समय मृत्युबाण माना जाएगा। यह मृत्युबाण तब तक रहेगा जब तक सूर्य मिथुन के दूसरे अंश को भुक्त (पार) नहीं कर लेता (अर्थात् जब तक सूर्य स्पष्ट २/२/००/००नहीं होता)। दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जब स्पष्ट सूर्य के राश्यादि २/१/००/०० हुए तभी मृत्युबाण प्रारम्भ हुआ और जब उस (स्पष्ट सूर्य) के राश्यादि २/२/००/०० हुए तब मृत्युबाण समाप्त हो गया।

ध्यान रहे-प्रत्येक ग्रह के स्पष्ट राश्यादि में जो राशि, अंश, कला, विकलाएं दी होती हैं वे उस ग्रह की क्रमशः भुक्त राशि, भुक्त अंश, भुक्त कलाएं और भुक्त विकलाएं होती हैं।

समस्या-(i) विंशोत्तरी दशा का भुक्त, भोग्य साधन करते हुए हम प्रत्येक मास का मान ३० दिन मान कर क्यों गणित करते हैं, जब कि अनेक मास ३० दिन से कम और अधिक भी हैं ? दशा का समाप्तिकाल सूक्ष्मता से जानने का प्रकार भी बतलाइए।

(ii) जन.' ९७ में हुए शुक्र के पूर्वास्त की तारीख के बारे में आपका पंजाब के ही एक अन्य पंचांगकार से एकमत नहीं था। जबकि दोनों पंचांग चित्रापक्षीय हैं, और इनके निर्माणस्थलों के अक्षांशों में भी नगण्य सा अन्तर है। फिर भी इन दोनों पंचांगों में दी गई इस शुक्रास्त की तारीखों में ५ दिन का अन्तर था-इसका कारण स्पष्ट करें।

-शास्त्री राजेन्द्र बड़कुलिया
राज ज्योतिष भवन
कटुआ (ज.का.)

समाधान (i) जन्मकालीन दशा का भुक्तकाल निकालने के लिए जन्मकालिक नक्षत्र के भुक्तकाल (भयात) को जन्मकालीन दशेश के दशावर्षों से गुणाकर भभोग से भाग देते हुए दैवज्ञ लोग अक्सर पांच लब्धियां लेते हैं, जिन्हें वे सामान्यतः जन्मकालीन दशेश की भुक्तदशा के क्रमशः वर्ष, मास, दिन और घड़ी, पल मानते हैं। लेकिन ये वस्तुतः भुक्त दशा के क्रमशः सौर वर्ष, सौर मास, सौर दिन, सौर घड़ी, सौर पल होते हैं। सूर्य द्वारा १२ राशियों के भोग काल (भगण) को सौर वर्ष, एक राशि के भोगकाल को एक सौर मास, एक अंश के भोगकाल को एक सौर दिन, एक कला के भोगकाल को एक सौर घड़ी और एक विकला के भोग काल को एक सौर पल कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि एक सौर मास (सूर्य द्वारा एक राशि के ३० अंशों के भोग काल)में सौर दिन केवल ३० ही होते हैं। (अधिक स्पष्टता के लिए इसी वर्ष के इस पंचांग में पृष्ठ ५९ पर दिया गया मेरा लेख **"दशा के प्रारम्भ का सूक्ष्मकाल"** पढ़ें। दशा के प्रारम्भ होने का काल सूक्ष्मता से जानने की प्रक्रिया भी इस लेख में विस्तारपूर्वक बतलाई गई है।)

(ii) ३१ अक्षांशीय स्थलों पर यह शुक्रास्त १६-२-९७ को ही हुआ था- इस बारे में गणितीय स्पष्टीकरण हमने इसी (सं. २०५५ के) पंचांग में पृथक् लेख के रूप में पृष्ठ ४८ पर दिया है। हमारे इन पंचांगकार मित्र से इस शुक्रास्त की गणित में निश्चित कोई त्रुटि हुई है- यह आप इस लेख से समझ जाएंगे।

समस्या-(i) सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश सारणी से वर्षप्रवेश काल बनाया जाए या वेधसिद्ध वर्षप्रवेश सारणी से - यह विवाद है। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के तुल्य सूर्य कब स्पष्ट होगा-यह काल दैनिक स्पष्ट सूर्य की गति द्वारा त्रैराशिक से जान कर उसे ही शुद्ध वर्षप्रवेश काल मानने से क्या यह विवाद शान्त नहीं हो जाएगा ?

(ii) जन्म काल का ठीक से ज्ञान न हो या लग्न सन्धिगत हो तो यथार्थ लग्न के निर्णय की क्या पद्धति है ?

-श्री लीलानन्द शर्मा शास्त्री
मु. चरैण, डा. बल्देयां (शिमला)

समस्या- (i) इससे यह विवाद शान्त नहीं हो सकता। सूर्यसिद्धान्तीय स्पष्ट सूर्य जब जातक के जन्मकालिक सूर्यसिद्धान्तीय स्पष्टसूर्य के तुल्य होगा तब सूर्यसिद्धान्तीय (स्थूल) वर्षप्रवेशकाल होगा, और सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष प्रवेशसारणी से भी यही वर्षप्रवेशकाल आएगा। वेधसिद्ध-दृक्पक्षीय स्पष्टसूर्य जब जन्मकालिक वेधसिद्ध दृक्पक्षीय स्पष्टसूर्य के तुल्य होगा, तब वेधसिद्ध दृक्पक्षीय वर्षप्रवेशकाल होगा और वेधसिद्ध वर्षप्रवेश-सारणी से भी यही काल आएगा। इस प्रकार जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के तुल्य स्पष्ट सूर्य कब होगा- यह जानने की गणित प्रक्रिया (सूर्य की दैनिक गति से त्रैराशिक) द्वारा साधित वर्षप्रवेश काल भी दोनों पक्षों से एकरूप नहीं होगा। ध्यान रहे- त्रैराशिक द्वारा सूर्यगति से वर्षप्रवेशकाल जानने की इस प्रक्रिया में जन्मकालिक और वर्षप्रवेशकालिक स्पष्ट सूर्य-दोनों एक ही पक्ष (सूर्यसिद्धान्तीय या दृक्पक्षीय) हों- यह जरूरी है। अन्यथा इस गणितप्रक्रिया से जाना गया वर्षप्रवेशकाल न तो सूर्यसिद्धान्तीय ही होगा और न ही दृक्पक्षीय।

क्योंकि वेधयन्त्रों से सतत वेध द्वारा यह निश्चित हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष-मान में अशुद्धि है। वह वास्तविक वर्षमान से लगभग ३$\frac{1}{2}$ मिनट अधिक है। अतः शुद्ध वर्षप्रवेशकाल के ज्ञान के लिए वेधसिद्ध वर्षप्रवेशसारणी का ही प्रयोग करना चाहिए।

(ii) जन्मकाल अनिश्चित हो या लग्न दो राशियों के लगभग संगम पर आ पड़े तो लग्न का निर्णय जातक शिशु की आकृति, वर्ण आदि के आधार पर करने का दैवज्ञ प्रयत्न करते हैं। फलादेश में अनेकत्र व्यभिचार पाया जाता है, अतः लग्ननिर्णय की यह पद्धति विश्वसनीय नहीं है। दो राशियों की सन्धि पर लग्न की स्थिति होने पर **गणित द्वारा उसकी यथार्थ राशि का निर्णय करने में गणक को कैसी-कैसी असमाधेय समस्याओं का सामना करना पड़ता है- इसका विस्तृत विवेचन अग्रिम वर्ष के पंचांग में दिया जाएगा।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल को ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तब वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्र॰ से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"**लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।**" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाद जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पाया कटा टूटा जानना।

दो० मीन-मिथुन-सिंह-तुला मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल।।

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानू तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।''

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही ''ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥'' इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥''

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियघर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥''

मूकयोग-''पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।''

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निलसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूति-लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर,उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया,गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे । ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४ , बालक जन्मते ही छींका , नाल छुटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों कें प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या- माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, या शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहीं दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तब वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्र. से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवा, बारहवां स्थान पाद जानना. इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

[illegible] तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल॥

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानू तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥"

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियघर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥"

मूकयोग-"पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।"

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न)का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे- शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो,वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है,तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है. इसलिए आयु का प्रथम विचार करे. फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगा:-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक)योगा:-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगा:--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुम:-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगा:-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै गह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १०॥ दो० धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोग:-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:-- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोग:--**चौपाई**- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा....कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाभिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव भास:-कार्तिक में स्त्री,भाद्रपद में गौ,मार्गशीर्ष में हथनी,श्रावण में गधी व घोड़ी,माघ में भैंस,ज्येष्ठ में बिल्ली,बैसाख में ऊँटनी,पौष में बकरी,चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस,श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल:-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को,लड़का पिता को भय,धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं,कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न,तीन वस्त्र,तीन धातु(सोना,चांदी,तांबा)दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट,ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चुतुर्थ में भाई नष्ट,पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट,छठे में बहुभोग,सातवें में पितृ सुख,आठवें में पुष्टि,९वें में धनो, १०वें में सुख,११वें में सुख,१२वे में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फल :--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता -पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना-(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।
(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है, यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना-(१)जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।
(३)लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें - शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।
(४)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।
(५)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना-(१)जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का ६ मास अथवा २७ दिन तक [illegible]
चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाशः	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है, एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरंभवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥यथा सर्पविषंचैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें [illegible] दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू. ज्ये. पिता को भय	मू. श्ले. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु-हानि	फल

[illegible] अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्-मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्–रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ मातृसुखनाश योगा :-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पायुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो - इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा - (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगा:- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : -भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशुहै पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्र॥ रवि कुज गुरु तिथि [illegible] चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार॥

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना:	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	यात्रा	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	अन्नलाभ.	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभे	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौम:	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	धननाश
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश:	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु:	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक
केतु:	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशे:
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणय:

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहिम्	वैदूर्यम्	लाजवर्तं	लाजवर्तं

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नाकदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेन और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूते बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है । संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टा:- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो न: सुतानिव॥'' इत्यस्य जप:. ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति: ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि: । रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १ ॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रात:-सङ्गव मध्याह्न सायाह्नेषु च सन्ध्ययो: ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३ ॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४ ॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम्

अथ बाल पूतना विधान- यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्नान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना। तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराना तदनन्तर '' ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्षं'' इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान स्पर्श पूर्वक यह मंत्र पढ़ें- '' ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। प्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥ ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय रोदय, स्फोटय स्फोटय स्वाहा। गर्ज २ सः गृहाण गृहाण आमर्दय २ ह्रीम् ह्रीम्, हन हन एवं सिद्धि रुद्रो ज्ञापय स्वाहा॥ इति रक्षामंत्रः॥

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहबान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फुल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष मे पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआटे केसतिए१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन,गाभृग,साप का कांचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पौली, सांय,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पूडियाँ, सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे।	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठ:ठ: चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठ:ठ:स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई ,५सुहाली ,७पुड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूडियाँ, सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूँ की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापडी, सुहाली उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशमदिन मास वर्ष में में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्दशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प,२५ दीपक,२५ सफेद झण्डी,२५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सूहाली ७,सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा आटा एक सेर	१३ दीपक,१३झण्डी,१३ सतिये सतिये आटे के।	सुहाली ,पूड़े ७,पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापडी, सांयकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय२ मर्दय२ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टाना ह्रां हुं स्वाहा	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायत्वेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायेति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राग्यदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
उ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदैति मन्त्र	भैंसे को कमल के फूल खिलायें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिगति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौघृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
उ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नादान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
उ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शनि-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट -

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२।७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हाँ, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	ह.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है। रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	धृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद.न
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय ''खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा-'' इस मंत्र का उच्चारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रह कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्था:												जप संख्या	जपनीय-मंत्रा:	दान समय	हवन-समिध:
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	ॐ मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठ) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोंकित बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठ) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दही - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार:-सफेद गुलाब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वय भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार:- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठ) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुध शान्ति का सरल उपचारः- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना. कांसी के बर्तन में भोजन. बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरूवार से आरम्भ करें. तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरूवार व्रत करें. उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरूवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है. धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना. सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचारः- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल . सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना. शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे. व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९. या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल. काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग). गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ. पंजीरी. कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र. कंबल उड़द तथा दंगी जूता. तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचारः- घर के परदे, जूते. जुराब. घड़ी का पट्टा. रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल. दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा. मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी. मुरमा. तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचारः- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् ॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़. देवदारू, मुलेटी, लाल फूल. केसर. पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी. श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल. सौंफ. सुरमा. अमलबेत. सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू. सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें. तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शन्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई). कूट. खिलां, कांगनी. जौं. सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सर्वतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु; वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता. जप. दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥ १ ॥ वृहत्कल्याणी फलम् . . . . राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रमाकृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥ २ ॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.

अष्टगंध- अगर. कस्तूरी. कुकुम कर्पूर. चन्दन. टोपीदार लौंग. गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप- अगर. छरीला. जटामासी. कर्पूर-कचरी. गुग्गुल. देवदारु गोमृत सफेद चन्दन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष :-

नक्षत्र वा राशि में ब और व में, व और व में कोई भेद नहीं होता। जन्मक नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरं नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च.	चे	लू	०	इ	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह घ, ञ की जगह द तथा ण की जगह पृ से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं **स्वर-विशारदैः** ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर **एव हि** ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ **ग्रहगोचरे** ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां **व्यवहारके** ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते **स्वरोदये**। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। **सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते** ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। **काकभाकृचिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा** ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णय-वैश्यप्रान्त्याधिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण के १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥

हीडा कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या ॥

रते तुला तो ना य वृश्चिक ये घफढभे धनुः ॥

भोजा खगी मकरः गुशदः कुम्भः दीथझञचा मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचो का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्टा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुध शान्ति का सरल उपचारः- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावें। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करना है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचारः- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल, सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल उड़द तथा दंगी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचारः- घर के पर्दे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचारः- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शन्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सर्त्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुरत्रं कुर्यादिमां सर्वदा॥ १॥ **बृहत्कल्याणी फलम्** .... राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं मौख्यं च साधारणम्, गमाकद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौं ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.

अष्टगंध- अगर, कस्तूरी, कुंकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामांसी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोमूत्र सफेद चन्दन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	चे	लू	०	इ	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेष :-

नक्षत्र वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरं नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह ग, ञ की जगह द तथा ण की जगह पृ से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्म राशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाममाकृचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णय-वैश्वप्रान्त्याघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानें। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करें, उसको श्रवण के १-१ चरण मानें। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू, ल, अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माट सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या ॥
रतं तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः ॥
भोजा खागो मकरः गुशदः कुम्भः दोथझञची मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०८५ वि.)

राशि	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	राशि	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जून तक)	राशि	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	स्थानान्तरण यात्रा हो, कष्टभय , सन्तान से कष्ट आय से व्यय अधिक, स्त्री सुख लेकिन मन चिन्तित । ता. अप्रै. १५,१६,२६,२७ मई २,३,४,१२,१३ अशुभ।	मेष	शरीर रोगी, द्रव्य हानि, सन्तान हेतु व्यय अधिक, स्त्री सुख, राजकोप, ता. अप्रै. १४. २१,२२,२९,३०,३१ जून ८,९,१० अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, आर्थिक चिन्ता, उत्साह वृद्धि, नई योजना शत्रु बढ़े, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जून १७,१८,१९,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
वृष	सम्पत्ति विवाद, निजीजनों से अनबन, धनलाभ कारोबार अच्छा, मासान्त में हानिभय। ता. अप्रै. १७,१८,१९,२६,२७, मई ४,५,६ अशुभ।	वृष	क्रोध अधिक, अर्थ हानि, सम्पत्ति विवाद, सन्तति कष्ट, कारोबार ठीक। ता. मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२ ११,१२ अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, अर्थ हानि, निजीजन विरोध, सम्पत्ति सुख,सन्तान हेतु विशेष खर्च,स्त्री पक्ष से चिन्ता। ता. जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८, ; अशुभ।
मिथुन	उत्साह बढ़े, कार्य हानि भय, कारोबार में वृद्धि, मास मध्य में विशेष व्यय, लाभ व्यय समान, शिक्षा में बाधा। अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	मिथुन	वायु रोग, अर्थ हानि, निजीजनों से मेल, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता,कारोबार में हानि। मई १७,१८,२५,२६, जून ३,४,५,१३,१४ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, गुप्त चिन्ता, धन लाभ, भ्रातृ सुख, नई योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार गड़बड़ । जुन २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ।
कर्क	सेहत गड़बड़, शासन से लाभ, वाहन सुख, सन्तति सुख, स्त्री पक्ष से धन लाभ । अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	कर्क	वायु विकार, नेत्र व शिर पीड़ा, निजीजानों से मन मुटाव, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। मई. १९,२०,२७,२८,२९, जून ६,७ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धन लाभ, भ्रातृ सुख, सन्तति कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जून १५,१६,१७,२४,२५, जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।
सिंह	उदद विकार, निजीजनों से अनबन, स्त्री सुख, कारोबार ठीक अप्रै. १५, १६, २६, २७, मई २, ३, ४, १२, १३, अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, भ्रातृ कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार गड़बड़। मई १४,२१,२२,२९,,३०, ३१, जून ८,९,१० अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धन लाभ, भ्रातृ सुख, सन्तति कष्ट, नीच से भय, कार्यान्तर से लाभ। जून १७,१८,१९ ,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
कन्या	धन हानि, शत्रु बढ़े, यात्रा में कष्ट, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार , स्त्री कष्ट, कारोबार पहले से अच्छा। अप्रै. १७,१८,१९,२६,२७, मई ४,५,६ अशुभ।	कन्या	वायु विकार, लाभ होने पर भी हानिभय, स्त्री कष्ट, वृथा विवाद से बचें । मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२,११,१२ अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धन लाभ, नीजीजन विरोध, सन्तान से सुख, शत्रु प्रबल स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार। जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८,९ अशुभ।
तुला	मन अशान्त, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक। अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	तुला	गुप्त चिन्ता, घरेलू झंझट, सन्तति सुख, शत्रु अधिक बढ़े , स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार । मई १७, १८, २५, २६. जून ३,४,५,१३,१४, अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, अर्थ हानि भय, निजीजन सुख, वृथा कलह, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में हानि। जून २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ
वृश्चिक	सेहत ठीक, मित्रों से मदद, सन्तति कष्ट, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर से लाभ। अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	वृश्चिक	वायु रोग, भ्रातृकष्ट, बन्धु सुख, सन्तान से कष्ट, नई योजना से हानि। तारीख मई १९, २०, २७, २८, २९, जून ६,७ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत गडबड़, धन लाभ, उत्साह बढ़े, क्रोध बढ़े, सन्तति सुख, स्त्री रोग, कारबार कुछ ठीक । जून १५,१६,१७,२४,२५, जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।
धनु	उत्साह बढ़े , सम्पत्ति विवाद, नई योजना, अशुभ समाचार, हिस्सेदारी में झगड़ा। अप्रै. १५,१६,२६,२७, मई २,३,४,१२,१३ अशुभ	धनु	धन लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजनों से सहयोग, जमीन जायदाद संबन्धी विवाद। मई १४,२१,२२,२९,३०,३१, जून ८,९,१० अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, अर्थ हानि, भ्रातृ सुख, सन्तान पक्ष से कष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। जून १७,१८,१९,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
मकर	धन हानि, निजीजन विरोध, पुराना मसला हल हो, स्त्री सुख, कारोबार में मन न लगे। अप्रै. १७,१८,१९,२६,२८ मई ४,५,६ अशुभ।	मकर	उदर विकार, नई योजना से लाभ, गुप्त चिन्ता, अपमान भय, स्त्री से कष्ट । मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२,११,१२ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, निजीलोगों से अनबन, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु हतप्रभ। जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८,९ अशुभ।
कुम्भ	कारोबार में अड़चनें, लाभ होकर हानि, निजीजनों से सहयोग, अपमान भय, कार्यान्तर से लाभ अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु परास्त, कारोबार की चिन्ता। मई १७,१८, २५, २६, जून ३,४,५,१३,१४ अशुभ।	कुम्भ	वायु पित्त विकार, धन लाभ, निजीजनों से सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, मासान्त में लाभ। जून २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ।
मीन	वायु पित्त विकार , धन लाभ, शत्रु कमजोर स्त्री सुख, कारोबार कमजोर । अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	मीन	शिर व नेत्र पीड़ा, अर्थ हानि, निजीजनों से असहयोग, विद्या पक्ष कमजोर, स्त्री सुख। मई १९,२०,२७,२८,२९, जून ६,७ अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, आय से व्यय अधिक, यात्रा में कष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार । जून १५,१६,१७,२४,२५. जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५५ वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)	राशि	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सिंत. तक)	राशि	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, भ्रातृ सुख, घरेलू झंझट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। जुलाई १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	मेष	उदर विकार, अर्थ लाभ होकर हानि हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता सांझेदारी में हानिभय।अग. १९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	मेष	वायु रोग, आय से व्यय अधिक, निजी लोगों से अनबन, यात्रा मे भय, गुप्त चिन्ता-कारोबार गड़बड़ । सितं १६,१७,२६,२७ अक्तुबर ५,६,१३,१४ अशुभ।
वृष	शिर व उदर विकार, अर्थ लाभ, निजीजन कष्ट, सम्पत्ति विवाद, स्त्री चिन्ता, कारोबार कमजोर। जुलाई १७,१८,२५,२६,२७, अग. ४,५,६,१३,१४अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, निजीजनों से अनबन,यात्रा में कष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख। अग. २२,२३, सितं. १,२,९,१०, अशुभ।	वृष	सेहत मध्यम, अर्थ हानि, भ्रातृ कष्ट सन्तति चिन्ता मासान्त में लाभ होकर हाथ से निकले। सितं. १८,१९,२०,२८,२९,३०, अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थ हानि उत्साह गिरे, बन्धु कष्ट, असफल योजना, स्त्री सुख, कारोबार ठीक जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग. ७, ८, १५ अशुभ।	मिथुन	वायु रोग, अर्थ लाभ, असफल योजना, आय से व्यय अधिक, कारेबार गड़बड़। अग. १६,२४,२५,२६, सितं. ३, ४, ११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	मन चिन्तित, अर्थ हानि, घरेलू झंझट, वृथा विवाद से बचें, सितारा कमजोर। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
कर्क	वायु विकार, अर्थ हानि, निजीजनों से अनबन विद्या वा नई योजना में असफलता, अपमान भय । जुला.२१, २२, ३०,३१, अग. १,९,१० अशुभ।	कर्क	शरीर कष्ट, बन्धु से अनबन, सन्तति सुख, कारोबार कमजोर, स्त्री सुख। अग. १७,१८,१९,२७,२८, सितं. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	कर्क	वायु विकार, निजीजन कष्ट , यात्रा हो, शत्रु शिर उठाएं, कार्यान्तर से लाभ, नया कार्य न करें। सितं. २३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२ अशुभ।
सिंह	क्रोध बढ़े, धनलाभ, घरेलू झंझट, सन्तान सुख, कार्यान्तर से लाभ। जुलाई १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अचानक धन हानिभय, बन्धु कष्ट, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु प्रबल। अग. १९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	सिंह	खर्च विशेष, मित्र कष्ट, अपमान भय, कारोबार कुछ ठीक, क्रोध बढे, मंगल-शनि दान से कल्याण। सितं. १६,१७,२६,२७, अक्तू. ५,६,१३,१४ अशुभ।
कन्या	वायु विकार, अर्थ हानि भय, राजभय अच्छे लोगों से मेल, सन्तान पक्ष से चिन्ता । जुला. १७,१८,२५,२६,२७, अगस्त ४,५,६,१३,१४ अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, अर्थ हानि, भ्रातृ सुख, मित्रों से अनबन, अच्छे लोगों से मेल । अग. २२, २३, सितं. १,२,९,१० अशुभ।	कन्या	उदर विकार, व्यापार में हानि, कर्जा बढ़े, कारोबार में रुकावट, अचानक सहयोग से लाभ। सितं. १८,१९,२०,२८,२९,३०, अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
तुला	पित्त विकार, रोगभय, कर्जा शिर चढे, निजी लोगों से मदद, कारोबार कुछ ढीला । जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग. ७,८,१५ अशुभ।	तुला	उदर विकार, धन लाभ, घरेलू झंझट, बन्धु सुख, शत्रु बढे , स्त्री कष्ट, कारोबार गड़बड़। अग. १६,२४,२५,२६, सितं. ३,४,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझट बढ़े, सट्टे में हानि, यात्रा सुख, सन्तान कष्ट। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
वृश्चिक	उदर विकार, धन लाभ, निजीलोगों से अनबन, नई योजना, स्त्रीकष्ट। जुला. २१, २२, ३०, ३१, अग. १, ९, १० अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति गड़बड़, निजीजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर। अग. १७,१८,१९,२७,२८ सितं ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, सम्पत्ति विवाद, नई योजना, स्त्री सुख,कारोबार में हानि। सितं.२३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, बन्धुसुख, असफल योजना, कारोबार कुछ ठीक, स्त्री चिन्ता। जुला. १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	धनु	नेत्र व शिर पीड़ा, अर्थ लाभ, बन्धु कष्ट, नई योजना, कारोबार गड़बड़। अग.१९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	धनु	वायु विकार, निजीजनों से अनबन, वृथा व्यय, स्त्री कष्ट, वायदा व्यापार से लाभ । सितं. १६,१७,२६,२७, अक्तू. ५,६,१३,१४ अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, अर्थहानि भय, बन्धु कष्ट, व्यापार में हानि, शनि यंत्र धारण करें । जुला.१७,१८,२५,२६,२७, अग. ४,५,६,१३,१४ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक , हाथ तंग रहे, वृथा विवाद से बचें, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार। अग. २२,२३, सितं. १,२,९,१०अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, निजीजनों से मदद स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। सितं. १८,१९,२०,२८, २९,३० अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
कुम्भ	वायु विकार, कर्जा चढ़े, घरेलू झंझट, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग.७,८,१५ अशुभ।	कुम्भ	नेत्र कष्ट, वृथा विवाद से बचें, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। अग. १६,२४,२५,२६, सिंत ३,४,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	मन अशान्त, वृथा व्यय, असफल योजना, स्त्री, चिन्ता, कारोबार गड़बड़। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
मीन	कफ वायु विकार, धन हानि वृथा व्यय, शत्रु बढ़े, मासान्त में लाभ मिले। जुला. २१,२२,३०,३१, अग. १,९,१० अशुभ।	मीन	वायु रोग, वृथा व्यय, सन्तान पक्ष से चिन्ता स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अग. १७,१८,१९,२७,२८, सितं. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, धन लाभ, स्त्री सुख, कारोबार में कुछ परिवर्तन से लाभ, मासान्त में आय से व्यय आधिक। सितं. २३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२, अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०६८ वि.)

राशि	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	राशि	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जून तक)	राशि	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	स्थानान्तरण यात्रा हो, कष्टभय , सन्तान से कष्ट आय से व्यय अधिक, स्त्री सुख लेकिन मन चिन्तित । ता. अप्रै. १५,१६,२६,२७ मई २,३,४,१२,१३ अशुभ।	मेष	शरीर रोगी, द्रव्य हानि, सन्तान हेतु व्यय अधिक, स्त्री सुख, राजकोप, ता. अप्रै. १४, २१,२२,२९,३०,३१ जून ८,९,१० अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, आर्थिक चिन्ता, उत्साह वृद्धि, नई योजना शत्रु बढ़े, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जून १७,१८,१९,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
वृष	सम्पत्ति विवाद, निजीजनों से अनबन, धनलाभ करोबार अच्छा, मासान्त में हानिभय। ता. अप्रै. १७,१८,१९,२६,२७, मई ४,५,६ अशुभ।	वृष	क्रोध अधिक, अर्थ हानि, सम्पा त विवाद, सन्तति कष्ट, कारोबार ठीक। ता. मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२ ११,१२ अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, अर्थ हानि, निजीजन विरोध, सम्पत्ति सुख,सन्तान हेतु विशेष खर्च,स्त्री ाक्ष से चिन्ता। ता. जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८, ; अशुभ।
मिथुन	उत्साह बढ़े, कार्य हानि भय, कारोबार में वृद्धि, मास मध्य में विशेष व्यय, लाभ व्यय समान, शिक्षा में बाधा। अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	मिथुन	वायु रोग, अर्थ हानि, निजीजनों से मेल, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता,कारोबार में हानि। मई १७,१८,२५,२६, जून ३,४,५,१३,१४ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, गुप्त चिन्ता, धन ल भ, भ्रातृ सुख, नई योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार गड़बड़ । जून २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ।
कर्क	सेहत गड़बड़, शासन से लाभ, वाहन सुख, सन्तति सुख, स्त्री पक्ष से धन लाभ । अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	कर्क	वायु विकार, नेत्र व शिर पीड़ा, निजीजानों से मन मुटाव, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। मई, १९,२०,२७,२८,२९, जून ६,७ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धन लाभ, भ्रातृ सुख, सन्तति कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जून १५,१६,१७,२४,२५, जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।
सिंह	उदद विकार, निजीजनों से अनबन, स्त्री सुख़, कारोबार ठीक अप्रै. १५, १६, २६, २७, मई २, ३, ४, १२, १३, अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, भ्रातृ कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार गड़बड़। मई १४,२१,२२,२९,,३०, ३१, जून ८,९,१० अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, धन लाभ, भ्रातृ सुख, सन्तति कष्ट, नीच से भय, कार्यान्तर से लाभ। जून १७,१८,१९ ,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
कन्या	धन हानि, शत्रु बढ़े, यात्रा में कष्ट, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार , स्त्री कष्ट, कारोबार पहले से अच्छा। अप्रै. १७,१८,१९,२६,२७, मई ४,५,६ अशुभ।	कन्या	वायु विकार, लाभ होने पर भी हानिभय, स्त्री कष्ट, वृथा विवाद से बचें । मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२,११,१२ अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धन लाभ, नीजीजन विरोध, सन्तान से सुख, शत्रु प्रबल स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार। जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८,९ अशुभ।
तुला	मन अशान्त, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक। अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	तुला	गुप्त चिन्ता, घरेलू झंझट, सन्तति सुख, शत्रु अधिक बढ़े , स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार । मई १७, १८, २५, २६, जून ३,४,५,१३,१४, अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, अर्थ हानि भय, निजीजन सुख, वृथा कलह, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में हानि। जून २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ
वृश्चिक	सेहत ठीक, मित्रों से मदद, सन्तति कष्ट, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर से लाभ। अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	वृश्चिक	वायु रोग, भ्रातृकष्ट, बन्धु सुख, सन्तान से कष्ट, नई योजना से हानि। तारीख मई १९, २०, २७, २८, २९, जून ६,७ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत गडबड़, धन लाभ, उत्साह बढ़े, क्रोध बढ़े, सन्तति सुख, स्त्री रोग, कारेबार कुछ ठीक । जून १५,१६,१७,२४,२५, जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।
धनु	उत्साह बढ़े , सम्पत्ति विवाद, नई योजना, अशुभ समाचार, हिस्सेदारी में झगड़ा। अप्रै. १५,१६,२६,२७, मई २,३,४,१२,१३ अशुभ	धनु	धन लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजनों से सहयोग, जमीन जायदाद संबन्धी विवाद। मई १४,२१,२२,२९,३०,३१, जून ८,९,१० अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, अर्थ हानि, भ्रातृ सुख, सन्तान पक्ष से कष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। जून १७,१८,१९,२६,२७, जुलाई ६,७,१५ अशुभ।
मकर	धन हानि, निजीजन विरोध, पुराना मसला हल हो, स्त्री सुख, कारोबार में मन न लगे। अप्रै. १७,१८,१९,२६,२८ मई ४,५,६ अशुभ।	मकर	उदर विकार, नई योजना से लाभ, गुप्त चिन्ता, अपमान भय, स्त्री से कष्ट । मई १४,१५,१६,२३,२४, जून १,२,११,१२ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, निजीलोगों से अनबन, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु हतप्रभ। जून १९,२०,२१,२८,२९,३०, जुलाई ८,९ अशुभ।
कुम्भ	कारोबार में अड़चनें, लाभ होकर हानि, निजीजनों से सहयोग, अपमान भय, कार्यान्तर से लाभ अप्रै. १९,२०,२१,२८,२९, मई ७,८,९ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु परास्त, कारोबार की चिन्ता। मई १७,१८, २५, २६, जून ३,४,५,१३,१४ अशुभ।	कुम्भ	वायु पित्त विकार, धन लाभ, निजीजनों से सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, मासान्त में लाभ। जून २२,२३, जुलाई १,२,१०,११,१२ अशुभ।
मीन	वायु पित्त विकार , धन लाभ, शत्रु कमजोर स्त्री सुख, कारोबार कमजोर । अप्रै. १३,१४,२२,२३,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	मीन	शिर व नेत्र पीड़ा, अर्थ हानि, निजीजनों से असहयोग, विद्या पक्ष कमजोर, स्त्री सुख। मई १९,२०,२७,२८,२९, जून ६,७ अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, आय से व्यय अधिक, यात्रा में कष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार । जून १५,१६,१७,२४,२५, जुलाई ३,४,५,१२,१३,१४ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५५ वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)	राशि	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सिंत. तक)	राशि	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, भ्रातृ सुख, घरेलू झंझट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। जुलाई १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	मेष	उदर विकार, अर्थ लाभ होकर हानि हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता सांझेदारी में हानिभय।अग. १९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	मेष	वायु रोग, आय से व्यय अधिक, निजी लोगों से अनबन, यात्रा मे भय, गुप्त चिन्ता-कारोबार गड़बड़ । सितं १६,१७,२६,२७ अक्तुबर ५,६,१३,१४ अशुभ।
वृष	शिर व उदर विकार, अर्थ लाभ, निजीजन कष्ट, सम्पत्ति विवाद, स्त्री चिन्ता, कारोबार कमजोर। जुलाई १७,१८,२५,२६,२७, अग. ४,५,६,१३,१४अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, निजीजनों से अनबन,यात्रा में कष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख। अग. २२,२३, सितं. १,२,९,१०, अशुभ।	वृष	सेहत मध्यम, अर्थ हानि, भ्रातृ कष्ट सन्तति चिन्ता मासान्त में लाभ होकर हाथ से निकले। सितं. १८,१९,२०,२८,२९,३०, अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, अर्थ हानि उत्साह गिरे, बन्धु कष्ट, असफल योजना, स्त्री सुख, कारोबार ठीक जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग. ७, ८, १५ अशुभ।	मिथुन	वायु रोग, अर्थ लाभ, असफल योजना, आय से व्यय अधिक, कारोबार गड़बड़। अग. १६,२४,२५,२६, सितं. ३, ४, ११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	मन चिन्तित, अर्थ हानि, घरेलू झंझट, वृथा विवाद से बचें, सितारा कमजोर। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
कर्क	वायु विकार, अर्थ हानि, निजीजनों से अनबन विद्या वा नई योजना में असफलता, अपमान भय । जुला.२१, २२, ३०,३१, अग. १,९,१० अशुभ।	कर्क	शरीर कष्ट, बन्धु से अनबन, सन्तति सुख, कारोबार कमजोर, स्त्री सुख। अग. १७,१८,१९,२७,२८, सितं. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	कर्क	वायु विकार, निजीजन कष्ट , यात्रा हो, शत्रु शिर उठाएं, कार्यान्तर से लाभ, नया कार्य न करें। सितं. २३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२ अशुभ।
सिंह	क्रोध बढ़े, धनलाभ, घरेलु झंझट, सन्तान सुख, कार्यान्तर से लाभ। जुलाई १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अचानक धन हानिभय, बन्धु कष्ट, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु प्रबल। अग. १९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	सिंह	खर्च विशेष, मित्र कष्ट, अपमान भय, कारोबार कुछ ठीक, क्रोध बढे, मंगल-शनि दान से कल्याण। सितं. १६,१७,२६,२७, अक्तू. ५,६,१३,१४ अशुभ।
कन्या	वायु विकार, अर्थ हानि भय, राजभय अच्छे लोगों से मेल, सन्तान पक्ष से चिन्ता । जुला. १७,१८,२५,२६,२७, अगस्त ४,५,६,१३,१४ अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, अर्थ हानि, भ्रातृ सुख, मित्रों से अनबन, अच्छे लोगों से मेल । अग. २२, २३, सितं. १,२,९,१० अशुभ।	कन्या	उदर विकार, व्यापार में हानि, कर्जा बढ़े, कारोबार में रुकावट, अचानक सहयोग से लाभ। सितं. १८,१९,२०,२८,२९,३०, अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
तुला	पित्त विकार, रोगभय, कर्जा शिर चढे, निजी लोगों से मदद, कारोबार कुछ ढीला । जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग. ७,८,१५ अशुभ।	तुला	उदर विकार, धन लाभ, घरेलू झंझट, बन्धु सुख, शत्रु बढे , स्त्री कष्ट, कारोबार गड़बड़। अग. १६,२४,२५,२६, सितं. ३,४,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	आय से व्यय अधिक, घरेलू झंझट बढ़े, सट्टे में हानि, यात्रा सुख, सन्तान कष्ट। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
वृश्चिक	उदर विकार, धन लाभ, निजीलोगों से अनबन, नई योजना, स्त्रीकष्ट। जुला. २१, २२, ३०, ३१, अग. १, ९, १० अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति गड़बड़, निजीजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर। अग. १७,१८,१९,२७,२८ सितं ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, सम्पत्ति विवाद, नई योजना, स्त्री सुख,कारोबार में हानि। सितं.२३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, बन्धुसुख, असफल योजना, कारोबार कुछ ठीक, स्त्री चिन्ता। जुला. १६,२३,२४,२५, अग. २,३,११,१२ अशुभ।	धनु	नेत्र व शिर पीड़ा, अर्थ लाभ, बन्धु कष्ट, नई योजना, कारोबार गड़बड़। अग १९,२०,२१,२९,३०,३१, सितं. ७,८ अशुभ।	धनु	वायु विकार, निजीजनों से अनबन, वृथा व्यय, स्त्री कष्ट, वायदा व्यापार से लाभ । सितं. १६,१७,२६,२७, अक्तू. ५,६,१३,१४ अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, अर्थहानि भय, बन्धु कष्ट, व्यापार में हानि, शनि यंत्र धारण करें । जुला.१७,१८,२५,२६,२७, अग. ४,५,६,१३,१४ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक , हाथ तंग रहे, वृथा विवाद से बचें, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर का विचार। अग. २२,२३, सितं. १,२,९,१०अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, निजीजनों से मदद स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। सितं. १८,१९,२०,२८, २९,३० अक्तू. ७,८,१५,१६ अशुभ।
कुम्भ	वायु विकार, कर्जा चढ़े, घरेलू झंझट, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। जुला. १७,१८,२८,२९,३०, अग.७,८,१५ अशुभ।	कुम्भ	नेत्र कष्ट, वृथा विवाद से बचें, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। अग. १६,२४,२५,२६, सिंत ३,४,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	मन अशान्त, वृथा व्यय, असफल योजना, स्त्री, चिन्ता, कारोबार गड़बड़। सितं. २१,२२,३०, अक्तू. १,२,९,१० अशुभ।
मीन	कफ वायु विकार, धन हानि वृथा व्यय, शत्रु बढ़े, मासान्त में लाभ मिले। जुला. २१,२२,३०,३१, अग. १,९,१० अशुभ।	मीन	वायु रोग, वृथा व्यय, सन्तान पक्ष से चिन्ता स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अग. १७,१८,१९,२७,२८, सितं. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, धन लाभ, स्त्री सुख, कारोबार में कुछ परिवर्तन से लाभ, मासान्त में आय से व्यय आधिक। सितं. २३,२४,२५, अक्तू. ३,४,११,१२, अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५५ वि.)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तू. से १५ नवं तक)	राशि	मार्गशीर्ष (१६ नवं. से १४ दिसं. तक)	राशि	पौष (१५ दिसं से १३ जन. १९९९ ई तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, सम्पत्ति विवाद, सन्तान हेतु खर्च, स्त्री कष्ट, कारोबार यथावत। अक्तू. २३,२४, नवं. १,२,९,१०,११ अशुभ।	मेष	क्रोध बढ़े, रचना कार्य, जायदाद लाभ, शत्रु कमजोर, कार्यान्तर से लाभ। नवं. १९,२०,२१,२९,३०, दिसं ७,८ अशुभ।	मेष	वैभव में मन लगे, फिजूल खर्ची हो, निजीजनों से सहयोग, असफल योजना, कार्यान्तर से लाभ। दिसं. १६,१७,१८,२६,२७, जन.(१९९९ ई.) ३,४,१३ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हाथ से निकले, निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रबल। अक्तू १७,२५,२६,२७, नवं. ३,४,१२,१३ अशुभ।	वृष	उदर विकार, भ्रातृ कष्ट, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति चिन्ता, कारोबार में रुकावट। नवं. २२,२३, दिसं.१,२,९,१० अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, धन लाभ, बन्धु कष्ट, गुप्त चिन्ता, अचानक मदद मिले। दिसं. १९,२०,२८,२९, जन.(१९९९ ई.) ६,७ अशुभ।
मिथुन	सेहत गड़बड़, उत्साह बढ़े, असफल योजना, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक। अक्तू. १८,१९,२८,२९, नवं. ५,६,१४,१५ अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धु कष्ट, सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। नवं. १६,२४,२५, दिसं. ३,४,११,१२ अशुभ।	मिथुन	वायु विकार, घरेलु विवाद, सन्तान सुख, स्त्री पक्ष से विवाद, कार्यान्तर का विचार। दिसं.१३,२१,२२,२३,३०,३१, जन. (१९९९ ई.) ८,९ अशुभ।
कर्क	सेहत कमजोर, राजभय, घरेलु झंझट, मन परेशान, कारोबार ठीक। अक्तू. २०, २१, २२, ३०, ३१, नवं. ७, ८ अशुभ।	कर्क	सेहत गड़बड़, व्यवसाय में लाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, नवं.१६,१७,१८,२६,२७,२८, दिसं. ४,५,६,१४ अशुभ।	कर्क	सेहत मध्यम, अर्थ हानि भय, शत्रु कमजोर, वृथा विवाद से बचे, कारोबार कमजोर।, दिसं.१५,२३,२४,२५, जन. (१९९९ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।
सिंह	शिर व नेत्र कष्ट, निजीजन कष्ट, अपमान भय, कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. २३, २४, नवं. १,२, ९, १०, ११ अशुभ।	सिंह	वायु विकार, कर्जा बढ़े, निजीजन सहयोग, बन्धु सुख, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर, नवं. १९,२०,२१,२९, ३०, दिसं.७,८ अशुभ।	सिंह	मन परेशान, नई योजना से लाभ, स्त्री सुख, मासान्त में लाभ। दिसं. १६,१७,१८,२६,२७, जन. (१९९९ई.) ३,४,१३ अशुभ।
कन्या	वायु विकार, अर्थ हानि, शत्रु प्रबल, कारोबार में बाधा, मासान्त में खर्च विशेष। अक्तू.१७,२५,२६,२७, नवं. ३,४,१२,१३ अशुभ।	कन्या	शरीर कष्ट, धन लाभ, यात्रा हो, नई योजना, स्त्री कष्ट,कारोबार यथावत्। नवं. २२,२३, दिसं. १,२,९,१० अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, धन लाभ, मित्रों से अनबन, कारोबार में लाभ हो, मासान्त में विशेष खर्च। दिसं. १९,२०,२८,२९ जन. (१९९९ई.) ६,७ अशुभ।
तुला	मन चिन्तित, अर्थ हानि, यात्रा में कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। अक्तू. १८,१९,२८,२९, नवं. ५,६,१४,१५ अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, धन लाभ, घरेलु झंझट, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, खुशी का समाचार मिले। नवं. १६,२४,२५, दिसं. ३,४,११,१२ अशुभ।	तुला	सेहत मध्यम, आर्थिक चिन्ता, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख कारोबार ठीक। दिसं. १३,२१,२२,२३,३०,३१ जन. (१९९९ई.) ८,९ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत साधारण, धन लाभ, मित्र कष्ट, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक, अक्तू. २०,२१,२२,३०,३१, नवं. ७,८ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत सामान्य, धन लाभ, हौसला बढ़े, घरेलु झंझट, स्त्री कष्ट, कारोबार में गिरावट, नवं. १६,१७,१८,२६,२७,२८, दिसं. ४,५,६,१४ अशुभ।	वृश्चिक	मन चिन्तित, लाभ होकर हानि भय, घरेलु झंझट, स्त्री पक्ष से हानि, कष्ट भय। दिसं. १५,२३,२४,२५, जन. (१९९९ई.) १,२,१०,११,१२ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, वृथा व्यय, निजीजन विरोध, योजना से लाभ, वायदा व्यापार में हानि। अक्तू. २३,२४, नवं. १,२,९,१०,११अशुभ।	धनु	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, पुराने झंझट, सन्तान सुख, कारोबार में हानि से चिन्ता। नवं. १९,२०,२१,२९,३०, दिसं. ७,८ अशुभ।	धनु	उदर विकार, अर्थ लाभ, अच्छे लोगों से मेल,स्त्री सुख, कारोबार में रूकावट। दिसं. १६,१७,१८,२६,२७ जन. (१९९९ई.) ३,४,१३ अशुभ।
मकर	पित्त वायु विकार, अर्थ संकट, घेरलु झंझट, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार। अक्तू. १७,२५,२६,२७, नवं ३,४,१२,१३ अशुभ।	मकर	उदर विकार, अर्थलाभ, निजीजनों से सहयोग, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। नवं. २२,२३, दिसं. १,२,९,१० अशुभ।	मकर	क्रोध बढ़े, आर्थिक चिन्ता, निजीजनों से सहयोग, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार कुछ ठीक। दिसं. १९,२०,२८,२९, जन. (१९९९ई.) ६,७ अशुभ।
कुम्भ	शरीर कष्ट, आय व्यय बराबर, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर, विशेष खर्च हो। अक्तू. १८,१९,२८,२९, नवं.५,६,१४,१५ अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, अकारण झगड़े से बचे, मासान्त में कारोबार से लाभ। नवं. १६,२४ २५, दिसं. ३,४,११,१२ अशुभ।	कुम्भ	सेहत गड़बड़, अर्थ हानि, सम्पत्ति संबन्धी झगड़े, अपमान भय,कारोबार पहले अपेक्षाकृत ठीक। दिसं. १३,२१,२२,२३,३०,३१, जन. (१९९९ई.) ८,९, अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, लाभ अच्छा, निजीजनों से अनबन, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता। अक्तू. २०,२१,२२,३०,३१, नवं. ७,८ अशुभ।	मीन	चिन्ता बढ़े, कारोबार में लाभ हो, गुप्त शत्रु से भय, मासान्त में लाभ हो। नवं.१६,१७,१८,२६,२७,२८, दिसं.४,५,६,१४ अशुभ।	मीन	वायु रोग, व्यापर में हानि, अच्छे लोगों से मदद, कार्यान्तर से लाभ, स्त्री सुख। दिसं. १५,२३,२४,२५, जन. (१९९९ई.) १,२,१०,११,१२ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५५ वि.)

राशि	माघ (१४ जन'९९ से ११ फर. तक)	राशि	फाल्गुन (१२ फर. से १३ मार्च तक)	राशि	चैत्र (१४ मार्च से १३ अप्रैल तक)
मेष	मन अशान्त, धन हानि, वृथा विवाद से बचें, भ्रातृ सुख, उलझे हुए मसले परेशान करें। जन.१४,२२,२३,३१ फर. १,९,१०,११ अशुभ।	मेष	सेहत गड़बड़, कारोबार में लाभ, घरेलु झंझट बढ़े, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख। फर. १८,१९,२०,२७,२८, मार्च ९,१०,११, अशुभ।	मेष	क्रोध बढ़े, वृथा विवाद से बचें, अर्थ हानि, कारोबार में फेरबदल, स्त्री सुख। मार्च १८,१९,२६,२७,अप्रै.५,६,अशुभ।
वृष	वायु विकार, धन लाभ, भ्रातृ कष्ट, शत्रु कमजोर, कारोबार में मन न लगे, खर्च अधिक जन १५,१६,१७,२४,२५ फर. २,३ अशुभ।	वृष	मन शान्त, मास मध्य में अर्थ हानि भय, यात्रा में कष्ट, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, फर. १२,१३,२०,२१,२२, मार्च १,२,३,११, अशुभ।	वृष	मन अशान्त, अर्थ लाभ, बन्धु सुख, यात्रा में कष्ट, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर से लाभ। मार्च १२,२०,२१,२८,२९,३०, अप्रै. ७,८,९, अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, वृथा विवाद से दूर रहे, हानि भय, असफल योजना, घरेलु झंझट बढ़े। जन. १८,१९,२६,२७,२८, फर.४,५,६, अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, धन लाभ, भ्रातृ सुख, घरेलु झंझट बढ़े, यात्रा में कष्ट, कारोबार में फेरबदल। फर. १४,१५,२३,२४,मार्च ३,४,५,१३ अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, उत्साह बढ़े, शत्रु कमजोर, मासान्त में आय से व्यय अधिक। मार्च १४,१५,२२,२३,३१, अप्रै.१,१०,११,अशुभ।
कर्क	उदर विकार, क्रोध से हानि हो, जमीन जायदाद संबंधी झगड़े, स्त्री पक्ष से अनबन। जन. २०, २१, २८, २९, ३०, फर.६,७,८ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, कारोबार से लाभ, उत्साह बढ़े, स्त्री कष्ट, आमदन से खर्च अधिक। फर.१६,१७,२५,२६, मार्च ६,७, अशुभ।	कर्क	पेट में खराबी रहे, कारोबार में नुक्सान, नई योजना से हानि, स्त्री सुख, नेत्र व सिर पीड़ा। मार्च १५,१६,१७,२४,२५, अप्रै. २,३,४,१२,१३, अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक लेकिन मन परेशान, निजी लोगों से अनबन, स्त्री लाभ, गुप्त चिन्ता, अर्थहानि जन.१४,२२, २३, ३१, फर.१, ९, १०, ११ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थ लाभ हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता,स्त्री सुख, कारोबार ठीक। फर.१८,१९,२०,२७,२८, मार्च ९,१०,११, अशुभ।	सिंह	वायु विकार, धन लाभ,निजीजन सहयोग, मित्र से अनबन, घरेलु झंझट बढ़े। मार्च १८,१९,२६,२७, अप्रै. ५,६, अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट योग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु शिर उठाएं, कारोबार कुछ ठीक। जन. १५,१६,१७,२४,२५, फर.२,३ अशुभ।	कन्या	शिर व वायु विकार, धन लाभ, बन्धु कष्ट, कारोबार गड़बड़। फर.१२,१३,२०,२१,२२, मार्च १,२,३,११, अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक,अर्थ लाभ, भ्रातृ कष्ट,सन्तान पक्ष से सुख, शत्रु प्रबल, स्त्री पक्ष से हानि। मार्च १२,२०,२१,२८,२९,३०, अप्रै ७,८,९ अशुभ।
तुला	उदर विकार, धन लाभ होकर हानि भय, जमीन जायदाद सम्बन्धी विवाद, कारोबार गड़बड़। जन. १८,१९,२६,२७,२८,फर. ४,५,६, अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थ लाभ हो, निजीजन विरोध, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट। फर.१४,१५,२३,२४, मार्च ३,४,५,१३ अशुभ।	तुला	उलझे काम बने, अर्थ हानि कर्जा बढ़े,सन्तान हेतु खर्च विशेष, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। मार्च १४,१५,२२,२३,३१, अप्रै १,१०,११,
वृश्चिक	सेहत गड़बड़, निजीजनों से विरोध, गुप्त चिन्ता, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार में बाधा। जन.२०,२१,२८,२९,३०,फर. ६,७,८ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थ हानिभय, सम्पत्ति सम्बन्धी झगड़े, असफल योजना, स्त्री सुख, फर.१६,१७,२५,२६, मार्च ६,७ अशुभ।	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, कारोबार में नुक्सान, मन अशान्त, निजीजन सहयोग,स्त्री से अनबन, कारोबार में बाधा, मार्च १५,१६,१७,२४,२५, अप्रै..२,३,४,१२,१३ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, निजीजन चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। जन. १४,२२,२३,३१, फर.१,९,१०,११, अशुभ।	धनु	क्रोध बढ़े, धन लाभ होकर हानिभय, घरेलु झंझट, वृथा कलह से बचें। फर.१८,१९,२०,२७,२८,मार्च ९,१०,११,अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, धन लाभ, वृथा व्यय, घरेलु झंझट बढ़े, असफल योजना, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, मार्च १८,१९,२६,२७, अप्रै. ५,६, अशुभ।
मकर	मानसिक परेशानी बढ़े, यात्रा में चोट भय, कारोबार की चिन्ता, असफल योजना। जन.१५,१६,१७,२४,२५,फर.२,३ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धन लाभ,उत्साह बढ़े, सन्तान पक्ष से चिन्ता,कार्यान्तर का विचार। फर. १२,१३,२०,२१,२२, मार्च १,२,३,११ अशुभ।	मकर	नेत्र व शिर पीड़ा, मित्र बन्धु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। मार्च १२,२०,२१,२८,२९,३०, अप्रै.७,८,९, अशुभ।
कुम्भ	मन परेशान, धन लाभ, बन्धु सुख, सफल योजना, कारोबार में रद्दोबदल। जन. १८,१९,२६,२७,२८, फर .४,५,६, अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, वृथा व्यय हो, बन्धु सुख, अशुभ समाचार, कारोबार ठीक रहे। फर.१४,१५,२३,२४, मार्च ३,४,५,१३ अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, जमीन जायदाद सम्बन्धी झगड़े खड़े हों, कारोबार गड़बड़, आय से व्यय अधिक। मार्च १४,१५, २२,२३, ३१, अप्रै.१,१०,११, अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, व्यापार में हानिभय, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तान पक्ष से चिन्ता। जन.२०,२१,२८,२९,३०,फर.६,७,८, अशुभ।	मीन	उदर विकार, अर्थ हानि, भ्रातृ सुख,जायदाद संबंधी झगड़े, कारोबार गड़बड़। फर. १६,१७,२५,२६, मार्च ६, ७ अशुभ ।	मीन	वायु विकार, धन लाभ हो, घेरलु झंझट बढ़े, कारोबार में रद्दोबदल का मन बने। मार्च १५,१६,१७,२४,२५, अप्रै.२,३,४,१२,१३,अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ वर्षराजादि फल विचार (सं. २०५५ वि.)

संवत् २०५५ वि. की ग्रहपरिषद् का विवेचन

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०९९, सृष्टि संवत् १९५९८८५०९९, श्री विक्रम संवत् २०५५, शक संवत् १९२०, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२३४, कलिसंवत् ५०९९, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५२३-२४, श्री बुद्ध सवत् २६२१-२६२२, हिजरी सन् १४१८-१४१९,फसली सन् १४०५-१४०६, **ईस्वी सन् १९९८-९९।**

वर्षारम्भ से गुरुमान से विष्णु विंशति का 'खर' नामक संवत्सर है ; इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है :-

''खराब्दे निखिला लोका : अन्योऽन्यं समरोत्सुकाः।
मध्यमा वृष्टिरत्युग्रैः रोगैर्यान्ति लयं नृपाः ॥''

अन्यत्र -

''स्वल्पावृष्टि : स्वल्पधान्यं खण्डवृष्टि र्नृपक्षयः।
छत्रभंगः प्रजापीड़ा खरेऽब्दे खरता जने॥''

अर्थात् - शासकों किंवा दो विरोधी देशों में सम्बन्ध कटुतर होते जाएं , कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो, भंयकर रोगों से प्रजा को कष्ट हो। किसी विशिष्ट शासक किंवा व्यक्ति - विशेष के निधन से शोक व्याप्त हो। वर्षा की कमी अनुभव हो।

किञ्च - ''खर संवत्सरे चन्द्र : स्वामी, चैत्रादि मास पंचके महतीवर्षा, सुभिक्षं 'प्रजा सुखं सर्वलोके, गुरूणां महत्त्वं , पश्चिमायां सुभिक्षम्। आश्विनेऽन्न समता, रस महर्घता, मंजिष्ठा-सुहागा- वस्तुतो मरुधरायां त्रिगुणो लाभः, म्लेच्छक्षयः, परं रोगपीडा,सर्वधान्य निष्पत्ति : , कार्तिकादि मास पंचकं मध्यमं सर्वधातुसमर्घता ॥''

इस वर्ष राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) शनि, मन्त्री चन्द्र, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) गुरु , धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) मंगल, मेघेश (मौसम वर्षा पानी के स्वामी) चन्द्र, रसेश (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) शनि, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) गुरु, फलेश (फल -फूल आदि के स्वामी) सूर्य, धनेश (धन-दौलत एवं खजाना आदि के स्वामी) बुध एवं दुर्गेश, (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी) सूर्य हैं।

इस वर्ष प्रत्येक पदाधिकारी का फल निम्नलिखित है :

(१) राजा शनि का फल -

'' शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः ।
युद्धं नृपाणां गद तस्कराद्यै र्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्॥''

अर्थात् - अपर्याप्त वर्षा से कृषक चिन्तित रहें, नानाविध रोगों से जनता में परेशानी रहे, राजनेताओं में परस्पर शक्तिपरीक्षण के कारण बने, सीमाप्रान्तों पर कहीं युद्धभय वातावरण बने, अनैतिक कार्य अधिक हों , किसी आपत्ति-विशेष के कारण जनता एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने को विवश हों।

(२) मन्त्री चन्द्र का फल-

''शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता ।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः ॥''

अर्थात् - वर्षा अधिक हो, अनाज पर्याप्त मात्रा में सुलभ हो, जनता में आनन्द मंगल रहे।

(३) सस्येश गुरु का फल -

''कणपतिः सुरराज पुरोहितः सकल सौख्यकरः श्रुतिवर्धनः
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रस-पयांसि बहूनि वसूनि च ॥ ''

अर्थात्- वेदविहित (स्व स्व-धर्मनिर्दिष्ट) मार्ग से जनता में स्नेह सद्भाव का प्रसार हो, वर्षा पर्याप्त, चारा काफी हो, घी-गुड़ खाण्ड भी सहज-सुलभ हों।

(४) धान्येश मंगल का फल -

''भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्म धान्यं महर्घकम्।
शालीक्षु धृत तैलानि महर्घाणि भवन्ति हि ॥''

अर्थात् - ग्रीष्मधान्य चावल, मक्का आदि मंहगे हों। ईख, घी , तैल में भी मंहगाई का रुख रहे।

(५) मेघेश चन्द्र का फल :-

''चन्द्रे मेघाधिपतौ सस्य द्विज सौख्य वृद्धि रतुला स्यात्।
सम्पूर्णजला पृथ्वी विद्वज्जन सम्प्रवृद्धिश्च ॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अर्थात् - धान्य वृद्धि हो, बुद्धिजीवी वर्ग को प्रोत्साहन मिले, सम्पूर्ण पृथ्वी पर जलमात्रा प्रधान रहे, विद्वान् लोगों की वृद्धि हो।

(६) रसेश शनि का फल -

"रविसुते रसपे रस संक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधरा:।
अजगवां गज-वाजि-खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युता:॥"

अर्थात् - गुड़ दूध आदि रस पदार्थों की कमी अनुभव हों, ऋतु विपर्यय किंवा वर्षा के न होने व असामयिक होने से जनता में रोग व्याप्त हो। दुधारु किंवा अन्य चतुष्पद पालतू पशुओं की रोगों से हानि हो। जनता में परस्पर स्नेह सद्भाव न रहे।

(७) नीरसेश गुरु का फल -

"हरिद्रा पीत- वस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीव: सर्वेषां प्राप्ति रुत्तमा॥"

अर्थात्- हल्दी , पीतवस्त्र, पीले रंग की चीजें सस्ती हों, प्रजा में परस्पर स्नेह सद्भाव रहे।

(८) फलेश सूर्य का फल

"द्रुमवती वर पुष्पवतीधरा प्रमुदिताफल भोग विशेषिता।
बहुजलं जलदो भुवि मुंचति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रवि:"

अर्थात - अनेकविध फलफूल और नानाविध वृक्षों से पृथ्वी सुशोभित हो। वर्षा काफी हो, कुछ भागों में वर्षा की कमी भी अनुभव हो।

(९) धनेश बुध का फल

"द्रविणपो हिमरश्मि सुतो यदा -
विविध-संग्रह वस्तु-फलार्थद:।
द्विजवरा जप यज्ञ सुसंयुता-
कृषि-विशेष-विशेषित-मानसा:॥"

अर्थात् - विविध व्यापारिक वस्तुओं के संग्रह से लाभ हो। पण्डित एवं बुद्धिमान् व्यक्ति धर्म-कर्म किंवा देशहितार्थ कार्य करें। जनता की रुचि कृषि कार्य में विशेष रहे।

(१०) दुर्गेश सूर्य का फल -

"नय विशेषकर स्तरणि यदा गतभया नरराज-पुरोगमा:।
समधिको न तदा नृपजोऽन्यज: स्व पथजं व्रजतां न भयं क्वचित्॥"

अर्थात् - शासक न्यायप्रिय हों, नीति सम्बन्धी किंवा देश में प्रगत्याधायक कार्यक्रम निर्बाध रहें। राजवंशज किंवा साधारण जन में समता, सौहार्द रहे। नियमानुसार (संविधानानुसार) कार्य करते व्यक्तियों को कोई भय न रहे।

सूचना -यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषत: राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात , नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में , रसेश का कोंकण एवं गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १७, धान्य९, तृण १७, शीत९, तेज ११, वायु ५, वृद्धि १३, क्षय ७, विग्रह १७, क्षुधा ५, तृषा १५, निद्रा १३, आलस्य ३, उद्यम ११, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९,फल १३, उत्साह११, उग्रता१३, पाप ९, पुण्य ११, व्याधि ७, व्याधिनाश १, आचार १५, अनाचार १, मृत्यु १३, जन्म ३, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य ११, चौर १७, चौरनाश ९,अग्नि ५, अग्नि शान्ति७, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११, स्वेदज ५, टिड्डी ९, तोता ७, मूषक ३, सोना ९, ताम्बा ३, स्वचक्र १५, परचक्र १७, वृष्टि १९, वृष्टिनाश ९ एवं संवत् विश्वा १८ है।

आवर्तकादि चतुर्मेघ - आवर्तक आदि चतुर्मेघों में **'द्रोण'** नामक मेघ है। फल-राजा लोगों के खजाने भरपूर रहें, वर्षा पर्याप्त, अनेकत्र बाढ़ से हानि हो एवं धन-धान्य समृद्धि रहे।

आवर्त्तकादि नव मेघ विचार - इस वर्ष आवर्तक आदि नवमेघों में **'नील'** नामक मेघ है। फल-दुधारू पशु स्वस्थ एवं काफी दूध दें,रुई कपास के व्यापारियों को उत्तम लाभ हो, वर्षा पर्याप्त हो।

अनन्तादि अष्टनाग - अनन्त आदि अष्टनागों में इस वर्ष **'महापदम्'** नामक नाग है।

फल - भौतिक वस्तुओं के प्रति जनता का व नेताओं का रुझान अधिक रहे। वर्षा से कही भयंकर बाढ़ कहीं सूखा रहे ।

सुबुधादि द्वादशनाग - सुबुध आदि द्वादश नागों में से इस वर्ष **'नन्दसारी'** नामक नाग है। फल-अनेकत्र महावृष्टि हो, जनता में आनन्द मंगल रहे।

आवह आदि सप्तवायु - आवह आदि वायु-सप्तक में इस वर्ष **'संवह'** नामक वायु है। फल - सौम्य वायु वेग से कृषि-फल फूल वृद्धि एवं जनमानस आनन्दित रहे।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ** -(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ७५ प्रतिशत है।

(२) **वायुस्तम्भ** (ज्येष्ठशुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) का लगभग अभाव है।

(३) **तृणस्तम्भ** - (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ९१ प्रतिशत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(४) अन्नस्तम्भ – (आषाढ़शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) १२ प्रतिशत है।

इन चार स्तम्भों का अपना विशेष महत्त्व है; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जल, वायु अन्न एवं तृण (जड़ी बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। अत: संवत् का शुभाशुभ भी इन्हीं स्तम्भों के आधार पर विचारा जाता है। जनता एवं देश की खुशहाली के मूल ये स्तम्भ ही है उल्लिखित चार स्तम्भों का **फल प्रतिशतता के आधार पर इस प्रकार है।**

इस वर्ष जलस्तम्भ ७५ प्रतिशत होने से अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, भूस्खलन, बादल फटने से जन-धन हानि का संकेत मिलता है। किसी अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से भी जन-धन हानि हो। कुछ स्थानों पर अकाल की स्थिति भी बन सकती है। वायुस्तम्भ के अभाव की स्थिति भी चिन्ताजनक है, क्योंकि इसका दुष्प्रभाव कृषि पर होगा। **तृणस्तम्भ** ९१ प्रतिशत है। तृणस्तम्भ प्रबल होने से जड़ी बूटी, एवं पशुचारा आदि बहुत अधिक मात्रा में होगा। जलरहित मरुभूमि पर भी तृणादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। अन्नस्तम्भ के १२ प्रतिशत होने से अनाज के स्टाक में कुछ कमी आ सकती है, सावन एवं आषाढ़ की फसल अच्छी होने पर भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो एवं उपलब्धि कम हो।

आर्षमान विचार

(१) प्रथम आर्ष – (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ८३ प्रतिशत है।
(२) द्वितीय आर्ष – (सं. २०५४ वि० में पौष अमा. को मूल नक्षत्र) शतप्रतिशत है।
(३) तृतीय आर्ष – (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ८९ प्रतिशत है।
(४) चतुर्थ आर्ष – (कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का सर्वथा अभाव है।

फल – इस वर्ष प्रथम तीन आर्ष बहुत प्रबल हैं। चतुर्थ आर्ष पूर्णतया पंगु है। स्पष्ट है, कि यह वर्ष विशेष राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भारी संकट की स्थिति से उबारने वाला है। भारत में अनेक कठिन समस्याओं के समाधानार्थ प्रयत्न होंगे। चतुर्थ आर्ष क्षीण होने से कहीं राजनैतिक – अस्थिरता बने, दक्षिण-पश्चिमी देशों में कहीं युद्धमय वातावरण बने। राजनैतिक हत्याकाण्ड हों, भूकम्प, तूफान अग्निकाण्ड आदि से भी कहीं हानि हो।

दोहा – ''अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो।''
महीमाह खलबली प्रकाशै कहै भडुली साख विनाशै॥

रोहिणी का वास – इस वर्ष रोहिणी का वास तट पर है। **फल** – ''तटे वृष्टि: सुशोभना''। – वर्षा उत्तम हो। कहीं बाढ़ की स्थिति भी बने। अन्न चावल आदि की फसल उत्तम हो।

समय का वास – इस वर्ष समय का वास **''धोबी' के घर''** है। **फल** – तालाब, नदी, नाले एवं बावड़ियां सब जल से परिपूर्ण रहें।

शनि की दृष्टि – सं. २०५५ में शनि १६ अप्रैल तक मीन में एवं १७ अप्रैल से संवत् के अन्त तक मेष राशि में रहेगा। अत: १६ अप्रैल तक शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ एवं तत्पश्चात् पूर्व दिशा की तरफ रहेगी।

फल – उत्तरपूर्वी भूभाग स्थित देशों में कहीं आन्तरिक अशान्ति एवं कहीं युद्धभय व्याप्त हो। चीन-अफगानिस्तान आदि में भूकम्प, समुद्री तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा यान दुर्घटना आदि से जनधन हानि हो। पूर्वी गोलार्ध के देशों में कहीं असन्तोष, आन्दोलन, सत्तापरिवर्तन हत्याकाण्ड हों, राजनैतिक अस्थिरता रहे। पूर्व में रोग भय, उपद्रव अकालादि की स्थिति बने।

शरत्सस्य जातक –

शरत्सस्य जातक कुण्डली

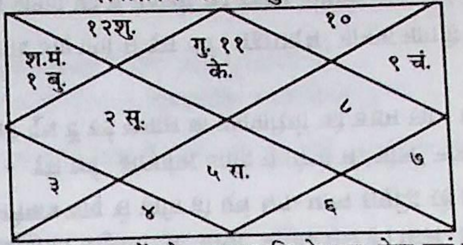

इस वर्ष ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया गुरुवार (१४/१५ मई सन् १९९८ ई.) को भा.स्टै. टा. के अनुसार २५ घं. ५४ मि. (५० घटी, ५२ पल) पर सूर्य वृष राशि में संक्रमण करेगा।

फल – वृष राशि को लग्न मान कर विचार करें तो कुम्भ राशि के गुरु, केतु एवं मेष राशि के श. मं. बु. शारद धान्यों के लिए शुभ नहीं। सूर्य से चतुर्थ – राहु पर गुरु की दृष्टि होने से धान्योत्पत्ति अच्छी तो होगी लेकिन सूर्य से द्वादशस्थ शनि-मंगल – बुध खड़ी-फसलों को किसी प्राकृतिक – प्रकोप वा किसी प्रशासनिक- कार्य से हानि पहुँचेगी, परिणामस्वरूप मूंग, मोठ, बाजरा आदि शारद-धान्य मंहगे होंगे। जनता में असन्तोष व्याप्त होगा।

ग्रीष्म सस्यजातक

ग्रीष्म सस्य कुण्डली

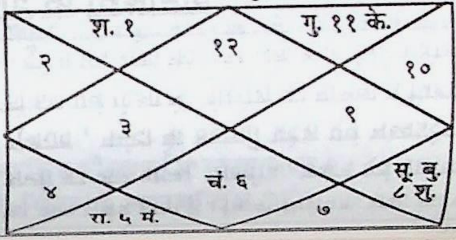

इस वर्ष मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी चन्द्रवार १६ नवं.९८ को १५ घं. ३३ मि. (भा.स्टै.टा.) (२१ घटी ४० पल) पर सूर्य का संक्रमण वृश्चिक राशि में होगा।

फल – यहां वृश्चिक राशि में स्थित सूर्य से चतुर्थ गुरु, केतु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एवं दशमस्थ राहु, मंगल ग्रीष्म कालीन धान्यों के लिए शुभ नहीं। मेष राशि में नीच शनि एवं वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल क्रूरग्रह सन्निधि में होने से गेहूँ, जौ, चना आदि की फसल को हानि पहुँचेगी, मंहगाई उत्तरोत्तर बढेंगी। ग्रहस्थिति के अनुसार ग्रीष्म धान्यों की उपलब्धि आशानुरूप ठीक नहीं रहेगी। कहीं अतिवर्षण किंवा अवर्षण से चिन्ता जनक स्थिति से किसान परेशान रहे। स्टाकिस्टों पर सरकार अंकुश लगाने पर विवश हो।

नववर्ष प्रवेश

गतवर्ष (सं. २०५४ वि. में) चैत्र कृष्ण अमावस शनिवार तदनुसार २८ मार्च सन् १९९८ ई. को ८ घं. ४४ मि. (भा. स्टै. टा.) (५ घड़ी ५७ पल) पर उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय वृष लग्न में शुभ संवत् २०५५ वि. का शुभारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

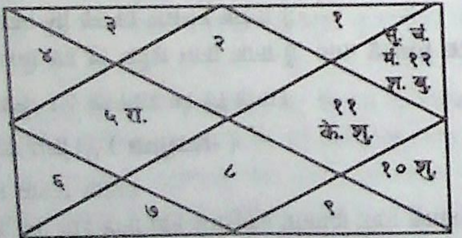

फल – संवत् २०५५ विक्रमी का उदय वृष लग्न में हुआ है। अतः पश्चिम दिशा में अकाल की स्थिति बने, पूर्व दिशा के प्रान्तों व देशों में कहीं आन्तरिक क्रान्ति, राजा-प्रजा में वैमत्य, देशों में युद्धाग्नि से हानि, उत्तर में खड़ी फसलों को हानि पहुँचे, दक्षिणी गोलार्ध में कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने।

"वृषेऽपि पश्चिमेऽकालः पूर्वस्यां– राजविग्रहः
उदग् धान्यार्थ निष्पत्तिः दक्षिणस्यां विकालतः॥"

नववर्ष प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार वर्ष लग्नेश – शुक्र मकर राशि में है, जो कि सामान्यतः ठीक ही है। लेकिन आमदन भाव में सूर्य-शनि-मंगल –बुध एवं चन्द्र एकसाथ हैं, जोकि विश्व के कुछ देशों में विशेष राजनैतिक घटना – चक्र को जन्म देंगे। कुछ विशिष्ट राजनीतिज्ञों को भारी कठिन परिस्थितियों का सामना करना होगा। विशेष व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा, राजनैतिक अस्थिरता रहे। पाकिस्तान आदि में कहीं भयंकर आन्तरिक अशान्ति का वातावरण बने। विश्व के कुछ राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण से शान्ति भंग होने के योग हैं। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। भारत की अर्थव्यवस्था के लिए यह वर्ष विशेष परिवर्तन एवं सुधारात्मक प्रक्रिया का संकेत देता है।

वर्षेश (जगत्) लग्न –

सं. २०५५ वि. में वैशाख कृष्ण प्रतिपदा चन्द्रवार (१३ अप्रैल १९९८ ई.) को २९ घं. ३ मिनट (५७ घटी ३२ पल) पर विशाखा नक्षत्र, सिद्धि योग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय मीन लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

जगत् लग्न कुण्डली

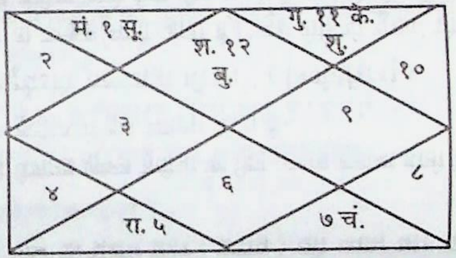

फल–जगत् लग्न कुण्डली

में लग्नेशगुरु शनि के क्षेत्र में शुक्र केतु के साथ द्वादशस्थ है। लग्न में शनि बुध हैं –

"मीन लग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्न संग्रहः।
मध्यदेशे धान्यनाशः छत्रभंगः क्वचिद् भवेत्॥"

दक्षिणी गोलार्ध में सुखशान्ति रहे, धान्य संग्रह से आगे लाभ मिले, मध्यदेश मे दुष्काल की स्थिति बने, कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन हो।

कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार यह वर्ष मीन-मेष राशि वाले शासकों एवं देशों के लिए उलझनपूर्ण मालूम देता है। विश्व के देशों के लिए वैशाख, भाद्रपद, फाल्गुन एवं चैत्र मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार –

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उसवर्ष में उसभाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्म लग्न, जन्म राशि एवं अपने वर्षलग्न से बर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारह हो तो यह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभनहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

आर्द्राप्रवेश लग्न

इस वर्ष आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी चन्द्रवार (२२ जून' ९८) को कृत्तिका नक्षत्र, धृति योग एवं वृष राशिस्थ चन्द्र के समय ८ घंटा ७ मि. (६ घटी ४५ पल) पर कर्क लग्न के समय सूर्य देव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

(शेष पृष्ठ 106 पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

-संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. २०५५ वि.)-

लेखक-प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्) पो० पंचकूला-1341 09

(यदि इस स्तंभ में चर्चित या अन्य किसी व्रत पर्व की तिथि के बारे में किसी को संदेह -शंका हो तो उसे पत्र देकर मुझ से स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए-प्रियव्रत शर्मा)

संवत्सर का प्रारम्भ और वर्षेशः-

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन सूर्योदय के समय संवत्सर का प्रारम्भ माना जाता है; क्योंकि इस समय ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की थी। इसके प्रमाण में 'ब्रह्मपुराण' का यह वाक्य है-

''चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रं तत् तदा सूर्योदये सति॥''

इस प्रमाण के अनुसार उदय व्यापिनी चैत्रशुक्ल प्रतिपदा के दिन संवत्सर का प्रारम्भ माना जाता है। ''तिथिनिर्णय'' कार ने भी यही कहा है-

''चैत्र शुक्ल प्रतिपदि वत्सरारम्भः, तत्रौदयिकी तिथिः ग्राह्या।''

लेकिन इसवर्ष (सं. २०५५ में) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है। वह २८ मार्च' ९८ शनिवार को सूर्योदय के अनन्तर प्रारम्भ होकर इसी दिन (शनिवार को ही) अग्रिम (रविवार के) सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो रही है जिससे वह दोनों दिन (२८ व २९ मार्च को) उदय व्यापिनी नहीं है इस स्थिति में धर्मशास्त्र का निर्णय है, कि यदि दोनों दिन चैत्रशुक्ल प्रतिपदा उदय व्यापिनी न हो तो पहिले ही दिन संवत्सर का प्रारम्भ मानना चाहिए-

''दिनद्वये उदय व्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।'' (धर्मसिन्धुः)

इसलिए इसवर्ष संवत्सरारम्भ २८ मार्च' ९८ शनिवार को ही होगा।

क्योंकि संवत्सरारम्भ के वार का स्वामी ग्रह ही वर्षेश माना जाता है, अतः **इसवर्ष का स्वामी शनि होगा।** ज्योतिर्निबन्ध का यह वाक्य भी इसका समर्थन करता है-

''चैत्रे सित प्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।
उदय द्वितये पूर्वो नोदययुगलेऽपि पूर्वः स्यात्।''

(**अर्थ**-उदय व्यापिनी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार का स्वामी वर्षेश होता है। यदि प्रतिपदा दोनों दिन उदय व्यापिनी हो, या वह दोनों दिन उदय व्यापिनी न हो तो इन दोनों स्थितियों में पहिले दिन का वारेश ही वर्षेश होता है।)

वासन्त नवरात्र प्रारम्भ:-सूर्योदय व्यापिनी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन वासन्त नवरात्र का प्रारम्भ, घटस्थापन होता है। अमायुक्त प्रतिपदा में नवरात्र प्रारम्भ नहीं होता। यदि प्रतिपदा का क्षय हो जाए या वह दूसरे दिन एक मुहूर्त से कम हो तब तो अमायुक्ता प्रतिपदा के दिन ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन करने के लिए शास्त्र निर्देश है-

''अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।
मुहूर्त्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयादि गुणान्विता॥''

इस निर्देश के अनुसार इसवर्ष वासन्त-नवरात्र का प्रारम्भ २८ मार्च' ९८ अमायुक्ता प्रतिपदा में ही होगा। क्योंकि प्रतिपदा दूसरे दिन सूर्योदय के समय बिल्कुल नहीं है।

श्री परशुराम जयन्तीः- भगवान् श्री परशुराम जी का अवतार वैशाख शुक्ल तृतीया के समय प्रदोष काल में हुआ था। कुछ ग्रन्थों में इनका अवतार काल मध्याह्नकाल भी लिखा है। लेकिन अधिकतर शास्त्रों में प्रदोष (रात्रि के प्रथम पहर) को ही इनका अवतारकाल माना गया है। इस बारे में ''भार्गवार्चन चन्द्रिका'' में स्कन्द और भविष्यपुराण का यह वाक्य उद्धृत है, जिससे इनका अवतारकाल रात्रि के प्रथम पहर में ही सिद्ध होता है-

''वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ।
निशायाः प्रथमे यामे रामाख्यः समये हरिः॥
स्वोच्चगैः षड्ग्रहैः युक्ते राहौ च मिथुने स्थिते।
रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो हरिः स्वयम्॥''

'धर्मसिन्धु' कार भी प्रदोष को इनका अवतार काल मानने वालों का बहुमत मानते है- **''वैशाख-शुक्ल तृतीयायां मध्याह्ने श्री परशुरामोद्भवः, प्रदोषे इति बहवः।'' (धर्मसिन्धुः)**

इस निर्णय के अनुसार **इसवर्ष ''श्री परशुराम जयन्ती'' २८ अप्रैल' ९८ को होगी, क्योंकि इसी दिन वैशाख शुक्ल तृतीया रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोष) को व्याप्त कर रही है।**

अक्षय तृतीया:-पूर्वाह्न व्यापिनी वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन अक्षय तृतीया होती है, दोनों दिन पूर्वाह्न व्यापिनी होने पर परविद्धा तृतीया में इसे मनाया जाता है-

''सा पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्या। दिनद्वयेऽपि तदव्याप्तौ परैव।'' (निर्णयसिन्धु)

यह बुधवार वा रोहिणी से युक्त हो तो उत्कृष्ट मानी जाती है। 'बुध रोहिणी युक्ता' होने पर भी यह पूर्वविद्धा वर्जित है। लेकिन यदि तृतीया दूसरे दिन तीन मुहूर्त से कम हो तो इसे हर हालत में (दूसरे दिन बुध, रोहिणी योग होने पर भी) पहिले दिन (पूर्वविद्धा में) ही मनाया जाता है। (धर्मसिन्धु) का वचन है-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"द्वेधा विभक्त दिन पूर्वार्धैक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्, त्रिमहूर्त्ताधिक व्याप्ति सत्त्वे परा, त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे पूर्वा।"

इसवर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया २८ और २९ अप्रै.' ९८ दोनों दिन पूर्वाह्णव्यापिनी है। लेकिन यह २९ अप्रै.' ९८ को तीन मूहूर्त से कम है अतः **बुध रोहिणी योग होने पर भी यह २९ अप्रै. को त्याज्य होगी, और अक्षयनवमी २८ अप्रै.' ९८ को ही माननी होगी।**

२८ अप्रै. को पंजाब, हरियाणा हि.प्र. दिल्ली में तीन मुहूर्त्तो का मान लगभग अढ़ाई घण्टा के बराबर होगा।

कुमार षष्ठी:-पूर्वविद्धा आषाढ़ शुक्ल षष्ठी में कुमार षष्ठी व्रत होता है। यहाँ परविद्धा षष्ठी त्याज्य है इसवर्ष यह षष्ठी ३० जून' ९८ को पर (सप्तमी) विद्धा है, अतः कुमारषष्ठी व्रत पहिले दिन (२९ जून' ९८) को ही होगा।

रक्षा बन्धन:-श्रावण पूर्णिमा में अपराह्न के समय रक्षाबन्धन का विधान है। लेकिन पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि में प्रातःकाल में ही रक्षाबन्धन करने की परम्परा है। भद्रा में रक्षा बन्धन का सर्वथा निषेध है। इसवर्ष ७ अग.' ९८ को सूर्यास्त के बाद तक भद्रा विद्यमान है। दूसरे दिन ८ अग. को पूर्णिमा सूर्योदय के बाद दो मुहूर्त से अधिक-अधिक काल को व्याप्त करती है, और यह यहाँ भद्रा से सर्वथा मुक्त है इसलिए इसीदिन (८ अग.' ९८ को ही) पूर्णिमा में (प्रातः ७ घण्टे ४० मि. (भा.स्टै.टा.) तक रक्षाबन्धन कर लेना चाहिए। यदि कोई रक्षाबन्धन शास्त्रानुसार अपराह्न में ही करना चाहता है तो वह भी इस दिन (८ अग. को) अपराह्न में रक्षा बन्धन कर सकता है। क्योंकि साकल्य वचन द्वारा पूर्णिमा तिथि ८ अग. को पूरादिन वर्तमान मानी जाएगी। जो तिथि सूर्योदय के बाद तीन या दो मुहूर्त तक विद्यमान हो उसे उस दिन (विशेष स्थिति) में सूर्यास्त काल तक विद्यमान मानने का शास्त्र निर्देश है (इस शास्त्र निर्देश को साकल्य वचन कहा जाता है)। इसी आधार पर पुरुषार्थ चिन्तामणिकार ने लिखा है, कि-दूसरे दिन पूर्णिमा दो मुहूर्त से कम हो तब तो रक्षाबन्धन पहिले ही दिन भद्रा की समाप्ति हो जाने पर प्रदोष के समय करना चाहिए-

"यदातूत्तरत्र मुहूर्त्तद्वयमध्ये किंचिन्न्यूना पौर्णमासी तदापराह्णे सर्वथा तदभावात् 'प्रदोष पश्चिमौ यामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्।' इति पराशर वचनाद् भद्रान्ते प्रदोषयामे ऽनुष्ठानम्।" (पुरुषार्थ चिन्तामणिः।)

इस वर्ष तो दूसरे दिन (८ अग. को) पूर्णिमा दो मुहूर्त से भी अधिक है अतः इसी दिन अपने परम्परानुसारी काल में (प्रातः या अपराह्न में) रक्षाबन्धन किया जा सकता है। वर्षकृत्य प्रदीपकार ने तो एक मुहूर्त व्यापिनी पूर्णिमा होने पर भी दूसरे दिन अपराह्न में रक्षाबन्धन को शास्त्रीय ठहराया है। ८ अग. को दो मुहूर्त का मान लगभग पौने दो घण्टा के बराबर है।

कुशोत्पाटिनी अमा:-भाद्रपद अमा में दर्भोच्चय (कुशोत्पाटन) का विधान है। इस दिन संगृहीत कुशा वर्षभर शुद्ध रहती है (**"अयात यामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनःपुनः"**)। क्योंकि समिधा, पुष्प और कुशा के संचय के लिए दिन का द्वितीय प्रहर युक्त काल माना गया है (**"समित्पुष्प-कुशादीनां द्वितीयः प्रहरो मतः।"**)

अतः दिन के द्वितीय प्रहर में व्यापिनी अमा में ही कुशोत्पाटन किया जाता है। इसवर्ष भाद्र. अमा २१ अगस्त' ९८ को ही द्वितीय प्रहर व्यापिनी है अतः इसी दिन कुशोत्पाटन होगा।

कुछ आचार्य आश्विन अमा में कुशोत्पाटन मानते हैं।

सिद्धि विनायक व्रत:-मध्याह्न व्यापिनी भाद्र. शुक्ल चतुर्थी के दिन सिद्धि विनायक व्रत होता है। इसवर्ष भाद्र. शुक्ल चतुर्थी २५ अग.' ९८ को आंशिक रूप से और २६ अगस्त को पूर्णतया मध्याह्नकाल को व्याप्त करती है। इस स्थिति में २६ अग.' ९८ को ही यह व्रत किया जाएगा। धर्म सिन्धुकार का वाक्य है-

"पूर्वदिने एकदेशेन मध्याह्नव्यापिनी परदिने सम्पूर्णमध्याह्नव्यापिनी तदाऽपि परैव॥"

२६ अग. को मध्याह्नकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार ११ घं. ७ मि. से १३ घं. ४१ मि. तक रहेगा।

विजयादशमी:-अपराह्न व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी या दशहरा मनाया जाता है। यदि अपराह्न में श्रवण नक्षत्र भी हो तो इसका विशेष माहात्म्य माना जाता है। इस वर्ष आश्विन शुक्ल दशमी ३० सितं.' ९८ और १ अक्तू' ९८ दोनों दिन अपराह्न व्यापिनी है और १ अक्तू. को अपराह्न में श्रवण नक्षत्र का योग है। इस स्थिति में धर्मशास्त्र का निर्णय है कि यदि दो दिन अपराह्न व्यापिनी दशमी हो, या दोनों दिन वह अपराह्न का स्पर्श न करे और एक दिन अपराह्न में श्रवण योग हो तो विजयादशमी उस दिन मनाई जाए जिस दिन उपराह्न में श्रवण नक्षत्र विद्यमान हो-" **दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्यव्याप्त्योः एकतरदिने श्रवणयोगे, यद्दिने श्रवणयोगः सैव ग्राह्या।" (धर्मसिन्धु)** इस निर्णय के अनुसार इसवर्ष १ अक्तू.' ९८ को ही विजयादशमी मनाई जाएगी।

३० सितं. और १ अक्तू. को चण्डीगढ़ दिल्ली में अपराह्नकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार १३ घं. २३ मि. से १५ घं. ४३ मि. तक रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होलिका दहन :- फाल्गुन पूर्णिमा में प्रदोष के समय होलिका दहन किया जाता है । इसके लिए भद्रा वर्जित है। इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा १ मार्च ९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार १२ घं. १९ मि. पर प्रारम्भ होकर २ मार्च को १२ घं. २९ मि. पर समाप्त होगी। इस तरह यह पूर्णिमा १मार्च को ही प्रदोष में व्याप्त है। इस दिन प्रदोष काल भा. स्टैं.टा. के अनुसार १८ घं. १६ मि. से २० घं. ४८ मि. तक रहेगा। इसी दिन भद्रा भा.स्टैं.टा. के अनुसार १२ घं. १९ मि. से २४ घं. २४ मि. (यानि २ मार्च को रात के १२ बजकर २४ मि.) तक रहेगी। स्पष्ट है १ मार्च को पूरा प्रदोष काल भद्रा से व्याप्त है। ऐसी स्थिति में होलिका दहन भद्रा के मुख को छोड़ कर किया जाए-यह शास्त्र निर्देश है। इस दिन भद्रा का मुख २१ घं. २२ मि .से २३ घं. २४ मि. (भा.स्टैं. टा.) तक रहेगा इसका अर्थ हुआ कि १ मार्च ९९ को भा. स्टैं.टा. के अनुसार रात्रि के ९ बजकर २२ मि. से लेकर ११ बजकर २४ मि. तक का (भद्रा के मुख का) काल ही होलिका दहन के लिए त्याज्य है । इससे स्पष्ट है - इसदिन (१ मार्च' ९९को) भारत के सभी प्रदेशों में प्रदोष काल भद्रा मुख से सर्वथा मुक्त रहेगा। अत: समस्त भारत में इसदिन पूरे प्रदोष काल की अवधि में कभी भी होलिका दहन किया जा सकता है ।

पूर्णिमा वाली भद्रा का मुख उस (भद्रा)के चौथे चरण की पहली लगभग ५ घड़ियों में रहता है।

गौरीव्रत (गौंत्रीव्रत)

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल तृतीयाएं ''गौरी तृतीया'' कहलाती हैं। गौरी तृतीया का व्रत परविद्धा (चतुर्थी विद्धा) तृतीया में करने का निर्देश है। यदि तृतीया दूसरे दिन एक मुहूर्त्त भी हो तो भी उसी दिन (दूसरे ही दिन) यह व्रत करना चाहिए। ''पुरुषार्थ चिन्तामणि'' कार का वचन है-

''चैत्र भाद्रपद-माघ शुक्ल तृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्तमात्राऽप्युत्तरैव।'' (पुरुषार्थ चिन्तामणि:)।

कालमाधव कार का कहना है कि तृतीया की वृद्धि होने पर यदि दूसरे दिन तृतीया एक मुहूर्त भी हो तब पहिली षष्ठि घटिकात्मक शुद्धा तृतीया को भी छोड़कर दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि गौरी तृतीया का गणेश की तिथि (चतुर्थी) से सम्पर्क का माहात्म्य है

''मुहूर्त्त मात्र सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रत परे।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगप्रशंसनात्॥'' (कालमाधव)

धर्मसिन्धुकार का तो मत है कि यदि दूसरे दिन तृतीया यत्किंचित्काल (घड़ी से भी कम काल) के लिए क्यों न हो तब भी दूसरे ही दिन गौरी व्रत करना चाहिए।

चैत्र शुक्ल तृतीया वाली गौरी तृतीया को राजस्थान आदि में ''गणगौर'' भाद्र शुक्ल तृतीया वाली को ''हरितालिका तृतीया'' और माघशुक्ल तृतीया वाली गौरी तृतीया को हि.प्र., पंजाब में गोंत्री या गोंतरी कहा जाता है। यह सौभाग्यवती महिलाओं का व्रत है।

(पृष्ठ 103 का शेष)

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

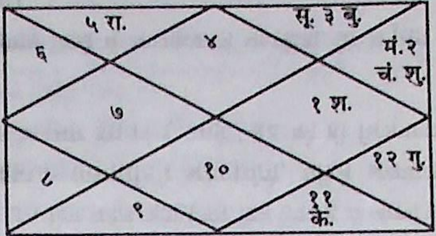

फल - क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिनमें ८ बजे के लगभग हुआ है, अत: कहीं युद्धोत्पात, कहीं रोग - विशेष से जन-जीवन को खतरा पैदा हो। क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिन में हुआ है, अत: वर्षा पानी में अवरोधक ग्रहस्थिति बनेगी:-

''दिवार्द्रां याति चेद् भानु:जलभक्षण कारक:।''

कृत्तिका नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश कहीं अग्नि काण्ड से हानि करें।

गुर्राफल -

(१) गत संवत् २०५४ वि. में वैशाख शुक्ल तृतीया शुक्रवार (९ मई, १९९७ ई.) को हिजरी सन् १४१८ प्रारम्भ हुआ है।

फल -लोगों में क्रोधाग्नि से हानि हो, कहीं युद्धाग्नि से जनधनहानि हो, अग्निकाण्ड की घटनाएं दु:खदाई हों।कहीं वायुवेग से हानि हो। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़े, नानाविध रोंगों से जनता को कष्ट हो।

वर्तमान संवत् २०५५ वि. में २८ अप्रैल १९९८ ई. को मंगलवार के दिन हिजरी सन् १४१९ का प्रारम्भ होगा।

फल- विश्व के पूर्वी एवं उत्तरी भूभाग पर कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने। खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान हो। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो। पशु एवं जनता में रोग बढ़े। गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूँ आदि में मंहगाई रहे। कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो। खड़ी फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

लाभ - व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ व्यय देखने की रीति - अपनी राशि के लाभ व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १,२,६,७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा, ३,४,५,० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

''इतीदं वत्सर फलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
य: श्रृणोति नरोभक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०५५, शाक १९२०, चैत्र शुक्ल पक्ष २ (२९ मार्च से ११ अप्रैल तक, सन् १९९८ ई.), उत्तरायण उत्तर गोल, बसन्त ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीख प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. चैत्र	मु. जिल्ह.	चन्द्र राशि	प्रवेश काल घ.	प.	[illegible] भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बु. श.मं. अदृश्य हैं , प्रातःकाल पूर्व में गुरु एवं उससे ऊपर शुक्र चमकते दीखेंगें
नवम		१	श.	५६	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (A)
०	३६	२	र.	४७	१८	रे.	११	२०	ऐं.	११	२२	बा.	२१	५३	१६	२९	८	२९	मे.	११	२०	६	१९	६	३५	११	१४	१८	११	पञ्चक समाप्त ११।२०, चन्द्र दर्शन मु. ३०, बुध पश्चिम में अस्त,
०	४०	३	च.	३८	४८	अ. भ.	४ ५८	१५ ०	वै. वि.	९ ५९	१० ३५	तै.	१३	३	१७	३०	९	जि १	मेष			६	१८	६	३५	११	१५	१७	२९	जिल्हिज्ज प्रारम्भ, गौरी तृतीया (गणगौर), मत्स्य जयन्ती, (B)
०	४६	४	मं.	३१	२५	कृ.	५३	२	प्री.	५१	१०	व.	५	७	१८	३१	१०	२	वृ.	११	४५	६	१७	६	३६	११	१६	१६	४३	भ. ५।६ से ३१।२५ तक, सूर्य रेवती में २३।३०, (C)
०	५०	५	बु	२५	३५	रो.	४९	४५	आ.	४४	५	बा.	२५	३५	१९	अ.१	११	३	वृष			६	१६	६	३६	११	१७	१५	५७	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, हयव्रत, अप्रैल प्रारम्भ,
०	५५	६	गु.	२१	२८	मृ.	४८	१७	सौ.	३८	२५	तै.	२१	२८	२०	२	१२	४	मि.	१९	१	६	१४	६	३७	११	१८	१५	८	स्कन्द षष्ठी,
१	०	७	शु.	१९	१७	आ.	४८	४८	शो.	३४	२२	व.	१९	१७	२१	३	१३	५	मिथुन			६	१३	६	३८	११	१९	१४	१५	भ. १९।१७ से ४९।१५ तक , गुरु पू. भा. १ में ४९।३८
१	५	८	श.	१९	१२	पुन.	५१	१५	अ.	३१	५५	ब.	१९	१२	२२	४	१४	६	क.	३५	३८	६	१२	६	३८	११	२०	१३	२०	मंगल अश्विनी मेष में ४७।३२, अशोकाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी,
१	१०	९	र.	२१	०	पु.	५५	२७	सु.	३०	५८	कौ.	२१	०	२३	५	१५	७	कर्क			६	११	६	३९	११	२१	१२	२३	श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त,
१	१३	१०	चं.	२४	३०	आश्ले.	६०	०	धृ.	३१	१५	ग.	२४	३०	२४	६	१६	८	कर्क			६	१०	६	४०	११	२२	११	२४	भ. ५६।५९ बाद, शुक्रशत. में ४१।५,
१	१८	११	मं.	२९	२८	आश्ले.	१	१२	शू.	३२	३५	वि.	२९	२८	२५	७	१७	९	सिं.	१	१२	६	८	६	४०	११	२३	१०	२४	भ. २९।२८ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.)
१	२२	१२	बु.	३५	१२	मघा	८	०	गं.	३४	३५	ब.	२	२०	२६	८	१८	१०	सिंह			६	७	६	४१	११	२४	९	२०	
१	२७	१३	गु.	४१	३५	पू.फा.	१५	२५	वृ.	३७	२	कौ.	८	२४	२७	९	१९	११	क.	३२	२२	६	६	६	४२	११	२५	८	१४	अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती (जैन), प्रदोष व्रत,
१	३१	१४	शु.	४८	७	उ.फा.	२३	१२	ध्रु.	३९	३४	ग.	१४	५१	२८	१०	२०	१२	कन्या			६	५	६	४२	११	२३	७	६	भ. ४८।७ बाद, दमनक चतुर्दशी,
१	३६	१५	श.	५४	३५	ह.	३०	५८	व्या.	४२	१०	वि.	२१	२१	२९	११	२१	१३	कन्या			६	४	६	४३	११	२७	५	५७	भ. २१।२१ तक ,श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान प्रारम्भ,

(A) (देखें-पृष्ठ १०४), घट स्थापन, तैलाभ्यंग, प्रपादान, (B) आन्दोलन तृतीया, (C) शुक्र कुम्भ में १० । २५,

नोट - वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'खर' नामक संवत्सर है। अतः वर्षांत तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

चैत्र शु. ८ शनि, इष्ट ५८।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	०	११	१०	१०	११	४	१०
२१	४	०	२४	२०	४	२८	१४	१४
१०	४८	७	८	१५	५३	२६	५५	५५
४६	४	५५	४०	१८	२१	३०	१	१
५९	७८६	४५	४५	१३	६२	७	३	३४
४	२८	१२	३५	२३	९	३४	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२ रे.	२ पु.	१ अश्वि.	३ रे.	१ पू.भा.	४ धनि.	४ रे.	१ पू.फा.	३ शत.

कुण्डली सूर्योदये

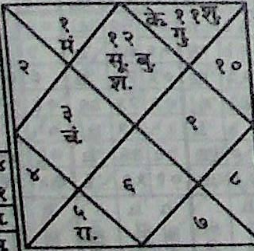

लोक भविष्य २०५५ वि.में राजा का पद शनि ग्रह को प्राप्त है। संवत् के प्रारम्भ में सूर्य एवं बुध एकत्र हैं, कन्या राशि पर इनकी, दृष्टि है, अतः पाकिस्तान एवं अन्य यावन राष्ट्रों के लिए समय अनुकूल नही। चान्द्रमास चैत्र में पांच शनिवार होने से पश्चिम- दक्षिण दिशा में स्थित देशों में अग्निकाण्ड आदि से कहीं हानि होगी, कहीं मुस्लिम देशों में परस्पर तनाव पूर्ण स्थिति से भारी जानी वा माली नुकसान होगा। - **''शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पतेफणिः। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्धता''**

ग्रहचाल और बाजार का रुखः-पक्षारम्भ में बुध, वक्र स्थिति में अस्त हो रहा है, जो कि अनाजों में तेजी का ही वातावरण बनाएगा, लेकिन रूई में अचानक जोरदार मन्दे का रिएक्शन आए। चांदी, पाट, हैसियन एवं शेर बाजारों में मन्दे का वातावरण बने। ३१ मार्च के लगभग रूई, चांदी, गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में मन्दा बने। ४ अप्रैल के लगभग धातु , गुड़ घी, रुई तेज हों।

आकाश लक्षण-मार्च, २९,३१ अप्रैल ३ से ६ तक पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल, बर्मा, हि. प्र. एवं मध्य प्रदेश के कुछ भागों में बादल चाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उ. भारत में मौसम ठीक रहे एवं तापमान बढ़ने लगे।

शकुन विचार-यदि चैत्र शुक्ला पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण पूर्व की वायु चले तो उस वर्ष अनाजों में भयंकर तेजी बनती है, - **''चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिण- पूर्वयोः। वृष्टया सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्।'**

कुण्डली सूर्योदये

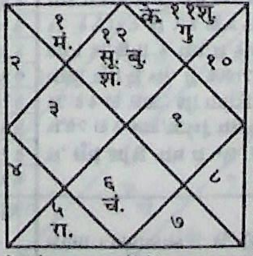

चैत्र शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५८।३८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	११	१०	१०	११	४	१०
२८	२८	५	१८	२१	१२	२९	१४	१४
३	४६	२३	५०	४७	१३	१९	३२	३२
५६	४१	१५	३३	४६	४९	३४	४६	४६
५८	७१३	४४	३७	१२	६३	७	३	३
४९	४	५१	३७	५९	५५	३७	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४ रे.	२ चित्रा	२ अश्वि.	१ रे.	१ पू.भा.	२ शत.	४ रे.	१ पू.फा.	३ शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होलिका दहन :- फाल्गुन पूर्णिमा में प्रदोष के समय होलिका दहन किया जाता है । इसके लिए भद्रा वर्जित है। इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा १ मार्च ९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार १२ घं. १९ मि. पर प्रारम्भ होकर २ मार्च को १२ घं. २९ मि. पर समाप्त होगी। इस तरह यह पूर्णिमा १मार्च को ही प्रदोष में व्याप्त है। इस दिन प्रदोष काल भा. स्टैं.टा. के अनुसार १८ घं. १६ मि. से २० घं. ४८ मि. तक रहेगा। इसी दिन भद्रा भा.स्टैं.टा. के अनुसार १२ घं. १९ मि. से २४ घं. २४ मि. (यानि २ मार्च को रात के १२ बजकर २४ मि.) तक रहेगी। स्पष्ट है १ मार्च को पूरा प्रदोष काल भद्रा से व्याप्त है। ऐसी स्थिति में होलिका दहन भद्रा के मुख को छोड़ कर किया जाए-यह शास्त्र निर्देश है। इस दिन भद्रा का मुख २१ घं. २२ मि .से २३ घं. २४ मि. (भा.स्टैं. टा.) तक रहेगा इसका अर्थ हुआ कि १ मार्च ९९ को भा. स्टैं.टा. के अनुसार रात्रि के ९ बजकर २२ मि. से लेकर ११ बजकर २४ मि. तक का (भद्रा के मुख का) काल ही होलिका दहन के लिए त्याज्य है । इससे स्पष्ट है - इसदिन (१ मार्च' ९९को) भारत के सभी प्रदेशों में प्रदोष काल भद्रा मुख से सर्वथा मुक्त रहेगा। अत: समस्त भारत में इसदिन पूरे प्रदोष काल की अवधि में कभी भी होलिका दहन किया जा सकता है ।

पूर्णिमा वाली भद्रा का मुख उस (भद्रा)के चौथे चरण की पहली लगभग ५ घड़ियों में रहता है।

गौरीव्रत (गौंत्रीव्रत)

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल तृतीयाएं ''गौरी तृतीया'' कहलाती हैं। गौरी तृतीया का व्रत परविद्धा (चतुर्थी विद्धा) तृतीया में करने का निर्देश है। यदि तृतीया दूसरे दिन एक मुहूर्त भी हो तो भी उसी दिन (दूसरे ही दिन) यह व्रत करना चाहिए। ''पुरुषार्थ चिन्तामणि'' कार का वचन है-

''चैत्र भाद्रपद-माघ शुक्ल तृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्तमात्राऽप्युत्तरैव।'' (पुरुषार्थ चिन्तामणि:)।

कालमाधव कार का कहना है कि तृतीया की वृद्धि होने पर यदि दूसरे दिन तृतीया एक मुहूर्त भी हो तब पहिली षष्ठि घटिकात्मक शुद्धा तृतीया को भी छोड़कर दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि गौरी तृतीया का गणेश की तिथि (चतुर्थी) से सम्पर्क का माहात्म्य है

''मुहूर्त्त मात्र सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रत परे।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगप्रशंसनात्॥'' (कालमाधव)

धर्मसिन्धुकार का तो मत है कि यदि दूसरे दिन तृतीया यत्किंचित्काल (घड़ी से भी कम काल) के लिए क्यों न हो तब भी दूसरे ही दिन गौरी व्रत करना चाहिए।

चैत्र शुक्ल तृतीया वाली गौरी तृतीया को राजस्थान आदि में ''गणगौर'' भाद्र शुक्ल तृतीया वाली को ''हरितालिका तृतीया'' और माघशुक्ल तृतीया वाली गौरी तृतीया को हि.प्र., पंजाब में गौंत्री या गौंतरी कहा जाता है। यह सौभाग्यवती महिलाओं का व्रत है।

(पृष्ठ 103 का शेष)

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

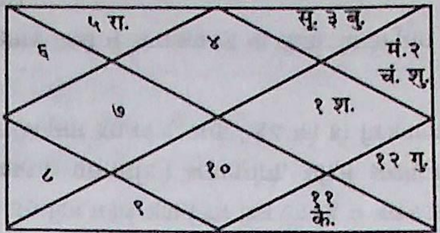

फल - क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिनमें ८ बजे के लगभग हुआ है, अत: कहीं युद्धोत्पात, कहीं रोग - विशेष से जन-जीवन को खतरा पैदा हो। क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिन में हुआ है, अत: वर्षा पानी में अवरोधक ग्रहस्थिति बनेगी:-

''दिवार्द्रां याति चेद् भानुःजलभक्षण कारक:।''

कृत्तिका नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश कहीं अग्नि काण्ड से हानि करें।

गुर्राफल -

(१) गत संवत् २०५४ वि. में वैशाख शुक्ल तृतीया शुक्रवार (९ मई, १९९७ ई.) को हिजरी सन् १४१८ प्रारम्भ हुआ है।

फल -लोगों में क्रोधाग्नि से हानि हो, कहीं युद्धाग्नि से जनधनहानि हो, अग्निकाण्ड की घटनाएं दु:खदाई हों कहीं वायुवेग से हानि हो। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़े, नानाविध रोंगों से जनता को कष्ट हो।

वर्तमान संवत् २०५५ वि. में २८ अप्रैल १९९८ ई. को मंगलवार के दिन हिजरी सन् १४१९ का प्रारम्भ होगा।

फल- विश्व के पूर्वी एवं उत्तरी भूभाग पर कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने। खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान हो। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो। पशु एवं जनता में रोग बढ़े। गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूँ आदि में मंहगाई रहे। कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो। खड़ी फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

लाभ - व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ व्यय देखने की रीति - अपनी राशि के लाभ व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १,२,६,७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा, ३,४,५,० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

''इतीदं वत्सर फलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
य:श्रृणोति नरोभक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०५५, शाक १९२०, चैत्र शुक्ल पक्ष १															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२९ मार्च से ११ अप्रैल तक, सन् १९९८ ई.), उत्तरायण उत्तर गोल, बसन्त ऋतु
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. चैत्र	मु. जिल्हिज	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बु. श.मं. अदृश्य हैं, प्रातःकाल पूर्व में गुरु एवं उससे ऊपर शुक्र चमकते दीखेंगें
अवम		१	श.	५६	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, (A)
३०	३६	२	र.	४७	१८	रे.	११	२०	ऐ.	११	२२	बा.	२१	५३	१६	२९	८	२९	मे.	११	२०	६	१९	६	३५	११	१४	१८	११	पञ्चक समाप्त ११।२०, चन्द्र दर्शन मु. ३०, बुध पश्चिम में अस्त,
३०	४०	३	चं.	३८	४८	अ. भ.	४ ५८	१५ ०	वै. वि.	९ ५९	१० ३५	तै.	१३	३	१७	३०	९	जि १	मेष			६	१८	६	३५	११	१५	१७	२९	जिल्हिज्ज प्रारम्भ, गौरी तृतीया (गणगौर), मत्स्य जयन्ती, (B)
३०	४६	४	मं.	३१	२५	कृ.	५३	२	प्री.	५१	१०	व.	५	७	१८	३१	१०	२	वृ.	११	४५	६	१७	६	३६	११	१६	१६	४३	भ. ५।६ से ३१।२५ तक, सूर्य रेवती में २३।३०, (C)
३०	५०	५	बु	२५	३५	रो.	४९	४५	आ.	४४	५	बा.	२५	३५	१९	अ.१	११	३	वृष			६	१६	६	३६	११	१७	१५	५७	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, हयव्रत, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५५	६	गु.	२१	२८	मृ.	४८	१७	सौ.	३८	२५	तै.	२१	२८	२०	२	१२	४	मि.	१९	१	६	१४	६	३७	११	१८	१५	८	स्कन्द षष्ठी,
३१	०	७	शु.	१९	१७	आ.	४८	४८	शो.	३४	२२	व.	१९	१७	२१	३	१३	५	मिथुन			६	१३	६	३८	११	१९	१४	१५	भ. १९।१७ से ४९।१५ तक, गुरु पू. भा. १ में ४९।३८
३१	५	८	श.	१९	१२	पुन.	५१	१५	अ.	३१	५५	ब.	१९	१२	२२	४	१४	६	क.	३५	३८	६	१२	६	३८	११	२०	१३	२०	मंगल अश्विनी मेष में ४७।३२, अशोकाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी,
३१	१०	९	र.	२१	०	पु.	५५	२७	सु.	३०	५८	कौ.	२१	०	२३	५	१५	७	कर्क			६	११	६	३९	११	२१	१२	२३	श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त,
३१	१३	१०	चं.	२४	३०	आश्ले.	६०	०	धृ.	३१	१५	ग.	२४	३०	२४	६	१६	८	कर्क			६	१०	६	४०	११	२२	११	२४	भ. ५६।५९ बाद, शुक्रशत. में ४१।५,
३१	१८	११	मं.	२९	२८	आश्ले.	१	१२	शू.	३२	३५	वि.	२९	२८	२५	७	१७	९	सिं.	१	१२	६	८	६	४०	११	२३	१०	२४	भ. २९।२८ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.)
३१	२२	१२	बु.	३५	१२	मघा	८	०	गं.	३४	३५	ब.	२	२०	२६	८	१८	१०	सिंह			६	७	६	४१	११	२४	९	२०	
३१	२७	१३	गु.	४१	३५	पू.फा.	१५	२५	वृ.	३७	२	कौ.	८	२४	२७	९	१९	११	क.	३२	२२	६	६	६	४२	११	२५	८	१४	अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती (जैन), प्रदोष व्रत,
३१	३१	१४	शु.	४८	७	उ.फा.	२३	१२	ध्रु.	३९	३४	ग.	१४	५१	२८	१०	२०	१२	कन्या			६	५	६	४२	११	२३	७	६	भ. ४८।७ बाद, दमनक चतुर्दशी,
३१	३६	१५	श.	५४	३५	ह.	३०	५८	व्या.	४२	१०	वि.	२१	२१	२९	११	२१	१३	कन्या			६	४	६	४३	११	२७	५	५७	भ. २१।२१ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान प्रारम्भ,

(A) (देखें-पृष्ठ १०४), घट स्थापन, तैलाभ्यंग, प्रपादान, (B) आन्दोलन तृतीया,(C) शुक्र कुम्भ में १० । २५,

नोट - वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'खर' नामक संवतसर है। अतः वर्षांत तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

चैत्र शु. ८ शनि, इष्ट ५८।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	०	११	१०	१०	११	४	१०
२१	४	०	२४	२०	४	२८	१४	१४
१०	४८	७	८	१५	५३	२६	५५	५५
४३	४	५५	४०	१८	२१	३०	१	१
५९	७०६	४५	४५	१३	६२	७	३	३४
४	२८	१२	३५	२३	९	३४	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ	अ
२	१	१	३	१	४	४	१	३
रे.	पुष्य	अश्वि.	रे.	पू.भा.	धनि.	रे.	पू.फा.	शत.

कुण्डली सूर्योदये

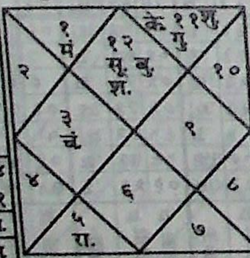

लोक भविष्य २०५५ वि.में राजा का पद शनि ग्रह को प्राप्त है। संवत् के प्रारम्भ में सूर्य एवं बुध एकत्र हैं, कन्या राशि पर इनकी, दृष्टि है, अतः पाकिस्तान एवं अन्य यावन राष्ट्रों के लिए समय अनुकूल नही। चान्द्रमास चैत्र में पांच शनिवार होने से पश्चिम-दक्षिण दिशा में स्थित देशों में अग्निकाण्ड आदि से कहीं हानि होगी, कहीं मुस्लिम देशों में परस्पर तनाव पूर्ण स्थिति से भारी जानी वा माली नुक्सान होगा। **''शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पतेफणिः।**
ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्धता''

ग्रहचाल और बाजार का रुख:-पक्षारम्भ में बुध, वक्र स्थिति में अस्त हो रहा है, जो कि अनाजों में तेजी का ही वातावरण बनाएगा, लेकिन रूई में अचानक जोरदार मन्दे का रिएक्शन आए। चांदी, पाट, हैसियन एवं शेर बाजारों में मन्दे का वातावरण बने। ३१ मार्च के लगभग रूई, चांदी, गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में मन्दा बने। ४ अप्रैल के लगभग धातु, गुड़ घी, रुई तेज हों।

कुण्डली सूर्योदये

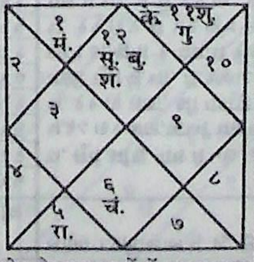

चैत्र शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५८।३८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	११	१०	१०	११	४	१०
२८	२८	५	१८	२१	१२	२९	१४	१४
३	४६	२३	५०	४७	१३	१९	३२	३२
५६	४१	१५	३३	४६	४९	३४	४६	४६
५८	७१३	४४	३७	१२	६३	७	३	३
४९	४	५१	३७	५९	५५	३७	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ..	अ.	अ	अ
४	२	२	१	१	२	४	१	३
रे.	चित्रा	अश्वि.	रे.	पू.भा.	शत.	रे.	पू.फा.	शत.

आकाश लक्षण-मार्च, २९,३१ अप्रैल ३ से ६ तक पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल, बर्मा, हि. प्र. एवं मध्य प्रदेश के कुछ भागों में बादल चाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उ. भारत में मौसम ठीक रहे एवं तापमान बढ़ने लगे।

शकुन विचार-यदि चैत्र शुक्ला पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण पूर्व की वायु चले तो उस वर्ष अनाजों में भयंकर तेजी बनती है,-''चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिण- पूर्वयोः। वृष्टया सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्।'

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, वैशाख कृष्ण पक्ष २ — तारीखें — चन्द्र राशि — चण्डीगढ़ — उदय-कालिक

(१२ से २६ अप्रैल तक, सन् १९९८ ई.), उत्तरायण उत्तर गोल, वसन्त ग्रीष्म ऋतु

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. प.	योग	समाप्ति काल घ. प.	करण	समाप्ति काल घ. प.	प्र. वैक्र.	अं. अंग्रे.	श. शक	मु. हिजि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.
३१ ४१	१	र.	६० ०	चि.	३८ २७	ह.	४४ ३०	बा.	२७ ३८	३०	१२	२२	१४	तु. ४ ४३	६ ३	६ ४३	११ २८ ४ ४५
३१ ४४	१	चं.	० ४०	स्वा.	४५ ३०	व.	४६ २५	कौ.	० ४०	वै.१	१३	२३	१५	तुला	६ २	६ ४४	११ २९ ३ ३२
३१ ४९	२	मं.	६ १५	वि.	५१ ५५	सि.	४७ ५२	ग.	६ १५	२	१४	२४	१६	वृ. ३५ १९	६ ०	६ ४५	० ० २ १६
३१ ५४	३	बु.	११ ३	अनु.	५७ ३०	व्य.	४८ ४०	वि.	११ ३	३	१५	२५	१७	वृश्चिक	५ ५९	६ ४५	० १ ० ५९
३१ ५८	४	गु.	१४ ५८	ज्ये.	६० ०	व.	४८ ४०	बा.	१४ ५८	४	१६	२६	१८	वृश्चिक	५ ५८	६ ४६	० १ ५९ ४०
३२ २	५	शु.	१७ ४५	ज्ये.	२ ८	प.	४७ ४५	तै.	१७ ४५	५	१७	२७	१९	ध. २ ८	५ ५७	६ ४७	० २ ५८ १९
३२ ६	६	श.	१९ १२	मू.	५ ३०	शि.	४५ ४८	व.	१९ १२	६	१८	२८	२०	धनु	५ ५६	६ ४७	० ३ ५६ ५६
३२ ११	७	र.	१९ १५	पू.षा.	७ २८	सि.	४२ ३८	ब.	१९ १५	७	१९	२९	२१	मं. २२ ३५	५ ५५	६ ४८	० ४ ५५ ३१
३२ १५	८	चं.	१७ ४०	उ.षा.	७ ५५	सा.	३८ ८	कौ.	१७ ४०	८	२०	३०	२२	मकर	५ ५४	६ ४९	० ५ ५४ ६
३२ २०	९	मं.	१४ २८	श्र.	६ ४५	शु.	३२ २०	ग.	१४ २८	९	२१	वै.१	२३	कुं ३५ २०	५ ५३	६ ४९	० ६ ५२ ३९
३२ २६	१०	बु.	९ ३२	ध. शत.	३ ५५ ५९ ३५	शु.	२५ १५	वि.	९ ३२	१०	२२	२	२४	कुम्भ	५ ५२	६ ५०	० ७ ५१ ११
३२ २९	११	गु.	३ १५	पू.भा.	५३ ५८	ब्र.	१७ ०	बा.	३ १५	११	२३	३	२५	मी. ४० २२	५ ५१	६ ५१	० ८ ४९ ४०
अवम	१२	गु.	५५ ३५	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३२ ३३	१३	शु.	४७ ०	उ.भा.	४७ २५	ऐ. वै.	७ ४२ ५७ ४२	ग.	२१ १८	१२	२४	४	२६	मीन	५ ५०	६ ५१	० ९ ४८ ७
३२ ३७	१४	श.	३७ ५०	रे.	४० १५	वि.	४७ १७	वि.	१२ २५	१३	२५	५	२७	मे. ४० १५	५ ४९	६ ५२	० १० ४६ ३३
३२ ४१	३०	र.	२८ २८	अ.	३२ ५२	प्री.	३६ ४८	च.	३ ९	१४	२६	६	२८	मेष	५ ४८	६ ५३	० ११ ४४ ५७

ग्रह दर्शन - मं. श अस्त है। बुध पक्ष के प्रारम्भ में ही प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा । प्रातःकाल गु. शु. पूर्व में परस्पर आसन्न आते दीखेंगे।

सं. सूर्य अश्वि. मेष में ५७।३२, मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन(A)
भ.३८।३९ बाद,कुम्भ महापर्व हरिद्वार(प्रमुख स्नान), (B)
भ. ११।३ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
वक्री बुध उ.भा. में १४।८ ,
शनि अश्विनी १ मेष में १७।५०,
भ. १९।१२ से ४९।१४ तक,

> कुम्भ महापर्व हरिद्वार (१४ अप्रै.) (देखें पृष्ठ १०)

गुरु पू.भा. २ में १२।०, शुक्र पू.भा. में ११।५०, अगस्त्य अस्त,
सूर्य सायन वृष में १६।२२,ग्रीष्म ऋतु प्रा., बुध मार्गी १७।५५,
भ. ४२।० बाद, पञ्चक प्रारम्भ. ३४।२०, शक वैशाख प्रारम्भ,
भ. ९।३२ तक, मंगल भर. में ४०।१०, वरूथिनी (C)

बरूथिनी एकादशी व्रत (वै.), श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
द्वादशी तिथिक्षय,
भ. ४७।० बाद, बुध रेवती में २५।५८, प्रदोष व्रत,

भ. १२।२५ तक, पञ्चक समाप्त ४०।१५,
मेला पिंजौर (हरियाणा)

(A) मध्याह्न से पूर्व, वैशाखी (पंजाब),(B) बुध पूर्व में उदित, (C) एकादशी व्रत (स्मा.)

वैशाख कृष्ण, ८ चन्द्र, इष्ट ५९।३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	०	११	१०	१०	०	४	१०
६	२१	१२	१५	२३	२१	०	१४	१४
५९	३३	५	५८	४२	५६	२७	४	४
४३	२९	८	४८	१२	५०	५५	१०	१०
५८	७१७	४४	५	१२	६५	७	३	३
३३	१८	२५	५९	२२	४७	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अश्वि.	भर.	अश्वि.	उ.भा.	पू.भा.	पू.भा.	अश्वि.	पू.फा.	शत.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य -इस मास में पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार हैं। सिंह- प्रभाव राशि वाले देशों में कहीं शासक की मृत्यु,एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। "**यत्र मासे रवेर्वारा- जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।**" लेकिन मकर राशिप्रधान भारत में सुख-समृद्धि रहे। पक्ष मध्य में शनि मेष राशि में आकर मंगल-सूर्य के साथ सम्बन्ध करेगा,- यह समय शासक वर्ग के लिए कठिन अग्नि परीक्षा का है-कहीं सीमाप्रान्तों पर सैन्य हलचल, कहीं यान दुर्घटना किंवा आग्निकाण्ड वा प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**-इस पक्ष में शनि-मं. सूर्य का एकत्र होना विश्व के राजनैतिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में भारी उथल पुथल करेगा। सोना-चांदी,लोहा, मशीनरी,घी,गुड़, तेल,एवं बिनौला सरसों आदि तिलहन में भारी तेजी बनेगी। इस समय कपास चीनी के व्यापारी भी तेजी से लाभ लेंगे। २०,२२ अप्रैल के लगभग बाजारों का रुख देखकर व्यापार करें, अन्यथा वायदा व्यापारी हानि में रहेंगे।

आकाश लक्षण-अप्रैल १३ एवं १७ से २२ अप्रैल तक सिक्किम, आसाम, राजस्थान एवं हिमाचल- के कुछ भागों में बादल चाल एवं बूंदा-बांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा। लेकिन किसी भाग में आकालिक बूंदाबांदी से तापमान गिरे।

शकुन विचार- वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों का स्टाक निकाल दें, अन्यथा हानि होगी।

कुण्डली सूर्योदये

वैशाख कृष्ण,३० रवि, इष्ट ५१।१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	०	११	१०	१०	०	४	१०
१२	११	१६	१७	२४	२८	१	१३	१३
४२	५८	३०	४५	५५	३३	१३	४५	४५
३८	२३	५२	५१	१४	५०	१०	०६	०६
५८	८११	४४	३३	११	६६	७	३	३
२२	४८	७	१९	५४	४०	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अश्वि.	भर.	भर.	रे.	पू.भा.	पू.भा.	अश्वि.	पू.फा.	शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, वैशाख शुक्ल पक्ष २

(२७ अप्रैल से ११ मई तक, सन् १९९८ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म-ऋतु

ग्रह दर्शन - मंगल अस्त है, श. बु. प्रातःकाल पूर्व में होंगे। इस समय गुरु, एवं शुक्र पूर्वकपाल में चमकते दीखेंगे।

दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		तारीख प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल			[illegible] भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशा.	अप्रै.	वैशा.	ज़िल्हिज		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४५	१	चं.	११	२५	भ.	२५	५५	आ.	२६	३७	ब.	११	२५	१५	२७	७	२९	वृ.	३९	२२	५	४७	६	५३	०	१२	४३	१९	चन्द्र दर्शन मु. ३०, सूर्य भर. में २७।३८,
३२	४९	२	मं.	११	२	कृ.	१९	४२	सौ.	१७	५	कौ.	११	२	१६	२८	८	मु.१	वृष			५	४६	६	५४	०	१३	४१	३९	मुहर्रम (हिजरी सन् १४१९ प्रारम्भ),शुक्र मीन में १६।४०, (A)
३२	५५	३	बु.	३	५३	रो.	१४	४५	शो.	८	३५	ग.	३	५३	१७	२९	९	२	मि.	४३	५	५	४५	६	५५	०	१४	३९	५८	भ. ३१।२ से ५८।१२ तक,
अवम		४	बु.	५८	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय
३२	५९	५	गु.	५४	३२	मृ.	११	२५	अ. सु.	१ ५५	२५ ४५	ब.	२७	२२	१८	३०	१०	३	मिथुन			५	४४	६	५५	०	१५	३८	१६	श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती,
३३	३	६	शु.	५३	०	आ.	१०	५	धृ.	५१	५०	कौ.	२३	४६	१९	म.१	११	४	क.	५५	४२	५	४३	६	५६	०	१६	३६	३०	शुक्र उ.भा. में १६।२, शनिउदित, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती(B)
३३	८	७	श.	५३	३५	पुन.	१०	५३	शू.	४९	४०	ग.	२३	१८	२०	२	१२	५	कर्क			५	४२	६	५७	०	१७	३४	४२	भ. ५३।३५ बाद, श्री गंगा जन्म,
३३	१२	८	र.	५६	१५	पु.	१३	४५	गं.	४९	५	वि.	२४	५५	२१	३	१३	६	कर्क			५	४१	६	५७	०	१८	३२	५१	भ. २४।५५ तक,
३३	१६	९	चं.	६०	०	आश्ले.	१८	३२	वृ.	४९	५५	बा.	२८	२५	२२	४	१४	७	सिं.	१८	३२	५	४०	६	५८	०	१९	३०	५९	राहु मघा ४केतु शत. २ में ५३।५५, श्री जानकी जयन्ती,
३३	१९	९	मं.	०	३५	म.	२४	४७	ध्रु.	५१	४०	कौ.	०	३५	२३	५	१५	८	सिंह			५	४०	६	५९	०	२०	२९	६	
३३	२२	१०	बु.	६	१५	पू.फा.	३२	७	व्या.	५४	१०	ग.	६	१५	२४	६	१६	९	कं.	४९	४	५	३९	६	५९	०	२१	२७	११	भ. ३९।२५ बाद, गुरु पू.भा. ३ में ४।२५,
३३	२६	११	गु.	१२	३५	उ.फा.	३९	५८	ह.	५६	५३	वि.	१२	३५	२५	७	१७	१०	कन्या			५	३८	७	०	०	२२	२५	१४	भ. १२।३५ तक , मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
३३	३०	१२	शु.	११	७	ह.	४७	४५	व.	५९	३०	बा.	११	७	२६	८	१८	११	कन्या			५	३७	७	१	०	२३	२३	१६	प्रदोष व्रत,
३३	३४	१३	श.	२५	२५	चि.	५५	१०	सि.	६०	०	तै.	२५	२५	२७	९	१९	१२	तु.	२१	२८	५	३६	७	१	०	२४	२१	१६	श्री नृसिंह जयन्ती,
३३	३८	१४	र.	३१	५	स्वा.	६०	०	सि.	१	४८	व.	३१	५	२८	१०	२०	१३	तुला			५	३६	७	२	०	२५	१९	१४	भ. ३१।५ बाद, मंगल कृत्तिका में ५४।४०, (C)
३३	४२	१५	चं.	३६	०	स्वा.	१	५८	व्य.	३	३२	वि.	३	३३	२९	११	२१	१४	वृ.	५१	२५	५	३५	७	३	०	२६	१७	११	भ. ३।३३ तक, सूर्य कृत्ति. में २३।३२, वैशाखी पूर्णिमा,(D)

(A) भगवान् श्री परशुराम जयन्ती, (देखें पृष्ठ १०४), श्री शिवाजी जयन्ती, अक्षय तृतीया (देखें पृष्ठ १०४), **(B)** मई प्रारम्भ , मई दिवस,**(C)** बुध अश्वि. मेष में २६।५५, वक्री वेंकटेश (प्लूटो) अनु, ३ में,
(D) श्री बुद्ध जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री कूर्म जयन्ती, वैशाख स्नान समास,

वैशाख शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५९।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	११	१०	११	०	४	१०
१९	२६	२१	२२	२६	६	२	१३	१३
३०	७	३८	५६	१६	२३	५	२२	२२
३६	३०	३३	४५	४०	२२	१७	५३	५३
५८	७२१	४३	५७	११	६७	७	३	३
१९	२२	४८	५२	१५	३३	२१	११	११
-		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	३	२	२	१	१	१	३
भर.	आर्द्रा	भर.	रेव.	पू.भा.	उ.भा.	अश्वि.	पू.फा.	शत.

कुण्डली सूर्योदये

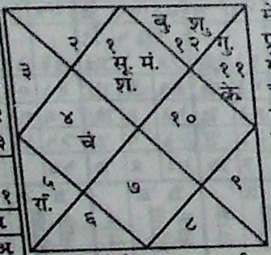

लोक भविष्य -पक्षारम्भ में शुक्र मीन राशि में आकर सुभिक्ष किंवा देश में सुख-समृद्धि का संकेत देता है,- "मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति नैव संशयः।" लेकिन मेष राशि में सू.शनि-मंगल का राशि सम्बन्ध इंग्लैण्ड, श्रीलंका, नेपाल, चीन, जापान आदि देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि किंवा राजनीतिज्ञों के लिए संकटमय स्थिति बनाए।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२८ अप्रैल के लगभग चांदी में अचानक मन्दा बने। अनाज, सरसों, तेल, तिलहन एवं गुड़ खाण्ड में मन्दे का वातावरण बने। रूई में पहले मन्दी कुछ दिन बाद अच्छी तेजी बने। अप्रैल के अन्त में रूई,अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, सूरजमुखी, मूंगफली में मन्दा रहे। शेयर बाजारों में भी मन्दे का रुख रहे। १० मई के लगभग गेहूँ, दालवाना, घी, चांदी, सूत-वस्त्र में तेजी के बाद मन्दा बने।

आकाश लक्षण-अप्रैल २७ से ३० तक एवं मई १ से १० तक बम्बई, बंगाल, लंका का पश्चिमी छोर एवं आसाम के कुछ भागों में बादलचाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा।

शकुन विचार-यदि वैशाख शुक्ल पंचमी को दिन भर बादल रहें, मेघ गरजें तो भाद्रपद में अनाज महँगे हों, तुरन्त लाभ लें।

कुण्डली सूर्योदये

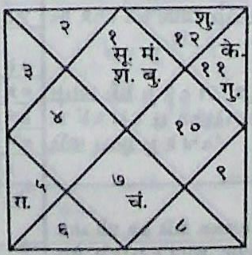

वैशाख शुक्ल १५ चन्द्र , इष्ट ५९।४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	७	०	०	१०	११	०	४	१०
२७	१	२७	१	२७	१५	३	१२	१२
१४	४०	२६	५७	४४	२६	३	५७	५७
५६	४५	५८	३९	४	५६	३०	२६	२६
५७	७३६	४३	७९	१०	६८	७	३	३
५४	१५	१९	११	२८	२५	९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	१	१	३	४	१	४	२
कृत्ति.	विशा.	कृत्ति.	अश्वि.	पू.भा.	उ.भा.	अश्वि.	मघा	शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०५५, शाक १९२०, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१२ से २५ मई तक, सन् १९९८ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म-ऋतु,

ग्रह दर्शन - मंगल अस्त है। प्रातःकाल बुध शनि पूर्व में एवं उससे ऊपर गुरु एवं शुक्र चमकते देखे जा सकते हैं।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. वैशा.	अं. मई	श. वैशा.	मु. मुहर्रम	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४५	१	मं.	४०	२	वि.	७	५५	व.	४	१५	बा.	८	१	३०	१२	२२	१५	वृश्चिक			५	३४	७	३	०	२७	१५	४	
३३	४८	२	बु.	४३	७	अनु.	१२	५८	प.	५	२	तै.	११	३५	३१	१३	२३	१६	वृश्चिक			५	३४	७	४	०	२८	१२	५७	शुक्र रेवती में ३।५२,
३३	५१	३	गु.	४५	१५	ज्ये.	१७	७	शि.	४	४५	व.	१४	११	ज्ये.१	१४	२४	१७	ध.	१७	७	५	३३	७	५	०	२९	१०	४९	भ. १४।१२ से ४५।१५ तक, सं. सूर्य वृष में ५०।५२,मु.३०(A)
३३	५४	४	शु.	४६	२५	मू.	२०	२२	सि.	३	४२	ब.	१५	५०	२	१५	२५	१८	धनु			५	३२	७	५	१	०	८	४०	मंगल वृष में ३२।८, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३३	५७	५	श.	४६	२८	पू.षा.	२२	३२	सा. शु.	१ ५९	४८ २	कौ.	१६	२७	३	१६	२६	१९	म.	३७	४९	५	३२	७	६	१	१	६	३०	
३४	०	६	र.	४५	२२	उषा.	२३	४०	शु.	५५	२७	ग.	१५	५५	४	१७	२७	२०	मकर			५	३१	७	७	१	२	४	१८	भ. ४५।२२ बाद, यूरेनस वक्री ३४।२५,
३४	३	७	चं.	४३	०५	श्र.	२३	३७	ब्र.	५०	५०	वि.	१४	१४	५	१८	२८	२१	कुं.	५२	५८	५	३०	७	७	१	३	२	६	भ. १४।१४ तक, पञ्चक प्रारम्भ. ५२।५८,
३४	६	८	मं.	३९	३०	ध.	२२	१८	ऐं.	४५	१०	बा.	११	१७	६	१९	२९	२२	कुम्भ			५	३०	७	८	१	३	५९	५३	बुध भरणी में ५०।०,
३४	९	९	बु.	२४	४३	श.	१९	४५	वै.	३८	३२	तै.	७	७	७	२०	३०	२३	कुम्भ			५	२९	७	९	१	४	५७	३७	
३४	१२	१०	गु.	२८	४०	पू.भा.	१५	५८	वि.	३०	५२	वि.	२८	४०	८	२१	३१	२४	मी.	१	५५	५	२९	७	९	१	५	५५	२१	भ. १।४१ से २८।४० तक, सूर्य सायन मिथुन में १५।१५,
३४	१५	११	शु.	२१	३८	उ.भा.	११	७	प्री.	२२	२५	बा.	२१	३८	९	२२	ज्ये.	२५	मीन			५	२८	७	१०	१	६	५३	२	शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,अपरा एकादशी व्रत (स.),(B)
३४	१८	१२	श.	१३	४८	रे. अश्वि.	५ ५९	२५ १०	आ.	१३	१७	तै.	१३	४८	१०	२३	२	२६	मे.	५	२५	५	२८	७	११	१	७	५०	४४	पञ्चक समाप्त ५।२५, शनिप्रदोष व्रत,
३४	२१	१३	र.	५	३०	भ.	५२	५०	सौ. शो.	३ ५४	४७ ७	व.	५	३०	११	२४	३	२७	मेष			५	२७	७	११	१	८	४८	२५	भ. ५।३० से ३१।१८ तक, शुक्र अश्विनी मेष में ४०।०,
अवम		१४	र.	५७	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय
३४	२४	३०	चं.	४८	५८	कृ.	४६	४२	अ.	४४	४५	चं.	२३	२	१२	२५	४	२८	वृ.	६	१८	५	२७	७	१२	१	९	४६	४	सूर्य रोहि. में १४।२५,मंगल रोहि. में ३३।१५,गुरु पू.भा.४(C)

(A) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, शनि अश्विनी २ में १८।४५,(B) भद्रकाली एकादशी (पं.), (C) मीन में ५६।५८, भावुका अमावस, बट सावित्री व्रत (अमापक्ष), सोमवती अमावस

ज्येष्ठ कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ०।०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	०	१०	११	०	४	१०
३	१	२	१२	२८	२३	३	१२	१२
५९	३३	२९	०	५५	२७	५२	३५	३५
५२	१४	७	४०	६	४७	५०	११	११
५७	८२९	४२	९५	९	६९	६	३	३
४६	१९	५८	१२	४२	३	५७	११	११
-		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
३	३	२	४	३	३	२	४	२
कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	आर्द्रा.	पू.भा.	रो.	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-इस पक्ष में मंगल-सूर्य दोनों वृष राशि में हैं। अतः खाद्य वस्तुओं में मंहगाई से गरीब जनता में रोष व्याप्त हो। शुक्र एवं शनि दोनों अश्विनी नक्षत्र में होने से इंग्लैण्ड, अमेरिका एवं रूस में आन्तरिक अशान्ति बने। जापान में कहीं भूकम्प से जनधन हानि हो, सुदूर पश्चिमी राष्ट्रों में किसी समस्या को लेकर भारी अशान्ति रहे।

ग्रहचाल और बाजार रुख-इस पक्ष में गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, दालवाना, तेल, सोना-चांदी, तांबा, जस्ता आदि धातु व शेयरों में तेजी बनेगी। २४,२५ मई के लगभग अनाज, घी, सोना-चांदी एवं रूई कपास में धमाके की अच्छी तेजी बनेगी। तेल-तिलहन में सामान्यतया मन्दा संभव है।

कुण्डली सूर्योदये

ज्येष्ठ कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ०।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	०	१०	०	०	४	१०
९	२८	६	२२	२९	०	४	१२	१२
४६	२८	४६	४	५१	२३	३३	१६	१६
११	४	१०	५३	२९	१५	४४	६	६
५७	८८८	४२	१०८	८	६९	६	३	३
३९	५०	३९	२७	५८	२९	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
४	२	४	३	३	२	२	४	२
कृत्ति.	कृत्ति.	कृत्ति.	भ.	पू.भा.	अश्वि.	अश्वि.	मघा	शत.

आकाश लक्षण-मई- १३ से १९ एवं मई २४,२५ को बम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम एवं बिहार में कहीं बादलचाल एवं वर्षा के योग हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उ० प्रदेश में तापमान बढ़ेगा।

शकुन विचार- यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की हवा चले तो घी, तिल, तेल के स्टाक से आश्विन में लाभ मिले।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०५५, शाक १९२०, **ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५** तारीख चन्द्र राशि चण्डीगढ़ उदय-कालिक

(२६ मई से १० जून तक, सन् १९९८ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु,

ग्रह दर्शन - मंगल अस्त है। ३० मई को बुध प्रातः पूर्व मे दीखना बन्द हो जाएगा । प्रातकाल शनि पूर्व में, गुरु-शुक्र पूर्व कपाल में दीखेंगे।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. मुहर्रम	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२६	१	मं	४१	३८	रो.	४१	२२	सु.	३५	५८	किं.	१५	१८	१३	२६	५	२८	वृष			५	२७	७	१२	१	१०	४३	४२	
३४	२८	२	बु	३५	२७	मृ.	३७	१२	धृ.	२८	१०	बा.	८	३३	१४	२७	६	२९	मि.	९	१७	५	२६	७	१३	१	११	४१	२०	चन्द्र दर्शन मु. ३०, बुध कृत्ति. में ३०।८
३४	३०	३	गु	३०	५२	आ.	३४	३७	शू.	२१	३२	तै.	३	१०	१५	२८	७	स १	मिथुन			५	२६	७	१४	१	१२	३८	५६	भ. ५९।३० बाद, सफर प्रा., रम्भा तृतीया, श्री प्रताप जयन्ती (राज.)
३४	३३	४	शु	२८	७	पुन.	३३	५२	गं.	१६	२८	वि.	२८	७	१६	२९	८	२	क.	१९	३	५	२६	७	१४	१	१३	३६	३०	भ. २८।७ तक, बुध वृष में १४।५०, बलिदान दिन गुरु(A)
३४	३५	५	श.	२७	३०	पु.	३५	१५	वृ.	१३	२	बा.	२७	३०	१७	३०	९	३	कर्क			५	२५	७	१५	१	१४	३४	३	बुध पूर्व में अस्त
३४	३७	६	र.	२८	५८	आश्ले.	३८	३७	ध्रु.	११	१५	तै.	२८	५८	१८	३१	१०	४	सिं.	३८	३७	५	२५	७	१५	१	१५	३१	३५	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
३४	४०	७	चं.	३२	१७	म.	४३	५५	व्या.	११	२	ग.	०	३८	१९	जू१	११	५	सिंह			५	२५	७	१६	१	१६	२९	७	भ.३२।१७ बाद, जून प्रारम्भ,
३४	४२	८	मं	३७	१५	पू.फा.	५०	२८	ह.	१२	१०	वि.	४	४६	२०	२	१२	६	सिंह			५	२४	७	१६	१	१७	२६	३६	भ. ४।४६ तक,
३४	४३	९	बु	४३	८	उ.फा.	५७	५५	व.	१४	१०	वा.	१०	१२	२१	३	१३	७	कं.	७	२०	५	२४	७	१७	१	१८	२४	४	बुध रोहि. में ११।४२,
३४	४५	१०	गु	४९	२५	ह.	६०	०	सि.	१६	४२	तै.	१६	१७	२२	४	१४	८	कन्या			५	२४	७	१७	१	१९	२१	३१	श्री गंगा दशहरा,
३४	४७	११	शु	५५	३२	ह.	५	३५	व्य.	१९	२०	व.	२२	२९	२३	५	१५	९	तु.	३९	१८	५	२४	७	१८	१	२०	१८	५८	भ. २२।२९ से ५५।३२ तक, शुक्र भर. में ७।५२,(B)
३४	४९	१२	श.	६०	०	चि.	१३	०	व.	२१	३८	ब.	२८	१६	२४	६	१६	१०	तुला			५	२४	७	१८	१	२१	१६	२२	
३४	५०	१२	र.	१	०	स्वा.	१९	४०	ध.	२३	१८	बा.	१	१०	२५	७	१७	११	तुला			५	२४	७	१९	१	२२	१३	४६	प्रदोष व्रत,
३४	५२	१३	चं.	५	३०	वि.	२५	२२	शि.	२४	१२	तै.	५	३०	२६	८	१८	१२	वृ.	८	५७	५	२४	७	१९	१	२३	११	९	सूर्य मृग. में ९।१०,
३४	५३	१४	मं.	८	५२	अनु.	२९	५८	सि.	२४	१२	व.	८	५२	२७	९	१९	१३	वृश्चिक			५	२३	७	२०	१	२४	८	३०	भ. ८।५२ से ३१।५७ तक, बुध मृग. में २१।५० ,(C)
३४	५४	१५	बु	११	२	ज्ये.	३३	२५	सा.	२३	२०	ब.	११	२	२८	१०	२०	१४	ध.	३३	२५	५	२३	७	२०	१	२५	५	५२	

(A) श्री अर्जुन देव जी ,**(B)** निर्जला एकादशी व्रत (स.), **(C)** श्री सत्य नारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

ज्येष्ठ शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ०।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	१	११	०	०	४	१०
१७	१६	१२	७	०	९	५	११	११
२६	३७	२५	३१	५९	४०	२५	५०	५०
५०	४७	५९	२७	३१	५५	४३	३९	३९
५७	७१८	४२	१२४	७	६१	६	३	३
२८	२५	१६	४४	५४	५९	१६	११	११
-		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
३	१	१	४	४	३	२	४	१
रोहि.	पू.फा.	रोहि.	कृत्ति.	पू.भा.	अश्वि.	अश्वि.	मघा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-गुरु मीन राशि में आ चुका है, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। चौपायों में रोग व्याप्त हो।-''यदा सुरगुरु मींने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्योऽपि विनष्यन्ति चतुष्पदाः'' जनता में अनेक प्रकार के रोगों का प्रसार होगा। इस पक्ष में वृष राशि में सूर्य-मंगल के साथ बुध का मेल हो रहा है, शासकों में भयंकर मतभेद पैदा हों, कहीं सन्धि-शान्ति वार्ताएं विफल होंगी।-''सोमपुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनी नव खण्डेषु कलहश्च महद्भयम्।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख- इस पक्ष में गेहूं, जौं, चना, चावल, मटर, कपास, तिलहन, तेलों में तेजी बने। ३० मई को वायदा व्यापारी विचार पूर्वक काम करें। ५ से ९ जून के लगभग सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, सोना एवं दालवाना में तेजी बने। रूई एवं चान्दी में घटा-बढ़ी चले।

कुण्डली सूर्योदये

ज्येष्ठ शु. १५ बुध , इष्ट ०।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	१	११	०	०	४	१०
२५	२३	१८	२४	१	१९	६	११	११
६	०	२	४४	५८	२	१४	२५	२५
९	४	२९	२७	३७	२०	२३	१३	१३
५७	७६२	४१	१३२	६	७०	५	३	३
२१	२९	५१	४	४४	२४	४९	११	११
-		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
-		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
१	२	३	१	४	२	२	४	१
मृग.	ज्ये.	रोहि.	मृग.	पू.भा.	भर.	अश्वि.	मघा	श्रव.

आकाश लक्षण-मई २७,२९,३०, जून ३,५,८,९ को बम्बई, भूटान, सिक्किम, मैसूर एवं बिहार में वर्षा के योग हैं। मई के अन्त में एवं जून के प्रथम सप्ताह में आसाम, हि०प्र० एवं पंजाब-हरियाण के किसी भाग में बादलचाल बूंदाबांदी के योग हैं।

शकुन विचार- ज्ये शु.सप्तमी को यदि बादल गरजें, दक्षिण की वायु चले तो तिलहन के स्टाफ से कार्तिक में लाभ हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०५५, शाक १९२०, आषाढ कृष्ण पक्ष ६

(११ से २४ जून तक, सन् १९९८ ई.)
उत्तर-दक्षिणायन उत्तर गोल, ग्रीष्म वर्षा ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. सफ़र	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - मंगल अस्त है बुध २१ जून को सायं पश्चिम में दीखने लग जाएगा। प्रातः शनि पूर्व में तथा गुरु एवं शुक्र खमध्यासन्न दीखेंगे।
३४	५५	१	गु	१२	८	मू	३५	४८	शु.	२१	३०	कौ.	१२	८	२९	११	२१	१५	धनु			५	२३	७	२१	१	२६	३	१३	
३४	५६	२	शु.	१२	१०	पू. षा.	३७	१२	शु.	१८	५८	ग.	१२	२०	३०	१२	२२	१६	म.	५२	२०	५	२३	७	२१	१	२७	०	३२	भ. ४१।४२ बाद, बुध मिथुन में २३।४५,
३४	५७	३	श.	११	१५	उ.षा.	३७	४२	ब्र.	१५	४०	वि.	११	१५	३१	१३	२३	१७	मकर			५	२३	७	२१	१	२७	५७	५१	भ. ११।१५ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३४	५९	४	र.	९	३०	श्र.	३७	२५	ऐ.	११	४०	बा.	९	३०	३२	१४	२४	१८	मकर			५	२३	७	२२	१	२८	५५	९	शनि अश्वि. ३ में २८।५४,
३५	०	५	चं.	९	२०	ध.	३६	१५	वै.	६	५८	तै.	९	२०	आ.१	१५	२५	१९	कुं.	६	५०	५	२४	७	२२	१	२९	५२	२८	पञ्चक प्रारम्भ ६।५०,सं.सूर्य मिथुन में ७।४८, मु. ३०(A)
३५	१	६	मं.	३	२८	शत.	३४	२०	वि. प्री.	१ ५५	४० ४२	व.	३	२८	२	१६	२६	२०	कुम्भ			५	२४	७	२२	२	०	४९	४५	भ. ३।२८ से ३१।२२ तक, शुक्र कृत्ति. में २१।२०,
अवम		७	मं.	५९	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३५	१	८	बु.	५४	१५	पू.भा.	३१	३८	आ.	४९	५	बा.	२६	४५	३	१७	२७	२१	मी.	१७	१७	५	२४	७	२३	२	१	४७	२	मंगल मृग. में ३७।१८,
३५	१	९	गु.	४८	३२	उ.भा.	२८	१०	सौ.	४१	२८	तै.	२१	२४	४	१८	२८	२२	मीन			५	२४	७	२३	२	२	४४	२०	
३५	१	१०	शु.	४२	१५	रे.	२४	२	शो.	३४	१०	व.	१५	२४	५	१९	२९	२३	मे	२४	२	५	२४	७	२३	२	३	४१	३८	भ.१५।२४ से ४२।१५ तक,पञ्चक समाप्त २४।२, (B)
३५	१	११	श.	३५	३०	अ.	१९	२८	अ.	२६	२	ब.	८	५३	६	२०	३०	२४	मेष			५	२४	७	२४	२	४	३८	५५	योगिनी एकादशी व्रत (स.)
३५	१	१२	र.	२८	३५	भ.	१४	३५	सु.	१७	४८	कौ.	२	३	७	२१	३१	२५	वृ.	२८	७	५	२४	७	२४	२	५	३६	१२	सूर्य सायन कर्क में ३५।२२, दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रारम्भ. (C)
३५	१	१३	चं.	२१	४५	कृ.	९	४०	धृ.	९	३०	व.	२१	४५	८	२२	आ.१	२६	वृष			५	२५	७	२४	२	६	३३	२८	भ.२१।४५ से ४८।३४ तक,सूर्य आर्द्रा में ६।४५, (D)
३५	१	१४	मं.	१५	२२	चि.	५	१२	शू. गं.	१ ५४	३२ १२	श.	१५	२२	९	२३	२	२७	मि.	३३	२०	५	२५	७	२४	२	७	३०	४५	
३५	१	३०	बु	९	४८	मृ आ.	१ ५८	२८ ४५	वृ.	४७	४२	ना	९	४८	१०	२४	३	२८	मिथुन			५	२५	७	२४	२	८	२८	१	गुरु उ. भा. १ में २४।७,

(A) पुण्यकाल २३।४८ तक, बुध आर्द्रा में २८।५, (**B**) शुक्र वृष में १८।४८,(C) बुध पुन. में ५७।३८, बुध पश्चिम में उदित, प्रदोष व्रत, (**D**) शक आषाढ़ प्रारम्भ,

आषा. कृ. ८ बुध, इष्ट ०।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१०	१	२	११	०	०	४	१०
१	२५	२२	१	२	२७	६	११	११
४७	५९	५४	५५	४२	१६	५३	२	२
११	५७	११	३६	२५	२४	५१	५७	५७
५७	८४३	४१	१२५	५	७०	५	३	३
१७	९	३०	३२	३७	४८	२४	११	११
—	—	मा.	मा.	व	मा.	मा.	व	व
—	—	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
३	२	४	१	४	१	३	४	२
मृग.	पू.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पू.भा.	कृति.	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

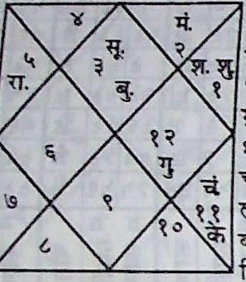

लोक भविष्य-इस मास में पांच गुरुवार है,-पश्चिमी देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, कहीं राजनैतिक संकट बने एवं भयंकर युद्धभय व्याप्त हो,-**"यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।"**- टर्की, अफगानिस्तान, एवं अफ्रीकन देशों में भी कहीं रक्तपात कहीं भूकम्प से जन धन हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार रुख-पक्षारम्भ में रूई, सोना-चांदी में मन्दा,लेकिन १५ जून के लगभग लोहा, तेल, तिलहन, शक्कर,चीनी, घी, दालवाना, चावल में तेजी बने। इस समय सोना-चांदी में भी तेजी बनेगी। १९ जून के लगभग रूई-कपास में अच्छी तेजी-मन्दी आएगी। २१ जून के लगभग बाजार का रुख देखें, अन्यथा हानि संभव है। अचानक तेजी मन्दी के रिएक्शन आएंगे।

कुण्डली सूर्योदये

आषा. कृ. ३० बुध, इष्ट ०।१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	२	११	१	०	४	१०
८	६	२७	२३	३	५	७	१०	१०
२८	२१	४३	५४	१८	३३	३०	४०	४०
१४	४४	५०	४६	१२	०	४	४१	४१
५७	८३६	४१	१११	४	७१	४	३	३
१५	३६	११	४०	२५	८	५३	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
१	४	२		४	३	३	४	२
आर्द्रा	मृ.	मृ.	पु.	पू.भा.	कृति.	अश्वि.	मघा	शत.

आकाश लक्षण-जून १२,१५,१६,१७,१९,२१,२२ को भूटान, शिलांग, काठमाण्डु, उ. प्र., म. प्र.,आसाम, पंजाब, हरियाणा एवं हि. प्र. में बादल वर्षा के योग हैं। इन दिनों जोरदार हवा भी चले।

शकुन विचार-यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, वर्षा हो, तो अनाजों में तेजी आती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०५५, शाक १९२०, आषाढ शुक्ल पक्ष ७

(२५ जून से ९ जुलाई तक, सन् १९९८ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा -ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आषा.	अं. जून	श. आषा.	मु. सफ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - मंगल अस्त है । प्रातः पूर्व में शुक्र चमकता दीखेगा । गुरु शनि पूर्व कपाल में होंगे । सायं बुध को पश्चिम में देखा जा सकेगा ।
३५	१	१	गु.	५	२५	पुन.	५७	४०	शु.	४२	२२	ब.	५	२५	११	२५	४	२१	क.	४२	५५	५	२५	७	२५	२	९	२५	१७	चन्द्र दर्शन मु. ४५,
३५	०	२	शु.	२	२८	पु	५८	८	व्या.	३८	२०	कौ.	२	२८	१२	२६	५	र.१	कर्क			५	२६	७	२५	२	१०	२२	३३	रबी उल-अव्वल प्रा., रथयात्रा प्रारम्भ(पुष्य युक्त द्वितीया में)
३५	०	३	श.	१	१८	आश्ले.	६०	०	ह.	३५	४८	ग.	१	१८	१३	२७	६	२	कर्क			५	२६	७	२५	२	११	१९	४८	भ. ३१।३९ बाद, मंगल मिथुन में १८।४७,बुध कर्क में(A)
३५	०	४	र.	२	०	आश्ले.	०	२८	व.	३४	४५	वि.	२	०	१४	२८	७	३	सिं.	०	२८	५	२६	७	२५	२	१२	१७	३	भ. २।० तक,
३४	५९	५	चं.	४	३०	म.	४	३८	सि.	३५	०	बा.	४	३०	१५	२९	८	४	सिंह			५	२६	७	२५	२	१३	१४	१८	बुध पुष्य में १७।२, कुमार षष्ठी (देखें पृष्ठ १०४),
३४	५८	६	मं.	८	३८	पू.फा.	१०	१५	व्य.	३६	२२	तै.	८	३८	१६	३०	९	५	कं.	२६	५६	५	२७	७	२५	२	१४	११	३२	विवस्वत् सप्तमी (षष्ठी विद्धा),
३४	५७	७	बु.	१३	५८	उ.फा.	१७	८	व.	३८	३२	व.	१३	५८	१७	जु.१	१०	६	कन्या			५	२७	७	२५	२	१५	८	४५	भ. १३।५८ से ४६।५७ तक, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५६	८	गु.	१९	५५	ह.	२४	३५	प.	४१	०	ब.	१९	५५	१८	२	११	७	तु.	५८	१७	५	२८	७	२५	२	१६	५	५७	
३४	५५	९	शु.	२५	५५	चि.	३१	५८	शि.	४३	२२	कौ.	२५	५५	१९	३	१२	८	तुला			५	२८	७	२५	२	१७	३	९	
३४	५४	१०	श.	३१	२५	स्वा.	३८	५२	सि.	४५	१२	ग.	३१	२५	२०	४	१३	९	तुला			५	२८	७	२५	२	१८	०	२२	
३४	५३	११	र.	३५	५२	वि.	४४	४२	सा.	४६	८	व.	३	३९	२१	५	१४	१०	वृ.	२८	१५	५	२९	७	२५	२	१८	५७	३४	भ. ३।३८ से ३५।५२ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (स.)
३४	५२	१२	चं.	३९	२	अनु.	४९	१५	शु.	४६	१०	ब.	७	२७	२२	६	१५	११	वृश्चिक			५	२९	७	२५	२	१९	५४	४६	सूर्य पुन. में ५।२५, राहु मघा ३ केतु शत. १ में ४८।८,
३४	५०	१३	मं.	४०	४५	ज्ये.	५२	२८	शु.	४४	५८	कौ.	९	५४	२३	७	१६	१२	ध.	५२	२८	५	३०	७	२५	२	२०	५१	५८	मंगल आर्द्रा में ६।५५, भौम प्रदोष व्रत,
३४	४८	१४	बु.	४१	२	मू.	५४	१२	ब्र.	४२	४२	ग.	१०	५४	२४	८	१७	१३	धनु			५	३०	७	२४	२	२१	४९	१०	भ.४१।२ बाद, बुध आश्ले. में २।४०, शुक्र मृग. में ५६।२०,
३४	४६	१५	गु.	४०	०	पू.षा.	५४	४०	ऐ.	३९	२०	वि.	१०	३१	२५	९	१८	१४	धनु			५	३१	७	२४	२	२२	४६	२१	भ. १०।३१ तक,गुरु पूर्णिमा, (व्यास पूजा),आषाढ़ी पूर्णिमा, (B) श्री सत्यनारायण व्रत , चातुर्मास्य व्रत-नियम प्रारम्भ, कोकिला व्रत,

(A) २०।५५, शुक्र रोहि. में २३।३०,(B),

कुण्डली सूर्योदये

आषा. शु. ८ गुरु, इष्ट ०।५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	३	११	१	०	४	१०
१६	१८	३	७	३	१५	८	१०	१०
६	२९	११	४६	४८	३	७	१५	१५
४	४२	५१	४१	३४	११	०	१६	१६
५७	७१०	४०	१३	२	७१	४	३	३
१२	४९	४७	५८	५९	२७	१६	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
३	३	३	२	१	२	३	४	२
आर्द्रा	हस्त	मृग.	पुष्य	उ.भा.	रोहि.	अश्वि.	मघा	शत.

लोक भविष्य-गुरु उ.भा. के प्रथम चरण में आया है, कुछ प्रान्तों में अनावृष्टि का संकेत मिलता है। मंगल मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा- इस प्रकार शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है, जो कि कहीं यान दुर्घटना से जनधन हानि का संकेत देती है। सूर्य-मंगल का राशि सम्बन्ध कहीं वायु-वर्षा से किंवा आकाशी बिजली गिरने से जन धन हानि के योग बनाता है-"**मिथुने च यदा भौमः मेघश्च प्रबलो भुवि। आरक्तं सर्व-द्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि॥**" लाल चीजों में तेजी बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२७ जून के लगभग रूई में झटके के साथ मन्दी आए। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तांबा एवं लाल मिर्च में तेजी बने। २७ जून के लगभग सोना-चांदी एवं रूई में जोरदार घटा बढ़ी चले। ६ जुलाई के लगभग करयाणा की सभी चीजों में तेजी बने। तेल तिलहन तेज रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदये

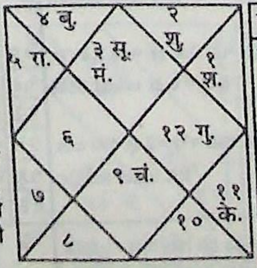

आषा. शु. १५ गुरु, इष्ट ५९।५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	२	३	११	१	०	४	१०
२३	२७	८	१९	४	२४	८	९	९
४३	४९	३६	१४	७	३६	३८	४९	४९
३४	५८	४७	६	९	१	४६	५०	५०
५७	८०८	४०	७५	१	७१	३	३	३
११	३८	२५	१२	२९	४९	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	१	१	१	१	३	३	१
पुन.	उ.षा.	आर्द्रा	आश्ले.	उ.भा.	मृग.	अश्वि.	मघा	शत.

आकाश लक्षण-जून २७,२९, जुलाई ६,७,९ को पंजाब, हि.प्र.,हरियाणा, भूटान, शिलांग, आसाम में अनेकत्र बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार-यदि आषाढ़ शुक्ल पंचमी को पश्चिम से हवा चले, बादल वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे तो अनाजों का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ मिले।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०५५, शाक १९२०, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

१० से २३ जुलाई तक, सन् १९९८ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा-ऋतु,

ग्रह दर्शन - पक्ष के मध्य से मंगल प्रातः पूर्व में दीखना शुरु हो जाएगा। शुक्र इसके पास चमकता दीखेगा। गुरु एवं शनि खमध्यासन्न दीखेंगे। सांय बुध को पश्चिम में देखें।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आषा.	अं. जुला.	श. आषा.	मु. ज़ि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४४	१	शु.	३७	५०	उ.षा.	५४	८	वै.	३५	८	बा.	८	५५	२६	१०	१९	१५	म.	९	३२	५	३१	७	२४	२	२३	४३	३३	
३४	४२	२	श.	३४	४५	श्र.	५२	३८	वि.	३०	५	तै.	६	१८	२७	११	२०	१६	मकर			५	३२	७	२४	२	२४	४०	४६	अशून्य शयन व्रत,
३४	४०	३	र.	३०	५०	ध.	५०	३०	प्री.	२४	२८	व.	२	४८	२८	१२	२१	१७	कुं.	२१	३४	५	३२	७	२४	२	२५	३७	५८	भ.२।४८ से ३०।५० तक,पञ्चक प्रारम्भ२१ ३४,श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३४	३८	४	चं.	२६	२२	शत.	४७	४८	आ.	१८	१५	बा.	२६	२२	२९	१३	२२	१८	कुम्भ			५	३३	७	२३	२	२६	३५	११	
३४	३६	५	मं.	२१	२८	पू.भा.	४४	४०	सौ.	११	४५	तै.	२१	२८	३०	१४	२३	१९	मी.	३०	२६	५	३३	७	२३	२	२७	३२	२५	शुक्र मिथुन में ३०।१२
३४	३४	६	बु.	१६	१०	उ.भा.	४१	१५	शो.	४	५२	व.	१६	१०	३१	१५	२४	२०	मीन			५	३४	७	२३	२	२८	२९	४०	भ. १६।१० से ४३।२५ तक
									अ.	५७	५०																			
३४	३२	७	गु.	१०	४०	रे.	३७	४०	सु.	५०	४०	ब.	१०	४०	आ.१	१६	२५	२१	मे.	३७	४०	५	३४	७	२२	२	२९	२६	५६	पञ्चक समाप्त ३७।४०,सं.सूर्य कर्क में ३४।३५, मु.३०,(A)
३४	३०	८	शु.	५	०	अ.	३३	५८	धृ.	४३	२२	कौ.	५	०	२	१७	२६	२२	मेष			५	३५	७	२२	३	०	२४	११	
अवम		९	शु.	५९	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
३४	२७	१०	श.	५३	५५	भ.	३०	१५	शू.	३६	१०	व	२६	३८	३	१८	२७	२३	वृ.	४४	२४	५	३६	७	२२	३	१	२१	२८	भ. २६।३८ से ५३।५५ तक, गुरु वक्री ३।२०
३४	२५	११	र.	४८	२५	कृ.	२६	४८	गं.	२९	१०	ब.	२१	१०	४	१९	२८	२४	वृष			५	३६	७	२१	३	२	१८	४५	कामिका एकादशी व्रत (स.)
३४	२२	१२	चं.	४३	३२	रो.	२३	४०	वृ.	२२	२५	कौ.	१५	५९	५	२०	२९	२५	मि.	५२	३५	५	३७	७	२१	३	३	१६	३	सूर्य पुष्य में ४।५,बुध मघा सिंह में २१।३५,शुक्र आर्द्रा में २।५२
३४	२०	१३	मं.	३९	२२	मृ.	२१	१०	ध्रु.	१६	१०	ग.	११	२७	६	२१	३०	२६	मिथुन			५	३७	७	२०	३	४	१३	२२	भ.३९।२२ बाद, भौम प्रदोष व्रत,
३४	१७	१४	बु.	३६	५	आ.	१९	२८	व्या.	१०	३५	वि.	७	४४	७	२२	३१	२७	मिथुन			५	३८	७	२०	३	५	१०	४१	भ. ७।४४ तक,
३४	१४	३०	गु.	३४	०	पुन.	१८	५२	ह.	५	५५	च.	५	३	८	२३	श्रा.१	२८	क.	४	४	५	३८	७	१९	३	६	८	१	सूर्य सायन सिंह में १।५८, हरियाली अमावस, शक श्रावण प्रारम्भ,

(A) पुण्यकाल ४।३५ बाद, मंगल उदित,

श्राव. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५९।४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	३	११	२	०	४	१०
१	११	१३	२८	४	४	९	९	९
२१	२६	५८	०	१२	११	४	२४	२४
१५	२८	५३	४१	३१	४३	५८	२४	२४
५७	८५०	४०	५२	०	७२	२	३	३
१६	४७	४	४१	६	१०	५१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	३	४	१	४	३	३	१
पुन.	पुन.	आर्द्रा	आर्द्रा	उ.भा.	मघा	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

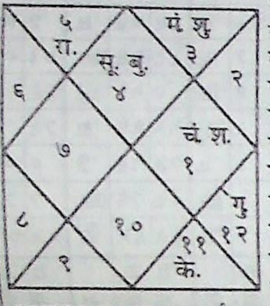

लोक भविष्य-शुक्र मिथुन राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा, इस पर शनि की दृष्टि भी है। जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में जोरदार तेजी बने, जिससे जन साधारण में रोष प्राप्त हो-"मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यव-गोधूम चणकाः शालिश्चैव विशेषतः॥" इस मास में पाँच शुक्र एवं शनिवार होने से लंका, एवं पश्चिमी भूभाग पर कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, किसी वरिष्ठ नेता के निधन से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- १४ जुलाई के लगभग रूई, कपास, सूत, तिल, सरसों, अरहर, गुवार में काफी मन्दा आने के बाद १६ जुलाई को रूई, सूत, बादाम, गुड़,खाण्ड,शक्कर, सरसों, चांदी-सोना में तेजी बनेगी, गेहूं,जौं, चना, चावल, घी में कुछ मन्दा रहे। २० जुलाई के लगभग सोना, चांदी, सूत, रूई में तेजी, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदये

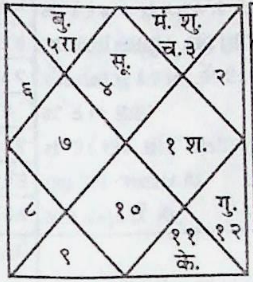

श्राव. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५९।३८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	४	११	२	०	४	१०
७	१२	१७	२	४	११	९	९	९
४	१८	५८	२४	१०	२५	२०	५	५
५८	२९	४०	४२	२	२१	४२	१९	१९
५७	७७८	३९	३०	१	७२	२	३	३
१९	२०	४९	४७	१६	२५	१७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	४	१	१	१	३	३	१
पुष्य	पुष्य	आर्द्रा	मघा	उ.भा.	आर्द्रा	अश्वि.	मघा	शत.

आकाश लक्षण-जुलाई १४ से २१ तक भारत के अनेक प्रान्तों में विशेषतः उत्तरी भारत में अनेकत्र व्यापक वर्षा के योग हैं। कहीं आकाशी बिजली से भी हानि के समाचार मिलें।

शकुन विचार-यदि श्रावण में बिजली चमके बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष की सूचना मिलती है। यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, श्रावण शुक्ल पक्ष १																तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२४ जुलाई से ८ अगस्त तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु,
																प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - प्रातः शुक्र तथा रक्तवर्ण मंगल पूर्व में होंगे । शनि खमध्य की ओर जाता दीखेगा। बुध पक्षान्त में (६ अगस्त को) सायं पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	श्रावण	जुला.	श्राव.	र.उ.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	११	१	शु.	३३	१२	पु.	१९	३५	व. / सि.	२ / ५९	१० / ३५	किं.	३	३६	९	२४	२	२९	कर्क			५	३९	७	१९	३	७	५	२१	
३४	८	२	श.	३३	५८	आश्ले.	२१	४२	व्य.	५८	१५	बा.	३	३५	१०	२५	३	३०	सि.	२१	४२	५	४०	७	१८	३	८	३	४१	चन्द्र दर्शन मु. ३०,
३४	६	३	र.	३६	१५	म	२५	२५	व.	५८	१०	तै.	५	७	११	२६	४	र.१	सिंह			५	४०	७	१८	३	९	०	२	रबी उस्सानी प्रा, मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज,
३४	३	४	चं.	४०	०	पू.फा.	३०	३०	प.	५९	२	व.	८	८	१२	२७	५	२	क.	४७	५	५	४१	७	१७	३	९	५७	२४	भ. ८।८ से ४०।० तक, मंगल पुन. में २।३४
३४	०	५	मं.	४४	५८	उ.फा.	३६	५०	शि.	६०	०	ब.	१२	२१	१३	२८	६	३	कन्या			५	४१	७	१६	३	१०	५४	४७	नाग पंचमी,
३३	५७	६	बु.	५०	४२	ह.	४३	५५	शि.	०	४८	कौ.	१७	५०	१४	२९	७	४	कन्या			५	४२	७	१६	३	११	५२	९	श्री कल्कि जयन्ती,
३३	५४	७	गु.	५६	४५	चि.	५१	२०	सि.	३	२	ग.	२३	४४	१५	३०	८	५	तु.	१७	३७	५	४३	७	१५	३	१२	४९	३२	भ. ५६।४५ बाद, गोस्वामी श्री तुलसीदास जयन्ती,
३३	५०	८	शु.	६०	०	स्वा.	५८	३२	सा.	५	३०	वि.	२९	३५	१६	३१	९	६	तुला			५	४३	७	१४	३	१३	४६	५५	भ. २९।३५ तक, बुध वक्री ५।३०, शुक्र पुन. में ५।२, (A)
३३	४७	८	श.	२	२५	वि.	६०	०	शु.	७	३५	ब.	२	२५	१७	अ.१	१०	७	वृ.	४८	२०	५	४४	७	१४	३	१४	४४	२०	अगस्त प्रारम्भ,
३३	४४	९	र.	७	१५	वि.	४	५५	शु.	८	५८	कौ.	७	१५	१८	२	११	८	वृश्चिक			५	४५	७	१३	३	१५	४१	४५	वक्री नेपच्यून उ.षा. ३ में ५१।४८,
३३	४१	१०	चं.	१०	५२	अनु.	१०	५	ब्र.	९	२५	ग.	१०	५२	१९	३	१२	९	वृश्चिक			५	४५	७	१२	३	१६	३९	११	भ. ४१।५१ बाद, सूर्य आश्ले. में ०।४८,
३३	३७	११	मं.	१२	५०	ज्ये.	१३	४२	ऐ.	८	३५	वि.	१२	५०	२०	४	१३	१०	ध.	१३	४२	५	४६	७	१२	३	१७	३६	३८	भ. १२।५० तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.)
३३	३३	१२	बु.	१३	३५	मू.	१५	४२	वै.	६	२८	बा.	१३	३५	२१	५	१४	११	धनु			५	४६	७	११	३	१८	३४	६	प्रदोष व्रत,
३३	३०	१३	गु.	११	४५	पू.षा.	१६	०	वि. / प्री.	२ / ५८	५८ / १७	तै.	११	४५	२२	६	१५	१२	म.	३०	३४	५	४७	७	१०	३	१९	३१	३३	बुध पश्चिम में अस्त
३३	२६	१४	शु.	८	५०	उ.षा.	१४	५०	आ.	५२	२५	व.	८	५०	२३	७	१६	१३	मकर			५	४८	७	९	३	२०	२९	२	भ.८।५० से ३६।४५ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, शुक्ल-कृष्ण (B)
३३	२३	१५	श.	४	४०	श्र.	१२	२५	सौ.	४५	४५	ब.	४	४०	२४	८	१७	१४	कु.	४०	४२	५	४८	७	८	३	२१	२६	३२	पञ्चक प्रारम्भ ४०।४२, शुक्र कर्क में १३।२५, रक्षा बन्धन (C)

(A) श्री दुर्गा अष्टमी, (B) यजु उपाकर्म, श्री हयग्रीव जन्म, (C) (राखी) (देखें पृष्ठ १०५), ऋक् उपाकर्म,

श्राव. शु. ८ शुक्र, इष्ट ५९।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	४	११	२	०	४	१०
१४	२०	२३	४	३	२१	९	८	८
४२	१०	१५	२३	५४	५	३६	३९	३९
४७	९	५६	५३	५६	४९	१०	५३	५३
५७	७२२	३९	७	२	७२	१	३	३
२४	१२	२८	१३	४९	४५	२८	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	१	१	१	१	३	३	१
पुष्य	विशा.	पुन.	मघा	उ.भा.	पुन.	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-बुध-गुरु वक्री हैं, सिंह राशिस्थ- बुध का राहु के साथ मेल है। मंगल-शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं- अनावृष्टि, कहीं दुर्भिक्ष, लूटपाट की घटनाएं अधिक हों। राष्ट्रों में कहीं संघर्ष की स्थिति बने। जनता में अनेक प्रकार के रोग व्याप्त हों। श्रावणी पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होने से यदि इस दिन वर्षा हो तो आगे उत्तम सुभिक्ष रहे-"श्रवणर्क्षे पूर्णिमायां यदि मेघः प्रवर्षति। तस्मिन् काले सुभिक्षं स्यात् धरित्री चान्न संकुला।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२७ जुलाई के लगभग रूई, चांदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में तेजी रहे। २९,३० जुलाई को अचानक बाजार बदल सकते हैं। २ अगस्त को सोना, चांदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल तेल, सरसों, सूरजमुखी, मिर्च में तेजी बने। ६अगस्त को वायदा व्यापारी सावधानी से व्यापार करें, अचानक तेजी मन्दा बनेगा। ८ अग . के लगभग रूई में अच्छी मन्दी के बाद तेजी बने।

आकाश लक्षण-जुलाई २७,२९,३०,३१, अग. २,६,८ को उ.भारत, बंगाल, बिहार, आसाम में व्यापक वर्षा के योग हैं। लेकिन कुछ स्थानों पर सूखा, व कहीं बाढ़ से हानि भी हो।

शकुन विचार-यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

कुण्डली सूर्योदये

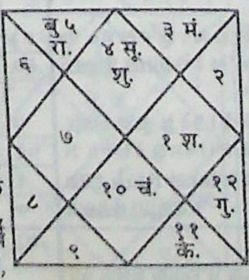

श्राव. शु. १५ शनि , इष्ट ५९।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	२	४	११	३	०	४	१०
२२	४	२८	१	३	०	९	८	८
२३	२०	३०	७	२६	४८	४५	१४	१४
१७	१४	२७	७	४८	५०	८	२७	२७
५७	८५७	३९	४५	४	७३	०	३	३
३०	२४	७	५३	१६	३	३९	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	३	१	१	४	३	३	१
आश्ले.	धनि.	पुन.	मघा	उ.भा.	पुन.	अश्वि.	मघा	शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(९ से २२ अगस्त तक, सन् १९९८ ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन - प्रातः मंगल शुक्र पूर्व में एवं शनि पूर्व कपाल में होंगे। गुरु पश्चिम कपाल में दीखेगा। बुध अस्त है।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	तारीखें प्र. श्राव.	अं. अग.	श. श्राव.	मु. र.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	श.	५९	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३३	२०	२	र.	५३	२५	ध.	८	५८	शो.	३८	२०	तै.	२६	२७	२५	९	१८	१५	कुम्भ			५	४९	७	७	३	२२	२४	३	वक्री यूरेनस श्रवण २ में ५५।१२,
३३	१४	३	चं.	४६	५८	श.	४	५०	अ.	३०	३०	व.	२०	१२	२६	१०	१९	१६	मीं.	४६	२७	५	५०	७	७	३	२३	२१	३५	भ. २०।११ से ४३।५८ तक, व.बुध आश्ले., कर्क में २१।४२, (A)
३३	११	४	मं.	४०	१८	पू.भा. उ.भा.	० ५५	२० ४०	सु.	२२	२८	ब.	१३	३८	२७	११	२०	१७	मीन			५	५०	७	६	३	२४	११	८	मंगल कर्क में १६।३०, शुक्र पुष्य. में ३।१०, बहुला चतुर्थी (B)
३३	७	५	बु.	३३	४०	रे.	५१	५	धृ.	१४	१८	कौ.	६	५९	२८	१२	२१	१८	मे.	५१	५	५	५१	७	५	३	२५	१६	४२	पञ्चक समाप्त ५१।५,
३३	३	६	गु.	२७	२०	अ.	४६	५०	शू. गं.	६ ५८	२० ४४	ग.	०	३०	२९	१३	२२	१९	मेष			५	५१	७	४	३	२६	१४	१८	भ. २७।२० से ५४।२० तक,
३२	५९	७	शु.	२१	२०	भ.	४३	२	वृ.	५१	२५	ब.	२१	२०	३०	१४	२३	२०	वृ.	५७	१५	५	५२	७	३	३	२७	११	५५	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्तों = गृहस्थियों के लिए),
३२	५५	८	श.	१५	५८	कृ.	३९	५२	ध्रु.	४४	४२	कौ.	१५	५८	३१	१५	२४	२१	वृष			५	५३	७	२	३	२८	९	३४	शनि वक्री २५।३०, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (C)
३२	४८	९	र.	११	२२	रो.	३७	३२	व्या.	३८	४०	ग.	११	२२	भा.१	१६	२५	२२	वृष			५	५३	७	१	३	२९	७	१५	भ. ३९।२७ बाद, सं. सूर्य मघा सिंह में ५४।५०, मु. ३०, (D)
३२	४४	१०	चं.	७	३२	मृ.	३६	२	ह.	३३	१८	वि.	७	३२	२	१७	२६	२३	मि.	६	४७	५	५४	७	०	४	०	४	५७	भ. ७।३२ तक,
३२	४२	११	मं.	४	३८	आ.	३५	२८	व.	२८	३८	बा.	४	३८	३	१८	२७	२४	मिथुन			५	५५	६	५९	४	१	२	४०	अजा एकादशी व्रत (स.),
३२	३७	१२	बु.	२	४८	पुन.	३५	५८	सि.	२५	००	तै.	२	४८	४	१९	२८	२५	क.	२०	५०	५	५५	६	५८	४	२	०	२५	प्रदोष व्रत,
३२	३४	१३	गु.	२	०	पु.	३७	३५	व्य.	२२	५	व.	२	०	५	२०	२९	२६	कर्क			५	५६	६	५७	४	२	५८	११	भ. २।० से ३२।१३ तक,
३२	३०	१४	शु.	२	२५	आश्ले.	४०	२२	व.	२०	१२	श.	२	२५	६	२१	३०	२७	सिं.	४०	२२	५	५६	६	५६	४	३	५६	०	शुक्र आश्ले. में ५७।१०, कुशोत्पाटिनी अमा (देखें पृष्ठ १०५), (E)
३२	२६	३०	श.	४	०	म.	४४	१८	प.	११	१०	ना.	४	०	७	२२	३१	२८	सिंह			५	५७	६	५५	४	४	५३	४१	शनैश्चरी अमावस, सूर्य ग्रहण (भारत में दृश्य),

सूर्य ग्रहण २२ अग. '९८

(A) वक्री गुरु पू.भा. ४ में ३४।५, (B) संकष्ट चतुर्थी, (चन्द्रोदय रात्रि ९ घं. ३० मि.) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (C) (वैष्णवों = सन्यासियों के लिए), (D) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, मंगल पुष्य में २४।२२, वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी, श्री गुग्गा नवमी, (E) पिठोरी अमा ,

भाद्र. कृ. ८ शनि, इष्ट ५९।०२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	३	११	३	०	४	१०
२९	१४	३	२५	२	९	९	७	७
६	२६	३	३४	५३	२१	४७	५२	५२
१८	२४	३२	५४	२७	१२	३२	१२	१२
५७	८२८	३८	७६	५	७३	०	३	३
४१	२०	५२	०	२४	२३	५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	४	३	४	१	३	३	१
आश्ले.	रोहि.	पुन.	आश्ले.	पू.भा.	पुष्य	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-शुक्र-मंगल दोनों कर्क राशि में हैं-अनाज व खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी से जनता में असन्तोष व्याप्त हों। लेकिन गुरु की दृष्टि होने से शासन स्थिति पर नियन्त्रण पा लेगा। इस पक्ष में पुष्य नक्षत्र का शुक्र जनता में किंवा देशों में परस्पर प्रेम-सौहार्द एवं धन धन्य समृद्धि का सूचक है। लेकिन इस मास मे पांच शनिवार कहीं भूकम्प व प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देते हैं।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में अनाज, सोना, चांदी, सण, वस्त्र, सूत में तेजी एवं रूई में मन्दा बने। गुड़, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना में पहले तेजी बाद में मन्दा बने। १२ अगस्त के लगभग गुड़, चीनी, चांदी, सूत में अचानक तेजी बने। १७ अगस्त से पक्षान्त तक उठा पटक के साथ बाजारों में अच्छी तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण-९से १२ अगस्त,१४ से १६ तक एवं २१ अगस्त को उत्तर भारत में एवं भारत के अन्य कुछ प्रान्तों में भी बादल वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार-यदि भाद्रपद कृष्ण तृतीया को बादल हों तो अनाज के स्टाक से छठे मास में लाभ हों-"भादों कारी तीज में उत्तर दिशा प्रदोष। बादल तब सुख मानिये मिटे मिटाया दोष। संग्रह कर लो अन्न का रुका रहे षट्मास। लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास॥"

कुण्डली सूर्योदये

भाद्र. कृ. ३० शनि, इष्ट ५८।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	३	११	३	०	४	१०
५	१६	७	२२	२	१७	९	७	७
५०	१९	३४	१०	१२	५५	४४	२९	२
३३	३७	४४	५७	२७	३७	४७	५६	५६
५७	७३४	३८	३	६	७३	०	३	३
५१	५१	३४	२४	२५	३९	४९	११	११
-	-	मा.	व	व	मा.	व	व	व
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
२	१	२	२	४	१	३	३	१
मघा	पू.फा.	पुष्य	आश्ले.	पू.भा.	आश्ले.	अश्वि.	मघा	शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(२३अगस्त से ६ सितम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन उत्तर गोल, शरद ऋतु।

ग्रह दर्शन -सूर्योदय से पहले मंगल,शुक्र पूर्व में एवं शनि खमध्यासन्न होगा। बुध पक्ष के प्रारम्भ से ही प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. भाद्र.	अं. अग.	श. भाद्र.	मु. र.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अ.	क.	वि.	
३२	२२	१	र.	६	४८	पू.फा.	४९	२२	शि.	११	८	ब.	६	४८	८	२३	१	२९	सिंह			५	५८	६	५४	४	५	५१	३९	चन्द्र दर्शन मु. ३०,सूर्य सायन कन्या में ६।१८, (A)
३२	१८	२	चं.	१०	४८	उ.फा.	५५	३२	सि.	११	५५	कौ.	१०	४८	९	२४	२	ज.१	क.	५	५४	५	५८	६	५३	४	६	४९	३१	जमद उल अव्वल प्रारम्भ, श्री वराह जयन्ती
३२	१३	३	मं.	१५	४२	ह.	६०	०	सा.	२१	३०	ग.	१५	४२	१०	२५	३	२	कन्या			५	५९	६	५२	४	७	४७	२५	भ.४८।३६ बाद, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (B)
३२	५	४	बु.	२१	३०	ह.	२	२८	शु.	२३	३८	वि.	२१	३०	११	२६	४	३	तु.	३६	९	५	५९	६	५०	४	८	४५	१९	भ. २१।३० तक, विनायक चतुर्थी, सिद्धि विनायक व्रत(C)
३२	३	५	गु.	२७	३५	चि.	९	५०	शु.	२६	०	बा.	२७	३५	१२	२७	५	४	तुला			६	०	६	४९	४	९	४३	१६	ऋषि पंचमी,
३१	५९	६	शु.	३३	३८	स्वा.	१७	२०	ब्र.	२८	२२	कौ.	०	३७	१३	२८	६	५	तुला			६	१	६	४८	४	१०	४१	१५	सूर्य षष्ठी
३१	५५	७	श.	३९	५	वि.	२४	२२	ऐ	३०	२०	ग.	६	२२	१४	२९	७	३	वृ.	७	३७	६	१	६	४७	४	११	३९	१३	भ. ३९।५ बाद,
३१	५०	८	र.	४३	३०	अनु.	३०	२८	वै.	३१	२२	वि.	११	१८	१५	३०	८	७	वृश्चिक			६	२	६	४६	४	१२	३७	१५	भ.११।१८ तक,सूर्य पू.फा. में ४४।१०,श्री महालक्ष्मी व्रत(D)
३१	४६	९	चं	४६	२५	ज्ये.	३५	१२	वि.	३१	३२	बा.	१४	५८	१६	३१	९	८	ध.	३५	१२	६	२	६	४५	४	१३	३५	१५	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
३१	४२	१०	मं.	४७	३०	मू.	३८	१८	प्री.	३०	१८	तै.	१६	५८	१७	सि१	१०	९	धनु			६	३	६	४४	४	१४	३३	१८	शुक्र मघा सिंह में ४७।२८, सितम्बर प्रारम्भ
३१	३८	११	बु	४६	४५	पूषा.	३९	२८	आ.	२७	३०	व.	१७	८	१८	२	११	१०	म	५४	१८	६	४	६	४२	४	१५	३१	२२	भ. १७।७ से ४७।३० तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.)
३१	३४	१२	गु	४४	८	उषा.	३८	५०	सौ.	२३	१८	ब.	१५	२७	१९	३	१२	११	मकर			६	४	६	४१	४	१६	२९	२८	बुध मघा सिंह में ५९।४०, अगस्त्य उदय,श्रवण द्वादशी(E)
३१	३०	१३	शु.	३९	४२	श्र.	३६	२८	शो.	१७	३२	कौ.	११	५५	२०	४	१३	१२	मकर			६	५	६	४०	४	१७	२७	३५	प्रदोष व्रत,
३१	२५	१४	श.	३३	५५	ध.	३२	३५	अ.	१०	३५	ग.	६	४९	२१	५	१४	१३	कु.	४	३२	६	५	६	३९	४	१८	२५	४४	भ. ३३।५५ बाद,पंचक प्रा. ४।३२,अनन्त चतुर्दशी व्रत,
३१	२०	१५	र.	२६	५२	श.	२७	३५	सु.	२	३०	वि.	०	२४	२२	६	१५	१४	कुम्भ			६	६	६	३८	४	१९	२३	५४	भ. ०।२४ तक, मंगल आश्रेषा में १२।३०, प्रोष्ठपदी श्राद्ध(F)
									धृ.	५३	४०																			

(A) शरद ऋतु प्रा., बुध मार्गी ५४।५५ , बुध पूर्व में उदित, शक भाद्रपद प्रारम्भ, (B) साम उपाकर्म, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध, चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. ५२ मि.), वरद चतुर्थी (पूर्वविद्धा), (C) (देखें पृष्ठ १०५),(D) प्रारम्भ, दूर्वाष्टमी, श्री राधाष्टमी, (E) श्री वामन जयन्ती,(F) पूर्णिमा श्राद्ध,सत्यनारायण व्रत,

भाद्रपद शुक्ल ८रवि, इष्ट ५८।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	३	११	३	०	४	१०
१३	२२	१२	२५	१	२७	१	७	७
३३	२५	४२	४	१७	४५	३५	४	४
५७	२८	१२	४	५४	४६	२५	३०	३०
५८	७४८	३८	७८	७	७३	१	३	३
१	३१	१५	४१	१६	५६	४५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	२	३	३	४	४	३	३	१
पू.फा.	ज्ये.	पुष्य	आश्ले.	पू.भा.	आश्ले.	अश्वि.	मघा	शत.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-इस मास में पांच रविवार हैं, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं वरिष्ठ व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो, सीमा प्रान्तों पर वातावरण अशान्त रहे-,''यत्र मासे रवेर्वारा: जायन्ते पंच संततम्।दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात्तदा स्यात्तु महद्भयम ॥''

यहां शुक्र-बुध-सूर्य एवं राहु सिंह राशि में हैं,-कहीं भयंकर वर्षा से जन धन हानि के समाचार मिलें कहीं वर्षा की कमी भी अनुभव हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में रूई में पहले मन्दी बाद में तेजी हो, गेहूं,जौ, चना आदि अनाज एवं दालवाना में तेजी रहेगी। तेल,अलसी,अरण्ड, गुड़, बिनौला एवं मूंगफली आदि में मन्दे का ही रुख रहेगा। १ सितम्बर के बाद चांदी, सोना, रूई, लाल मिर्च, तांबा , घी में तेजी बने। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें लाभ होगा।

आकाश लक्षण - अगस्त २३,२४,३०, सितं. १,२ एवं ६ को भारत के अनेक भागों में वर्षा के योग हैं ।

शकुन विचार - भाद्रपद. शु. पूर्णिमा का यदि आकाश निर्मल रहे तो गेंहू, जो, चना, चावल के स्टाक से आगे लाभ रहे ।

कुण्डली सूर्योदये

भाद्र. शुक्ल १५ रवि, इष्ट ५८।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	४	११	४	०	४	१०
२०	२७	१७	४	०	६	९	६	६
२०	३४	९	२४	२५	२३	२१	४२	४२
३७	५७	५	१५	२०	५५	५७	१५	१५
५८	८९०	३७	९७	७	७४	२	३	३
१३	५६	५९	२१	४६	१०	११	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	१	२	३	२	३	३	१
पू.फा.	पू.भा.	आश्ले.	मघा	पू.भा.	मघा	अश्वि.	मघा	शत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, आश्विन कृष्ण पक्ष १२																तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(७ से २० सितम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन उत्तर गोल, शरद् ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल			प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टै.टा.				स्पष्टसूर्य				ग्रह दर्शन -बुध ११ सितम्बर को पूर्व में दीखना बंद हो जाएगा। प्रातः मंगल शुक्र पूर्व में होंगे। शनि पश्चिम कपाल की ओर जाता दीखेगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		आहृ.	मित.	भाद्र.	ज.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	१६	१	च.	११	५	पू.भा.	२१	४५	शु.	४४	१८	कौ.	११	५		२३	७	१६	१५	मी.	८	१३	६	६	६	३७	४	२०	२२	६	राहु मघा २ केतु धनि ४ में ४१।२०, श्राद्ध पक्ष (महालय)(A)
३१	११	२	मं.	१०	३८	उ.भा.	१५	२८	गं.	३४	४०	ग.	१०	३८		२४	८	१७	१६	मीन			६	७	६	३५	४	२१	२०	२०	भ. ३६।३४ बाद, तृतीया श्राद्ध,
३१	५	३	बु.	२	३०	रे.	९	१०	वृ.	२५	१०	वि.	२	३०		२५	९	१८	१७	मे.	८	१०	६	८	६	३४	४	२२	१८	३६	भ. २।३० तक, पंचक समाप्त ८।१०, चतुर्थी श्राद्ध, (B)
अवम		४	बु.	५४	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३१	१	५	गु.	४७	१०	अ. भ.	३ ५७	१५ ५८	ध्रु.	१६	०	कौ.	२०	५०		२६	१०	१९	१८	मेष			६	८	६	३३	४	२३	१६	५३	वक्री गुरु पू.भा.३, कुंभ में ७।४५, पंचमी श्राद्ध,
३०	५६	६	शु.	४०	२८	कृ.	५३	४५	व्या. ह.	७ ५९	२८ ४८	ग.	१३	४९		२७	११	२०	१९	वृ.	११	५५	६	९	६	३१	४	२४	१५	१३	भ. ४०।२८ बाद, बुध पूर्व में अस्त, षष्ठी श्राद्ध,
३०	५२	७	श.	३५	५५	रो.	५०	४०	व.	५३	८	वि.	७	५७		२८	१२	२१	२०	वृष			६	९	६	३०	४	२५	१३	३५	भ. ७।५७ तक, बुध पू.फा. में ८।८, शुक्र पू.फा. में ३२।३०(C)
३०	४८	८	र.	३१	२८	मृ.	४८	५२	सि.	४७	३२	बा.	३	२७		२९	१३	२२	२१	मि.	२९	४६	६	१०	६	२९	४	२६	११	५९	सूर्य उ.फा. में २८।४५, अष्टमी श्राद्ध,
३०	४४	९	चं.	२८	५५	आ.	४८	३८	व्य.	४३	८	ग.	२८	५५		३०	१४	२३	२२	मिथुन			६	१०	६	२८	४	२७	१०	२४	भ. ५८।२१ बाद, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	४०	१०	मं.	२७	४८	पुन.	४९	४०	व.	३९	४८	वि.	२७	४८		३१	१५	२४	२३	क.	३४	२५	६	११	६	२६	४	२८	८	५२	भ. २७।४८ तक, दशमी श्राद्ध,
३०	३५	११	बु.	२८	२	पु.	५२	२	प.	३७	३२	बा.	२८	२		आ१	१६	२५	२४	कर्क			६	१२	६	२५	४	२९	७	२३	सं.सूर्य कन्या में ५३।५५,मु.१५, पुण्यकाल अगले दिन (D)
३०	३०	१२	गु.	२९	३८	आश्ले.	५५	३८	शि.	३६	२०	तै.	२९	३८		२	१७	२६	२५	सिं.	५५	३८	६	१२	६	२४	५	०	५	५६	द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध,
३०	२५	१३	शु.	३२	२०	म.	६०	०	सि.	३५	५५	ग.	०	५९		३	१८	२७	२६	सिंह			६	१३	६	२२	५	१	४	३१	भ.३२।२० बाद,महात्रयोदशी, त्रयोदशी श्राद्ध, (E)
३०	२०	१४	श.	३६	८	म.	०	१८	सा.	३६	२०	वि.	४	१४		४	१९	२८	२७	सिंह			६	१३	६	२१	५	२	३	८	भ. ४।१४ तक, बुध उ.फा. में १६।८, शस्त्र-विष आदि से(F)
३०	१५	३०	र.	४०	४२	पू.फा.	५	५०	शु.	३७	२५	च.	८	२५		५	२०	२९	२८	कं.	२२	२६	६	१४	६	२०	५	३	१	४६	चतुर्दशी श्राद्ध, अमाश्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त

(A) प्रारम्भ, प्रतिपदा और द्वितीया का श्राद्ध,(B) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (C) सप्तमी श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, (D) मध्याह्न से पूर्व , इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी श्राद्ध,(E) मघा श्राद्ध, प्रदोष व्रत, (F) मृतों का श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५७।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	३	४	१०	४	०	४	१०
२७	८	२१	१६	२९	१५	९	६	६
८	४७	३४	४२	३०	३	३	२०	२०
४५	१२	७	३८	७	४६	५३	०	०
५८	८००	३७	१३२	७	७४	२	३	३
२७	४९	४२	७	५९	२३	५६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	२	२	३	१	३	२	४
उ.फा.	आर्द्रा	आश्ले.	पू.फा.	पू.भा.	पू.फा.	अश्वि.	मघा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-सूर्य-बुध-शुक्र एक राशि में हैं, अतः खाद्य वस्तुओं एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी होगी, कुछ क्षेत्रों में अतिवर्षा किंवा अवर्षण से हानि होगी।-"एक राशौ यदा ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥" यहां सिंह राशि में सू. बु.शु. के साथ राहु का मेल होने से अधिक नेष्ट फलप्रद रहेगा। यहां शनि-गुरु वक्री ही हैं, अतः वर्षा में अवरोधक ही रहें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-रूई के व्यापारी बहुत सूझबूझ से काम करें, रूई, चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं घी में जोरदार तेजी या मन्दे की लाईन बनेगी। हमारे विचार से रूई में जोरदार मन्दा बने तो भरपूर स्टाक करें, आगे ६ मास में सर्वोत्तम लाभ मिलेगा। राई, जौं, गेहूँ, मोठ, चना, चावल, बाजरा आदि तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

आश्विन कृष्ण ३० रवि, इष्ट ५८।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	३	४	१०	४	०	४	१०
३	७	२५	२९	२८	२३	८	५	५
५८	१०	५७	५०	३४	४५	४१	५७	५७
३६	५४	१२	४७	१५	९	३५	४५	४५
५८	७१७	३७	१११	७	७४	३	३	३
४९	५९	२५	२८	५५	३६	२१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	३	१	३	४	३	२	४
उ.फा.	उ.फा.	आश्ले.	उ.फा.	पू.भा.	पू.फा.	अश्वि.	मघा	धनि.

आकाश लक्षण- इस पक्ष में उ.भारत में मौसम प्रायः साफ रहे, फिर भी सितं. ७,१०,१३,१६,१९ को वायु का जोर रहे, तथा नेपाल, सूरत, दार्जीलिंग विन्ध्यप्रदेश, उ.प्रदेश में वर्षा पानी व बादल चाल के योग हैं।

शकुन विचार- आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक बादल गरजें, बिजली चमके, तो गेहूँ आदि अनाजों के स्टाक से आगे लाभ मिले।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०,आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(२१ सितम्बर से ५ अक्तूबर तक, सन् १९९८ ई.),दक्षिणायन उत्तर गोल, शरद् ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आश्वि.	अं. सितं.	श. भाद्र.	मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सूर्यास्त बाद शनि खमध्य की ओर जाता दीखेगा। प्रातः मंगल शुक्र, पूर्व में होंगे। गुरु लगभग सारी रात दीखेगा।
३०	१०	१	चं.	४६	८	उफा.	१२	१२	शु.	३९	५	कि.	१३	२५	६	२१	३०	२९	कन्या			६	१४	६	११	५	४	०	२६	बुध कन्या में ३।०७,शारद नवरात्र प्रा.,घट स्थापन,नाना का श्राद्ध,
३०	५	२	मं.	५२	०	ह.	११	१०	ब्र.	४१	५	बा.	११	४	७	२२	३१	३०	तु	५२	५१	६	१५	६	१७	५	४	५९	८	चन्द्र दर्शन मु. ३०,
३०	०	३	बु	५८	१०	चि.	२६	३२	ऐं	४३	२२	तै.	२५	५	८	२३	आ१	ज१	तुला			६	१६	६	१६	५	५	५७	५२	सूर्य सायन तुला में १२।०७,दक्षिण गोल प्रा.,(A)
२९	५६	४	गु	६०	०	स्वा.	३४	५	वै.	४५	४८	व.	३१	१८	९	२४	२	२	तुला			६	१६	६	१५	५	६	५६	३८	भ. ३१।१७ बाद,
२९	५१	४	शु	४	२५	वि.	४१	३०	वि.	४८	०	वि.	४	२५	१०	२५	३	३	वृ.	२४	३९	६	१७	६	१४	५	७	५५	२७	भ.४।२५ तक,उपांग ललिता व्रत (अपराह्न व्यापिनी पंचमी में)
२९	४६	५	श.	१०	२०	अनु	४८	२२	प्री.	४९	४५	बा.	१०	२०	११	२६	४	४	वृश्चिक			६	१७	६	१२	५	८	५४	१६	बुध हस्त में ३०।३०, शुक्र कन्या में ५९।१७,
२९	४२	६	र.	१५	३०	ज्ये.	५४	१२	आ.	५०	४२	तै.	१५	३०	१२	२७	५	५	ध.	५४	१२	६	१८	६	११	५	९	५३	७	सूर्य हस्त में ६।५८, मंगल मघा सिंह में २८।३०
२९	३८	७	चं.	१९	३०	मू.	५८	४५	सौ.	५०	३८	व.	१९	३०	१३	२८	६	६	धनु			६	१८	६	१०	५	१०	५२	०	भ. १९।३० से ५०।४३ तक, सरस्वती आवाहन,
२९	२९	८	मं.	२१	५५	पूषा.	६०	०	शो.	४९	१२	ब.	२१	५५	१४	२९	७	७	धनु			६	१९	६	८	५	११	५०	५६	श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती पूजन
२९	२४	९	बु	२२	२२	पूषा.	१	३२	अ.	४६	१५	कौ.	२२	२२	१५	३०	८	८	म	१६	४६	६	२०	६	७	५	१२	४९	५२	महानवमी, नवरात्र समाप्त,
२९	१९	१०	गु	२१	५	उषा.	२	२७	सु	४१	४५	ग.	२१	५	१६	अ१	९	९	मकर			६	२०	६	६	५	१३	४८	५०	भ. ४९।२१ बाद, विजया दशमी, दशहरा (देखें पृ. १०५)(B)
२९	१५	११	शु	१७	३८	श्र.	१	२२	धृ.	३५	३८	व.	१७	३८	१७	२	१०	१०	कुम्भ	२९	५५	६	२१	६	५	५	१४	४७	५०	भ १७।३८ तक, पञ्चक प्रा. २९।५५, भरत मिलाप,(C)
						धनि.	५८	२८																						
२९	११	१२	श.	१२	२२	श.	५३	५०	शू.	२८	५	बा.	१२	२२	१८	३	११	११	कुम्भ			६	२१	६	३	५	१५	४६	५२	शनि प्रदोष व्रत,
२९	७	१३	र.	५	२७	पूभा.	४७	५०	गं.	१९	१८	तै.	५	२७	१९	४	१२	१२	मी.	३४	२०	६	२२	६	२	५	१६	४५	५६	भ.५७।२० बाद,बुध चित्रा में ११।४०,शुक्र हस्त में ०।२८(D)
अवम		१४	र.	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२९	७	१५	चं.	४८	१८	उभा.	४०	५०	वृ.	९	३०	वि.	२२	४१	२०	५	१३	१३	मीन			६	२३	६	१	५	१७	४५	२	भ. २२।४९ तक, शरत् पूर्णिमा , कोजागरी व्रत,(E)
									ध्रु	५९	३																			

(A) शक आश्विन प्रारम्भ,जमद उस्सानी प्रारम्भ, शुक्र उ.फा. में १८।३८,(B) अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, सरस्वती विसर्जन, अक्तूबर प्रारम्भ,(C) जन्मदिन श्री महात्मा गांधी, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.) ,(D) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ३०।०२,(E) महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्री सत्य नारायण व्रत,कार्तिक स्नान प्रारम्भ,

आश्विन शुक्ल ८ मंगल ,इष्ट ५७।५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	४	५	१०	५	०	४	१०
१२	२५	१	१६	२७	४	८	५	५
४७	५२	३२	५	२४	५७	७	२९	२९
५०	४८	२४	४१	५२	२१	३५	९	९
५८	७८५	३७	१०४	७	७४	४	३	३
५७	५६	२	१	२१	४७	७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
२	४	२	२	३	३	३	२	४
हस्त	पूफा.	मघा	हस्त	पूभा.	उफा.	अश्वि.	मघा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-इस पक्ष में कन्या राशि में सूर्य-बुध-शुक्र का सम्बन्ध चल रहा है, अनाज एवं खाद्य वस्तुओं में तेजी होने पर भी इस एक ही पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय होने से शासन स्थिति को नियन्त्रण में रखेगा।

पक्ष मध्य में मंगल राहु का राशि सम्बन्ध है, कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड हों, मुस्लिम देशों में परस्पर संघर्ष एवं कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन हो। इस मास में मलेरिया, फ्लू आदि सांसर्गिक रोग व्याप्त हों। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**-२६ सितम्बर के बाद चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा। चांदी, सोना, तांबा, लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज, अलसी, रूई एवं लाल मिर्च में भी तेजी आएगी।

कुण्डली सूर्योदये

आश्विन शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५७।४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	४	५	१०	५	०	४	१०
१८	२०	५	२६	२६	१२	७	५	५
४१	५६	१३	१६	४२	२६	४२	१०	१०
५९	२८	५५	५६	८	२३	१०	४	४
५९	९१४	३६	९८	६	७४	४	३	३
९	२६	४५	५४	३८	५३	२४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	३	२	३	२	२	२	४
हस्त	पू.	मघा	चित्रा	पूभा.	हस्त	अश्वि.	म	अ

आकाश लक्षण-२६,२७,२८ सितम्बर को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान, हि.प्र., एवं काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ. भारत में कहीं बादल वर्षा बूंदाबांदी संभव है। उ. भारत में ऋतु परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचार-यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न रहे तो धान्य के स्टाक से आगामी चैत्र में अच्छा लाभ हो। ''आश्विनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभप्रदो मतः॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ (६से २०अक्तूबर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२९	२	१	मं	३८	५०	रे.	३३	२५	व्या.	४८	२२	बा.	१३	३४	२१	६	१४	१४	मे	३३	२५	६	२३	६	०	५	१८	४४	१०
२८	५७	२	बु.	२९	२०	अ.	२५	५५	ह.	३७	४२	तै.	४	५	२२	७	१५	१५	मेष			६	२४	५	५८	५	१९	४३	२०
२८	५३	३	गु.	२०	२२	भ.	१८	५०	व.	२७	३२	वि.	२०	२०	२३	८	१६	१६	वृ.	३२	१७	६	२४	५	५७	५	२०	४२	३२
२८	४८	४	शु.	१२	१२	कृ.	१२	३८	सि.	१८	५	बा.	१२	१२	२४	९	१७	१७	वृष			६	२५	५	५६	५	२१	४१	४५
२८	४४	५	श.	५	२०	रो.	७	४०	व्य.	९	४२	तै.	५	२०	२५	१०	१८	१८	मि.	३६	०	६	२६	५	५५	५	२२	४१	१
२८	४०	६	र.	२	३५	मृ.	४	२०	व. प	२ ५७	४२ ८	ब.	२	३५	२६	११	१९	१९	मिथुन			६	२६	५	५४	५	२३	४०	२१
अवम		७	र.	५६	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	३५	८	चं.	५५	२	आ.	२	४८	शि.	५३	०	बा.	२५	५०	२७	१२	२०	२०	क.	४८	१	६	२७	५	५३	५	२४	३९	४२
२८	३०	९	मं	५५	२०	पुन.	३	५	सि.	५०	२२	तै.	२५	११	२८	१३	२१	२१	कर्क			६	२८	५	५१	५	२५	३९	६
२८	२५	१०	बु.	५७	२०	पु.	५	१२	सा.	४९	८	व.	२६	२०	२९	१४	२२	२२	कर्क			६	२८	५	५०	५	२६	३८	३२
२८	२०	११	गु.	६०	०	आश्ले.	८	५५	शु.	४९	०५	ब.	२९	२	३०	१५	२३	२३	सि.	८	५५	६	२९	५	४९	५	२७	३८	१
२८	१५	११	शु.	०	४५	म.	१३	५८	शु.	४९	४	बा.	०	४५	३१	१६	२४	२४	सिंह			६	३०	५	४८	५	२८	३७	३१
२८	१०	१२	श.	५	२०	पू.फा.	२०	२	ब्र.	५१	५	तै.	५	२०	न.१	१७	२५	२५	क.	३६	४४	६	३०	५	४७	५	२९	३७	४
२८	६	१३	र.	१०	३७	उ.फा.	२६	५०	ऐं	५२	५५	व.	१०	३७	२	१८	२६	२६	कन्या			६	३१	५	४५	६	०	३६	३९
२८	२	१४	चं.	१६	३५	ह.	३४	०	वै.	५५	०	श.	१६	३५	३	१९	२७	२७	कन्या			६	३२	५	४४	६	१	३६	१५
२७	५८	३०	मं.	२२	४७	चि.	४१	२८	वि.	५७	१५	ना.	२२	४७	४	२०	२८	२८	तु.	७	४४	६	३२	५	४३	६	२	३५	५५

ग्रह दर्शन - बुध १५ अक्तूबर को सायं पश्चिम में दीखने लग जाएगा। पक्ष के आरम्भ में ही शुक्र पूर्व में अस्त हो जाएगा। सायं शनि पूर्व क्षितिज में होगा। प्रातः मंगल को पूर्व कपाल में देखें।

पञ्चक समाप्त ३३।२५, वक्री गुरु पू.भा. २ में १६।४२
भ. ५४।५१ बाद, शुक्र पूर्व में अस्त ३०।०२,
भ. २०।२२ तक, बुध तुला में १३।४०, करक चतुर्थी, (A)

शुक्र अस्त ७ अक्तू.'९८

सूर्य चित्रा में ३९।२०
भ. २।३५ से २९।३६ तक, नेपच्यून मार्गी ४०।१८

सप्तमी तिथिक्षय,
बुध स्वाती में २३।३८, अहोई अष्टमी (पंजाब)

भ. २६।२०से ५७।२० तक, शुक्र चित्रा में ४०।३५
बुध पश्चिम में उदित
रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी,
सं. सूर्य तुला में २३।०५, मु०४५ पुण्यकाल ७।०५ बाद,(B)
भ.१०।३७ से ४३।३६ तक, यूरेनस मार्गी, ५१।१८
मंगल पू.फा. में १६।३८ बक्री शनि अश्वि., २ में २५।३०(C)
शुक्र तुला में ०।२, श्री महावीर निर्वाण(जैन), भौमवतीअमावस,

(A) करवा चौथ, (चन्द्रोदय रात्रि ८ घं. १२ मि.), श्री गणेश चतुर्थीव्रत,(B) धन त्रयोदशी, शनि प्रदोष व्रत, यम को दीपदान,(C) दीपावली, लक्ष्मी पूजन, नरक चर्तुदशी (पहले अरुणोदय वाली),

कार्तिक कृ. ८चन्द्र., इष्ट ५७।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	४	६	१०	५	०	४	१०
२५	२	९	७	२५	२१	७	४	४
३६	७	३०	३३	५७	११	१०	४७	४७
४४	२८	२०	१५	२९	८	३१	४९	४९
५९	७७४	३६	९३	५	७५	४	३	३
२४	४५	२८	४४	५१	१	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ	अ.	उ	अ.	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-इस मास में पांच मंगलवार हैं। किसी देश विशेष को राजनीति में उलटफेर हों, कहीं, आन्तरिक अशान्ति, युद्धाग्नि से जन धन हानि भी हो,-"यत्र मासे महीसूनोः जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥" कहीं अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि हो। हस्त नक्षत्र में शुक्रास्त होना एवं मंगलवारी अमावस इटली, टर्की, रोम, जापान, चीन किंवा अफगानिस्तान आदि में कहीं भूकम्पभय का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में अनाज, धान, सूत-सण- में तेजी लेकिन रूई में मन्दे का रुख रहेगा। सोना, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। १०,११,१२ अक्तूबर को बाजार अस्थिर रहें। १५ से २० अक्तूबर तक गेहूं, चना, दालवाना, बिनौला आदि तिलहन में एवं रूई में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

कार्तिक कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५७।२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	४	६	१०	६	०	४	१०
३	९	१४	११	२५	१	६	४	४
३३	४८	२०	४८	१५	११	३२	२२	२२
०	१७	३९	२०	११	५०	३९	२३	२३
५९	७११	३६	८८	४	७५	४	३	३
४३	१७	३	२५	३२	९	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ	उ	उ	अ.	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण-अक्तूबर ६,७,८,११,१५,१७,१९,२० को उ. प्रदेश के कुछ भाग, लंका, आसाम, बंगाल देश में वर्षा के योग हैं। उत्तर भारत में कहीं वायुवेग का जोर रहे कहीं खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार-कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो अलसी, सरसों, तिल, तेल तेज होंगे। शीघ्र ही स्टाक करने से निस्संदेह लाभ होगा। दीपावली की शाम को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी जोर पकड़ेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५,शाक १९२०,कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(२१अक्तूबर से ४ नवम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण गोल, शरद्- हेमन्त ऋतु,

ग्रह दर्शन - शुक्र अस्त है। प्रातः मंगल पूर्व में तथा गुरु पश्चिम कपाल में होगा। सायं शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर आता दीखेगा। इस समय बुध भी पश्चिम में दृश्य होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. कार्ति.	अं. अक्टू.	श. आश्वि.	मु. रज.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५४	१	बु	२९	५	स्वा.	४८	५५	प्री.	५९	२८	ब.	२९	५	५	२१	२९	२९	तुला			६	३३	५	४२	६	३	३५	३६	बुध विशाखा में ७।५५,गोवर्धन पूजा,बलिपूजा, अन्नकूट,
२७	५०	२	गु	३५	१५	वि.	५६	१२	आ.	६०	०	बा.	२	१०	६	२२	३०	३०	वृ.	३१	२३	६	३४	५	४१	६	४	३५	११	चन्द्र दर्शन मु. ४५, यम द्वितीया, भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा,
२७	४५	३	शु	४१	१२	अनु	६०	०	आ.	१	३२	तै.	८	१४	७	२३	का.१	२१	वृश्चिक			६	३४	५	४०	६	५	३५	०४	सूर्य सायन वृश्चिक में ३४।४५ , हेमन्त ऋतु प्रारम्भ(A)
२७	४०	४	श.	४६	३२	अनु	३	१२	सौ.	३	२०	व.	१३	५३	८	२४	२	२	वृश्चिक			६	३५	५	३९	६	६	३४	५१	भ. १३।५२ से ४६।३२ तक, सूर्य स्वाती में ५।५,
२७	३५	५	र.	५१	२	ज्ये.	९	३२	शो.	४	४०	ब.	१८	४७	९	२५	३	३	ध.	९	३२	६	३६	५	३८	६	७	३४	४०	शुक्र स्वाती में ११।७,
२७	३०	६	चं.	५४	२८	मू.	१५	०	अ	५	१८	कौ.	२२	४५	१०	२६	४	४	धनु			६	३६	५	३७	६	८	३४	३१	
२७	२६	७	मं	५६	२०	पूषा.	१९	१५	सु	४	५८	ग.	२५	२४	११	२७	५	५	म	३४	५५	६	३७	५	३६	६	९	३४	२४	भ. ५६।२० बाद,
२७	२३	८	बु	५६	२५	उषा.	२१	५२	धृ.	३	२५	वि.	२६	२३	१२	२८	६	६	मकर			६	३८	५	३५	६	१०	३४	१७	भ. २६।२३ तक, बुध वृश्चिक में ५।१५, गोपाष्टमी
२७	१८	९	गु	५४	३८	श्र.	२२	४५	शू. गं.	० ५६	३३ ७	ब.	२५	३२	१३	२९	७	७	कु.	५२	१५	६	३९	५	३४	६	११	३४	१४	पञ्चक प्रारम्भ ५२।१५,अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२७	१४	१०	शु	५०	५२	ध.	२१	४५	वृ.	५०	१२	तै.	२२	४५	१४	३०	८	८	कुम्भ			६	३९	५	३३	६	१२	३४	११	बुध अनु. में ३०।३२,
२७	१०	११	श.	४५	१५	श.	१८	४८	ध्रु.	४२	४५	व.	१८	४	१५	३१	९	९	कुम्भ			६	४०	५	३२	६	१३	३४	९	भ.१८।४ से ४५।१५ तक, देव प्रबोधनी एकादशी व्रत (स.)(B)
२७	६	१२	र.	३८	०	पूभा.	१४	८	व्या.	३३	५५	ब.	११	३८	१६	न१	१०	१०	मीं.	०	१८	६	४१	५	३१	६	१४	३४	८	तुलसी विवाह, नवम्बर प्रारम्भ,
२७	२	१३	चं.	२९	३०	उभा.	८	०	ह.	२४	२	कौ.	३	४५	१७	२	११	११	मीन			६	४२	५	३१	६	१५	३४	११	सोम प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२६	५८	१४	मं	२०	२	र. अ	० ५३	४८ ०	व.	१३	२२	व.	२०	२	१८	३	१२	१२	मे	०	४८	६	४३	५	३०	६	१६	३४	१५	भ.२०।२ से ४५।७ तक,पंचक स.०।४८,श्री सत्यनारायण व्रत
२६	५४	१५	बु	१०	१२	भ.	४५	५	सि. व्य	२ ५१	२० १५	ब.	१०	१२	१९	४	१३	१३	वृ.	५८	१२	६	४३	५	२९	६	१७	३४	२१	भीष्म पंचक समाप्त,कार्तिकस्नान समाप्त,श्री गुरुनानक जयंती,

(A) शक कार्तिक प्रारम्भ, रजब प्रारम्भ,(B) भीष्म पंचक प्रारम्भ,

कार्तिक शुक्ल. ८बुध,इष्ट ५७।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	७	१०	६	०	४	१०
११	१७	१९	१	२४	११	५	३	३
३१	३९	७	१२	४४	१३	५४	५६	५६
२२	४८	३८	१	२	१७	२०	५७	५७
५९	८०२	३५	८२	३	७५	४	३	३
५६	३०	३७	२६	२	१३	४६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ	अ
२	३	२	४	२	२	२	२	४
स्वा.	श्र.	पू.फा.	विशा.	पू.भा.	स्वा.	अश्वि.	मघा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

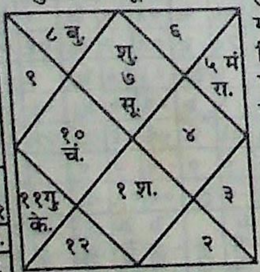

लोक भविष्य- राहु-मंगल का गुरु के साथ सम सप्तकऔर राहु-मंगल का शनि के साथ नवपंचम सम्बन्ध प्रधान-राजनीतिज्ञों के लिए भयावह स्थिति को जन्म देगा। बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर पापगति में विचरण करेगा। कहीं राजनैतिक अशान्ति, विहार, आसाम, मध्य प्रदेश, उ. प्रदेश व अन्यत्र कहीं शासनतन्त्र में उलटफेर व राजनैतिक गहमागहमी रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षरम्भ में अनाजों में कुछ मन्दा बने। २५ अक्तूबर के लगभग गुड़, खाण्ड में तेजी का वातावरण रहेगा। रूई, साना, चांदी गुड़, खाण्ड एवं तिलहनों, में भी तेजी रहे। ३० अक्तूबर के लगभग रूई, सोना, चांदी एवं अनाजों के भाव में मन्दा आएगा।

कुण्डली सूर्योदये

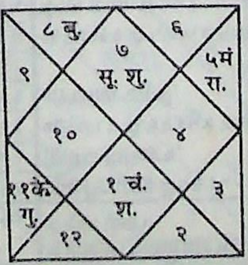

कार्तिक शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५६।५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	४	७	१०	६	०	४	१०
१८	२९	२३	१०	२४	११	५	३	३
३१	४१	१५	२६	२६	५१	२१	३४	३४
२५	४	४६	३४	५४	५३	३०	४३	४३
६०	११०	३५	७३	१	७५	४	३	३
८	४१	१४	५८	३९	१६	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ	अ
४	१	३	३	२	४	२	२	४
स्वा.	कृत्ति.	पू.फा.	अनु.	पू.भा.	स्वा.	अश्वि.	मघा	धनि.

आकाश लक्षण-अक्तूबर २१,२४,२५,३० एवं नवम्बर के प्रारम्भिक दिनों में उ. पू. लंका, एवं हि. प्र. में कहीं बादलचाल वर्षा हो। हि.प्र.एवं काश्मीर के उन्नत शिखरों पर अनेकत्र हिमपात के समाचार भी मिलें। उ.भारत में शीत-प्रभावी होने लगेगा।

शकुन विचार-कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेश (घेरा)दिखाई दे तो तेल के स्टाक से लाभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१ वि.सं.२०५५,शाक १९२०,मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(५ नवम्बर से १९ नवम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - शुक्र अस्त है। प्रातः सूर्योदय से पहले रक्तवर्ण मंगल पूर्व में दीखेगा। सूर्यास्त बाद गुरु पूर्व कपाल में होगा। बुध सूर्यास्त बाद पश्चिम में दृश्य होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	नव.	कार्तिक	रज.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५०	१	गु	०	२५	कृ.	३७	३२	व.	४०	३०	कौ.	०	२५	२०	५	१४	१४	वृष			६	४४	५	२८	६	१८	३४	२८	शुक्र विशाखा में ५६।५८,
अवम		२	गु	५१	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२६	४५	३	शु.	४२	५४	रो.	३०	४८	प	३०	३०	व.	१७	२	२१	६	१५	१५	मि.	५८	१२	६	४५	५	२७	६	१९	३४	३८	भ.१७।२ से ४२।५४ तक, सूर्य विशाखा में २५।१२,
२६	४०	४	श.	३६	५	मृ.	२५	३५	शि.	२१	४०	ब.	९	३०	२२	७	१६	१६	मिथुन			६	४६	५	२७	६	२०	३४	४९	श्री गणेश चतुर्थी,
२६	३६	५	र.	३१	८	आ.	२२	२	सि.	१४	१०	कौ.	३	३७	२३	८	१७	१७	मिथुन			६	४७	५	२६	६	२१	३५	३	
२६	३३	६	चं.	२८	१२	पुन.	२०	३०	सा.	८	२०	व.	२८	१२	२४	९	१८	१८	क.	५	५३	६	४७	६	२५	६	२२	३५	१८	भ.२८।१२ से ५७।५० तक,राहु मघा १, केतु धनि. ३ में ३४।४८,
२६	२९	७	मं	२७	२८	पु	२१	२	शु.	४	१०	ब.	२७	२८	२५	१०	१९	१९	कर्क			६	४८	५	२४	६	२३	३५	३५	मंगल उ.फा. में ४५।५५, बुध ज्येष्ठा में १८।२०,
२६	२५	८	बु.	२८	५०	आश्ले.	२३	३८	शु.	१	४०	कौ.	२८	५०	२६	११	२०	२०	सिं.	२३	३८	६	४९	५	२४	६	२४	३५	५५	कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी)
२६	२२	९	गु	२९	८	म.	२८	५	ब्र.	०	४३	ग.	२९	८	२७	१२	२१	२१	सिंह			६	५०	५	२३	६	२५	३६	१७	शुक्र वृश्चिक में ५४।५५, वेंकटेश (प्लूटो) अनु. ४ में, ?
२६	१९	१०	शु.	३६	४५	पू.फा.	३३	५२	ऐ	१	३	व.	२	५७	२८	१३	२२	२२	क.	५०	३६	६	५१	५	२२	६	२६	३६	४१	भ. २।५७ से ३६।४५ तक, गुरु मार्गी २९।१७,
२६	१६	११	श.	४२	३०	उ.फा.	४०	४८	वै.	२	१७	ब.	९	३८	२९	१४	२३	२३	कन्या			६	५२	५	२२	६	२७	३७	३	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.), जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरु,
२६	१३	१२	र.	४८	५०	ह.	४८	१५	वि.	४	१२	कौ.	१५	४०	३०	१५	२४	२४	कन्या			६	५२	५	२१	६	२८	३७	३५	शुक्र अनु. में ३४।१०,
२६	१०	१३	चं.	५५	१८	चि.	५५	४८	प्री.	६	२५	ग.	२२	४	मा१	१६	२५	२५	तु.	२२	२	६	५३	५	२१	६	२९	३८	५	भ. ५५।१८ बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में २१।४०, मु. ३०, (A)
२६	५	१४	मं	६०	०	स्वा.	६०	०	आ.	८	३८	वि.	२८	२६	२	१७	२६	२६	तुला			६	५४	५	२०	७	०	३८	३७	भ. २८।२७ तक, बलिदान दिन लाला लाजपत राय,
२६	३	१४	बु.	१	३५	स्वा.	३	१०	सौ.	१०	४५	श.	१	३५	३	१८	२७	२७	वृ.	५३	२९	६	५५	५	२०	७	१	३९	९	
२५	५९	३०	गु	७	२५	वि.	१०	१५	शो.	१२	३५	ना.	७	२५	४	१९	२८	२८	वृश्चिक			६	५६	५	१९	७	२	३९	४५	सूर्य अनु में ३९।५०,

(A) पुण्यकाल ५।४० बाद , मंगल कन्या में ३१।२५, सोम प्रदोष व्रत,

मार्ग. कृ. ८ बुध, इष्ट ५६।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	४	७	१०	६	०	४	१०
२५	६	२७	१८	२४	२८	४	३	३
३२	५२	२१	१९	१९	४६	५०	१२	१२
५९	१०	५	५३	३८	४९	१५	२८	२८
६०	७३६	३४	५६	०	७५	४	३	३
२२	३	४८	३३	१३	१८	१७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ	उ	उ	अ.	उ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

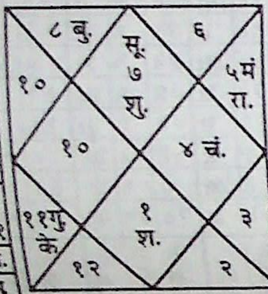

लोक भविष्य-पक्षारम्भ में ही विशाखा नक्षत्र का शुक्र कुछ प्रान्तों में अशान्ति करे। चोरी ठगी की घटनाएं अधिक हों। पक्षान्त में सूर्य- बुध- शुक्र का एक राशि सम्बन्ध नानाधि रोगों का जन्म देगा। इस मास में पांच गुरुवारों का होना पश्चिमी प्रान्तों किंवा पश्चिमी भूभाग पर अनेकत्र युद्ध मय वातावरण बनाऐ-, ''यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥'' पक्षान्त में तिथि वृद्धि कहीं युद्धाग्नि को प्रज्वलित करे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रूई व अनाजों में मन्दा बने। गुड़, घी, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड एवं अफीम में तेजी बने। १२ नवम्बर के लगभग सोच समझ कर व्यापार करें, बाजारों का रूख अचानक बदल सकता है। दालवाना में जोरदार तेजी या मन्दा बने। पक्षान्त में रूई, तांबा, सोना, चांदी में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

मार्ग. कृं. ३० गुरु, इष्ट ५६।२३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	५	७	१०	७	०	४	१०
३	१२	१	२३	२४	८	४	२	२
३६	३२	५७	३२	२३	४९	१७	४७	४७
४१	४७	३०	५६	४२	२३	३२	२	२
६०	७२४	३४	९	१	७५	३	३	३
३५	१	१३	२	३९	२१	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ	उ	उ	अ.	उ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- नम्बर ५,६,९,१०,१२,१३ एवं १६ को जम्मू-काश्मीर, एवं उत्तरी भारत में कहीं बादल चाल एवं खण्डवृष्टि हो, हि. प्र. में हिमपात हो एवं उत्तरी भारत शीतग्रस्त होने लगे।

शकुन विचार यदि मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी किंवा आमावस के दिन बादल हो तो अनाजों में शीघ्र तेजी आती है।

(२०नवम्बर से ३ दिसम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(२०नवम्बर से ३ दिसम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध २५ नवम्बर को पश्चिम में दीखना बंद हो जाएगा। २९ नवम्बर के लगभग शुक्र पश्चिम में दीखना प्रारम्भ होगा। प्रातः मंगल पूर्व कपाल में होगा। सायं गुरु को पूर्व कपाल में देखें।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. नवं.	श. कार्ति.	मु. रज.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालीन स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५६	१	शु.	१३	०	अनु.	१६	५३	अ.	१४	०	ब.	१३	०	५	२०	२१	२९	वृश्चिक			६	५७	५	११	७	३	४०	२१	चन्द्र दर्शन मु. १५,
२५	५४	२	श.	१७	५८	ज्ये.	२२	५८	सु.	१५	२	कौ.	१७	५८	६	२१	३०	शा.१	ध.	२२	५८	६	५७	५	११	७	४	४०	५८	बुध वक्री २५।२२ शाबान प्रा.
२५	५२	३	र.	२२	७	मू.	२८	१७	धृ.	१५	३०	ग.	२२	७	७	२२	मा.१	२	धनु			६	५८	५	१८	७	५	४१	३७	भ. ५३।४६बाद, सूर्य सायन धनु में २७।४५, शक मार्गशीर्ष प्रा.
२५	४९	४	चं.	२५	२५	पू.षा.	३२	४७	शू.	१५	२०	वि.	२५	२५	८	२३	२	३	म.	४८	३९	६	५९	५	१८	७	६	४२	१७	भ. २५। २५ तक,
२५	४६	५	मं.	२७	३७	उ.षा.	३६	१२	गं.	१४	२०	बा.	२७	३७	९	२४	३	४	मकर			७	०	५	१८	७	७	४२	५८	बलिदान दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी,
२५	४३	६	बु.	२८	३२	श्र.	३८	२०	वृ.	१२	२२	तै.	२८	३२	१०	२५	४	५	मकर			७	१	५	१७	७	८	४३	४१	बुध पश्चिम में अस्त, गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी
२५	४०	७	गु.	२७	५८	ध.	३९	५	ध्रु.	९	२०	व.	२७	५८	११	२६	५	६	कु.	८	४३	७	२	५	१७	७	९	४४	२४	भ.२७।५८ से ५६।५२ तक, पंचक प्रारम्भ ८।४३, (A)
२५	३८	८	शु.	२५	४५	श.	३८	५	व्या. ह.	५ ५९	४ २८	ब.	२५	४५	१२	२७	६	७	कुंभ			७	३	५	१७	७	१०	४५	८	शुक्र उदय २९ नवम्बर
२५	३५	९	श.	२१	५५	पू.भा.	३५	३२	व.	५२	३२	कौ.	२१	५५	१३	२८	७	८	मी.	२१	११	७	३	५	१७	७	११	४५	५३	
२५	३३	१०	र.	१६	२५	उ.भा.	३१	२५	सि.	४४	२३	ग.	१६	२५	१४	२९	८	९	मीन			७	४	५	१७	७	१२	४६	३८	भ.४२।५६बाद, **शुक्र पश्चिम में उदित १२।००**
२५	३०	११	चं.	९	२७	रे.	२५	५५	व्य.	३५	७	वि.	९	२७	१५	३०	९	१०	मे.	२५	५५	७	५	५	१६	७	१३	४७	२४	भ. ९। २७ तक, पञ्चक स.२५।५५, व. बुध अनु. में (B)
२५	२८	१२	मं.	१	२५	अ.	११	२०	व.	२५	५	बा.	१	२५	१६	दि.१	१०	११	मेष			७	६	५	१६	७	१४	४८	१२	भौम प्रदोष व्रत, दिसम्बर प्रारंभ,
अवम		१३	मं.	५२	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२५	२६	१४	बु.	४३	२०	भ.	१२	१०	प.	१४	३२	ग.	१७	५६	१७	२	११	१२	वृ.	२५	२०	७	७	५	१६	७	१५	४९	१	भ.४३।२० बाद, सूर्य ज्येष्ठा में ५०।१०, शुक्र बाल्य समाप्त १२।००
२५	२४	१५	गु.	३४	१२	कृ. रो.	४ ५७	५० ५०	शि. सि.	३ ५३	५५ ३२	वि.	८	४६	१८	३	१२	१३	वृष.			७	८	५	१६	७	१६	४९	५२	भ.८।४६ तक, श्री दत्त जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत,

(A) शुक्र ज्येष्ठा में १०।५२, मित्र सप्तमी ,(B) ३८।३२ मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती

मार्ग.शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५६।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	५	७	१०	७	०	४	१०
११	२४	६	२०	२४	१८	३	२	२
४१	७	२९	४	४०	५२	४९	२१	२१
५७	५६	२	३७	५४	६	११	३६	३६
६०	८४३	३३	७०	३	७५	३	३	३
४४	२४	३४	१७	३	१९	११	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
३	२	३	२	२	१	२	१	३
अनु.	पू.भा.	उ.फा.	ज्ये.	पू.भा.	ज्ये.	अश्वि.	मघा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

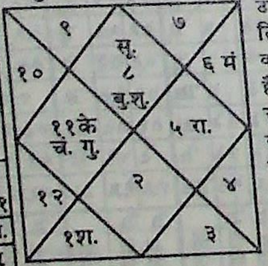

लोक भविष्य- मार्गशीर्ष दशमी को रविवार है - तिलहन एवं तेल के व्यापारी आगे उत्तम लाभ लेंगे-, **''मार्गशीर्षस्य दशमी मूले वा रविणा युता। संग्राह्यास्तत्र तिलास्तैलं ज्येठान्ते लाभदायकाः''**। मार्ग शुक्ल में त्रयोदशी तिथिक्षय होने से कहीं शासनसत्ता मे परिवर्तन एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होने का योग है,-**''मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः। छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥''** प्रजा में नानाविध रोगों से परेशानी किंवा किसी भाग में दुर्भिक्ष की स्थिति से शासक चिन्तित रहें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२१ नवम्बर के करीब घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवं गेहूँ, जौं, चना आदि अनाजों में मन्दा बने। २५ नवम्बर के लगभग रूई में झटके से अच्छा मन्दा बने एवं अनाजों में तेजी का रुख बने। २९ नवम्बर के लगभग घी, खाण्ड मन्दे, सोना, चांदी, तिल, चावल में तेजी बने।

आकाश लक्षण-नवम्बर २१,२२,२५,२९,३० को उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल, बूंदाबंदी एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। ज. काश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश के उन्नत शिखरों पर अनेकत्र हिमपात के समाचार मिलेंगे।

शकुन विचार-यदि इसमें घनिष्ठा नक्षत्र के समय (२६,२७ नवम्बर को) बादल गरजे तो जनता में संक्रामक रोगों से हानि हो। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे तो आगे अच्छी वर्षा हो, बाजार मन्दे हों।

कुण्डली सूर्योदये

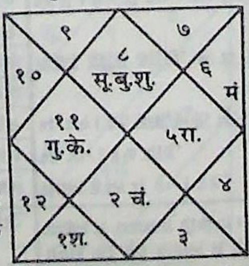

मार्ग शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ५५।५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	५	७	१०	७	०	४	१०
१७	२२	९	१२	२५	२६	३	२	२
४६	५०	४९	१४	२	२४	३१	२	२
३८	४४	१०	३१	९	५०	२३	३१	३१
६०	८११	३३	७१	४	७५	२	३	३
५१	४२	१	११	१२	१९	३९	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	४	३	२	३	२	१	३
ज्ये.	रोहि.	उफा.	अनु.	पू.भा.	ज्ये.	अश्वि.	मघा	धनि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, पौष कृष्ण पक्ष १८

(४ से १८ दिसम्बर तक, सन् १९९८ ई.), दक्षिणायन दक्षिण - गोल हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध ८ दिसम्बर को प्रातः पूर्व में दीखना शुरु होगा । प्रातः मंगल को पूर्व कपाल में देखें। सायं को शनि खमध्यासन्न तथा शुक्र पश्चिम में चकमता दीखेगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. शाबा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२२	१	शु.	२५	४५	मृ.	५१	४०	स	४३	४७	कौ.	२५	४५	१९	४	१३	१४	मि.	२४	४५	७	८	५	१६	७	१७	५०	४४	मंगल हस्त में १५।२८,
२५	२०	२	श.	१८	१७	आ.	४६	३७	शु.	३५	२	ग.	१८	१७	२०	५	१४	१५	मिथुन			७	९	५	१६	७	१८	५१	३७	भ. ४५।१७ बाद,
२५	१८	३	र.	१२	१८	पुन.	४३	२०	शु.	२७	३२	वि.	१२	१८	२१	६	१५	१६	क.	२९	१०	७	१०	४	१६	७	१९	५२	३२	भ. १२।१८ तक,शुक्र मूल धनु में ४७।४५,श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५	१६	४	चं.	६	२०	पु.	४२	०	ब्र.	२१	३५	बा.	६	२०	२२	७	१६	१७	कर्क			७	११	५	१६	७	२०	५३	२७	
२५	१४	५	मं.	६	७	आश्ले.	४२	५०	ऐ.	१७	२०	तै.	६	७	२३	८	१७	१८	सि.	४२	५०	७	१२	५	१७	७	२१	५४	२३	वक्री शनि अश्वि. १ में ३१।२५, बुध पूर्व में उदित,
२५	१२	६	बु.	६	१८	म.	४५	४५	वै.	१४	४६	व.	६	१८	२४	९	१८	१९	सिंह			७	१२	५	१७	७	२२	५५	२२	
२५	१०	७	गु.	८	३५	पू.फा.	५०	२७	वि.	१३	४८	ब.	८	३५	२५	१०	१९	२०	सिंह			७	१३	५	१७	७	२३	५६	२०	भ. ६।१० से ३७।२७ तक,
२५	८	८	शु.	१२	४०	उफा.	५६	४२	प्री.	१४	१०	कौ	१२	४०	२६	११	२०	२१	क.	७	०	७	१४	५	१७	७	२४	५७	२०	बुध मार्गी १२।१८,
२५	७	९	श.	१८	५	ह.	६०	०	आ.	१५	३२	ग.	१८	५	२७	१२	२१	२२	कन्या			७	१४	५	१७	७	२५	५८	२१	भ.५१।१६ बाद,
२५	६	१०	र.	२४	२७	ह.	३	४८	सौ.	१७	३०	वि.	२४	२७	२८	१३	२२	२३	तु.	३७	३४	७	१५	५	१८	७	२६	५९	२३	भ. २४।२७ तक,
२५	५	११	चं.	३०	५५	चि.	११	२०	शो.	१९	४५	बा.	३०	५५	२९	१४	२३	२४	तुला			७	१६	५	१८	७	२८	०	२६	सफला एकादशी व्रत (स.)
२५	४	१२	मं.	३७	१८	स्वा.	१८	५२	अ.	२१	५२	कौ.	४	६	पौ.१	१५	२४	२५	तुला			७	१६	५	१८	९	२९	१	३०	सं. सूर्य मूल धनु में ५७। २५,मु. ४५ पुण्यकाल (A)
२५	३	१३	बु.	४३	७	वि.	२५	५२	सु.	२३	४०	ग.	१०	१२	२	१६	२५	२६	वृ.	९	७	७	१७	५	१८	८	०	२	३५	भ. ४३।७ बाद, प्रदोष व्रत,
२५	२	१४	गु.	४८	५	अनु.	३२	१२	धृ.	२४	५६	वि.	१५	३६	३	१७	२६	२७	वृश्चिक			७	१८	५	१९	८	१	३	४२	भ. १६।३६ तक, शुक्र पू.षा. में २४।४०,
२५	१	३०	शु.	५२	१५	ज्ये.	३७	४८	शू.	२५	३०	च.	२०	१०	४	१८	२७	२८	ध.	३७	४८	७	१८	५	१९	८	२	४	४९	

(A) अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, नेपच्यून उ.षा. ४ में ४१।३८,

पौष. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५५।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २५ ५३ ५६	५ १ ४७ ४१	५ १४ १० ५०	७ ७ ३० ३४	१० २५ ४१ १	८ ६ २६ ४१	० ३ १२ ५२	४ १ ३७ ५	१० १ ३७ ५
६१ १	७१४ ५९	३२ १५	११ ५६	५ ४०	७५ १९	१ ५३	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	२	२	२	२	१	१	३
ज्ये.	उफा.	हस्त	अनु.	पू.भा.	मूल	अश्वि.	मघा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-इस मास में पांच शनिवार एवं पांच शुक्रवार हैं, अतः इस पक्ष में शुभाशुभ दोनों प्रकार का फल होगा। देश में सुर्भिक्ष एवं सुख शान्तिरहे। अमेरीका, ब्रिटेन, आयरलैण्ड, चीन, जापान आदि में कहीं आन्तरिक स्थिति खराब हो। कहीं वायु वा अग्निकाण्ड, भूकम्प, आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। पौष कृ. पंचमी मंगलवारी होने से सामयिक अच्छी वर्षा हो, धन धान्य समृद्धि रहे,-**"पौषस्य पंचमी कृष्णा भौमवारेण संयुता। तदा मेघाः प्रवर्षन्ति धन-धान्याकुला मही॥"**

ग्रहचाल और बाजार का रुख-इस पक्ष में अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन, घी, सोना, चांदी आदि धातु में तेजी प्रभावी रहेगी। ११ दिसम्बर के लगभग वायदा व्यापारी होशियारी से काम करें,अचानक बाजारों का रुख बदल सकता है। १५ दिसम्बर को रूई, कपास,सूत, तिल, तेल एवं सोना चांदी तेज होंगे।

कुण्डली सूर्योदये

पौष. कृ. ३० शु. इष्ट ५५।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ३ १ १७	८ ३ २७ २३	५ १७ ५४ १५	७ ११ ३२ ४५	१० २६ २४ २४	८ १५ १३ ५७	० ३ १ ५९	४ १ १४ ४९	१० १ १४ ४९
६१ ६	७४४ १८	३१ २७	५७ ४५	६ ५१	७५ २९	१ ८	३ ११	३ ११
		मा	मा.	मा.	मा	व	व	व
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
१	२	३	३	२	१	१	१	३
मू.	मू.	हस्त	अनु.	पू.भा.	पू.षा.	अश्वि.	मघा	धनि.

आकाश लक्षण-दिसम्बर ६,८,११ एवं १५ के लगभग उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। कहीं खण्डवृष्टि एवं कहीं ओलापात हो।

शकुन विचार-यदि पौष कृष्ण पञ्चमी को वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा होती है। यदि इस पक्ष में अष्टमी के दिन बादलचाल एवं वर्षा हो तो आगे फरवरी में अनाज तेज हो।

श्री वि.सं. २०५५, शाक १९२०, पौष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (१९ दिसम्बर से २ जन. तक, सन् १९९८-९९ ई.),द.उ. अयन दक्षिण गोल, हेमन्त, शिशिर ऋतु,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०५५, शाक १९२०, **पौष शुक्ल पक्ष ११** | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (१९ दिसम्बर से २ जन. तक, सन् १९९८-९९ ई.), द.उ. अयन दक्षिण गोल, हेमन्त, शिशिर ऋतु,

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. पौष.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. शाबा.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - प्रातः बुध पूर्व में तथा मगल खमध्यासन्न होगा। सायं गुरु खमध्यासन्न तथा शुक्र को पश्चिम मे देखा जा सकता है ।
२५	०	१	श.	५५	२७	मू.	४२	२८	गं.	२५	२३	कि.	२३	५१	५	१९	२८	२९	धनु			७	१९	५	२०	८	३	५	५६	
२४	५९	२	र.	५७	४५	पू.षा.	४६	१३	वृ.	३४	३७	बा.	२६	३६	६	२०	२९	३०	धनु			७	२०	५	२०	८	४	७	३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०
२४	५९	३	चं.	५९	१०	उषा.	४९	७	ध्रु	२३	१०	तै.	२८	२८	७	२१	३०	र.१	म	१	५६	७	२०	५	२१	८	५	८	११	गुरु पू.भा. ३ में ९।२२, रमजान प्रारम्भ
२५	०	४	मं.	५९	३०	श्र.	५१	५	व्या.	२०	५५	व.	२९	२०	८	२२	पौ.१	२	मकर			७	२१	५	२१	८	६	९	१९	भ. २९।२०से ५९। ३० तक, सूर्य सायन मकर में ०।१२, उत्तरायण(A)
२५	१	५	बु.	५८	५३	ध.	५२	२	ह.	१७	५८	ब.	२९	१२	९	२३	२	३	कुं.	२१	३४	७	२१	५	२२	८	७	१०	२७	पंचक प्रा.२१।३४, बुध ज्येष्ठा में ३३।२
२५	२	६	गु	५७	५	श.	५१	५५	व.	१४	७	कौ.	२७	५१	१०	२४	३	४	कुम्भ			७	२२	५	२२	८	८	११	३५	
२५	३	७	शु.	५४	१०	पू.भा.	५०	४०	सि.	९	२८	ग.	२५	३८	११	२५	४	५	मी.	३५	५९	७	२२	५	२३	८	९	१२	४४	भ. ५४।१० बाद, अवतार दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी,
२५	४	८	श.	५०	२	उ.भा.	४८	१५	व्या.	३	५३	वि.	२२	६	१२	२६	५	६	मीन			७	२२	५	२३	८	१०	१३	५३	भ. २२।६ तक,
									व.	५७	२०																			
२५	५	९	र.	४४	४८	रे.	४४	४२	प.	४९	५३	बा.	१७	२५	१३	२७	६	७	मे	४४	४२	७	२३	५	२४	८	११	१५	२	पंचक समाप्त ४४।४२,
२५	५	१०	चं.	३८	३२	अ	४०	१५	शि.	४१	४२	तै.	११	४०	१४	२८	७	८	मेष			७	२३	५	२५	८	१२	१६	१०	शुक्र उ.षा. में १।५८,
२५	६	११	मं.	३१	३२	भ.	३४	५८	सि.	३२	५२	व.	५	२	१५	२९	८	९	वृ.	४८	३३	७	२३	५	२५	८	१३	१७	१९	भ. ५।२ से ३१।३२ तक, सूर्य पू.षा. में २।३२, (B)
२५	७	१२	बु	२४	३	कृ	२९	१५	सा.	२३	४०	बा.	२४	३	१६	३०	९	१०	वृष			७	२४	५	२६	८	१४	१८	२८	शुक्र मकर में ४१।२५, प्रदोष व्रत,
२५	८	१३	गु.	१६	२५	रो.	२३	३०	शु.	१४	११	तै.	१६	२५	१७	३१	१०	११	मि.	५०	४०	७	२४	५	२७	८	१५	१९	३७	सन् १९९८ ई. समाप्त,
२५	९	१४	शु	९	०	मृ	१७	५०	शु	५	१०	व.	९	०	१८	ज.१	११	१२	मिथुन			७	२५	५	२७	८	१६	२०	४६	भ. ९।० से ३५।३९ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, (C)
									ब्र.	५६	३२																			
२५	१०	१५	श.	२	१८	आ.	१३	२	ऐं	४८	४३	ब.	२	१८	१९	२	१२	१३	क.	५५	१७	७	२५	५	२८	८	१७	२१	५३	बुध मूल धनु मे ४४।४२, पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ,

(A) शिशर ऋतु प्रा., यूरेनस श्रवण ३ में ५६।२, शक पौष प्रा., (B) मंगल चित्रा में २९।३५, शनि मार्गी ३६।२२, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), (C) जनवरी १९९९ ई. प्रारम्भ,

पौष. शु. ८ शनि, इष्ट ५५।१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	५	७	१०	८	०	४	१०
११	१८	२२	२०	२७	२५	२	०	०
१०	१८	२	४०	२३	१६	५६	४९	४९
१४	३०	८	५४	५३	१८	२	२२	२२
६१	८५२	३०	७८	८	७५	०	३	३
७	२	२१	२४	८	१५	१४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४	१	४	२	३	४	१	१	३
मू.	रे.	हस्त	ज्ये.	पू.भा.	पू.षा.	अश्वि.	मघा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

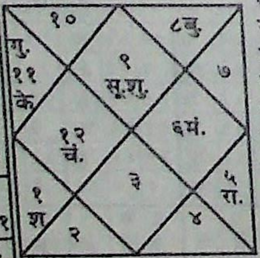

लोक भविष्य-शुक्र उ. षा. नक्षत्र में आ रहा है शुक्र पक्षान्त में शनि की राशि मकर में आ रहा है और शनि भी मार्गी हो रहा है। जनता में शीतजन्य रोगों से परेशानी रहे, काश्मीर, लंका, यावन राष्ट्र के लिए समय अनुकूल नहीं। मकर राशि का शुक्र खड़ी फसलों को हानि पहुँचाता है। जनजीवनोपयोगी वस्तुएं महंगी हों-, **"मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्। जायन्तेऽत्र महर्घाणि नात्रकार्या विचारणा।"**

ग्रहचाल और बाजार का रुख-रूई एवं चांदी में उठापटक के बाद तेजी बने। गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना आदि अनाज तेज रहेंगे। पक्षान्त में रूई, कपास, सूत, चांदी में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण-दिसम्बर २१,२२,२७,२८,३० एवं जनवरी २ के लगभग उ. भारत में भयंकर शीतलहर से जनहानि के समाचार मिलेंगे। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। धुन्द का वातावरण रहेगा।

शकुन विचार- यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे तो फसल अच्छी हो। पौष शुक्ल पञ्चमी को यदि वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है।

कुण्डली सूर्योदये

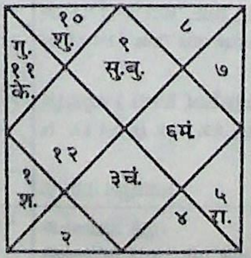

पौष, शु. १५ शनि, इष्ट ५५।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	५	८	१०	९	०	४	१०
१८	२९	२५	०	२८	४	२	०	०
१८	५९	३१	१४	२३	२	५६	२७	२७
८	४०	३५	५०	५२	५३	४०	६	६
६१	८३६	२९	८५	९	७५	०	३	३
८	२१	२०	४५	६	११	३२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
२	३	१	१	३	३	१	१	३
पू.षा.	पुन.	चित्रा	मूल	पू.भा.	उ.षा.	अश्वि.	मघा	धनि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, माघ कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (जनवरी ३ से १७ तक सन् १९९९ई.),उत्तरायण, द. गोल,शिशिर ऋतु

ग्रह दर्शन - १३ जनवरी को बुध पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मंगल खमध्यासन्न होगा। सायं शनि पूर्व कपाल में तथा शुक्र पश्चिम में, गुरु खमध्यासन्न होंगे।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	श.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
२५	१३	२	र.	५२	१८	पुन.	९	२२	वै.	४१	५८	तै.	२४	२७	२०	३	१३	१४	कर्क			७	२५	५	२९	८	१८	२३	१	
२५	१४	३	चं.	४९	४३	पु.	७	७	वि.	३६	३२	व.	२१	१	२१	४	१४	१५	कर्क			७	२५	५	२९	८	१९	२४	९	भ. २१।० से ४९।४३ तक ,
२५	१५	४	मं	४९	२	आश्ले.	६	३७	प्री.	३२	३२	ब.	१९	२३	२२	५	१५	१६	सि.	६	३७	७	२५	५	३०	८	२०	२५	१८	श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय रात्रि ९ घं. १ मि.)
२५	१६	५	बु	५०	१७	म.	७	५८	आ	३०	७	कौ.	१९	४०	२३	६	१६	१७	सिंह			७	२६	५	३१	८	२१	२६	२६	
२५	१७	६	गु	५३	२७	पू.फा.	११	१५	सौ.	२९	१०	ग.	२१	५२	२४	७	१७	१८	क.	२७	३०	७	२६	५	३२	८	२२	२७	३४	भ. ५३।२७ बाद, शुक्र श्रवण में ४०।१०,
२५	१९	७	शु.	५८	१५	उ.फा.	१६	१५	शो.	२९	३०	वि.	२५	५१	२५	८	१८	१९	कन्या			७	२६	५	३३	८	२३	२८	४२	भ. २५।५१ तक, जन्म दिन स्वा. विवेकानन्द जी,
२५	२१	८	श	६०	००	ह.	२२	३५	अ.	३०	५०	बा.	३१	१०	२६	९	१९	२०	तु.	५६	१०	७	२६	५	३३	८	२४	२९	५०	
२५	२४	८	र.	४	५	चि.	२९	४५	सु.	३२	४५	कौ.	४	५	२७	१०	२०	२१	तुला			७	२६	५	३४	८	२५	३०	५९	
२५	२६	९	चं.	१०	२७	स्वा.	३७	१५	धृ	३४	५३	ग.	१०	२७	२८	११	२१	२२	तुला			७	२६	५	३५	८	२६	३२	८	भ. ४३।३९ बाद, सूर्य उ.षा. में ७।३८,बुध पू.षा. में ४९।८, (A)
२५	२८	१०	मं	१६	५०	वि.	४४	२७	शू.	३६	५०	वि.	१६	५०	२९	१२	२२	२३	वृ.	२७	३९	७	२६	५	३६	८	२७	३३	१५	भ. १६।५० तक,मंगल तुला में, १८।१२, (B)
२५	३०	११	बु	२२	३५	अनु	५१	०	गं	३८	१५	बा.	२२	३५	३०	१३	२३	२४	वृश्चिक			७	२६	५	३७	८	२८	३४	२३	बुध पूर्व में अस्त, लोहड़ी (पंजाब), षट्तिला एकादशी व्रत (स)
२५	३३	१२	गु.	२७	२५	ज्ये.	५६	३०	वृ.	३८	५८	तै.	२७	२५	मा.१	१४	२४	२५	ध.	५६	३०	७	२६	५	३८	८	२९	३५	३२	सं. सूर्य मकर में २३।५५ पुण्यकाल ७।५५ बाद ,मु. १५,
२५	३६	१३	शु.	३१	७	मू.	६०	००	ध्रु	३८	४८	व.	३१	७	२	१५	२५	२६	धनु			७	२५	५	३९	९	०	३६	४०	भ. ३१।७ बाद, प्रदोषव्रत,
२५	३९	१४	श.	३३	३०	मू.	०	५३	व्या.	३७	३५	वि.	२	११	३	१६	२६	२७	धनु			७	२५	५	३९	९	१	३७	४७	भ. २।११ तक,
२५	४२	३०	र.	३४	४३	पू.षा.	३	२८	ह.	३५	२८	चं.	४	७	४	१७	२७	२८	म.	११	२७	७	२५	५	४०	९	२	३८	५४	मौनी आमावस

(A) राहू आश्ले, ४ कर्क में, केतु धनिष्ठा २ मकर में २६।३५,(B) गुरु पू.भा. ४ मीन में ४१।३८,

माघ. कृ. ८ शनि, इष्ट ५५।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
८	५	५	८	१०	९	०	४	१०
२५	२९	२८	१०	२९	१२	३	०	०
२६	४८	५३	२८	३०	४८	२	४	४
४	२५	१६	३६	२८	५८	४५	५१	५१
६१	७१२	२८	८१	१०	७५	१	३	३
१	२१	६	५६	२	७	१८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

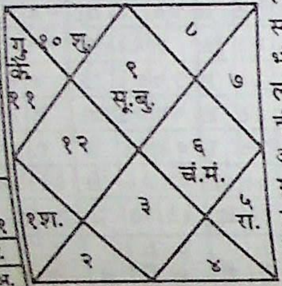

लोक भविष्य- माघ कृष्ण प्रतिपदा शनिवारी होने से जनता में सब स्वस्थ रहें, रोग एवं राजनैतिक संकट से मुक्ति रहे, धन-धान्य समृद्धि भी रहे- ''माघस्य प्रतिपद् कृष्णा शनिवारेण-संयुता। नीरुजा निर्भया लोकाः धन धान्य समाकुलाः ॥ '' इस पक्ष में तुला राशि का मंगल नीचशनि के साथ समसप्तक योग बना रहा है— सीमा प्रान्तों पर कहीं अशान्ति का वातावरण बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्ष मध्य में चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द, एवं अन्य अनाज मन्दे रहें। तेल, तिलहन में तेजी रहे। १४ जनवरी के लगभग घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, में तेजी बने। १२ से १५ जनवरी के मध्य रूई में जोरदार तेजी बनेगी।

कुण्डली सूर्योदये

माघ. कृ. ३० रवि, इष्ट ५५।१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	६	८	११	९	०	३	९
३	७	२	२२	०	२२	३	२९	२९
३५	४०	३२	४२	५४	४९	१६	३९	३९
८	१८	२६	३२	१	३४	१५	२४	२४
६१	७८६	२६	९४	१०	७५	२	३	३
७	२२	२६	२	५७	१	१२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- जनवरी १२,१३,१४ को कहीं वायुवेग के साथ वर्षा व बूंदाबांदी हो,शीतलहर ओरदार चले। उत्तरी भारत के कुछ भाग में धुन्द का वातावरण रहे।

शकुन विचार- माघ कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें लेकिन वर्षा न हो तो गेहूँ और जौं के स्टाक से आगे लाभ मिलेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०५५, शाक १९२०, माघ शुक्ल पक्ष २१															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(जनवरी १८ से ३१ तक, सन् १९९९ ई.),उत्तरायण,द. गोल शिशिर ऋतु,
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। प्रातः मंगल खमध्यासन्न होगा। सायं गुरु,शुक्र पश्चिम में शनि पूर्व कपाल में दृश्य होगा।
															माघ.	जन.	पौष	रम.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४४	१	चं.	३४	३२	उ.षा.	५	५३	व.	३२	२२	कि.	४	३८	५	१८	२८	२९	मकर			७	२५	५	४१	९	३	४०	१	शुक्र धनिष्ठा में ११।५८,
२५	४६	२	मं.	३३	२७	श्र.	६	४५	सि.	२८	३२	बा.	४	०	६	१९	२९	३०	कुं.	३६	४३	७	२५	५	४२	९	४	४१	७	पञ्चक प्रा.३६।४३,चन्द्र दर्शन मु.३०, शनि अश्वि.२में ३५।३५,
२५	४८	३	बु.	३१	२५	ध.	६	४०	व्य.	२४	०	तै.	२	२६	७	२०	३०	श.१	कुम्भ			७	२४	५	४३	९	५	४२	१२	भ.५९।५८ बाद, सूर्य सायन कुंभ में २६।४७,बुध उषा. में (A)
२५	५१	४	गु.	२८	३२	श.	५	४०	व.	१८	३१	वि.	२८	३२	८	२१	मा१	२	मी.	४९	२५	७	२४	५	४४	९	६	४३	१६	भ.२८।३२ तक, शक माघ प्रा.,वरदा चतुर्थी,कुन्द चतुर्थी,तिल चतुर्थी
२५	५४	५	शु.	२४	५८	पू.भा.	४	२	प.	१२	५३	बा.	२४	५८	९	२२	२	३	मीन			७	२४	५	४५	९	७	४४	२०	बुध मकर में ३१।२०, श्री पंचमी, वसन्त पंचमी
२५	५८	६	श.	२०	४५	उ.भा. रेव.	१ ५८	४० ४५	शि. सि.	६ ५९	३२ ४५	तै.	२०	४५	१०	२३	३	४	मे.	५८	४५	७	२३	५	४६	९	८	४५	२२	पचंक समाप्त ५८।४५,शुक्र कुम्भ में ३९।४२,जन्म दिन,(B)
२६	१	७	र.	१६	०	अ	५५	२०	सा.	५२	३२	व.	१६	०	११	२४	४	५	मेष			७	२३	५	४७	९	९	४६	२३	भ.१६।० से ४३।२३ तक, सूर्य श्रवण में १३।२०,रथ सप्तमी(C)
२६	४	८	चं.	१०	४५	भ.	५१	३७	शु.	४५	५	ब.	१०	४५	१२	२५	५	६	मेष			७	२३	५	४७	९	१०	४७	२२	सूर्य अभिजित् से निवृत्त ५।५२, भीष्माष्टमी
२६	७	९	मं.	५	१५	कृ.	४७	४०	शु.	३७	२५	कौ.	५	१५	१३	२६	६	७	वृ.	५	३०	७	२२	५	४८	९	११	४८	२२	गणतन्त्र दिवस (भारत)
अवम		१०	मं.	५९	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२६	९	११	बु.	५३	४५	रो.	४३	४०	ब्र.	२९	४३	व.	२६	३८	१४	२७	७	८	वृष			७	२२	५	४९	९	१२	४९	२०	भ.२६।३८ से ५३।४५ तक, मंगल स्वाती में ४०।२८(D)
२६	१२	१२	गु.	४८	१७	मृ.	३९	५३	ऐं.	२२	४	ब.	२१	१	१५	२८	८	९	मि.	११	४६	७	२१	५	५०	९	१३	५०	१७	बुध श्रवण में ३५।५५,जया एकादशी व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी
२६	१५	१३	शु.	४३	१५	आ.	३६	३०	वै.	१४	४५	कौ.	१५	४६	१६	२९	९	१०	मिथुन			७	२१	५	५१	९	१४	५१	१२	शुक्र शत. मे ०।३०, प्रदोष व्रत,
२६	१८	१४	श.	३९	०	पुन.	३३	४८	वि.	७	५५	ग.	११	८	१७	३०	१०	११	क.	११	२८	७	२०	५	५२	९	१५	५२	७	भ.३९।०बाद, गुरु उ.भा. १में ३४।२८,बलिदान दिन,(E)
२६	२२	१५	र.	३५	४२	पु.	३२	२	प्री. आयु	१ ५६	४३ २५	वि.	७	२१	१८	३१	११	१२	कर्क			७	२०	५	५३	९	१६	५३	०	भ.७।२१ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा,(F)

(A) २५।५५, सूर्य अभिजित् में ५८।४६, गौरी तृतीय (गौंतरी) व्रत (देखें -पृ० १०६), शव्वाल प्रा०, (B) नेता जी सुभाष,(C) (पहले अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी,(D) जया एकादशी व्रत (स्मा.),(E) महात्मा गांधी,(F) जन्मदिन गुरु रविदास जी, माघ स्नान समाप्त,

माघ. शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५५।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	६	९	११	१०	०	३	९
११	२७	५	५	२	२	३	२९	२९
४२	३१	५७	३०	२४	४९	३६	१३	१३
३७	४६	१४	२१	३२	५	३८	५८	५८
६०	८५६	२४	९८	११	७४	३	३	३
५९	५५	२८	३७	४५	५०	१	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
१	१	४	३	४	३	२	४	२
श्रव.	कृ.	चित्रा	उ.षा.	पू.भा.	धनि.	अश्वि.	आर्द्रा	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

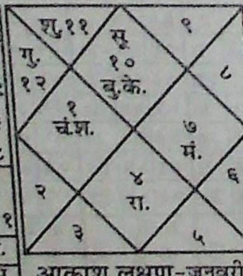

लोक-भविष्य-माघ शुक्ल सप्तमी को रविवार होने से कहीं भयंकर दुर्भिक्ष, पश्चिमी भू भाग पर कहीं युद्धभयव्याप्त हो-"माघस्य शुक्ल सप्तम्यां रविवारो भवेद्यदि। दुर्भिक्षं हि महाघोरं विग्रहश्च महाभयम्॥" शनि-मंगल का सप्तक योग चल रहा है,- कहीं यान दुर्घटना से हानि हो, किसी बड़े नेता की मृत्यु व पदरिक्त हो। कहीं बम विस्फोट व अग्निकाण्ड से जन धन हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- रूई, सोना, चांदी में तेजी एवं सभी प्रकार के अनाज में भी कुछ तेजी रहे। पक्षमध्य में गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूंग, ज्वार, बाजरा में तेजी का रुख रहे। पक्षान्त में चान्दी में कुछ मन्दी बने। लेकिन रूई एवं अनाज तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

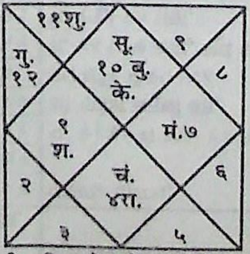

माघ. शु. १५रवि. इष्ट ५५।२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	६	९	११	१०	०	३	९
१७	२१	८	१५	३	१०	३	२८	२८
४९	५५	१९	३१	३६	१७	५६	५४	५४
१४	४२	५९	५८	२३	५०	८	५३	५३
६०	७९९	२२	१०२	१२	७४	६	३	३
५३	५६	४८	४०	१७	४०	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ	उ.	उ.	उ.	अ	अ
३	२	१	२	१	२	२	४	२
श्रव.	आर्द्रा	स्वा.	श्रव.	उ.भा.	शत.	अश्वि.	आर्द्रा	धनि.

आकाश लक्षण-जनवरी १८,१९,२०,२२एवं २३ जनवरी को उत्तरी भारत में शीतलहर चलेगी। काश्मीर, हि. प्रदेश में कहीं जोरदार हिमपात होगा।

शकुन विचार-यदि माघ की पूर्णमासी के दिन बादल हों तो अन्न के संग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ रहे। यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी प्रकार का गर्द गुबार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा, वर्षा खूब होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२ — तारीखें — चन्द्र राशि — चण्डीगढ़ — उदय-कालिक

(फर.१ से १६ तक, सन् १९९९ ई.), उत्तरायन द. गोल, शिशिर ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फर.	श. माघ	मु. ज़ुल्हा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। प्रातः मंगल खमध्यासन्न होगा। सायं गुरु, शुक्र पश्चिम में तथा शनि पूर्व कपाल में होगा।
२६	२५	१	चं.	३३	४०	आश्ले	३१	३५	सौ	५२	१०	बा.	४	४१	१९	१	१२	१३	सिं.	३१	३५	७	१९	५	५४	९	१७	५३	५१	फरवरी प्रारम्भ,
२६	२८	२	म	३३	१०	मे	३२	३०	शो.	४९	१०	तै.	३	२५	२०	२	१३	१४	सिंह			७	१८	५	५४	९	१८	५४	४२	
२६	३२	३	बु.	३४	१०	पू.फा.	३४	५५	अ.	४७	१७	व.	३	४०	२१	३	१४	१५	कं	५०	५६	७	१८	५	५५	९	१९	५५	३१	भ. ३।४० से ३४।१० तक,
२६	३५	४	गु.	३६	४८	उ.फा.	३८	५८	सु.	४६	४५	ब.	५	२९	२२	४	१५	१६	कन्या			७	१७	५	५६	९	२०	५६	२०	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२६	३९	५	शु.	४०	५८	ह.	४४	२२	धृ.	४७	१५	कौ.	८	५३	२३	५	१६	१७	कन्या			७	१६	५	५७	९	२१	५७	७	बुध धनि. में २५।४८,
२६	४३	६	श.	४६	१७	चि.	५०	५३	शू.	४८	३७	ग.	१३	३८	२४	६	१७	१८	तु.	१७	३८	७	१६	५	५८	९	२२	५७	५३	भ. ४६।१७ बाद, सूर्य धनि. में २१।४२
२६	४७	७	र.	५२	२२	स्वा.	५८	७	ग.	५०	३३	वि.	१९	२०	२५	७	१८	१९	तुला			७	१५	५	५९	९	२३	५८	३९	भ. १९।२० तक,
२६	५२	८	चं.	५८	४२	वि.	६०	००	वृ.	५२	४०	बा.	२५	३२	२६	८	१९	२०	वृ.	४८	४१	७	१४	६	०	९	२४	५९	२५	शुक्र पू.भा. में ४३।५८,
२६	५६	९	मं.	६०	००	वि.	५	३३	ध्रु.	५४	३२	तै.	२९	२१	२७	९	२०	२१	वृश्चिक			७	१३	६	०	९	२६	०	१२	बुध कुम्भ में १०।४२,
२७	०	९	बु	४	४२	अनु	१२	३२	व्या	५५	५०	ग	४	४२	२८	१०	२१	२२	वृश्चिक			७	१२	६	१	९	२७	०	५१	भ. ३७।१ बाद,
२७	५	१०	गु.	९	४०	ज्ये.	१८	३५	ह.	५६	७	वि.	९	४०	२९	११	२२	२३	ध.	१८	३५	७	१२	६	२	९	२८	१	३३	भ. ९।४० तक,
२७	९	११	शु.	१३	२५	मू.	२३	२२	व.	५५	२०	बा.	१३	२५	फा१	१२	२३	२४	धनु			७	११	६	३	९	२९	२	१३	सं. सूर्य कुम्भ में ५७।०, पुण्यकाल अगले दिन(A)
२७	१३	१२	श.	१५	३५	पूषा.	२६	४०	सि.	५३	१७	तै.	१५	३५	२	१३	२४	२५	म	४२	५	७	१०	६	४	१०	०	२	५३	शनि प्रदोष व्रत,
२७	१८	१३	र.	१६	७	उ.षा.	२८	२०	व्य.	५०	०	व.	१६	७	३	१४	२५	२६	मकर			७	९	६	५	१०	१	३	३१	भ. १६।७ से ४५।३६ तक श्री महाशिवरात्रि व्रत,
२७	२२	१४	चं.	१५	५	श्र.	२८	३०	व.	४५	३२	श.	१५	५	४	१५	२६	२७	कु.	५८	०	७	८	६	५	१०	२	४	७	पञ्चक प्रा. ५८।०, गुरु उ.भा. २ में १७।५८,
२७	२७	३०	मं.	१२	३५	ध.	२७	२०	प	४०	०	ना.	१२	३५	५	१६	२७	२८	कुम्भ			७	७	६	६	१०	३	४	४३	शुक्र मीन में ४८।४५, भौमवती अमावस,

(A) मध्याह्न से पूर्व, मु. ३०, बुध शत. में ५१।८, विजया एकादशी व्रत (स.)

फाल्गु. कृ. ८ चन्द्र. इष्ट ५५।४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	६	९	११	१०	०	३	९
२५	१	११	२९	५	२०	४	२८	२८
५५	२२	१३	३२	१६	१४	२७	२९	२९
४८	२०	२८	५५	४६	५४	२६	२७	२७
६०	७२५	२०	२०८	१२	७४	४	३	३
४०	४१	१०	७	५४	२६	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य-पक्ष मध्य के बाद बुध-सूर्य-शुक्र ये तीनों कुम्भ राशि में होंगे। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, लेकिन देश में प्रगतिप्रद नई नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी।-"कुम्भ राशौ यदा भानुः समृद्धिस्तत्र जायते॥" लेकिन शनि-मंगल की प्रतियुति कहीं सीमा प्रान्तों पर अशान्ति का कारण बन सकती है। पक्षान्त में कहीं अचानक प्रकृति-प्रकोप से हानि हो, कहीं किसी महापुरुष की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्ष के मध्य में घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेजी बने। रूई, अलसी, एरण्ड एवं अनाजों में कुछ मन्दा रहे। घी, तेल, खाण्ड, शक्कर में सामान्यतः तेजी रहेगी। पक्षान्त में चान्दी में साधारण मन्दी आकर फिर तेजी बनेगी।

कुण्डली सूर्योदये

फाल्गु. कृ. ३० मं., इष्ट ५६।०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	६	१०	११	११	०	३	९
४	१३	१३	१४	७	०	५	२८	२८
१	१४	४३	८	१	८	४	४	४
१६	५४	५८	१४	४१	४८	२२	१	१
६०	८३९	१६	२०९	१३	७४	४	३	३
३४	३४	५७	३१	२४	२	५८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ	उ.	उ.	उ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण-फरवरी ५,९,१२ को हि. प्र. लंका का पूर्वी छोर, शिलांग एवं कुछ अन्य प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं।

शकुन विचार -यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(फरवरी १७ से मार्च २ तक, सन् १९९९ ई),उत्तरायण, द.गोल,शिशिर वसंत ऋतु

ग्रह दर्शन - बुध २० फरवरी को सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। सायं गुरु,शुक्र पश्चिम में होंगें। इस समय शनि खमध्यासन्न होगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. फाल्गु.	अं. फर.	श. माघ	मु. शव्वा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३१	१	बु.	८	५३	श.	२५	२	शि.	३३	३८	ब.	८	५३	६	१७	२८	२९	कुम्भ			७	६	६	७	१०	४	५	१८	चन्द्रदर्शन मु. ३०,
२७	३५	२	गु	४	१२	पू.भा.	२१	५३	सि.	२६	३७	कौ.	४	१२	७	१८	२९	जि.१	मी.	७	४१	७	५	६	८	१०	५	५	५०	जिल्काद प्रारंभ,
अवम		३	गु.	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय
२७	४०	४	शु.	५३	२	उ.धा.	१८	७	सा.	१९	७	व.	२५	५६	८	१९	३०	२	मीन			७	४	६	९	१०	६	६	२१	भ.२५।५६ से ५३।२ तक,सूर्य सायन मीन में ३।०२,(A)
२७	४५	५	श.	४७	७	रे.	१४	२	शु.	११	२२	ब.	२०	५	९	२०	फा.१	३	मेष	१४	२	७	३	६	९	१०	७	६	५०	पञ्चक स. १४।२,बुध पू.भा. में १०।१८,बुध पश्चिम में (B)
२७	५०	६	र.	४१	१७	अ.	९	५५	शु. ब्र.	३ ५५	३५ ५०	कौ	१४	१२	१०	२१	२	४	मेष			७	२	६	१०	१०	८	७	१७	
२७	५४	७	चं.	३५	४०	भ.	५	५५	ऐं.	४८	२०	ग.	८	२९	११	२२	३	५	वृ.	२०	०	७	१	६	११	१०	९	७	४२	भ. ३५।४० बाद
२७	५९	८	मं.	३०	२७	कृ. रो.	२ ५९	१५ ०	वै.	४१	१५	वि.	३	४	१२	२३	४	६	वृष			७	०	६	१२	१०	१०	८	६	भ ३।३ तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	३	९	बु.	२५	४८	मृ.	५६	२०	वि.	३४	३२	कौ	२५	४८	१३	२४	५	७	मि.	२७	४०	६	५९	६	१२	१०	११	८	२७	
२८	७	१०	गु.	२१	४३	आ.	५४	२२	प्री.	२८	२०	ग.	२१	४३	१४	२५	६	८	मिथुन			६	५८	६	१३	१०	१२	८	४७	भ. ५०।२ बाद
२८	११	११	शु.	१८	२२	पुन.	५३	१०	आ.	२२	४८	वि.	१८	२२	१५	२६	७	९	क.	३८	२८	६	५७	६	१४	१०	१३	९	०४	भ.१८।२२तक,बुध मीन में ९।२२, आमला एकादशी व्रत (स.)
२८	१६	१२	श.	१५	५०	पु.	५२	४७	सौ.	१७	५६	ब.	१५	५०	१६	२७	८	१०	कर्क			६	५६	६	१५	१०	१४	९	२०	गोविन्द द्वादशी, शनि प्रदोष व्रत,
२८	२१	१३	र.	१४	१२	आश्ले.	५३	२०	शो.	१३	४०	तै.	१४	१२	१७	२८	९	११	सिंह	५३	२०	६	५५	६	१५	१०	१५	९	३४	बुध उ.भा. में ३०।४५
२८	२६	१४	चं.	१३	३२	म	५४	५८	अ	१०	२५	व.	१३	३२	१८	मा.१	१०	१२	सिंह			६	५४	६	१६	१०	१६	९	४४	भ. १३।३२ से ४३।४७ तक, होलिका दहन (प्रदोष में),(C)
२८	३०	१५	मं.	१४	२	पू.फा.	५७	४०	सु.	७	४०	ब.	१४	२	१९	२	११	१३	सिंह			६	५२	६	१७	१०	१७	९	५३	गुरु उ.भा. ३ में ५७।४८, शुक्र रेवती में २१।३२(D)

(A) सूर्य शत. में ३३।१८, शुक्र उ.भा. में ३०।४५, बसन्त ऋतु प्रा,(B) उदित, यूरेनस श्रवण ४ में ४६।२५, शक फाल्गुन प्रारम्भ, (C) श्री सत्य नारायण व्रत, मार्च प्रा.,(D) वसन्तोत्सव, होलाष्टक समाप्त,

फाल्गु. शुक्ल ८ मं., इष्ट ५६।१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	६	१०	११	११	०	३	९
११	२२	१५	२६	८	८	५	२७	२७
४	४०	३३	२९	३६	४७	४०	४१	४१
४३	५७	९	१८	३३	९	५०	४६	४६
६०	८३७	१३	१७	१३	७३	५	३	३
२२	३९	४३	१५	४४	५१	३१	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ शत.	४ रो.	३ स्वा.	२ पू.भा.	२ उ.भा.	२ उ.भा.	२ अश्वि.	४ आश्ले.	२ धनि.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य- पक्ष मध्य में गुरु-शुक्र की अंशात्मक-युति होगी-''गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्।'' कहींतूफान, समुद्री तूफान, किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि हो। यहां २६ फरवरी के लगभग बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा। चौपायों में रोग से हानि हो, राजा एवं प्रजा में किसी विशेष पहलु को लेकर विरोध पैदा हो, घेराव, हड़ताल आदि का वातावरण बनें,- **''धने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥''**

ग्रहचाल और बाजार का रूख-सोना, मूंगा-मोती आदि जवाहरात एवं अनाज तेज रहें। चावल, रूई में कुछ मन्दा रहे। २० फरवरी के लगभग शेयर एवं रूई में विशेष झटके से मन्दा आए। २६ फरवरी के लगभग रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा, चान्दी में मन्दे के बाद अच्छी तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

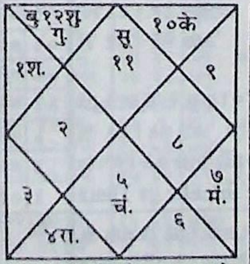

फाल्गु. शु.१५,मं.,इष्ट ५६।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	६	११	११	११	०	३	९
१८	२६	१६	६	१०	१७	६	२७	२७
६	२५	५८	१२	१३	२२	२०	१९	१९
३७	२४	११	२६	४०	५२	५०	३०	३०
६०	७५२	९	५९	१४	७३	५	३	३
९	३९	५९	६	१	२८	५८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
४ शत.	४ पू.फा.	४ स्वा.	२ उ.भा.	३ उ.भा.	२ रे.	२ अश्वि.	४ आश्ले.	२ धनि.

आकाश लक्षण- फरवरी २०,२६,२७ मार्च २ के लगभग बंगाल, आसाम एवं बंगला देश में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। हवा का जोर रहेगा। उत्तरी भारत में मौसम में तबदीली अनुभव होगी।

शकुन विचार- यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा हो तो फसल को रोली (काल अंगारी) रोग से हानि होती है। ऐसी स्थिति में अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं.२०५५, शाक १९२०, चैत्र कृष्ण पक्ष २४															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(३से १७ मार्च तक, सन् १९९९ ई.), उत्तरायण दक्षिण गो वसन्त ऋतु।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. फाल्गु	अं. माघ	श. फाल्गु	मु. जिल्हिज	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध १२ मार्च को पश्चिम में दीखना बंद हो जाएगा। मंगल पश्चिम की ओर जाता दीखेगा। सायं गुरु , शुक्र पश्चिम में तथ के पास ही शनि दृश्य होगा।
२८	३५	१	बु	१५	३७	उ.फा.	६०	०	धृ.	५	५८	कौ.	१५	३७	२०	३	१२	१४	क.	१३	३९	६	५१	६	१७	१०	१८	१०	१	होला (श्री आनन्दपुर साहिब,पंजाब),
२८	३९	२	गु.	१८	२७	उ.फा.	१	३५	शू.	५	१५	ग.	१८	२७	२१	४	१३	१५	कन्या			६	५०	६	१८	१०	१९	१०	६	भ.५०। २७ बाद,सूर्य पू.भा. में ४९। ४२,
२८	४३	३	शु.	२२	२७	ह.	६	३७	गं.	५	२३	वि.	२२	२७	२२	५	१४	१६	तु.	३९	४०	६	४९	६	१९	२१	२०	१०	९	भ. २२। २७ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२८	४८	४	श.	२७	३०	चि.	१२	४२	वृ.	६	२०	बा.	२७	३०	२३	६	१५	१७	तुला			६	४८	६	१९	१०	२१	१०	१२	शनि अश्वि. ३ में ७।०,
२८	५२	५	र.	३३	२०	स्वा.	१९	३७	ध्रु.	८	०	कौ.	०	२५	२४	७	१६	१८	तुला			६	४७	६	२०	१०	२२	१०	१२	
२८	५७	६	चं.	३९	३७	वि.	२७	०	व्या	१०	७	ग.	६	२९	२५	८	१७	१९	वृ.	१०	९	६	४५	६	२१	१०	२३	१०	१०	भ. ३९। ३७ बाद,
२९	२	७	मं.	४५	४५	अनु	३४	२२	ह.	१२	१७	वि.	१२	४१	२६	९	१८	२०	वृश्चिक			६	४४	६	२२	१०	२४	१०	८	भ.१२। ४१ तक
२९	६	८	बु	५१	१२	ज्ये.	४१	१०	व.	१४	१०	बा	१८	२९	२७	१०	१९	२१	ध	४१	१०	६	४३	६	२२	१०	२५	१०	४	बुध वक्री १९।५८,
२९	१०	९	गु	५५	३०	मू	४६	५८	सि	१५	२४	तै.	२३	२१	२८	११	२०	२२	धनु			६	४२	६	२३	१०	२६	९	५८	मेला शीतला माता कुराली (पं)
२९	१५	१०	शु.	५८	१२	पूषा.	५१	१२	व्य.	१५	३९	व.	२६	५१	२९	१२	२१	२३	धनु			६	४१	६	२४	१०	२७	९	५१	भ. २६। ५१ से ५८। १२ तक,बुध पश्चिम में अस्त,
२९	२०	११	श.	५९	२	उ.षा.	५३	४५	व.	१४	३५	ब.	२८	३७	३०	१३	२२	२४	म.	६	५०	६	३९	६	२४	१०	२८	९	४३	शुक्र अश्वि मेष में १७। ३२,वेंकटेश (प्लूटो)(A)
२९	२५	१२	र.	५७	५५	श्र.	५४	५३	प.	१२	२	कौ.	२८	२९	चै१	१४	२३	२५	मकर			६	३८	६	२५	१०	२९	९	३४	सं.सूर्य मीन में ५०। ३०,पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न
२९	३०	१३	चं.	५४	५५	ध.	५३	१०	शि.	८	०	ग.	२६	२५	२	१५	२४	२६	कुम्भ	२४	१	६	३७	६	२५	११	०	९	२२	भ. ५४।५५बाद,पंचक प्रा.२४।१,राहु आश्ले. ३ केतु धनि.
२९	३५	१४	मं.	५०	१७	श.	५०	२०	सि. सा.	२ ५५	३० ३७	वि.	२२	३६	३	१६	२५	२७	कुम्भ			६	३६	६	२६	११	१	९	८	भ.२२।३६ तक,गुरु उ.भा.४में ३।२५मेला, पिहोवा तीर्थ (
२९	४०	३०	बु.	४४	१७	पू.भा.	४६	१०	शु.	४७	४५	च.	१७	१७	४	१७	२६	२८	मी.	३२	१३	६	३५	६	२७	११	२	८	५२	चान्द्र संवत्सर २०५५ वि. पूर्ण,

(A) मार्गी, पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मा.), (B) पूर्व मु. ३०, पापमोचनी एकादशी व्रत, वै., (C) में २२। ४२,सोम प्रदोष व्रत,

चैत्र कृ. ८ बु, इष्ट ५६। ५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	६	११	११	११	०	३	९
२६	३	१८	१०	१२	२७	७	२६	२६
७	१०	१	११	६	९	१०	५४	५४
२	१०	४	०	५०	९	१७	४	४
५९	७३३	५	९	१४	७३	६	३	३
४८	५२	१	४७	१६	२	२५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

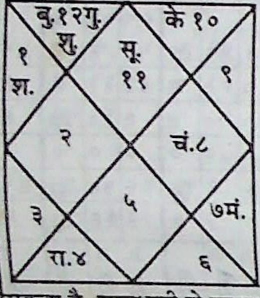

लोक भविष्य-पक्ष मध्य तक गुरु-शुक्र एकराशि में रहते हैं। व्यापारी वर्ग को विशेष लाभ मिलेगा। पक्ष मध्य के बाद शनि-शुक्र का मंगल के साथ सम-सप्तक भीषण महंगाई का संकेत देता है। पशुओं में रोग से हानि भी हो,-**"दैत्यगुरु यदा मेषे सर्वधान्य-महर्घता। महिषी पशुपीड़ा च मेघ-वर्षा भविष्यति॥"** शनि-मंगल का सम-सप्तक योग जनता एवं राजनीतिज्ञों में अशान्ति कारक प्रतीत होता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्ष के मध्य में घी, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में तेजी बने। रूई में झटके से तेजी बने। गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज मन्दे हों। ध्यान दें,- रूई में १२ मार्च के लगभग तुरन्त मंदा आ सकता है, सावधानी से व्यापार करें। चान्दी तेज हो। शेयर बाजार मन्दे रहेंगे। १३ मार्च को सोना, चांदी अनाज एवं घी में तेजी रहे।

आकाश लक्षण- मार्च ६,१०,१२ से १६ तक हवा का जोर रहे, मध्यप्रदेश -बंगाल आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार -अगर चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे तो गुड़, खाण्ड, गेहूँ, सोना तेज रहे।

" चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार बार सिरनाय। संवत यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय॥"

कुण्डली सूर्योदये

चैत्र कृ. ३० बुध, इष्ट ५७। २

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
११	११	६	११	११	०	०
३	६	१८	६	१३	५	७
५	१	२१	२९	४७	३९	५६
५६	२	२९	४३	१५	८	२४
५९	८७८	०	५२	१४	७३	६
४४	४५	४	३४	२६	३७	४७
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.
-	-	उ.	अ	उ.	उ.	उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि-नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

भा. स्टै. टा. में दिये गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी-पलों में दिये गये तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं। अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैन्डर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाय तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किये जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भारतीय स्टैडर्ड टाईम में तिथि-नक्षत्रों-योगों का समाप्ति- काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र, राशि प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति-काल आदि कई वर्षों से देते आ रहे हैं। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक हैं, इसे समझ लेना चाहिए।

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घन्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है । अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच, रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घन्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३०, एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है । अर्थात्- इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है।

ध्यान रहे :- सूर्योदय के बाद वाले टाईम के ६, ७ घन्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिये गये उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा :-

(१) ८ जन.' ९८ को पौष शुक्ल ११गु. के आगे '२५ घं. ४९ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि-यहां एकादशी तिथि ९ जन. को रात्रि के १ बजकर ४९ मि. पर समाप्त होगी।

(२) २४ जन.' ९८ को ज्येष्ठा नक्षत्र के आगे '३१ घं.६ मि.' है। इसका अर्थ है,कि-यह नक्षत्र २५ जन. को प्रातः सूर्योदय से पहिले ७ बजकर ६ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) १ जन.' ९८ को गुरुवार के दिन ''चन्द्र राशि प्रवेश'' वाले कालम में ''कुं. २८घं. ।५९ मि.'' लिखा है। इसका अभिप्रायः है , कि चन्द्रमा २ जन. को प्रातः सूर्योदय से पहिले ४ बजकर ५९ मि. पर कुम्भ में प्रवेश करेगा। ध्यान दें-यहां कुम्भ में चन्द्रमा के प्रवेश के समय यद्यपि २ जन. ही होगी, अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी शुक्र ही होगा, लेकिन भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय गुरुवार ही होगा। क्योंकि इस पद्धति के अनुसार वार सूर्योदय पर ही बदलता है। यही कारण है, कि चन्द्रमा का कुम्भ में यह प्रवेशकाल गुरुवार के आगे ही लिखा गया है।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि इस पंचांग में तिथि आदि का काल यदि २४ घन्टा से अधिक हो तो उसमें से २४ घन्टे घटाकर शेष घन्टा मिनटों को अग्रिम तारीख का टाईम समझना चाहिए।

नोट :- जिस तिथि, नक्षत्र या योग के आगे टाईम (घं.मि.) नहीं लिखा है (वहाँ केवल' - - -'' इस प्रकार का चिन्ह ही लगाया गया है) उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि समझनी चाहिए।

मास पक्ष	जन. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
पौष शुक्ल पक्ष	१	३	गु.	१७	१०	श्र	१७	४२	ह.	११	४९	कुंभ	२८	५९	भ.२८।६बाद,पंचक प्रा.(A)
	२	४	शु.	१५	४	ध.	१६	१६	व.	८	५४	कुंभ			भ. १५।४ तक,
									सि.	२९	५६				
	३	५	श.	१२	५६	श.	१४	४९	व्य.	२६	५९	कुंभ			शनि रेवती २में १४।१५
	४	६	र.	१०	५०	पू.भा.	१३	२४	व.	२४	५	मीन	७	४७	
	५	७	चं.	८	४७	उ.भा.	१२	३	प.	२१	१५	मीन			भ. ८।४७से १९।४९ तक,
				३०	५१										
	६	९	मं.	२९	१	रे.	१०	४८	शि.	१८	२९	मेष	१०	४८	पंचक स. १०।४८
	७	१०	बु.	२७	२०	अ.	९	४०	सि.	१५	५०	मेष			बुध मूल धनु में १३।४१
	८	११	गु.	२५	४९	भ.	८	४१	सा.	१३	१९	वृष	१४	२८	भ.१४।३४ से २५।४९तक(B)
	९	१२	शु.	२४	३३	कृ.	७	५३	शु.	१०	५७	वृष			मंगल धनि में ८।२१
						रो.	३१	२०							
	१०	१३	श.	२३	३५	मृग.	३१	६	शु.	८	४८	मिथु.	१९	१०	सूर्य उ.षा में २८।१४,
									ब्र.	३०	५४				
	११	१४	र.	२३	००	आ.	३१	१७	ऐं.	२९	२०	मिथुन			भ. २३।० बाद,
	१२	१५	चं.	२२	५४	पुन.	-	-	वै.	२८	९	कर्क	२५	४३	भ. १०।५७ तक
माघ कृष्ण पक्ष	१३	१	मं.	२३	२०	पुन.	७	५६	वि.	२७	२३	कर्क			
	१४	२	बु.	२४	२१	पु.	९	८	प्री.	२७	४	कर्क			सं सूर्य मकरमें१०।४७,(C)
	१५	३	गु.	२५	५८	आ.	१०	४५	आ.	२७	१२	सिंह	१०	५४	भ. १३।९से २५।५८ तक,
	१६	४	शु.	२८	६	म.	१३	१३	सौ.	२७	४२	सिंह			प्लूटो अनु. ४ में २७।२९,
	१७	५	श.	३०	३७	पू.फा.	१५	५८	शो.	२८	३१	कन्या	२२	४३	मंगल कुंभ में १९।१३,
	१८	६	र.	-	-	उ.फा.	१९	१	अ.	२९	२८	कन्या			बुध पू.षा. में ८।५९
	१९	६	चं.	९	१९	ह.	२२	८	सु.	३०	२४	कन्या			भ. ९।१९ से २२।३८ तक,(D)
	२०	७	म.	११	५७	चि.	२५	४	धृ	३१	८	तुला	११	३८	व. शुक्र धनु में ११।४३(E)
	२१	८	बु.	१४	१६	स्वा.	२७	३५	शू.	-	-	तुला			
	२२	९	गु.	१६	२	वि.	२९	३०	शू.	७	३०	वृश्चि.	२३	५	भ. २८।३४ बाद,
	२३	१०	शु.	१७	६	अनु.	३०	४१	गं.	७	२३	वृश्चिक			भ. १७।६ तक, गुरु धनि.(F)
									वृ.	३०	४०				
	२४	११	श.	१७	२३	ज्ये	३१	६	ध्रु	२९	२२	धनु	३१	६	
	२५	१२	र	१६	५३	मू.	३०	४८	व्या.	२७	२८	धनु			मंगल शत. में ३०।२,
	२६	१३	चं.	१५	४०	पू.षा.	२९	५१	ह	२५	२	धनु			भ.१५।४० से २६।४५तक,(G)
	२७	१४	म.	१३	५०	उ.षा.	२८	२३	व.	२२	९	म.	११	३१	बुध उ.षा में १५।५५
	२८	३०	बु.	११	३१	श्र.	२६	३२	सि.	१८	५६	मकर			
माघ शुक्ल पक्ष	२९	१	गु.	८	५२	ध	२४	२७	व्य.	१५	३०	कुम्भ	१३	३१	पंचक,प्रा. १३।३१,(H)
				३०	३										
	३०	३	शु.	२७	९	श.	२२	१७	व.	११	५६	कुम्भ			
	३१	४	श.	२४	२२	पू.भा.	२०	११	प	८	२२	मीन	१४	४२	भ. १३।४५ से २४।२२ तक,
									शि.	२८	५३				

(A) २८।५९, यूरेनस श्रवण २ में २४।११,(B) गुरु धनि. ३ कुंभ में १५।४८,(C) शुक्र पश्चिम में अस्त१०।१५, (D) शुक्र पूर्व में उदय २२।३०(E) सूर्य सायन कुंभ में १२।१५,(F) ४ में १३।७, सूर्य श्रवण में ३०।३४(G) व. शुक्र पू.षा में २७।१२,(H) बुध मकर में २०।५५,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि - नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	फर. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश आदि
माघ शुक्ल पक्ष	१	५	र.	२१ ४३	उ. भा.	१८ १३	सि.	२५ ३२	मीन	
	२	६	चं.	१९ २०	रे.	१६ ३०	सा.	२२ २५	मेष १६ ३०	पंचक समाप्त १६ ।३० ,
	३	७	मं.	१७ १७	अ.	१५ ६	शु.	१९ ३५	मेष	भ.१७ ।१७से२८ ।२७ तक(A)
	४	८	बु.	१५ ३६	भ.	१४ ३	शु.	१७ २	वृष १९ ५१	बुध श्रवण में ३० ।४६
	५	९	गु.	१४ १९	कृ.	१३ २४	ब्र.	१४ ४९	वृष	शुक्र मार्गी २४ ।२१,
	६	१०	शु.	१३ २८	रो.	१३ १०	ऐ.	१२ ५५	मिथु. २५ १३	भ.२५ ।१६ बाद,सूर्य धनि. (B)
	७	११	श.	१३ ३	मृ.	१३ २२	वै.	११ २३	मिथुन	भ १३ ।३ तक,
	८	१२	र.	१३ ४	आ.	१४ ०	वि.	१० ११	मिथुन	
	९	१३	चं.	१३ ३३	पुन.	१५ ३	प्री.	९ २०	कर्क ८ ४५	गुरु वार्धक्य प्रारंभ १२ ।३६,
	१०	१४	मं.	१४ २९	पु.	१६ ३४	आ.	८ ५०	कर्क	भ.१४ ।२९ से २७ ।११ तक,
	११	१५	बु.	१५ ५३	आ.	१८ ३१	सौ.	८ ४१	सिंह १८ ३१	मंगल पू.भा. में २८ ।३५, (C)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१२	१	गु.	१७ ४२	म.	२० ५२	शो.	८ ५३	सिंह	सं सूर्य कुंभ में २३ ।४५, (D)
	१३	२	शु.	१९ ५५	पू.फा.	२३ ३५	अ.	९ २२	कन्या ३० १८	बुध धनि. में ८ ।४०,
	१४	३	श.	२२ २६	उ.फा.	२६ ३३	सु.	१० ७	कन्या	भ. ९ ।१० से २२ ।२६ तक,
	१५	४	र.	२५ ५	ह.	२९ ४०	धृ.	११ २	कन्या	
	१६	५	चं.	२७ ४४	चि.	----	शू.	१२ ०	तुला १९ १२	बुध कुंभ में २९ ।०,शुक्र (E)
	१७	६	मं.	३० १०	चि.	८ ४३	गं.	१२ ५४	तुला	भ.३० ।१० बाद,
	१८	७	बु.	-----	स्वा.	११ ३२	वृ.	१३ ३६	तुला	भ.१९ ।१०तक,सूर्य सायन(F)
	१९	७	गु.	८ १०	वि.	१३ ५४	धु.	१३ ५५	वृश्चि. ७ २१	सूर्य शत. में १४ ।१३,
	२०	८	शु.	९ ३३	अनु.	१५ ३९	व्या.	१३ ४६	वृश्चिक	बुध शत. में २२ ।२६, (G)
	२१	९	श.	१० १३	ज्ये.	१६ ४१	ह.	१३ २	धनु १६ ४०	भ. २२ ।८ बाद,
	२२	१०	र.	१० ३	मू.	१६ ५५	व.	११ ४१	धनु	भ. १० ।३ तक,
	२३	११	चं.	९ ६	पू.षा.	१६ २३	सि.	९ ४२	मकर २२ ८	शुक्र मकर में १३ ।१५,
	२४	१२	मं.	७ २४	उ.षा.	१५ ८	व्य.	७ ८	मकर	भ.२९ ।२बादं,मंगल (H)
				२९ २			व.	२८ २		
	२५	१४	बु.	२६ १०	श्र.	१३ १८	प.	२४ ३१	कुंभ २४ १२	भ.१५ ।३६ तक,पंचकप्रा.२४ ।१२
	२६	३०	गु.	२२ ५६	ध.	११ ००	शि.	२० ४१	कुंभ	
फा. शु. पक्ष	२७	१	शु.	१९ २८	श.	८ २४	सि.	१६ ४०	मीन २४ २२	बुध पू.भा. में २६ ।२,
					पू.भा.	२९ ४१				
	२८	२	श.	१५ ५९	उ. भा.	२६ ५८	सा.	१२ ३६	मीन	मंगल उ.भा. में ३० ।७ (I)

(A) बुध पूर्व में अस्त २१ ।१७,(B) में ९ ।३९, गुरु शत. १ में १८ ।२७,(C) नेपच्यून उ.षा. ४में ११ ।४७, (D) गुरु अस्त १२ ।३६,(E) उ.षा में १२ ।१०,(F) मीन में २६ ।२४,(G) गुरु शत. २ में १६ ।१९,शनि रेवती ३ में ८ ।५७,(H) मीन में २३ ।२३,(I)मंगल अस्त २३ ।५४,

मास पक्ष	मार्च १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	१	३	र.	१२ ३६	रे.	२४ २८	शु.	८ ३६	मेष २४ २७	भ.२३ ।२ बाद,पंचक स.(A)
							शु.	२८ ४७		
	२	४	चं.	९ २८	अ.	२२ १६	ब्र.	२५ १५	मेष	भ.९ ।२८तक,राहु पू.फा १(B)
				३० ४३						
	३	६	मं.	२८ २८	भ.	२० ३३	ऐ.	२२ ७	वृष २६ ११	
	४	७	बु.	२६ ४७	कृ.	१९ २१	वै.	१९ २६	वृष	भ.२६ ।४७ बाद, सूर्य (C)
	५	८	गु.	२५ ४४	रो.	१८ ४७	वि.	१७ १४	मिथु. ३० ४४	भ.१४ ।१५तक, बुध मीन(D)
	६	९	शु.	२५ २१	मृ.	१८ ५१	प्री.	१५ ३४	मिथुन	बुध उ.भा. में २५ । ३३,(E)
	७	१०	श.	२५ ३६	आ.	१९ ३२	आ.	१४ २४	मिथुन	बुध पश्चिम में उदय ३० ।८,
	८	११	र.	२६ २५	पुन.	२० ४९	सौ.	१३ ४२	कर्क १४ २७	भ. १३ ।५९ से २६ । २५ तक,
	९	१२	चं.	२७ ४६	पु.	२२ ३६	शो.	१३ २६	कर्क	शुक्र श्रवण में ११ । २८,
	१०	१३	मं.	२९ ३३	आ.	२४ ५०	अ.	१३ ३२	सिंह २४ ५०	
	११	१४	बु.	- -	म.	२७ २४	सु.	१३ ५७	सिंह	
	१२	१४	गु.	७ ४१	पू.फा.	३० १४	धृ.	१४ ३६	सिंह	भ. ७ ।४१ से २० । ५४ तक,
	१३	१५	शु.	१० ४	उ.फा.	- -	शू.	१५ २५	कन्या १२ ५८	
चैत्र कृष्ण पक्ष	१४	१	श.	१२ ३७	उ.फा.	९ १४	गं.	१६ २१	कन्या	सं. सूर्य मीन में २० । ३५,(F)
	१५	२	र.	१५ १४	ह.	१२ १८	वृ.	१७ २०	तुला २५ ५०	भ. २८ ।३१ बाद,
	१६	३	चं.	१७ ४८	चि.	१५ २१	ध्रु.	१८ १६	तुला	भ.१७ ।४८तक,गुरुउदित ९ ।२५,
	१७	४	मं.	२० ११	स्वा.	१८ १४	व्या.	१९ ३	तुला	सूर्य उ.भा में २८ ।५६,
	१८	५	बु.	२२ १५	वि.	२० ५०	ह.	१९ ३८	वृश्चि. १४ १३	मंगल रेवती में १२ ।३०,
	१९	६	गु.	२३ ५२	अनु.	२३ ०	व.	१९ ५२	वृश्चिक	भ. २३ ।५२ बाद,गुरु (G)
	२०	७	शु.	२४ ५३	ज्ये.	२४ ३६	सि.	१९ ४०	धनु २४ ३६	भ.१२ ।२२ तक,गुरु शत(H)
	२१	८	श.	२५ १२	मू.	२५ ३२	व्य.	१८ ५७	धनु	शनि रेवती ४ में २२ ।३९,
	२२	९	र.	२४ ४६	पू.षा.	२५ ४४	व.	१७ ३९	धनु	
	२३	१०	चं.	२३ ३५	उ.षा.	२५ ११	प.	१५ ४५	मकर ७ ४०	भ. १२ ।१० से २३ ।३५तक,
	२४	११	मं.	२१ ३९	श्र.	२३ ५६	शि.	१३ १६	मकर	शुक्र धनि. में १६ ।२१,
	२५	१२	बु.	१९ ५	ध.	२२ २	सि.	१० १३	कुंभ ११ ३	पंचक प्रा. ११ ।३,
	२६	१३	गु.	१५ ५८	श.	१९ ३७	सा.	६ ४२	कुंभ	भ.१५ ।५८ से २६ ।१३ तक,(I)
							शु.	२६ ४७		
	२७	१४	शु.	१२ २८	पू.भा.	१६ ५०	शु.	२२ ३८	मीन ११ ३३	बुध वक्री २१ ।११,
	२८	३०	श.	८ ४४	उ.भा.	१३ ५१	ब्र.	१८ २१	मीन	
				२८ ५६						
चत्र.शु.	२९	२	र.	२५ १४	रे.	१० ५१	ऐ.	१४ ४	मेष १० ५१	पंचक स. १० ।५१(J)
	३०	३	चं.	२१ ४९	अश्वि.	८ १	वै.	९ ५८	मेष	
					भ.	२९ ३०	वि.	३० ९		
	३१	४	मं.	१८ ५१	कृत्ति.	२७ ।३०	प्री.	२६ ।४५	वृ. ११ ००	भ. ८ ।२० से १८ ।५१ तक(K)

(A) स. २४ ।२७, यूरेनस श्रव.३ में ११ ।२४,(B) केतु शत.३में २८ ।५४,(C) पू.भा में २० ।२६,(D) में ७ ।२४, (E) गुरु शत. ३ में १२ ।४७,(F) बुध रेवती में १६ ।४४,(G)बाल्य समाप्त ९ ।२५,(H) ४ में १३ ।५५,सूर्य सायन मेष में २५ ।२४,(I) शनि अस्त ३० ।१३,(J) बुध पश्चिम में अस्त. (K) सूर्य रेवती में १५ । ४१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

३ में ८ ।९७.(H) मीन में २३ ।२३.(I) मंगल अस्त २३ ।
सायन मेष में २५ ।२८.(I) शनि अस्त ३० ।१३.(J) बुध पश्चिम में अस्त. (K) सूर्य रेवती में १५ । ४१

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि-नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	अप्रै. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	१	५	बु.	१६ २९	रो.	२६ ९	आ	२३ ५३	वृष			
	२	६	गु	१४ ४९	मृ	२५ ३३	सौ.	२१ ३६	मि.	१३	५९	
	३	७	शु.	१३ ५६	आ.	२५ ४४	शो.	१९ ५८	मिथुन			भ.१३।५६ से २५।५५,तक(A)
	४	८	श.	१३ ५३	पुन.	२६ ४२	अ	१८ ५८	क.	२०	२८	मंगल अश्वि मेष में २५।१५
	५	९	र.	१४ ३५	पु	२८ २२	सु	१८ ३४	कर्क			
	६	१०	चं.	१५ ५८	आश्ले.	--	धृ.	१८ ४०	कर्क			भ.२८।५७ बाद,शुक्र (B)
	७	११	मं.	१७ ५४	आश्ले.	६ ३७	शू.	१९ १०	सिं	६	३७	भ.१७।५४ तक,
	८	१२	बु.	२० १२	म	९ ११	ग.	१९ ५७	सिंह			
	९	१३	गु	२२ ४४	पू.फा.	१२ १६	वृ.	२० ५५	क.	१९	३	
	१०	१४	शु.	२५ २०	उ.फा.	१५ २२	ध्रु.	२१ ५६	कन्या			भ. २५।२० बाद,
	११	१५	श	२७ ५४	ह.	१८ २७	व्या.	२२ ५६	कन्या			भ. १४।३७ तक,
वैशाख कृष्ण पक्ष	१२	१	र.	- -	चि.	२१ २६	ह.	२३ ५०	तु.	७	५८	
	१३	१	चं.	६ १८	स्वा.	२४ १४	व.	२४ ३६	तुला			सूर्य अश्वि. मेष में २९।३
	१४	२	मं.	८ ३०	वि.	२६ ४६	सि.	२५ ९	वृ.	२०	७	भ.२१।२७ बाद,बुध पूर्व में उदित,
	१५	३	बु.	१० २४	अनु.	२८ ५९	व्य.	२५ २७	वृश्चिक			भ. १०।२४ तक,
	१६	४	गु	११ ५७	ज्ये.	--	व.	२५ २६	वृश्चिक			व.बुध उ.भा. में ११।३७
	१७	५	शु.	१३ ३	ज्ये.	६ ४८	प	२५ ३	ध.	६	४८	शनि अश्वि. १ मेष में १३।५,
	१८	६	श.	१३ ३९	मू.	८ ८	शि.	२४ १५	धनु			भ.१३।३७ से २५।३७ तक
	१९	७	र.	१३ ३७	पू.षा.	८ ५४	सि.	२२ ५८	म.	१४	५७	शुक्र पू.भा. में १०।३९ (C)
	२०	८	चं.	१२ ५८	उ.षा.	९ ४	सा.	२१ ९	मकर			सूर्य सायन वृष में १२।२७(D)
	२१	९	मं.	११ ४०	श्र.	८ ३५	शु.	१८ ४९	कुं.	२०	२	भ.२२।४१ बाद, पंचक (E)
	२२	१०	बु.	९ ४२	ध.	७ २६	शु.	१५ ५८	कुम्भ			भ. ९।४२ तक, मंगल (F)
					शत.	२९ ४२						
	२३	११	गु.	७ ९	पू.भा.	२७ २६	ब्र.	१२ ३९	मी.	२२	०	
				२८ ५								
	२४	१३	शु.	२४ ३८	उ.भा.	२४ ४८	ऐं.	८ ५५	मीन			भ.२४।३८ बाद,बुध रेव. (G)
							वै.	२८ ५५				
	२५	१४	श.	२० ५७	रे.	२१ ५५	वि.	२४ ४४	मे.	२१	५५	भ. १०।४८ तक, पंचक (H)
	२६	३०	र.	१७ ११	अ.	१८ ५७	प्री.	२० ३१	मेष			
वैशा. शु.	२७	१	चं.	१२ ३३	भ.	१६ ९	आ.	१६ २५	वृ.	२१	३१	सूर्य भर. में २०।५०
	२८	२	मं.	१० ११	कृ.	१३ ३९	सौ.	१२ ३६	वृष			शुक्र मीन में १२।२९,
	२९	३	बु.	७ १८	रो.	११ ३९	शो.	९ ११	मि.	२२	५९	भ. १८।१० से २९।३ तक,
				२९ ३								
	३०	५	गु	२७ ३३	मृ	१० १९	अ	६ १७	मिथुन			
							सु.	२८ २				

(A) गुरु पू.भा १ में २६।४.(B) शत. में २२।६, (C) गुरु पू.भा. २ में १०।४३, (D) बुध मार्गी १३।४,
(E) प्रारंभ २०।२,(F) भर. में २१।५६,(G) में १६।१३,(H) समाप्त, २१।५५ .

मास पक्ष	मई १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	१	६	शु.	२६ ५४	आ.	९ ४५	घृ.	२६ २७	क.	२७	५८	शुक्र उ.भा. में १२।८, शनि उदित
	२	७	श.	२७ ८	पुन.	१० ३	शू.	२५ ३४	कर्क			भ. २७।८ बाद
	३	८	र.	२८ १०	पु.	११ ११	गं.	२५ १९	कर्क			भ.१५।३९ तक
	४	९	चं.	- -	आश्ले.	१३ ५	वृ.	२५ ३८	सि.	१३	५	नेप्चून वक्री १४।५०,राहु मघा.(A)
	५	९	मं.	५ ५५	म	१५ ३५	ध्रु.	२६ २०	सिंह			
	६	१०	बु.	८ ९	पू.फा.	१८ ३०	व्या.	२७ १८	क.	२५	१७	भ.२१।२४बाद,गुरु पू.भा. (B)
	७	११	गु.	१० ४०	उ.फा.	२१ ३७	ह.	२८ २२	कन्या			भ.१०।४० तक,
	८	१२	शु.	१३ १६	ह.	२४ ४३	व.	२९ २५	कन्या			
	९	१३	श.	१५ ४६	चि.	२७ ४०	सि.	- -	तु.	१४	१२	
	१०	१४	र.	१८ २	स्वा.	- -	सि.	६ १९	तुला			भ१८।२ बाद,मंगल कृति,(C)
	११	१५	चं.	१९ ५९	स्वा.	६ २२	व्य.	७ ०	वृ.	२६	११	भ.७।१ तक, सूर्य कृति. में १४।५९
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	१	मं.	२१ ३५	वि.	८ ४४	व.	७ २६	वृश्चिक			
	१३	२	बु.	२२ ४९	अनु	१० ४५	प.	७ ३५	वृश्चिक			शुक्र रेवती में ७।७
	१४	३	गु	२३ ३९	ज्ये.	१२ २४	शि.	७ २७	ध.	१२	२४	भ.११।१४ से २३।३९ तक, (D)
	१५	४	शु.	२४ ६	मू	१३ ४१	सि.	७ १	धनु			मंगल वृष में १८।२३,
	१६	५	श.	२४ ७	पू.षा.	१४ ३३	सा.	६ १५	म	२०	३८	
							शु.	२९ ९				
	१७	६	र.	२३ ४०	उ.षा.	१४ ५९	शु.	२७ ४२	मकर			भ.२३।४० बाद,यूरेनस (E)
	१८	७	चं.	२२ ४१	श्र.	१४ ५७	ब्र.	२५ ५०	कुं.	२६	४१	भ.११।११ तक, पंचक प्रा. २६।४१
	१९	८	मं.	२१ १८	ध.	१४ २५	ऐ.	२३ ३४	कुम्भ			बुध भर० में २५।३०
	२०	९	बु.	१९ २२	श.	१३ २३	वै.	२० ५४	कुम्भ			
	२१	१०	गु.	१६ ५७	पू.भा.	११ ५२	वि.	१७ ५०	मी.	६	१५	भ.६।१०से १६।५७ तक,(F)
	२२	११	शु.	१४ ७	उ.भा.	९ ५५	प्री.	१४ २६	मीन			
	२३	१२	श.	१० ५९	रे.	७ ३८	आ.	१० ४७	मे.	७	३८	पंचक स. ७।३८,
					अश्वि.	२९ ८						
	२४	१३	र.	७ ३९	भ.	२६ ३५	सौ.	६ ५८	मेष			भ. ७।३९ से १७।५८तक, (G)
				२८ १७			शो.	२७ ६				
	२५	३०	चं.	२५ २	कृ.	२४ ८	अ.	२३ २१	वृ.	७	५९	सूर्य रोहि.में ११।१३,मंगल रोहि.(H)
ज्ये. शु. प.	२६	१	मं.	२२ ६	रो.	२२ ०	सु.	१९ ५०	वृष			
	२७	२	बु.	१९ ३७	मृ.	२० १९	धृ.	१६ ४२	मि.	९	९	बुध कृतिका में १७।२९
	२८	३	गु.	१७ ४७	आ.	१९ १७	शू.	१४ ३	मिथुन			भ.२९।१४ बाद,
	२९	४	शु.	१६ ४१	पुन.	१६ ५९	ग.	१२ १	क.	१३	३	भ.१६।४१ तक, बुध वृष में ११।२२
	३०	५	श.	१६ २५	पु.	१९ ३१	वृ.	१० ३८	कर्क			बुध पूर्व में अस्त
	३१	६	र.	१७ ०	आश्ले.	२० ५२	ध्रु.	९ ५५	सिं.	२०	५२	

(A) ४ में, केतु शत.२ में २७।३, (B) ३ में, ७।२५,(C) में २७।२८, बुध अश्वि. १ मेष में १६।२२, वक्री वेंकटेश (प्लूटो) अनु.३ में, (D) सं. सूर्य वृष में २५।५४, शनि अश्वि. २ में १३।३, (E) वक्री ११।१७,(F) सूर्य सायन मिथुन में ११।३५,(G) शुक्र अश्वि. मेष में २१।२७, (H) में १८।४५, गुरु पू. भा. ४ मीन में २८।१४,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि-नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	जून. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१	७	चं.	१८ २०	म.	२२ ५७	व्या.	९ ५०	सिंह			भ. १८ । २० बाद,
	२	८	मं.	२० १८	पू. फा.	२५ ३५	ह.	१० १६	सिंह			भ. ७ । १९ तक,
	३	९	बु.	२२ ३९	उ.फा.	२८ ३४	व.	११ ४	क.	८	२०	बुध रोहि. में १० । १,
	४	१०	गु.	२५ १०	ह.	- -	सि.	१२ ५	कन्या			
	५	११	शु.	२७ ३७	ह.	७ ३८	व्य.	१३ ८	तु.	२१	७	भ. १४ ।२४ से २७ । ३७ तक,(A)
	६	१२	श.	- -	चि.	१० ३६	व.	१४ ३	तुला			
	७	१२	र.	५ ४८	स्वा.	१३ १६	प.	१४ ४३	तुला			
	८	१३	चं.	७ ३६	वि.	१५ ३३	शि.	१५ ५	वृ.	८	५९	सूर्य मृग. में ९ । ४,
	९	१४	मं.	८ ५६	अनु.	१७ २२	सि.	१५ ४	वृश्चिक			भ.८ ।५६से २१ ।२२ तक,(B)
	१०	१५	बु.	९ ४८	ज्ये.	१८ ४५	सा.	१४ ४३	ध.	१८	४५	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	११	१	गु	१० १४	मू	१९ ४२	शु.	१४ ०	धनु			
	१२	२	शु.	१० १५	पू.षा.	२० १६	श.	१२ ५८	म	२६	१९	भ.२२ ।७बाद,बुध मिथुन में १४ ।५३
	१३	३	श.	९ ५३	उ.षा.	२० २८	ब्र.	११ ३९	मकर			भ. ९ । ५३ बाद,
	१४	४	र.	९ ११	श्र.	२० २१	ऐ.	१० ३	मकर			शनि अश्वि.३ में १६ । ५७
	१५	५	चं.	८ ८	ध.	१९ ५४	वै.	८ ११	कुं.	८	८	पंचक प्रा.८ ।८, सं. सूर्य(C)
	१६	६	मं.	६ ४७	श.	१९ ८	वि.	६ ४	कुम्भ			भ.६ । ४७ से १७ । ५६ तक(D)
				२९ ६			प्री.	२७ ४१				
	१७	८	बु.	२७ ६	पू.भा.	१८ ३	आ.	२५ २	मी.	१२	१९	मंगल मृग. में २० । १९,
	१८	९	गु.	२४ ४९	उ.भा.	१६ ४०	सौ.	२२ ९	मीन			
	१९	१०	शु.	२२ १८	रे.	१५ १	शो.	१९ ४	मेष	१५	१	भ. ११ ।३३ से २२ । १८तक(E)
	२०	११	श.	१९ ३६	अ	१३ ११	अ	१५ ४९	मेष			
	२१	१२	र.	१६ ५०	भ.	११ १४	सु.	१२ ३१	वृ.	१६	४२	सूर्य सायन कर्क में १९ ।३३,(F)
	२२	१३	चं.	१४ ७	कृ.	९ १७	धृ.	९ १३	वृष			भ. १४ । ७ से२४ । ५१तक(G)
	२३	१४	मं.	११ ३४	रो.	७ ३०	शू.	६ २	मि.	१८	४२	
							गं.	२७ ६				
	२४	३०	बु.	९ २०	मृ.	६ ०	वृ.	२४ ३०	मिथुन			गुरु उ.भा.१ में १५ । ४
					आ.	२८ ५८						
आषाढ़ शु. प.	२५	१	गु.	७ ३५	पुन.	२८ २९	ध्रु.	२२ २२	क.	२२	३६	
	२६	२	शु.	६ २५	पु.	२८ ४१	व्या.	२० ४६	कर्क			
	२७	३	श.	५ ५७	आश्ले.	- -	ह.	१९ ४५	कर्क			भ. १८ । ५बाद, मंगल मिथुन(H)
	२८	४	र.	६ १४	आश्ले.	५ ३७	व.	१९ २०	सिं	५	३७	भ. ६ । १४ तक,
	२९	५	चं.	७ १४	म.	७ १७	सि.	१९ २६	सिंह			बुध पुष्य में १२ । १५,
	३०	६	मं.	८ ५४	पू.फा.	९ ३३	व्य.	२० ०	क.१६		१७	

(A) शुक्र भरणी में ८ ।३३, (B) बुध मृग. में १४ ।७,(C) मिथुन में ८ ।३९,बुध आर्द्रा में १६ ।३८,(D) शुक्र कृत्ति में १०।४८,(E) पंचक स. १५ ।१, शुक्र वृष में १२ ।५५,(F) बुध पुन में २८ ।२७, बुध पश्चिम में उदित, (G) सूर्य आर्द्रा में ८ ।१० ,(H) में १२ ।०७, बुध कर्क में १३ ।४८, शुक्र रोहणी में २३ ।३०.

मास पक्ष	जुलाई १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	१	७	बु.	११ २	उ.फा.	१२ १८	व.	२० ५२	कन्या			भ. ११ । २ से २४ । १४ तक
	२	८	गु.	१३ २६	ह.	१५ १८	प.	२१ ५२	तु.	२८	४६	
	३	९	शु.	१५ ५०	चि.	१८ १५	शि.	२२ ४९	तुला			
	४	१०	श.	१८ २	स्वा.	२१ १	सि.	२३ ३३	तुला			
	५	११	र.	१९ ५०	वि.	२३ २२	सा.	२३ ५८	वृ.	१६	४७	भ.६ । ५६ से १९ । ५० तक,
	६	१२	चं.	२१ ६	अनु.	२५ ११	शु.	२३ ५७	वृश्चिक			सूर्य पुन. में ७ । ३९, राहु (A)
	७	१३	मं.	२१ ४८	ज्ये.	२६ २७	शु.	२३ २९	ध.	२६	२७	मंगल आर्द्रा में ८ । १६,
	८	१४	बु.	२१ ५५	मू	२७ ११	ब्र	२२ ३५	धनु			भ.२१ ।५५ बाद,बुध आश्ले.(B)
	९	१५	गु	२१ ३१	पू.षा.	२७ २३	ऐ.	२१ १५	धनु			भ. ९ । ४३ तक,
श्रावण कृष्ण पक्ष	१०	१	शु.	२० ३९	उ.षा.	२७ १०	वै.	१९ ३४	म.	९	२०	
	११	२	श.	१९ २६	श्र.	२६ ३५	वि.	१७ ३४	मकर			
	१२	३	र.	१७ ५२	ध.	२५ ४४	प्री.	१५ १९	कु.	१४	९	भ.६ । ३९ से १७ । ५२ तक, (C)
	१३	४	चं.	१६ ६	श.	२४ ४०	आ.	१२ ५१	कुंभ			
	१४	५	मं.	१४ ८	पू.भा.	२३ २५	सौ.	१० १५	मी.	१७	४४	शुक्र मिथुन में १७ । ३८,
	१५	६	बु.	१२ २	उ.भा.	२२ ४	शो.	७ ३१	मीन			भ. १२ । २ से २२ । ५६ तक,
							अ.	२८ ४२				
	१६	७	गु	९ ५०	रे.	२० ३८	सु	२५ ५०	मे	२०	३८	पंचक स.२० । ३८,सं. सूर्य (D)
	१७	८	शु.	७ ३५	अ	१९ १०	धृ	२२ ५६	मेष			
				२९ १९								
	१८	१०	श.	२७ ६	भ.	१७ ४२	शू.	२० ४	वृ.	२३	२१	भ.१६ ।१२से २७ ।६ (E)
	१९	११	र.	२४ ५८	कृ.	१६ १९	ग.	१७ १६	वृष			
	२०	१२	चं.	२३ २	रो.	१५ ५	वृ.	१४ ३५	मि.	२६	३८	सूर्य पुष्य में ७ ।१५,शुक्र आर्द्रा (F)
	२१	१३	मं.	२१ २२	मृ.	१४ ५	ध्रु.	१२ ५	मिथुन			भ. २१ । २२ बाद
	२२	१४	बु.	२० ४	आ.	१३ २५	व्या.	९ ५२	मिथुन			भ. ८ । ४३ तक,
	२३	३०	गु.	१९ १४	पुन.	१३ ११	ह.	८ ५९	क.	७	१७	सूर्य सायन सिंह में ६ । २५
श्रावण शुक्ल पक्ष	२४	१	शु.	१८ ५६	पु.	१३ ३९	व.	६ ३१	कर्क			
							सि.	२९ ३०				
	२५	२	श.	१९ १५	आ.	१४ २१	व्य.	२८ ५८	सिं.	१४	२१	
	२६	३	र.	२० १०	म.	१५ ५०	व.	२८ ५६	सिह			
	२७	४	चं.	२१ ४१	पू.फा.	१७ ५३	प.	२९ १८	क.	२४	३१	भ. ८ । ५५ से २१ । ४१ तक, (G)
	२८	५	मं.	२३ ४०	उ.फा.	२० २५	शि.	- -	कन्या			
	२९	६	बु.	२५ ५९	ह.	२३ १६	शि.	६ १	कन्या			
	३०	७	गु.	२८ २५	चि.	२६ १५	सि.	६ ५६	तु.	१२	४५	भ. २८ । २५ बाद,
	३१	८	शु.	- -	स्वा.	२९ ८	सा.	७ ५५	तुला			भ.१७ ।३३ तक, बुध वक्री (H)

(A) मघा ३, केतु मात० १ में १४ ।०४, (B) में ६ ।३४, शुक्र पुन० में २८ ।२, (C) पंचक प्रा० १४ ।९, (D) कर्क में ११ ।२४, मंगल उदित, (E) तक, गुरु वक्री ६ ।५६, (F) में २ ।०८, बुध मघा सिंह में १४ ।१५, (G) पंचक पुन. में ६ ।४२, (H) ७ ।५५ , शुक्र पुन. में ७ ।०४.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि-नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	अग. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	१	८	श.	६ ४२	वि.	- -	शु.	८ ४६	वृ.	२५	४	
	२	९	र.	८ ३९	वि.	७ ४३	शु.	९ २०	वृश्चिक			व.नेपच्यून उषा ३ में २६ । २८,
	३	१०	चं.	१० ६	अनु.	९ ४७	ब्र.	९ ३१	वृश्चिक			भ.२२ ।३० बाद,सूर्य आश्ले.में ६ ।४,
	४	११	मं.	१० ५४	ज्ये.	११ १५	ऐं.	९ १२	ध.	११	१५	भ. १० । ५४ तक,
	५	१२	बु.	११ १२	मू.	१२ ३	वै.	८ २१	धनु			
	६	१३	गु.	१० २९	पू.षा.	१२ ११	वि.	६ ५८	म.	१८	४	बुध पश्चिम में अस्त
							प्री.	२९ ६				
	७	१४	शु.	९ २०	उ.षा.	११ ४४	आ.	२६ ४६	मकर			भ. ९ । २० से २० । ३० तक,
	८	१५	श.	७ ४०	श्र.	१० ४६	सौ.	२४ ६	कुं.	२२	६	पंचक प्रा. २२ । ६, शुक्र (A)
				२९ ३५								
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	९	२	र.	२७ ११	ध.	९ २५	शो.	२१ ९	कुम्भ			व. यूरेनस श्रवण २ में (B)
	१०	३	चं.	२४ ३७	श.	७ ४६	अ.	१८ २	मी.	२४	२५	भ.१३ । ५४ से २४ । ३७ (C)
	११	४	मं.	२१ ५७	पू.भा.	५ ५८	सु.	१४ ४९	मीन			मंगल कर्क में १२ ।२६, (D)
					उ.भा.	२८ ६						
	१२	५	बु.	११ १९	रे.	२६ १७	धृ.	११ ३४	मे	२६	१७	पंचक स. २६ । १७
	१३	६	गु.	१६ ४७	अ.	२४ ३५	शू.	८ २३	मेष			भ.१६ । ४७ से २७ । ३६ तक
							गं.	२९ २५				
	१४	७	शु.	१४ २५	भ.	२३ ५	वृ.	२६ २६	वृ.	२८	४१	
	१५	८	श.	१२ १६	कृ.	२१ ५०	ध्रु.	२३ ४६	वृष			शनि वक्री २३ । २९,
	१६	९	र.	१० २६	रो.	२० ५४	व्या.	२१ २१	वृष			भ.२१ ।४० बाद,सं.सूर्य मघा (E)
	१७	१०	चं.	८ ५५	मृ.	२० १९	ह.	१९ १३	मि.	८	३६	भ. ८ । ५५ तक,
	१८	११	मं.	७ ४६	आ.	२० ६	व.	१७ २४	मिथुन			
	१९	१२	बु.	७ २	पुन.	२० १८	सि.	१५ ५४	क.	१४	१५	
	२०	१३	गु.	६ ४४	पु.	२० ५८	व्य.	१४ ४६	कर्क			भ.६ । ४४ से १८ । ४९ तक,
	२१	१४	शु.	६ ५४	आ.	२२ ५	व.	१४ १	सि.	२२	५	शुक्र आश्ले. में २८ । ४८,
	२२	३०	श.	७ ३३	म.	२३ ४०	प.	१३ ३७	सिंह			
भाद्रपद शुक्ल	२३	१	र.	८ ४१	पू.फा.	२५ ४३	शि.	१३ ३७	सिंह			सूर्य सायन कन्या में ८ ।२९ (F)
	२४	२	चं.	१० १७	उ.फा.	२८ ११	सि.	१३ ५७	क.	८	२०	
	२५	३	मं.	१२ १६	ह.	- -	सा.	१४ ३५	कन्या			भ. २५ । २५ बाद
	२६	४	बु.	१४ ३५	ह.	६ ५८	शु.	१५ २६	तु.	२०	२७	भ. १४ । ३५ तक,
	२७	५	गु.	१७ २	चि.	९ ५६	शु.	१६ २४	तुला			
	२८	६	शु.	१९ २८	स्वा.	१२ ५७	ब्र.	१७ २२	तुला			
	२९	७	श.	२१ ३९	वि.	१५ ४६	ऐं.	१८ ९	वृ.	९	४	भ. २१ । ३९ बाद,
	३०	८	र.	२३ २६	अ.	१८ १३	वै.	१८ ३७	वृश्चिक			भ.१० ।३३ तक,सूर्य पू.फा. में २३ ।४२,
	३१	९	चं.	२४ ३६	ज्ये.	२० ७	वि.	१८ ३९	ध.	२०	७	

(A) कर्क में १७ ।५५,(B) २७ ।५४, व. गुरु पू.भा. ४ में १९ ।२८, (C) तक, व. बुध आश्ले.कर्क में १७ ।४३, (D) शुक्र पुष्य में ७ ।३,(E) सिंह में १७ ।४९,मंगल पुष्य में १५ ।६८,वैंकटेश (प्लूटो) मार्गी,(F) बुध मार्गी २७ ५६,बुध पूर्व में उदित,

मास पक्ष	सितं. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१	१०	मं.	२५ ३	मू.	२१ २२	प्री.	१८ १०	धनु			शुक्र मघा सिंह में २५ । २,
	२	११	बु.	२४ ४६	पू.षा.	२१ ५१	आ.	१७ ४	म.	२७	४६	भ.१२ । ५४ से २४ । ४६ तक,
	३	१२	गु.	२३ ४३	उ.षा.	२१ ३६	सौ.	१५ २३	मकर			बुध मघा सिंह में २१ । ५७,
	४	१३	शु.	२१ ५८	श्र.	२० ४०	शो.	१३ ६	मकर			
	५	१४	श.	१९ ३९	ध.	१९ ७	अ.	१० १९	कुं.	७	५४	भ.१९ । ३९ बाद, पंचक प्रा.७ । ५४
	६	१५	र.	१६ ५१	श.	१७ ८	सु.	७ ६	कुंभ			भ. ६ । १५ तक, मंगल (A)
							धृ.	२७ ३४				
आश्विन कृष्ण पक्ष	७	१	चं.	१३ ४४	पू.भा.	१४ ४८	शू.	२३ ४९	मी.	९	२३	राहु मघा २, केतु धनि ४ में २२ ।३८
	८	२	मं.	१० २४	उ.भा.	१२ १८	ग.	१९ ५९	मीन			भ. २० । ४६ बाद,
	९	३	बु.	७ ८	रे.	९ ४८	वृ.	१६ ११	मे.	९	४८	भ.७ ।८ तक, पंचक सं.९ ।४८,
				२७ ५६								
	१०	५	गु.	२५ ०	अ.	७ २६	ध्रु.	१२ ३२	मेष			व.गुरु पू.भा.३ कुंभ में ११ ।१४
					भ.	२९ २०						
	११	६	शु.	२२ २०	कृ.	२७ ३९	व्या.	९ ८	वृ.	१०	५५	भ.२२ ।२० बाद, बुध पूर्व में अस्त
							ह.	३० ४				
	१२	७	श.	२० १९	रो.	२६ २५	व.	२७ २४	वृष			भ.९ ।२० तक, बुध पू.फा. में (B)
	१३	८	र.	१८ ४५	मृ.	२५ ४३	सि.	२५ ११	मि.	१४	४	सूर्य उ.फा. में १७ ।४०,
	१४	९	चं.	१७ ४४	आ.	२५ ३७	व्य.	२३ २५	मिथुन			भ. २९ । ३१ बाद,
	१५	१०	मं.	१७ १८	पुन.	२६ ३	व.	२२ ६	क.	१९	५७	भ. १७ । १८ तक,
	१६	११	बु.	१७ २५	पु.	२७ १	प.	२१ १३	कर्क			सं. सूर्य कन्या में २७ । ४६,
	१७	१२	गु.	१८ ३	आ.	२८ २७	शि.	२० ४४	सि.	२८	२७	
	१८	१३	शु.	१९ ९	म.	- -	सि.	२० ३५	सिंह			भ. १९ । ९ बाद
	१९	१४	श.	२० ४०	म.	६ २०	सा.	२० ४५	सिंह			भ.७ । ५५ तक, बुध उ.फा. में १२ ।४०
	२०	३०	र.	२२ ३१	पू.फा.	८ ३४	शु.	२१ १२	क.	१५	१२	
आश्विन शुक्ल पक्ष	२१	१	चं.	२४ ४१	उ.फा.	११ ७	शु.	२१ ५२	कन्या			बुध कन्या में ७ । २९
	२२	२	मं.	२७ ३	ह.	१३ ५५	ब्र.	२२ ४१	तु.	२७	२३	
	२३	३	बु.	२९ ३२	चि.	१६ ५३	ऐं.	२३ ३७	तुला			सूर्य सायन में तुला में (C)
	२४	४	गु.	- -	स्वा.	१९ ५४	वै.	२४ ३५	तुला			भ. १८ । ४७ बाद,
	२५	४	शु.	८ ३	वि.	२२ ५३	वि.	२५ २९	वृ.	१६	८	भ. ८ । ३ तक,
	२६	५	श.	१० २५	अ.	२५ ३८	प्री.	२६ ११	वृश्चिक			बुध हस्त में १८ ।२९, (D)
	२७	६	र.	१२ ३०	ज्ये.	२७ ५९	आ.	२६ ३५	ध.	२७	५९	सूर्य हस्त में ९ । ५, मंगल (E)
	२८	७	चं.	१४ ६	मू.	२९ ४८	सौ.	२६ ३३	धनु			भ. १४ । ६ से २६ । ३६ तक,
	२९	८	मं.	१५ ५	पू.षा.	- -	शो.	२६ ०	धनु			
	३०	९	बु.	१५ १९	पू.षा.	६ ५७	अ	२४ ५०	म.	१३	३	

(A) आश्ले. में ११ । ६(B) ९ ।२४, शुक्र पू.फा. में १९ ।५९, (C) ११ ।७ ,शुक्र उ. फा. में १३ ।४३,(D) शुक्र कन्या में २९ । ५९, (E) मघा सिंह में १७ ।४२,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	अक्टू. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	१	१०	गु.	१४ ४६	उ.षा.	७ १९	सु.	२३ २	मकर			भ. २६ । ५ बाद,
	२	११	शु.	१३ २४	श्र.	६ ५४	धृ.	२० ३६	कु.	१८	२०	भ.१३ ।२४तक,पंचकप्रा. १८ ।२०,
					धनि.	२९ ४४						
	३	१२	श.	११ १८	श.	२७ ५३	शू.	१७ ३५	कुंभ			
	४	१३	र.	८ ३३	पू.भा.	२५ ३०	ग.	१४ ५	मी.	२०	६	भ. २९ । १८ बाद, बुध (A)
				२९ १८								
	५	१५	चं.	२५ ४२	उ.भा.	२२ ४०	वृ.	१० ११	मीन			भ. १५ । ३० तक,
							ध्रु	३० १				
कार्तिक कृष्ण पक्ष	६	१	मं	२१ ५५	रे.	१९ ४५	व्या.	२५ ४४	मे	१९	४५	व.गुरु पू.भा.२ में १३ । ४ (B)
	७	२	बु.	१८ ८	अ.	१६ ४६	ह.	२१ २९	मेष			भ.२८ ।२० बाद, शुक्र (C)
	८	३	गु	१४ ३३	भ.	१३ ५६	व.	१७ २५	वृ.	१९	१८	भ.१४ ।३३ तक,बुध तुला में ११ ।५२,
	९	४	शु.	११ १८	कृ.	११ २८	सि.	१३ ३९	वृष			
	१०	५	श.	८ ३४	रो.	९ ३०	व्य.	१० १९	मि.	२०	५०	सूर्य चित्रा में २२ ।१०,
	११	६	र.	६ २८	मृ.	८ १०	व.	७ ३१	मिथुन			भ.६ ।२८ से १७ ।४७ तक,(D)
				२९ ५			प.	२९ १७				
	१२	८	चं.	२८ २८	आ.	७ ३४	शि.	२७ ३९	क.	२५	४०	बुध स्वाती में १५ । ५४,
	१३	९	मं.	२८ ३६	पुन.	७ ४२	सि.	२६ ३७	कर्क			
	१४	१०	बु.	२९ २४	पु.	८ ३३	सा.	२६ ७	कर्क			भ. १७ ।० से २९ ।२४ तक (E)
	१५	११	गु.	- -	आ.	१० ३	शु.	२६ ३	सि.	१०	३	नुध पश्चिम में उदित,
	१६	११	शु.	६ ४८	म.	१२ ५	शु.	२६ २२	सिंह			
	१७	१२	श.	८ ३८	पू.फा.	१४ ३१	ब्र.	२६ ५६	क.	२१	१२	सं. सूर्य तुला में १५ । ४४
	१८	१३	र.	१० ४६	उ.फा.	१७ १५	ऐं.	२७ ४१	कन्या			भ.१० । ४६ से २३ ।५८ तक (F)
	१९	१४	चं.	१३ १०	ह.	२० ८	वै.	२८ ३२	कन्या			मंगल पू.फा.में १३ । ११, (G)
	२०	३०	मं.	१५ ३९	चि.	२३ ७	वि.	२९ २६	तु.	९	३८	शुक्र तुला में ६ । ३२,
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२१	१	बु.	१८ १९	स्वा.	२६ ७	प्री.	३० २०	तुला			बुध विशा. में ९ । ४३
	२२	२	गु	२० ४०	वि.	२९ ३	आ.	- -	वृ.	२२	१९	
	२३	३	शु.	२३ ३	अनु	- -	आ.	७ ११	वृश्चिक			सूर्य सायन वृश्चिक में २० ।२८
	२४	४	श.	२५ १२	अनु.	७ ५२	सौ.	७ ५५	वृश्चिक			भ.१२ ।७ से २५ ।२ तक,सूर्य (H)
	२५	५	र.	२७ १	ज्ये.	१० २५	शो.	८ २८	ध.	१०	२५	शुक्र स्वाती में १४ । १५,
	२६	६	चं.	२८ २३	मू.	१२ ३६	अ.	८ ४३	धनु			
	२७	७	मं.	२९ ९	पू.षा.	१४ १९	सु.	८ ३६	म.	२०	३५	भ. २९ । ९ बाद,
	२८	८	बु.	२९ १२	उ.षा.	१५ २३	धृ.	८ ०	मकर			भ.१७ ।१० तक, बुध (I)
	२९	९	गु.	२८ ३०	श्र.	१५ ४५	शू.	६ ५२	कु.	२७	३३	पंचक प्रा. २७ । ३३,
							गं.	२९ ०६				
	३०	१०	शु.	२७ ०	ध.	१५ २१	वृ.	२६ ४४	कुंभ			बुध अनु में १८ । ५२
	३१	११	श.	२४ ४६	श.	१४ ११	ध्रु.	२३ ४६	कुंभ			भ.१३ । ५३ से २४ । ४६ तक

(A) चित्रा में ११ ।२, शुक्र हस्त में ६ ।३३, (B) पंचक स. ११ ।०५, (C) पूर्व में अस्त १८ ।२५, (D) नेपच्यून मार्गी २२ ।३३, (E) शुक्र चित्रा में २२ ।४२, (F) यूरेनस मार्गी २६ ।५६, (G) वक्री शनि अश्वि. २ में १६ ।४४, (H) स्वाती में ८ ।३०, (I) वृश्चिक में ८ ।४४

मास पक्ष	नवं. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
कार्ति. शुक्ल पक्ष	१	१२	र.	२१ ५३	पू.भा.	१२ २०	व्या.	२० १५	मी	६	४८	
	२	१३	चं.	१८ २९	उ.भा.	९ ५७	ह.	१६ १९	मीन			
	३	१४	मं	१४ ४४	रे.	७ २	व.	१२ ४	मे.	७	२	भ.१४ ।४४ से २४ ।४६ तक (A)
					अश्वि.	२७ ५५						
	४	१५	बु.	१० ४८	भ.	२४ ४५	सि.	७ ३९	वृ.	३०	०	
							व्य.	२७ १३				
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	१	गु	६ ५४	कृ.	२१ ४५	व.	२२ ५६	वृष			शुक्र विशा. में २९ । ३१,
				२७ १२								
	६	३	शु.	२३ ५५	रो.	१९ ४	प.	१८ ५७	मि.	३०	२	भ.१३ ।३४ से २३ ।५५ (B)
	७	४	श.	२१ १२	मृ.	१७ ०	शि.	१५ २६	मिथुन			
	८	५	र.	१९ १४	आ.	१५ ३६	सि.	१२ २७	मिथुन			
	९	६	चं.	१८ ४	पुन.	१४ ५९	सा.	१० ७	क.	९	८	भ.१८ । ४ से २१ । ५५ तक, (C)
	१०	७	मं.	१७ ४७	पु.	१५ १३	शु.	८ २८	कर्क			मंगल उ.फा.में २५ ।१०
	११	८	बु.	१८ २१	आ.	१६ १६	शु.	७ २९	सिं.	१६	१६	
	१२	९	गु	१९ ३९	म	१८ ४	ब्र.	७ ७	सिंह			शुक्र वृश्चि.में २८ ।४८, प्लूटो अनु.४में,
	१३	१०	बु.	२१ ३३	पू.फा.	२० २६	ऐं.	७ १६	क.	२७	७	भ. ८ ।३६ से २१ ।३३ तक, (D)
	१४	११	श.	२३ ५२	उ.फा.	२३ ११	वै.	७ ४७	कन्या			
	१५	१२	र.	२६ २४	ह.	२६ १०	वि.	८ ३३	कन्या			शुक्र अनु. में २० । ३२
	१६	१३	चं	२९ ०	चि.	२९ १२	प्री.	९ २७	तु.	१५	४१	भ.२९ ।० बाद, सं. सूर्य वृश्चि. (E)
	१७	१४	मं.	- -	स्वा.	- -	आ.	१० २१	तुला			भ. १८ । १७ तक,
	१८	१४	बु.	७ ३३	स्वा.	८ ११	सौ.	११ १३	वृ.	२८	१९	
	१९	३०	गु.	९ ५७	वि.	११ २	शो.	११ ५८	वृश्चिक			सूर्य अनु. में २२ । ५२,
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२०	१	शु.	१२ ९	अनु	१३ ४२	अ	१२ ३३	वृश्चिक			
	२१	२	श.	१४ ८	ज्ये.	१६ ८	सु.	१२ ५८	ध.	१६	८	बुध वक्री १७ । ६,
	२२	३	र.	१५ ४९	मू.	१८ १७	धृ.	१३ १०	धनु			भ. २८ । २९ बाद,सूर्य सायन (F)
	२३	४	चं.	१७ ९	पू.षा.	२० ६	शू.	१३ ७	म.	२६	२७	भ. १७ । ९ तक,
	२४	५	मं	१८ ३	उ.षा.	२१ २९	ग	१२ ४४	मकर			
	२५	६	बु.	१८ २६	श्र.	२२ २१	वृ.	११ ५८	मकर			बुध पश्चिम में अस्त
	२६	७	गु.	१८ १३	ध.	२२ ३९	ध्रु.	१० ४६	कुं.	१०	३०	भ.१८ ।१३ से २९ ।४७ तक (G)
	२७	८	शु.	१७ २१	श.	२२ १७	व्या.	९ ३०	कुंभ			
							ह.	३० ५०				
	२८	९	श.	१५ ४९	पू.भा.	२१ १६	व.	२८ ४	मी.	१५	३१	
	२९	१०	र.	१३ ३८	उ.भा.	१९ ३८	सि.	२४ ४९	मीन			भ. २४ । ३० बाद, (H)
	३०	११	चं.	१० ५२	रे.	१७ २७	व्य.	२१ ८	मे	१७	२७	भ. १० । ५२ तक, पंचक (I)

(A) पंचक स. ७ । २, (B) तक, सूर्य विशा. में १६ ।५०, (C) राहु मघा १, केतु धनि. ३ में २० ।३४, बुध ज्येष्ठा में १४ ।८, (D) गुरु मार्गी १८ ।३४, (E) में १५ ।३३, मंगल कन्या में १९ ।२७, (F) धनु में १८ । ४, (G) पंचक प्रा. १० ।३०, शुक्र ज्येष्ठा में ११ ।२३, (H) शुक्र पश्चिम में उदित ११ । ५२ (I) समाप्त १७ । २७, वक्री बुध अनु. में २२ ।३०,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि -नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन १९९८-९९ ई.)

मास पक्ष	दिसं. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
मार्ग. शु.पक्ष	१	१२	मं.	७ ३९	अ.	१४ ५०	व.	१७ ८	मेष			
				२८ ७								
	२	१४	बु.	२४ २७	भ.	११ ५९	प.	१२ ५६	वृ.	१७	१६	भ. २४।२७ बाद, (A)
	३	१५	गु	२० ४९	कृ.	९ ४	शि.	८ ४२	वृष			भ. १०।३८ तक,
					रोहि.	३० १६	सिं.	२८ ३३				
पौष कृष्ण पक्ष	४	१	शु.	१७ २६	मृ	२७ ४७	सा.	२४ ४०	मि.	१७	१	मंगल हस्त में १३।१९,
	५	२	श.	१४ २८	आ.	२५ ४९	शु.	२१ १०	मिथुन			भ. २५।१६ बाद
	६	३	र.	१२ ५	पुन.	२४ ३१	शु.	१८ ११	क.	१८	५०	भ.१२।५ तक, शुक्र मूल(B)
	७	४	चं.	१० २७	पु.	२४ ०	ब्रं.	१५ ४९	कर्क			
	८	५	मं	९ ३९	आ.	२४ २०	ऐं.	१४ ७	सि.	२४	२०	बुध पूर्व में उदित व. (C)
	९	६	बु.	९ ४४	म.	२५ ३०	वै.	१३ ७	सिंह			भ.९।४४ से २२।१२ तक,
	१०	७	गु.	१० ३९	पू.फा.	२७ २४	वि.	१२ ४४	सिंह			
	११	८	शु.	१२ १८	उ.फा.	२९ ५४	प्री.	१२ ५३	क.	१०	२	बुध मार्गी १२।९,
	१२	९	श.	१४२९	ह.	- -	आ.	१३ २७	कन्या			भ. २७।४५ बाद,
	१३	१०	र.	१७ १	ह.	८ ४५	सौ.	१४ १५	तु.	२२	१६	भ. १७।१ तक,
	१४	११	चं.	१९ ३९	चि.	११ १८	शो.	१५ १०	तुला			
	१५	१२	मं.	२२ ११	स्वा.	१४ ४८	अ.	१६ १	तुला			सं.सूर्य मूल धनु में ३०।१४,(D)
	१६	१३	बु.	२४ ३१	वि.	१७ ३८	सु.	१६ ४५	वृ.	१०	५६	भ. २४।३१ बाद,
	१७	१४	गु.	२६ ३२	अनु.	२० ११	धृ.	१७ १५	वृश्चिक			भ. १३।३२ तक,शुक्र (E)
	१८	३०	शु.	२८ १२	ज्ये.	२२ २५	शू.	१७ ३०	ध.	२२	२५	
पौष शुक्ल पक्ष	१९	१	श.	२९ ३०	मू.	२४ १८	गं.	१७ २८	धनु			
	२०	२	र.	३० २६	पू.षा.	२५ ४९	वृ.	१७ ११	धनु			
	२१	३	चं.	३१ ०	उ.षा.	२६ ५९	ध्रु.	१६ ३६	म.	८	७	गुरु पू.भा. में ३ में ११।५,
	२२	४	मं.	३१ १	श्र.	२७ ४७	व्या.	१५ ४३	मकर			भ.११।५ से ३१।१ तक (F)
	२३	५	बु.	३० ५४	ध.	२८ १०	ह.	१४ ३२	कु.	१५	५८	पंचक प्रा. १५।५८, (G)
	२४	६	गु.	३० १२	श.	२८ ८	व.	१३ १	कुंभ			
	२५	७	शु.	२९ २	पू.भा.	२७ ३८	सि.	११ ९	मी.	२१	४६	भ. २९।२ बाद,
	२६	८	श.	२७ २३	उ.भा.	२६ ४०	व्य.	८ ५५	मीन			भ. १६।१२ तक,
							व.	३० १८				
	२७	९	र.	२५ १८	रे.	२५ १६	पं.	२७ २०	मे.	२५	१६	पंचक स. २५।१६,
	२८	१०	चं.	२२ ४८	अ.	२३ २९	शि.	२४ ४	मेष			शुक्र उ.षा. में ८।१०,
	२९	११	मं.	२० १	भ.	२१ २३	सि.	२० ३३	वृ.	२६	४७	भ.१।२४ से २०।१ तक, (H)
	३०	१२	बु.	१७ १	कृ.	१९ ६	सा.	१६ ५२	वृष			शुक्र मकर में २३।५८,
	३१	१३	गु.	१३ ५८	रो.	१६ ४८	शु.	१३ ७	मि.	२७	४२	सन १९९८ ई. पूर्ण

(A) सूर्य ज्ये. में २७।११, (B) धनु में २६।१६, (C) शनि अश्वि. १ में ११।४६, (D) नेपच्यून उ. षा. ४ में २३।५५, (E) पू०षा० में १७।१०, (F) सूर्य सायन मकर में ७।२६, यूरेनस श्रव. ३ में २१।४६, (G) बुध ज्येष्ठा में २४।६, (H) सूर्य पू.षा. में ८।२५, मंगल चित्रा में ११।१४, शनि मार्गी २८।५६

मास पक्ष	जन. १९९९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
पौष शु.	१	१४	शु.	११ १	मृ	१४ ३५	शु.	९ २९	मिथुन			भ.११।१ से २१।४० तक,
							ब्र.	३० २				
	२	१५	श.	८ २०	आ.	१२ ३९	ऐं.	२६ ५४	क.	२९	३२	बुध मूल धनु में २५।१८ ,
				३० ०३								
माघ कृष्ण पक्ष	३	२	र.	२८ २०	पुन.	११ १०	वै.	२४ १२	कर्क			
	४	३	चं.	२७ १८	पु.	१० १६	वि.	२२ २	कर्क			भ. १५।३९ से २७।१८तक,
	५	४	मं.	२७ २	आश्ले.	१० ४	प्री.	२० २७	सि.	१०	४	
	६	५	बु.	२७ ३३	मं	१० ३७	आ.	१९ २९	सिंह			
	७	६	गु	२८ ४९	पू.फा.	११ ५६	सौ	१९ ६	क.	१८	२६	भ.२८।४९ बाद,शुक्र श्रवण में २३।३०,
	८	७	शु.	३० ४४	उ.फा.	१३ ५६	शो.	१९ १४	कन्या			भ. १७।४७ तक,
	९	८	श	- -	ह.	१६ २८	अ.	१९ ४६	तु.	२९	५४	
	१०	८	र.	९ ४	चि.	१९ २०	सु.	२० ३२	तुला			
	११	९	चं.	११ ३७	स्वा.	२२ २०	धृ.	२१ २३	तुला			भ.२४।५४ बाद, सूर्य उषा. (A)
	१२	१०	मे	१४ १०	वि.	२५ १३	शू.	२२ १०	वृ.	१८	३०	भ.१४।१० तक, मंगल (B)
	१३	११	बु.	१६ २८	अनु.	२७ ५०	गं.	२२ ४४	वृश्चिक			बुध पूर्व में अस्त
	१४	१२	गु.	१८ २४	ज्ये.	३० २	वृ.	२३ १	ध.	३०	२	सं. सूर्य मकर में १७।००,
	१५	१३	शु.	१९ ५२	मू.	- -	ध्रु.	२२ ५६	धनु			भ. १९।५२ बाद,
	१६	१४	श.	२० ४९	मू.	७ ४६	व्या.	२२ २७	धनु			भ. ८।२० तक,
	१७	३०	र.	२१ १६	पू.षा.	९ ०	ह.	२१ ३६	म	१५	१२	
माघ शुक्ल पक्ष	१८	१	च.	२१ १४	उ.षा.	९ ४६	व.	२० २२	मकर			शुक्र धनि, में १५।१२
	१९	२	मं	२० ४८	श्र.	१० ७	सि.	१८ ५०	कु.	२२	६	पंचक प्रा. २२।६, (C)
	२०	३	बु.	१९ ५८	ध.	१० ४	व्य.	१७ ०	कुंभ			भ. ३१।२३ बाद, सूर्य (D)
	२१	४	गु.	१८ ४९	श.	९ ४१	व.	१४ ५०	मी.	२७	११	भ. १८ ४९ तक,
	२२	५	शु.	१७ २३	पू.भा.	९ १	पं.	१२ ३३	मीन			बुध मकर में १९।५८
	२३	६	श.	१५ ४१	उ.भा.	८ ४	शि.	१० ०	मे	३०	५४	पंचक स. ३०।५४,शुक्र (E)
					रेव.	३० ५४	सि.	३१ १७				
	२४	७	र.	१३ ४७	अ.	२९ ३२	सा.	२८ २४	मेष			भ.१३।४७ से२४।४४तक (F)
	२५	८	चं.	११ ४१	भ.	२८ २	शु.	२५ २५	मेष			सूर्यअभिजित् से निवृत्त९।४४
	२६	९	मं.	९ २८	कृ.	२६ २६	शु.	२२ २०	वृ.	९	३८	
				३१ १०								
	२७	११	बु.	२८ ५२	रो.	२४ ५०	ब्र.	१९ १५	वृष			भ.१८।१ से २८।५२ तक, (G)
	२८	१२	गु	२६ ४०	मृ	२३ १८	ऐं.	१६ ११	मि.	१२	४	बुध श्रव में २२।४३
	२९	१३	शु.	२४ ३९	आ.	२१ ५७	वै.	१३ १५	मिथुन			शुक्र शत. में ७।३३
	३०	१४	श.	२२ ५६	पुन.	२० ५१	वि.	१० ३०	क.	१५	७	भ.२२।५६ बाद, गुरु (H)
	३१	१५	र.	२१ ३७	पु.	२० १	प्री.	८ १	कर्क			भ. १०।१७ तक,
							आ.	२९ ५४				

(A) में १०।२१, बुध पू.षा. में २७।५, राहु आश्ले. ४ कर्क में. केतु धनि. २ मकर में १८।४, (B) तुला में १४।४३, गुरु पू.भा.४ मीन में २७।१५, (C) शनि अश्वि २ में २१।३९ (D) सायन कुंभ में १८।७ बुध उ.षा. में, १७।४८, सूर्य अभिजित् में ३०।५४ (E) कुंभ में २३।१६, (F) सूर्य श्रव में १२।४३, (G) मंगल स्वा. में २३।३३, (H) उ.भा.१ में २१।७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९८ ई.)

मास पक्ष	अक्टू. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	१	१०	गु.	१४ ४६	उ.षा.	७ १९	सु.	२३ २	मकर			भ. २६।५ बाद,
	२	११	शु.	१३ २४	श्र.	६ ५४	धृ.	२० ३६	कु.	१८	२०	भ.१३।२४तक, पंचकप्रा. १८।२०,
					धनि.	२९ ४४						
	३	१२	श.	११ १८	श.	२७ ५३	शू.	१७ ३५	कुंभ			
	४	१३	र.	८ ३३	पू.भा.	२५ ३०	ग.	१४ ५	मी.	२०	६	भ. २९।१८ बाद, बुध (A)
				२९ १८								
	५	१५	चं.	२५ ४२	उ.भा.	२२ ४०	वृ.	१० ११	मीन			भ. १५।३० तक,
							ध्रु	३० १				
कार्तिक कृष्ण पक्ष	६	१	मं.	२१ ५५	रे.	१९ ४५	व्या.	२५ ४४	मे	१९	४५	व.गुरु पू.भा.२ में १३।४ (B)
	७	२	बु.	१८ ८	अ.	१६ ४६	ह.	२१ २९	मेष			भ.२८।२० बाद, शुक्र (C)
	८	३	गु.	१४ ३३	भ.	१३ ५६	व.	१७ २५	वृ.	१९	१८	भ.१४।३३ तक, बुध तुला में ११।५२,
	९	४	शु.	११ १८	कृ.	११ २८	सि.	१३ ३९	वृष			
	१०	५	श.	८ ३४	रो.	९ ३०	व्य.	१० १९	मि.	२०	५०	सूर्य चित्रा में २२।१०,
	११	६	र.	६ २८	मृ.	८ १०	व.	७ ३१	मिथुन			भ.६।२८ से १७।४७ तक, (D)
				२९ ५			प.	२९ १७				
	१२	८	चं.	२८ २८	आ.	७ ३४	शि.	२७ ३९	क.	२५	४०	बुध स्वाती में १५।५४,
	१३	९	मं.	२८ ३६	पुन.	७ ४२	सि.	२६ ३७	कर्क			
	१४	१०	बु.	२९ २४	पु.	८ ३३	सा.	२६ ७	कर्क			भ. १७।० से २९।२४ तक (E)
	१५	११	गु.	- -	आ.	१० ३	शु.	२६ ३	सि.	१०	३	बुध पश्चिम में उदित,
	१६	११	शु.	६ ४८	म.	१२ ५	शु.	२६ २२	सिंह			
	१७	१२	श.	८ ३८	पू.फा.	१४ ३१	ब्र.	२६ ५६	क.	२१	१२	सं. सूर्य तुला में १५।४४
	१८	१३	र.	१० ४६	उ.फा.	१७ १५	ऐं.	२७ ४१	कन्या			भ.१०।४६ से २३।५८ तक (F)
	१९	१४	चं.	१३ १०	ह.	२० ८	वै.	२८ ३२	कन्या			मंगल पू.फा.में १३।११, (G)
	२०	३०	मं.	१५ ३९	चि.	२३ ७	वि.	२९ २६	तु.	९	३८	शुक्र तुला में ६।३२,
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२१	१	बु.	१८ १९	स्वा.	२६ ७	प्री.	३० २०	तुला			बुध विशा. में ९।४३
	२२	२	गु.	२० ४०	वि.	२९ ३	आ.	- -	वृ.	२२	१९	
	२३	३	शु.	२३ ३	अनु	- -	आ.	७ ११	वृश्चिक			सूर्य सायन वृश्चिक में २०।२८
	२४	४	श.	२५ १२	अनु.	७ ५२	सौ.	७ ५५	वृश्चिक			भ.१२।७ से २५।२ तक, सूर्य (H)
	२५	५	र.	२७ १	ज्ये.	१० २५	शो.	८ २८	ध.	१०	२५	शुक्र स्वाती में १४।१५,
	२६	६	चं.	२८ २३	मू.	१२ ३६	अ.	८ ४३	धनु			
	२७	७	मं.	२९ ९	पू.षा.	१४ १९	सु.	८ ३६	म.	२०	३५	भ. २९।९ बाद,
	२८	८	बु.	२९ १२	उ.षा.	१५ २३	धृ.	८ ०	मकर			भ.१७।१० तक, बुध (I)
	२९	९	गु.	२८ ३०	श्र.	१५ ४५	शू.	६ ५२	कु.	२७	३३	पंचक प्रा. २७।३३,
							गं.	२९ ०६				
	३०	१०	शु.	२७ ०	ध.	१५ २१	वृ.	२६ ४४	कुंभ			बुध अनु में १८।५२
	३१	११	श.	२४ ४६	श.	१४ ११	ध्रु.	२३ ४६	कुंभ			भ.१३।५३ से २४।४६ तक

(A) चित्रा में ११।२, शुक्र हस्त में ६।३३, (B) पंचक स. १९।५५, (C) पूर्व में अस्त १८।२५, (D) नेपच्यून मार्गी २२।३३, (E) शुक्र चित्रा में २२।५२, (F) यूरेनस मार्गी २६।५६, (G) वक्री शनि अश्वि. २ में १६।४४, (H) स्वाती में ८।३७, (I) वृश्चिक में ८।४४

मास पक्ष	नवं. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
कार्ति. शुक्ल पक्ष	१	१२	र.	२१ ५३	पू.भा.	१२ २०	व्या.	२० १५	मी	६	४८	
	२	१३	चं.	१८ २९	उ.भा.	९ ५७	ह.	१६ १९	मीन			
	३	१४	मं	१४ ४४	रे.	७ २	व.	१२ ४	मे.	७	२	भ.१४।४४ से २४।४६ तक (A)
					अश्वि.	२७ ५५						
	४	१५	बु.	१० ४८	भ.	२४ ४५	सि.	७ ३९	वृ.	३०	०	
							व्य.	२७ १३				
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	१	गु.	६ ५४	कृ.	२१ ४५	व.	२२ ५६	वृष			शुक्र विशा. में २९।३१,
				२७ १२								
	६	३	शु.	२३ ५५	रो.	१९ ४	प.	१८ ५७	मि.	३०	२	भ.१३।३४ से २३।५५ (B)
	७	४	श.	२१ १२	मृ.	१७ ०	शि.	१५ २६	मिथुन			
	८	५	र.	१९ १४	आ.	१५ ३६	सि.	१२ २७	मिथुन			
	९	६	चं.	१८ ४	पुन.	१४ ५९	सा.	१० ७	क.	९	८	भ.१८।४ से २९।५५ तक, (C)
	१०	७	मं.	१७ ४७	पु.	१५ १३	शु.	८ २८	कर्क			मंगल उ.फा.में २५।१०
	११	८	बु.	१८ २१	आ.	१६ १६	शु.	७ २९	सिं.	१६	१६	
	१२	९	गु.	१९ ३९	म.	१८ ४	ब्र.	७ ७	सिंह			शुक्र वृश्चि.में २८।४८, प्लूटो अनु.४में,
	१३	१०	बु.	२१ ३३	पू.फा.	२० २६	ऐं.	७ १६	क.	२७	७	भ. ८।३६ से २१।३३ तक, (D)
	१४	११	श.	२३ ५२	उ.फा.	२३ ११	वै.	७ ४७	कन्या			
	१५	१२	र.	२६ २४	ह.	२६ १०	वि.	८ ३३	कन्या			शुक्र अनु. में २०।३२
	१६	१३	चं.	२९ ०	चि.	२९ १२	प्री.	९ २७	तु.	१५	४१	भ.२९।० बाद, सं. सूर्य वृश्चि. (E)
	१७	१४	मं.	- -	स्वा.	- -	आ.	१० २१	तुला			भ. १८।१७ तक,
	१८	१४	बु.	७ ३३	स्वा.	८ ११	सौ.	११ १३	वृ.	२८	१९	
	१९	३०	गु.	९ ५७	वि.	११ २	शो.	११ ५८	वृश्चिक			सूर्य अनु. में २२।५२,
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२०	१	शु.	१२ ९	अनु	१३ ४२	अ	१२ ३३	वृश्चिक			
	२१	२	श.	१४ ८	ज्ये.	१६ ८	सु.	१२ ५८	ध.	१६	८	बुध वक्री १७।६,
	२२	३	र.	१५ ४९	मू.	१८ १७	धृ.	१३ १०	धनु			भ. २८।२९ बाद, सूर्य सायन (F)
	२३	४	चं.	१७ ९	पू.षा.	२० ६	शू.	१३ ७	म.	२६	२७	भ. १७।९ तक,
	२४	५	मं	१८ ३	उ.षा.	२१ २९	ग	१२ ४४	मकर			
	२५	६	बु.	१८ २६	श्र.	२२ २१	वृ.	११ ५८	मकर			बुध पश्चिम में अस्त
	२६	७	गु.	१८ १३	ध.	२२ ३९	ध्रु.	१० ४६	कुं.	१०	३०	भ.१८।१३ से २९।४७ तक (G)
	२७	८	शु.	१७ २१	श.	२२ १७	व्या.	९ ३०	कुंभ			
							ह.	३० ५०				
	२८	९	श.	१५ ४९	पू.भा.	२१ १६	व.	२८ ४	मी.	१५	३१	
	२९	१०	र.	१३ ३८	उ.भा.	१९ ३८	सि.	२४ ४९	मीन			भ. २४।३० बाद, (H)
	३०	११	चं.	१० ५२	रे.	१७ २७	व्य.	२१ ८	मे	१७	२७	भ. १०।५२ तक, पंचक (I)

(A) पंचक स. ७।२, (B) तक, सूर्य विशा. में १६।५०, (C) राहु मघा १, केतु धनि. ३ में २०।३४, बुध ज्येष्ठा में १४।६, (D) गुरु मार्गी १८।३४, (E) में १५।३३, मंगल कन्या में १९।२७, (F) धनु में १८।४, (G) पंचक प्रा. १०।३०, शुक्र ज्येष्ठ में ११।२३, (H) शुक्र पश्चिम में उदित ११।५२ (I) समाप्त १७।२७, वक्री बुध अनु. में २२।३०,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि -नक्षत्र, योग चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन १९९८-९९ ई.)

मास पक्ष	दिसं. १९९८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
मार्ग. शु.पक्ष	१	१२	मं.	७ ३९ २८ ७	अ.	१४ ५०	व.	१७ ८	मेष			
	२	१४	बु.	२४ २७	भ.	११ ५९	प.	१२ ५६	वृ.	१७	१६	भ. २४।२७ बाद, (A)
	३	१५	गु	२० ४९	कृ. रोहि.	९ ४ ३० १६	शि. सिं.	८ ४२ २८ ३३	वृष			भ. १०।३८ तक,
पौष कृष्ण पक्ष	४	१	शु.	१७ २६	मृ	२७ ४७	सा.	२४ ४०	मि.	१७	१	मंगल हस्त में १३।१९,
	५	२	श.	१४ २८	आ.	२५ ४९	शु.	२१ १०	मिथुन			भ. २५।१६ बाद
	६	३	र.	१२ ५	पुन.	२४ ३१	शु.	१८ ११	क.	१८	५०	भ.१२।५ तक, शुक्र मूल(B)
	७	४	चं.	१० २७	पु.	२४ ०	ब्र.	१५ ४९	कर्क			
	८	५	मं	९ ३९	आ.	२४ २०	ऐं.	१४ ७	सि.	२४	२०	बुध पूर्व में उदित व. (C)
	९	६	बु.	९ ४४	म.	२५ ३०	वै.	१३ ७	सिंह			भ.९।४४ से २२।१२ तक,
	१०	७	गु.	१० ३९	पू.फा.	२७ २४	वि.	१२ ४४	सिंह			
	११	८	शु.	१२ १८	उ.फा.	२९ ५४	प्री.	१२ ५३	क.	१०	२	बुध मार्गी १२।९,
	१२	९	श.	१४२९	ह.	- -	आ.	१३ २७	कन्या			भ. २७।४५ बाद,
	१३	१०	र.	१७ १	ह.	८ ४५	सौ.	१४ १५	तु.	२२	१६	भ. १७।१ तक,
	१४	११	चं.	१९ ३९	चि.	११ १८	शो.	१५ १०	तुला			
	१५	१२	मं.	२२ ११	स्वा.	१४ ४८	अ.	१६ १	तुला			सं.सूर्य मूल धनु में ३०।१४,(D)
	१६	१३	बु.	२४ ३१	वि.	१७ ३८	सु.	१६ ४५	वृ.	१०	५६	भ. २४।३१ बाद,
	१७	१४	गु.	२६ ३२	अनु.	२० ११	धृ.	१७ १५	वृश्चिक			भ. १३।३२ तक,शुक्र (E)
	१८	३०	शु.	२८ १२	ज्ये.	२२ २५	शू.	१७ ३०	ध.	२२	२५	
पौष शुक्ल पक्ष	१९	१	श.	२९ ३०	मू	२४ १८	गं	१७ २८	धनु			
	२०	२	र.	३० २६	पू.षा.	२५ ४९	वृ.	१७ ११	धनु			
	२१	३	चं.	३१ ०	उ.षा.	२६ ५९	ध्रु.	१६ ३६	म	८	७	गुरु पू.भा. में ३ में ११।५,
	२२	४	मं.	३१ ९	श्र.	२७ ४७	व्या.	१५ ४३	मकर			भ.१९।५ से ३१।९ तक (F)
	२३	५	बु.	३० ५४	ध.	२८ १०	ह.	१४ ३२	कु.	१५	५८	पंचक प्रा. १५।५८, (G)
	२४	६	गु.	३० १२	श.	२८ ८	व.	१३ १	कुंभ			
	२५	७	शु.	२९ २	पू.भा.	२७ ३८	सि.	११ ९	मी.	२१	४६	भ. २९।२ बाद,
	२६	८	श.	२७ २३	उ.भा.	२६ ४०	व्य. व.	८ ५५ ३० १८	मीन			भ. १६।१२ तक,
	२७	९	र.	२५ १८	रे.	२५ १६	पं.	२७ २०	मे.	२५	१६	पंचक स. २५।१६,
	२८	१०	चं.	२२ ४८	अ.	२३ २९	शि.	२४ ४	मेष			शुक्र उ.षा. में ८।१०,
	२९	११	मं.	२० ९	भ.	२१ २३	सि.	२० ३३	वृ.	२६	४७	भ.९।२४ से २०।९ तक, (H)
	३०	१२	बु.	१७ १	कृ.	१९ ६	सा.	१६ ५२	वृष			शुक्र मकर में २३।५८,
	३१	१३	गु.	१३ ५८	रो.	१६ ४८	शु.	१३ ७	मि.	२७	४२	सन १९९८ ई. पूर्ण

(A) सूर्य ज्ये. में २७।११, (B) धनु में २६।१६, (C) शनि अश्वि. १ में ११।४६, (D) नेपच्यून उ. षा. ४ में २३।५५, (E) पू०षा० में १७।१०, (F) सूर्य सायन मकर में ७।२६, यूरेनस श्रव. ३ में २९।४६, (G) बुध ज्येष्ठा में २४।६, (H) सूर्य पू.षा. में ८।२५, मंगल चित्रा में १९।१४, शनि मार्गी २८।४६

मास पक्ष	जन. १९९९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
पौष शु.	१	१४	शु.	११ १	मृ	१४ ३५	शु. ब्र.	९ २९ ३० २	मिथुन			भ.११।१ से २१।४० तक,
	२	१५	श.	८ २० ३० ०३	आ.	१२ ३९	ऐं.	२६ ५४	क.	२९	३२	बुध मूल धनु में २५।१८ ,
माघ कृष्ण पक्ष	३	२	र.	२८ २०	पुन.	११ १०	वै.	२४ १२	कर्क			
	४	३	चं.	२७ १८	पु.	१० १६	वि.	२२ २	कर्क			भ. १५।३९ से २७।१८तक,
	५	४	मं.	२७ २	आश्ले.	१० ४	प्री.	२० २७	सि.	१०	४	
	६	५	बु.	२७ ३३	मं	१० ३७	आ.	१९ २९	सिंह			
	७	६	गु	२८ ४९	पू.फा.	११ ५६	सौं	१९ ६	क.	१८	२६	भ.२८।४९ बाद,शुक्र श्रवण में २३।३०,
	८	७	शु.	३० ४४	उ.फा.	१३ ५६	शो.	१९ १४	कन्या			भ. १७।४७ तक,
	९	८	शी	- -	ह.	१६ २८	अ.	१९ ४६	तु.	२९	५४	
	१०	८	र.	९ ४	चि.	१९ २०	सु.	२० ३२	तुला			
	११	९	चं.	११ ३७	स्वा.	२२ २०	धृ.	२१ २३	तुला			भ.२४।५४ बाद, सूर्य उषा. (A)
	१२	१०	मे	१४ १०	वि.	२५ १३	शू.	२२ १०	वृ.	१८	३०	भ.१४।१० तक, मंगल (B)
	१३	११	बु.	१६ २८	अनु.	२७ ५०	गं	२२ ४४	वृश्चिक			बुध पूर्व में अस्त
	१४	१२	गु.	१८ २४	ज्ये.	३० २	वृ.	२३ १	ध.	३०	२	सं. सूर्य मकर में १७।००,
	१५	१३	शु.	१९ ५२	मू.	- -	ध्रु.	२२ ५६	धनु			भ. १९।५२ बाद,
	१६	१४	श.	२० ४९	मू.	७ ४६	व्या.	२२ २७	धनु			भ. ८।२० तक,
	१७	३०	र.	२१ १६	पू.षा.	९ ०	ह.	२१ ३६	म	१५	१२	
माघ शुक्ल पक्ष	१८	१	च.	२१ १४	उ.षा.	९ ४६	व.	२० २२	मकर			शुक्र धनि, में १५।१२
	१९	२	मं.	२० ४८	श्र.	१० ७	सि.	१८ ५०	कु.	२२	६	पंचक प्रा. २२।६, (C)
	२०	३	बु.	१९ ५८	ध.	१० ४	व्य.	१७ ०	कुंभ			भ. ३१।२३ बाद, सूर्य (D)
	२१	४	गु.	१८ ४९	श.	९ ४१	व.	१४ ५०	मी.	२७	११	भ. १८ ४९ तक,
	२२	५	शु.	१७ २३	पू.भा.	९ १	पं.	१२ ३३	मीन			बुध मकर में १९।५८
	२३	६	श.	१५ ४१	उ.भा. रेव.	८ ४ ३० ५४	शि. सि.	१० ० ३१ १७	मे	३०	५४	पंचक स. ३०।५४,शुक्र (E)
	२४	७	र.	१३ ४७	अ.	२९ ३२	सा.	२८ २४	मेष			भ.१३।४७ से२४।४४ तक (F)
	२५	८	चं.	११ ४१	भ.	२८ २	शु.	२५ २५	मेष			सूर्यअभिजित् से निवृत्त९।४४
	२६	९	मं.	९ २८ ३१ १०	कृ.	२६ २६	शु.	२२ २०	वृ.	९	३८	
	२७	११	बु.	२८ ५२	रो.	२४ ५०	ब्र.	१९ १५	वृष			भ.१८।१ से २८।५२ तक, (G)
	२८	१२	गु	२६ ४०	मृ	२३ १८	ऐं.	१६ ११	मि.	१२	४	बुध श्रव में २२।४३
	२९	१३	शु.	२४ ३९	आ.	२१ ५७	वै.	१३ १५	मिथुन			शुक्र शत. में ७।३३
	३०	१४	श.	२२ ५६	पुन.	२० ५१	वि.	१० ३०	क.	१५	७	भ.२२।५६ बाद, गुरु (H)
	३१	१५	र.	२१ ३७	पु.	२० ९	प्री. आ.	८ १ २९ ५४	कर्क			भ. १०।१७ तक,

(A) में १०।२१,बुध पू.षा. में २७।५,राहु आश्ले. ४कर्क में. केतु धनि. २ मकर में १८।४,(B) तुला में १४।४३, गुरु पू.भा.४ मीन में २७।१५,(C) शनि अश्वि २ में २१।३९(D) सायन कुंभ में १८।७ बुध उ.षा.में,१७।४८, सूर्यअभिजित् में ३०।५४,(E) कुंभ में २३।१६,(F) सूर्य श्रव में १२।४३,(G) मंगल स्वा. में २३।३३,(H) उ.भा.१में २१।७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भा. स्टै. टा. में तिथि- नक्षत्र, योग, चन्द्रराशि, प्रवेश काल, ग्रहराशि - नक्षत्र चार आदि (सन् १९९९ ई.)

मास पक्ष	फर. १९९९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१	१	चं.	२० ४७	आश्ले.	१९ ५७	सौ.	२८ ११	सि.	१९	५७	
	२	२	मं.	२० ३४	म	२० १८	शो.	२६ ५८	सिंह			
	३	३	बु.	२० ५८	पू.फा.	२१ १६	अ	२६ १३	क.	२७	४०	भ.८।४६ से २०।५८ तक,
	४	४	गु.	२२ ०	उफा.	२२ ५२	सु.	२५ ५९	कन्या			
	५	५	शु.	२३ ३९	ह.	२५ १	धृ.	२६ १०	कन्या			बुध धनि. में १७।३५,
	६	६	श.	२५ ४७	चि.	२७ ३७	शू.	२६ ४३	तु.	१४	१९	भ.२५।४७ बाद, (A)
	७	७	र.	१८ १२	स्वा.	३० ३०	गं	२७ २८	तुला			भ. १५।० तक ,
	८	८	चं.	३० ४३	वि.	- -	वृ.	२८ १८	वृ.	२६	४२	शुक्र पू.भा. में २४।५३,
	९	९	मं.	- -	वि.	९ २६	ध्रु.	२९ २	वृश्चिक			बुध कुम्भ में ११।३०
	१०	९	बु.	९ ५	अनु	१२ १३	व्या.	२९ ३२	वृश्चिक			भ.२२।५ बाद,
	११	१०	गु.	११ ४	ज्ये.	१४ ३८	ह.	२९ ३९	ध.	१४	३८	भ. ११।४ तक,
	१२	११	शु.	१२ ३३	मू.	१६ ३२	व.	२९ १९	धनु			सं.सूर्य कुंभ में २९।५९, (B)
	१३	१२	श.	१३ २४	पूषा.	१७ ५०	सिं	२८ २९	म	२४	१	
	१४	१३	र.	१३ ३६	उ.षा.	१८ २९	व्य.	२७ ९	मकर			भ.१३।३६ से २५।२३ तक,
	१५	१४	चं.	१३ १०	श्र.	१८ ३२	व.	२५ २१	कु.	३०	१८	पंचक प्रा. ३०।१८, (C)
	१६	३०	मं.	१२ ९	ध.	१८ ३	प	२३ ७	कुंभ			शुक्र मीन में २६।३७,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	१७	१	बु.	१० ३९	श.	१७ ७	शि.	२० ३३	कुंभ			
	१८	२	गु.	८ ४६	पू.भा.	१५ ५०	सि.	१७ ४४	मी.	१०	९	
				३० ३७								
	१९	४	शु.	२८ १७	उ.भा.	१४ १९	सा.	१४ ४३	मीन			भ.१७।२७ से २८।१७ तक ,(D)
	२०	५	श.	२५ ५४	रे	१२ ४०	शु.	११३६	मे.	१२	४०	पंचक स. १२।४०,बुध (E)
	२१	६	र.	२३ ३३	अ.	११ ०	शु.	८ २८	मेष			
							ब्र.	२९ २२				
	२२	७	चं.	२१ १७	भ.	९ २३	ऐ.	२६ २२	वृ.	१५	१	भ. २१।१७ बाद,
	२३	८	मं.	१९ ११	कृ.	७ ५४	वै.	२३ २९	वृष			भ. ८।१४ तक,
					रोहि.	३० ३६						
	२४	९	बु.	१७ १८	मृ.	२९ ३१	वि.	२० ४८	मि.	१८	४	
	२५	१०	बु.	१५ ३९	आ.	२८ ४३	प्री.	१८ १९	मिथुन			भ. २६।५८ बाद,
	२६	११	शु.	१४ १८	पुन.	२८ १३	आ.	१६ ४	क.	२२	२१	भ.१४।१८ तक, (F)
	२७	१२	श.	१३ १६	पु.	२८ ३	सौ.	१४ ५	कर्क			
	२८	१३	र.	१२ ३६	आश्ले.	२८ १५	शो.	१२ २३	सि.	२८	१५	बुध उ.भा. में १९।१३

(A) सूर्य धनि में १५।५७,(B) बुध शत. में २७।३८,(C) गुरु उ.भा. २ में १४।१९,(D) सर्य सायन मीन में ८।१७, सूर्य शत. में २०।२३, शुक्र उ. भा. में १९।२२, (E) पश्चिम में उदित, बुध पू.भा. में ११।१०, यूरेनस श्रव. ४ में २५ ।३८,(F) बुध मीन में २०।४२,

मास पक्ष	मार्च १९९९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश	घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि
फा. शु.	१	१४	चं.	१२ १९	म.	२८ ५३	अ	१० ५९	सिंह			भ. १२।१९ से २४।२४ तक,
	२	१५	मं.	१२ २९	पू.फा.	२९ ५६	सु.	९ ५७	सिंह			गुरु उ.भा. ३में २१।५९, (A)
चैत्र कृष्ण पक्ष	३	१	बु.	१३ ६	उ.फा.	--	धृ	९ १४	कं.	१२	२०	
	४	२	गु.	१४ १३	उ.फा.	७ २८	शू.	८ ५५	कन्या			भ.२७।० बाद ,सूर्य पू.भा. (B)
	५	३	शु.	१५ ४८	ह.	९ २८	ग.	८ ५८	तु.	२२	४०	भ. १५।४८ तक,
	६	४	श.	१७ ४८	चि.	११ ५३	वृ.	९ २०	तुला			शनि अश्विनी ३ में ९।३७,
	७	५	र.	२० ७	स्वा.	१४ ३८	ध्रु.	९ ५९	तुला			
	८	६	चं.	२२ ३६	वि.	१७ ३३	व्या.	१० ४८	वृ.	१०	५०	भ. २२।३६ बाद,
	९	७	मं.	२५ २	अनु.	२० २९	ह.	११ ३९	वृश्चिक			भ. ११।४९ तक,
	१०	८	बु.	२७ १२	ज्ये.	२३ ११	व.	१२ २४	ध.	२३	११	बुध वक्री १४।४२,
	११	९	गु.	२८ ५४	मू.	२५ २९	सि.	१२ ५२	धनु			
	१२	१०	शु.	२९ ५८	पू.षा.	२७ १०	व्य.	१२ ५६	धनु			भ.१७।२६ से २९।५८ तक,(C)
	१३	११	श.	३० १६	उ.षा.	२८ ९	व.	१२ २९	म.	९	२५	शुक्र अश्विनी मेष में (D)
	१४	१२	र.	२९ ४८	श्र.	२८ २३	प.	११ २७	मकर			सं. सूर्य मीन में २६।५०,
	१५	१३	चं.	२८ ३५	ध.	२७ ५३	शि.	९ ४९	कु.	१६	८	भ.२८।३५ बाद, पंचक (E)
	१६	१४	मं.	२६ ४३	श.	२६ ४४	सि.	७ ३६	कुंभ			भ. १५।३९ तक, गुरु (F)
							सा.	२८ ५९				
	१७	३०	बु.	२४ १८	पू.भा.	२५ ३	शु.	२५ ४१	मी.	११	२८	

सन् १९५३ से कार्यरत

अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद् (पंजी०)

के सदस्य बनें और ज्योतिष शास्त्र के उन्नयन के लिये सहयोग प्रदान करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष	*राष्ट्रीय उपाध्यक्ष*	*राष्ट्रीय महामंत्री*
प्रो० प्रियव्रत शर्मा	प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय	आचार्य कृष्णदत्त शर्मा
पंचकूला (हरियाणा)	वाराणसी (उ०प्र०)	

सम्पर्क सूत्रः राष्ट्रीय संगठन महामंत्री जगदीश प्रसाद सांकृत्यायन
१७/२८७५, बीडन पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन: ५७५०११४, ३५५३८७०, ३५४६७१०, ७५१६७१०

(A) शुक्र रेव में १५।२९(B) में २६ ४३ (C) बुध पश्चिम में अस्त,(D) १३।३८, वेंकटेश (प्लूटो)वक्री, (E) प्रारम्भ १६।८ ,राहु ,आश्ले. ३,केतु धनि. १ में १५।४२, (F) उ.भा. ४ में ७।५८,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
जनवरी १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
३१।१	श्रव.	१९।१	०।४२	६।२२	१२।२
१।२	धनि.	१७।४२	२३।२१	४।५९	१०।३८
२।३	शत.	१६।१६	२२।५४	३।३३	९।११
३।४	पू.भा.	१४।४९	२०।२८	२।६	७।४५
४।५	उ.भा.	१३।२४	१९।४	०।४३	६।२३
५।६	रेवती.	१२।३	१७।४४	२३।२५	५।६
६।७	अश्वि.	१०।४८	१६।३१	२२।१३	३।५६
७।८	भर.	९।४०	१५।२४	२१।९	२।५५
८।९	कृत्ति.	८।४१	१४।२८	२०।१५	२।४
९।१०	रोहि.	७।५३	१३।४३	१९।३५	१।२७
१०।११	मृग.	७।२०	१३।१५	१९।११	१।८
११।१२	आर्द्रा	७।६	१३।५	१९।८	१।१२
१२।१३	पुन.	७।१७	१३।२४	१९।३३	१।४३
१३।१४	पुष्य	७।५६	१४।११	२०।२८	२।४७
१४।१५	आश्ले.	९।८	१५।३१	२१।५७	४।२५
१५।१६	मघा	१०।५४	१७।२६	२४।०	६।३५
१६।१७	पू.फा.	१३।१३	१९।५२	२।३३	९।१५
१७।१८	उ.फा.	१५।५८	२२।४३	५।२८	१२।१५
१८।१९	हस्त	१९।१	१।४८	८।३५	१५।२२
१९।२०	चित्रा	२२।८	४।५३	११।३८	१८।२२
२१	स्वाती	१।४	७।४५	१४।२३	२१।००
२२	विशा.	३।३५	१०।८	१६।३७	२३।५
२३।२४	अनु.	५।३०	११।५२	१८।११	०।२७
२४।२५	ज्ये.	६।४१	१२।५२	१८।५९	१।४
२५।२६	मूल	७।६	१३।६	१९।२	०।५६
२६।२७	पू.षा.	६।४८	१२।३७	१८।२४	०।८
२७	उ.षा.	८।५१	११।३१	१७।१०	२२।४७
२८	श्रव.	४।२३	९।५७	१५।२९	२१।११
२९	धनि.	२।३२	८।२	१३।३१	१८।५९
३०	शत.	०।२७	५।५५	११।२३	१६।५०
३०।३१	पूभा.	२२।१८	३।४५	९।१३	१४।४२

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
फरवरी १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
३१।१	उ.भा.	२०।११	१।४०	७।१०	१२।४१
१।२	रेवती.	१८।१३	२३।४५	५।१९	१०।५४
२।३	अश्वि.	१६।३०	२२।७	३।४५	९।२५
३।४	भर.	१५।६	२०।४८	२।३२	८।१७
४।५	कृत्ति.	१४।३	१९।५१	१।४१	७।३२
५।६	रोहि.	१३।२४	१९।१९	१।१४	७।१२
६।७	मृग.	१३।१०	१९।११	१।१३	७।१७
७।८	आर्द्रा	१३।२२	१९।२९	१।३७	७।४८
८।९	पुन.	१४।००	२०।१३	२।२८	८।४५
९।१०	पुष्य	१५।३	२१।२४	३।४५	१०।९
१०।११	आश्ले.	१६।३४	२३।१	५।२९	११।५९
११।१२	मघा	१८।३१	१।४	७।३८	१४।१४
१२।१३	पू.फा.	२०।५२	३।३१	१०।११	१६।५२
१३।१४	उ.फा.	२३।३५	६।१८	१३।३	१९।४८
१५	हस्त	२।३३	९।२०	१६।६	२२।५३
१६।१७	चित्रा	५।४०	१२।२६	१६।१२	१।५८
१७।१८	स्वाती	८।४३	१५।२७	२२।१०	४।५२
१८।१९	विशा.	११।३२	१८।१०	०।४७	७।२१
१९।२०	अनु.	१३।५४	२०।२४	२।५२	९।१७
२०।२१	ज्ये.	१५।३९	२१।५९	४।१६	१०।३०
२१।२२	मूल	१६।४१	२२।४९	४।५४	१०।५६
२२।२३	पू.षा.	१६।५५	२२।५१	४।४५	१०।३५
२३।२४	उ.षा.	१६।२३	२२।८	३।५१	९।३१
२४।२५	श्रव.	१५।८	२०।४४	२।१७	७।४९
२५।२६	धनि.	१३।१८	१८।४६	०।१२	५।३७
२६।२७	शत.	११।००	१६।२३	२१।४४	३।५
२७।२८	पू.भा.	८।२५	१३।४४	१९।३	०।२२
२८	उ.भा.	५।४१	११।०	१६।१९	२१।३९

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
मार्च १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	रेवती	२।५९	८।१९	१३।४१	१९।४
२	अश्वि.	०।२८	५।५३	११।१९	१६।४७
२।३	भर.	२२।१७	३।४८	९।२१	१४।५६
३।४	कृत्ति.	२०।३३	२।१२	७।५३	१३।३६
४।५	रोहि.	१९।२२	१।९	७।००	१२।५२
५।६	मृग.	१८।४७	०।४५	६।४४	१२।४७
६।७	आर्द्रा	१८।५१	०।५८	७।७	१३।१९
७।८	पुन.	१९।३२	१।४८	८।७	१४।२७
८।९	पुष्य	२०।४९	३।१३	९।३९	१६।७
९।१०	आश्ले.	२२।३६	५।७	११।४०	१८।१४
११	मघा	०।५०	७।२७	१४।५	२०।४७
१२	पू.फा.	३।२४	१०।५	१६।४७	२३।३०
१३।१४	उ.फा.	६।१४	१२।५८	१९।४३	२।२८
१४।१५	हस्त	९।१४	१६।००	२२।४६	५।३२
१५।१६	चित्रा	१२।१९	१९।५	१।५०	८।३६
१६।१७	स्वाती	१५।२१	२२।५	४।४९	११।३२
१७।१८	विशा.	१८।१४	०।५५	७।३५	१४।१३
१८।१९	अनु.	२०।५०	३।२५	९।५९	१६।३०
१९।२०	ज्ये.	२३।००	५।२७	११।५३	१८।१५
२१	मूल	०।३६	६।५४	१३।९	१९।२२
२२	पू.षा.	१।३२	७।३९	१३।४४	१९।४५
२३	उ.षा.	१।४४	७।४०	१३।३३	१९।२४
२४	श्रव.	१।११	६।५६	१२।३८	१८।१८
२४।२५	धनि.	२३।५५	५।३०	११।३	१६।३३
२५।२६	शत.	२२।२	३।२८	८।५३	१४।१५
२६।२७	पू.भा.	१९।३७	०।५७	६।१५	११।३३
२७।२८	उ.भा.	१६।५०	२२।६	३।२१	८।३६
२८।२९	रेवती	१३।५२	१९।६	०।२०	५।३५
२९।३०	अश्वि.	१०।५१	१६।७	२१।२४	२।४१
३०।३१	भर.	८।००	१३।२०	१८।४२	०।५
३१	कृत्ति.	५।३०	१०।५७	१६।२६	२१।५७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
अप्रैल १९९८ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	रो.	३।३०	९।९	१४।४९	२०।२९
२	मृग.	०२।९	८।०	१३।५१	१९।४२
३	आर्द्रा	१।३३	७।३६	१३।३८	१९।४१
४	पुन.	१।४४	७।५८	१४।१३	२०।५०
५	पुष्य	२।४२	९।७	१५।३२	२१।५७
६।७	आश्ले.	४।२२	१०।५६	१७।२९	००।३
७।८	मघा	६।३७	१३।१७	१९।५८	२।३८
८।९	पू.फा.	९।१९	१६।४	२२।४८	५।३२
९।१०	उ.फा.	१२।१६	१९।२	१।४९	८।३६
१०।११	हस्त	१५।२२	२२।८	४।५४	११।४०
११।१२	चित्रा.	१८।२७	१।१२	७।५६	१४।४१
१२।१३	स्वाती	२१।२६	४।८	१०।५०	१७।३२
१४	विशा.	०।१४	६।५२	१३।३०	२०।८
१५	अनु.	२।४६	९।१९	१५।५३	२२।२६
१६।१७	ज्ये.	४।५९	११।२६	१७।५४	०।२१
१७।१८	मूल	६।४८	१३।३८	२०।२८	२।१८
१८।१९	पू.षा.	८।८	१४।१९	२०।३१	२।४२
१९।२०	उ.षा.	८।५४	१४।५६	२०।५९	३।२
२०।२१	श्रव.	९।४	१४।५६	२०।४९	२।४२
२१।२२	धनि.	८।३५	१४।१८	२०।१	१।४३
२२।२३	शत.	७।२६	१३।०	१८।३४	०।८
२३	पू.भा.	५।४२	११।८	१६।३४	२२।००
२४	उ.भा.	३।२६	८।४६	१४।७	१९।२८
२५	रेवती.	०।४८	६।५	११।२२	१६।३९
२५।२६	अश्वि.	२१।५५	३।१०	८।२६	१३।४१
२६।२७	भर.	१८।५७	०।१५	५।३३	१०।५१
२७।२८	कृत्ति.	१६।९	२१।३२	२।५४	८।१६
२८।२९	रोहि.	१३।३९	१९।९	०।३९	६।९
२९।३०	मृग	११।३९	१८।२१	२३।४	४।४१
३१।१	आर्द्रा.	१०।१९	१६।१०	२२।२	३।५४

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
मई १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	पुन.	९।४५	१५।४९	२१।५३	३।५८
२।३	पुष्य	१०।३	१६।२०	२२।३७	४।५४
३।४	आश्ले.	११।११	१७।४०	०।८	६।३७
४।५	मघा.	१३।५	१९।४२	२।१९	८।५७
५।६	पू.फा.	१५।३५	२२।१९	५।३	११।४७
६।७	उ.फा.	१८।३०	१।१७	८।४	१४।५०
७।८	ह.	२१।३७	४।२४	११।११	१७।५७
९	चित्रा.	०।४३	७।२७	१४।११	२१।५५
१०	स्वाती	३।४०	१०।२१	१७।१	२२।४१
११।१२	विशा.	६।२२	१२।५७	१९।३२	२।८
१२।१३	अनु.	८।४४	१५।१४	२१।४३	४।१४
१३।१४	ज्ये.	१०।४५	१७।९	२३।३४	६।५९
१४।१५	मूल.	१२।२४	१८।४३	१।२	७।२२
१५।१६	पू.षा.	१३।४१	१९।५४	२।७	८।२०
१६।१७	उ.षा.	१४।३३	२०।३९	२।४५	८।५२
१७।१८	श्रव.	१४।५९	२०।५९	२।५८	८।५८
१८।१९	धनि.	१४।५७	२०।४९	२।४१	८।३३
१९।२०	शत.	१४।२५	२०।१०	१।५४	७।३९
२०।२१	पू.भा.	१३।२३	१९।००	०।३७	६।१४
२१।२२	उ.भा.	११।५२	१७।२३	२२।५४	४।२५
२२।२३	रेवती.	९।५५	१५।२१	२०।४७	२।२२
२३	अश्वि.	७।३८	१३।०	१८।२३	२३।४५
२४	भर.	५।८	१०।३०	१५।५२	२१।१४
२५	कृति.	२।३५	७।५८	१३।२२	१८।४४
२६	रोहि.	०।८	५।३६	११।४	१६।३२
२६।२७	मृग.	२२।०	३।३५	९।१०	१४।४५
२७।२८	आर्द्रा.	२०।११	२।३	७।४७	१३।३१
२८।२९	पून.	१९।१७	१।११	७।६	१३।२
२९।३०	पूष्य.	१८।५९	१।७	७।१५	१३।२३
३०।३१	आश्ले.	१९।३१	०।५१	६।११	११।३१
३१।१	मघा.	२०।५२	३।२३	९।५५	१६।२६

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
जून १९९८ ई	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	पू.फा.	२२।५७	५।३६	१२।१६	१८।५५
३	उ.फा.	१।३५	८।२०	१५।५	२१।५०
४।५	हस्त	४।३४	११।२०	१८।६	०।५२
५।६	चित्रा.	७।३८	१४।२३	२१।७	३।५१
६।७	स्वाती	१०।३६	१७।१६	२३।५६	६।३६
७।८	विशा.	१३।१६	१९।५१	२।२५	८।५९
८।९	अनु.	१५।३३	२२।०	४।२७	१०।५४
९।१०	ज्ये.	१७।२२	२३।४३	६।४	१२।२४
१०।११	मूल	१८।४५	०।५९	७।१३	१३।२७
११।१२	पू.षा.	१९।४२	१।५१	८।०	१४।८
१२।१३	उ.षा.	२०।१६	२।१९	८।२२	१४।२५
१३।१४	श्रव.	२०।२८	२।२६	८।२४	१४।२२
१४।१५	धनि.	२०।२१	२।१४	८।७	१४।०
१५।१६	शत.	१९।५४	१।४२	७।३१	१३।२०
१६।१७	पू.भा.	१९।८	०।५२	६।३६	१२।२०
१७।१८	उ.भा.	१८।३	२३।४२	५।२१	११।०
१८।१९	रेवती	१६।४०	२२।१५	३।५०	९।२६
१९।२०	अश्वि.	१५।१	२०।३३	२।६	७।३९
२०।२१	भ.	१३।११	१८।४२	०।१३	५।५४
२१।२२	कृत्ति.	११।१४	१६।४७	२२।१७	३।४७
२२।२३	रोहि.	९।१७	१४।५१	२०।२४	१।५७
२३।२४	मृग.	७।३०	१३।८	१८।४६	०।२३
२४	आर्द्रा	६।०	११।४४	१७।२८	२३।१३
२५।२६	पुन.	४।५८	१०।५१	१६।५०	२२।४०
२६	पुष्य.	४।२९	१०।३२	१६।३५	२२।३८
२७	आश्ले.	४।४१	१०।५५	१७।९	२३।२३
२८।२९	मघा	५।३७	१२।२	१८।२७	०।५२
२९।३०	पू.फा.	७।१७	१३।५१	२०।२५	३।५९
३०।१	उ.फा.	९।३३	१६।१४	२२।५६	५।३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
जुलाई १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	हस्त	१२।१८	१९।०३	१।४८	८।३३
२।३	चित्रा.	१५।१८	२२।२	४।४६	११।३०
३।४	स्वाती	१८।१५	०।५६	७।३८	१४।२०
४।५	विषा.	२१।१	३।३६	१०।११	१६।४६
५।६	अनु.	२३।२२	५।४१	१२।१६	१८।४३
७	ज्ये.	१।११	७।३०	१३।४१	२०।८
८	मूल	२।२७	८।३८	१४।४९	२१।१०
९	पू.षा.	३।११	९।१४	१५।१७	२१।२०
१०	उ.षा.	३।२३	९।२०	१५।१७	२१।१४
११	श्रव.	३।१०	९।१	१४।५२	२०।४३
१२	धनि.	२।३५	८।२२	१४।९	१९।५६
१३	शत.	१।४४	७।२८	१३।१२	१८।५६
१४	पू.भा.	०।४०	६।२१	१२।२	१७।४३
१४।१५	उ.भा.	२३।२५	५।६	१०।४६	१६।२१
१५।१६	रेवती	२२।४	३।४३	९।२१	१४।५९
१६।१७	अश्वि.	२०।३८	२।१६	७।५४	१३।३२
१७।१८	भर.	१९।१०	०।४९	६।२७	१२।०५
१८।१९	कृत्ति.	१७।४२	२३।२१	४।५९	१०।३९
१९।२०	रोहि.	१६।१९	२२।००	३।४२	९।२४
२०।२१	मृग.	१५।५	२०।५०	२।३५	८।२०
२१।२२	आर्द्रा	१४।५	१९।५५	१।४५	७।३५
२२।२३	पुन.	१३।२५	१९।२२	१।१८	७।१५
२३।२४	पुष्य	१३।११	१९।१५	१।२०	७।२४
२४।२५	आश्ले.	१३।२९	१९।४२	१।५५	८।८
२५।२६	मघा	१४।२१	२०।४३	३।५	९।२७
२६।२७	पू.फा.	१५।५०	२२।२०	४।५०	११।२१
२७।२८	उ.फा.	१७।५३	०।३१	७।१	१३।४७
२८।२९	हस्त	२०।२५	३।८	९।५१	१६।३४
२९।३०	चित्रा	२३।१६	६।०१	१२।४५	१९।३०
३१	स्वाती	२।१५	९।८	१५।५१	२२।३५

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
अगस्त १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	विशा.	५।८	११।५७	१७।४६	०।२४
२।३	अनु.	७।४३	१४।१४	२०।४६	३।१७
३।४	ज्ये.	९।४७	१६।१	२२।३१	४।५३
४।५	मूल	११।१५	१७।२७	२३।३९	५।५१
५।६	पू.षा.	१२।३	१८।५	००।७	६।१
६।७	उ.षा.	१२।११	१८।४	२३।५७	५।५०
७।८	श्रव.	११।४४	१७।३१	२३।१६	५।१
८।९	धनि.	१०।४६	१६।२६	२२।५	३।४५
९।१०	शत.	९।२५	१५।१०	२०।३५	२।१०
१०।११	पू.भा.	७।४६	१३।१९	१८।५२	०।२५
११	उ.भा.	५।५८	११।३०	१७।२	२२।३४
१२	रेवती	४।६	९।३९	१५।१२	२०।४५
१३	अश्वि.	२।१७	७।५१	१३।२५	१८।५९
१४	भर.	०।३५	६।१३	११।५०	१७।२७
१४।१५	कृत्ति.	२३।५	४।४६	१०।२७	१६।८
१५।१६	रोहि.	२१।५०	३।३६	९।२२	१५।८
१६।१७	मृग.	२०।५४	२।४५	८।३६	१४।२७
१७।१८	आर्द्रा	२०।१९	२।१६	८।१३	१४।१०
१८।१९	पुन	२०।६	२।१	८।१२	१४।१५
१९।२०	पुष्य	२०।१८	२।२८	८।३८	१४।४८
२०।२१	आश्ले.	२०।५८	३।१५	९।३१	१५।४८
२१।२२	मघा	२२।५	४।२९	१०।५३	१७।१७
२२।२३	पू.फा.	२३।४०	६।११	१२।४१	१९।१२
२४	उ.फा.	१।४३	८।२०	१४।५७	२१।३४
२५।२६	हस्त	४।११	१०।५३	१७।३५	०।१६
२६।२७	चित्रा	६।५८	१३।४३	२०।२७	३।१२
२७।२८	स्वाती	९।५६	१६।४१	२३।२६	६।११
२८।२९	विशा.	१२।५७	१९।३९	२।२१	९।३
२९।३०	अनु.	१५।४६	२२।२३	५।०	११।३६
३०।३१	ज्ये.	१८।१३	१।७	८।१	१४।५५
३१।१	मूल	२०।७	२।२६	८।४५	१५।१४

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
सितंबर १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	पू.षा.	२१।२२	३।२९	९।३६	१५।४३
२।३	उ.षा.	२१।५१	३।४६	९।४३	१५।३१
३।४	श्रव.	२१।३६	३।२२	९।८	१४।५४
४।५	धनि.	२०।४०	२।१७	७।५४	१३।३१
५।६	शत.	१९।७	०।३७	६।७	११।३७
६।७	पू.भा.	१७।८	२२।३३	३।५८	९।२३
७।८	उ.भा.	१४।४८	२०।११	१।३४	६।५६
८।९	रेवती	१२।१८	१७।४०	२३।३	४।२५
९।१०	अश्वि.	९।४८	१५।१२	२०।३७	२।२
१०	भर.	७।२६	१२।५५	१८।२४	२३।५२
११	कृत्ति.	५।२०	१०।५५	१६।३०	२२।४
१२	रोहि.	३।३९	९।२१	१५।३	२०।४४
१३	मृग.	२।२५	८।१४	१४।४	१९।५३
१४	आर्द्रा	१।४३	७।४१	१३।४०	१९।३८
१५	पुन.	१।३७	७।४३	७।४९	१३।५६
१६	पुष्य	२।३	८।१७	१४।३२	२०।४७
१७	आश्ले.	३।१	९।२२	१५।४३	२२।५
१८	मघा	४।२७	१०।५५	१७।२३	२३।५१
१९।२०	पू.फा.	६।२०	१२।५३	१९।२६	२।०
२०।२१	उ.फा.	८।३४	१५।१२	२१।५०	४।२८
२१।२२	हस्त	११।७	१७।४९	०।३१	७।१४
२२।२३	चित्रा	१३।५५	२०।४०	३।२५	१०।१
२३।२४	स्वाती	१६।५३	२३।३८	६।२३	१३।८
२४।२५	विशा.	१९।५४	२।३९	९।२४	१६।१
२५।२६	अनु.	२२।५३	५।३४	१२।१५	१८।५६
२७	ज्ये.	१।३८	८।१३	१४।४८	२१।२३
२८	मूल	३।५९	१०।२६	१६।५३	२३।२०
२९।३०	पू.षा.	५।४८	१२।५	१८।२२	०।४०
३०।१	उ.षा.	६।५७	१३।२	१९।७	१।१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
अक्तूबर १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	श्रव.	७।११	१३।१४	१९।८	१।१
२।३	धनि.	६।५४	१२।३६	१८।१८	१।१
३	शत.	५।४४	११।१६	१६।४८	२२।२०
४	पू. भा.	३।५३	९।१७	१४।४१	२०।५
५	उ. भा.	१।३०	६।४७	१२।४	१७।२२
५।६	रेवती	२२।४०	३।५६	९।११	१४।२८
६।७	अश्वि.	१९।४५	१।०	६।१६	११।३१
७।८	भर.	१६।४६	२२।३	३।२०	८।३८
८।९	कृत्ति.	१३।५६	१९।१८	०।४१	६।४
९।१०	रोहि.	११।२८	१६।५८	२२।२९	३।५९
१०।११	मृग.	९।३०	१५।१०	२०।५०	२।३०
११।१२	आर्द्रा	८।१०	१४।१	१९।५२	१।४३
१२।१३	पुन.	७।३४	१३।३६	१९।३८	१।४०
१३।१४	पुष्य	७।४२	१३।५५	२०।८	२।२१
१४।१५	आश्ले.	८।३३	१४।५५	२१।१८	३।४१
१५।१६	मघा	१०।३	१६।३४	२३।५	५।३६
१६।१७	पू.फा.	१२।५	१८।४१	१।१८	७।५८
१७।१८	उ.फा.	१४।३१	२१।१२	३।५३	१०।३४
१८।१९	हस्त	१७।१५	२३।५८	६।४१	१३।२४
१९।२०	चित्रा	२०।८	२।५३	९।३८	१६।२१
२०।२१	स्वाती	२३।७	५।५१	१२।३६	१९।२२
२२	विशा.	२।७	८।५१	१५।३५	२२।१९
२३।२४	अनु.	५।३	११।४५	१८।२७	१।९
२४।२५	ज्ये.	७।५२	१४।३०	२१।८	३।४४
२५।२६	मूल	१०।२५	१६।५८	२३।३१	६।४
२६।२७	पू.षा.	१२।३६	१९।२	१।२८	७।५४
२७।२८	उ.षा.	१४।१९	२०।३५	२।५१	९।७
२८।२९	श्रव.	१५।२३	२१।२८	३।३३	९।३९
२९।३०	धनि.	१५।४५	२१।३९	३।३३	९।२७
३०।३१	शत.	१५।२२	२१।३	२।४५	८।२८
३१।१	पू.भा.	१४।११	१९।४५	१।२०	६।५५

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
नवम्बर १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	उ.भा.	१२।२०	१७।४४	२३।९	४।३३
२।३	रेवती	९।५७	१५।१३	२०।२९	२।५४
३	अश्वि.	७।२	१२।१५	१७।२८	२२।४१
४	भर.	३।५५	९।७	१४।२०	१९।३३
५	कृत्ति.	०।४५	६।०	११।१५	१६।३०
६।७	रोहि.	२१।४५	३।५	८।२५	१३।४५
७।८	मृग.	१९।४	०।३३	६।२	११।३१
८।९	आर्द्रा	१७।०	२२।३९	४।१८	९।५७
९।१०	पुन.	१५।३६	२१।२७	३।१८	९।९
१०।११	पुष्य	१४।५९	२१।२	३।५	९।९
११।१२	आश्ले.	१५।१३	२१।२९	३।४५	१०।१
१२।१३	मघा.	१६।१६	२२।४३	५।१०	११।३७
१३।१४	पू.फा.	१८।४	०।३९	७।१४	१३।५०
१४।१५	उ.फा.	२०।२६	३।७	९।४८	१६।२९
१५।१६	हस्त	२३।११	६।५६	१२।४१	१९।२६
१६	चित्रा.	२।१०	९।५५	१६।४०	२२।२६
१७।१८	स्वाती	५।१२	११।५७	१८।४२	१।२६
१८।१९	विशा.	८।११	१४।५४	२१।३७	४।२०
१९।२०	अनु.	११।२	१७।४२	०।२२	७।२
२०।२१	ज्ये.	१३।४२	२०।१८	२।५४	९।३१
२१।२२	मूल	१६।८	२२।४०	५।१२	११।४४
२२।२३	पू.षा.	१८।१७	०।४४	७।११	१३।३९
२३।२४	उ.षा.	२०।६	२।२७	८।४८	१५।९
२४।२५	श्रव.	२१।२९	३।४२	९।५५	१६।८
२५।२६	धनि.	२२।२१	४।२५	१०।३०	१६।३४
२६।२७	शत.	२२।३९	४।३३	१०।२७	१६।२१
२७।२८	पू.भा.	२२।१७	४।२	९।४७	१५।३२
२८।२९	उ.भा.	२१।१६	२।५१	८।२६	१४।२
२९।३०	रेवती.	१९।३८	१।५	६।३२	११।५९
३०। १	अश्वि.	१७।२७	२२।४८	४।९	९।३०

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
दिसंबर १९९८ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	भ.	१४।५०	२०।७	१।२४	६।४१
२।३	कृ.	११।५९	१७।१६	२२।३३	३।४८
३।४	रो.	९।४	१४।२२	१९।४०	०।५८
४	मृ.	६।२६	११।३९	१७।२	२२।२५
५	आर्द्रा	३।४७	९।१८	१४।४९	२०।१९
६	पुन.	१।४९	७।२९	१३।९	१८।५०
७	पुष्य	०।३१	६।२३	१२।१५	१८।७
८	आश्ले.	०।०	६।५	१२।१०	१८।१५
९	मघा	०।२०	६।३७	१२।५४	१९।१२
१०	पू.फा.	१।३०	७।५९	१४।२८	२०।५६
११	उ.फा.	३।२४	१०।०१	१६।३८	२३।१६
१२।१३	ह.	५।५४	१२।३६	१९।१९	२।२
१३।१४	चि.	८।४५	१५।३१	२२।१७	५।२
१४।१५	स्वाती	११।१८	१८।३३	१।१८	८।३
१५।१६	विशा	१४।४८	२१।३०	४।१३	१०।५६
१६।१७	अनु	१७।३८	००।१६	६।५४	१३।३२
१७।१८	ज्ये.	२०।११	२।४४	९।१८	१५।५२
१८।१९	मू.	२२।२५	४।५३	११।२२	१७।५०
२०	पू.षा.	०।१८	६।४१	१३।३	१९।२५
२१	उ.षा.	१।४९	८।६	१४।२३	२०।४१
२२	श्र.	२।५९	९।११	१५।२३	२१।३५
२३	ध.	३।४७	९।५२	१५।५८	२२।४
२४	श.	४।१०	१०।१०	१६।९	२२।९
२५	पू.भा.	४।८	१०१०	१५।५३	२१।४६
२६	उ.भा.	३।३८	९।२२	१५।८	२०।५४
२७	रे.	२।४०	८।१९	१३।५८	१९।३७
२८	अश्वि.	१।१६	६।४९	१२।२२	१७।५६
२८।२९	भ.	२३।२९	४।५८	१०।२७	१५।५५
२९।३०	कृ.	२१।२३	२।४९	८।१५	१३।४१
३०।३१	रो.	१९।६	०।३१	५।५७	११।२२
३१।१	मृ.	१६।४८	२२।१५	३।४२	९।९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
जनवरी १९९९ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	आर्द्रा	१४।३५	२०।६	१।३७	७।८
२।३	पुन.	१२।३९	१८।१७	२३।५४	५।३२
३।४	पुष्य	११।१०	१६।५६	२२।४३	४।२९
४।५	आश्ले.	१०।१६	१६।१३	२२।१०	४।७
५।६	मघा	१०।४	१६।१२	२२।२०	४।२८
६।७	पू.फा.	१०।३७	१६।५७	२३।१६	५।३६
७।८	उ.फा.	११।५६	१८।२६	०।५६	७।२६
८।९	ह.	१३।५६	२०।३४	३।१२	९।५०
९।१०	चि.	१६।२८	२३।११	५।५४	१२।३७
१०।११	स्वा.	१९।२०	२।५	८।५०	१५।३५
११।१२	वि.	२२।२०	५।३	११।४६	१८।२९
१३	अनु.	१।१३	७।५२	१४।३१	२१।११
१४	ज्ये.	३।५०	१०।२३	१६।५६	२३।२९
१५।१६	मू.	६।२	१२।२८	१८।५४	१।२०
१६।१७	पू.षा.	७।४६	१४।४	२०।२२	२।४१
१७।१८	उ.षा.	९।०	१५।१२	२१।२४	३।३५
१८।१९	श्र.	९।४६	१५।५१	२१।५६	४।१
१९।२०	धनि.	१०।७	१६।७	२२।६	४।५
२०।२१	शत.	१०।४	१५।५८	२१।५२	३।४६
२१।२२	पू.भा.	९।४१	१५।३१	२१।२१	३।११
२२।२३	उ.भा.	९।१	१४।४७	२०।३३	२।१९
२३।२४	रेव.	८।४	१३।४६	१९।२९	१।१३
२४	अश्वि.	६।५४	१२।३३	१८।१२	२३।५१
२५	भर.	५।३२	११।१०	१६।४७	२२।२४
२६	कृ.	४।२	९।३८	१५।१४	२०।५०
२७	रो.	२।२६	८।२	१३।३८	१९।१४
२८	मृ.	०।५०	६।२७	१२।४	१७।४१
२८।२९	आर्द्रा	२३।१८	४।५८	१०।३८	१६।१७
२९।३०	पुन.	२१।५७	३।४१	९।२४	१५।७
३०।३१	पुष्य.	२०।५१	२।४१	८।३०	१४।१९
३१।१	आश्लेषा	२०।९	२।६	८।३५	१४।१०

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
फरवरी १९९९ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१।२	मघा	१९।५७	२।२	८।७	१४।१२
२।३	पू.फा.	२०।१८	२।३२	८।४७	१५।१
३।४	उ.फा.	२१।१६	३।४०	१०।४	१६।२८
४।५	ह.	२२।५२	५।२४	११।५६	१८।२८
६	चित्रा	१।१	७।४०	१४।१९	२०।५८
७	स्वा.	३।३७	१०।२१	१७।४	२३।४५
८।९	वि.	६।३०	१३।१४	१९।५८	२।४२
९।१०	अनु.	९।२६	१६।८	२२।५०	५।३२
१०।११	ज्ये.	१२।१३	१८।४९	१।२५	८।१
११।१२	मूल	१४।३८	२१।७	३।३६	१०।४
१२।१३	पू.षा.	१६।३२	२२।५२	५।११	११।३१
१३।१४	उ.षा.	१७।५०	२३।५९	६।९	१२।१९
१४।१५	श्र.	१८।२९	०।३०	६।३१	१२।३१
१५।१६	ध.	१८।३२	०।२५	६।१८	१२।११
१६।१७	श.	१८।३	२३।४९	५।३५	११।२१
१७।१८	पू.भा.	१७।७	२२।४८	४।२८	१०।९
१८।१९	उ.भा.	१५।५०	२१।२७	३।४	८।४१
१९।२०	रेव.	१४।१९	१९।५४	१।२९	७।४
२०।२१	अश्वि	१२।४०	१८।१५	२३।५०	५।२५
२१।२२	भर.	११।०	१६।३६	२२।१२	३।४८
२२।२३	कृत्ति.	९।२३	१५।१	२०।३९	२।१७
२३।२४	रोहि.	७।५४	१३।३४	१९।१५	०।५५
२४	मृग.	६।२६	१२।२०	१८।३	२३।४७
२५	अर्द्रा	५।३१	११।१९	१७।७	२२।५५
२६	पुन.	४।४३	१०।३५	१६।२७	२२।२२
२७	पुष्य.	४।१३	१०।१०	१६।७	२२।५
२८	आश्ले.	४।३	१०।६	१६।९	२२।१२
-	-	-	-	-	-
-	-	-	-	-	-
-	-	-	-	-	-
-	-	-	-	-	-

नक्षत्र चरण	-	१	२	३	४
मार्च १९९९ ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	मघा	४।१५	१०।२४	१६।३४	२२।४३
२	पू.फा.	४।५३	११।९	१७।२५	२३।४१
३।४	उ.फा.	५।५६	१२।१९	१८।४२	१।५
४।५	हस्त	७।२८	१३।५८	२०।२८	२।५८
५।६	चित्रा	९।२८	१६।४	२२।४०	५।१६
६।७	स्वा.	११।५३	१८।३४	१।१५	७।५६
७।८	विशा.	१४।३८	२१।२२	४।६	१०।५०
८।९	अनु.	१७।३३	०।१७	७।१	१३।४५
९।१०	ज्ये.	२०।२९	३।१०	९।५१	१६।३१
१०।११	मूल	२३।११	५।४३	१२।१५	१८।४७
१२	पू.षा.	१।१९	७।४७	१४।१५	२०।४३
१३	उ.षा.	३।१०	९।२५	१५।४०	२१।५५
१४	श्रव.	४।९	१०।१२	१६।१६	२२।२०
१५	धनि.	४।२३	१०।१६	१६।८	२२।१
१६	शत.	३।५३	९।३६	१५।१९	२१।२
१७	पू.भा.	२।४४	८।१९	१३।५४	१९।२९
१८	उ.भा.	१।३	-	-	-

सन् १९४० से कार्यरत्

दिल्ली में सभी प्रकार की धार्मिक, ज्योतिष एवं जन्त्री पंचांग के मिलने का एकमात्र चिरपरिचित विश्वविख्यात संस्थान

अग्रवाल बुक डिपो (रजि०)

४६०, खारी बावली, दिल्ली-११०००६

२९४३२५४, ५७२१४०३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ जनवरी ९८ को अयनांश २३°/४८'/ ४५")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
जन. १	८ १६ ३१ ४२	९ १६ ८ ३५	९ १६ ५६ १४	७ २४ ३८ ५७	९ २८ २५ १३	९ ९ ३४ ९	११ १९ ५५ ४०	४ १९ ५३ ५३	-२३ २	-१५ ७	+२ ४३	जन. १
२	८ १७ ३२ ५२	१० ० १७ ३३	९ १७ ४३ २७	७ २५ १७ १	९ २८ ३७ ४५	९ ९ २० ११	११ १९ ५७ २६	४ १९ ५० ४३	२२ ५७	११ ५९	१ ३५	२
३	८ १८ ३४ २	१० १४ २८ ५१	९ १८ ३० ४२	७ २६ ० ३४	९ २८ ५० २१	९ ९ ३ ४६	११ १९ ५९ १८	४ १९ ४७ ३२	२२ ५२	८ ८	+० २१	३
४	८ १९ ३५ १२	१० २८ ३९ ४०	९ १९ १७ ५७	७ २६ ४९ १	९ २९ ३ १	९ ८ ४४ ५५	११ २० १ १६	४ १९ ४४ २१	२२ ४६	-३ ५९	-० ५५	४
५	८ २० ३६ २२	११ १२ ४८ १०	९ २० ५ १२	७ २७ ४१ ५१	९ २९ १५ ४६	९ ८ २३ ४४	११ २० ३ २०	४ १९ ४१ १०	२२ ३९	+० ४१	२ ७	५
६	८ २१ ३७ ३१	११ २६ ५३ १२	९ २० ५२ २९	७ २८ ३८ ३३	९ २९ २८ ३५	९ ८ ० १७	११ २० ५ ३१	४ १९ ३८ ०	२२ ३३	५ ८	३ ११	६
७	८ २२ ३८ ४०	० १० ५३ ५१	९ २१ ३९ ४६	७ २९ ३८ ४३	९ २९ ४१ २८	९ ७ ३४ ४१	११ २० ७ ४८	४ १९ ३४ ४९	२२ २५	९ १६	४ ३	७
८	८ २३ ३९ ४९	० २४ ४९ ७	९ २२ २७ ३	८ ० ४१ ५७	९ २९ ५४ २५	९ ७ ७ ३	११ २० १० १२	४ १९ ३१ ३८	२२ १८	१२ ५२	४ ४१	८
९	८ २४ ४० ५७	१ ८ ३७ ३२	९ २३ १४ २१	८ १ ४७ ५७	१० ० ७ २६	९ ६ ३७ ३२	११ २० १२ ४१	४ १९ २८ २७	२२ ९	१५ ५३	५ २	९
१०	८ २५ ४२ ४	१ २२ १७ ११	९ २४ १ ३९	८ २ ५६ २५	१० ० २० ३०	९ ६ ६ १८	११ २० १५ १७	४ १९ २५ १७	२२ १	१७ ३९	५ ५	१०
११	८ २६ ४३ १२	२ ५ ४५ ४६	९ २४ ४८ ५८	८ ४ ७ ५	१० ० ३३ ३९	९ ५ ३३ ३३	११ २० १७ ५९	४ १९ २२ ६	२१ ५२	१८ ३५	४ ५२	११
१२	८ २७ ४४ १८	२ १९ १ १	९ २५ ३६ १६	८ ५ १९ ४४	१० ० ४६ ५०	९ ४ ५९ २९	११ २० २० ४७	४ १९ १८ ५५	२१ ४३	१८ २८	४ २२	१२
१३	८ २८ ४५ २५	३ २ १ ८	९ २६ २३ ३५	८ ६ ३४ ११	१० १ ० ६	९ ४ २४ २१	११ २० २३ ४१	४ १९ १५ ४४	२१ ३३	१७ २२	३ ४०	१३
१४	८ २९ ४६ ३१	३ १४ ४५ ८	९ २७ १० ४४	८ ७ ५० १५	१० १ १३ २५	९ ३ ४८ २१	११ २० २६ ४०	४ १९ १२ ३३	२१ २२	१५ २५	२ ४७	१४
१५	९ ० ४७ ३७	३ २७ १३ ९	९ २७ ५८ १४	८ ९ ७ ४७	१० १ २६ ४७	९ ३ ११ ४७	११ २० २९ ४६	४ १९ ९ २३	२१ १२	१२ ४७	१ ४७	१५
१६	९ १ ४८ ४२	४ ९ २६ ३१	९ २८ ४५ ३४	८ १० २६ ४०	१० १ ४० १२	९ २ ३४ ५२	११ २० ३२ ५८	४ १९ ६ १२	२१ १	९ ३८	-० ४३	१६
१७	९ २ ४९ ४७	४ २१ २७ ४५	९ २९ ३२ ५४	८ ११ ४६ ४८	१० १ ५३ ४१	९ १ ५७ ५२	११ २० ३६ १५	४ १९ ३ १	२० ४९	६ ८	+० २२	१७
१८	९ ३ ५० ५२	५ ३ २० २०	१० ० २० १४	८ १३ ८ ४	१० २ ७ १३	९ १ २१ ५	११ २० ३९ ३८	४ १८ ५९ ५०	२० ३७	+२ २६	१ २५	१८
१९	९ ४ ५१ ५६	५ १५ ८ ३७	१० १ ७ ३४	८ १४ ३० २४	१० २ २० ४८	९ ० ४४ ४५	११ २० ४३ ७	४ १८ ५६ ४०	२० २५	-१ २०	२ २५	१९
२०	९ ५ ५३ १	५ २६ ५७ ३०	१० १ ५४ ५५	८ १५ ५३ ४४	१० २ ३४ २६	९ ० ९ ६	११ २० ४६ ४१	४ १८ ५३ २९	२० १३	५ ३	३ १८	२०
२१	९ ६ ५४ ५	६ ८ ५२ १२	१० २ ४२ १५	८ १७ १८ ०	१० २ ४८ ७	८ २९ ३४ २५	११ २० ५० २२	४ १८ ५० १८	२० ०	८ ३५	४ ४	२१
२२	९ ७ ५५ ८	६ २० ५७ ५७	१० ३ २९ ३५	८ १८ ४३ १०	१० ३ १ ५०	८ २९ ० ५४	११ २० ५४ ७	४ १८ ४७ ७	१९ ४६	११ ५०	४ ३९	२२
२३	९ ८ ५६ ११	७ ३ १९ ३७	१० ४ १६ ५५	८ २० ९ १०	१० ३ १५ ३६	८ २८ २८ ४७	११ २० ५७ ५९	४ १८ ४३ ५७	१९ ३२	१४ ३७	५ २	२३
२४	९ ९ ५७ १४	७ १६ १ २२	१० ५ ४ १५	८ २१ ३५ ५९	१० ३ २९ २५	८ २७ ५८ १४	११ २१ १ ५६	४ १८ ४० ४६	१९ १८	१६ ४८	५ ११	२४
२५	९ १० ५८ १६	७ २९ ६ ६	१० ५ ५१ ३५	८ २३ ३ ३६	१० ३ ४३ १७	८ २७ २९ २६	११ २१ ५ ५८	४ १८ ३७ ३५	१९ ७	१८ ११	५ ५	२५
२६	९ ११ ५९ १८	८ १२ ३५ १	१० ६ ३८ ५५	८ २४ ३१ ५७	१० ३ ५७ ११	८ २७ २ ३४	११ २१ १० ५	४ १८ ३४ २४	१८ ४९	१८ ३६	४ ४२	२६
२७	९ १३ ० १८	८ २६ २७ १५	१० ७ २६ १४	८ २६ १ ३	१० ४ ११ ७	८ २६ ३७ ४४	११ २१ १४ १८	४ १८ ३१ १३	१८ ३४	१७ ५६	४ १	२७
२८	९ १४ १ १८	९ १० ३९ ४३	१० ८ १३ ३४	८ २७ ३० ५२	१० ४ २५ ५	८ २६ १५ ३	११ २१ १८ ३६	४ १८ २८ ३	१८ १८	१६ ८	३ ५	२८
२९	९ १५ २ १७	९ २५ ७ २५	१० ९ ० ५२	८ २९ १ २४	१० ४ ३९ ६	८ २५ ५४ ३८	११ २१ २३ ०	४ १८ २४ ५२	१८ २	१३ १८	१ ५७	२९
३०	९ १६ ३ १५	१० ९ ४४ ७	१० ९ ४८ १०	९ ० ३२ ३८	१० ४ ५३ ९	८ २५ ३६ ३३	११ २१ २७ २८	४ १८ २१ ४१	१७ ४६	९ ३५	+० ३९	३०
३१	९ १७ ४ १२	१० २४ २३ १५	१० १० ३५ २८	९ २ ४ ३५	१० ५ ७ १३	८ २५ २० ५२	११ २१ ३२ २	४ १८ १८ ३०	१७ ३०	५ १७	-० ४१	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१फरवरी' को अयनांश २३°/४९/४९")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
फर. १	९ १८ ५ ८	११ ८ ५८ ४८	१० ११ २२ ४५	९ ३ ३७ १३	१० ५ २१ २०	८ २५ ७ ३६	११ २१ ३६ ४०	४ १८ १५ २०	-१७ १३	-० ४२	-१ ५८	फर. १
२	९ १९ ६ ३	११ २३ २५ ५५	१० १२ १० १	९ ५ १० ३४	१० ५ ३५ २८	८ २४ ५६ ४८	११ २१ ४१ २४	४ १८ १२ ९	१६ ५६	+३ ५३	३ ७	२
३	९ २० ६ ५६	० ७ ४१ १८	१० १२ ५७ १६	९ ६ ४४ ३७	१० ५ ४९ ३८	८ २४ ४८ २८	११ २१ ४६ १२	४ १८ ८ ५८	१६ ३८	८ ११	४ ४	३
४	९ २१ ७ ४८	० २१ ४२ ५९	१० १३ ४४ ३०	९ ८ १९ २३	१० ६ ३ ५०	८ २४ ४२ ३७	११ २१ ५१ ५	५ १८ ५ ४७	१६ २१	११ ५७	४ ४५	४
५	९ २२ ८ ३८	१ ५ ३० ९	१० १४ ३१ ४४	९ ९ ५४ ५३	१० ६ १८ ३	८ २४ ३९ १३	११ २१ ५६ ३	४ १८ २ ३६	१६ ३	१४ ५९	५ ८	५
६	९ २३ ९ २७	१ १९ २ ४१	१० १५ १८ ५६	९ ११ ३१ ७	१० ६ ३२ १८	८ २४ ३८ १६	११ २२ १ ६	४ १७ ५९ २६	१५ ४५	१७ ८	५ १४	६
७	९ २४ १० १५	२ २ २० ५३	१० १६ ६ ७	९ १३ ८ ५	१० ६ ४६ ३३	८ २४ ३९ ४४	११ २२ ६ १३	४ १७ ५६ १५	१५ २६	१८ २०	५ ३	७
८	९ २५ ११ १	२ १५ २५ ११	१० १६ ५३ १७	९ १४ ४५ ५०	१० ७ ० ५१	८ २४ ४३ ३४	११ २२ ११ २४	४ १७ ५३ ४	१५ ७	१८ ३१	३ ३७	८
९	९ २६ ११ ४५	२ २८ १६ ६	१० १७ ४० २६	९ १६ २४ २१	१० ७ १५ ९	८ २४ ४९ ४४	११ २२ १६ ४०	४ १७ ४९ ५३	१४ ४८	१७ ४०	३ ५६	९
१०	९ २७ १२ २९	३ १० ५४ ८	१० १८ २७ ३४	९ १८ ३ ३९	१० ७ २९ २८	८ २४ ५८ १२	११ २२ २२ ०	४ १७ ४६ ४३	१४ २९	१६ ५	३ ५	१०
११	९ २८ १३ १०	३ २३ १९ ५९	१० १९ १४ ४१	९ १९ ४३ ४५	१० ७ ४३ ४९	८ २५ ८ ५४	११ २२ २७ २५	४ १७ ४३ ३२	१४ १०	१३ ४२	२ ६	११
१२	९ २९ १३ ५१	४ ५ ३४ ३३	१० २० १ ४६	९ २१ २४ ४१	१० ७ ५८ १०	८ २५ २१ ४६	११ २२ ३२ ५३	४ १७ ४० २१	१३ ५०	१० ४३	-१ १	१२
१३	१० ० १४ ३०	४ १७ ३९ १०	१० २० ४८ ५०	९ २३ ६ २७	१० ८ १२ ३३	८ २५ ३६ ४६	११ २२ ३८ २६	४ १७ ३७ १०	१३ ३०	७ २०	+० ५	१३
१४	१० १ १५ ७	४ २९ ३५ ४०	१० २१ ३५ ५३	९ २४ ४९ ४	१० ८ २६ ५६	८ २५ ५३ ४९	११ २२ ४४ ३	४ १७ ३४ ०	१३ १०	+३ ४२	१ ११	१४
१५	१० २ १५ ४४	५ ११ २६ ३२	१० २२ २२ ५४	९ २६ ३२ ३३	१० ८ ४१ २०	८ २६ १२ ५१	११ २२ ४९ ४४	८ १७ ३० ४९	१२ ४९	-० ३	२ १३	१५
१६	१० ३ १६ १९	५ २३ १४ ४७	१० २३ ९ ५५	९ २८ १६ ५४	१० ८ ५५ ४४	८ २६ ३३ ५०	११ २२ ५५ २९	४ १७ २७ ३८	१२ २९	३ ४७	३ ९	१६
१७	१० ४ १६ ५३	६ ५ ४ ७	१० २३ ५६ ५४	१० ० २ ९	१० ९ १० १०	८ २६ ५६ ४०	११ २३ १ १८	४ १७ २४ २७	१२ ८	७ २३	३ ५८	१७
१८	१० ५ १७ २६	६ १६ ५८ ३१	१० २४ ४३ ५१	१० १ ४८ १७	१० ९ २४ ३५	८ २७ २१ १८	११ २३ ७ ११	४ १७ २१ १६	-११ ४७	१० ४२	४ ३६	१८
१९	१० ६ १७ ५७	६ २९ २ ५५	१० २५ ३० ४७	१० ३ ३५ १८	१० ९ ३९ २	८ २७ ४७ ३९	११ २३ १३ ७	४ १७ १८ ६	११ २६	१३ ३६	५ ३	१९
२०	१० ७ १८ २८	७ ११ २१ ३३	१० २६ १७ ४२	१० ५ २३ १४	१० ९ ५३ २८	८ २८ १५ ४१	११ २३ १९ ८	४ १७ १४ ५५	११ ४	१५ ५९	५ १६	२०
२१	१० ८ १८ ५७	७ २३ ५९ ५	१० २७ ४ ३६	१० ७ १२ ३	१० १० ७ ५५	८ २८ ४५ १९	११ २३ २५ १२	४ १७ ११ ४४	१० ४३	१७ ३९	५ १५	२१
२२	१० ९ १९ २४	८ ६ ५९ २२	१० २७ ५१ २७	१० ९ १ ४४	१० १० २२ २३	८ २९ १६ २९	११ २३ ३१ १९	४ १७ ८ ३३	१० २१	१८ २८	४ ५८	२२
२३	१० १० १९ ५०	८ २० २५ १४	१० २८ ३८ १८	१० १० ५२ १७	१० १० ३६ ५०	८ २९ ४९ ७	११ २३ ३७ ३०	४ १७ ५ २३	९ ५९	१७ १७	४ २५	२३
२४	१० ११ २० १५	९ ४ १७ ४२	१० २९ २५ ७	१० १२ ४३ ४०	१० १० ५१ १८	९ ० २३ ११	११ २३ ४३ ४४	४ १७ २ १२	९ ३७	१७ २	३ ३५	२४
२५	१० १२ २० ३९	९ १८ ३५ ३६	११ ० ११ ५४	१० १४ ३५ ५०	१० ११ ५ ४५	९ ० ५८ ३६	११ २३ ५० २	४ १६ ५९ १	९ १५	१४ ४०	२ ३०	२५
२६	१० १३ २१ ०	१० ३ १५ ९	११ ० ५८ ३९	१० १६ २८ ४४	१० ११ २० १३	९ १ ३५ २०	११ २३ ५६ २३	४ १६ ५५ ५०	८ ५२	११ १९	+१ १४	२६
२७	१० १४ २१ २०	१० १८ १० १०	११ १ ४५ २३	१० १८ २२ १८	१० ११ ३४ ४०	९ २ १३ १८	११ २४ २ ४८	४ १६ ५२ ४०	८ ३०	७ ११	-० ८	२७
२८	१० १५ २१ ३९	११ ३ १२ ३८	११ २ ३२ ५	१० २० १६ २७	१० ११ ४९ ७	९ २ ५२ २९	११ २४ ९ १५	४ १६ ४९ २९	-८ ७	-२ ३४	-१ ३१	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ मार्च को अयनांश २३°/४९/५३")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई. ८
मार्च १	१० १६ २१ ५५	११ १८ १३ ४८	११ ३ १८ ४५	१० २२ ११ २	१० १२ ३ ३३	९ ३ ३२ ४८	११ २४ १५ ४६	४ १६ ४६ १८	-७ ४५	+२ १२	-२ ४७	मार्च १
२	१० १७ २२ ९	० ३ ५ २६	११ ४ ५ २३	१० २४ ५ ५८	१० १२ १७ ५९	९ ४ १४ १४	११ २४ २२ १९	४ १६ ४३ ७	७ २२	६ ४७	३ ५१	२
३	१० १८ २२ २२	० १७ ४० ५६	११ ४ ५१ ५९	१० २६ १ २	१० १२ ३२ २५	९ ४ ५६ ४३	११ २४ २८ ५६	४ १६ ३९ ५६	६ ५९	१० ५२	४ ३८	३
४	१० १९ २२ ३२	१ १ ५५ ५६	११ ५ ३८ ३३	१० २७ ५६ ५	१० १२ ४६ ५०	९ ५ ४० १३	११ २४ ३५ ३५	४ १६ ३६ ४६	६ ३६	१४ १३	५ ७	४
५	१० २० २२ ४१	१ १५ ४८ २२	११ ६ २५ ५	१० २९ ५० ५२	१० १३ १ १४	९ ६ २४ ४२	११ २४ ४२ १७	४ १६ ३३ ३५	६ १३	१६ ३९	५ १८	५
६	१० २१ २२ ४७	१ २९ १८ १४	११ ७ ११ ३५	११ १ ४५ ७	१० १३ १५ ३७	९ ७ १० ७	११ २४ ४९ २	४ १६ ३० २४	५ ५०	१८ ६	५ १०	६
७	१० २२ २२ ५१	२ १२ २६ ५६	११ ७ ५८ २	११ ३ ३८ ३३	१० १३ ३० ०	९ ७ ५६ २६	११ २४ ५५ ४९	४ १६ २७ १३	५ २६	१८ ३१	४ ४७	७
८	१० २३ २२ ५३	२ २५ १६ ४८	११ ८ ४४ २७	११ ५ ३० ४९	१० १३ ४४ २२	९ ८ ४३ ३८	११ २५ २ ३९	४ १६ २४ ३	५ ३	१७ ५८	४ ९	८
९	१० २४ २२ ५३	३ ७ ५० ३४	११ ९ ३० ५०	११ ७ २१ ३२	१० १३ ५८ ४२	९ ९ ३१ ३९	११ २५ ९ ३१	४ १६ २० ५२	४ ४०	१६ ३२	३ २०	९
१०	१० २५ २२ ५१	३ २० ११ २	११ १० १७ ११	११ ९ १० १८	१० १४ १३ २	९ १० २० २९	११ २५ १६ २६	४ १६ १७ ४१	४ १६	१४ २१	२ २२	१०
११	१० २६ २२ ४६	४ २ २० ५०	११ ११ ३ २९	११ १० ५६ ३९	१० १४ २७ २०	९ ११ १० ६	११ २५ २३ २३	४ १६ १४ ३०	३ ५३	११ ३३	१ १९	११
१२	१० २७ २२ ४०	४ १४ २२ २१	११ ११ ४९ ४५	११ १२ ४० ७	१० १४ ४१ ३७	९ १२ ० २७	११ २५ ३० २२	४ १६ ११ १९	३ २९	८ १७	-० १३	१२
१३	१० २८ २२ ३२	४ २६ १७ ४६	११ १२ ३५ ५९	११ १४ २० १२	१० १४ ५५ ५३	९ १२ ५१ ३२	११ २५ ३७ २४	४ १६ ८ ९	३ ६	४ ४३	+० ५३	१३
१४	१० २९ २२ २१	५ ८ ९ ७	११ १३ २२ १०	११ १५ ५६ २४	१० १५ १० ८	९ १३ ४३ १८	१९ २५ ४४ २७	४ १६ ४ ५८	२ ४२	+० ५९	१ ५६	१४
१५	११ ० २२ ९	५ १९ ५८ २४	११ १४ ८ १९	११ १७ २८ १३	१० १५ २४ २१	९ १४ ३५ ४४	११ २५ ५१ ३३	४ १६ १ ४७	२ १८	-२ ४६	२ ५४	१५
१६	११ १ २१ ५५	६ १ ४७ ४७	११ १४ ५४ २६	११ १८ ५५ ७	१० १५ ३८ ३३	९ १५ २८ ४९	११ २५ ५८ ४१	४ १५ ५८ ३६	१ ५५	६ २५	३ ४४	१६
१७	११ २ २१ ३९	६ १३ ३९ ४३	११ १५ ४० ३०	११ २० १६ ३९	१० १५ ५२ ४३	९ १६ २२ ३१	११ २६ ५ ५०	४ १५ ५५ २६	१ ३१	९ ४९	४ २५	१७
१८	११ ३ २१ २१	६ २५ ३७ ०	११ १६ २६ ३२	११ २१ ३२ २१	१० १६ ६ ५१	९ १७ १६ ४८	११ २६ १३ २	४ १५ ५२ १५	१ ७	१२ ५१	४ ५५	१८
१९	११ ४ २१ २	७ ७ ४२ ५१	११ १७ १२ ३२	११ २२ ४१ ४८	१० १६ २० ५८	९ १८ ११ ४०	११ २६ २० १५	४ १५ ४९ ४	० ४३	१५ २२	५ १२	१९
२०	११ ५ २० ४१	७ २० ० ५३	११ १७ ५८ २९	११ २३ ४४ ३७	१० १६ ३५ ४	९ १९ ७ ५	११ २६ २७ ३०	४ १५ ४५ ५३	-० २०	१७ १५	५ १५	२०
२१	११ ६ २० १८	८ २ ३४ ५८	११ १८ ४४ २४	११ २४ ४० २८	१० १६ ४९ ७	९ २० ३ २	११ २६ ३४ ४७	४ १५ ४२ ४३	+० ४	१८ २०	५ ४	२१
२२	११ ७ १९ ५३	८ १५ २८ ५४	११ १९ ३० १६	११ २५ २९ ३	१० १७ ३ ८	९ २० ५९ २९	११ २६ ४२ ५	४ १५ ३९ ३२	० २८	१८ ३१	४ ३७	२२
२३	११ ८ १९ २७	८ २८ ४६ १०	११ २० १६ ६	११ २६ १० १०	१० १७ १७ ८	९ २१ ५६ २६	११ २६ ४९ २५	४ १५ ३६ २१	० ५१	१७ ४१	३ ५४	२३
२४	११ ९ १८ ५१	९ १० २९ १६	११ २१ १ ५४	११ २६ ४३ ३६	१० १७ ३१ ५	९ २२ ५३ ५१	११ २६ ५६ ४७	४ १५ ३३ १०	१ १५	१५ ५०	२ ५७	२४
२५	११ १० १८ २९	९ २६ ३९ ८	११ २१ ४७ ३९	११ २७ ९ १७	१० १७ ४५ ०	९ २३ ५१ ४२	११ २७ ४ ९	४ १५ २९ ५९	१ ३९	१२ ५७	१ ४८	२५
२६	११ ११ १७ ५७	१० ११ १४ ३३	११ २२ ३३ २१	११ २७ २७ ९	१० १७ ५८ ५२	९ २४ ५० ०	११ २७ ११ ३३	४ १५ २६ ४९	२ २	९ १२	+० २९	२६
२७	११ १२ १७ २३	१० २६ १० ४६	११ २३ १९ १	११ २७ ३७ १५	१० १८ १२ ४३	९ २५ ४८ ४३	११ २७ १८ ५९	४ १५ २३ ३८	२ २६	-४ ४६	-० ४३	२७
२८	११ १३ १६ ४७	११ ११ २२ ६	११ २४ ४ ३८	११ २७ ३९ ४१	१० १८ २६ ३२	९ २६ ४७ ४९	११ २७ २६ २५	४ १५ २० २७	२ ४९	+० २	२ १२	२८
२९	११ १४ १६ १०	११ २६ ३६ २	११ २४ ५० १३	११ २७ ३४ ४०	१० १८ ४० १८	९ २७ ४७ १९	११ २७ ३३ ५३	४ १५ १७ १६	३ १३	४ ५१	३ २२	२९
३०	११ १५ १५ ३०	० ११ ४५ १६	११ २५ ३५ ४५	११ २७ २२ २९	१० १८ ५४ १	९ २८ ४७ १०	११ २७ ४१ ११	४ १५ १४ ६	३ ३६	९ १९	४ १८	३०
३१	११ १६ १४ ४७	० २६ ३९ २६	११ २६ २१ १३	११ २७ ३ ३६	१० १९ ७ ४१	९ २९ ४७ २१	११ २७ ४८ ४७	४ १५ १० ५५	+३ ५९	+१३ ८	-४ ५५	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा.स्टै.टा.) (१ अप्रैल '९८ को अयनांश २३°/४९'/५७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर
१९९८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं.. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रै. १	११ १७ १४ ३	१ ११ १० ५०	११ २७ ६ ४०	११ २६ ३८ २५	१० १९ २१ १८	१० ० ४७ ५५	११ २७ ५६ २०	४ १५ ७ ४४	+४ २३	+१६ १	-५ १२
२	११ १८ १३ १७	१ २५ १५ ३०	११ २७ ५२ ३	११ २६ ७ ३७	१० १९ ३४ ५३	१० १ ४८ ४८	११ २८ ३ ५१	४ १५ ४ ३३	४ ४६	१७ ५१	५ ९
३	११ १९ १२ २८	२ ८ ५२ ५	११ २८ ३७ २३	११ २५ ३१ ५०	१० १९ ४८ २५	१० २ ५० ०	११ २८ ११ २५	४ १५ १ २२	५ ९	१८ ३५	४ ४९
४	११ २० ११ ३६	२ २२ १ ५६	११ २९ २२ ४१	११ २४ ५१ ५५	१० २० १ ५२	१० ३ ५१ ३२	११ २८ १८ ५७	४ १४ ५८ १२	५ ३२	१८ १७	४ १४
५	११ २१ १० ४३	३ ४ ४८ ४	० ० ७ ५५	११ २४ ८ ४०	१० २० १५ १८	१० ४ ५३ २१	११ २८ २६ ३०	४ १४ ५५ १	५ ५५	१७ ३	३ २८
६	११ २२ ९ ४७	३ १७ १४ ३२	० ० ५३ ७	११ २३ २३ ५	१० २० २८ ४१	१० ५ ५५ ३०	११ २८ ३४ ४	४ १४ ५१ ५०	६ १८	१५ ०	२ ३२
७	११ २३ ८ ५०	३ २९ २५ ४४	० १ ३८ १६	११ २२ ३६ ०	१० २० ४२ १	१० ६ ५७ ५२	११ २८ ४१ ३८	४ १४ ४८ ४०	६ ४०	१२ २०	१ ३१
८	११ २४ ७ ४९	४ ११ २५ ५५	० २ २३ २२	११ २१ ४८ २६	१० २० ५५ १७	१० ८ ० ३३	११ २८ ४९ १३	४ १४ ४५ २९	७ ३	९ १०	-० २७
९	११ २५ ६ ४६	४ २३ १९ २	० ३ ८ २५	११ २१ १ १५	१० २१ ८ ३०	१० ९ ३ २८	११ २८ ५६ ४८	४ १४ ४२ १८	७ २५	५ ४०	+० ३८
१०	११ २६ ५ ४२	५ ५ ८ २५	० ३ ५३ २५	११ २० १५ २२	१० २१ २१ ३९	१० १० ६ ४०	११ २९ ४ २४	४ १४ ३९ ८	७ ४७	+१ ५७	१ ४१
११	११ २७ ४ ३५	५ १६ ५६ ५२	० ४ ३८ २१	११ १९ ३१ ३२	१० २१ ३४ ४४	१० ११ १० ७	११ २९ ११ ५८	४ १४ ३५ ५७	८ १०	-१ ५०	२ ३९
१२	११ २८ ३ २६	५ २८ ४६ ४१	० ५ २३ १५	११ १८ ५० ३३	१० २१ ४७ ४६	१० १२ १३ ४९	११ २९ १९ ३४	४ १४ ३२ ४६	८ ३२	५ ३३	३ ३०
१३	११ २९ २ १५	६ १० ३९ ४५	० ६ ८ ६	११ १८ १२ ५६	१० २२ ० ४५	१० १३ १७ ४४	११ २९ २७ ११	४ १४ २९ ३५	८ ५४	९ ३	४ १२
१४	० ० १ २	६ २२ ३७ ४६	० ६ ५२ ५५	११ १७ ३९ २०	१० २२ १३ ४०	१० १४ २१ ५५	११ २९ ३४ ४७	४ १४ २६ २५	९ १५	१२ १४	४ ४४
१५	० ० ५९ ४८	७ ४ ४२ २२	० ७ ३७ ३९	११ १७ १० ४	१० २२ २६ ३०	१० १५ २६ १७	११ २९ ४२ २३	४ १४ २३ १४	९ ३७	१४ ५५	५ ३
१६	० १ ५८ ३१	७ १६ ५५ २४	० ८ २२ २१	११ १६ ४५ ३२	१० २२ ३९ १७	१० १६ ३० ५२	११ २९ ४९ ५९	४ १४ २० ३	९ ५८	१६ ५८	५ ८
१७	० २ ५७ १३	७ २९ १८ ५७	० ९ ७ ०	११ १६ २५ ५६	१० २२ ५२ १	१० १७ ३५ ४०	११ २९ ५७ ३४	४ १४ १६ ५३	१० २०	१८ १७	४ ५९
१८	० ३ ५५ ५३	८ ११ ५५ ३८	० ९ ५१ ३७	११ १६ ११ २५	१० २३ ४ ४०	१० १८ ४० ४१	० ० ५ १०	४ १४ १३ ४२	१० ४१	१८ ४३	४ ३६
१९	० ४ ५४ ३०	८ २४ ४८ १८	० १० ३६ १०	११ १६ २ ३	१० २३ १७ १५	१० १९ ४५ ५३	० ० १२ ४५	४ १४ १० ३१	११ २	१८ १२	३ ५८
२०	० ५ ५३ ८	९ ७ ५९ ५९	० ११ २० ४०	११ १५ ५७ ५२	१० २३ २९ ४५	१० २० ५१ १७	० ० २० २०	४ १४ ७ २१	११ २२	१६ ४२	३ ८
२१	० ६ ५१ ४३	९ २१ ३३ २९	० १२ ५ ८	११ १५ ५८ ४८	१० २३ ४२ १२	१० २१ ५६ ५०	० ० २७ ५५	४ १४ ४ १०	११ ४३	१४ १४	२ ५
२२	० ७ ५० १६	१० ५ १० ४७	० १२ ४९ ३३	११ १६ ४ ४७	१० २३ ५४ ३४	१० २३ २ ३७	० ० ३५ ३०	४ १४ ० ५९	१२ ३	१० ५२	+० ५३
२३	० ८ ४८ ४८	१० १९ ५२ १७	० १३ ३३ ५५	११ १६ १५ ४४	१० २४ ६ ५१	१० २४ ८ ३३	० ० ४३ ३	४ १३ ५७ ४८	१२ २३	६ ४७	-० २४
२४	० ९ ४७ १८	११ ४ ३६ २	० १४ १८ १५	११ १६ ३१ २८	१० २४ १९ ४	१० २५ १४ ३८	० ० ५० ३५	४ १३ ५४ ३८	१२ ४३	-२ १०	१ ४१
२५	० १० ४५ ४६	११ १९ ३७ १०	० १५ २ २९	११ १६ ५१ ५०	१० २४ ३१ १२	१० २६ २० ५३	० ० ५८ ८	४ १३ ५१ २७	१३ ३	+२ ३९	२ ५३
२६	० ११ ४४ १३	० ४ ४७ ५४	० १५ ४६ ४२	११ १७ १६ ४१	१० २४ ४३ १६	१० २७ २७ १७	० १ ५ ३९	४ १३ ४८ १७	१३ २३	७ २१	३ ५३
२७	० १२ ४२ ३८	० १९ ५८ २३	० १६ ३० ५२	११ १७ ४५ ५१	१० २४ ५५ १४	१० २८ ३३ ५०	० १ १३ १०	४ १३ ४५ ६	१३ ४२	११ ३५	४ ३७
२८	० १३ ४१ ०	१ ४ ५८ ११	० १७ १४ ५९	११ १८ १९ १०	१० २५ ७ ८	१० २९ ४० ३०	० १ २० ४०	४ १३ ४१ ५६	१४ १	१५ ०	५ ०
२९	० १४ ३९ २१	१ १९ ३८ १०	० १७ ५९ २	११ १८ ५६ २५	१० २५ १८ ५६	११ ० ४७ २०	० १ २८ ९	४ १३ ३८ ४५	१४ २०	१७ २३	५ ४
३०	० १५ ३७ ४१	२ ३ ५१ ५९	० १८ ४३ ३	११ १९ ३७ ३०	१० २५ ३० ३९	११ १ ५४ १७	० १ ३५ ३७	४ १३ ३५ ३४	+१४ ३९	+१८ ३७	-४ ४८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ मई को अयनांश २३°/५०'/ १")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ई.
मई १	० १६ ३५ ५८	२ १७ ३६ ३२	० १९ २७ ०	११ २० २२ १२	१० २५ ४२ १७	११ ३ १ २४	० १ ४३ ३	४ १३ ३२ २४	+१४ ५७	+१८ ४१	-४ १६	मई १
२	० १७ ३४ १२	३ ० ५१ ५७	० २० १० ५५	११ २१ १० २५	१० २५ ५३ ५०	११ ४ ८ ३५	० १ ५० ३०	४ १३ २९ १४	१५ १५	१७ ४३	३ ३१	२
३	० १८ ३२ २५	३ १३ ४० ५३	० २० ५४ ४५	११ २२ १ ५९	१० २६ ५ १७	११ ५ १५ ५४	० १ ५७ ५४	४ १३ २६ ३	१५ ३३	१५ ५२	२ ३७	३
४	० १९ ३० ३६	३ २६ ७ ३०	० २१ ३८ ३३	११ २२ ५६ ४५	१० २६ १६ ४०	११ ६ २३ २२	० २ ५ १७	४ १३ २२ ५३	१५ ५१	१३ १८	१ ३६	४
५	० २० २८ ४५	४ ८ १६ ५२	० २२ २२ १७	११ २३ ५४ ३७	१० २६ २७ ५५	११ ७ ३० ५५	० २ १२ ३८	४ १३ १९ ४२	१६ ८	१० १२	-० ३३	५
६	० २१ २६ ५२	४ २० १४ १०	० २३ ५ ५८	११ २४ ५५ २७	१० २६ ३९ ५	११ ८ ३८ ३६	० २ १९ ५९	४ १३ १६ ३१	१६ २५	६ ४४	+० ३१	६
७	० २२ २४ ५७	५ २ ४ २५	० २३ ४९ ३६	११ २५ ५९ १०	१० २६ ५० १०	११ ९ ४६ २२	० २ २७ १८	४ १३ १३ २०	१६ ४२	+३ २	१ ३२	७
८	० २३ २३ १	५ १३ ५२ ७	० २४ ३३ १०	११ २७ ५ ३८	१० २७ १ ८	११ १० ५४ १७	० २ ३४ ३५	४ १३ १० १०	१६ ५८	-० ४६	२ ३०	८
९	० २४ २१ २	५ २५ ४० ५९	० २५ १६ ४२	११ २८ १४ ४८	१० २७ १२ १	११ १२ २ १८	० २ ४१ ५१	४ १३ ६ ५९	१७ १५	४ ३२	३ २१	९
१०	० २५ १९ २	६ ७ ३४ ०	० २६ ० ११	११ २९ २६ ३५	१० २७ २२ ४८	११ १३ १० २५	० २ ४९ ५	४ १३ ३ ४८	१७ ३१	८ १०	४ ३	१०
११	० २६ १७ ०	६ १९ ३३ २५	० २६ ४३ ३६	० ० ४० ५३	१० २७ ३३ २९	११ १४ १८ ३७	० २ ५६ १८	४ १३ ० ३७	१७ ४६	११ २९	४ ३५	११
१२	० २७ १४ ५६	७ १ ४० ४५	० २७ २६ ५८	० १ ५७ ३९	१० २७ ४४ ४	११ १५ २६ ५६	० ३ ३ ३०	४ १२ ५७ २६	१८ २	१४ २२	४ ५५	१२
१३	० २८ १२ ५०	७ १३ ५७ ०	० २८ १० १७	० ३ १६ ५०	१० २७ ५४ ३२	११ १६ ३५ २१	० ३ १० ३९	४ १२ ५४ १६	१८ १७	१६ ३९	५ १	१३
१४	० २९ १० ४४	७ २६ २२ ५४	० २८ ५३ ३२	० ४ ३८ २५	१० २८ ४ ५४	११ १७ ४३ ५१	० ३ १७ ४५	४ १२ ५१ ५	१८ ३१	१८ १२	४ ५३	१४
१५	१ ० ८ ३६	८ ८ ५९ १२	० २९ ३६ ४६	० ६ २ १९	१० २८ १५ १०	११ १८ ५२ २७	० ३ २४ ५०	४ १२ ४७ ५४	१८ ४६	१८ ५३	४ ३२	१५
१६	१ १ ६ २७	८ २१ ४६ ५३	१ ० १९ ५६	० ७ २८ ३२	१० २८ २५ १९	११ २० १ १०	० ३ ३१ ५३	४ १२ ४४ ४३	१९ ०	१८ ३७	३ ५६	१६
१७	१ २ ४ १५	९ ४ ४७ १५	१ १ ३ २	० ८ ५७ ०	१० २८ ३५ २०	११ २१ ९ ५७	० ३ ३८ ५४	४ १२ ४१ ३३	१९ १४	१७ २३	३ ७	१७
१८	१ ३ २ ४	९ १८ २ ३	१ १ ४६ ६	० १० २७ ४३	१० २८ ४५ १७	११ २२ १८ ४९	० ३ ४५ ५३	४ १२ ३८ २२	१९ २७	१५ ११	२ ८	१८
१९	१ ३ ५९ ५२	१० १ ३३ १४	१ २ २९ ७	० १२ ० ४०	१० २८ ५५ ६	११ २३ २७ ४७	० ३ ५२ ५०	४ १२ ३५ ११	१९ ४०	१२ ७	+१ ०	१९
२०	१ ४ ५७ ३८	१० १५ २२ ३३	१ ३ १२ ५	० १३ ३५ ५२	१० २९ ४ ४८	११ २४ ३६ ५०	० ३ ५९ ४५	४ १२ ३२ ०	१९ ५३	८ १९	-० १३	२०
२१	१ ५ ५५ २४	१० २९ ३० ५५	१ ३ ५५ ०	१ १५ १३ १५	१० २९ १४ २२	११ २५ ४५ ५८	० ४ ६ ३७	४ १२ २८ ५०	२० ६	-३ ५८	१ २७	२१
२२	१ ६ ५३ ६	११ १३ ५७ ४५	१ ४ ३७ ५२	० १६ ५२ ५२	१० २९ २३ ५०	११ २६ ५५ १०	० ४ १३ २७	४ १२ २५ ३९	२० १८	+० ४२	२ ३६	२२
२३	१ ७ ५० ४९	११ २८ ४० १०	१ ५ २० ४०	० १८ ३४ ४०	१० २९ ३३ १०	११ २८ ४ २७	० ४ २० १५	४ १२ २२ २८	२० ३०	५ २४	३ ३७	२३
२४	१ ८ ४८ ३१	० १३ ३२ ५१	१ ६ ३ २६	० २० १८ ४२	१० २९ ४२ २५	११ २९ १३ ४८	० ४ २७ ०	४ १२ १९ १७	२० ४१	९ ४९	४ २३	२४
२५	१ ९ ४६ ११	० २८ २८ ४	१ ६ ४६ १०	० २२ ४ ५३	१० २९ ५१ २९	० ० २३ १५	० ४ ३३ ४४	४ १२ १६ ६	२० ५२	१३ ३८	४ ५२	२५
२६	१ १० ४३ ५०	१ १३ १६ ५४	१ ७ २८ ४९	० २३ ५३ २०	११ ० ० २७	० १ ३२ ४४	० ४ ४० २३	४ १२ १२ ५६	२१ ३	१६ ३३	५ १	२६
२७	१ ११ ४१ २९	१ २७ ५० ३९	१ ८ ११ २६	० २५ ४३ ५२	११ ० ९ १७	० २ ४२ १७	० ४ ४७ ०	४ १२ ९ ४५	२१ १३	१८ २२	४ ४९	२७
२८	१ १२ ३९ ६	२ १२ २ २१	१ ८ ५३ ५९	० २७ ३६ ३९	११ ० १८ ०	० ३ ५१ ५५	० ४ ५३ ३४	४ १२ ६ ३४	२१ २३	१८ ५८	४ २१	२८
२९	१ १३ ३६ ४१	२ २५ ४७ ४१	१ ९ ३६ २९	० २९ ३१ ३०	११ ० २६ ३४	० ५ १ ३६	० ५ ० ६	४ १२ ३ २३	२१ ३३	१८ २५	३ ३७	२९
३०	१ १४ ३४ १५	३ ९ ५ ४१	१ १० १८ ५७	१ १ २८ ३१	११ ० ३५ १	० ६ ११ २०	० ५ ६ ३५	४ १२ ० १२	२१ ४२	१६ ५१	२ ४३	३०
३१	१ १५ ३२ ४७	३ २२ ५७ ३०	१ ११ १ २१	१ ३ २७ ३०	११ ० ४३ १९	० ७ २२ ८	० ५ १३ ०	४ ११ ५७ १	+२१ ५२	+१४ २८	-१ ४२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ जून को अयनांश २३°/५०'/५")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
जून १	१ १६ २९ २०	४ ४ २६ ३८	१ ११ ४३ ४२	१ ५ २८ ३४	११ ० ५१ २९	० ८ ३१ ०	० ५ १९ २३	४ ११ ५३ ५०	+२२ ०	+११ २९	-० ३८	जून १
२	१ १७ २६ ५०	४ १६ ३७ ४७	१ १२ २५ ५९	१ ७ ३१ २७	११ ० ५९ ३१	० ९ ४० ५५	० ५ २५ ४३	४ ११ ५० ३९	२२ ८	८ ३	+० २६	२
३	१ १८ २४ १८	४ २८ ३६ १२	१ १३ ८ १५	१ ९ ३६ ११	११ १ ७ २५	० १० ५० ५४	० ५ ३१ ५९	४ ११ ४७ २८	२२ १५	४ २२	१ २९	३
४	१ १९ २१ ४६	५ १० २७ २१	१ १३ ५० २६	१ ११ ४२ ३०	११ १ १५ ९	० १२ ० ५६	० ५ ३८ १२	४ ११ ४४ १८	२२ २३	+० ३२	२ २६	४
५	१ २० १९ १३	५ २२ १६ १९	१ १४ ३२ ३४	१ १३ ५० २१	११ १ २२ ४६	० १३ ११ २	० ५ ४४ २३	४ ११ ४१ ७	२२ ३०	-३ १८	३ १८	५
६	१ २१ १६ ३८	६ ४ ७ ४९	१ १५ १४ ३९	१ १५ ५९ २७	११ १ ३० १४	० १४ २१ ११	० ५ ५० ३०	४ ११ ३७ ५६	२२ ३६	७ ०	४ ०	६
७	१ २२ १४ २	६ १६ ५ १८	१ १५ ५६ ४१	१ १८ ९ ४२	११ १ ३७ ३३	० १५ ३१ २३	० ५ ५६ ३३	४ ११ ३४ ४५	२२ ४२	१० २८	४ ३३	७
८	१ २३ ११ २५	६ २८ १२ ५	१ १६ ३८ ४०	१ २० २० ४५	११ १ ४४ ४३	० १६ ४१ ३८	० ६ २ ३३	४ ११ ३१ ३४	२२ ४८	१३ ३३	४ ५३	८
९	१ २४ ८ ४७	७ १० २९ ५९	१ १७ २० ३६	१ २२ ३२ २५	११ १ ५१ ४५	० १७ ५१ ५७	० ६ ८ ३०	४ ११ २८ २३	२२ ५४	१६ ५	५ १	९
१०	१ २५ ६ ९	७ २३ ० ४	१ १८ २ २९	१ २४ ४४ २७	११ १ ५८ ३७	० १९ २ २०	० ६ १४ २३	४ ११ २५ १३	२२ ५९	१७ ५४	४ ५४	१०
११	१ २६ ३ ३०	८ ५ ४२ ३३	१ १८ ४४ २०	१ २६ ५६ ३१	११ २ ५ २१	० २० १२ ४४	० ६ २० १२	४ ११ २२ २	२३ ३	१८ ५३	४ ३३	११
१२	१ २७ ० ४९	८ १८ ३७ ७	१ १९ २६ ७	१ २९ ८ २३	११ २ ११ ५५	० २१ २३ १३	० ६ २५ ५८	४ ११ १८ ५१	२३ ७	१८ ५५	३ ५७	१२
१३	१ २७ ५८ ८	९ १ ४३ १८	१ २० ७ ५१	२ १ ११ ४५	११ २ १८ २०	० २२ ३३ ४५	० ६ ३१ ४०	४ ११ १५ ४०	२३ ११	१७ ५६	३ ९	१३
१४	१ २८ ५५ २५	९ १५ ० ३८	१ २० ४९ ३२	२ ३ ३० २५	११ २ २४ ३५	० २३ ४४ २०	० ६ ३७ १९	४ ११ १२ २९	२३ १४	१५ ५८	२ ९	१४
१५	१ २९ ५२ ४४	९ २८ २९ ०	१ २१ ३१ ११	२ ५ ४० ४	११ २ ३० ४२	० २४ ५४ ५८	० ६ ४२ ५३	४ ११ ९ १८	२३ १७	१३ ६	+१ १	१५
१६	२ ० ५० २	१० १२ ८ ३९	१ २२ १२ ४५	२ ७ ४८ ३२	११ २ ३६ ३८	० २६ ५ ३९	० ६ ४८ २४	४ ११ ६ ७	२३ २०	९ २९	-० ११	१६
१७	२ १ ४७ १९	१० २५ ५९ ५७	१ २२ ५४ १९	२ ९ ५५ ३६	११ २ ४२ २५	० २७ १६ २४	० ६ ५३ ५१	४ ११ २ ५७	२३ २२	५ १९	१ २४	१७
१८	२ २ ४४ ३६	११ १० ३ ६	१ २३ ३५ ४९	२ १२ १ ८	११ २ ४८ २	० २८ २७ १२	० ६ ५९ १५	४ १० ५९ ४६	२३ २४	-० ४७	२ ३२	१८
१९	२ ३ ४१ ५३	११ २४ १७ ३४	१ २४ १७ १६	२ १४ ४ ५४	११ २ ५३ २९	० २९ ३८ ३	० ७ ४ ३३	४ १० ५६ ३५	२३ २५	+३ ५०	३ ३३	१९
२०	२ ४ ३९ १०	० ८ ४१ २७	१ २४ ५८ ४१	२ १६ ६ ५४	११ २ ५८ ४६	१ ० ४८ ५७	० ७ ९ ४७	४ १० ५३ २४	२३ २६	८ १७	४ २०	२०
२१	२ ५ ३६ २६	० २३ ११ २२	१ २५ ४० २	२ १८ ६ ५५	११ ३ ३ ५३	१ १ ५९ ५३	० ७ १४ ५८	४ १० ५० १४	२३ २६	१२ १६	४ ५१	२१
२२	२ ६ ३३ ४२	१ ७ ४२ १४	१ २६ २१ २१	२ २० ४ ५८	११ ३ ८ ५०	१ ३ १० ५३	० ७ २० ४	४ १० ४७ ३	२३ २६	१५ ३१	५ ३	२२
२३	२ ७ ३० ५८	१ २२ ७ ५०	१ २७ २ ३७	२ २२ ० ५४	११ ३ १३ ३६	१ ४ २१ ५५	० ७ २५ ६	४ १० ४३ ५२	२३ २६	१७ ४७	४ ५७	२३
२४	२ ८ २८ १४	२ ६ २१ ४४	१ २७ ४३ ५०	२ २३ ५४ ४६	११ ३ १८ १२	१ ५ ३३ ०	० ७ ३० ४	४ १० ४० ४१	२३ २५	१८ ५५	४ ३१	२४
२५	२ ९ २५ २९	२ २० १८ २०	१ २८ २५ १	२ २५ ४६ २६	११ ३ २२ ३७	१ ६ ४४ ८	० ७ ३४ ५७	४ १० ३७ ३०	२३ २४	१८ ५२	३ ५०	२५
२६	२ १० २२ ४४	३ ३ ५३ ४०	१ २९ ६ ८	२ २७ ३५ ५८	११ ३ २६ ५२	१ ७ ५५ १८	० ७ ३९ ४६	४ १० ३४ २०	२३ २२	१७ ४४	२ ५७	२६
२७	२ ११ १९ ५८	३ १७ ५ ५७	१ २९ ४७ १२	२ २९ २३ १७	११ ३ ३० ५६	१ ९ ६ ३१	० ७ ४४ ३०	४ १० ३१ ९	२३ २०	१५ ३९	१ ५५	२७
२८	२ १२ १७ १२	३ २९ ५५ ३१	२ ० २८ १४	३ १ ८ २५	११ ३ ३४ ५०	१ १० १७ ४५	० ७ ४९ ९	४ १० २७ ५८	२३ १८	१२ ५०	-० ४९	२८
२९	२ १३ १४ २६	४ १२ २४ ३६	२ १ ९ १२	३ २ ५१ १८	११ ३ ३८ ३२	१ ११ २९ ३	० ७ ५३ ४४	४ १० २४ ४७	२३ १५	९ ३०	+० १८	२९
३०	२ १४ ११ ३९	४ २४ ३६ ५२	२ १ ५० ८	३ ४ ३२ ०	११ ३ ४२ ४	१ १२ ४० २४	० ७ ५८ १४	४ १० २१ ३७	+२३ १२	+५ ५०	+१ २३	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ जुलाई को अयनांश २३°/५०′/ १०″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
जुला. १	२ १५ ८ ५२	५ ६ ३६ ५३	२ २ ३१ १	३ ६ १० २७	११ ३ ४५ २४	१ १३ ५१ ४६	० ८ २ ४०	४ १० १८ २७	+२३ ८	+२ ०	+२ २३	जुला. १
२	२ १६ ६ ४	५ १८ २९ ४२	२ ३ ११ ५१	३ ७ ४६ ४१	११ ३ ४८ ३४	१ १५ ३ ११	० ८ ७ ०	४ १० १५ १६	२३ ४	-१ ५२	३ १६	२
३	२ १७ ३ १६	६ ० २० ३१	२ ३ ५२ ३८	३ ९ २० ३९	११ ३ ५१ ३३	१ १६ १४ ३८	० ८ ११ १६	४ १० १२ ५	२२ ५९	५ ३९	४ ०	३
४	२ १८ ० २८	६ १२ १४ १७	२ ४ ३३ २२	३ १० ५२ २४	११ ३ ५४ २०	१ १७ २६ ९	० ८ १५ २७	४ १० ८ ५५	२२ ५५	९ १३	४ ३५	४
५	२ १८ ५७ ३९	६ २४ १५ ३२	२ ५ १४ ४	३ १२ २१ ४९	११ ३ ५६ ५७	१ १८ ३७ ४१	० ८ १९ ३३	४ १० ५ ४४	२२ ४९	१२ २७	४ ५७	५
६	२ १९ ५४ ५०	७ ६ २८ १	२ ५ ५४ ४१	३ १३ ४८ ५९	११ ३ ५९ २२	१ १९ ४९ १६	० ८ २३ ३४	४ १० २ ३३	२२ ४४	१५ १२	५ ७	६
७	२ २० ५२ १	७ १८ ५४ ३५	२ ६ ३५ १७	३ १५ १३ ४९	११ ४ १ ३६	१ २१ ० ५३	० ८ २७ २९	४ ९ ५९ २२	२२ ३८	१७ १९	५ ३	७
८	२ २१ ४९ १२	८ १ ३६ ५६	२ ७ १५ ५०	३ १६ ३६ १९	११ ४ ३ ३८	१ २२ १२ ३४	० ८ ३१ २०	४ ९ ५६ १२	२२ ३१	१८ ३९	४ ४३	८
९	२ २२ ४६ २३	८ १४ ३५ ३५	२ ७ ५६ २०	३ १७ ५६ २५	११ ४ ५ ३०	१ २३·२४ १६	० ८ ३५ ६	४ ९ ५३ १	२२ २४	१९ २	४ ९	९
१०	२ २३ ४३ ३४	८ २७ ४९ ५८	२ ८ ३६ ४७	३ १९ १४ ६	११ ४ ७ ९	१ २४ ३६ १	० ८ ३८ ४६	४ ९ ४९ ५०	२२ १७	१८ २३	३ २१	१०
११	२ २४ ४० ४५	९ ११ १८ ३६	२ ९ १७ १२	३ २० २९ १८	११ ४ ८ ३८	१ २५ ४७ ५०	० ८ ४२ २१	४ ९ ४६ ३९	२२ ९	१६ ४३	२ २०	११
१२	२ २५ ३७ ५६	९ २४ ५९ २७	२ ९ ५७ ३४	३ २१ ४१ ५९	११ ४ ९ ५४	१ २६ ५९ ४१	० ८ ४५ ५१	४ ९ ४३ २८	२२ १	१४ ३	+१ ११	१२
१३	२ २६ ३५ ८	१० ८ ५० १६	२ १० ३७ ५३	३ २२ ५२ ३	११ ४ ११ ०	१ २८ ११ ३४	० ८ ४९ १६	४ ९ ४० १८	२१ ५३	१० ३५	-० ३	१३
१४	२ २७ ३२ २०	१० २२ ४८ ५६	२ ११ १८ १०	३ २३ ५९ २८	११ ४ ११ ५३	१ २९ २३ ३०	० ८ ५२ ३५	४ ९ ३७ ७	२१ ४४	६ २९	१ १९	१४
१५	२ २८ २९ ३३	११ ६ ५३ ३४	२ ११ ५८ २५	३ २५ ४ ७	११ ४ १२ ३५	२ ० ३५ २९	० ८ ५५ ४९	४ ९ ३३ ५६	२१ ३५	-२ ०	२ ३०	१५
१६	२ २९ २६ ४७	११ २१ २ ३०	२ १२ ३८ ३६	३ २६ ५ ५७	११ ४ १३ ५	२ १ ४७ ३१	० ८ ५८ ५८	४ ९ ३० ४६	२१ २६	+२ ३७	३ ३२	१६
१७	३ ० २४ ०	० ५ १४ ५	२ १३ १८ ४६	३ २७ ४ ५०	११ ४ १३ २४	२ २ ५९ ३६	० ९ २ ०	४ ९ २७ ३५	२१ १६	७ ४	४ २१	१७
१८	३ १ २१ १५	० १९ २६ २८	२ १३ ५८ ५३	३ २८ ० ४१	११ ४ १३ ३१	२ ४ ११ ४३	० ९ ४ ५८	४ ९ २४ २४	२१ ६	११ ८	४ ५५	१८
१९	३ २ १८ ३१	१ ३ ३७ १५	२ १४ ३८ ५७	३ २८ ५३ २२	११ ४ १३ २५	२ ५ २३ ५३	० ९ ७ ४९	४ ९ २१ १३	२० ५५	१४ ३३	५ १०	१९
२०	३ ३ १५ ४७	१ १७ ४३ ३४	२ १५ १८ ५९	३ २९ ४२ ४६	११ ४ १३ ८	२ ६ ३६ ५	० ९ १० ३५	४ ९ १८ ३	२० ४४	१७ ६	५ ७	२०
२१	३ ४ १३ ३	२ १ ४२ ५	२ १५ ५८ ५८	४ ० २८ ४५	११ ४ १२ ४०	२ ७ ४८ २०	० ९ १३ १६	४ ९ १४ ५२	२० ३३	१८ ३७	४ ४५	२१
२२	३ ५ १० २१	२ १५ २९ २१	२ १६ ३८ ५४	४ १ ११ १०	११ ४ ११ ५९	२ ९ ० ३८	० ९ १५ ५०	४ ९ ११ ४१	२० २१	१९ ०	४ ७	२२
२३	३ ६ ७ ३९	२ २९ २ १५	२ १७ १८ ४८	४ १ ४९ ५२	११ ४ ११ ६	२ १० १२ ५८	० ९ १८ १९	४ ९ ८ ३०	२० ९	१८ १७	३ १६	२३
२४	३ ७ ४ ५८	३ १२ १८ २९	२ १७ ५८ ४०	४ २ २४ ४२	११ ४ १० २	२ ११ २५ २१	० ९ २० ४२	४ ९ ५ १९	१९ ५७	१६ ३३	२ १५	२४
२५	३ ८ २ १७	३ २५ १६ ४९	२ १८ ३८ २९	४ २ ५५ २९	११ ४ ८ ४६	२ १२ ३७ ४६	० ९ २२ ५९	४ ९ २ ८	१९ ४४	१४ १	-१ ८	२५
२६	३ ८ ५९ ३७	४ ७ ५७ २१	२ १९ १८ १५	४ ३ २२ ३	११ ४ ७ १८	२ १३ ५० १४	० ९ २५ १०	४ ८ ५८ ५८	१९ ३२	१० ५१	+० १	२६
२७	३ ९ ५६ ५८	४ २० २१ २५	२ १९ ५७ ५८	४ ३ ४४ १५	११ ४ ५ ३८	२ १५ २ ४४	० ९ २७ १५	४ ८ ५५ ४७	१९ १८	७ १७	१ ९	२७
२८	३ १० ५४ १९	५ २ ३१ ३१	२ २० ३७ ३९	४ ४ १ ५३	११ ४ ३ ४७	२ १६ १५ १६	० ९ २९ १४	४ ८ ५२ ३६	१९ ५	+३ २८	२ १२	२८
२९	३ ११ ५१ ४०	५ १४ ३१ ६	२ २१ १७ १७	४ ४ १४ ४८	११ ४ १ ४४	२ १७ २७ ५१	० ९ ३१ ७	४ ८ ४९ २५	१८ ५१	-० २६	३ ८	२९
३०	३ १२ ४९ २	५ २६ २४ १८	२ २१ ५६ ५३	४ ४ २२ ५२	११ ३ ५९ २९	२ १८ ४० २७	० ९ ३२ ५४	४ ८ ४६ १४	१८ ३७	४ १६	३ ५६	३०
३१	३ १३ ४६ २४	६ ८ १५ ४२	२ २२ ३६ २६	४ ४ २५ ५५	११ ३ ५७ ३	२ १९ ५३ ७	० ९ ३४ ३५	४ ८ ४३ ४	+१८ २२	-७ ५५	+४ ३४	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१अगस्त को अयनांश २३°/५०′/ १४″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं.. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
अग. १	३ १४ ४३ ४७	६ २० १० ९	२ २३ १५ ५६	४ ४ २३ ५३	११ ३ ५४ २६	२ २१ ५ ४९	० ९ ३६ १०	४ ८ ३९ ५३	+१८ ७	-११ १६	+५ ०	अग. १
२	३ १५ ४१ ११	७ २ १२ २१	२ २३ ५५ २४	४ ४ १६ ४०	११ ३ ५१ ३७	२ २२ १८ ३४	० ९ ३७ ३८	४ ८ ३६ ४२	१७ ५२	१४ ११	५ १३	२
३	३ १६ ३८ ३५	७ १४ २६ ४२	२ २४ ३४ ४९	४ ४ ४ १६	११ ३ ४८ ३७	२ २३ ३१ १९	० ९ ३९ १	४ ८ ३३ ३२	१७ ३७	१६ ३२	५ १३	३
४	३ १७ ३६ ०	७ २६ ५७ २	२ २५ १४ ११	४ ३ ४६ ३९	११ ३ ४५ २६	२ २४ ४४ ८	० ९ ४० १८	४ ८ ३० २१	१७ २१	१८ १०	४ ५८	४
५	३ १८ ३३ २६	८ ९ ४६ १०	२ २५ ५३ ३१	४ ३ २३ ५९	११ ३ ४२ ५	२ २५ ५६ ५९	० ९ ४१ २८	४ ८ २७ १०	१७ ५	१८ ५६	४ २७	५
६	३ १९ ३० ५२	८ २२ ५५ ४२	२ २६ ३२ ५०	४ २ ५६ २२	११ ३ ३८ ३१	२ २७ ९ ५२	० ९ ४२ ३२	४ ८ २३ ५९	१६ ४९	१८ ४३	३ ४२	६
७	३ २० २८ १९	९ ६ २५ ४६	२ २७ १२ ४	४ २ २४ ७	११ ३ ३४ ४८	२ २८ २२ ४९	० ९ ४३ ३०	४ ८ २० ४८	१६ ३२	१७ २५	२ ४४	७
८	३ २१ २५ ४८	९ २० १४ ५५	२ २७ ५१ १६	४ १ ४७ ३२	११ ३ ३० ५३	२ २९ ३५ ४८	० ९ ४४ २२	४ ८ १७ ३८	१६ १५	१५ ५	१ ३५	८
९	३ २२ २३ १७	१० ४ २० १४	२ २८ ३० २७	४ १ ७ ७	११ ३ २६ ४८	३ ० ४८ ५०	० ९ ४५ ८	४ ८ १४ २७	१५ ५८	११ ४९	+० १८	९
१०	३ २३ २० ४७	१० १८ ३७ ३८	२ २९ ९ ३४	४ ० २३ २४	११ ३ २२ ३२	३ २ १ ५३	० ९ ४५ ४७	४ ८ ११ १६	१५ ४१	७ ४९	-१ १	१०
११	३ २४ १८ १९	११ ३ २ २५	२ २९ ४८ ४०	३ २९ ३७ ३	११ ३ १८ ७	३ ३ १५ ०	० ९ ४६ २०	४ ८ ८ ५	१५ २४	-३ १९	२ १६	११
१२	३ २५ १५ ५२	११ १७ २९ ४४	३ ० २७ ४३	३ २८ ४८ ४९	११ ३ १३ ३१	३ ४ २८ ९	० ९ ४६ ४७	४ ८ ४ ५४	१५ ६	+१ २२	३ २३	१२
१३	३ २६ १३ २६	० १ ५५ ७	३ १ ६ ४४	३ २७ ५९ ३५	११ ३ ८ ४५	३ ५ ४१ २१	० ९ ४७ ८	४ ८ १ ४४	१४ ४८	५ ५७	४ १७	१३
१४	३ २७ ११ २	० १६ १४ ५०	३ १ ४५ ४२	३ २७ १० १२	११ ३ ३ ४९	३ ६ ५४ ३५	० ९ ४७ २२	४ ७ ५८ ३३	१४ २९	१० १०	४ ५५	१४
१५	३ २८ ८ ३९	१ ० २५ ५८	३ २ २४ ३८	३ २६ २१ ४०	११ २ ५८ ४३	३ ८ ७ ५२	० ९ ४७ ३०	४ ७ ५५ २२	१४ ११	१३ ४५	५ १४	१५
१६	३ २९ ६ १८	१ १४ २६ २४	३ ३ ३ ३२	३ २५ ३४ ५४	११ २ ५३ २७	३ ९ २१ १२	० ९ ४७ ३२	४ ७ ५२ १२	१३ ५२	१६ ३०	५ १५	१६
१७	४ ० ३ ५९	१ २८ १४ ४४	३ ३ ४२ २४	३ २४ ५० ५४	११ २ ४८ ३	३ १० ३४ ३५	० ९ ४७ २७	४ ७ ४९ १	१३ ३३	१८ १६	४ ५७	१७
१८	४ १ १ ४१	२ ११ ५० ०	३ ४ २१ १४	३ २४ १० ३२	११ २ ४२ २८	३ ११ ४७ ५८	० ९ ४७ १६	८ ७ ४५ ५०	१३ १४	१८ ५७	४ २२	१८
१९	४ १ ५९ २५	२ २५ ११ ३८	३ ५ ० ०	३ २३ ३४ ४३	११ २ ३६ ४५	३ १३ १ २५	० ९ ४६ ५९	४ ७ ४२ ३९	१२ ५५	१८ ३३	३ ३४	१९
२०	४ २ ५७ ९	३ ८ १९ १९	३ ५ ३८ ४५	३ २३ ४ ११	११ २ ३० ५४	३ १४ १४ ५५	० ९ ४६ ३५	४ ७ ३९ २८	१२ ३५	१७ ०९	२ ३५	२०
२१	४ ३ ५४ ५६	३ २१ १२ ५७	३ ६ १७ २७	३ २२ ३९ ४२	११ २ २४ ५३	३ १५ २८ २७	० ९ ४६ ५	४ ७ ३६ १८	१२ १५	१४ ५३	१ ३०	२१
२२	४ ४ ५२ ४४	४ ३ ५२ ५०	३ ६ ५६ ६	३ २२ २१ ४६	११ २ १८ ४४	३ १६ ४२ १	० ९ ४५ २९	४ ७ ३३ ७	११ ५५	११ ५६	-० २१	२२
२३	४ ५ ५० ३३	४ १६ १९ ३७	३ ७ ३४ ४४	३ २२ १० ५७	११ २ १२ २७	३ १७ ५५ ३७	० ९ ४४ ४७	४ ७ २९ ५६	११ ३५	८ ३०	+० ४८	२३
२४	४ ६ ४८ २४	४ २८ ३४ २८	३ ८ १३ १८	३ २२ ७ ३३	११ २ ६ २	३ १९ ९ १६	० ९ ४३ ५८	४ ७ २३ ३४	१० ५४	४ ४५	१ ५४	२४
२५	४ ७ ४६ १६	५ १० ३९ ७	३ ८ ५१ ५१	३ २२ ११ ५५	११ १ ५९ ३०	३ २० २२ ५०	० ९ ४३ ३	४ ७ २६ ४५	११ १५	+० ५२	२ ५३	२५
२६	४ ८ ४४ ९	५ २२ ३५ ५९	३ ९ ३० २१	३ २२ २४ ११	११ १ ५२ ५१	३ २१ ३६ ४०	० ९ ४२ २	४ ७ २० २४	१० ३३	-३ ०	३ ४५	२६
२७	४ ९ ४२ ४	६ ४ २८ ०	३ १० ८ ४८	३ २२ ४४ २५	११ १ ४६ ४	३ २२ ५० २५	० ९ ४० ५५	४ ७ १७ १३	१० १३	६ ४२	४ २६	२७
२८	४ १० ४० १	६ १६ १८ ४७	३ १० ४७ १३	३ २३ १२ ४०	११ १ ३९ ११	३ २४ ४ १३	० ९ ३९ ४१	४ ७ १४ २	९ ५२	१० ११	४ ५६	२८
२९	४ ११ ३७ ५८	६ २८ १२ २०	३ ११ २५ ३५	३ २३ ४८ ४७	११ १ ३२ ११	३ २५ १८ २	० ९ ३८ २१	४ ७ १० ५१	९ ३०	१३ १४	५ १३	२९
३०	४ १२ ३५ ५७	७ १० १३ ३	३ १२ ३ ५५	३ २४ ३२ ४२	११ १ २५ ६	३ २६ ३१ ५३	० ९ ३६ ५६	४ ७ ७ ४०	९ ९	१५ ४६	५ १७	३०
३१	४ १३ ३३ ५७	७ २२ २५ २८	३ १२ ४२ १२	३ २५ २४ ४	११ १ १७ ५४	३ २७ ४५ ४६	० ९ ३५ २५	४ ७ ४ ३०	+८ ४८	-१७ ३९	+५ ७	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं.३० मि.भा.स्टै.टा.) (१ सितंम्बर को अयनांश २३°/५०'/१८'')

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
सितं. १	४ १४ ३१ ५८	८ ४ ५३ ५९	३ १३ २० २७	३ २६ २२ ४५	११ १ १० ३८	३ २८ ५९ ४२	० ९ ३३ ४४	४ ७ १ २०	+८ २६	-१८ ४४	+४ ४२	सितं.१
२	४ १५ ३० १	८ १७ ४२ ३४	३ १३ ५८ ४०	३ २७ २८ १४	११ १ ३ १५	४ ० १३ ४०	० ९ ३२ २	४ ६ ५८ ९	८ ४	१८ ५४	४ ३	२
३	४ १६ २८ ५	९ ० ५४ १४	३ १४ ३६ ५०	३ २८ ४० २०	११ ० ५५ ४९	४ १ २७ ३९	० ९ ३० १४	४ ६ ५४ ५८	७ ४२	१८ ४	३ १०	३
४	४ १७ २६ ११	९ १४ ३० ४०	३ १५ १४ ५९	३ २९ ५८ २४	११ ० ४८ १८	४ २ ४१ ४०	० ९ २८ १७	४ ६ ५१ ४७	७ २०	१६ १०	२ ५	४
५	४ १८ २४ १८	९ २८ ३१ ३७	३ १५ ५३ ३	४ १ २२ ८	११ ० ४० ४२	४ ३ ५५ ४३	० ९ २६ १६	४ ६ ४८ ३६	६ ५८	१३ १६	+० ५०	५
६	४ १९ २२ २७	१० १२ ५४ ३७	३ १६ ३१ ६	४ २ ५० ५०	११ ० ३३ ३	४ ५ ९ ४९	० ९ २४ १०	४ ६ ४५ २५	६ ३६	९ २९	-० २९	६
७	४ २० २० ३७	१० २७ ३४ ५७	३ १७ ९ ५	४ ४ २४ १५	११ ० २५ २०	४ ६ २३ ५५	० ९ २१ ५७	४ ६ ४२ १५	६ १४	५ ४	१ ४८	७
८	४ २१ १८ ५०	११ १२ २५ ५३	३ १७ ४७ ४	४ ६ १ ३६	११ ० १७ ३४	४ ७ ३८ ५	० ९ १९ ३८	४ ६ ३९ ५	५ ५१	-० १७	३ १	८
९	४ २२ १७ ४	११ २७ १९ ३८	३ १८ २५ ०	४ ७ ४२ ३३	११ ० ९ ४५	४ ८ ५२ १७	० ९ १७ १५	४ ६ ३५ ५४	५ २९	+४ ३१	४ १	९
१०	४ २३ १५ २०	० १२ ८ २३	३ १९ २ ५४	४ ९ २६ २६	११ ० १ ५३	४ १० ६ ३१	० ९ १४ ४५	४ ६ ३२ ४३	५ ६	९ १	४ ४५	१०
११	४ २४ १३ ३८	० २६ ४५ २३	३ १९ ४० ४५	४ ११ १२ ५२	१० २९ ५३ ५९	४ ११ २० ४६	० ९ १२ १०	४ ६ २९ ३२	४ ४३	१२ ५४	५ १०	११
१२	४ २५ ११ ५८	१ ११ ५ ४४	३ २० १८ ३५	४ १३ १ १८	१० २९ ४६ ३	४ १२ ३५ ४	० ९ ९ ३०	४ ६ २६ २१	४ २०	१३ ५७	५ १५	१२
१३	४ २६ १० २१	१ २५ ६ ३७	३ २० ५६ २२	४ १४ ५१ २२	१० २९ ३८ ५	४ १३ ४९ २५	० ९ ६ ४४	४ ६ २३ ११	३ ५७	१७ ५९	५ १	१३
१४	४ २७ ८ ४५	२ ८ ४७ १२	३ २१ ३४ ७	४ १६ ४२ ३८	१० २९ ३० ७	४ १५ ३ ४६	० ९ ३ ५३	४ ६ २० ०	३ ३४	१८ ५५	४ ३०	१४
१५	४ २८ ७ १२	२ २२ ८ ११	३ २२ ११ ४९	४ १८ ३४ ४५	१० २९ २२ ८	४ १६ १८ ९	० ९ ० ५७	४ ६ १६ ४९	३ ११	१८ ४५	३ ४५	१५
१६	४ २९ ५ ४१	३ ५ ११ १५	३ २२ ४९ २९	४ २० २७ २७	१० २९ १४ ९	४ १७ ३२ ३५	० ८ ५७ ५६	४ ६ १३ ३८	२ ४८	१७ ३५	२ ४९	१६
१७	५ ० ४ १३	३ १७ ५८ २९	३ २३ २७ ६	४ २२ २० २४	१० २९ ६ ८	४ १८ ४७ २	० ८ ५४ ५०	४ ६ १० २८	२ २५	१५ ३३	१ ४६	१७
१८	५ १ २ ४६	४ ० ३२ ५	३ २४ ४ ४१	४ २४ १३ २५	१० २८ ५८ ९	४ २० १ ३२	० ८ ५१ ३८	४ ६ ७ १७	२ २	१२ ४७	-० ३९	१८
१९	५ २ १ २१	४ १२ ५४ ८	३ २४ ४२ १४	४ २६ ६ १४	१० २८ ५० १०	४ २१ १६ ३	० ८ ४८ २२	४ ६ ४ ६	१ ३९	९ २९	+० २९	१९
२०	५ २ ५९ ५७	४ २५ ६ ३०	३ २५ १९ ४४	४ २७ ५८ ४५	१० २८ ४२ १२	४ २२ ३० ३५	० ८ ४५ १	४ ६ ० ५५	१ १५	५ ५०	१ ३५	२०
२१	५ ३ ५८ ३६	५ ७ १० ५४	३ २५ ५७ १२	४ २९ ५० ४७	१० २८ ३४ १५	४ २३ ४५ ९	० ८ ४१ ३६	४ ५ ५७ ४५	० ५२	+१ ५८	२ ३५	२१
२२	५ ४ ५७ १७	५ १९ ८ ५३	३ २६ ३४ ३७	५ १ ४२ १५	१० २८ २६ २०	४ २४ ५९ ४५	० ८ ३८ ७	४ ५ ५४ ३४	० २९	-१ ५६	३ २८	२२
२३	५ ५ ५५ ५९	६ १ २ १६	३ २७ १२ ०	५ ३ ३३ ३	१० २८ १८ २८	४ २६ १४ २३	० ८ ३४ ३१	४ ५ ५१ २३	+० ६	५ ४३	४ १२	२३
२४	५ ६ ५४ ४४	६ १२ ५३ १	३ २७ ४९ २०	५ ५ २३ ८	१० २८ १० ३८	४ २७ २९ १	० ८ ३० ५३	४ ५ ४८ १२	-० १८	९ १७	४ ४४	२४
२५	५ ७ ५३ ३१	६ २४ ४३ ३३	३ २८ २६ ३७	५ ७ १२ २३	१० २८ २ ५१	४ २८ ४३ ४१	० ८ २७ ९	४ ५ ४५ १	० ४१	१२ २८	५ ५	२५
२६	५ ८ ५२ १९	७ ६ ३६ ४८	३ २९ ३ ५२	५ ९ ० ५०	१० २७ ५५ ७	४ २९ ५८ २३	० ८ २३ २१	४ ५ ४१ ५१	१ ५	१५ ९	५ १२	२६
२७	५ ९ ५१ ९	७ १८ ३६ १२	३ २९ ४१ ४	५ १० ४८ २४	१० २७ ४७ २७	५ १ १३ ५	० ८ १९ ३०	४ ५ ३८ ४०	१ २८	१७ १४	५ ६	२७
२८	५ १० ५० १	८ ० ४५ ४६	४ ० १८ १४	५ १२ ३५ ६	१० २७ ३९ ५१	५ २ २७ ४९	० ८ १५ ३५	४ ५ ३५ ३०	१ ५१	१८ ३४	४ ४६	२८
२९	५ ११ ४८ ५५	८ १३ ९ ४८	४ ० ५५ २०	५ १४ २० ५५	१० २७ ३२ २०	५ ३ ४२ ३५	० ८ ११ ३६	४ ५ ३२ १९	२ १५	१९ ३	४ १२	२९
३०	५ १२ ४७ ५०	८ २५ ५२ ४४	४ १ ३२ २४	५ १६ ५ ४९	१० २७ २४ ५२	५ ४ ५७ २१	० ८ ७ ३५	४ ५ २९ ९	-२ ३८	-१८ ३६	+३ २६	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं.३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ अक्तूबर को अयनांश २३°/५०′/२२″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां	चंद्र क्रां	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ ई.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ ई.
अक्तू. १	५ १३ ४६ ४७	९ ८ ५८ ४०	४ २ ९ २६	५ १७ ४९ ५०	१० २७ १७ ३१	५ ६ १२ ८	० ८ ३ २८	४ ५ २५ ५८	-३ १	-१७ ८	+२ २७	अक्तू. १
२	५ १४ ४५ ४६	९ २२ ३० ५३	४ २ ४६ २५	५ १९ ३२ ५९	१० २७ १० १४	५ ७ २६ ५७	० ७ ५९ १८	४ ५ २२ ४७	३ २५	१४ ४१	१ १९	२
३	५ १५ ४४ ४६	१० ६ ३१ २	४ ३ २३ २०	५ २१ १५ १५	१० २७ ३ ५	५ ८ ४१ ४८	० ७ ५५ ६	४ ५ १९ ३७	३ ४८	११ १८	+० ३	३
४	५ १६ ४३ ४९	१० २० ५८ २१	४ ४ ० १४	५ २२ ५६ ४०	१० २६ ५५ ५९	५ ९ ५६ ३८	० ७ ५० ५०	४ ५ १६ २६	४ ११	७ ८	-१ १५	४
५	५ १७ ४२ ५३	११ ५ ४९ ८	४ ४ ३७ ५	५ २४ ३७ १२	१० २६ ४९ ०	५ ११ ११ ३०	० ७ ४६ ३१	४ ५ १३ १५	४ ३४	-२ २५	२ २९	५
६	५ १८ ४१ ५९	११ २० ५६ २८	४ ५ १३ ५५	५ २६ १६ ५६	१० २६ ४२ ८	५ १२ २६ २३	० ७ ४२ १०	४ ५ १० ४	४ ५७	+२ ३१	३ ३५	६
७	५ १९ ४१ ८	० ६ १० ५४	४ ५ ५० ४०	५ २७ ५५ ५०	१० २६ ३५ २२	५ १३ ४१ १६	० ७ ३७ ४६	४ ५ ६ ५४	५ २०	७ २०	४ २६	७
८	५ २० ४० १८	० २१ २१ ५०	४ ६ २७ २३	५ २९ ३३ ५८	१० २६ २८ ४४	५ १४ ५६ ११	० ७ ३३ २०	४ ५ ३ ४३	५ ४३	११ ३९	४ ५८	८
९	५ २१ ३९ ३०	१ ६ १९ १९	४ ७ ४ ४	६ १ ११ १९	१० २६ २२ १२	५ १६ ११ ९	० ७ २८ ५०	४ ५ ० ३२	६ ६	१५ ९	५ ९	९
१०	५ २२ ३८ ४५	१ २० ५५ ३८	४ ७ ४० ४२	६ २ ४७ ५४	१० २६ १५ ५०	५ १७ २६ ७	० ७ २४ १८	४ ४ ५७ २१	६ २९	१७ ३७	४ ५९	१०
११	५ २३ ३८ ३	२ ५ ६ १५	४ ८ १७ १७	६ ४ २३ ४५	१० २६ ९ ३५	५ १८ ४१ ६	० ७ १९ ४४	४ ४ ५४ ११	६ ५२	१८ ५५	४ ३१	११
१२	५ २४ ३७ २२	२ १८ ४९ ४८	४ ८ ५३ ५०	६ ५ ५८ ५२	१० २६ ३ २७	५ १९ ५६ ७	० ७ १५ ८	४ ४ ५१ ०	७ १४	१९ २	३ ४९	१२
१३	५ २५ ३६ ४४	३ २ ७ २८	४ ९ ३० २०	६ ७ ३३ १५	१० २५ ५७ २९	५ २१ ११ ८	० ७ १० ३१	४ ४ ४७ ४९	७ ३७	१८ ६	२ ५५	१३
१४	५ २६ ३६ ८	३ १५ २ १३	४ १० ६ ४८	६ ९ ६ ५९	१० २५ ५१ ३८	५ २२ २६ ९	० ७ ५ ५२	४ ४ ४४ ३८	७ ५९	१६ १३	१ ५३	१४
१५	५ २७ ३५ ३५	३ २७ ३७ ४८	४ १० ४३ १२	६ १० ४० १	१० २५ ४५ ५६	५ २३ ४१ १२	० ७ १ ११	४ ४ ४१ २८	८ २१	१३ ३५	-० ४८	१५
१६	५ २८ ३५ ४	४ ९ ५८ १६	४ ११ १९ ३५	६ १२ १२ २४	१० २५ ४० २५	५ २४ ५६ १५	० ६ ५६ २७	४ ४ ३८ १७	८ ४४	१० २४	+० १८	१६
१७	५ २९ ३४ ३५	४ २२ ७ २६	४ ११ ५५ ५३	६ १३ ४४ ५	१० २५ ३५ ३	५ २६ ११ २२	० ६ ५१ ४५	४ ४ ३५ ६	९ ६	६ ४९	१ २३	१७
१८	६ ० ३४ ८	५ ४ ८ ३५	४ १२ ३२ १०	६ १५ १५ ७	१० २५ २९ ५२	५ २७ २६ २७	० ६ ४६ ५९	४ ४ ३१ ५५	९ २८	+२ ५९	२ २३	१८
१९	६ १ ३३ ४३	५ १६ ४ २४	४ १३ ८ २२	६ १६ ४५ ३१	१० २५ २४ ४७	५ २८ ४१ ३४	० ६ ४२ १२	४ ४ २८ ४५	९ ४९	-० ५६	३ १५	१९
२०	६ २ ३३ २१	५ २७ ५७ ४	४ १३ ४४ ३२	६ १८ १५ १५	१० २५ १९ ५५	५ २९ ५६ ४२	० ६ ३७ २७	४ ४ २५ ३४	१० ११	४ ४७	३ ५९	२०
२१	६ ३ ३३ ०	६ ९ ४८ १७	४ १४ २० ३९	६ १९ ४४ २०	१० २५ १५ ११	६ १ ११ ५०	० ६ ३२ ३९	४ ४ २२ २३	१० ३३	८ २७	४ ३३	२१
२२	६ ४ ३२ ४२	६ २१ ३९ ३४	४ १४ ५६ ४२	६ २१ १२ ४५	१० २५ १० ३९	६ २ २६ ५९	० ६ २७ ५२	४ ४ १९ १२	१० ५४	११ ४७	४ ५४	२२
२३	६ ५ ३२ २५	७ ३ ३२ २५	४ १५ ३२ ४३	६ २२ ४० ३१	१० २५ ६ १८	६ ३ ४२ ९	० ६ २३ ४	४ ४ १६ १	११ १५	१४ ३९	५ ३	२३
२४	६ ६ ३२ १०	७ १५ २८ ४१	४ १६ ८ ४१	६ २४ ७ ३६	१० २५ २ ७	६ ४ ५७ १९	० ६ १८ १६	४ ४ १२ ५१	११ ३६	१६ ५३	४ ५९	२४
२५	६ ७ ३१ ५७	७ २७ ३० ३३	४ १६ ४४ ३५	६ २५ ३३ ५९	१० २४ ५८ ८	६ ६ १२ ३०	० ६ १३ २८	४ ४ ९ ४०	११ ५७	१८ २९	४ ४१	२५
२६	६ ८ ३१ ४६	८ ९ ४० ५५	४ १७ २० २६	६ २६ ५९ ४०	१० २४ ५४ १९	६ ७ २७ ४०	० ६ ८ ४०	४ ४ ६ २९	१२ १८	१९ १३	४ ११	२६
२७	६ ९ ३१ ३६	८ २२ ३ १२	४ १७ ५६ १३	६ २८ २४ ३४	१० २४ ५० ४२	६ ८ ४२ ५३	० ६ ३ ५३	४ ४ ३ १९	१२ ३८	१९ ३	३ २८	२७
२८	६ १० ३१ २८	९ ४ ४१ २५	४ १८ ३१ ५७	६ २९ ४८ ४२	१० २४ ४७ १६	६ ९ ५८ ५	० ५ ५९ ६	४ ४ ० ८	१२ ५८	१७ ५६	२ ३४	२८
२९	६ ११ ३१ २२	९ १७ ३९ ४८	४ १९ ७ ३८	७ १ १२ १	१० २४ ४४ २	६ ११ १३ १७	० ५ ५४ २०	४ ३ ५६ ५७	१३ १८	१५ ५२	१ ३१	२९
३०	६ १२ ३१ १८	१० १ २ १८	४ १९ ४३ १५	७ २ ३४ २७	१० २४ ४१ ०	६ १२ २८ ३०	० ५ ४९ ३४	४ ३ ५३ ४७	१३ ३८	१२ ५३	+० २२	३०
३१	६ १३ ३१ १५	१० १४ ५१ ५९	४ २० १८ ४८	७ ३ ५५ ५७	१० २४ ३८ ९	६ १३ ४३ ४२	० ५ ४४ ५०	४ ३ ५० ३६	-१३ ५८	-९ ६	-० ५२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ नबम्वर ९८ को अयनांश २३°/५०′/ २६″)

तारीख	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु				सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चन्द्रशर		तारीख
१९९८ ई.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९९८ ई.
नव. १	६	१४	३१	१३	१०	२९	१०	२	४	२०	५४	१९	७	५	१६	२७	१०	२४	३५	३०	६	१४	५८	५६	०	५	४०	७	४	३	४७	२६	-१४	१७	-४	४१	-२	४	नवं.१
२	६	१५	३१	१४	११	१३	५४	४८	४	२१	२९	४६	७	६	३५	५२	१०	२४	३३	३	६	१६	१४	१०	०	५	३५	२५	४	३	४४	१५	१४	३७	+०	१०	३	१०	२
३	६	१६	३१	१६	११	२९	१	६	४	२२	५	१०	७	७	५४	६	१०	२४	३०	४८	६	१७	२९	२५	०	५	३०	४५	४	३	४१	४	१४	५६	५	६	४	५	३
४	६	१७	३१	२०	०	१४	२०	१५	४	२२	४०	३०	७	९	११	३	१०	२४	२८	४५	६	१८	४४	३९	०	५	२६	७	४	३	३७	५४	१५	१४	९	४६	४	४३	४
५	६	१८	३१	२५	०	२९	४१	४	४	२३	१५	४६	७	१०	२६	३४	१०	२४	२६	५४	६	१९	५९	५३	०	५	२१	३०	४	३	३४	४३	१५	३३	१३	४८	५	०	५
६	६	१९	३१	३३	१	१४	५१	४५	४	२३	५१	०	७	११	४०	३२	१०	२४	२५	१५	६	२१	१५	९	०	५	१६	५५	४	३	३१	३२	१५	५१	१६	५२	४	५६	६
७	६	२०	३१	४२	१	२९	४२	१५	४	२४	२६	१०	७	१२	५२	४५	१०	२४	९३	४८	६	२२	३०	२५	०	५	१२	२२	४	३	२८	२१	१६	९	१८	४५	४	३२	७
८	६	२१	३१	५४	२	१४	५	३८	४	२५	१	१७	७	१४	३	३	१०	२४	२२	३५	६	२३	४५	४०	०	५	७	५१	४	३	२५	११	१६	२७	१९	२१	३	५२	८
९	६	२२	३२	७	२	२७	५८	४८	४	२५	३६	२०	७	१५	११	११	१०	२४	२१	३१	६	२५	०	५७	०	५	३	२४	४	३	२२	०	१६	४४	१८	४४	२	५८	९
१०	६	२३	३२	२२	३	११	२२	८	४	२६	११	१८	७	१६	१६	५४	१०	२४	२०	४१	६	२६	१६	१४	०	४	५८	५८	४	३	१८	४९	१७	१	१७	५	१	५७	१०
११	६	२४	३२	४०	३	२४	१८	२८	४	२६	४६	१४	७	१७	१९	५५	१०	२४	२०	४	६	२७	३१	३१	०	४	५४	३५	४	३	१५	३८	१७	१८	१४	३५	-०	५१	११
१२	६	२५	३२	५९	४	६	५२	१०	४	२७	२१	५	७	१८	१९	५३	१०	२४	१९	३८	६	२८	४६	४९	०	४	५०	१५	४	३	१२	२८	१७	३४	११	२८	+०	१५	१२
१३	६	२६	३३	२१	४	१९	८	१३	४	२७	५५	५३	७	१९	१६	२६	१०	२४	१९	२५	७	०	२	७	०	४	४५	५८	४	३	९	१७	१७	५१	७	५५	१	१९	१३
१४	६	२७	३३	४४	५	१	११	३७	४	२८	३०	३७	६	२०	९	६	१०	२४	१९	२४	७	१	१७	२६	०	४	४१	४३	४	३	६	६	१८	७	४	६	२	१९	१४
१५	६	२८	३४	९	५	१३	६	५८	४	२९	५	१५	७	२०	५७	२६	१०	२४	१९	३६	७	२	३२	४५	०	४	३७	३३	४	३	२	५५	१८	२२	+०	१०	३	११	१५
१६	६	२९	३४	३६	५	२४	५८	८	४	२९	३९	५२	७	२१	४०	५३	१०	२४	२०	१	७	३	४८	४	०	४	३३	२५	४	२	५९	४५	१८	३७	-३	४५	३	५५	१६
१७	७	०	३५	५	६	६	४८	१५	५	०	१४	२३	७	२२	१८	५१	१०	२४	२०	३७	७	५	३	२३	०	४	२९	२०	४	२	५६	३४	१८	५२	७	३०	४	२८	१७
१८	७	१	३५	३५	६	१८	३९	४०	५	०	४८	४९	७	२२	५०	३८	१०	३४	२१	२६	७	६	१८	४३	०	४	२५	२१	४	२	५३	२३	१९	७	१०	५९	४	५०	१८
१९	७	२	३६	८	७	०	३४	६	५	१	२३	१२	७	२३	१५	३६	१०	२४	२२	२८	७	७	३४	३	०	४	२१	२५	४	२	५०	१२	१९	२१	१४	२	४	५९	१९
२०	७	३	३६	४१	७	१२	३२	४७	५	१	५७	३०	७	२३	३२	५६	१०	२४	२३	४२	७	८	४९	२३	०	४	१७	३२	४	२	४७	२	१९	३५	१६	३२	४	५५	२०
२१	७	४	३७	१६	७	२४	३६	४८	५	२	३१	४३	७	२३	४१	५८	१०	२४	२५	८	७	१०	४	४४	०	४	१३	४५	४	२	४३	५१	१९	४९	१८	१९	४	३८	२१
२२	७	५	३७	५३	८	६	४७	१४	५	३	५	५२	७	२३	४१	४७	१०	२४	२६	४७	७	११	२०	४	०	४	१०	०	४	२	४०	४०	२०	२	१९	१८	४	८	२२
२३	७	६	३८	३१	८	१९	५	३९	५	३	३९	५६	७	२३	३१	५५	१०	२४	२८	३७	७	१२	३५	२५	०	४	६	२०	४	२	३७	२९	२०	१५	१९	२४	३	२६	२३
२४	७	७	३९	१०	९	१	३४	८	५	४	१३	५५	७	२३	११	३५	१०	२४	३०	४४	७	१३	५०	४५	०	४	२	४५	४	२	३४	१९	२०	२७	१८	३२	२	३३	२४
२५	७	८	३९	५०	९	१४	१५	२०	५	४	४७	५०	७	२२	४०	४०	१०	२४	३२	५६	७	१५	६	६	०	३	५९	१४	४	२	३१	८	२०	४०	१६	४५	१	३३	२५
२६	७	९	४०	३१	९	२७	१२	२९	५	५	२१	३८	७	२१	५८	५०	१०	२४	३५	२३	७	१६	२१	२६	०	३	५५	५०	४	२	२७	५७	२०	५१	१४	५	+०	२६	२६
२७	७	१०	४१	१३	१०	१०	२८	५९	५	५	५५	२२	७	२१	६	३८	१०	२४	३८	३	७	१७	३६	४५	०	६	५२	२७	४	२	२४	४६	२१	३	१०	३७	-०	४५	२७
२८	७	११	४१	५७	१०	२४	७	५६	५	६	२९	२	७	२०	४	३७	१०	२४	४०	५४	७	१८	५२	६	०	३	४९	११	४	२	२१	३६	२१	१४	६	३०	१	५४	२८
२९	७	१२	४२	४१	११	८	११	२०	५	७	२	३६	७	१८	५४	२०	१०	२४	४३	५७	७	२०	७	२५	०	३	४६	०	४	२	१८	२५	२१	२४	-१	५६	२	५९	२९
३०	७	१३	४३	२६	११	२२	३९	८	५	७	३६	५	७	१७	३७	२५	१०	२४	४७	१३	७	२१	२२	४६	०	३	४२	५३	४	२	१५	१४	-२१	३४	+२	५३	-३	५४	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ दिसम्बर' ९८ को अयनांश २३°/५०'/३०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९८ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९८ई.
दिसं. १	७ १४ ४४ १३	० ७ २८ ३०	५ ८ ९ २९	७ १६ १६ १९	१० २४ ५० ३९	७ २२ ३८ ६	० ३ ३९ ५३	४ २ १२ ३	-२१ ४४	+७ ३८	-४ ३५	दिसं.१
२	७ १५ ४५ ०	० २२ ३३ १३	५ ८ ४२ ४७	७ १४ ५३ ३५	१० २४ ५४ १८	७ २३ ५३ २५	० ३ ३६ ५८	४ २ ८ ५२	२१ ५३	११ ५९	४ ५७	२
३	७ १६ ४५ ४९	१ ७ ४४ १२	५ ९ १६ १	७ १३ ३२ ४	१० २४ ५८ ७	७ २५ ८ ४५	० ३ ३४ .	४ २ ५ ४१	२२ २	१५ ३५	४ ५९	३
४	७ १७ ४६ ३८	१ २२ ५० ४४	५ ९ ४९ १०	७ १२ १४ ३१	१० २५ २ ९	७ २६ २४ ५४	० ३ ३१ २३	४ २ २ ३१	२२ ११	१८ ७	४ ४०	४
५	७ १८ ४७ २९	२ ७ ४२ २६	५ १० २२ ११	७ ११ ३ २०	१० २५ ६ २१	७ २७ ३९ २४	० ३ २८ ४४	४ १ ५९ २०	२२ १९	१९ २३	४ २	५
६	७ १९ ४८ २१	२ २२ ११ ५	५ १० ५५ ८	७ १० ० ४१	१० २५ १० ४५	७ २८ ५४ ४४	० ३ २६ ११	४ १ ५६ ९	२२ २६	१९ २०	३ १०	६
७	७ २० ४९ १३	३ ६ ११ ४४	५ ११ २८ ०	७ ९ ७ ५२	१० २५ १५ २०	८ ० १० ३	० ३ २३ ४३	४ १ ५३ ५८	२२ ३३	१८ ४	२ ७	७
८	७ २१ ५० ७	३ १९ ४२ ५४	५ १२ ० ४६	७ ८ २६ ५	१० २५ २० ७	८ १ २५ २२	० ३ २१ २१	४ १ ५० ४८	२२ ४०	१५ ४९	-० ५९	८
९	७ २२ ५१ ३	४ २ ४६ ०	५ १२ ३३ २६	७ ७ ५५ ३०	१० २५ २५ ४	८ २ ४० ४२	० ३ १९ ४	४ १ ४६ ३७	२२ ४६	१२ ४८	+० १०	९
१०	७ २३ ५२ ०	४ १५ २४ ३५	५ १३ ६ ०	७ ७ ३६ २५	१० २५ ३० १२	८ ३ ५६ १	० ३ १६ ५४	४ १ ४३ २६	२२ ५२	९ १७	१ १७	१०
११	७ २४ ५२ ५८	४ २७ ४३ २४	५ १३ ३८ २७	७ ७ २८ १२	१० २५ ३५ ३१	८ ५ ११ २२	० ३ १४ ५०	४ १ ४० १५	२२ ५८	५ २८	२ १८	११
१२	७ २५ ५३ ५६	५ ९ ४७ ४१	५ १४ १० ५०	७ ७ ३० ३४	१० २५ ४१ १	८ ६ २६ ४१	० ३ १२ ५२	४ १ ३७ ५	२३ ३	+१ २९	३ १२	१२
१३	७ २६ ५४ ५७	५ २१ ४२ ४०	५ १४ ४३ ५	७ ७ ४२ ३०	१० २५ ४६ ४१	८ ७ ४२ ०	० ३ १० ५९	४ १ ३४ ५४	२३ ७	-२ २९	३ ५६	१३
१४	७ २७ ५५ ५८	६ ३ ३३ १२	५ १५ १५ १४	७ ८ ३ २६	१० २५ ५२ ३२	८ ८ ५७ २०	० ३ ९ १३	४ १ ३१ ४३	२३ ११	६ २०	४ ३१	१४
१५	७ २८ ५७ ०	६ १५ २३ २५	५ १५ ४७ १६	७ ८ ३२ २०	१० २५ ५८ ३४	८ १० १२ ३८	० ३ ७ ३४	४ १ २७ ३२	२३ १४	९ ५६	४ ५३	१५
१६	७ २९ ५८ ३	६ २७ १६ ४६	५ १६ १९ १२	७ ९ ८ ३०	१० २६ ४ ४६	८ ११ २७ ५९	० ३ ६ ०	४ १ २४ २२	२३ १७	१३ १०	५ ३	१६
१७	८ ० ५९ ७	७ ९ १५ ४८	५ १६ ५१ १	७ ९ ५१ ६	१० २६ ११ ८	८ १२ ४३ १८	० ३ ४ ३३	४ १ २१ ११	२३ २०	१५ ५२	५ ०	१७
१८	८ २ ० १२	७ २१ २२ १८	५ १७ २२ ४१	७ १० ३९ २५	१० २६ १७ ४०	८ १३ ५८ ३८	० ३ ३ १४	४ १ १८ ०	२३ २२	१७ ५६	४ ४३	१८
१९	८ ३ १ १७	८ ३ ३७ २३	५ १७ ५४ १५	७ ११ ३२ ४५	१० २६ २४ २४	८ १५ १३ ५७	० ३ १ ५९	४ १ १४ ४९	२३ २४	१९ ११	४ १३	१९
२०	८ ४ २ २३	८ १६ १ ४१	५ १८ २५ ४२	७ १२ ३० ३०	१० २६ ३१ १५	८ १६ २९ १६	० ३ ० ५१	४ १ ११ ३८	२३ २५	१९ ३४	३ ३१	२०
२१	८ ५ ३ २९	८ २८ ३५ ४०	५ १८ ५७ १	७ १३ ३२ ९	१० २६ ३८ १८	८ १७ ४४ ३५	० २ ५९ ५०	४ १ ८ २८	२३ २६	१८ ५२	२ ३७	२१
२२	८ ६ ४ ३६	९ ११ २० ०	५ १९ २८ ११	७ १४ ३७ १४	१० २६ ४५ ३०	८ १८ ५९ ५३	० २ ५८ ५५	४ १ ५ १७	२३ २६	१७ २६	१ ३६	२२
२३	८ ७ ५ ४३	९ २४ १५ ३०	५ १९ ५९ १५	७ १५ ४५ १८	१० २६ ५२ ५१	८ २० १५ ११	० २ ५८ ७	४ १ २ ६	२३ २६	१४ ५८	+० ५८	२३
२४	८ ८ ६ ५०	१० ७ २३ ३१	५ २० ३० १०	७ १६ ५६ ०	१० २७ ० २३	८ २१ ३० २८	० २ ५७ २६	४ ० ५८ ५५	२३ २६	११ ४२	-० ४२	२४
२५	८ ९ ७ ५८	१० २० ४५ ३९	५ २१ ० ५८	७ १८ ९ १	१० २७ ८ ४	८ २२ ४५ ४५	० २ ५६ ४०	४ ० ५५ ४४	२३ २५	७ ४७	१ ५१	२५
२६	८ १० ९ ६	११ ४ २३ ३४	५ २१ ३१ ३६	७ १९ २४ ३	१० २७ १५ ५५	८ २४ १ ३	० २ ५६ २४	४ ० ५२ ३३	२३ २३	-३ १५	२ ५७	२६
२७	८ ११ १० १४	११ १८ १८ ३०	५ २२ २ ८	७ २० ४० ५४	१० २७ २३ ५३	८ २५ १६ १८	० २ ५६ २	४ ० ४९ २२	२३ २१	+१ १४	३ ५३	२७
२८	८ १२ ११ २१	० २ ३० ३२	५ २२ ३२ २९	७ २१ ५९ १८	१० २७ ३२ १	८ २६ ३१ ३३	० २ ५५ ४८	४ ० ४६ ११	२३ १८	५ ५३	४ ३५	२८
२९	८ १३ १२ २९	० १६ ५८ ९	५ २३ २ ४२	७ २३ १९ १०	१० २७ ४० १८	८ २७ ४६ ४८	० २ ५५ ४०	४ ० ४३ ०	२३ १५	१० १८	५ १	२९
३०	८ १४ १३ ३७	१ १ ३७ ३७	५ २३ ३२ ४६	७ २४ ४० १५	१० २७ ४८ ४४	८ २९ २ २	० २ ५५ ३७	४ ० ३९ ५०	२३ १२	१४ ८	५ ८	३०
३१	८ १५ १४ ४४	१ १६ २३ ३	५ २४ [illegible] ४४	७ २६ २ २८	१० २७ ५६ १७	९ ० १७ १६	० २ ५५ ४५	४ ० ३६ ३९	-२३ ८	+१७ ७	-४ ५५	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं.३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ जनवरी १९९९ ई. को अयनांश २३°/५०′/ ३४″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
जन. १	८ १६ १५ ५२	२ १ ७ १	५ २४ ३२ ३०	७ २७ २५ ४२	१० २८ ६ ०	९ १ ३२ २९	० २ ५५ ५५	४ ० ३३ २८	-२३ ३	+१८ ५९	-४ २२	जन. १
२	८ १७ १६ ५९	२ १५ ४१ ३६	५ २५ २ ७	७ २८ ४९ ५१	१० २८ १४ ५१	९ २ ४७ ४१	० २ ५६ १५	४ ० ३० १७	२२ ५८	१९ ३४	३ ३२	२
३	८ १८ १८ ७	२ २९ ५९ ४०	५ २५ ३१ ३५	८ ० १४ ५०	१० २८ २३ ५२	९ ४ २ ५३	० २ ५६ ४०	४ ० २७ ६	२२ ५३	१८ ५३	२ ३०	३
४	८ १९ १९ १५	३ १३ ५६ १	५ २६ ० ५५	८ १ ४० ३५	१० २८ ३२ ५८	९ ५ १८ ४	० २ ५७ १२	४ ० २३ ५६	२२ ४७	१७ २	१ २०	४
५	८ २० २० २३	३ २७ २७ ४६	५ २६ ३० ४	८ ३ ७ ४	१० २८ ४२ १४	९ ६ ३३ १४	० २ ५७ ५१	४ ० २० ४५	२२ ४१	१४ १७	-० १०	५
६	८ २१ २१ ३१	४ १० ३४ ३५	५ २६ ५९ ३	८ ४ ३४ ११	१० २८ ५१ ३७	९ ७ ४८ २४	० २ ५८ ३६	४ ० १७ ३४	२२ ३४	१० ५३	+१ ४	६
७	८ २२ २२ ३९	४ २३ १८ १६	५ २७ २७ ५२	८ ६ १ ५५	१० २९ १ ८	९ ९ ३ ३४	० २ ५९ ३०	४ ० १४ २३	२२ २७	७ ४	२ १०	७
८	८ २३ २३ ४७	५ ५ ४२ ८	५ २७ ५६ ३२	८ ७ ३० १५	१० २९ १० ४६	९ १० १८ ४२	० ३ ० २७	४ ० ११ १३	२२ २०	+३ ३	३ ८	८
९	८ २४ २४ ५५	५ १७ ५० ३४	५ २८ २४ ५९	८ ८ ५९ ९	१० २९ २० ३४	९ ११ ३३ ५१	० ३ १ ३३	४ ० ८ २	२२ १२	-१ ०	३ ५६	९
१०	८ २५ २६ ४	५ २९ ४८ २५	५ २८ ५३ १६	८ १० २८ ३६	१० २९ ३० २८	९ १२ ४८ ५८	० ३ २ ४५	४ ० ४ ५१	२२ ३	४ ५७	४ ३३	१०
११	८ २६ २७ १३	६ ११ ४० ४६	५ २९ २१ २२	८ ११ ५८ ३२	१० २९ ४० ३०	९ १४ ४ ५	० ३ ४ ३	४ ० १ ४०	२१ ५४	८ ४०	४ ५९	११
१२	८ २७ २८ २१	६ २३ ३२ २२	५ २९ ४९ १६	८ १३ २९ ३	१० २९ ५० ३९	९ १५ १९ १२	० ३ ५ २८	३ २९ ५८ २९	२१ ४५	१२ २	५ ११	१२
१३	८ २८ २९ २९	७ ५ २७ ३६	६ ० १६ ५९	८ १५ ० २	११ ० ० ५५	९ १६ ३४ १८	० ३ ७ ०	३ २९ ५५ १८	२१ ३५	१४ ५७	५ १०	१३
१४	८ २९ ३० ३८	७ १७ ३० १४	६ ० ४४ ३०	८ १६ ३१ ३१	११ ० ११ २०	९ १७ ४९ २२	० ३ ८ ३८	३ २९ ५२ ८	२१ २५	१७ १५	४ ५६	१४
१५	९ ० ३१ ४६	७ २९ ४३ १२	६ १ ११ ४८	८ १८ ३ ३०	११ ० २१ ४९	९ १९ ४ २७	० ३ १० २३	३ २९ ४८ ५७	२१ १४	१८ ४९	४ २८	१५
१६	९ १ ३२ ५४	८ १२ ८ ३४	६ १ ३८ ५५	८ १९ ३६ ०	११ ० ३२ २६	९ २० १९ ३०	० ३ १२ १४	३ २९ ४५ ४६	२१ ४	१९ ३१	३ ४७	१६
१७	९ २ ३४ १	८ २४ ४७ ३०	६ २ ५ ४६	८ २१ ९ १	११ ० ४३ १०	९ २१ ३४ ३१	० ३ १४ १२	३ २९ ४२ ३५	२० ५२	१९ १६	२ ५४	१७
१८	९ ३ ३५ ८	९ ७ ४० १८	६ २ ३२ २६	८ २२ ४२ ३२	११ ० ५४ १	९ २२ ४९ ३४	० ३ १६ १५	३ २९ ३९ २४	२० ४०	१८ १	१ ५१	१८
१९	९ ४ ३६ १५	९ २० ४६ ४०	६ २ ५८ ५२	८ २४ १६ ३४	११ १ ४ ५८	९ २४ ४ ३५	० ३ १८ २७	३ २९ ३६ १३	२० २८	१५ ४७	+० ४१	१९
२०	९ ५ ३७ २०	१० ४ ५ ५०	६ ३ २५ ४	८ २५ ५१ ८	११ १ १६ २	९ २५ १९ ३४	० ३ २० ४४	३ २९ ३३ ३	२० १६	१२ ४१	-० ३२	२०
२१	९ ६ ३८ २५	१० १७ ३६ ४८	६ ३ ५१ ४	८ २८ २६ १४	११ १ २७ १२	९ २६ ३४ ३३	० ३ २३ ७	३ २९ २९ ५२	२० ३	८ ५३	१ ४४	२१
२२	९ ७ ३९ ३०	११ १ १८ ३३	६ ४ १६ ४७	८ २९ १ ५५	११ १ ३८ २९	९ २७ ४९ ३०	० ३ २५ ३७	३ २९ २६ ४१	१९ ४९	-४ ३३	२ ५२	२२
२३	९ ८ ४० ३३	११ १५ १० ६	६ ४ ४२ १६	९ ० ३८ ७	११ १ ४९ ५०	९ २९ ४ २६	० ३ २८ १३	३ २९ २३ ३०	१९ ३६	+० २	३ ५०	२३
२४	९ ९ ४१ ३५	११ २९ १० २४	६ ५ ७ ३१	९ २ १४ ५६	११ २ १ १८	१० ० १९ २०	० ३ ३० ५५	३ २९ २० १९	१९ २२	४ ४१	४ ३६	२४
२५	९ १० ४२ ३६	० १३ १८ १२	६ ५ ३२ ३०	९ ३ ५२ २०	११ २ १२ ५२	१० १ ३४ १३	० ३ ३३ ४३	३ २९ १७ ९	१९ ७	९ ५	५ ५	२५
२६	९ ११ ४३ ३७	० २७ ३१ ४६	६ ५ ५७ १४	९ ५ ३० २१	११ २ २४ ३२	१० २ ४९ ५	० ३ ३६ ३८	३ २९ १३ ५८	१८ ५३	१३ १	५ १६	२६
२७	९ १२ ४४ ३६	१ ११ ४८ ४१	६ ६ २१ ४२	९ ७ ८ ५८	११ २ ३६ १७	१० ४ ३ ५५	० ३ ३९ ३९	३ २९ १० ४७	१८ ३८	१६ १२	५ ७	२७
२८	९ १३ ४५ ३३	१ २६ ५ ४५	६ ६ ४५ ५५	९ ८ ४८ १३	११ २ ४८ ८	१० ५ १८ ४३	० ३ ४२ ४५	३ २९ ७ ३६	१८ २२	१८ २४	४ ४०	२८
२९	९ १४ ४६ ३०	२ १० १९ ५	६ ७ ९ ५१	९ १० २८ ९	११ ३ ० ४	१० ६ ३३ ३०	० ३ ४५ ५६	३ २९ ४ २५	१८ ६	१९ २७	३ ५५	२९
३०	९ १५ ४७ २६	२ २४ २४ ३०	६ ७ ३३ ३१	९ १२ ८ ४४	११ ३ १२ ५	१० ७ ४८ १५	० ३ ४९ १४	३ २९ १ १५	१७ ५०	१९ १७	२ ५७	३०
३१	९ १६ ४८ २१	३ ८ १७ ५१	६ ७ ५६ ५३	९ १३ ५० ०	११ ३ २४ ११	१० ९ २ ५८	० ३ ५२ ३८	३ २८ ५८ ४	-१७ ३४	+१७ ५५	-१ ४८	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ फरवरी ९९ को अयनांश २३°/५०′/३९″)

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ ई.
फर. १	९ १७ ४९ १४	३ २१ ५५ ४२	६ ८ १९ ५९	९ १५ ३१ ५८	११ ३ ३६ २३	१० १० १७ ४०	० ३ ५६ ८	३ २८ ५४ ५३	-१७ १७	+१५ ३३	-० ३५	फर १
२	९ १८ ५० ७	४ ५ १५ ३८	६ ८ ४२ ४८	९ १७ १४ ३८	११ ३ ४८ ४०	१० ११ ३२ २०	० ३ ५९ ४३	३ २८ ५१ ४२	१७ ०	१२ २३	+० ३९	२
३	९ १९ ५० ५८	४ १८ १६ ३५	६ ९ ५ १५	९ १८ ५७ ५९	११ ४ १ १	१० १२ ४६ ५८	० ४ ३ २५	३ २८ ४८ ३१	१६ ४३	८ ४१	१ ४९	३
४	९ २० ५१ ४९	५ ० ५८ ४९	६ ९ २७ २७	९ २० ४२ ५	११ ४ १३ २६	१० १४ १ ३६	० ४ ७ १२	३ २८ ४५ २१	१६ २५	४ ४१	२ ५१	४
५	९ २१ ५२ ३९	५ १३ २४ ५	६ ९ ४९ १९	९ २२ २६ ५१	११ ४ २५ ५८	१० १५ १६ ११	० ४ ११ ३	३ २८ ४२ १०	१६ ७	+० ३४	३ ४५	५
६	९ २२ ५३ २७	५ २५ ३५ ६	६ १० १० ५२	९ २४ १२ २२	११ ४ ३८ ३३	१० १६ ३० ४४	० ४ १५ ०	३ २८ ३८ ५९	१५ ४९	-३ २९	४ २७	६
७	९ २३ ५४ १५	६ ७ ३५ ३५	६ १० ३२ ५	९ २५ ५८ ३३	११ ४ ५१ १३	१० १७ ४५ १०	० ४ १९ ३	३ २८ ३५ ४८	१५ ३१	७ २०	४ ५७	७
८	९ २४ ५५ ३	६ १९ २९ ४७	६ १० ५२ ५७	९ २७ ४५ २५	११ ५ ३ ५८	१० १८ ५९ ४६	० ४ २३ १२	३ २८ ३२ ३८	१५ १२	१० ५१	५ १४	८
९	९ २५ ५५ ४८	७ १ २२ २०	६ ११ १३ २८	९ २९ ३२ ५५	११ ५ १६ ४६	१० २० १४ १४	० ४ २७ २६	३ २८ २९ २७	१४ ५३	१३ ५६	५ १७	९
१०	९ २६ ५६ ३३	७ १३ १८ १	६ ११ ३३ ३८	१० १ २१ २	११ ५ २९ ४०	१० २१ २८ ४०	० ४ ३१ ४५	३ २८ २६ १६	१४ ३४	१६ २८	५ ७	१०
११	९ २७ ५७ १७	७ २५ २१ २०	६ ११ ५३ २५	१० ३ ९ ४१	११ ५ ४२ ३७	१० २२ ४३ ४	० ४ ३६ ९	३ २८ २३ ५	१४ १४	१८ १८	४ ४३	११
१२	९ २८ ५८ ०	८ ७ ३६ ३२	६ १२ १२ ५०	१० ४ ५८ ५०	११ ५ ५५ ३८	१० २३ ५७ २७	० ४ ४० ३८	३ २८ १९ ५५	१३ ५५	१९ २०	४ ६	१२
१३	९ २९ ५८ ४२	८ २० ७ ६	६ १२ ३१ ५२	१० ६ ४८ २४	११ ६ ८ ४३	१० २५ ११ ४८	० ४ ४५ १२	३ २८ १६ ४४	१३ ३५	१९ २७	३ १७	१३
१४	१० ० ५९ २२	९ २ ५५ ३५	६ १२ ५० ३०	१० ८ ३८ १६	११ ६ २१ ५२	१० २६ २६ ६	० ४ ४९ ५२	३ २८ १३ ३३	१३ १५	१८ ३४	२ १६	१४
१५	१० २ ० १	९ १६ ३ १८	६ १३ ८ ४४	१० १० २८ १७	११ ६ ३५ ५	१० २७ ४० २२	० ४ ५४ ३७	३ २८ १० २२	१२ ५४	१६ ४१	+१ ८	१५
१६	१० ३ ० ३९	९ २९ ३० १३	६ १३ २६ ३३	१० १२ १८ २१	११ ६ ४८ २१	१० २८ ५४ ३६	० ४ ५९ २७	३ २८ ७ १२	१२ ३४	१३ ५०	-० ७	१६
१७	१० ४ १ १६	१० १३ १४ ५४	६ १३ ४३ ५८	१० १४ ८ १४	११ ७ १ ४१	११ ० ८ ४८	० ५ ४ २२	३ २८ ४ १	१२ १३	१० १०	१ २२	१७
१८	१० ५ १ ५०	१० २७ १४ २८	६ १४ ० ५५	१० १५ ५७ ४५	११ ७ १५ ५	११ १ २२ ५८	० ५ ९ २०	३ २८ ० ५०	११ ५२	५ ५३	२ ३४	१८
१९	१० ६ २ २४	११ ११ २५ ९	६ १४ १७ २७	१० १७ ४६ ३५	११ ७ २८ ३१	११ २ ३७ ५	० ५ १४ २४	३ २७ ५७ ४०	११ ३१	-१ १४	३ ३७	१९
२०	१० ७ २ ५५	११ २५ ४२ ३७	६ १४ ३३ ३१	१० १९ ३४ ३०	११ ७ ४२ २	११ ३ ५१ ८	० ५ १९ ३२	३ २७ ५४ २९	११ ९	+३ ३२	४ २७	२०
२१	१० ८ ३ २५	० १० २ २९	६ १४ ४९ ८	१० २१ २१ ९	११ ७ ५५ ३५	११ ५ ५ ११	० ५ २४ ४५	३ २७ ५१ १८	१० ४८	८ ५	५ १	२१
२२	१० ९ ३ ५३	० २४ २० ५०	६ १५ ४ १८	१० २३ ६ ७	११ ८ ९ ११	११ ६ १९ १२	० ५ ३० ३	३ २७ ४८ ८	१० २६	१२ ११	५ १७	२२
२३	१० १० ४ १९	१ ८ ३४ २७	६ १५ १८ ५८	१० २४ ४९ १	११ ८ २२ ५०	११ ७ ३३ ८	० ५ ३५ २५	३ २७ ४४ ५७	१० ४	१५ ३३	५ ११	२३
२४	१० ११ ४ ४३	१ २२ ४० ५७	६ १५ ३३ ९	१० २६ २९ १८	११ ८ ३६ ३३	११ ८ ४७ १	० ५ ४० ५०	३ २७ ४१ ४६	९ ४२	१७ ५८	४ ४८	२४
२५	१० १२ ५ ५	२ ६ ३८ ३६	६ १५ ४६ ५२	१० २८ ६ ३३	११ ८ ५० १७	११ १० ० ५२	० ५ ४६ २२	३ २७ ३८ ३५	९ २०	१९ १८	४ ८	२५
२६	१० १३ ५ २५	२ २० २६ १२	६ १६ ० ४	१० २९ ४० ५	११ ९ ४ ५	११ ११ १४ ४०	० ५ ५१ ५६	३ २७ ३५ २५	८ ५८	१९ २७	३ १४	२६
२७	१० १४ ५ ४३	३ ४ २ ५०	६ १६ १२ ४६	११ १ ९ २९	११ ९ १७ ५५	११ १२ २८ २५	० ५ ५७ ३५	३ २७ ३२ १४	८ ३५	१८ २७	२ १०	२७
२८	१० १५ ६ ०	३ १७ २७ ४३	६ १६ २४ ५६	११ २ ३३ ५५	११ ९ ३१ ४८	११ १३ ४२ ६	० ६ ३ १७	३ २७ २९ ३	-८ १३	+१६ २६	-१ ०	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टै.टा.) (१ मार्च '९९ को अयनांश २३°/५०'/ ४३")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
१९९९ई.	रा. अं. कं. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	१९९९ई.
मार्च १	१० १६ ६ १४	४ ० ४० ७	६ १६ ३६ ३४	११ ३ ५३ ३	११ ९ ४५ ४३	११ १४ ५५ ४४	० ६ ९ ४	३ २७ २५ ५२	-७ ५०	+१३ ३३	+० १३	मार्च १
२	१० १७ ६ २६	४ १३ ३९ २७	६ १६ ४७ ४०	११ ५ ६ ०	११ ९ ५९ ४०	११ १६ ९ १९	० ६ १४ ५५	३ २७ २२ ४१	७ २८	१० ३	१ २४	२
३	१० १८ ६ ३७	४ २६ २५ २४	६ १६ ५८ ११	११ ६ १२ २६	११ १० १३ ४०	११ १७ २२ ५२	० ६ २० ५०	३ २७ १९ ३०	७ ५	६ ८	२ २९	३
४	१० १९ ६ ४६	५ ८ ५८ ३	६ १७ ८ १०	११ ७ ११ ३२	११ १० २७ ४१	११ १८ ३६ २०	० ६ २६ ४८	३ २७ १६ २०	६ ४२	+२ २	३ २६	४
५	१० २० ६ ५३	५ २१ १८ १०	६ १७ १७ ३३	११ ८ ३ ३	११ १० ४१ ४५	११ १९ ४९ ४५	० ६ ३२ ५०	३ २७ १३ ९	६ १९	-२ ६	४ १२	५
६	१० २१ ६ ५९	६ ३ २७ १२	६ १७ २६ २१	११ ८ ४६ १९	११ १० ५५ ५१	११ २१ ३ ८	० ६ ३८ ५५	३ २७ ९ ५८	५ ५५	६ ४	४ ४६	६
७	१० २२ ७ ३	६ १५ २७ २२	६ १७ ३४ ३३	११ ९ २१ ८	११ ११ ९ ५९	११ २२ १६ २७	० ६ ४५ ५	३ २७ ६ ४७	५ ३२	९ ४५	५ ६	७
८	१० २३ ७ ५	६ २७ २१ ४५	६ १७ ४२ ८	११ ९ ४७ ४	११ ११ २४ १०	११ २३ २९ ४२	० ६ ५१ १८	३ २७ ३ ३६	५ ९	१३ ०	५ १४	८
९	१० २४ ७ ६	७ ९ १४ ५	६ १७ ४९ ५	११ १० ४ ५	११ ११ ३८ २१	११ २४ ४२ ५५	० ६ ५७ ३५	३ २७ ० २५	४ ४६	१५ ४४	५ ८	९
१०	१० २५ ७ ५	७ २१ ८ ४०	६ १७ ५५ २४	११ १० १२ ३	११ ११ ५२ ३४	११ २५ ५६ ५	० ७ ३ ५५	३ २६ ५७ १५	४ २२	१७ ४९	४ ४९	१०
११	१० २६ ७ २	८ ३ १० १०	६ १८ १ ४	११ १० ११ ०	११ १२ ६ ५०	११ २७ ९ ९	० ७ १० १७	३ २६ ५४ ४	३ ५९	१९ ८	४ १७	११
१२	१० २७ ६ ५८	८ १५ २३ २४	६ १८ ६ ५	११ १० १ १३	११ १२ २१ ६	११ २८ २२ ११	० ७ १६ ४२	३ २६ ५० ५३	३ ३५	१९ ३५	३ ३३	१२
१३	१० २८ ६ ५२	८ २७ ५३ २	६ १८ १० २३	११ ९ ४३ १	११ १२ ३५ २५	११ २९ ३५ १०	० ७ २३ १२	३ २६ ४७ ४२	३ ११	१९ ५	२ ३८	१३
१४	१० २९ ६ ४५	९ १० ४३ ९	६ १८ १४ २	११ ९ १६ ५९	११ १२ ४९ ४४	० ० ४८ ५	० ७ २९ ४४	३ २६ ४४ ३२	२ ४८	१७ ३७	१ ३३	१४
१५	११ ० ६ ३५	९ २३ ५६ ४३	६ १८ १६ ५८	११ ८ ४३ ४३	११ १३ ४ ५	० २ ० ५७	० ७ ३६ २०	३ २६ ४१ २१	२ २४	१५ ९	+० २२	१५
१६	११ १ ६ २४	१० ७ ३५ ८	६ १८ १९ १२	११ ८ ४ ७	११ १३ १८ २८	० ३ १३ ४४	० ७ ४२ ५८	३ २६ ३८ १०	२ ०	११ ४७	-० ५२	१६
१७	११ २ ६ ११	१० २१ ३७ ३९	६ १८ २० ४२	११ ७ १९ ५	११ १३ ३२ ५१	० ४ २६ २९	० ७ ४९ ४०	३ २६ ३४ ५९	१ ३७	७ ३९	२ ५	१७
१८	११ ३ ५ ५६	११ ६ १ २	६ १८ २१ २९	११ ६ २९ ४३	११ १३ ४७ १५	० ५ ३९ ८	० ७ ५६ २४	३ २६ ३१ ४९	१ १३	-३ ०	३ १२	१८
१९	११ ४ ५ ४०	११ २० ३९ ४७	६ १८ २१ ३३	११ ५ २७ ९	११ १४ १ ४०	० ६ ५१ ४५	० ८ ३ ११	३ २६ २८ ३८	० ४९	+१ ५५	४ ८	१९

लगभग इष्टकालिक ग्रहस्पष्ट करें -

ग्रह की दैनिक गति की कलाओं और इष्टकाल (प्रातः ५ घं. ३० मि. से बीते काल) के घण्टों द्वारा नीचे दी गई सारणी से चालन कलाएं लेकर उन्हें प्रातः ५ घं. ३० मि. कालिक ग्रह में संस्कार करने पर इष्टकालिक लगभग ग्रह स्पष्ट हो जाएगा। यदि इष्टकाल के मिनटों और गति की शेष कलाओं के लिए मौखिक अनुपात कर लिया जाए तो इस सारणी से कला तक शुद्ध ग्रहस्पष्ट होगा।

गति कलाएं

इ.घं.	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२
१	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८
२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
३	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४
४	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
५	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३२	३५	३७	४०
६	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८
७	३	७	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५२	५६
८	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४
९	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	४५	४९	५४	५८	६३	६७	७२
१०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०
११	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८
१२	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६

इ.घं.	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२
१३	६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	६५	७१	७८	८४	९१	९७	१०४
१४	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	१०५	११२
१५	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	६०	६७	७५	८२	९०	९७	१०५	११२	१२०
१६	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८
१७	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	६८	७६	८५	९३	१०२	११०	११९	१२७	१३६
१८	९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४
१९	९	१९	२८	३८	४७	५७	६३	७६	८५	९५	१०४	११४	१२३	१३३	१४२	१५२
२०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०
२१	१०	२१	३१	४२	५२	६३	७३	८४	९४	१०५	११५	१२६	१३६	१४७	१५७	१६८
२२	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	११०	१२१	१३२	१४३	१५४	१६५	१७६
२३	११	२३	३४	४६	५७	६९	८०	९२	१०३	११५	१२६	१३८	१४९	१६१	१७२	१८४
२४	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	१४४	१५६	१६८	१८०	१९२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश (प्रात. ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश
१९९८ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
मार्च २८	९ १७ ५३	९ ७ ५७	७ १४ १०
अप्रै. १	९ १८ २	९ ८ २	७ १४ ८
५	९ १८ १०	९ ८ ६	७ १४ ५
९	९ १८ १८	९ ८ ९	७ १४ १
१३	९ १८ २५	९ ८ १२	७ १३ ५७
१७	९ १८ ३२	९ ८ १५	७ १३ ५३
२१	९ १८ ३७	९ ८ १७	७ १३ ४८
२५	९ १८ ४२	८९ ८ १९	७ १३ ४३
२९	९ १८ ४६	९ ८ २०	७ १३ ३८
मार्च १	९ १८ ४९	९ ८ २०	७ १३ ३२
७	९ १८ ५२	९ ८ २०	७ १३ २६
११	९ १८ ५३	९ ८ १९	७ १३ २०
१५	९ १८ ५४	९ ८ १८	७ १३ १४
१९	९ १८ ५४	९ ८ १६	७ १३ ८
२३	९ १८ ५४	९ ८ १४	७ १३ १
२७	९ १८ ५२	९ ८ ११	७ १२ ५६
३१	९ १८ ५०	९ ८ ९	७ १२ ४८
जून ४	९ १८ ४७	९ ८ ५	७ १२ ४१
८	९ १८ ४३	९ ८ १	७ १२ ३५
१२	९ १८ ३९	७ ५ ५७	७ १२ २९
१६	८ १८ ३४	९ ७ ५२	७ १२ २२
२०	९ १८ २८	९ ७ ४७	७ १२ १६
२४	९ १८ २२	९ ७ ४२	७ १२ ११
२८	९ १८ १५	९ ७ ३६	७ १२ ५
जुला. २	९ १८ ८	९ ७ ३१	७ १२ ०
६	९ १८ ०	९ ७ २५	७ . ११ ५५
१०	९ १७ ५२	९ ७ १८	७ ११ ५०
१४	९ १७ ४३	९ ७ १२	७ ११ ४६
१८	९ १७ ३४	९ ७ ६	७ ११ ४२
२२	९ १७ २५	९ ६ ५९	७ ११ ३९
२६	९ १७ १५	९ ६ ५३	७ ११ ३६

तारीख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश
१९९८ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
जुला. ३०	९ १७ ६	९ ६ ४६	७ ११ ३४
अग. ३	९ १६ ५८	९ ६ ४०	७ ११ ३२
७	९ १६ ४७	९ ६ ३३	७ ११ ३०
११	९ १६ ३७	९ ६ २७	७ ११ २९
१५	९ १६ २८	९ ६ २१	७ ११ २९
१९	६ १६ १९	९ ६ १६	७ ११ २९
२३	९ १६ १०	९ ६ १०	७ ११ ३०
२७	९ १६ १	९ ६ ५	७ ११ ३१
३१	९ १५ ५३	९ ६ ०	७ ११ ३२
सितं. ४	९ १५ ४५	९ ५ ५५	७ ११ ३५
८	९ १५ ३७	९ ५ ५१	७ ११ ३८
१२	९ १५ ३१	९ ५ ४७	७ ११ ४१
१६	७ १५ २४	९ ५ ४४	७ ११ ४५
२०	९ १५ १८	९ ५ ४१	७ ११ ४९
२४	९ १५ १३	९ ५ ३८	७ ११ ५४
२८	९ १५ ९	९ ५ ३६	७ ११ ५९
अक्तू. २	९ १५ ६	९ ५ ३५	७ १२ ४
६	९ १५ ३	९ ५ ३४	७ १२ ११
१०	९ १५ ०	९ ५ . ३३	७ १२ १७
१४	९ १४ ५९	९ ५ ३२	७ १२ २४
१८	९ १४ ५८	९ ५ ३४	७ १२ ३२
२२	९ १४ ५७	९ ५ ३५	७ १२ ३९
२६	९ १४ ५९	९ ५ ३६	७ १२ ४६
३०	९ १५ १	९ ५ ३८	७ १२ ५५
नवं. ३	९ १५ ३	९ ५ ४१	७ १३ ३
७	९ १५ ७	९ ५ ४४	७ १३ १२
११	९ १५ १२	९ ५ ४९	७ १३ २१
१५	९ १५ १६	९ ५ ५२	७ १३ ३०
१९	९ १५ २२	९ ५ ५७	७ १३ ३९
२३	९ १५ २९	९ ६ २	७ १३ ४८
२७	९ १५ ३६	९ ६ ८	७ १३ ५९

तारीख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश
१९९८ ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
दिसं. १	९ १५ ४४	९ ६ १४	७ १४ ७
५	९ १५ ५३	९ ६ २०	७ १४ १७
९	९ १६ २	९ ६ २७	७ १४ २६
१३	९ १६ १२	९ ६ ३५	७ १४ ३५
१७	९ १६ २३	९ ६ ४२	७ १४ ४४
२१	९ १६ ३४	९ ६ ५०	७ १४ ५३
२५	९ १६ ४५	९ ६ ५८	७ १५ २
२९	९ १६ ५७	९ ७ ७	७ १५ ११
सन् १९९९ ई.			
जन. २	९ १७ १०	९ ७ १८	७ १५ २२
६	९ १७ २३	९ ७ २४	७ १५ २७
१०	९ १७ ३६	९ ७ ३३	७ १५ ३५
१४	९ १७ ४९	९ ७ ४२	७ १५ ४३
१८	९ १८ ३	९ ७ ५१	७ १५ ५०
२२	९ १८ १६	९ ८ ०	७ १५ ५७
२६	९ १८ ३०	९ ८ ९	७ १६ ३
३०	९ १८ ४४	९ ८ १८	७ १६ ९
फर. ३	९ १८ ५८	९ ८ २७	७ १६ १४
७	९ १९ १२	९ ८ ३६	७ १६ १९
११	६ १९ २६	९ ८ ४५	७ १६ २४
१५	९ १९ ४०	९ ८ ५४	७ १६ २८
१९	९ १९ ५४	९ ९ २	७ १६ ३१
२३	९ २० ७	९ ९ १०	७ १६ ३४
२७	९ २० २०	९ ९ १८	७ १६ ३६
मार्च. ३	९ २० ३३	९ ९ २६	७ १६ ३८
७	९ २० ४६	९ ९ ३३	७ १६ ३९
११	९ २० ५८	९ ९ ४०	७ १६ ४७
१५	९ २१ १०	९ ९ ४७	७ १६ ४०
१९	९ २१ २१	९ ९ ५३	७ १६ ३९
२३	९ २१ ३२	९ ९ ५९	७ १६ ३८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टे. टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९८ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
मार्च ३१	+७ ३०	-० २५	+११ १६	+३ २२	-७ ३३	-० ५६	-१२ २६	+१ १७	+६ २५	-२ १५	-१७ ५०	-० ३७	-१९ २४	+० २१	-९ २९	+१२ १८
अप्रै. ४	८ ४१	० २२	१० ७	३ २	७ १२	० ५७	११ २७	० ५२	६ ३६	२ १५	१७ ४८	० ३७	१९ २३	० २१	९ २७	१२ १९
८	९ ४९	० २०	८ १६	२ १७	६ ५२	० ५७	१० २१	० ३१	६ ४८	२ १५	१७ ४६	० ३७	१९ २२	० २१	९ २६	१२ २०
१२	१० ५६	० १७	६ ११	१ १६	६ ३३	० ५८	९ ९	+० ८	६ ५९	२ १५	१७ ४३	० ३७	१९ २१	० २१	९ २४	१२ २१
१६	१२ १	० १५	४ २१	+० १०	६ १३	० ५८	७ ५२	-० १२	७ १०	२ १५	१७ ४२	० ३७	१९ २१	० २१	९ २३	१२ २२
२०	१३ ४	० १२	३ ६	-० ५१	५ ५४	० ५९	६ २९	० ३०	७ २२	२ १५	१७ ४१	० ३८	१९ २०	० २१	९ २१	१२ २३
२४	१४ ४	० ९	२ ३२	१ ४२	५ ३५	१ ०	५ २	० ४७	७ ३३	२ १५	१७ ३९	० ३८	१९ २०	० २१	९ २०	१२ २४
२८	१५ ३	० ७	२ ३९	२ २१	५ १७	१ ०	३ ३१	१ २	७ ४४	२ १५	१७ ३८	० ३८	१९ २०	० २१	९ १८	१२ २४
मई २	१५ ५९	० ४	३ २१	२ ४७	५ ०	१ १	१ ५७	१ १६	७ ५५	२ १५	१७ ३७	० ३८	१९ १९	० २१	९ १७	१२ २४
६	१६ ५२	-० २	४ ३३	३ २	४ ४२	१ २	-० २१	१ २७	८ ५	२ १६	१७ ३७	० ३८	१९ १९	० २१	९ १६	१२ २५
१०	१७ ४३	+० १	६ ११	३ ५	४ २६	१ ३	+१ १८	१ ३७	८ १६	२ १६	१७ ३६	० ३८	१९ २०	० २१	९ १५	१२ २५
१४	१८ ३१	० ३	८ ९	२ ५९	४ १०	१ ३	२ ५७	१ ४६	८ २६	२ १६	१७ ३६	० ३९	१९ २०	० २१	९ १४	१२ २५
१८	१९ १६	० ६	१० २४	२ ४३	३ ५५	१ ४	४ ३८	१ ५२	८ ३६	२ १७	१७ ३६	० ३९	१९ २०	० २१	९ १३	१२ २६
२२	१९ ५८	० ९	१२ ५१	२ १८	३ ४१	१ ५	६ १८	१ ५७	८ ४५	२ १७	१७ ३७	० ३९	१९ २१	० २१	९ १२	१२ २६
२६	२० ३६	० ११	१५ २६	१ ४६	३ २७	१ ६	७ ५७	२ १	८ ५५	२ १७	१७ ३७	० ३९	१९ २१	० २१	९ ११	१२ २५
३०	२१ १२	० १३	१८ ०	१ ७	३ १४	१ ७	९ ३४	२ ३	९ ४	२ १८	१७ ३८	० ३९	१९ २२	० २१	९ १०	१२ २५
जून ३	२१ २४	० १६	२० २६	-० २५	३ २	१ ८	११ ९	२ ३	९ १२	२ १९	१७ ३९	० ३९	१९ २३	० २१	९ ९	१२ २४
७	२२ १३	० १८	२२ ३२	+० १८	२ ५१	१ ९	१२ ४१	२ २	९ २०	२ १९	१७ ४०	० ३९	१९ २४	० २१	९ ९	१२ २४
११	२२ ३९	० २१	२४ ४	० ५७	२ ४१	१ १०	१४ १०	१ ५९	९ २८	२ २०	१७ ४१	० ४०	१९ २४	० २१	९ ९	१२ २४
१५	२३ १	० २३	२४ ५४	१ २८	२ ३२	१ ११	१५ ३३	१ ५५	९ ३६	२ २०	१७ ४२	० ४०	१९ २६	० २१	९ ८	१२ २३
१९	२३ २०	० २६	२५ ०	१ ४८	२ २४	१ १२	१६ ५२	१ ५१	९ ४३	२ २१	१७ ४३	० ४०	१९ २६	० २१	९ ८	१२ २२
२३	२३ ३५	० २८	२४ २६	१ ५७	२ १७	१ १३	१८ ४	१ ४४	८ ४९	२ २२	१७ ४४	० ४०	१९ २६	० २१	९ ८	१२ २१
२७	२३ ४७	० ३०	२३ १८	१ ५४	२ ११	१ १५	१९ ९	१ ३७	९ ५५	२ २३	१७ ४७	० ४०	१९ २८	० २१	९ ९	१२ १९
जुला. १	२३ ५६	० ३२	२१ ४७	१ ४०	२ ६	१ १६	२० ७	१ २९	१० १	२ २४	१७ ५०	० ४०	१९ ३०	० २१	९ ९	१२ १८
५	२४ १	० ३५	१९ ५८	१ १७	२ ३	१ १७	२० ५७	१ २१	१० ६	२ २५	१७ ५२	० ४०	१९ ३१	० २१	९ १०	१२ १७
९	२४ ३	० ३७	१७ ५९	० ४५	२ १	१ १८	२१ ३९	१ ११	१० ११	२ २५	१७ ५५	० ४०	१९ ३३	० २१	९ १०	१२ १५
१३	२४ १	० ३९	१५ ५६	+० ७	२ ०	१ १९	२२ ११	१ १	१० १५	२ २६	१७ ५७	० ४०	१९ ३४	० २१	९ ११	१२ १४
१७	२३ ५६	० ४१	१३ ५५	-० ३८	२ ०	१ २१	२२ ३३	-० ५१	१० १९	२ २७	१७ ५९	० ४०	१९ ३६	० २१	९ १२	१२ १३
२१	२३ ४८	० ४३	१२ २	१ २८	-२ १	१ २२	२२ ४५	+० ४०	१० २२	२ २८	१८ २	० ४१	१९ ३७	० २१	९ १२	१२ ११
२५	+२३ ३६	+० ४५	+१० २३	-२ २१	-२ ४	-१ २३	+२२ ४७	+० २९	+१० २५	-२ २९	-१८ ५	-० ४१	-१९ ३९	+० २१	-९ १४	+१२ ९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५ घं. ३० मि. ,भा. स्टे. टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९८ई.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. कं.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुला.२९	+२३ २२	+० ४८	+९ ७	-३ १३	-२ ८	-१ २४	+२२ ३९	+० १८	+१० २७	-२ ३०	-१८ ७	-० ४१	-१९ ४०	+० २१	-९ १५	+१२ ७
अग.२	२३ ५	० ५०	८ २२	४ १	२ १३	१ २५	२२ २०	० ८	१० २८	२ ३१	१८ १०	० ४१	१९ ४२	० २१	९ १७	१२ ६
६	२२ ४४	० ५२	८ १५	४ ३७	२ १९	१ २६	२१ ५१	० ३	१० २९	२ ३२	१८ १३	० ४१	१९ ४३	० २१	९ १९	१२ ४
१०	२२ २२	० ५४	८ ५१	४ ५२	२ २६	१ २८	२१ १२	० १४	१० ३०	२ ३४	१८ १६	० ४१	१९ ४४	० २१	९ २०	१२ ०
१४	२१ ५६	० ५६	१० ४	४ ४०	२ ३५	१ २९	२० २३	० २४	१० ३०	२ ३५	१८ १८	० ४१	१९ ४६	० २१	९ २२	१२ ०
१८	२१ २८	० ५७	११ ३८	४ ०	२ ४४	१ २९	१९ २४	० ३४	१० २९	२२ ३६	१८ २१	० ४१	१९ ४७	० २०	९ २४	११ ५८
२२	२० ५७	० ५९	१३ ९	२ ५८	२ ५४	१ ३०	१८ १७	० ४३	१० २८	२ ३७	१८ २३	० ४१	१९ ४८	० २०	९ २५	११ ५६
२६	२० २४	१ १	१४ १७	१ ४६	३ ५	१ ३१	१७ १	० ५१	१० २६	२ ३८	१८ २५	० ४१	१९ ४९	० २०	९ २७	११ ५४
३०	१९ ४९	१ ३	१४ ४५	-० ३६	३ १७	१ ३२	१५ ३७	० ५९	१० २४	२ ३९	१८ २८	० ४१	१९ ५१	० २०	९ ३०	११ ५२
सितं.३	१९ १२	१ ५	१४ २३	+० २४	३ २९	१ ३२	१४ ७	१ ५	१० २१	२ ३९	१८ ३०	० ४१	१९ ५२	० २०	९ ३३	११ ५०
७	१८ ३२	१ ७	१३ ९	१ ९	३ ४२	१ ३३	१२ ३०	१ ११	१० १८	२ ४०	१८ ३२	० ४०	१९ ५३	० २०	९ ३५	११ ४८
११	१७ ५१	१ ९	११ ९	१ ३६	३ ५४	१ ३३	१० ४७	१ १६	१० १४	२ ४१	१८ ३३	० ४०	१९ ५४	० २०	९ ३७	११ ४६
१५	१७ ९	१ १०	८ ३४	१ ४८	४ ७	१ ३४	९ ०	१ २०	१० १०	२ ४२	१८ ३५	० ४०	१९ ५५	० २०	९ ४०	११ ४४
१९	१६ २५	१ १२	५ ३७	१ ४७	४ २०	१ ३४	७ ९	१ २३	१० ५	२ ४३	१८ ३६	० ४०	१९ ५५	० २०	९ ४२	११ ४३
२३	१५ ३९	१ १४	+२ ३०	१ ३७	४ ३२	१ ३४	५ १४	१ २५	१० ०	२ ४३	१८ ३७	० ४०	१९ ५६	० २०	९ ४४	११ ४१
२७	१४ ५२	१ १५	-० ३९	१ १९	४ ४५	१ ३४	३ १७	१ २६	९ ५५	२ ४४	१८ ३८	० ४०	१९ ५६	० २०	९ ४६	११ ३९
अक्तू.१	१४ ४	१ १७	३ ४५	० ५७	४ ५६	१ ३३	+१ १८	१ २६	९ ४९	२ ४५	१८ ४०	० ४०	१९ ५७	० २०	९ ४९	११ ३८
५	१३ १५	१ १९	६ ४६	० ३१	५ ७	१ ३३	-० ४२	१ २५	९ ४४	२ ४५	१८ ४०	० ४०	१९ ५७	० २०	९ ५२	११ ३६
९	१२ २४	१ २१	९ ३८	+० ४	५ १७	१ ३३	२ ४३	१ २३	९ ३८	२ ४५	१८ ४१	० ४०	१९ ५७	० १९	९ ५५	११ ३४
१३	११ ३३	१ २२	१२ २०	-० २४	५ २७	१ ३२	४ ४२	१ १९	९ ३१	२ ४६	१८ ४१	० ४०	१९ ५७	० १९	९ ५७	११ ३३
१७	१० ४२	१ २४	१४ ५१	० ५१	५ ३५	१ ३१	६ ४०	१ १५	९ २५	३ ४६	१८ ४१	० ४०	१९ ५७	० १९	१० १	११ ३२
२१	९ ४९	१ २५	१७ १०	१ १८	५ ४२	१ ३१	८ ३७	१ १०	९ १९	२ ४६	१८ ४१	० ३९	१९ ५७	० १९	१० ३	११ ३०
२५	८ ५७	१ २७	१९ १४	१ ४३	५ ४८	१ ३०	१० ३०	१ ४	९ १३	२ ४६	१८ ४१	० ३९	१९ ५७	० १९	१० ५	११ २९
२९	८ ३	१ २९	२१ ३	२ ५	५ ५३	१ २९	१२ १९	० ५७	९ ७	२ ४६	१८ ४१	० ३९	१९ ५७	० १९	१० ७	११ २८
नवं.२	७ १०	१ ३०	२२ ३५	२ २४	५ ५६	१ २८	१४ ३	० ५०	९ १	२ ४५	१८ ४१	० ३९	१९ ५७	० १९	१० ९	११ २७
६	६ १७	१ ३२	२३ ४८	२ ३७	५ ५९	१ २७	१५ ४२	० ४२	८ ५५	२ ४५	१८ ३८	० ३९	११ ५५	० १९	१० १२	११ २६
१०	५ २३	१ ३४	२४ ४०	२ ४३	५ ५९	१ २७	१७ १४	० ३३	८ ४९	२ ४५	१८ ३७	० ३९	१९ ५५	० १९	१० १५	११ २५
१४	४ ३०	१ ३५	२५ ७	२ ४०	५ ५९	१ २६	१८ ३९	० २४	८ ४४	२ ४४	१८ ३६	० ३९	१९ ५४	० १९	१० १६	११ २४
१८	३ ३६	१ ३७	२५ ७	२ २२	५ ५७	१ २७	१९ ५६	० १५	८ ३९	२ ४४	१८ ३४	० ३९	१९ ५३	० १९	१० १८	११ २३
२२	+२ ४३	+१ ३८	-२४ ३५	-१ ४४	-५ ५४	-१ २४	-२१ ४	+० ६	+८ ३५	-२ ४३	-१८ ३३	-० ३९	-१९ ५२	+० १९	-१० २०	+११ २३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टे. टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
१९९८-९९	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
नवं. २६	+१ ५१	+१ ४०	-२३ २४	-० ४३	-५ ५०	-१ २३	-२२ ३	-० ४	+८ ३१	-२ ४२	-१८ ३१	-० ३८	-१९ ५१	+० १८	-१० २२	+११ २२
३०	० ५९	१ ४१	२१ २४	+० ३६	५ ४४	१ २२	२२ ५१	० १४	८ २७	२ ४१	१८ २८	० ३८	१९ ४९	० १९	१० २४	११ २२
दिसं. ४	+० ७	१ ४३	१९ ३१	१ ५०	५ ३८	१ २१	२३ २८	० २३	८ २४	२ ४०	१८ २६	० ३८	१९ ४८	० १९	१० २६	११ २२
८	-० ४३	१ ४५	१८ ५	२ ३५	५ ३०	१ २०	२३ ५४	० ३३	८ २२	२ ३९	१८ २४	० ३८	१९ ४८	० १९	१० २७	११ २२
१२	१ ३३	१ ४६	१७ ४२	२ ४७	५ २१	१ १९	२४ ८	० ४२	८ २०	२ ३८	१८ २०	० ३८	१९ ४५	० १९	१० २९	११ २२
१६	२ २२	१ ४८	१८ १३	२ ३५	५ १०	१ १८	२४ १०	० ५०	८ १९	२ ३७	१८ १७	० ३८	१९ ४४	० १९	१० ३०	११ २२
२०	३ १०	१ ४९	१९ १३	२ ११	४ ५९	१ १७	२४ ०	० १८	८ १८	२ ३६	१८ १५	० ३८	१९ ४३	० १९	१० ३१	११ २२
२४	३ ५७	१ ५१	२० २४	१ ४१	४ ४७	१ १६	२३ ३९	१ ६	८ १८	२ ३५	१८ १२	० ३८	१९ ४०	० १९	१० ३२	११ २२
२८	४ ४३	१ ५२	२१ ३३	१ ८	४ ३४	१ १५	२३ ५	१ १३	८ १९	२ ३४	१८ ९	० ३८	१९ ३९	० १९	१० ३३	११ २२
जन. १ '९९	५ २७	१ ५४	२२ ३४	० ३६	४ १९	१ १४	२२ २१	१ १९	८ २०	२ ३३	१८ ५	० ३८	१९ ३७	० १८	१० ३४	११ २३
५	६ १०	१ ५६	२३ २०	+० ४	४ ४	१ १३	२१ २६	१ २४	८ २२	२ ३२	१८ २	० ३८	१९ ३५	० १८	१० ३५	११ २३
९	६ ५१	१ ५७	२३ ५०	-० २५	३ ४९	१ १३	२० २०	१ २८	८ २४	२ ३०	१७ ५६	० ३८	१९ ३३	० १८	१० ३६	११ २४
१३	७ ३१	१ ५९	२४ ०	० ५२	३ ३२	१ १२	१९ ५	१ ३१	८ २८	२ २९	१७ ५४	० ३८	१९ ३२	० १८	१० ३६	११ २४
१७	८ ९	२ ०	२३ ५०	१ १५	३ १५	१ ११	१७ ४२	१ ३३	८ ३१	२ २८	१७ ५०	० ३८	१९ ३०	० १८	१० ३६	११ २५
२१	८ ४५	२ १	२३ १९	१ ३५	२ ५६	१ ११	१६ १०	१ ३४	८ ३६	२ २७	१७ ४६	० ३८	१९ २८	० १८	१० ३६	११ २६
२५	९ २०	२ ३	२२ २५	१ ५०	२ ३८	१ १०	१४ ३१	१ ३४	८ ४१	२ २६	१७ ४२	० ३८	१९ २६	० १८	१० ३६	११ २७
२९	९ ५३	२ ४	२१ ७	२ ०	२ १८	१ ९	१२ ४७	१ ३३	८ ४६	२ २५	१७ ३८	० ३८	१९ २५	० १८	१० ३६	११ २७
फर २	१० २३	२ ६	१९ २६	२ ५	१ ५९	१ ९	१० ५६	१ ३१	८ ५२	२ २४	१७ ३४	० ३८	१९ २२	० १७	१० ३६	११ २८
६	१० ५२	२ ७	१७ २२	२ ३	६ ३८	१ ८	९ २	१ २७	८ ५९	२ २३	१७ ३०	० ३८	१९ २०	० १७	१० ३६	११ २९
१०	११ १८	२ ८	१४ ५३	१ ५३	१ १८	१ ८	७ ३	१ २३	९ ६	२ २२	१७ २६	० ३८	१९ १८	० १७	१० ३५	११ ३१
१४	११ ४३	२ ९	१२ ३	१ ३४	-० ५६	१ ८	५ २	१ १७	९ १३	२ २१	१७ २२	० ३८	१९ १७	० १७	१० ३४	११ ३२
१८	१२ ५	२ १०	८ ५४	१ ६	-० ३५	१ ७	२ ५८	१ १०	९ २१	२ २०	१७ १९	० ३८	१९ १५	० १७	१० ३३	११ ३३
२२	१२ २४	२ ११	५ ३३	-० २६	-० १३	१ ७	-० ५३	१ ३	९ २९	२ १९	१७ १६	० ३८	१९ १३	० १७	१० ३२	११ ३४
२६	१२ ४१	२ ११	-२ १३	+० २३	+० ९	१ ६	+१ १२	० ५४	९ ३८	२ १८	१७ १२	० ३८	१९ ११	० १७	१० ३२	११ ३५
मार्च २	१२ ५६	२ ११	+० ४७	१ १९	० ३१	१ ६	३ १७	० ४४	९ ४६	२ १७	१७ ८	० ३८	१९ ९	० १७	१० ३१	११ ३७
६	१३ ७	२ ११	३ ७	२ १५	० ५४	१ ६	५ २१	० ३४	९ ५५	२ १४	१७ ४	० ३८	१९ ७	० १७	१० ३०	११ ३८
१०	१३ १७	२ ११	४ २४	३ ३	१ १७	१ ६	७ २४	० २३	१० ५	२ १६	१७ ०	० ३८	१९ ५	० १७	१० २९	११ ३९
१४	१३ २३	२ १०	४ २९	३ ३२	१ ३९	१ ५	९ २३	-० ११	१० १४	२ १५	१६ ५७	० ३८	१९ ४	० १७	१० २८	११ ४०
१८	१३ २६	२ ९	३ २२	३ ३२	२ २	१ ५	११ १९	+० २	१० २४	२ १४	१६ ५४	० ३८	१९ २	० १७	१० २७	११ ४२
२२	-१३ २७	+२ ७	+१ २९	+३ २	+२ २५	-१ ५	+१३ १२	+० १४	+१० ३४	-२ १४	-१६ ५१	-० ३८	-१९ १	+० १७	-१० २५	+११ ४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (संवत् २०५५ वि.)

सूर्य-चार

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख ९८-९९ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च २८	उ. भा ४	अग. ६	आश्ले. २	दिसं. १३	ज्ये. ४
अप्रै. १	रे. १	१०	३	१६	मूल १धनु.
४	२	१३	४	१९	२
७	३	१७	मघा १ सिं.	२३	३
११	४	२०	२	२६	४
१४	अश्वि. १मे.	२४	३	२९	पू.षा.१
१७	२	२७	४	जन.१	२
२०	३	३१	पू.फा. १	५	३
२४	४	सितं. ३	२	८	४
२७	भर. १	६	३	११	उ. षा. १
मई १	२	१०	४	१४	२ मकर
४	३	१३	उ. फा. १	१८	३
८	४	१७	२ कन्या	२१	४
११	कृ. १	२०	३	२४	श्रव. १
१५	२ वृष	२३	४	२७	२
१८	३	२७	हस्त १	३१	३
२२	४	अक्टू. १	२	फर. ३	४
२५	रो. १	४	३	६	धनि. १
२९	२	७	४	१०	२
जून १	३	११	चित्रा १	१३	३ कुम्भ
४	४	१४	२	१६	४
८	मृ. १	१७	३ तुला	१९	शत. १
११	२	२०	४	२२	२
१५	३ मि.	२४	स्वा. १	२६	३
१८	४	२४	२	मार्च १	४
२२	आर्द्रा. १	३१	३	४	पू.भा. १
२५	२	नवं. ३	४	८	२
२९	३	६	विशा. १	११	३
जुला. २	४	१०	२	१५	४ मी.
६	पुन. १	१३	३	१८	उ. भा. १
१०	२	१६	४ वृश्चि.		
१३	३	२०	अनु. १		
जुला. १६	४ कर्क	२३	२		
२०	पुष्य १	२६	३		
२३	२	२९	४		
२७	३	दिसं.३	ज्ये. १		
३०	४	६	२		
अग. ३	आश्ले. १	९	३		

मंगल चार सन् १९९८ ई.

मार्च २७	रेव. ३
अप्रै. २	४
६	अश्वि. १ मे
९	२

मंगल - चार

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख ९८-९९ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. १३	अश्वि.३	अक्टू. १९	पू.फा. १
१८	४	२५	२
२२	भर. १	३०	३
२७	२	नवं. ५	४
मई १	३	११	उ. फा. १
६	४	१६	२ कन्या
११	कृ. १	२२	३
१५	२वृष	२८	४
२०	३	दिसं. ४	हस्त १
२४	४	१०	२
२९	रोहि. १	१६	३
जून ३	२	२३	४
८	३	२९	चित्रा १
१२	४	जन. ५	२
१६	मृग. १	१२	३ तुला
२२	२	२०	४
२७	३मिथुन	२८	स्वा. १
जुला. २	४	फर. ५	२
४	आर्द्रा १	१७	३
१२	२	मार्च १	४
१७	३	१९	वक्री
२२	४		
२७	पुन १		
अग. १	२		
६	३		
११	४ कर्क		
१६	पुष्य १		
२१	२		
२७	३		
सितं. १	४		
६	आश्ले. १		
११	२		
१७	३		
२२	४		
२७	मघा १ सिं.		
अक्टू. ३	२		
८	३		
१४	४		

बुध चार सन् १९९८ ई.

मार्च२३	रेव. ४
२८	वक्री
अप्रै. १	रेव. ३
६	२
१०	१
१६	उ.भा. ४
२०	मार्गी
२४	रेव. १
३०	२
मई ४	३
८	४
१०	अश्वि. १मेष
१३	२
१५	३
१७	४

बुध - चार

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख ९८-९९ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मई २०	भर. १	अग. २८	आश्ले. ३	नवं. ३०	अनु. ४
२२	२	सितं. १	४	दिसं. ३	३
२४	३	४	मघा १	६	२
२५	४	६	२	११	मार्गी
२७	कृ. १	८	३	१७	अनु. ३
२९	२ वृष	१०	४	२१	४
३१	३	१२	पू.फा. १	२४	ज्ये. १
जून १	४	१४	२	२६	२
३	रोहि. १	१६	३	२९	३
५	२	१७	४	३१	४
६	३	१९	उ.फा. १	जन. ३	मूल१ धनु
८	४	२१	२ कन्या	५	२
९	मृग. १	२३	३	७	३
११	२	२५	४	९	४
१२	३ मिथुन	२६	हस्त १	१२	पू.षा. १
१४	४	२८	२	१४	२
१५	आर्द्रा १	३०	३	१६	३
१७	२	अक्टू. २	४	१८	४
१८	३	४	चित्रा १	२०	उ.षा. १
२०	४	६	२	२२	२ मकर
२२	पुन. १	८	३ तुला	२४	३
२३	२	१०	४	२६	४
२५	३	१२	स्वाती १	२८	श्रवण १
२७	४ कर्क	१४	२	३०	२
२९	पुष्य. १	१६	३	फर. १	३
जुला. १	२	१९	४	३	४
३	३	२१	विशा. १	५	धनि. १
५	४	२३	२	७	२
८	आश्ले. १	२५	३	९	३कुम्भ
१०	२	२८	४ वृश्चि.	११	४
१३	३	३०	अनु. १	१३	शत. १
१६	४	नवं. २	२	१५	२
२०	मघा१ सिं.	४	३	१६	३
२६	२	७	४	१८	४
३१	वक्री	१०	ज्ये. १	२०	पू.भा. १
अग. ५	मघा १	१४	२	२२	२
१०	आश्ले. ४कर्क	१९	३	२४	३
१४	३	नवं. २१	वक्री	२६	४मीन
१९	२	२४	ज्ये. २	२८	उ.भा. १
२४	मार्गी	२८	१		

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरण-चार (संवत् २०५५ वि.)

बुध-चार

तारीख १९९९ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ३	उ. भा. २
८	३
१०	वक्री
१८	उ.भा. २
२१	१

गुरु चार १९९८-९९

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै.३	पू.भा. १
१९	२
मई ६	३
२६	४मीन
जून २४	उ.भा. १
जुला.१८	वक्री
अग. १०	पू.भा. ४
सितं. १०	३कुम्भ
अक्तू. ६	२
नवं. १३	मार्गी
दिसं. २१	पू.भा. ३
जन.१२	४ मीन
३०	उ.भा. १
फर. १५	२
मार्च २	३
१६	४

शुक्र चार १९९८ ई.

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मार्च२८	धनि. २
३१	३कुम्भ
अप्रै.३	४
६	शत. १
मई १०	२
१३	३
१६	४
१९	पू. भा. १
अप्रै. २२	२
२५	३

शुक्र-चार

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २७	४ मीन
मई १	उ.भा. १
४	२
७	३
१०	४
१३	रेव. १
१६	२
१९	३
२२	४
२४	अश्वि.१में
२७	२
३०	३
जून. २	४
५	भर. १
८	२
११	३
१३	४
१६	कृत्ति. १
१९	२ वृष
२२	३
२५	४
२७	रोहि. १
३०	२
जुला. ३	३
६	४
९	मृग १
११	२
१४	३ मिथुन
१७	४
२०	आर्द्रा १
२३	२
२६	३
२८	४
३१	पुन. १
अग.३	२
५	३
८	४ कर्क
११	पुष्य १

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अग.१४	पुष्य २
१६	३
१९	४
२२	आश्ले. १
२५	२
२७	३
३०	४
सितं. २	मघा १सिं.
४	२
७	३
१०	४
१२	उ.फा. १
१५	२
१८	३
२०	४
२३	उ.फा. १
२६	२ कन्या
२८	३
अक्तू. १	४
४	हस्त १
७	२
९	३
१२	४
१४	चित्रा १
१७	२
२०	३ तुला
२२	४
२५	स्वाती १
२८	२
३१	३
नवं. २	४
५	विशा. १
७	२
१०	३
१३	४ वृश्चि.
१५	अनु. १
१८	२
२१	३
२३	४

तारीख १९९८-९९ई.	नक्षत्र चरण राशि
नव. २६	ज्ये. १
२९	२
दिसं. १	३
४	४
७	मूल१धनु.
९	२
१२	३
१५	४
१७	पू.षा. १
२०	२
२३	३
२५	४
२८	उ. षा. १
३१	२मकर
जन. २	३
५	४
७	श्रव. १
१०	२
१३	३
१५	४
१८	धनि. १
२१	२
२४	३ कुम्भ
२६	४
२९	शत. १
३१	३
फर. ३	३
६	४
९	पू.भा. १
११	२
१४	३
१७	४ मीन
१९	उ.भा. १
२२	२
२५	३
२७	४
मार्च २	रेव. १
५	२

तारीख १९९८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ८	रेव. ३
१०	४
१३	अश्वि.१मे.
१६	२
१९	३

शनिचार १९९८-९९

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै.१७	अश्वि.१मे.
मई. १४	२
जून १४	३
अग. १५	वक्री
अक्तू.१९	अश्वि. २
दिसं. ८	१
२९	मार्गी
जन. १९	अश्वि. २
मार्च. ६	३

राहु चार १९९८-९९

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ४	मघा ४
जुला. ६	३
सितं. ७	२
नवं. ९	१
जन.११	आश्ले.४कर्क
मार्च १५	३

केतुचार (१९९८-९९ ई.)

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ४	शत. २
जुला. ६	१
सितं. ७	धनि.४
नवं. ९	३
जन. ११	२ मकर
मार्च १५	१

यूरेनस चार

तारीख १९९७ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मई १७	वक्री
अग. १०	श्रव. २
अक्तू.१९	मार्गी

नेपच्यून-चार १९९८ ई.

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ४	वक्री
अग. २	उ.षा. ३
अक्तू. ११	मार्गी
दिसं. १५	उ.षा. ४

प्लूटो-चार (१९९८ ई.)

तारीख	
अग. १६	मार्गी
अप्रै.२	वक्री

ग्रहों के वक्र मार्ग

ग्रह	तारीख	वक्र-मार्गी
बुध	२८ मार्च '९८	वक्री
"	२० अप्रै.	मार्गी
"	३१ जुला.	वक्री
"	२३ अग.	मार्गी
"	२१ नवं.	वक्री
"	११ दिसं.	मार्गी
"	१० मार्च '९९	वक्री
गुरु	१८ जुला. '९८	वक्री
"	१३ नवं.	मार्गी
शनि	१५ अग. '९८	वक्री

ग्रहों का अस्तोदय

ग्रह	तारीख	दिशा	उदय अस्त
मंगल	१६ जुला. '९८	पूर्व	उदय
बुध	२९ मार्च '९८	पश्चिम	अस्त
"	१४ अप्रै.	पूर्व	उदय
"	३० मई	"	अस्त
"	२१ जून	पश्चिम	उदय
"	६ अग.	"	अस्त
"	२३ अग.	पूर्व	उदय
"	११ सितं.	"	अस्त
"	१५ अक्तू.	पश्चिम	उदय
"	२५ नवं.	"	अस्त
"	८ दिसं.	पूर्व	उदय
"	१३ जन. '९९	"	अस्त
"	२० फर.	पश्चिम	उदय
"	७ मार्च	"	उस्त
शुक्र	७ अक्तू.	पूर्व	अस्त
"	२९ नवं.	पश्चिम	उदय
शनि	१ मई	पूर्व	उदय

ग्रहों के उदयास्त

ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के होते हैं -
१,दैनिक उदयास्त।
२,सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त।

पृथ्वी के अक्षभ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य एवं चन्द्र की भाँति प्रतिदिन पूर्व क्षितिज में उदय होकर पश्चिम क्षितिज में अस्त होता रहता है, इसे ही ग्रहों का दैनिक उदयास्त कहा जाता है। सूर्य, चन्द्र के दैनिक उदयास्त काल ही पंचांगों में दिए जाते हैं। मंगल आदि ग्रहों के दैनिक उदयास्तों का फलित एवं धार्मिक कृत्यों में कोई विशेष उपयोग न होने से उन्हें पंचागों में नहीं दिया जाता।

सूर्य के समीप आने से मंगलादि पांच ताराग्रहों के कुछ दिनों के लिए सूर्य की प्रभा में लुप्त (अदृश्य) होने को सूर्य कैन्द्रिक अस्त कहा जाता है। जब वे अपनी एवं सूर्य की गति के कारण सूर्य के प्रभा क्षेत्र से बाहर निकल आते हैं तब वे उदित (दृश्य) कहलाते हैं। उनके इस लोप और दर्शन को सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त कहा जाता है। फलित शास्त्र एवं धार्मिक कृत्यों में ग्रहों के इस सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त का बहुधा प्रयोग होने से पंचांगों में इन पंचताराओं के सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त का निर्देश रहता है। इस पृष्ठ पर दिए गए भौमादि ग्रहों के उदयास्त की तारीखें सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त वाली ही हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (सं. २०५५ वि.)

(भा. स्टै. टा.)

सन् १९९८ ई.	चैत्र शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
मार्च २९	२	२०	९
३०	३	२१	१६
३१	४	२२	२२
अप्रै. १	५	२३	२५
२	६	–	–
३	७	०	२२
४	८	१	१६
५	९	२	४
६	१०	२	४८
७	११	३	२८
८	१२	४	४
९	१३	४	३९
१०	१४	५	१२
११	१५	५	४५

सन् १९९८ ई.	वैशा. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
अप्रैल १२	१	१९	१२
१३	१	२०	०४
१४	२	२०	५७
१५	३	२१	५०
१६	४	२२	४३
१७	५	२३	३६
१८	६	–	–
१९	७	०	२७
२०	८	१	१६
२१	९	२	३
२२	१०	२	४७
२३	११	३	३१
२४	१३	४	१३
२५	१४	४	५६
२६	३०	५	४०

सन् १९९८ ई.	वैशा. शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
अप्रैल २७	१	२०	०
२८	२	२१	६
२९	३	२२	९
३०	५	२३	७
मई १	६	२३	५९
२	७	–	–
३	८	०	४५
४	९	१	२७
५	९	२	५
६	१०	२	४१
७	११	३	१४
८	१२	३	४७
९	१३	४	१९
१०	१४	४	५३
११	१५	५	२८

सन् १९९८ ई.	ज्ये. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
मई १२	१	१९	४६
१३	२	२०	४०
१४	३	२१	३३
१५	४	२२	२४
१६	५	२३	१४
१७	६	–	–
१८	७	०	१
१९	८	०	४५
२०	९	१	२८
२१	१०	२	९
२२	११	२	५०
२३	१२	३	३२
२४	१३	४	१५
२५	३०	५	०२

सन् १९९८ ई.	ज्ये. शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
मई २६	१	१९	५०
२७	२	२०	५१
२८	३	२१	४८
२९	४	२२	३८
३०	५	२३	२३
३१	६	–	–
जून १	७	०	४
२	८	०	४१
३	९	१	१५
४	१०	१	४८
५	११	२	२०
६	१२	२	५३
७	१२	३	२८
८	१३	४	०५
९	१४	४	४५
१०	१५	५	२९

सन् १९९८ ई.	आ. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
जून ११	१	२०	२१
१२	२	२१	१२
१३	३	२२	०
१४	४	२२	४६
१५	५	२३	२९
१६	६	–	–
१७	८	०	९
१८	९	०	४९
१९	१०	१	२९
२०	११	२	११
२१	१२	२	५४
२२	१३	३	४१
२३	१४	४	३२
२४	३०	५	२७

सन् १९९८ ई.	आ. शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
जून २५	१	२०	२७
२६	२	२१	१६
२७	३	२१	५९
२८	४	२२	३८
२९	५	२३	१४
३०	६	२३	४८
जुलाई १	७	–	–
२	८	०	२१
३	९	०	५३
४	१०	१	२७
५	११	२	०३
६	१२	२	४१
७	१३	३	२३
८	१४	४	१०
९	१५	५	०

सन् १९९८ ई.	श्राव. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
जुलाई १०	१	१९	५६
११	२	२०	४४
१२	३	२१	२८
१३	४	२२	१०
१४	५	२२	५१
१५	६	२३	३१
१६	७	–	–
१७	८	०	११
१८	१०	०	५३
१९	११	१	३७
२०	१२	२	२५
२१	१३	३	१७
२२	१४	४	१२
२३	३०	५	१९

सन् १९९८ ई.	श्राव. शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
जुलाई २४	१	१९	५३
२५	२	२०	३४
२६	३	२१	१२
२७	४	२१	४७
२८	५	२२	२०
२९	६	२२	५३
३०	७	२३	२६
३१	८	२४	०
अगस्त १	८	–	–
२	९	०	३७
३	१०	१	१७
४	११	२	१
५	१२	२	५०
६	१३	३	४४
७	१४	४	४२
८	१५	५	४४

सन् १९९८ ई.	भाद्र कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
अग. ९	२	२०	७
१०	३	२०	४९
११	४	२१	३०
१२	५	२२	११
१३	६	२२	५३
१४	७	२३	३७
१५	८	–	–
१६	९	०	२३
१७	१०	१	१३
१८	११	२	०६
१९	१२	३	१
२०	१३	३	५८
२१	१४	४	५५
२२	३०	५	५१

सन् १९९८ ई.	भाद्र शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
अगस्त २३	१	१९	४५
२४	२	२०	१९
२५	३	२०	५२
२६	४	२१	२५
२७	५	२१	५९
२८	६	२२	३४
२९	७	२३	१२
३०	८	२३	५४
३१	९	–	–
सितं. १	१०	०	५०
२	११	१	३०
३	१२	२	२६
४	१३	३	२५
५	१४	४	२८
६	१५	५	३३

सन् १९९८ ई.	आश्वि. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
सितं. ७	१	१९	२५
८	२	२०	७
९	३	२०	५०
१०	५	२१	३४
११	६	२२	२०
१२	७	२३	१०
१३	८	–	–
१४	९	०	२
१५	१०	०	५७
१६	११	१	५२
१७	१२	२	४९
१८	१३	३	४५
१९	१४	४	४०
२०	३०	५	३४

सन् १९९८ ई.	आश्वि. शु.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
सितं. २१	१	१८	५३
२२	२	१९	२५
२३	३	१९	५९
२४	४	२०	३३
२५	४	२१	१०
२६	५	२१	५०
२७	६	२२	३३
२८	७	२३	२०
२९	८	–	–
३०	९	०	१२
अक्तू. १	१०	१	०८
२	११	२	०८
३	१२	३	११
४	१३	४	१७
५	१५	५	२४

सन् १९९८ ई.	कार्ति. कृ.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.
अक्तू. ६	१	१८	४०
७	२	१९	२५
८	३	२०	१२
९	४	२१	२
१०	५	२१	५५
११	६	२२	५१
१२	८	२३	४७
१३	९	–	–
१४	१०	०	४४
१५	११	१	४०
१६	११	२	३५
१७	१२	३	३०
१८	१३	४	२३
१९	१४	५	१५
२०	३०	६	०७

सन् १९९८ ई.	कार्ति. शु.	चन्द्रास्त घ.	चन्द्रास्त मि.
अक्तू. २१	१	१८	३४
२२	२	१९	१०
२३	३	१९	४८
२४	४	२०	३०
२५	५	२१	१५
२६	६	२२	५
२७	७	२२	५८
२८	८	२३	५४
२९	९	–	–
३०	१०	०	५४
३१	११	१	५६
नवं. १	१२	३	०
२	१३	४	०७
३	१४	५	१५
४	१५	६	२४

सन् १९९८ ई.	मार्ग. कृ.	चन्द्रोदय घ.	चन्द्रोदय मि.
नव. ५	१	१८	४८
६	३	१९	४१
७	४	२०	३८
८	५	२१	३६
९	६	२२	३५
१०	७	२३	३३
११	८	–	–
१२	९	०	३०
१३	१०	१	२५
१४	११	२	१८
१५	१२	३	१०
१६	१३	४	०३
१७	१४	४	५५
१८	१४	५	४७
१९	३०	६	३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (सं. २०५५ वि.)

(भा. स्टै. टा.)

सन् १९९८ ई.	मार्ग. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
नवं. २०	१	१८	२८
२१	२	१९	१३
२२	३	२०	०१
२३	४	२०	५३
२४	५	२१	४८
२५	६	२२	४५
२६	७	२३	४४
२७	८	–	–
२८	९	०	४५
२९	१०	१	४८
३०	११	२	५३
दिसं. १	१२	४	०
२	१४	५	८
३	१५	६	१७

सन् १९९८ ई.	पौष कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
दिसं. ४	१	१८	१९
५	२	१९	१८
६	३	२०	१८
७	४	२१	१९
८	५	२२	१८
९	६	२३	१६
१०	७	–	–
११	८	०	११
१२	९	१	०४
१३	१०	१	५७
१४	११	२	४९
१५	१२	३	४१
१६	१३	४	३३
१७	१४	५	२६
१८	३०	६	१९

सन् १९९८ ई.	पौष शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
दिस. १९	१	१७	५७
२०	२	१८	४८
२१	३	१९	४३
२२	४	२०	४०
२३	५	२१	३९
२४	६	२२	३९
२५	७	२३	३९
२६	८	–	–
२७	९	०	४१
२८	१०	१	४५
२९	११	२	५०
३०	१२	३	५६
३१	१३	५	०२
जन'.९९ १	१४	६	०८
२	१५	७	९

सन् १९९९ ई.	माघ कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
जन. ३	२	१९	०
४	३	२०	१
५	४	२१	१
६	५	२१	५९
७	६	२२	५४
८	७	२३	४८
९	८	–	–
१०	८	०	४०
११	९	१	३३
१२	१०	२	२५
१३	११	३	१८
१४	१२	४	१०
१५	१३	५	३
१६	१४	५	५६
१७	३०	६	४६

सन् १९९९ ई.	माघ शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
जन. १८	१	१८	३२
१९	२	१९	३१
२०	३	२०	३२
२१	४	२१	३४
२२	५	२२	३५
२३	६	२३	३८
२४	७	–	–
२५	८	०	४१
२६	९	१	४५
२७	११	२	४९
२८	१२	३	५३
२९	१३	४	५४
३०	१४	५	५२
३१	१५	६	४४

सन् १९९९ ई.	फाल्गु. कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
फर. १	१	१८	४४
२	२	१९	४३
३	३	२०	४१
४	४	२१	३६
५	५	२२	३०
६	६	२३	२३
७	७	–	–
८	८	०	१५
९	९	१	०८
१०	९	२	०
११	१०	२	५३
१२	११	३	४५
१३	१२	४	३६
१४	१३	५	२६
१५	१४	६	१३
१६	३०	६	५८

सन् १९९९ ई.	फाल्गु. शु.	चन्द्रास्त घं.	मि.
फर. १७	१	१९	२२
१८	२	२०	२६
१९	४	२१	३०
२०	५	२२	३४
२१	६	२३	३८
२२	७	–	–
२३	८	०	४३
२४	९	१	४६
२५	१०	२	४७
२६	११	३	४४
२७	१२	४	३७
२८	१३	५	२५
मार्च १	१४	६	९
२	१५	६	४९

सन् १९९९ ई.	चैत्र कृ.	चन्द्रोदय घं.	मि.
मार्च ३	१	१९	२४
४	२	२०	१९
५	३	२१	१३
६	४	२२	६
७	५	२२	५८
८	६	२३	५१
९	७	–	–
१०	८	०	४३
११	९	१	३५
१२	१०	२	२६
१३	११	३	१५
१४	१२	४	३
१५	१३	४	४८
१६	१४	५	३२
१७	३०	६	१४

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं.२०५५वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
५°	२९ मार्च	द. ६	२७ अप्रै.	उ. ७	२७ मई	उ.१३	२५ जून	उ. १९	२५ जुला.	उ. २०	२३ अग.	उ. २०
१५°	" "	उ. ४	" "	उ.१८	" "	उ.२३	" "	उ. २९	" "	उ. ३०	" "	उ. ३०
२५°	" "	उ. १५	" "	उ. २८	" "	उ.३३	" "	उ. ३९	" "	उ. ४०	" "	उ. ४१
३५°	" "	उ. २५	" "	उ. ३८	" "	उ.४३	* "	उ. ४९	" "	उ. ५०	२४ अग.	उ. ५३

मास	आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९८ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (१९९९ ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
५°	२२ सितं.	उ. १७	२१ अक्तू.	उ. ३	२०नवं.	द. २	२०दिसं.	द. ५	१९जन.	द. ८	१७फर.	द. ७
१५°	" "	उ. २७	" "	उ. १३	" "	उ. ८	" "	उ. ५	" "	उ. ३	" "	उ. ३
२५°	" "	उ. ३७	# "	उ. २३	" "	उ. १८	" "	उ.१६	" "	उ.१४	" "	उ. १३
३५°	" "	उ. ४७	२२ अक्तू.	उ. ४५	" "	उ. २८	" "	उ.२६	" "	उ.२४	" "	उ.२३

* कश्मीर के उत्तरी छोर में २५ जून को चन्द्र दर्शन की सम्भावना कम ही है।
नोट : यहाँ दिए गए उन्नत शृंग के अंश लगभग हैं।

२५ से अधिक अक्षांश वाले स्थलों पर चन्द्रदर्शन २२ अक्तूबर को ही होगा । २५ अक्षांश वाले स्थलों पर भी २१ अक्तू. को चन्द्र दर्शन की सम्भावना कम ही है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै.टा.]

वैशाख

मास	अंग्रेजी तारीखें	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ७	१६ २७	१८ ४४	२१ ६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ३	१६ २३	१८ ४०	२१ २	२३ २२	१ २७	३ ८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ०	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ७	१८ २५	२० ४६	२३ ६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ७	११ २१	१३ ४३	१६ ३	१८ २१	२० ४२	२३ २	१ ७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ८	९ ३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ३	२ ४४	४ ९	५ ३१
	२१	९	७ ४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ५	५ २८
अप्रैल	२२	१०	७ ०	८ ५५	११ ९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ १	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ५	१३ २७	१५ ४७	१८ ५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ १	१३ २३	१५ ४३	१८ १	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ८	१५ २८	१७ ४५	२० ७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ०
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ४	१५ २४	१७ ४१	२० ३	२२ २३	० २८	२ ९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ०	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ५	३ ३०	४ ५२
	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ १	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ८	१७ २६	१९ ४७	२२ ७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ८	१० २२	१२ ४४	१५ ४	१७ २२	१९ ४३	२२ ३	० ८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ९	८ ४	१० १८	१२ ४०	१५ ०	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ४	१ ४५	३ १०	४ ३२
मई	६	२४	६ ५	८ ०	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ०	१ ४१	३ ६	४ २९
	७	२५	६ १	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ २	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ६	१२ २८	१४ ४८	१७ ६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० २	१२ २४	१४ ४४	१७ २	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ९	१४ २९	१६ ४६	१९ ८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ १
	१४ ज्ये.१		५ ३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेजी तारीखें	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ५	१४ २५	१६ ४२	१९ ४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ १	१४ २१	१६ ३९	१९ ०	२१ २०	२३ २५	१ ६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ २	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ९	१६ २७	१८ ४८	२१ ८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ९	९ २३	११ ४५	१४ ५	१६ २३	१८ ४४	२१ ४	२३ ९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ५	९ १९	११ ४१	१४ १	१६ १९	१८ ४०	२१ १	२३ ५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ६
	२१	८	७ १	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ १	० ४२	२ ७	३ ३०	५ २
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ७	११ २९	१३ ४९	१६ ७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
मई	२४	११	६ ४९	९ ३	११ २५	१३ ४५	१६ ३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४२	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ २	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ६	१३ २६	१५ ४३	१८ ५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ २	१३ २२	१५ ४०	१८ १	२० २१	२२ २६	० ७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ३	१ २८	२ ५०	४ २३
	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ६	१५ २४	१७ ४५	२० ५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ६	८ २०	१० ४२	१३ २	१५ २०	१७ ४१	२० २	२२ ६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ७
	५	२३	६ २	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ २	२३ ४३	१ ८	२ ३१	४ ३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ८	१० ३०	१२ ५०	१५ ८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ०	२ २३	३ ५५
जून	८	२६	५ ५०	८ ४	१० २६	१२ ४६	१५ ४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ०	१० २३	१२ ४३	१५ ०	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४३	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ७	१२ २७	१४ ४५	१७ ६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४ आ.१		५ २६											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेजी तारीखें	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु. घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
	१४	१	७ ४१	१० ३	१२ २३	१४ ४१	१७ २	१९ २२	२१ २७	२३ ८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ०	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ७	१४ २५	१६ ४६	१९ ६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ३	१४ २१	१६ ४२	१९ ३	२१ ७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ८	५ ३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ३	२२ ४४	० ९	१ ३२	३ ४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ५	१ २८	३ ०	४ ५५
	२२	९	७ ९	९ ३१	११ ५१	१४ ९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० १	१ २४	२ ५६	४ ५१
जून	२३	१०	७ ५	९ २७	११ ४७	१४ ५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ १	९ २४	११ ४४	१४ १	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८.३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ८	११ २८	१३ ४६	१६ ७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ०	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ४	११ २४	१३ ४२	१६ ३	१८ २३	२० २८	२२ ९	२३ ३४	०.५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ०	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ १	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ८	१३ २६	१५ ४७	१८ ८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ४	१३ २२	१५ ४३	१८ ४	२० ८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ९	४ ४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ०	१३ १८	१५ ४०	१८ ०	२० ४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ५	४ ०
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ०	२१ ४१	२३ ६	० २९	२ १	३ ५६
जुलाई	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ २	० २५	१ ५७	३ ५५
	८	२५	६ ६	८ २९	१० ४९	१३ ६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ २	८ २५	१० ४५	१३ २	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ९	१० २९	१२ ४७	१५ ८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० १	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ५	१० २५	१२ ४३	१५ ४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ १	१० २१	१२ ३९	१५ ०	१७ २०	१९ २५	२१ ६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्राव	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेजी तारीखें	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन. घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ २	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ९	१२ २७	१४ ४८	१७ ९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ५	१२ २३	१४ ४५	१७ ५	१९ ९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० १	१२ १९	१४ ४१	१७ १	१९ ५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ६	३ १	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ १	२० ४२	२२ ७	२३ ३०	१ २	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ [illegible]	१८ ५७	२० ३८	२२ ३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ३	१४ २५	[illegible] ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ [illegible]	[illegible] ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ २	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ६	९ २६	११ ४४	१४ ५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ २	९ २२	११ ४०	१४ १	१६ २१	१८ २६	२० ७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ६	११ २४	१३ ४६	१६ ६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ २	११ २०	१३ ४२	१६ २	१८ ६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ७	२ २	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ २	१९ ४३	२१ ८	२२ ३१	० ३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ४	२२ २७	० ०	१ ५४	४ ८
अगस्त	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ १	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ०
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ०	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ७	८ २७	१० ४५	१३ ६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ३	८ २३	१० ४१	१३ २	१५ २२	१७ २७	१९ ८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भाद्र	५ ५५											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेजी तारीखें	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ०	२० ३५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० ३१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ७	१० २५	१२ ४०	१५ ७	१७ ११	१८ ५२	२० २७	२१ ४०	२३ १२	१ ७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ३	१० २१	१२ ४३	१५ ३	१७ ७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ८	१ ३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ३	१८ ४४	२० ९	२१ ३२	२३ ४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ५	२१ २८	२३ १	० ५५	३ ९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० २	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ २	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० १	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ३	१४ २३	१६ २८	१८ ९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ०
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ १	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ८	९ २६	११ ४८	१४ ८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ४	९ २२	११ ४४	१४ ४	१६ ८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ९	० ४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ०	९ १८	११ ४०	१४ ०	१६ ४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ६	० ०	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ०	१७ ४१	१९ ६	२२ २९	२२ २	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ २	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० १	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ १
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ०	१३ २१	१५ २५	१७ ६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ २	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ०१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेजी तारीखें	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ९	१ २३	३ ४५	६ ५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ५	१५ ९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ५	१ १९	३ ४२	६ १
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ १	१५ ५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ७	२३ १	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ २	१६ ४२	१८ ८	१९ ३०	२१ ३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ०	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ०	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ०	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ २	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ २	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० १	१२ २२	१४ २६	१६ ७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ६	० २०	२ ४३	५ ३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ २	१४ ६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ८	२२ २	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ३	१५ ४३	१७ ९	१८ ३१	२० ४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ५	१८ २७	२० ०	२१ ५४	० ८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ १	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० १	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ १	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ २	११ २३	१३ २७	१५ ८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का०१	६ ३३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टैं.टा.]

कार्तिक

अंग्रेज़ी तारीखें	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्तूबर १६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ०	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ७	६ २५
१८	३	८ ४७	११ ७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ७	२३ २१	१ ४४	४ ४	६ २१
१९	४	८ ४३	११ ३	१३ ८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ९	२१ ३	२३ १७	१ ४०	४ ०	६ १७
२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ०	१४ ४१	१६ ६	१७ २८	१९ १	२० ५५	२३ ९	१ ३२	३ ५२	६ ९
२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ २	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ६	१ २८	३ ४८	६ ६
२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ २	१ २४	३ ४४	६ २
२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ८	३ २८	५ ४६
२८	१३	८ ७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ १	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ४	३ २४	५ ४२
२९	१४	८ ३	१० २४	१२ २८	१४ ९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ०	३ २०	५ ३८
३०	१५	८ ०	१० २०	१२ २४	१४ ५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ १	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर १	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ९	५ २६
२	१८	७ ४८	१० ८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ८	२२ २२	० ४५	३ ५	५ २२
३	१९	७ ४४	१० ४	१२ ९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ९	२० ४	२२ १८	० ४१	३ १	५ १८
४	२०	७ ४०	१० ०	१२ ५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ६	२० ०	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ १	१३ ४२	१५ ७	१६ २९	१८ २	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ७	० २९	२ ४९	५ ७
७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ३	० २५	२ ४५	५ ३
८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ९	२ २९	४ ४७
१२	२८	७ ८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ २	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ५	२ २५	४ ४३
१३	२९	७ ५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० १	२ २१	४ ३९
१४	३०	७ १	९ २१	११ २५	१३ ६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
१५	मा.१	६ ५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेज़ी तारीखें	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर १५	१	९ १७	११ २१	१३ २	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
१७	३	९ ९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ९	२१ २३	२३ ४६	२ ६	४ २३	६ ४५
१८	४	९ ५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ५	२१ १९	२३ ४२	२ २	४ १९	६ ४१
१९	५	९ १	११ ६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ७	१९ १	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
२०	६	८ ५७	११ २	१२ ४३	१४ ८	१५ ३०	१७ ३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ८	२३ ३०	१ ५०	४ ८	६ २९
२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ०	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ४	२३ २६	१ ४६	४ ४	६ २५
२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ०	२३ २२	१ ४२	४ ०	६ २१
२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ९
२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ६	१ २६	३ ४४	६ ६
२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ २	१ २२	३ ४०	६ २
२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर १	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ७	३ २४	५ ४६
३	१९	८ ६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ६	२० २०	२२ ४३	१ ३	३ २०	५ ४२
४	२०	८ २	१० ७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ८	१८ २	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
५	२१	७ ५८	१० ३	११ ४४	१३ ९	१४ ३१	१६ ४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ५	१४ २७	१६ ०	१७ ५४	२० ९	२२ ३१	० ५१	३ ९	५ ३०
७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ १	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ५	२२ २७	० ४७	३ ५	५ २६
८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० १	२२ २३	० ४३	३ १	५ २२
९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ १	० ३१	२ ४९	५ १०
१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	१२ २७	० २७	२ ४५	५ ७
१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ०	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ३	० २३	२ ४१	५ ३
१४	३०	७ २३	९ २७	११ ८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
१५	पौ.१	७ १९											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भास. स्टै.टा.]

पौष

अंग्रेज़ी तारीखें	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर १५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
१६	२	९ १९	११ ०	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ८	२ २५	४ ४७	७ ७
१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ७	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ २१	४ ४३	७ ३
१९	५	९ ८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ९	१७ ३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
२०	६	९ ४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
२१	७	९ ०	१० ४१	१२ ६	१३ २८	१५ १	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ २	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ६	२१ २८	२३ ४८	२ ६	४ २७	६ ४७
२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ २	२१ २४	२३ ४४	२ २	४ २३	६ ४३
२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ८	२३ २८	१ ४६	४ ८	६ २८
२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ १	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ४	२३ २४	१ ४२	४ ४	६ २४
२९	१५	८ २८	१० ९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ०	२३ २०	१ ३८	४ ०	६ २०
३०	१६	८ २४	१० ५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
३१	१७	८ २०	१० १	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी १	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ८	१ २५	३ ४७	६ ७
२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ७	१८ २२	२० ४४	२३ ४	१ २१	३ ४३	६ ३
३	२०	८ ८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ९	१६ ३	१८ १८	२० ४०	२३ ०	१ १७	३ ३९	५ ५९
४	२१	८ ४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
५	२२	८ ०	९ ४१	११ ६	१२ २८	१४ १	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
६	२३	७ ५६	९ ३७	११ २	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ६	२० २८	२२ ४८	१ ६	३ २७	५ ४७
७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ २	२० २४	२२ ४४	१ २	३ २३	५ ४३
८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ९	१३ ४२	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ८	२२ २८	० ४६	३ ८	५ २८
१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ १	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ४	२२ २४	० ४२	३ ४	५ २४
१३	[illegible]	७ २८											

माघ

अंग्रेज़ी तारीखें	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी १३	१	९ ९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ०	२२ २०	० ३८	३ ०	५ २०	७ २४
१४	२	९ ५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
१५	३	९ १	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ९	० २६	२ ४८	५ ८	७ १३
१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २३	१९ ४५	२२ ५	० २२	२ ४४	५ ४	७ ९
१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १९	१९ ४१	२२ १	० १९	२ ४०	५ ०	७ ५
१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ६	१५ १	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ १
२०	८	८ ४२	१० ७	११ २९	१३ २	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
२१	९	८ ३८	१० ३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ७	१९ २९	२१ ४९	० ७	२ २८	४ ४८	६ ५३
२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ३	१९ २५	२१ ४५	० ३	२ २४	४ ४४	६ ४९
२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ९	२१ २९	२३ ४७	२ ९	४ २९	६ ३३
२७	१५	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ५	२१ २५	२३ ४३	२ ५	४ २५	६ २९
२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २२	२३ ३९	२ १	४ २१	६ २५
२९	१७	८ ६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
३०	१८	८ २	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ९	६ १४
फरवरी १	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २४	१८ ४६	२१ ६	२३ २३	१ ४५	४ ५	६ १०
२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ २०	१८ ४२	२१ २	२३ २०	१ ४१	४ १	६ ६
३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ७	१४ २	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ २
४	२३	७ ४३	९ ८	१० ३०	१२ ३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
५	२४	७ ३९	९ ४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ८	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २९	३ ४९	५ ५४
६	२५	७ ३५	९ ०	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ४	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ५०
७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ०	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४२	५ ४६
८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
११	३०	७ १५	८ ४०	१० ३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ६	२० २६	२२ ४४	१ ६	३ २६	५ ३०
१२	फा. १	७ ११											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चंडीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै.टा.]

फाल्गुन

माह	अंग्रेजी तारीखें	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ३	२० २३	२२ ४०	१ २	३ २२	५ २६	७ ७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ०
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ७	२२ २५	० ४६	३ ६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ६	१५ २१	१७ ४३	२० ३	२२ २१	० ४२	३ २	५ ७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ८	१३ ३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ३	६ ४४
	१९	८	८ ९	९ ३१	११ ४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ५	९ २७	११ ०	१२ ५५	१५ ९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ १	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ५	१७ २७	१९ ४७	२२ ५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ १	१७ २३	१९ ४३	२२ १	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ७	१९ २७	२१ ४५	० ७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ०	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ४	१९ २४	२१ ४१	० ३	२ २३	४ २८	६ ८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ०	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ १
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ८	२१ २६	२३ ४७	२ ७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ८	१४ २२	१६ ४४	१९ ४	२१ २२	२३ ४३	२ ३	४ ८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ९	१२ ४	१४ १८	१६ ४०	१९ ०	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ५	१२ ०	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ०	५ ४१
	७	२४	७ ६	८ २८	१० १	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ २	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ६	१६ २८	१८ ४८	२१ ६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ २	१६ २४	१८ ४४	२१ २	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ९	१८ २९	२० ४६	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चैत्र	६ ३८											

चैत्र

माह	अंग्रेजी तारीखें	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुंभ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ १	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ५	१८ २५	२० ४२	२३ ४	१ २४	३ २९	५ ९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ १	१८ २१	२० ३८	२३ ०	१ २०	३ २५	५ ६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ २	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ९	२० २७	२२ ४८	१ ८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ९	१३ २३	१५ ४५	१८ ५	२० २३	२२ ४४	१ ४	३ ९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ५	१३ १९	१५ ४१	१८ १	२० १९	२२ ४०	१ ०	३ ५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ६	११ १	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ १	४ ४२	६ ७
	२२	९	७ २९	९ २	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ७	१५ २९	१७ ४९	२० ७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ३	१५ २५	१७ ४५	२० ३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ २	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ६	१७ २६	१९ ४३	२२ ५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ २	१७ २२	१९ ४०	२२ १	० २१	२ २६	४ ७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ६	१९ २४	२१ ४५	० ५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ६	१२ २०	१४ ४२	१७ २	१९ २०	२१ ४१	० १	२ ६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ७	१० २	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ २	३ ४३	५ ८
	६	२४	६ ३०	८ ३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ०
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ४	१४ २६	१६ ४६	१९ ४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ०	१४ २२	१६ ४२	१९ ०	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै १	६ ३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क	स्टेंण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
देव प्रयाग(उ.प्र.)	३० ९	७८ ३७	-१५ ३२	पटौदी (ह.)	२८ ४८	७६ ४८	-२२ ४८	बागलकोट (क.)	१६ १२	७५ ४४	-२७ ४	महेसाणा(गु.)	२३ ३५	७२ २७	-४० १२
देहरादून (उ.प्र.)	३० १९	७८ ४	-१७ ४४	पठानकोट (पं.)	३२ १७	७५ ४२	-२७ १२	बाकीपुर (बि.)	२५ ४०	८५ १२	+१० ४८	माछीबाड़ा (पं.)	३० ५५	७६ १५	-२५ ०
द्वारिका (गु.)	२२ १४	६९ ७	-५३ ३२	पन्ना (म.प्र.)	२४ ४४	८० १४	-९ ४	बांसबाड़ा (रा.)	२३ ३०	७४ २४	-३२ २४	महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८ १७	३६ १४	-२५ ४
धनबाद (बि.)	२३ ४७	८६ ३०	+ १६ ०	पाटन (गु.)	२३ ५३	७२ १०	-४१ २०	बांदा (उ.प्र.)	२५ ३०	८० २२	-८ ३२	मण्डवी (गु.)	२२ ५१	६९ ३०	-५२ ०
धर्मशाला(हि.प्र.)	३२ १६	७६ २३	-२४ २८	पाण्डिचेरी	११ ५६	७९ ५३	-१० २८	बाराबंकी (उ.प्र.)	२६ ५६	८१ १३	-५ ८	मारबाड़ जं.(रा.)	२५ ४३	७३ ४०	-३५ २०
धारवाड़ (क.)	१५ २७	७५ ५	-२९ ४०	पालमपुर (हि.प्र.)	३२ ७	७६ ३२	-२३ ५२	बारामूला (का.)	३४ १०	७४ २०	-३२ ४०	मालेगांव (म.)	२० ३०	७४ ४०	-३१ २०
धौलपुर (रा.)	२६ ४२	७७ ५३	-१८ २८	पाली (रा.)	२५ ४६	७३ २५	-३६ २०	बालासोर (उ.)	२१ ३०	८६ ५४	+१७ ३६	मालेरकोटला(पं.)	३० ३१	७५ ५९	-२६ ४
नडियाद (गु.)	२२ ४१	७२ ५५	-३८ २०	पूंछ (का.)	३३ ५१	७४ ८	-३३ २८	बालोतरा (रा.)	२५ ४९	७२ १५	-४१ ०	मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५ १०	८२ ३३	-० १२
नैरना (रा.)	२३ ५०	७४ ११	-३३ १६	पुरनिया (बि.)	२५ ४९	८७ ३१	+ २० ४	बिजनोर (उ.प्र.)	२९ २३	७८ ११	-१७ १६	मीरपुर (का.)	३३ १२	७३ ५१	-३४ ३६
नवलगढ़ (रा.)	२७ ५१	७५ १८	-२८ ४८	पुरी (उडी.)	१९ ४८	८५ ५२	+ १३ २८	बिलासपुर (म.प्र.)	२२ ५	८२ १३	-१ ८	मुगलसराय (उ.प्र.)	२५ १७	८३ ११	+ २ ४४
नसीराबाद (रा.)	२६ १८	७४ ४६	-३० ५६	पूना (म.)	१८ ३०	७३ ५६	-३४ २८	बिलासपुर (हि.प्र.)	३१ १९	७६ ५०	-२२ ४०	मुंगेर (बि.)	२५ २३	८६ ३०	+ १६ ०
नागपुर (म.)	२१ ९	७९ ९	-१३ २४	पोरबन्दर (गु.)	२१ ३७	६९ ४९	-५० ४४	बीकानेर (रा.)	२८ १	७३ २२	-३६ ३२	मुजफर न.(उ.प्र.)	२९ २८	७७ ४४	-१९ ४
नागौर (रा.)	२७ ११	७३ ४०	-३५ २०	पोर्टब्लेअर	११ ४०	९२ ४६	+४१ ४	बीजापुर (म.)	१६ ५०	७५ ४७	-२६ ५२	मुजफर पुर (बि.)	२६ ७	८५ २७	+११ ४८
नाचना (रा.)	२७ २९	७१ ७५	-४३ ०	प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५ ५४	८१ ५९	-२ ४	बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८ २४	७७ ५४	-१८ २४	मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८ ५१	७८ ४९	-१४ ४४
नाथद्वारा (रा.)	२४ ५६	७६ ५२	-३४ ३२	प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४ २	७४ ४०	-३१ २०	बूंदी (रा.)	२५ २७	७५ ४१	-२७ १६	मेरठ (उ.प्र.)	२९ १	७७ ४५	-१९ ०
नान्देड़ (म.)	१९ ९	७७ २७	-२० १२	प्रयाग (उ.प्र.)	२५ २८	८१ ५४	-२ २४	वृन्दावन (उ.प्र.)	२७ ३३	७७ ४४	-१९ ४	मैननुरी (उ.प्र.)	२७ १४	७९ ३	-१३ ४८
नाभा (पं.)	३० २५	७६ ९	-२५ ३६	फगवाड़ा (पं.)	३१ १४	७५ ४६	-२६ ५६	बुद्धगया (बि.)	२४ ४२	८४ ५९	+९ ५९	मोगा (पं.)	३० ४८	७५ १०	-२९ २०
नारनौल (ह.)	२८ २	७६ १४	-२५ ४	फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७ १	७८ १९	-१६ ४०	भद्रवाह (का.)	३३ १	७५ ४३	-२७ ८	मोरार (म.प्र.)	२६ १३	७८ १४	-१७ ४
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१ ३	७६ ४२	-२३ १२	फतेहाबाद (ह.)	२९ ३१	७५ ३०	-२८ ०	भटिण्डा (पं.)	३० ११	७५ ०	-३० ०	मोरेना (म.प्र.)	२६ २६	७८ ४	-१७ ४४
नाहन (हि.प्र.)	३० ३३	७७ २१	-२० ३६	फरीदकोट (पं.)	३० ४०	७४ ४०	-३१ २०	भरतपुर (रा.)	२७ १५	७७ ३०	-२० ०	यवतमाल (म.)	२० २३	७८ ११	-१७ १६
नासिक (म.)	२० २	७३ ५०	-३४ ४०	फरीदबाद (ह.)	२८ २५	७७ २२	-२० ३२	भरूच (गु.)	२१ ४८	७३ १	-३७ ५६	चोल (हि.प्र.)	३२ ११	७६ २३	-२४ २८
निम्बहेड़ा (रा.)	२४ ३७	७४ ४५	-३१ ०	फरुखबाद (उ.प्र.)	२७ २४	७९ ३७	-११ ३२	भागलपुर (बि.)	२५ १४	८६ ५९	+१७ ५६	रतलाम (म.प्र.)	२३ २०	७५ ७	-२९ ३२
नीमच (म.प्र.)	२४ २७	७४ ५२	-३० ३२	फाजिल्का (पं.)	३० २५	७४ ४	-३३ ४४	भिवानी (ह.)	२८ ४६	७३ १८	-२४ ४८	रत्नागिरि (म.)	१७ २	७३ १९	-३६ ४४
नूरपुर (हि.प्र.)	३२ १८	७५ ५६	-२६ १६	फिरोजपुर (पं.)	३० ५५	७४ ४०	-३१ २०	भीनमाल (रा.)	२५ ०	७२ १९	-४० ४४	राजकोट (गु.)	२२ १८	७० ५०	-४६ ४०
नैनवा (रा.)	२५ ४५	७५ ५७	-२६ १२	फुलेरा (रा.)	२६ ५२	७५ १६	-२८ ५६	भुज (गुज.)	२३ १६	६९ ४४	-५१ ४	राजमहेन्द्री (आ.)	१७ ५	८१ ४८	-२ ४८
नैनीताल (उ.प्र.)	२९ २३	७९ ३०	-१२ ०	फैजाबद (उ.प्र.)	२६ ४७	८२ १२	-१ १२	भुवनेश्वर (उ.)	२० १५	८५ ५२	+१३ २८	रांची (बि.)	२३ २०	८५ २०	+ ११ २०
नोहर (राज.)	२९ ११	७४ ४६	-३० ५६	बंगलोर(क.)	१२ ५८	७७ ३८	-१९ २८	भोपाल (म.प्र.)	२३ १६	७७ २३	-२० २८	रानीखेत (उ.प्र.)	२९ ४०	७९ ३०	-११ ४८
नौशेरा (का.)	३३ १३	७४ १७	-३२ ५२	बटाला(पं.)	३१ ४९	७५ १४	-२९ ४	मऊ (उ.प्र.)	२५ ५८	८३ ३६	+४ २४	रापर (गु.)	२३ ३२	७० ४०	-४७ २०
पचपदरा (रा.)	२५ ५५	७२ २१	-४० ३६	बदायूं (उ. प्र.)	२८ २	७९ १०	-१३ २०	मछलीपट्टण(आ.)	१६ ९	८१ ८	-५ २८	रामपुर बुशहर(हि.प्र.)	३१ २७	७७ ३८	-१९ २८
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२ ३०	७८ २२	-१६ ३२	बड़ोदा (गु.)	२२ १८	७३ १२	-३७ १२	मण्डी (हि.प्र.)	३१ ४३	७६ ५८	-२२ ८	रायपुर (म.प्र.)	२१ १५	८१ ४१	-३ १६
पंचकूला (हरि.)	३० ४६	७६ ५६	-२२ १६	बम्बई (म.)	१९ ०	७२ ५४	-३८ २४	मद्रास (ता.)	१३ ४	८० १७	-८ ५२	रायबरेली (उ.प्र.)	२६ १२	८१ १४	-५ ४
पंजिम (गोआ)	१५ २९	७३ ४९	-३४ ४४	बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३० ४४	७९ ३२	-११ ५२	मथुरा (उ.प्र.)	२७ २८	७७ ४१	-१९ १६	रामेश्वरम् (ता.)	९ १७	७९ २२	-१२ ३२
पटना (बि.)	२५ ३७	८५ १३	+ १० ५२	बर्दवान (ब.)	२३ १६	८७ ५२	+२१ २८	मन्दसोर (म.प्र.)	२४ ४	७५ ५	-२९ ४०	रिवाड़ी (ह.)	२८ १२	७६ ४०	-२३ २०
पटियाला(पं.)	३० २०	७६ २५	-२४ २०	बलिया (उ.प्र.)	२५ ४४	८४ ११	+ ६ ४४	मंसूरी (उ.प्र.)	३० २७	७८ ६	-१७ ३६	रीवां (म.प्र.)	२४ ३१	८१ १९	-४ ४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
अकोला (म.)	२०	४२	७७	२	—२१	५२
अगरतल्ला (त्रि.)	२३	४९	९१	१८	+३५	१२
अंकलेश्वर (गु.)	२१	३८	७३	३	—३७	४८
अखनूर (का.)	३२	५४	७४	४५	—३१	०
अजन्ता (म.)	२०	३३	७५	४८	—२६	४८
अजमेर (रा.)	२६	२७	७४	४२	—३१	१२
अनन्तनाग (का.)	३३	४३	७५	१७	—२८	५२
अनामलै (ता.)	१०	३४	७६	५०	—२२	४०
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८	२१	७८	१६	—१६	५६
अमरावती (म.)	२०	५६	७७	४८	—१८	४८
अमरेली (ता.)	२१	३६	७१	१५	—४५	०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८	५४	७८	३१	—१५	५६
अमृतसर (पं.)	३१	३७	७४	५५	—३०	२०
अमेठी (उ.प्र.)	२६	८	८१	५०	—२	४०
अम्बाला (ह.)	३०	२१	७६	५२	—२२	३२
अयोध्या (उ.प्र.)	२६	४८	८२	१४	—१	४
अरकोणम् (ता.)	१३	५	७९	४३	—११	८
अर्की (हि.प्र.)	३१	९	७६	५८	—२२	८
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९	३७	७९	४०	—११	२०
अलवर (रा.)	२७	३४	७६	३८	—२३	२८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७	५४	७८	६	—१७	३६
अहमदनगर (मं.)	१९	५	७४	४८	—३०	४८
अहमदाबाद (गु.)	२३	२	७२	३८	—३९	२८
आगरा (उ.प्र.)	२७	१०	७८	५	—१७	४०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६	५	८३	१२	+२	४८
आनन्द (गु.)	२२	३२	७६	०	—३८	०
आबू (राज.)	२४	४०	७३	४५	—३९	०
आरा (बि.)	२५	३४	८४	३४	+८	१६
आसनसोल (बं.)	२३	४२	८७	१	+१८	४
इटारसी (म.प्र.)	२२	३७	७७	४५	—१९	०
इटावा (उ.प्र.)	२६	४७	७६	२	—१३	५२
इन्दौर (म.प्र.)	२२	४४	७५	५०	—२६	४०
इम्फाल (मणि.)	२४	४४	६३	४८	—४५	५२
उज्जैन (म.प्र.)	२३	९	७४	४३	—२७	८
उदयपुर (रा.)	२४	३५	७३	४२	—३५	१२
उन्नाव (उ.प्र.)	२६	३४	८०	३०	—८	०
ऊधमपुर (का.)	३२	५५	७५	७	—२९	३२

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
ऊना (हि.प्र.)	३१	३२	७६	१८	—२४	४८
एकलिंगजी (राज.)	२४	४३	७३	४६	—३४	५६
एटा (उ.प्र.)	२७	३५	७८	४०	—१५	२०
एर्नाकुलम् (के.)	१०	०	७६	१५	—२५	०
एलिचपुर (म.)	२१	१८	७७	३३	—१९	४८
एलेप्पे (के.)	९	३०	७६	२३	—२४	२८
ऐलोरा (म.)	२०	२	७५	१३	—२९	८
ओरंगाबाद (आं.)	१९	५३	७५	२३	—२८	२८
कटक (उ.)	२०	२८	८५	५४	+१३	३६
कटनी (म.प्र.)	२३	५०	८०	२३	—८	२८
कठुआ (का.)	३२	१७	७५	३६	—२७	३६
कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०	५७	७७	६	—२१	३६
कन्नौज (उ.प्र.)	२७	३	७९	५८	—१०	८
कपूर्थला (पं.)	३१	२३	७५	२५	—२८	२०
करतारपुर (पं.)	३१	२७	७५	३२	—२७	५२
करनाल (हरि.)	२९	४२	७७	२	—२१	५२
करौली (रा.)	२६	३०	७७	४	—२१	४४
कलकत्ता (बं)	२२	३४	८८	२४	+२३	३६
कसौली (हि.प्र.)	३०	५३	७७	१	—२१	५६
काँगड़ा (हि.प्र.)	३२	५	७६	१८	—२४	४८
कांचीपुरम् (ता.)	१२	५०	७९	४५	—११	०
काठियाबाड़ (गु.)	२२	०	७१	०	—४६	०
कानपुर (उ.प्र.)	२६	२७	८०	२४	—८	२४
कारगिल (का.)	३४	३०	७६	१३	—२५	८
कालका (ह.)	३०	५०	७७	१	—२१	५६
काशी (उ.प्र.)	२५	२०	८३	०	+२	०
किसनगढ़ (राज.)	२७	५३	७०	३७	—४७	३२
कुराली (पं.)	३०	५०	७६	३५	—२३	४०
कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०	०	७६	४८	—२२	४८
कुल्लू (हि.प्र.)	३१	५८	७७	६	—२१	३६
कुमारी (अन्तरीप)	८	५	७७	३४	—१९	४४
कुम्भकोणम् (ता.)	१०	५८	७९	२५	—१२	२०
कैथल (ह.)	२९	४८	७६	२६	—२४	१६
कोचीन (के.)	९	५८	७६	१७	—२४	५२
कोटखाई (हि.प्र.)	३१	८	७७	३६	—१९	३६
कोटा (राज.)	२५	१०	७५	५२	—२६	३२
कोडैकनाल (ता.)	१०	१३	७७	३२	—१९	५२

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
कोल्हापुर (म.)	१६	४२	७४	१६	—३२	५६
कोहिमा (ना.)	२५	४१	९४	७	+४६	२८
खन्ना (पं.)	३०	४२	७६	१३	—२५	८
खुर्जा (उ.प्र.)	२८	१५	७७	५०	—१८	४०
गया (बिहार)	२४	४९	८५	१	+१०	४
गंगटोक (सि.)	२७	२०	८८	४०	+२४	४०
गढ़शंकर (पं.)	३१	१३	७६	११	—२५	१६
गाजियाबाद (उ.प्र.)	२८	४०	७७	२८	—२०	८
गाजीपुर (उ.प्र.)	२५	३४	८३	३५	+४	२०
गिलगित (का.)	३५	५५	७४	२२	—३२	३२
गुड़गांव (हरि.)	२८	२७	७७	४	—२१	४४
गुरदासपुर (पं.)	३२	२	७५	२७	—२८	१२
गोंड़ा (उ.प्र.)	२७	१०	८१	५७	—२	१२
गोरखपुर (उ.प्र.)	२६	४५	८३	२४	+३	३६
गोहाटी (आसाम)	२६	११	९१	४५	+३७	०
ग्वालियर (म.प्र.)	२६	१४	७८	१०	—१७	२०
चण्डीगढ़ (पं.)	३०	४४	७६	५२	—२२	३२
चन्दौसी (उ.प्र.)	२८	२७	७८	४९	—१४	४४
चम्बा (हि.प्र.)	३२	२९	७६	१०	—२५	२०
चित्तौड़गढ़ (रा.)	२४	५४	७४	४२	—३१	१२
चीरापूंजी (मे.)	२५	१७	९१	४७	+३७	८
चूरू (राज.)	२८	१९	७५	१	—२९	५६
छतरपुर (म. प्र.)	२४	५४	७९	३८	—११	२८
छपरा (बिहार)	२५	४७	८४	४१	+८	४४
जबलपुर (म.प्र.)	२३	१०	७९	५९	—१०	४
जम्मू (का.)	३२	४४	७४	५४	—३०	२४
जयपुर (राज.)	२६	५५	७५	५२	—२६	३४
जलगांव (म.)	२१	५	७५	४०	—२७	२०
जलपाई गुड़ी (बं.)	२६	३२	८८	४६	+२५	४
जामनगर (गुज.)	२२	२७	७०	७	—४९	३२
जालंधर (पं.)	३१	१९	७५	३४	—२७	४०
जालोर (राज.)	२५	२२	७२	३८	—३९	२८
जलोन (उ.प्र.)	२६	८	७९	२३	—१२	२८
जीन्द (हरि.)	२९	१९	७६	२३	—२४	२८
जूनागढ़ (गु.)	२१	३१	७०	३६	—४७	३६
जैसलमेर (राज.)	२६	५५	७०	५७	—४६	१२
जोगिन्दर नगर (हि.प्र)	३१	५०	७६	४५	—२३	०

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
जोधपुर (राज.)	२६	१८	७३	४	—३७	४४
जौनपुर (उ. प्र.)	२५	४६	८२	४४	+०	५६
ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१	५६	७६	२२	—२४	३२
जालना (म.)	१९	५१	७५	५६	—२६	१६
झरिया (बि.)	२३	५०	८६	३३	+१६	१२
झांसी (उ.प्र.)	२५	२७	७८	३७	—१५	३२
झालरापाटन (रा.)	२४	३२	७६	१२	—२५	१२
झालाबाड़ (रा.)	२४	३६	७४	९	—३३	२४
झुंझुनू (रा.)	२८	६	७५	२५	—२८	२०
टाडाउरमुर (पं.)	३१	४०	७५	४१	—२७	१६
टिहरी (उ.प्र.)	३०	२०	७८	२०	—१६	०
टोंक (राज.)	२६	११	७५	५०	—२६	४०
टोडारायसिंह (रा.)	२६	०	७५	२९	—२८	४
ट्रावनकोर (के.)	९	०	७७	०	—२२	०
डगशई (हि.प्र.)	३०	५३	७७	६	—२१	३६
डलहोजी (हि.प्र.)	३२	३२	७५	५९	—२६	४
डिबाई (उ.प्र.)	२८	१२	७८	१५	—१७	०
डिब्रूगढ़ (आ.)	२७	२९	९४	५६	+४९	४४
डीडवाना (राज.)	२७	२४	७४	३४	—३१	४४
डीसा (गु.)	२४	१४	७२	१३	—४१	८
डूंगरपुर (राज.)	२३	५०	७६	४६	—३५	८
तिरुपति (आंध्र.)	१३	४०	७९	२०	—१२	५०
त्रिचनापल्ली (ता.)	१०	५०	७८	४६	—१४	५६
त्रिचुर (के.)	१०	३०	७६	१५	—२५	०
त्रिवेन्द्रम् (के.)	८	३०	७६	५७	—२२	१२
थराड (गु.)	२४	२३	७१	३७	—४३	३२
थानेसर (हरि.)	२९	५८	७६	५६	—२२	१६
दतिया (म.प्र.)	२५	३९	७८	२७	—१६	१२
दमोह (म.प्र.)	२३	५०	७९	२९	—१२	४
दरभंगा (बिहार)	२६	१०	८५	५७	+१३	४८
दसूआ (पं.)	३१	४९	७५	४२	—२७	१२
दार्जिलिंग (बं.)	२७	३	८८	१८	+२३	१२
दिल्ली	२८	३८	७७	१२	—२१	१२
दीनानगर (पं.)	३२	८	७५	३१	—२७	५६
देवबन्द (उ.प्र.)	२९	४२	७७	४३	—१९	८
देवरिया (उ.प्र.)	२३	३३	८३	४५	+५	०
देवास (म.प्र.)	२२	५८	७६	६	—२५	३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
देव प्रयाग (उ.प्र.)	३० ९	७८ ३७	-१५ ३२
देहरादून (उ.प्र.)	३० १९	७८ ४	-१७ ४४
द्वारिका (गु.)	२२ १४	६९ ७	-५३ ३२
धनबाद (बि.)	२३ ४७	८६ ३०	+ १६ ०
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२ १६	७६ २३	-२४ २८
धारवाड़ (क.)	१५ २७	७५ ५	-२९ ४०
धौलपुर (रा.)	२६ ४२	७७ ५३	-१८ २८
नडियाद (गु.)	२२ ४१	७२ ५५	-३८ २०
नरैना (रा.)	२३ ५०	७४ ११	-३३ १६
नवलगढ़ (रा.)	२७ ५१	७५ १८	-२८ ४८
नसीराबाद (रा.)	२६ १८	७४ ४६	-३० ५६
नागपुर (म.)	२१ ९	७९ ९	-१३ २४
नागौर (रा.)	२७ ११	७३ ४०	-३५ २०
नाचना (रा.)	२७ २९	७१ ७५	-४३ ०
नाथद्वारा (रा.)	२४ ५६	७६ ५२	-३४ ३२
नान्देड़ (म.)	१९ ९	७७ २७	-२० १२
नाभा (पं.)	३० २५	७६ ९	-२५ ३६
नारनौल (ह.)	२८ २	७६ १४	-२५ ४
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१ ३	७६ ४२	-२३ १२
नाहन (हि.प्र.)	३० ३३	७७ २१	-२० ३६
नासिक (म.)	२० २	७३ ५०	-३४ ४०
निम्बहेड़ा (रा.)	२४ ३७	७४ ४५	-३१ ०
नीमच (म.प्र.)	२४ २७	७४ ५२	-३० ३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२ १८	७५ ५६	-२६ १६
नैनवा (रा.)	२५ ४५	७५ ५७	-२६ १२
नैनीताल (उ.प्र.)	२९ २३	७९ ३०	-१२ ०
नोहर (राज.)	२९ ११	७४ ४६	-३० ५६
नौशेरा (का.)	३३ १३	७४ १७	-३२ ५२
पचपदरा (रा.)	२५ ५५	७२ २१	-४० ३६
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२ ३०	७८ २२	-१६ ३२
पंचकूला (हरि.)	३० ४६	७६ ५६	-२२ १६
पंजिम (गोआ)	१५ २९	७३ ४९	-३४ ४४
पटना (बि.)	२५ ३७	८५ १३	+ १० ५२
पटियाला (पं.)	३० २०	७६ २५	-२४ २०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
पटौदी (ह.)	२८ ४८	७६ ४८	-२२ ४८
पठानकोट (पं.)	३२ १७	७५ ४२	-२७ १२
पन्ना (म.प्र.)	२४ ४४	८० १४	-९ ४
पाटन (गु.)	२३ ५३	७२ १०	-४१ २०
पाण्डिचेरी	११ ५६	७९ ५३	-१० २८
पालमपुर (हि.प्र.)	३२ ७	७६ ३२	-२३ ५२
पाली (रा.)	२५ ४६	७३ २५	-३६ २०
पूंछ (का.)	३३ ५१	७४ ८	-३३ २८
पुरनिया (बि.)	२५ ४९	८७ ३१	+ २० ४
पुरी (उडी.)	१९ ४८	८५ ५२	+ १३ २८
पूना (म.)	१८ ३०	७३ ५६	-३४ २८
पोरबन्दर (गु.)	२१ ३७	६९ ४९	-५० ४४
पोर्टब्लेअर	११ ४०	९२ ४६	+४१ ४
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५ ५४	८१ ५९	-२ ४
प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४ २	७४ ४०	-३१ २०
प्रयाग (उ.प्र.)	२५ २८	८१ ५४	-२ २४
फगबाड़ा (पं.)	३१ १४	७५ ४६	-२६ ५६
फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७ १	७८ १९	-१६ ४०
फतेहाबाद (ह.)	२९ ३१	७५ ३०	-२८ ००
फरीदकोट (पं.)	३० ४०	७४ ४०	-३१ २०
फरीदबाद (ह.)	२८ २५	७७ २२	-२० ३२
फर्रुखबाद (उ.प्र.)	२७ २४	७९ ३७	-११ ३२
फाजिल्का (पं.)	३० २५	७४ ४	-३३ ४४
फिरोजपुर (पं.)	३० ५५	७४ ४०	-३१ २०
फुलेरा (रा.)	२६ ५२	७५ १६	-२८ ५६
फैजाबद (उ.प्र.)	२६ ४७	८२ १२	-१ १२
बंगलोर (क.)	१२ ५८	७७ ३८	-१९ २८
बटाला (पं.)	३१ ४९	७५ १४	-२९ ४
बदायूं (उ. प्र.)	२८ २	७९ १०	-१३ २०
बड़ोदा (गु.)	२२ १८	७३ १२	-३७ १२
बम्बई (म.)	१९ ०	७२ ५४	-३८ २४
बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३० ४४	७९ ३२	-११ ५२
बर्दवान (ब.)	२३ १६	८७ ५२	+२१ २८
बलिया (उ.प्र.)	२५ ४४	८४ ११	+६ ४४

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सै.
बागलकोट (क.)	१६ १२	७५ ४४	-२७ ४
बाकीपुर (बि.)	२५ ४०	८५ १२	+१० ४८
बांसबाड़ा (रा.)	२३ ३०	७४ २४	-३२ २४
बांदा (उ.प्र.)	२५ ३०	८० २२	-८ ३२
बाराबंकी (उ.प्र.)	२६ ५६	८१ १३	-५ ८
बारामूला (का.)	३४ १०	७४ २०	-३२ ४०
वालासोर (उ.)	२१ ३०	८६ ५४	+१७ ३६
बालोतरा (रा.)	२५ ४९	७२ १५	-४१ ०
बिजनोर (उ.प्र.)	२९ २३	७८ ११	-१७ १६
बिलासपुर (म.प्र.)	२२ ५	८२ १३	-१ ८
बिलासपुर (हि.प्र.)	३१ १९	७६ ५०	-२२ ४०
बीकानेर (रा.)	२८ १	७३ २२	-३६ ३२
बीजापुर (म.)	१६ ५०	७५ ४७	-२६ ५२
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८ २४	७७ ५४	-१८ २४
बूंदी (रा.)	२५ २७	७५ ४१	-२७ १६
वृन्दावन (उ.प्र.)	२७ ३३	७७ ४४	-१९ ४
बुद्धगया (बि.)	२४ ४२	८४ ५९	+९ ५९
भद्रवाह (का.)	३३ १	७५ ४३	-२७ ८
भटिण्डा (पं.)	३० ११	७५ ०	-३० ०
भरतपुर (रा.)	२७ १५	७७ ३०	-२० ०
भरूच (गु.)	२१ ४८	७३ १	-३७ ५६
भागलपुर (बि.)	२५ १४	८६ ५९	+१७ ५६
भिवानी (ह.)	२८ ४६	७३ १८	-२४ ४८
भीनमाल (रा.)	२५ ०	७२ १९	-४० ४४
भुज (गुज.)	२३ १६	६९ ४४	-५१ ४
भुवनेश्वर (उ.)	२० १५	८५ ५२	+१३ २८
भोपाल (म.प्र.)	२३ १६	७७ २३	-२० २८
मऊ (उ.प्र.)	२५ ५८	८३ ३६	+४ २४
मछलीपट्टण (आ.)	१६ ९	८१ ८	-५ २८
मण्डी (हि.प्र.)	३१ ४३	७६ ५८	-२२ ८
मद्रास (ता.)	१३ ४	८० १७	-८ ५२
मथुरा (उ.प्र.)	२७ २८	७७ ४१	-१९ १६
मन्दसोर (म.प्र.)	२४ ४	७५ ५	-२९ ४०
मंसूरी (उ.प्र.)	३० २७	७८ ६	-१७ ३६

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
महेसाणा (गु.)	२३ ३५	७२ २७	-४० १२
माछीबाड़ा (पं.)	३० ५५	७६ १५	-२५ ०
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८ १७	३६ १४	-२५ ४
मण्डवी (गु.)	२२ ५१	६९ ३०	-५२ ०
मारबाड़ जं. (रा.)	२५ ४३	७३ ४०	-३५ २०
मालेगांव (म.)	२० ३०	७४ ४०	-३१ २०
मालेरकोटला (पं.)	३० ३१	७५ ५९	-२६ ४
मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५ १०	८२ ३३	-० १२
मीरपुर (का.)	३३ १२	७३ ५१	-३४ ३६
मुगलसराय (उ.प्र.)	२५ १७	८३ ११	+ २ ४४
मुंगेर (बि.)	२५ २३	८६ ३०	+ १६ ०
मुजफर न. (उ.प्र.)	२९ २८	७७ ४४	-१९ ४
मुजफर पुर (बि.)	२६ ७	८५ २७	+११ ४८
मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८ ५१	७८ ४९	-१४ ४४
मेरठ (उ.प्र.)	२९ १	७७ ४५	-१९ ०
मैननुरी (उ.प्र.)	२७ १४	७९ ३	-१३ ४८
मोगा (पं.)	३० ४८	७५ १०	-२९ २०
मोरार (म.प्र.)	२६ १३	७८ १४	-१७ ४
मोरेना (म.प्र.)	२६ २६	७८ ४	-१७ ४४
यवतमाल (म.)	२० २३	७८ ११	-१७ १६
चोल (हि.प्र.)	३२ ११	७६ २३	-२४ २८
रतलाम (म.प्र.)	२३ २०	७५ ७	-२९ ३२
रत्नागिरि (म.)	१७ २	७३ १९	-३६ ४४
राजकोट (गु.)	२२ १८	७० ५०	-४६ ४०
राजमहेन्द्री (आ.)	१७ ५	८१ ४८	-२ ४८
रांची (बि.)	२३ २०	८५ २०	+ ११ २०
रानीखेत (उ.प्र.)	२९ ४०	७९ ३०	-११ ४८
रापर (गु.)	२३ ३२	७० ४०	-४७ २०
रामपुर बुशहर (हि.प्र.)	३१ २७	७७ ३८	-१९ २८
रायपुर (म.प्र.)	२१ १५	८१ ४१	-३ १६
रायबरेली (उ.प्र.)	२६ १२	८१ १४	-५ ४
रामेश्वरम् (ता.)	९ १७	७९ २२	-१२ ३२
रिवाड़ी (ह.)	२८ १२	७६ ४०	-२३ २०
रीवां (म.प्र.)	२४ ३१	८१ १९	-४ ४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
रोपड़ (पं.)	३० ५७	७६ ३०	—२४ ०	श्रीमाधोपुर (रा.)	२७ २५	७५ ३२	—२७ ५२	सिन्दरी (बं.)	२३ ४५	८६ ४२	+ १६ ४८	सोलन (हि.प्र.)	३० ५५	७७ ९	—२१ २४
रोहतक (ह.)	२८ ५४	७६ ३८	—२३ २८	संगरूर (पं.)	३० १२	७५ ५३	—२६ २८	सिरसा (ह.)	२९ ३२	७५ ४	—२९ ४४	हाजारी बाग (बि.)	२३ ५९	८५ २५	+ ११ ४०
लखनऊ (उ.प्र.)	२६ ५५	८० ५९	—६ ४	सतारा (म.)	२७ ४२	७४ २	—३३ ५२	सिरोही (रा.)	२४ ५३	७२ ५४	—३८ २४	हमीरपुर (उ.प्र.)	२५ ५८	८० १२	—९ १२
लाडवा (ह.)	२९ ५९	७७ ५	—२१ ४०	सनावर (पं.)	३० १८	७६ ३०	—२४ ०	सिलीगुड़ी (बं.)	२६ ४२	८८ २५	+२३ ४०	हमीरपुर (हि.प्र.)	३१ ४१	७६ ३१	—२३ ५६
लुधियाना (पं.)	३० ५५	७५ ५४	—२६ २४	सरदार शहर (रा.)	२८ २७	७४ ३२	—३१ ५२	सिवाना (रा.)	२५ ३६	७२ २७	—४० १२	हनुमानगढ़ (राज.)	२[illegible] ३५	७४ २१	—३२ ३६
लेह (का.)	३४ १०	७७ ४०	—१९ २०	सरहिन्द (पं.)	३० ३८	७६ २५	—२४ २०	सिहोरा (म.प्र.)	२३ २९	८० १९	—९ २४	हरदोई (उ.प्र.)	२७ २३	८० १०	—९ २०
लोहारू (ह.)	२८ २६	७५ ४७	—२६ ५२	सवाईमधोपुर (रा.)	२६ ०	७६ ३०	—२४ ०	सिंहभूम (वि.)	२२ २४	८५ ३०	+१२ ००	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९ ५८	७५ १३	—१७८
बर्धा (म.)	२० ४५	७८ ३९	—१५ २४	ससाराम (बि.)	२४ ५७	८४ ३	+६ १२	सीकर (रा.)	२७ ३६	७५ १२	—२९ १२	हाथरस (उ.प्र.)	२७ ३६	७८ ६	—१७ ३६
विजयवाड़ा (आं.)	१६ ३१	८० ३९	—७ २४	सहारनपुर (उ.प्र.)	२९ ५८	७७ ३३	—१९ ४८	सीतापुर (उ.प्र.)	२७ ३२	८० ४३	—७ ८	हापुड़ (उ.प्र.)	२८ ४३	७७ ५०	—१८ ४०
विशाखापट्टनम् (आं.)	१७ ४२	८३ २०	+ ३ २०	सागर (म.प्र.)	२३ ५०	७८ ४५	—१५ ०	सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१ ३२	७६ ५३	—२२ २८	हांसी (ह.)	२९ ६	७६ ०	—२६ ०
शाहदरा (दिल्ली)	२८ ४०	७७ २०	—२० ४०	सांगली (म.)	१६ ५२	७४ ३६	—३१ ३६	सूरत (गु.)	२१ १२	७२ ५२	—३८ ३२	हिसार (ह.)	२९ १०	७५ ४६	—२६ ५६
शाहाबाद (उ.प्र.)	२७ ३०	८० ०	—१० ०	सांगानेर (रा.)	२६ ४९	७५ ४९	—२६ ४४	सूरतगढ़ (रा.)	२९ १९	७३ ५७	—३४ १२	हुबली (क.)	१५ २०	७५ १२	—२९ १२
शिमला (हि.प्र.)	३१ ६	७७ १३	—२१ ८	साम्भर (रा.)	२६ ५४	७५ १३	—२९ ८	सोजत (रा.)	२५ ५६	७३ ४२	—३५ १२	हैदराबाद (आं)	१७ २०	७८ ३०	—१६ ०
शिलांग (मेघा.)	२५ ३४	९१ ५४	+३७ ३६	सिकन्दराबाद (आं.)	२७ २७	७८ ३३	—१५ ४८	सोनहाट (म.प्र.)	२३ २९	८२ ३०	० ०	होशंगाबाद (म.प्र.)	२२ ४६	७७ ४५	—१९ ०
श्रीनगर (का.)	३४ ६	७४ ५१	—३० ३६	सिन्दरी (रा.)	२५ ३३	७१ ५५	—४२ २०	सोमनाथ (गु.)	२१ ४	७० २६	—४८ १६	होशियारपुर (पं.)	३१ ३२	७५ ५७	—२६ १२
												होसुर (ता.)	१२ ४४	७७ ५२	—१८ ३२

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

(स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है)

अकलेरा	२४ २३	७६ ३६	२३ ३६	ओसिया	२६ ४३	७२ ५५	३८ २०	गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०	जयपुर	२६ ५५	७५ ५२	२६ ३२
अजमेर	२६ २७	७४ ४२	३१ १२	करौली	२६ ३०	७७ १	२१ ५६	गंगापुर (भीलबाड़ा)	२५ १३	७४ १६	३२ ५६	जसरासर	२७ ४५	७३ ५०	३४ ४०
अनूपगढ़	२९ ७	७३ ६	३७ ३६	कांकरोली	२५ ४	७३ ५४	३४ २४	गंगापुर (टोंक)	२६ २९	७६ ४६	२२ ५६	जसवंत पुरा	२४ ४८	७२ ३०	४० ०
अमेट	२५ २०	७३ ५९	३४ ४	कामन	२७ ३९	७७ १६	२० ५६	गिराब	२६ २	७० ३५	४७ ४०	जहाजपुर	२५ ३८	७५ १२	२९ १२
अलवर	२७ ३४	७६ ३८	२३ २८	किशनगढ़	२६ ३४	७४ ५२	३० ३२	गागरिया	२५ ४४	७० ४२	४७ १२	जाएल	२७ १५	७४ १२	३३ १२
अलीगढ़	२५ ५८	७६ ७	२५ ३०	कुशालगढ़	२३ १०	७४ २७	३२ १२	गूढ़ा	२५ १२	७१ ४८	४२ ४८	जालोर	२५ २२	७२ ३८	३९ २८
आबू	२४ ४०	७२ ४५	३९ ०	कूचामन	२७ ९	७४ ५२	३० ३२	घोटारू	२७ १८	७० ४	४९ ४४	जैसलमेर	२६ ५५	७० ५४	४६ २४
आबू रोड़	२४ २९	७२ ४७	३८ ५२	कूरी	२६ ४२	७० ४०	४७ २०	चात्सू	२६ ३६	७५ ५९	२६ ४	जोधपुर	२६ १८	७३ ४	३७ ४४
आमेर	२६ ५९	७५ ५२	२६ ३२	केकड़ी	२५ ५६	७५ १०	२९ २०	चारनवाला	२७ ५३	७२ १०	४१ २०	जोधासर	२८ ७	७३ ५०	३४ ४०
आसपुर	२३ ५८	७४ ३	३३ ४८	कोटरा	२४ २२	७३ १०	३७ २०	चित्तौड़गढ़	२४ ५४	७४ ४०	३१ २०	झालरापाटन	२४ ३३	७६ १०	२५ २०
आहोर	२५ २३	७२ ५२	३८ ३२	कोटा	२५ १०	७५ ५२	२६ ३२	चिरावा	२८ १५	७५ ३८	२७ २८	झालावाड़	२४ ३६	७६ ९	२५ २४
इन्द्रगढ़	२५ ४४	७६ १२	२५ १२	कोलायत	२७ ५०	७२ ५७	३८ १२	चीलो	२७ २२	७३ ३०	३६ ०	झुंझुनु	२८ ६	७५ २५	२८ २०
उतारनी	२६ ६	७१ ५८	४२ ८	खण्डेला	२७ ६	७५ ३२	२७ ५२	चूरू	२८ १९	७५ १	२१ ५६	टोडगढ़	२५ ४२	७४ ०	३४ ०
उदयपुर	२४ ३५	७३ ४१	३५ १६	खुईआला	२७ ६	७० २५	४८ २०	चोगू	२७ ८	७५ ४७	२६ ५२	टोड़ाराय सिंह	२६ ०	७५ २९	२८ ४
एकलिंगजी	२४ ४३	७३ ४६	३४ ५६	खेड़ब्रह्मा	२४ ५	७३ ३	३७ ४८	छबरा	२४ ४०	७६ ५०	२२ ४०	टौंक	२६ ११	७५ ५०	२६ ४०
एरिनपुरा	२५ ९	७३ ६	२७ ३६	खेरबड़ा	२४ ०	७३ ३५	३५ ४०	छोटी साढड़ी	२४ २४	७४ ४२	३१ १२	डीन	२७ २८	७७ २०	२० ४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्डअन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
डीड़वाना	२७ २४	७४ ३४	३१ ४४	पीपार रोड़	२६ २७	७३ २७	३६ १२	मकराना	२७ ३	७४ ४३	३१ ८	शाहपुरा(भीलवाड़ा)	२५ ४०	७४ ५०	३० ४०
डूंगरपुर	२३ ५०	७३ ४३	३५ ८	पुनासर	२७ २	७३ २	३७ ५२	मण्डलगढ़	२५ १२	७५ ९	२९ २४	शेओं	२६ ११	७१ १५	४५ ००
डेगाना	२६ ५०	७४ १८	३२ ४८	पुष्कर	२८ ३०	७४ ३३	३१ ४८	महला	२६ ५०	७५ ३०	२८ ०	शेरगढ़ (जोधपुर)	२६ २५	७२ २१	४० ३६
तिजारा	२७ ५५	७६ ५०	२२ ४०	पूगल	२८ ३१	७२ ४७	३८ ५२	महाजन	२८ ४८	७३ ५६	३४ १६	सेरगढ़(झालाबाड़)	२४ ४०	७६ ३२	२३ ५२
थाना कस्बा	२५ १३	७७ २०	२० ४०	प्रसाद	२४ ११	७३ ४२	३५ १२	मांगरोल	२५ २०	७६ ३०	२४ ०	श्री गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०
थाना गाज़ी	२७ २५	७६ १९	२४ ४४	फतेहपुर	२८ ०	७५ ०	३० ०	मारवाड़ जंकशन	२५ ४३	७३ ४५	३५ ०	श्री डूंगरगढ़	२८ ६	७४ १	३३ ५६
दान्ता	२४ १२	७२ ४७	३८ ५२	फलौदी	२७ ९	७२ २२	४० ३२	मालपुरा	२६ १८	७५ २५	२८ २०	श्री माधोपुर	२७ २५	७५ ३२	२७ ५२
देओरा	२६ ३०	७० ४२	४७ १२	फुलेरा	२६ ५२	७५ १६	२८ ५६	मावली	२४ ४७	७३ ५८	३४ ८	श्री मोहनगढ़	२७ १७	७१ १२	४५ १२
देचू	२६ ४७	७२ २०	४० ४०	बड़ी सादड़ी	२४ २५	७४ २८	३२ ८	मेड़ता	२६ ३९	७४ ६	३३ ६	सम	२६ ५०	७० ३१	४७ ५६
देवलिया	२४ ३	७४ ४३	३१ ८	पोखरन	२६ ५५	७१ ५५	४२ २०	मेड़ता रोड़	२६ ४३	७३ ५५	३४ २०	समदरी	२५ ४९	७२ ३५	३९ ४०
देवली	२५ ४६	७५ २५	३८ २०	बनस्थली	२६ २३	७५ ५०	२६ ४०	मियालजर	२६ १८	७० २२	४८ ३२	सरदार शहर	२८ २७	७४ ३०	३२ ००
देवीकोट	२६ ४२	७१ १२	४५ १२	बयाना	२६ ५४	७७ १७	२० ५२	मुकन्दबाड़ा	२४ ४९	७५ ५९	२६ ४	सरवार	२६ २	७४ ५५	३० २०
देशनोके	२७ ४८	७३ २१	३६ ३६	बान्दनवाड़ा	२६ ९	७४ ४२	३१ १२	मुनबाओ	२५ ४३	७० १५	४९ ०	सरूप सर	२९ २२	७३ ३७	३५ ३२
देसुरी	२५ २०	७३ ३७	३५ ३२	बस्वा	२७ ६	७६ ३२	२३ ५२	मोदरी	२४ २५	७३ २५	३६ २०	सवाई माधोपुर	२५ ५८	७६ २५	२४ २०
धौलपुर	२६ ४२	७७ ५३	१८ २८	बान्दी कुई	२७ ३	७६ ३५	२३ ४४	मोहनगढ़	२७ १७	७१ १८	४४ ४८	सहारा	२५ १५	७४ १६	३२ ५६
नरैना	२६ ५०	७४ ११	३३ १६	बाड़मेर	२५ ४५	७१ २५	४४ २०	रतनगढ़	२८ ५	७४ ३९	३१ २४	सागवाड़ा	२३ ४१	७४ १	३३ ५६
नवलगढ़	२७ ५१	७५ १८	२८ ४८	बाड़ी	२६ ३९	७७ ३६	१९ ३६	राजगढ़	२८ ३९	७५ २६	२८ १६	सांगानेर	२६ ४९	७५ ४९	२६ ४४
नसीराबाद	२६ १८	७४ ४६	३० ५६	बाप	२७ २२	७२ २२	४० ३२	रानीवाड़ा	२४ ४५	७२ १३	४१ ८	सांगोद़	२४ ५५	७६ २१	२४ ३६
नागौर	२७ ११	७३ ४४	३५ ४	बारन	२५ ६	७६ ३०	२४ ०	रामगढ़ (जयपुर)	२७ १५	७५ १०	२९ २०	सांचोर	२४ ४०	७१ ५०	४२ ४०
नाचना	२६ २९	७१ ४५	४३ १०	बांसवाड़ा	२३ ३०	७४ २४	३२ २४	रामगढ़(जैसलमेर)	२७ २०	७० ३०	४८ ०	साम्भर	२६ ५४	७५ १०	२९ २०
नाथद्वारा	२४ ५६	७३ ५०	३४ ४०	बाली	२५ ५०	७४ ५	३३ ४०	रामदेवरा	२७ ०	७१ ५२	४२ ३४	सादूलपुर	२८ ३८	७५ २४	२८ २४
निम्बेहड़ा	२४ ३७	७४ ४५	३१ ०	बालोतरा	२५ ४९	७२ १४	४१ ४	रायसिंह नगर	२९ ३२	७३ २७	३६ १२	सिन्दरी	२५ ३३	७१ ५५	४२ २०
नीम का थाना	२७ ४४	७५ ४८	२६ ४८	बिरसलपुर	२८ १०	७२ १५	४१ ०	रिखभदेव	२४ ४	७३ ४०	३५ २०	सिरमुटरा	२६ ३१	७७ २२	२० ३२
नोखा	२७ ३५	७३ २९	३६ ४	बिलारा	२६ १०	७३ ४२	३५ १२	रींगस	२७ २१	७५ ३४	२७ ४४	सिरोही	२४ ५३	७२ ५४	३८ २४
नैनवा	२५ ४५	७५ ५७	२६ १२	बीकानेर	२८ १	७३ २०	३६ ४०	रूपनगर	२६ ४८	७४ ५४	३० २४	सिवाना	२५ ३६	७२ २७	४० १२
नोहर	२९ ११	७४ ४६	३० ५६	बून्दी	२५ २७	७५ ४०	२७ २०	रेनी	२८ ४१	७५ ५	२९ ४०	सीकर	२७ ३६	७५ ९	२९ २४
पचपदरा	२५ ५५	७२ २१	४० ३६	ब्यावर	२६ ६	७४ २०	३२ ४०	लछमनगढ़	२७ ४५	७५ ४	२९ ४४	सुजानगढ़	२७ ४२	७४ ३०	३२ ००
परतापगढ़	२४ २	७४ ४७	३० ५२	भरतपुर	२७ १५	७७ ३०	२० ०	लाठी	२७ ३	७१ ३०	४४ ००	सूरतगढ़	२९ १९	७३ ५७	३४ १२
पर्वतसर	२६ ५२	७४ ४७	३० ५२	भवारी	२५ ४३	७२ ५२	३८ ३२	लाडंनू	२७ ३९	७५ २३	३२ २८	सोजत	२५ ५६	७३ ४२	३५ १२
पल्लू	२८ ५६	७४ १३	३३ ८	भंवरगढ़	२५ ६	७६ ५०	२२ ४०	लालसोत	२६ ३४	७६ २३	२४ २८	हनुमानगढ़	२९ ३५	७४ २१	३२ ३६
पाली	२५ ४६	७३ २०	३६ ४०	भाद्रा	२९ १५	७५ २०	२८ ४०	लूनी	२६ ०	७२ ५२	३८ ३२	हिन्दौन	२६ ४३	७७ १	२१ ५६
पिपिलोदा	२३ ३५	७४ ५०	३० ४०	भीनमाल	२५ ०	७२ १९	४० ४४	लोहारिया	२३ ४८	७४ १५	३३ ००				
पिरावा	२४ १३	७६ ३	२५ ४८	भीम	२५ ३९	७४ ९	३३ २४	शाहगढ़	२७ ८	६९ ५७	५० १२				
पिलानी	२८ २३	७५ ३५	२७ ४०	भीलवाड़ा	२५ २१	७४ ४०	३१ २०	शाहपुरा (जयपुर)	२७ २३	७५ ५८	२६ ८				

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

:-दुनिया के कुछ देशों के स्टैं.टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर:-

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं.मि. को उस देश या प्रदेश के स्टैं. टा.में धन (+)ऋण (-) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा.स्टैं.टा. ज्ञात हो जाएगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर
	घं. मि.
अदन	-२।३०
अफगानिस्तान	-१।००
अर्जेण्टाइना	-८।३०
आस्ट्रेलिया	
कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+४।०
प.आस्ट्रेलिया	+२।३०
ऑस्ट्रिया	-४।३०
बेलजियम	-४।३०
बर्मा	+१।०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	-९।०*
एटलांटिक टाईम(A.T)	-९।३०*
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पैसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
सिलोन	०।०
चीन	+२।३०
कोलम्बिया	-१०।३०
क्युबा	-१०।३०*
चेकोस्लावाकिया	-४।३०*
डेन्मार्क	-४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	-३।३०*
इथोपिया	-२।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर
	घं. मि.
फिन्लैण्ड	-३।३०
फ्रांस	-४।३०
जर्मनी	-४।३०
घाना	-५।३०
ग्रीस	-३।३०
हांककांग	+२।३०
हंगरी	-४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा,जावा,बाली बांगका,बिलीटान	+१।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+२।३०
आरु, केई,टनिमबर मोलुक्स,प०इरियन	+३।३०
ईरान(पर्सिया)	-२।०
ईराक	-२।३०
आयरलैण्ड (उ.)	-५।३०*
इजरायल	-३।३०
इटली, सिसली	-४।३०*
जापान	+३।३०
जार्डन	-३।३०
केन्या	-२।३०
कोरिया	+३।३०
कुवैत	-२।३०
मलेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+२।०
सरवक	+२।३०
मारिशस	-१।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर
	घं. मि.
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०
नीदरलैण्ड्स(हालैण्ड)	-४।३०
न्यूजीलैण्ड	+६।३०
पाकिस्तान	-०।३०
बंगला देश	+०।३०
फिलिपाइन गणतन्त्र	+२।३०
पोलैण्ड	-४।३०*
पुर्त्तगाल	-४।३०
रोडेशिया,न्यासालैण्ड	-३।३०
रोमानिया	-३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	-२।३०
धहरान, कतर	-१।३०
सिंगापुर	+२।०
सोमाली लैण्ड,सोमालिया	-२।३०
साउथ अफ्रीकन गणतन्त्र	-३।३०
स्पेन	-४।३०
सूडान	-३।३०
स्वीडन	-४।३०
स्विट्जरलैण्ड	-४।३०
सीरिया	-३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+१।३०
टर्की	-३।३०*
युगांडा	-२।३०
इंग्लैण्ड	-५।३०*
अमेरिका(U.S.A)	
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैण्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर
	घं. मि.
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
रूस(U.S.S.R)	
मास्को	-२।३०
'ब्लैक सी, से कैप्सियन सी तक'	-१।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	-०।३०
ओमस्क,पू. कजक	+०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+१।३०
इर्कुत्स्क	+२।३०
याकुत्स्क,चितिन्स्क द. सकलिन	+३।३०
खबरोब्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+४।३०
मगदन	+५।३०
पेत्रोपब्लोव्स्क	+६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+१।३०
दक्षिणी	+२।३०
वेनेजुएला	-९।३०
युगोस्लाविया	-४।३०
नेपाल	+०।१५
भूटान	०।०

*इन स्थलों पर Summer Time (ग्रीष्मकाल समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है।
जिन देशों में Summer Time प्रचलित है वहाँ गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी एक घण्टा आगे किए गए टाईम को Summer Time कहा जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाओं की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ.प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचाग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे २९,३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाई ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी - पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिये। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो आगे दी गई है) के बाई ओर पहले कालम में देखिये। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों उन्हे लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे "अभीष्ट घड़ी पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूढ़िये, जिन्हे "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाई ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के दाई ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिये गए घड़ी पलों का "सारणीस्थ घड़ी पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहाँ लिखें हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि अंशों मे जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनाँश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. स. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा., २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अंश ६क. (उत्तर) हैं, अत: ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५ प. हैं, इन्हे अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५ प. के दाई ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २ प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ पल. से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाई ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. नहीं मिली। अत: सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ प. लिखें हैं। इन्हे अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्ट काल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४ प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पलं' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १घ. ४४ प. नहीं हैं, अत: इससे कुछ कम १ घ. ४० पल सारणी में देखें जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाई ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखें है। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ. ४० प.) के दाई ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० पल. से अन्तर ६ प. सारणीस्थ अन्तर है। "अभीष्ट घड़ी पल" (१ घ. ४४ प.) ओर सारणीस्थ घड़ी पल (१ घ. ४४ प.) का अन्तर ४ पल है। सहायक सारणी की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ प. के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हे ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. और २१ अ. ४०क. ० वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे + १ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि-इष्ट काल के घ .प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४९	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१३	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	[illegible]
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	[illegible]
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	[illegible]
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	[illegible]
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	[illegible]
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	[illegible]
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	[illegible]

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	[illegible]
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	[illegible]
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशमलग्न साधन का उदाहरणः-वि.सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं.३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प.मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क.० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प.में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प.'अभीष्ट घड़ी-पल' हुए । "दशमलग्न सारणी" में इन " अभीष्ट घड़ी पलों " से कुछ कम घ.प. ४६।४२'सारणीस्थ घ.पल'. धनु (८)राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं ।अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारिणी में ४६। ४२ के दाईं ओर(१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। "सारणीस्थ घड़ी पल" ४६।४२ और अभीष्ट घड़ी पल ४६।४७ का अन्तर ५पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३०क. ० वि. मिली, इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं.में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ०.वि.हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि.सं. २०२९ के आगे दिया गया, अयनांश संस्कार+१क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
↓	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०।०	२०।०	३०।०	४०।०	५०।०	६०।०							
७	८।३४	१७।९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०।०						
८	७।३०	१५।०	२२।३०	३०।०	३७।३०	४५।०	५२।३०	६०।०					
९	६।४०	१३।२०	२०।०	२६।४०	३३।२०	४०।०	४६।४०	५३।२०	६०।०				
१०	६।०	१२।०	१८।०	२४।०	३०।०	३६।०	४२।०	४८।०	५४।०	६०।०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९।५	५४।३३	६०।०		
१२	५।०	१०।०	१५।०	२०।०	२५।०	३०।०	३५।०	४०।०	४५।०	५०।०	५५।०	६०।०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३।५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०।०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. सवंत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	-३	२०४०	-८	२०४६	-१३	२०५२	-१८
२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	-४	२०४१	-९	२०४७	-१३	२०५३	-१८
२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	-४	२०४२	-९	२०४८	-१४	२०५४	-१९
२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	-५	२०४३	-१०	२०४९	-१५	२०५५	-२०
२०२६	+४	२०३२	-१	२०३८	-६	२०४४	-११	२०५०	-१६	२०५६	-२१
२०२७	+३	२०३३	-२	२०३९	-७	२०४५	-१२	२०५१	-१७	२०५७	-२२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्त्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों (लगभग १०हजार नगरों) के अक्षांश, रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्नसारणियां दी गई हैं, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधिी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधिः- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखेंः-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अत: यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों को किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश− कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ घं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न ''हुआ ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ म]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश १७°(उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २०°(उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९३ १२	९४ २५	९५ ४०	९६ ५६	९८ १४
० ३०	८ १०	१०० ३	१०१ १५	१०२ २७	१०३ ४१	१०४ ५७
१ ०	१६ १७	१०६ ५४	१०८ ३	१०९ १३	११० २४	१११ ३६
१ ३०	२४ १८	११३ ४७	११४ ५३	११५ ५९	११७ ६	११८ १४
२ ०	३२ ११	१२० ४३	१२१ ४५	१२२ ४७	१२३ ५०	१२४ ५२
२ ३०	३९ ५५	१२७ ४५	१२८ ४३	१२९ ४०	१३० ३६	१३१ ३३
३ ०	४७ २८	१३४ ५४	१३५ ४५	१३६ ३६	१३७ २७	१३८ १८
३ ३०	५४ ५१	१४२ १०	१४२ ५५	१४३ ३९	१४४ २२	१४५ ६
४ ०	६२ ५	१४९ ३३	१५० १०	१५० ४६	१५१ २३	१५१ ५८
४ ३०	६९ १२	१५७ ३	१५७ ३१	१५८ ०	१५८ २७	१५८ ५५
५ ०	७६ ११	१६४ ३८	१६४ ५८	१६५ १७	१६५ ३६	१६५ ५४
५ ३०	८३ ७	१७२ १८	१७२ २८	१७२ ३८	१७२ ४७	१७२ ५७
६ ०	९० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६ ३०	९६ ५३	१८७ ४२	१८७ ३२	१८७ २२	१८७ १३	१८७ ३
७ ०	१०३ ४९	१९५ २२	१९५ २	१९४ ४३	१९४ २४	१९४ ६
७ ३०	११० ४८	२०२ ५७	२०२ २९	२०२ ०	२०१ ३३	२०१ ५
८ ०	११७ ५५	२१० २७	२०९ ५०	२०९ १४	२०८ ३७	२०८ २
८ ३०	१२५ ९	२१७ ५०	२१७ ५	२१६ २१	२१५ ३८	२१४ ५४
९ ०	१३२ ३२	२२५ ६	२२४ १५	२२३ २४	२२२ ३३	२२१ ४२
९ ३०	१४० ५	२३२ १५	२३१ १७	२३० २०	२२९ २४	२२८ २७
१० ०	१४७ ४९	२३९ १७	२३८ १५	२३७ १३	२३६ १०	२३५ ८
१० ३०	१५५ ४२	२४६ १३	२४५ ७	२४४ १	२४२ ५४	२४१ ४६
११ ०	१६३ ४३	२५३ ६	२५१ ५७	२५० ४७	२४९ ३६	२४८ २४
११ ३०	१७१ ५०	२५९ ५७	२५८ ४५	२५७ ३३	२५६ १९	२५५ ३
१२ ०	१८० ०	२६६ ४८	२६५ ३५	२६४ २०	२६३ ४	२६१ ४६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश ८°(उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ११°(उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश १४°(उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश १७°(उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २०°(उ.) लग्न अं. क.
१२ ०	१८० ०	२६६ ४८	२६५ ३५	२६४ २०	२६३ ४	२६१ ४६
१२ ३०	१८८ १०	२७३ ४१	२७२ २७	२७१ ११	२६९ ५३	२६८ ३३
१३ ०	१९६ १७	२८० ३९	२७९ २५	२७८ ९	२७६ ५०	२७५ २९
१३ ३०	२०४ १८	२८७ ४३	२८६ ३०	२८५ १५	२८३ ५७	२८२ ३५
१४ ०	२१२ ११	२९४ ५७	२९३ ४६	२९२ ३३	२९१ १६	२८९ ५५
१४ ३०	२१९ ५५	३०२ २१	३०१ १४	३०० ४	२९८ ५०	२९७ ३२
१५ ०	२२७ २८	३०९ ४८	३०८ ५६	३०७ ५१	३०६ ४२	३०५ २८
१५ ३०	२३४ ५१	३१७ ४९	३१६ ५४	३१५ ५५	३१४ ५३	३१३ ४५
१६ ०	२४२ ५	३२५ ५४	३२५ ७	३२४ १७	३२३ २३	३२२ २५
१६ ३०	२४९ १२	३३४ १२	३३३ ३५	३३२ ५५	३३२ १२	३३१ २६
१७ ०	२५६ ११	३४२ ४१	३४२ १५	३४१ ४८	३४१ १८	३४० ४५
१७ ३०	२६३ ७	३५१ १८	३५१ ५	३५० ५१	३५० ३६	३५० १९
१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	८ ४१	८ ५५	९ ९	९ २४	९ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१७ १९	१७ ४५	१८ १२	१८ ४२	१९ १५
१९ ३०	२९० ४८	२५ ४८	२६ २५	२७ ५	२७ ४८	२८ ३४
२० ०	२९७ ५५	३४ ६	३४ ५३	३५ ४३	३६ ३७	३७ ३५
२० ३०	३०५ ९	४२ ११	४३ ६	४४ ५	४५ ७	४६ १४
२१ ०	३१२ ३२	५० २	५१ ४	५२ ९	५३ १८	५४ ३२
२१ ३०	३२० ५	५७ ३९	५८ ४६	५९ ५६	६१ १०	६२ २८
२२ ०	३२७ ४९	६५ ३	६६ १४	६७ २७	६८ ४४	७० ५
२२ ३०	३३५ ४२	७२ १७	७३ ३०	७४ ४५	७६ ३	७७ २५
२३ ०	३४३ ४३	७९ २१	८० ३५	८१ ५१	८३ १०	८४ ३१
२३ ३०	३५१ ५०	८६ १९	८७ ३३	८८ ४९	९० ७	९१ २७
२४ ०	० ०	९३ १२	९४ २५	९५ ४०	९६ ५६	९८ १४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.)इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)	साम्पातिक काल	सभीस्थलों के लिए	अक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)
घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. कं.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अ. क.	लग्न अं. कं.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४	१२ ०	१८० ००	२ ० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३	१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७	१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२५९ २१	२६७ ३३
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७	१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५	१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२	१४ ३०,	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	२४२ ४०	१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०	१५ ३०	२३४ ५१	३[illegible] ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १	१६ ०	२४२ ५	३[illegible]१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४	१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८	१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४	१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८ ०	२७० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६	१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२	१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६	१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९	२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०	२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०	२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८	२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५	२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३	२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३	२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७	२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६	२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.
१९४३	६ ३८ १५	१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७
१९४४	६ ३७ १७	१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६
१९४५	३ ४० १६	१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	३ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९
१९४६	६ ३९ १९	१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२
१९४७	६ ३८ २२	१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४
१९४८	६ ३७ २५	१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३
१९४९	६ ४० २५	१९५६	६ ३७ ४१	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	६ ४० ५	१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अग[illegible]			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	[illegible]	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	[illegible]	५०	१५	५०	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	[illegible]	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	[illegible]	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	[illegible]	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	[illegible]	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	[illegible]	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	[illegible]	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	[illegible]	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	[illegible]	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	[illegible]	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	[illegible]	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	[illegible]	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	[illegible]	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	[illegible]	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	[illegible]	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	[illegible]	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	[illegible]	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	[illegible]	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	[illegible]	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
३२																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२९	२२ ५१ ५५	१९५३	२३ १२ २	१९७७	२३ ३२ ८
१९३०	२२ ५२ ४५	१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५८
१९३१	२२ ५३ ३६	१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४८
१९३२	२२ ५४ २६	१९५६	२३ १४ ३२	१९८०	२३ ३४ ३९
१९३३	२२ ५५ १६	१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९
१९३४	२२ ५६ ७	१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ १९
१९३५	२२ ५६ ५७	१९५९	२३ १७ ३	१९८३	२३ ३७ ९
१९३६	२२ ५७ ४७	१९६०	२३ १७ ५३	१९८४	२३ ३८ ०
१९३७	२२ ५८ ३७	१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५०
१९३८	२२ ५९ २८	१९६२	२३ १९ ३४	१९८६	२३ ३९ ४०
१९३९	२३ ० १८	१९६३	२३ २० २४	१९८७	२३ ४० ३०
१९४०	२३ १ ८	१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २०
१९४१	२३ १ ५८	१९६५	२३ २२ ५	१९८९	२३ ४२ ११
१९४२	२३ २ ४९	१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ १
१९४३	२३ ३ ३९	१९६७	२३ २३ ४५	१९९१	२३ ४३ ५२
१९४४	२३ ४ २९	१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२
१९४५	२३ ५ १९	१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३२
१९४६	२३ ६ १०	१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २२
१९४७	२३ ७ ०	१९७१	२३ २७ ६	१९९५	२३ ४७ १३
१९४८	२३ ७ ५०	१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३
१९४९	२३ ८ ४१	१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३।४८।५३
१९५०	२३ ९ ३१	१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३।४९।४४
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २७	१९९९	२३।५०।३४
१९५२	२३ ११ ११	१९७६	२३ ३१ १८	२०००	२३।५१।२४

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	[illegible]	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	[illegible]	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्र दशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनि दशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुध दशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ. फा. उ. षा.	रो. ह. श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू. भा.	पुष्य अनु. उ. भा	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू. फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि.	ग्रह व. मा. दि
र ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	च. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	म. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह।
आर्द्रा चि. श्र.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य. वि.श.	आश्ले. अनु.पू.भा.	भ.म.ज्ये.उभा	कृ. पू. फा. मू.रे.	रो.उ.फा.पू.षा.	मृ. ह. उ.षा	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	म. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि ५ १०	अन्तर्दशा
भ्रा. १ १०	भ ३ १०	उ ६ ०	सि. ९ १०	सं १३ १०	मं. २	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	के
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	स. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	मास,
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	दिन।
सि. २ १०	सं ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होगें। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षकुंडली में तनु आदि भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ्	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाहन ला.	पुत्रलाभ	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	[illegible]खलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहु	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी:	कष्टम्	हानि	विजय.	सुलाभ.	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम	यश,अर्थ	पुष्टि	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्रा.	लाभ	कष्टम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	[illegible]	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	[illegible]	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	[illegible]	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	[illegible]	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	[illegible]	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	[illegible]	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना- वेधसिद्धि वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५ पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल साधन प्रकारः- (१.)अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि-मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना (**वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्**)। इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग/देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२.) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्य तुल्य वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी बार नहीं मिलता। वहाँ पर बार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्न सारणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार-** गताब्द संख्या में जन्म लग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना जो शेष बचे वह मुन्था जानना। यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा- गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनादि- सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१,राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६०,यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल- सूर्य वर्ष लग्नन से ९ चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि. १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल- सू. १।५ च. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गुरु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुषस्त्री- ग्रह- बल-**स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल-** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनलग्नपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से पांचवे ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल - कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ ओर जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। तीसरे, ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। कार्य कठिनता से एंव गुप्त भाव में सफल हो, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। **फल-** शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से बैर, धन हानि, बनते काम को बिगाडना आदि फल होते है। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते है। फल - कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अष्ट वर्षेश निर्णय :- जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३ त्रैराशींश ४ समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिसे राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी) इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखेंवह वर्षेश होगा,। यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से अधिक बलवान हो वही वर्षवेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल. दृष्टि. अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो ॥ फल - वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग- वर्ष कुण्डली में लग्नेश - तृतीयेश वा चतर्थुश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष- लग्नेश वक्री हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेश काल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है, कि- सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३$\frac{१}{३}$ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षमान बनाने के लिए सूक्ष्म प्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहाँ "सूक्ष्म वर्षप्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेश काल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेश-काल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टै.टा. ही यहाँ प्रयोग में लाना होगा। जैसे-मान लीजिए किसी व्यक्ति ने दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टै.टा.) ८ घं. २० मि (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा. ८ घं. २० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा ७ घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ, कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टै.टा.) पर होगा। ध्यान रहे-इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अतः यहाँ प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.
१	१	६	९	१३	२	७	५९	२५	३	९	४९	३७	४	११	३९	४९	५	१३	२९
२	२	१२	१८	१४	३	१४	८	२६	४	१५	५८	३८	५	१७	४८	५०	६	१९	३८
३	३	१८	२७	१५	४	२०	१७	२७	५	२२	७	३९	६	२३	५७	५१	१	१	४७
४	५	००	३७	१६	६	२	२७	२८	०	४	१६	४०	१	६	६	५२	२	७	५६
५	६	६	४६	१७	०	८	३६	२९	१	१०	२६	४१	२	१२	१६	५३	३	१४	६
६	०	१२	५५	१८	१	१४	४५	३०	२	१६	३५	४२	३	१८	२५	५४	४	२०	१५
७	१	१९	४	१९	२	२०	५४	३१	३	२२	४४	४३	५	००	३४	५५	६	२	२४
८	३	१	१३	२०	४	३	३	३२	५	४	५३	४४	६	६	४३	५६	०	८	३३
९	४	७	२२	२१	५	९	१२	३३	६	११	२	४५	०	१२	५२	५७	१	१४	४२
१०	५	१३	३२	२२	६	१५	२२	३४	०	१७	११	४६	१	१९	१	५८	२	२०	५१
११	६	१९	४१	२३	३	२१	३१	३५	१	२३	२१	४७	३	१	११	५९	४	३	००
१२	१	१	५०	२४	२	६	४०	३६	३	५	३०	४८	४	७	२०	६०	५	९	१०

गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि.	गताब्द	वार	घं.	मि
६१	३	१५	१९	७३	०	१७	९	८५	१	१८	५९	९७	२	२०	४९	१०९	३	२२	३९
६२	०	२१	२८	७४	१	२३	१८	८६	३	१	८	९८	४	२	५८	११०	५	४	४८
६३	२	३	३७	७५	३	५	२७	८७	४	७	१७	९९	५	९	७	१११	६	१०	५७
६४	३	९	४६	७६	४	११	३६	८८	५	१३	२६	१००	६	१५	१६	११२	०	१७	६
६५	४	१५	५६	७७	५	१७	४५	८९	६	१९	३५	१०१	०	२१	२५	११३	१	२३	१५
६६	५	२२	५	७८	६	२३	५५	९०	१	१	४५	१०२	२	३	३४	११४	३	५	२४
६७	०	४	१४	७९	१	६	४	९१	२	७	५४	१०३	३	९	४४	११५	४	११	३४
६८	१	१०	२३	८०	२	१२	१३	९२	३	१४	३	१०४	४	१५	५३	११६	५	१७	४३
६९	२	१६	५२	८१	३	१८	२२	९३	४	२०	१२	१०५	५	२२	२	११७	६	२३	५२
७०	३	२२	४१	८२	५	००	३१	९४	६	२	२१	१०६	३	४	११	११८	१	६	१
७१	५	४	५०	८३	६	६	४०	९५	०	८	३०	१०७	१	१०	२०	११९	२	१२	१०
७२	६	११	००	८४	०	१२	५०	९६	१	१४	४०	१०८	२	१६	२९	१२०	३	१८	१९

ग्रहों की समकल युतियां (सं० २०५५)

युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख	युतग्रह	तारीख
सू. मं.	१३ मई' ९८	सू. शु.	३० अक्तू. '९८	मं. बु.	५ जून' ९८	मं. प्लू.	x	बु. यू.	x	गु. ने.	x	श. रा.	x	के. यू.	x
" बु.	६ अप्रै. '९८	" श.	१३ अप्रै. '९८	" गु.	x	बु. गु.	x	बु. ने.	x	" वें.	x	" के.	x	" ने.	x
" बु.	१० जून '९८	" रा.	२४ अग. ' ९८	" शु.	x	" शु.	२७ अग. ' ९८	बु. प्लू.	x	शु. श.	२९ मई '९८	" यू.	x	" प्लू.	x
" बु.	१४अग. '९८	" के.	११ फर. ' ९९	" श.	x	" शु.	११ सितं. ' ९८	गु. शु.	२३ मई' ९८	" रा.	७ सितं. ' ९८	" ने.	x	यू. ने.	x
" बु.	२५सितं. '९८	" यू.	२ फर. ' ९९	" रा.	x	" शु.	२८ नवं. ' ९८	गु. श.	x	" के.	x	" वें.	x	" वे.	x
" बु.	१ दिसं. '९८	" ने.	२२जन. ' ९९	" के.	x	" श.	१२ मई' ९८	गु. रा.	x	" यू.	x	श. यू.	x	ने. के.	x
" बु.	४ फर. '९९	" प्लू.	२६ नवं. ' ९८	" यू.	x	" रा.	x	गु. के.	x	" ने.	६ नवं. '९८	" ने.	x	ने. प्लू.	x
" शु.	x	मं. बु.	३१ मार्च. ' ९८	" ने.	x	" के.	x	गु. यू.	x	शु. वें.	x	" प्लू.	x		

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टि:
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं.मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श.शु.	बु.	मित्र-ग्रहा:
बु.	मं.श. गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशय:
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशा:
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशय:
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. कं.	ध. मी.	वृष, तुला	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु.स्त्री.नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास-दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवे या सातवें पड़ा हो या पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है । मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवे हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है ।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग देना । लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यह मुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है ।

अरिष्ट योग :

यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न होऔर जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वहीं आ जाये तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है । वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भय होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य वह शास्त्र- सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गुरु शुक्रास्त में गया-गोदावरी यात्रा में नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु - शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र- तीनों उत्तरा मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। शुभ लग्न-जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न हो देखते हों,विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा ४,६,८,९,१४,१५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४,८,१२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी ५,९,१ लग्नों की आधी घड़ी ५,१,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी,६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी,रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिध योग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त - यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु. रवि. मंगलवार को मृ, पुन, पु, ह, मूल और श्रवण नक्षत्रों में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५,तिथियों में जब लग्न से १,४,५,७,९, और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तो तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध, और शुक्रवार भी शुभ है।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त - गर्भाधान के छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमन्त जातकदीनि प्राशनान्तानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा - गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार - बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त - रिक्तामा. भद्रा, व्यातिपात एवं वैधृति को छोडकर शुभ तिथियां हों. वार चं. बु. गु. श. हों. नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हो. तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है ।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त - रेवती तीनों उत्तरा . रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५.७.१०.११.१३.१५. तिथियां शुभ है । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम है।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त - मास समाप्त हाने पर बुध . गुरु या चन्द्रवार को ४.९.१४. तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है । परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र . पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त - संक्रान्ति का दिन. भद्रा और व्यतिपात को छोडकर १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३ तिथयों में जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम. बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा . रो. ह. अश्विनी पुष्य . अभि . स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १,४,५,७,१० स्थनों में शुभग्रह तथा ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है ।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

जन्म दिन से १०।१२।१६। १८।३२ दिन शुक्रवार में मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि . पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त हाने पर १।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६। ११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है ।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

निष्क्रमण मुहूर्त - स्वा. अश्वि. पुन. ह.मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम . शनि को छोडकर अन्य वारों में, रिक्ता अमा. भद्रादि से रहित शुभ दिन मे, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूम्युपवेशन मुहूर्त-पांचवे महीने में पृथ्वी वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा.रो.मृ.ज्ये.अनु.अश्वि.ह.पुष्य.अभि.इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न मे शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र- बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र-''रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!'' इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त-जन्ममास से ६,८,१० या १२ वें मास में पुत्र का और ५,७,९ या ११वें मास में कन्या का भद्रादि- दोष रहित १,३,५,७,१०,१३,१५ तिथियों में सोम,बुध,गुरु ,और शुक्रवार को म.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पु.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष,वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में १,३,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो ,१,६,८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है किसी-किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु.शत-तारिका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त-चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक)जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४,९,१४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें दिन या १६वें दिन,६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम.बुध,गुरु ,शुक्रवार को श्र.ध.पुन.मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१,४,५,७,९,१०,स्थानों में शुभ ग्रह हों,३,६,११,स्थानों में पाप ग्रह हों तुला,वृष,धनु,या मीन लग्न में वृहस्पतिवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त-कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत.स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त-गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे,५ वे,७ वे वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी)चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र,बुध,गुरु,और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २,३,५,७,१०,११,१३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित)हो, ३,६,११,स्थानों में पापग्रह हो ज्ये.मृ.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.शत.ह.अश्वि.पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। **लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।**

मुण्डन कर्म में विशेष-स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने-अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो ''यथाकुलधर्म वः'' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त-मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है-वर्जित काल शनि.रवि.भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४,८,९,१४,१५,३, तिथियां संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में,यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन् के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल-यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रुपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार--ब्राह्मण को रविवार, क्षत्रिय सोमवार को,वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त-जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु,सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह.अश्वि.पुष्य.अभि.श्र.स्वा.रे.पुन. आर्द्रा.चित्रा.अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है. लग्न में मेष,कर्क तुला,और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त-उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर)रवि,बुध,गुरु और शुक्रवार को २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में म. आर्द्रा पुन., हस्त,चि.,स्वा. श्र.ध. शत.,अश्विनी ,म. तीनों पूर्वा , तीनों उत्तरा , रो. पुष्य, आश्ले, अनु. ,रेवती,नक्षत्रों में , जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त - सूर्य , भौम , शनिवार हों ,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले, म. तीनों पूर्वा . भ.कृ.वि.आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है ।

सीने पिरोने(सूचिकर्म)का मुहूर्त - अश्वि.पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र , सूर्य, बुध,चन्द्र,गु., श.ये वार ,१।२।३।४।५।६ ।७।८।९।१०।११ ।१३ ।१५-ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त - यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हों , उसे यज्ञ कहते है । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरूष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु- धागा - विशेष)यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्रह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वे. वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाये तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २५ तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते है। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रीय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किंतु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्राति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु.गु.चं. और लग्नेश ६।८ स्थान में, चं., शु. १२वें स्थान में और १।५।८ वें, में, पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पाप ग्रह ३।६।११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र, के बाल्य वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपन्यन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किवां अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ १/२ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में व(वश्य), त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों तो गण दोष दूर हो जाता है ।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे-- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध रोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नूदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्र नवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१.२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	स्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	मं.	मं.	मं.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	मा.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.
राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

लेखक :- प्रो. प्रियव्रत शर्मा

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९५० ई. से सन् २०००ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है। पुस्तक लगभग छप चुकी है। इस पुस्तक का विस्तृत विज्ञापन इस पंचांग के अन्तिम पृष्ठ पर देखें।

मूल्य- ३०० रु० (डाक व्यय अलग)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर 6, पो. पंचकूला-134109

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग १)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२,	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८½ त	१८½ ब भ त	२१½ ब भ त	२२½ ब भ त	२६ ब त र	१७ ब न त र	१९ बन त र	२३½ न त	३१½ त	२८ ग	२१ व भ ग	२५ व भ	१५½ व भ न त	११ ब भ न तर	९ तवभ यनर	१३ व भ त र
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२९ ग	१९ ब ग भ	२१½ ब भ त	१४½ ब भ तन	१८ न ब त र	२६ ब त र	२७ ब त र	३१½ त	२३½ न त	२५½ ग त	२० ग व भ	१८ व भ न	२६ व भ	२१½ ब भ र	२० ब भ त	४ बभग नतर
	कृत्ति. १	२७½ ग त	२९ ग	२८ न	१८ ब भ न	१० ग ब न भ	१६½ ग व भ त	२० ग ब त	२० ग ब त	२१ ग ब त र	२५½ ग त	२६½ ग त	२३½ न त	१६½ व भ न त	२० ग व भ	२० ग व भ	१५½ ग ब भ	१५½ ग ब भ र	१८ ब भ त
वृष	कृत्ति. २,३,४	१८½ ग भ त	२० ग भ	१९ भ न	२८ न	२० ग न	२६½ ग त	१७½ ग ब भ त	१७½ ब ग भ त	१८½ ग ब भ त	२२ ग त र	२३ ग त र	२० न त र	१८½ न व र त	२२ र व ग	२२ र व ग	२१ ग भ	२१ ग भ	२३½ भ त
	रोहि. १,२,३,४	२३½ भ त	२३½ भ त	११ ग भ न	२० ग न	२८ न	३६	२७½ ब भ	२३½ ब भ त	२२½ भ ब त य	२६ त र य	२७ त र	१२ ग न तरय	१०½ रवग नतय	२४½ र व त य	२७ र ब	२६ भ	२६ भ	२० ग भ
	मृग. १,२	२३½ भ त	१४½ भ न त	१८½ भ त ग	२७½ त ग	३५	२८ न	२९ ब भ न	२४ ब भ	२२½ ब भ त य	२६ त य र	१९ त र न	२१ त र य ग	१९½ ग व त य	१५½ र व नतय	२४½ र व त	२३½ भ त	२६ भ	१३ भ न ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ त र	१८ न तर	२२ तर ग	१९½ भ ग त	२७ भ	२० भ न	२८ न	३३	३१½ त य	१९ भ व तयर	१२ भ न वतर	१४ भवत यरग	२३½ ब त य ग	१९½ व न त य	२८½ व त	३१½ त	३४	२१ न ग
	आर्द्रा १,२,३,४	१९ त र न	२७ त र	२१ त रग	१८½ ग भ त	२४½ भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२½ भ न तयर	२० भ व त र	१३ गभर वतय	२३½ ग त ब	२९½ व त	२१½ न व त	२४½ न त	२४½ न त	२७ ग य
	पुन. १,२,३	२० न त र	२७ त र	२३ त र	२०½ भ त ग	२२½ भ त	२३½ भ त य	३१½ त य	२४ न य	२८ न	१५½ न भ व र	२२½ भ व र	१७ भ व तरग	२२½ य व त ग	२६½ य व त	२१½ न व त	२४½ न त	२५ न त	२७ त ग
कर्क	पुन. ४	२२½ ब न त	२९½ ब त	२५½ ब त ग	२२ ब ग त र	२४ ब त य र	२५ ब त य र	१८ बभव रतय	१० बभव नवर	१४½ बभ रनत	२८ न	३५	२९½ त ग	१६½ बभय गत	२०½ ब भ त य	१५½ ब भ न त	१८ न ब त र	१९ न ब वतर	२१ ब ग वतर
	पुष्य १,२,३,४	३०½ ब त	२१½ ब न त	२६½ ब त ग	२३ ब त र ग	२५ ब त र	१८ ब न त र	११ बभन वतर	१८ बभ वतर	२१½ ब भ व र	३५	२८ न	३० ग	१९½ ब भ ग त	१५½ ब भ न त	२३½ ब भ त	२६ ब व त र	२७ ब व त र	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ ब ग	२४ ब ग त	२२ न ब त	१९ न ब त र	११ गबत नयर	१९ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गबत भवर	२८ ग त	२९ ग	२८ न	१५ य ब भ न	१५½ गबय भत	१८½ ग ब भ त	२१ ग ब वतर	२१ ग ब वतर	२६ बवत र
सिंह	मघा १,२,३,४	२० ग व भ	२० ग व भ	१६ बभ न त	१७½ वब रनत	९½ वबत गरनय	१७½ वबत गरय	२१½ वब गतय	२२½ व ब ग त	२० वब गयत	१६½ ग भ य त	१९½ गभ त	१६ न भ य	२८ न	३० ग	२७½ ग त	१६ व ब गभत	१६½ व ब गभत	२१ व ब भ त
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ व भ न	२० ग व भ	२१ ब व र ग	२३½ व ब रतय	१५½ वबन रतय	१९ व ब नतय	२८½ व ब त	२६½ व ब त य	२२½ य भ त	१७½ भ न त	१६½ ग भ य त	३० ग	२८ न	३५	२४ व ब भ	२२½ व ब भ त	७½ वबत गनभ
	उ.फा. १	१६½ व भ न त	२६ वभ	२० व ग भ	२१ ब व ग र	२६ व ब र	२४½ व ब र त	२८½ व ब त	२०½ व ब न त	२१½ ब ब न त	१७ भ न त	२५½ भ त	१९½ गभ त	२७½ ग त	३५	२८ न	१७ व ब भ न	१६ व ब भ न	१३½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भ न त र	२२½ भ र	१६½ ग भ र	२१ ग भ	२६ भ	२४½ भ त	३१½ ब त	२३½ न ब त	२४½ न ब त	२० न ब त र	२८ ब त र	२२ ग ब त र	१७½ ग व भ त	२५ भ व	१८ ब भ न	२८ न	२७ न	२४½ य ग त
	हस्त १,२,३,४	१० य भ नतर	२० भ त र	१७½ भ र ग	२२ भ ग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२½ न ब त	२४½ न ब त	२० न ब त र	२८ ब त र	२३ ब त र ग	१८½ व भ त ग	२२½ व भ त	१६ व भ न	२६ न	२८ न	२८ य ग
	चित्रा १,२	१३ गभत य र	५ गभन तयर	१९ भ त य र	२३½ भत य	२० ग भ	१२ ग भ न	१९ ग ब न	२६ ग ब य	२५ ग ब त	२१ ग व त र	१२ गनव तयर	२७ व त र	२२ व भ त	८ ग व भनत	१४ व य गभत	२४ ग य त	२७ ग य	२८ न

(व=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग २)

कन्या	वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२½ ग तय	१४½ गन तय	२८½ तय	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	२१ गभ	१९½ गभ त	२०½ गर वत	११½ गनय वरत	२६½ वत र	२५½ वर त	११½ वर गनत	१७½ वय गरत	१७½ यग भत	२० गभ य	२१ भन
	स्वाती १,२,३,४	२७½ यत	२९½ त	१७½ न त	१२½ भन त	१५½ भन त	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२९ वर	२७½ व तर	१४½ नव तर	१३½ वन तग	२५½ वर त	२५½ वर त	२५½ भ त	२७½ भ त	२१ भ यग
	विशा. १,२,३	२२½ तय ग	२२½ तय ग	२०½ तय न	१५½ तभ नय	१०½ गभ तन	१८½ गभ त	१९½ गभ त	२० गभ य	२१ गभ	२२ ग वर	२१ ग तर	१८½ नव तर	१७½ वर तन	१९½ वर तग	१७½ वय रगत	१७½ यग भत	१८½ गभ तय	२७½ भ त
वृश्चिक	विशा. ४	१६½ बग भयत	१६½ बग भयत	१४½ बभ नयत	१९½ बन तय	१४½ बग नत	२२½ बग त	१२ बवर गभत	१२½ बवय गभर	१३½ बव गभर	१९ गभ	१८ गभ य	१५½ भन त	२१½ बव नत	२३½ बव गत	२१½ बव गयत	१७ तबव गयर	१८ बवग तयर	२७ बव तर
	अनु. १,२,३,४	२४½ बभ त	१५½ बभ नत	१९½ बभ तग	२४½ बत ग	२७½ ब त	२०½ बन त	१० बवत नभर	१५ तबव रभय	२०½ बव भर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४½ बव तग	२०½ बव तन	२९½ बव त	२५ बव तर	२६ बव त	११ बरव नतय
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ बग भन	१८½ बग तभ	२४½ बभ त	२९½ ब त	२२½ बग त	२२½ बग त	१२ तबव गभर	२ तवबय गभनर	५½ तबवर गभन	१०½ त गभन	२० ग भ	२६ भ	३१ बव	२३½ बव गत	१६½ तबव गन	१२ तबव गनर	१२ तबव गनर	२४ बव तयर
धनु	मूल १,२,३,४	१२ गभ न	२० गभ	२४½ भ त	१९ बभ तर	१३ बग तभर	१३ रबग तभ	२१ बग तर	१५ बगन तर	१२ रबग तनय	८ यगभ वनत	१७ गभ वत	२३½ भ वय	२५ वभ	१९ वग भ	९½ तवग भन	१३ तरब गन	१३ बग तनर	२७ रब तय
	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभ य	१२½ बय गभर	१८ बभ तयर	१० रबभ तनय	१८ बन तयर	२७ व तर	२७ व तर	२३ भ वत	१३ यभन वत	१७ गभ वत	१९ वग भ	१७ वभ न	२५ वभ	२८½ ब र	२७ बत र	१३ तबग नर
	उ.षा. १	२४½ भत	२६ भ	१२ गभ न	६½ रगब भन	१०½ बयर भन	१७ बय तभर	२५ बय तर	२७ बत र	२८ बत र	२३ भ वत	२३ भ वत	९ गभ वनत	८½ तगव यभन	२४ वभ य	२५ वभ	२८½ ब र	२८½ ब र	२१ गब तर
मकर	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८½ र	१४½ गन र	१२ गभ न	१६ भन य	२२½ यभ त	२० बय तभ	२२ बभ त	२२ बभ वत	२८ त र	२८ तर	१४ गन तर	४½ तयर गभन	२० रभ य	२१ रभ	२४½ भ त	२४½ बभ	१७ गभ वत
	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३½ यन र	११ यभ गन	१६ भन य	२५ भ य	२२½ बभ वय	२१ बभ वत	२२ बभ वत	२८ त	२६ यत र	१५ नत र	६½ तगर भन	१८½ रभ त	२० भर	२३½ भ व	२४½ भ व	१९½ भ व
	धनि. १,२	२० गत यर	११ यग नरत	२६ तय र	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	९½ वबग भन	१६½ वयव गभ	१६ बग वतभ	२२ ग तर	१३ रगन तय	२८ तर	१९½ रभ त	५½ तगर भन	१२½ तयर गभ	१६ गभ वतय	१७½ गभ व	१५½ भन वय
कुम्भ	धनि. ३,४	२० तग यर	११ यग तनर	२६ तय र	३०½ तय	२७ ग	१९ गन	१२ गभ न	१९ गभ य	१८½ गभ त	१३½ गभ वतर	४½ तयर गभनव	१९½ भव तर	२५½ वर त	११½ वतर गन	१८½ वर गतय	१७½ गभ तय	१९ गभ य	१७ यभ न
	शत. १,२,३,४	१५ गन तर	२१ ग तर	२८ तर	३२½ त	२५½ गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	८ गभ वनर	१४½ गभ वतर	२०½ वभ तर	२६½ वर त	२०½ वर गत	१२½ वरत गन	११½ तग नभ	८½ तयग भन	२५ भ य
	पू.भा. १,२,३	१८ नत यर	२५ य तर	२० गर तय	२४½ ग तय	३१½ त	३१½ त	२४ भ त	१७ भन य	१८ भन	१३ भन व	२० भर वय	१३½ गभ वतर	१९½ वर तग	२५½ वर त	१६½ वर यनत	१५½ भन त	१५½ भन तय	१७½ गभ तय
मीन	पू.भा. ४	१४½ बभ तनय	२१½ बय तभ	१६½ गब तभय	१९ गब तयर	२६ ब तर	२६ ब तर	२५½ बव तर	१८ बन बयर	१९ नब वर	१८ नभ	२५ भ य	१८½ गभ त	१७½ बग तभ	२३½ बभ त	१४½ बभ तनय	१६½ रबन वतय	१६½ रनब वतय	१८½ रबग वतय
	उ.भा. १,२,३,४	२४½ बभ त	१६½ बभ तन	१८½ गब तभ	२१ गब तर	२६ बत र	१८ नब तर	१७½ नब वतर	२५½ बर वत	२८ ब वर	२७ भ	१९ भन	२१ गभ	१८½ गब तभ	१६½ बभ न	२५½ बभ त	२७½ बव तर	२६½ बव तर	९½ वतर वयगन
	रेव. १,२,३,४	२५ बभ	२४½ बभ त	११½ तगब भन	१४ गबन तर	१७ बन तर	२६ ब तर	२५½ बर वत	२४½ रब वत	२६½ रब वत	२५½ भ त	२७ भ	१४ भन ग	१३ बभ गन	२३½ बभ त	२३½ बभ त	२५½ बर वत	२६½ बर वत	१९½ बयर वतग

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग ३)

कन्या	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा २,४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२२½ बय तग	२६½ बय त	२२½ तब यग	१८½ गभ तय	२५½ भ त	१४ भन ग	१३½ भन ग	२५ भ	२३½ भ त	२५ भ तर	२६ भत र	२० ब त यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४½ नभ तय	२४½ भ त	२६ भ
	भर. १,२,३,४	१३½ बगन तय	२९½ ब त	२१½ गब तय	१७½ ग भ तय	१७½ न भ त	१९½ ग भ त	२० ग भ	१८ न भ	२६ भ	२७½ ब र	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बय गनतर	२० ग ब त र	२४ ब य तर	२२½ तभ य	१७½ नभ त	२६½ भ त
	कृत्ति. १	२७½ ब त य	१५½ ब ग न त	१९½ ब न त य	१५½ भ न त य	१९½ गभ त	२५½ भ त	२४½ भ त	१८ गभ य	१२ गभ न	१३½ बग नर	११½ ब य रगन	२५ बत यर	२५ ब त यर	२७ ब त र	१९ बग तयर	१७½ ग भ तय	१९½ गभ त	११½ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२½ बभ तय	१०½ ग ब भनत	१४½ बभ तनय	२०½ न तय	२४½ ग त	३०½ त	२० भ तर	१३½ यग भर	७½ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३½ भ तय	२९½ ब तय	३१½ ब त	२३½ गब तय	२० गत यर	२२ ग तर	१४ गन तर
	रोहि. १,२,३,४	१९ गब भ	१५½ बभ नत	९½ तबग नभ	१५½ गन त	२९½ त	२३½ ग त	१४ गभ तर	१९½ रभ तय	११½ यभन र	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६½ गब	२४ गब त	३०½ ब त	२७ तर	२७ तर	१९ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ न ग	२५ बभ	१८½ बभ तग	२४½ त ग	२१½ न त	२४½ तग	१५ भ तरग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१½ भय त	२५ भ य	१३ नभ ग	१९ ब गन	२७ बग	२९½ ब त	२६ त र	१८ न त र	२७ त र
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०½ भ तग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नतय र	२५ यतर	२० भय वत	२३½ भ यव	११½ नभ वग	१३ नभ ग	२१ भ ग	२३½ भ त	२५½ तव र	१७½ नव तर	२६ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३½ रगव भ य	१७ तभव यर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भ वत	२३ भ वत	१७½ गभ वय	१९ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१९ नर वय	२६½ वत र	२६ वत र
	पुन. १,२,३	२०½ भ तग	२८ भ	२२ भ ग	१५½ वभ रग	२१½ वभ र	७ रगवभ नत	१४ यरतन ग	२७ तर	२७ तर	२२ व त भ	२३ वत भ	१७ व त भयग	१८½ भग त य	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन य व	२८ रव	२७ वत र
कर्क	पुन. ४	२०½ बतर ग	२८ वरब	२२ वरब ग	२० गभ	२६ भ	११½ तग भन	८ यतव भगनय	२१ बभ वत	२१ बभ वत	२६ बत र	२७ बत र	२१ बगत यर	१२½ बभव तयगर	८ बभव नगर	१० बभर नवय	१६ नभ य	२६ भ	२५ भ त
	पुष्य १,२,३,४	११½ गनबव तयर	२६½ ब वतर	२१ रबग वय	१९ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गबभ वत	११ यबभ तनव	२१ बभ वत	२६ ब तर	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४½ भबगय वनतर	१४½ बवत रगभ	१८ बभ वयर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५½ बव तर	१२½ गबव तरन	१७½ नब वतर	१५½ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२½ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ बत यर	१७½ बभव तरय	१९½ बभ वतर	११½ गबभ वतयर	१७½ गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा १,२,३,४	२४½ बव तर	११½ बवत रगन	१६½ बवत रन	२२½ नव त	२५½ गव त	३३ व	२५ भव	१९ गवभ	८½ वगभ नतय	३½ बतय गभन	४½ बरत गभन	१८½ बरत भ	२४½ बव तर	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	१८½ गभ त	१९½ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०½ बवत रगन	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	२४½ गव त	२३½ नव त	२५½ गव त	१९ ग व भ	१७ भव न	२४ भव य	१७ बर भय	१८½ बर भत	४½ बरत गभन	१०½ बवत रगन	१९½ बव रगत	२४½ बव रत	२४½ भ त	१७½ नभ त	२५½ भत
	उ.फा. १	१६½ बवत यगर	२५½ बव तर	१६½ बवव गरत	२२½ भव गत	३१½ वत	१७½ गव नत	९½ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११½ बरत गभय	१७½ बवत गरय	११½ बवत गनर	१५½ बवत नरय	१५½ नभ तय	२६½ भ त	२५½ भ त
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६½ गबय भत	२५½ बभ त	१६½ गबय भत	१८ यवत गर	२७ व तर	१३ गव तनर	१४ गन तर	२९½ र	२९½ र	२४½ भ व	२४½ भ व	१६ गभ वतय	१६½ गव भतय	१०½ गव नभत	१४½ बभ नतय	१७½ तनव यर	२८½ वतर	२७½ वतर
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६½ बभ त	१८½ बभ, तयग	२० वग तयर	२६ वतर	१३ भवत रग	१५ नत रग	२७ तर	२८½ र	२३½ भव	२४½ भव	१८½ भग वर	१९ बभ यग	८½ बयभ नतग	१३½ बभ नतय	१६½ वनत यर	२६½ वतर	२७½ वतर
	चित्रा १.२	२० बभ न	१९ गब भय	२६½ बभ त	२८ व तर	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तयर	१४ गन तर	२२ ग तर	१७ गभ त	१८½ गभ व	१५½ भ वनय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६½ गबत भय	१९½ गव तयर	१०½ गयव नतर	१९½ वगत यर

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग ४)

कन्या	वर →	तुला चित्रा ३,४	तुला स्वाती १,२,३,४	तुला विशा. १,२,३	वृश्चिक विशा. ४	वृश्चिक अनु. १,२,३,४	वृश्चिक ज्येष्ठा १,२,३,४	धनु मूल १,२,३,४	धनु पू.षा. १,२,३,४	धनु उ.षा. १	मकर उषा. २,३,४	मकर श्रव. १,२,३,४	मकर धनि. १,२,	कुम्भ धनि. ३,४	कुम्भ शत. १,२,३,४	कुम्भ पू.भा. १,२,३	मीन पू.भा. ४	मीन उ.भा. १,२,३,४	मीन रेव. १,२,३,४
तुला	चित्रा ३,४	२८ न	२७ ग य	३४½ त	२३½ भव त	६½ गवत न भ	२०½ भ व त य	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ ग त र	२५ ग त व	२६½ ग व	२३½ न व य	१८ नभ य	२६ भ य	१८½ ग भ त य	१२½ गभव तयर	३½ वत यग भन	१२½ यर गभ वत
	स्वाती १,२,३,४	२८ य ग	२८ न	२० न य ग	९ भवय नग	२१½ भव त	१६½ भव त ग	२३ तर ग	२७ त र ग	१९ तन र	२२ नव त	२३ न व त	२६½ व य ग	२१ य ग भ	२० ग य भ	२५ य भ	१९ व भ य र	१९½ व त भर	१२½ व त भनर
	विशा. १,२,३	३४½ त	१९ ग न य	२८ न	१७ भ व न	१६ ग व भय	२०½ भ व त य	२७ त य र	२२ ग त र	१४ ग न त र	१७ ग न व त	१७ ग न व त	३० व त य	२४½ भ त य	२६ भ य	२० ग भ य	१४ ग भ वयर	१३ ग य भतर	४½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. ४	२२½ ब व भ त	७ बवग नभय	१६ ब व नभ	२८ न	२७ ग य	३१½ त य	२१½ ब व तयभ	१६½ ब व गभत	८½ बवग नभत	१२ गबन तर	१२ ब न गतर	२५ ब त यर	२४ ब व तयर	२५½ ब व यर	१९½ ब व गयर	१९ ग भ य	१८ ग य भ	९½ ग भ नतय
	अनु. १,२,३,४	६½ बवत भयगन	२१½ ब व भत	१६ ब व भयग	२८ य ग	२८ न	३१ ग	१५½ बवत गयभ	१३½ तबव नभ	२१½ ब व तभ	२५ ब त र	२६ ब त र	१२ तयब नरग	११ तयब वनरग	२१ बव तरग	२४½ बव यर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१९½ बव तभय	१५½ तबव गभ	१९½ बव भतय	३१½ त य	३० ग	२८ न	१४ ब व नभय	१६½ ब व तगभ	१६½ ब व तगभ	२० ग ब तर	२० गब तर	२५ बत यर	२४ बव तयर	१८ बव नरत	१० तबव यगनर	९½ गभ तनय	२१ गभ	२१ गभ
धनु	मूल १,२,३,४	२६ त ब य र	२१ ग ब त र	२६ त ब य र	२२½ भव त य	१५½ ग व भयत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६½ ग त	१५ ग ब भवत	१५ गब भवत	२० बभव तय	२८½ ब व य	२१½ ब न त	१४½ ग न बतय	१६ ग न वतय	२५ ग व त	२६ ग व
	पू.षा. १,२,३,४	१३ ग ब तनर	२७ ब त र	२१ ग ब त र	१७½ ग व भ त	१५½ भव न त	१७½ ग व भ त	२८ ग	२८ न	३४	२२½ बभ व	२३ बभ व त	६ गबव भनतय	१४½ ग ब तनय	२३½ गब त	२८½ ब त य	३० व त य	२३ न व त	३१ व त
	उ.षा. १	२१ गब तर	१९ न ब त र	१३ ग ब नतर	९½ ग व भनत	२३½ भव त	१७½ ग व भ त	२६½ ग त	३४	२८ न	१६½ बभ व न	१४½ ब भ व न	१५ गबव भ त	२३½ गब त	२३½ गब त	२९½ ब त	३१ व त	३१ व त	२३ न व त
मकर	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ न ब ब त	१६ ग ब न त	१३ ग न त र	२७ त र	२१ ग त र	१६ गभ वत	२३½ भ व	१७½ नभ व	२८ न	२६ न	२६½ ग त	१७ गब भवत	१७ गबव भ त	२३ ब भ व त	३०½ त	३०½ त	२२½ न त
	श्रव. १,२,३,४	२६½ ब व ग	२२ नब व त	१७ न ब गवत	१४ न त र	२७ त र	२२ त र	१७ भ व त ग	२३ भ व त	१४½ नभ व	२५ न	२८ न	२८ य ग	१८½ ब भ वयग	१८ बभव त ग	२१ बभ वतय	२८½ त य	२९½ त	२२½ न त
	धनि. १,२	२२½ न ब व य	२४½ ग ब व य	२९ ब व त य	२६ त य र	१२ ग न तयर	२६ त य र	२१ भ व त य	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६½ ग त	२७ ग य	२८ न	१८½ बभ न व	२३½ बभ व य	१९ गब वतभ	२६½ ग त	१५½ गन त य	२२½ ग य त
कुम्भ	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० गभ य	२४½ भ त य	२५ त व य र	११ गवय तनर	२५ त व य र	२९½ त य	१५½ ग त न य	२४½ त ग	१८ गभ व त	१८½ गभ व य	१९½ भ व न	२८ न	३३ य	२८½ ग त	१८ गभ व त	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
	शत. १,२,३,४	२६ भ य	१९ भय ग	२६ भ य	२६½ य व र	२१ ग ब त र	१९ न व त र	२२½ न त	२४½ ग त	२४½ ग त	१८ गभ व त	१८ गभ व त	२४½ भ व य	३३ य	२८ न	१९ गन य	८½ गभ वनय	१७ गभ व त	१६ गभ व त
	पू.भा. १,२,३	१८½ गभ त य	२६ भ य	२० गभ य	२०½ गव य र	२६½ ब य र	११ गवत यनर	१५½ नग तय	२९½ त य	३०½ त	२४ भ व त	२३ भ व त य	२० भग व त	२८½ ग त	१९ नग य	२८ न	१७½ न भ व	२२½ भ व य	२० भय व त
मीन	पू.भा. ४	११½ गबव भतयर	१९ बभ वयर	१३ गबव भयर	१९ गभ य	२५ भ य	९½ गभ नतय	१५ गब तनय	२९ ब व त य	३० ब ब त	२९½ ब त	२८½ ब त य	२५½ गब त	१७ ग ब भ त	७½ गबय भतन	१६½ बभ त न	२८ न	३३ य	३०½ य त
	उ.भा. १,२,३,४	२½ यवबर गभनत	१९½ भयब त र	१२ गबर भयब	१८ गय भ	१९ नभ	२१ गभ	२४ गब वत	२२ नव वत	३० ब वत	२९½ ब त	२९½ ब त	१४½ गब तनय	६ गबव नभतय	१६ गबव भत	२१½ बभ त य	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२½ बभव तयर	११½ यभत वनर	४½ बभयन तगयर	१०½ नभ तयग	२७ भ	२२ भ ग	२६½ वग व	२९ ब व त	२१ नव वत	२०½ न ब त	२१½ न ब त	२२½ ब य त ग	१४ बवय भतग	१६ बभ वतग	१८ बय भवत	२९½ य त	३४	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष। र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न-गण्डान्त-कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासा : आचार्य चूड़ामणी-''माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः ॥'' वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥ केशवेन यदि गौरीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥ २ ॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः-सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न का दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः-जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च प्रो विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो-एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः-ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय-दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें अर्थात् पहले कर लें और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करें मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर लें। यहाँ छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच-साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ ॥ मास कुल वालों के मरण से २२ ॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी **दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं।** यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा - ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं) शुद्धि प्रथम देखें। ''झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ (बृहस्पतिः) ॥ अत्यावश्यकता में ''द्विरष्टौ द्वादशस्तुर्योऽघाष्टम-स्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत् ॥

तुलाराशौ अपूज्यःरविः-धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः।
आवश्यके पूज्य रवि परिहारः-गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतःशुभावह ॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहाद त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१० ।६ ।३ ।२
श्रेष्ठगुरु :—९ ।५ ।११ ।२ ।७
नेष्टगुरु—४ ।८ ।१२
श्रेष्ठरविः—३ ।६ ।१० ।११
पूज्यरविः—२ ।५ ।९
विशेष पूज्य रविः—१ ।७
नेष्टरविः-४ ।८ ।१२
नेष्टचन्द्रः—४ ।८
श्रेष्ठचन्द्रः-१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न)

दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल्य सं.	७	१०	५	११	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि -रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त- वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३। ६। ९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा-सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जाने।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि. नक्ष.	हर्षणवैधति साध्य व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा	मृ	अ	कृ.	भ	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ	[illegible]	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र.	आ.	ज्यं.	पुन.	श.	ज्ये		
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध.	उषा.	ध	श.	वि.	ध.		
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभ.	पुष्य.	पूभा.	श्रे.	वि.	उफा.	म.		
चि	म	ह	उ.भा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	ऽनु	पूफा.	पूफा		
मू.	ह	रे	पूभा.	म.	रे.	पूफा.	उभा.	उषा.	मू.	स्वा.		

(३) युति :-जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र या स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू.मं.शु.श.रा.के. की युति दारिद्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	म.	पू.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	पू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि	उषा	श्रवण	पू.	उभा.	श.	रे.	पुन.	पुष्य.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेष दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ	म.	उ. फा	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे	वि. न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है। याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय हैं।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वे, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५ वे नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे.	वृ.	मि	कर्क	कन्या	तुला
सिंह.	म.	ध.	वृश्चि.	मी.	कुं

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण नाम	गतांशाःप्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृप सेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतःये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।-कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि-लता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु बाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम् । सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरा प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथियो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार-चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा: पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति परिहार-स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा।। अत्यावश्यके बेधपरिहारः-पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनेव कृत्स्नतः (नारद)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में बेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। एकार्गलोपग्रह पात लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा॥ मु.चि. ।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा ॥

विवाहे लग्न -शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न भंग-योगा-व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायण- मासशून्याश्चयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।

कर्तरी दोषः-लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः-पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्टदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न।।

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे-दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह।। अपवादान्तरम्-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। घूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः॥ स्मरण रहे, कि- पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०)ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग, माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं को धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा.आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः-कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिकं त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने केपीछे। क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त :- कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु प्रीति लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च :- सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि- मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मूहूर्त- जब वधू विवाह हाने पर पति केघर पहले आती है वह वधू प्रवेश कह ाजाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वे दिन,इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर विषम मास में एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वेंवर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है।५वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचागशुद्धि चन्द्रवल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्राति - तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे, अश्वि रो, मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च बु. वृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समय- वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यान्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू-निवास फलम् - विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को क्षय मास में अपने शरीर को ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त्त- प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवे वर्ष वृश्चिक कुभ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह., अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रो., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., मृ., रे., चि., अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विशेष—द्विरागम पादपवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । नवात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तबतक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांवरयुते श्वेत तण्डुल पूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम् । महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्री संगम मुहूर्त—रजोदर्शनान्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभु कृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिये । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्त—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. घ. श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमाने च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारण मुहूर्तः—ह चि. स्वा. अनु. धन. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूडाचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद गणना ८ अशुभ । ३ शुभ । ४ शुभ । ७ अशुभ । २ अशुभ । १ शुभ । २ शुभ । १ अशुभ । गुरुशुक्रोदय में शुभ ।

वस्त्र धारणे विशेष :—विप्रादेशात्तयोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि विष्ण्य बारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषणघट्टन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. घ. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामक्षय रहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त -ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४ । ६ । १४ । ३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर [illegible] लग्नों में ३ । १० । ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३ । ६ में पापग्रह हों, ८।१२ वाँ स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभ लग्ने कुयोगादिराहित्य प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभ हे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. घ. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ८।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ६।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोष ।

ऋण लेने के लिये वर्जितकाल—मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन न देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्त—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभ दिने उत्तम शकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं । इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

को छोडकर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर ... ११ स्थानों ... कीजिये बात कहां तक सत्य है। ... में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

नालिक (अर्जी) का मुहूर्तः—४।६।१४ तिथि हो, मं. श. हो, कृ. आर्द्रा. भ.म. श्ले. श. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्राममात् वासकर्तु नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्र फलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्तः—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में रो. मृ. चित्र ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. श्र. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. श्र. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवमं जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एताघटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग वापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचारः

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहू के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्तः

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञायः सौम्य (मार्ग) कार्तिक मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं. बु. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगल-गान के साथ दम्पत्ति को गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुये नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष. फा. मास में ... नक्षत्रों तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध वा गुरु हों, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है ।

सूर्यनक्षत्रात्कूपवानलचक्रम्			सूर्यभात्तडागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार बल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल	वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणनाक्रम्—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्—

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः । गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान	पूर्व	आग्नेय
ध. श. कृ. मध्यजल	पुन. पु. श्ले. जलाभाव	म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य अ. भ. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः ।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३ । ५ । ७ । ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १ । २ । ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि-रहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६ । ११ नेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राश्च गदंभ्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेऽपि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० मू. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

'अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है । तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्ष०
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्र यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले घातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सरुत्पयन्नग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्तिकर्मे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्ष्ययेत् ॥

पापग्रहमुखहवनहवने शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे । शान्तिं विधाय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

र्गो दद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । पायसीं प्रतिमां ,कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुमध्ये रचितां प्रतिमां ततः । कुम्भे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ (अर्थात्- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । जिसका भाग - शेषांक अधिक बचे वह दूसरे का ऋणी होगा ।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे वह दूसरे का ऋणी होता है ।

हलप्रवहणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामावष्ठषष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—त्रिपादस्थे यदि संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्र बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रारम्भकाष्ठादि (गृहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	धनदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	बाधकर्म	मुखं	संख्या
शुभ	नेष्ठ	नेष्ठ	शुभ	नेष्ठ	[illegible]	[illegible]	फलम्

धान्यकाष्ठारोपण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य. अश्वि. ध. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ हैं । तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिये ।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।६।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मं. श्र. अश्वि. पुष्य.पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो.उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	मध्यम्
१ -१	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म०म०

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका अमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो । अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा या देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं. श.	चं. व.	गु.	सू. श.	सू. श.	भौम	मं.	बु. श.	वार	ज्ये.	पू. भा	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । [illegible] शनिवारे [illegible] दोषभाक् ॥२॥

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

योगिनीवास...

शनो	पूर्व	पू०	आग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा	दिशा
शुक्रे	आग्नेये	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि
गुरो	दक्षिणे									
बुधे	नैऋत्ये									
भौमे	पश्चिमे									
चन्द्रे	वायव्ये									
रवौ	उत्तरे									
सम्मुखे नेष्ट										

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा की बायें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये। गर्गगुरु अङ्गिरामहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्चा (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयोभवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घट्यात्मक चन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषालयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-करण-भगणदोषं, वार संक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि-दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ: ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग:—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमश: ७। ८। ३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को विना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

सर्वकर्मेषु प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिये।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिका महूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका महूर्तम्

घटि	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	ज.	का.
३०	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांये ते दाहिने जो आवे तत्काल। अंन धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्प, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभ शकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मर्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तृतीया-नवमी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का ...

... पल्ली—(छिपकली, कोकिला...) ...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानें, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, फल का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्तं—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तं—मृ. रे. अनु. रो. उ ३. ह. ध. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२ ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।६।११। १२ एषु लग्ने, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभ; चि. कृ. पू ३. म. भ. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले नक्षत्राणि; ४।६।१४।६ १२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष:—प्रवेशान्निर्गमस्तवैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावपि।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशया
मे.	क.	कु.	सि	म.	मि.	ध.	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बृ.	शु.	शु.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृष.	शु.	घा
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लषा	घातन
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि.	वृश्चि	मी	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष.	चन्द्रघा
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रावण	भा.	आ.	घातमास
वि	शु.	प.	धृ.	प्री.	शु.	ऽगं	वृष.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश —

अग्रे चत्रांकत सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जानें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभ
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धु दर्शन	उत्तरोष्ठ	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाश
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्यु
कण्ठे	शत्रुनाश	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभ
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु श ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। हतोऽन्यद्भेषु निद्याः॥

पल्लीपाते कर्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, द . .न भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्राय सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल होनी। छींकि पीठि को कुशल उचारे; बाई कारज सबं सवारे॥१॥ सन्मुख छीक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डन चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6, (अभिजित्) पंचकूला - 134 109

समयशुद्धि -

गुरु अस्त-इसवर्ष (२०५५ वि.) में गुरु अस्त नहीं होगा।

शुक्र अस्त-इसवर्ष कार्तिक कृष्ण द्वितीया बुधवार २२आश्वि. (७ अक्तू. '९८) को शुक्र पूर्व में अस्त होकर मार्ग. शुक्ल १० रवि., १४ मार्गशीर्ष (२९ नवं '९८) को पश्चिम में उदित होगा। शुक्र का वार्धक्य-आश्विन शुक्ल १३ रवि, १९ आश्विन (४ अक्तू. '९८) को प्रारंभ होगा, और मार्ग. शु.१४ बुध, १७ मार्ग. (२ दिसं. '९८) को शुक्रबाल्य समाप्त होगा। इस प्रकार शुक्रास्त के कारण आश्वि.शु.१३ रवि, १९ आश्वि. (४ अक्तू '९८) से मार्ग. शु. १४ बुध, १७ मार्ग. (२ दिसं' ९८) तक विवाहादि मंगल कार्य नहीं होगें।

ग्रहणवेध-इसवर्ष २२ अग. '९८ को सूर्यग्रहण होगा, जो जम्मू-काश्मीर तथा पंजाब, हि.प्र. के कुछ स्थानों को छोड़कर भारत के शेष सभी प्रदेशों में खण्डग्रास के रूप में सूर्योदय के समय कुछ देर के लिए दिखाई देगा। जिन स्थानों पर यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा। उन स्थानों पर २३से २५ अगस्त '९८ वाले विवाह मुहूर्त्त ग्रहणवेध (ग्रहण शूल) के कारण त्याज्य होंगे,-यह ज्योतिषियों को ध्यान में रखना चाहिए।

अक्षांश भेद से भारत के सभी स्थलों पर शुक्र का अस्त- उदय

अक्षांश	+१०°	+२०°	+३०°	+ ३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	४ अक्तू.	६ अक्तू.	७ अक्तू.	७ अक्तू.
शुक्र पश्चिम में उदय	२५ नवं.	२७ नवं.	२९ नवं.	१ दिसं.

ध्यान रहे - यहाँ नीचे दिये गये विवाहादि मुहूर्तों में गुरु -शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई है । अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है ।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैंडर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तों में स्वीकार करें ।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित - प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

यहां दिये गये मुहुर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि , अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र - शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए है, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान दें-यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक है । जो मुहूर्त काल(लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है , वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्त्ती)समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
वैशा. कृ.५ शु.	वैशा.५	अप्रै. १७	मूल	धनु	मेष	कुम्भ	ऽ रा. ॥॥।ऽऽ।ऽ	ल. गोधू., (मकर लग्न में दग्धा का परिहार नहीं है।)
,, ,, ७ र.	,, ७	,, १९	उ.षा.	धनु,मकर	,,	,,	ऽशु. ।॥॥ऽऽ॥	दि. ल.३ (चं. दा.),गोधू. ९ (शु.दा.), १२,
,, ,, ८ चं.	,, ८	,, २०	उ.षा.	मकर	,,	,,	ऽशु. ॥॥ऽचौऽऽ॥	दि. ल.२ (७।५२ तक)(श.रा.दा.)
,, ,, ८ चं	,, ८	,, २०	श्रव.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ॥	ल. गोधू.,९ (शु.दा.),१२,
,, ,, ९ मं.	,, ९	,, २१	श्रव.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ॥	दि.ल.२(७। २३ तक)(श.रा.दा.),
,, ,, ९ मं.	,, ९	,, २१	ध.	,,	,,	,,	॥॥॥।ऽ॥	दि. ल.२ (८। ३५ बाद) (श.रा. दा.),गोधू.,
वैशा. शु. २ मं.	,, १६	,, २८	रो.	वृष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥।ऽ॥।	ल. १०, (शु.दा.),१२, (मकर लग्न अत्यावश्यकता में)
,, ,, ३ बु.	,, १७	,, २९	रो.	,,	,,	,,	ऽ मं. ।॥॥ऽ।।।	दि.ल.३ (९। ११ तक)
,, ,, ५ गु.	,, १८	,, ३०	मृग.	मिथुन	,,	,,	॥॥। ऽ चौ. ।।॥	दि.ल. २ (श.रा.दा.),
,, ,, ९ चं.	,, २२	मई ४	मघा.	सिंह	,,	,,	॥॥। ऽ अ.ऽ ।॥	ल. गोधू.,९,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरु राशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
वैशा. शु. ९ मं.	वैशा २३	मई ५	मघा.	सिंह	मेष	कुम्भ	॥ऽ रा.।। ऽ अ.ऽ॥।	दि.ल. २ (श.रा.दा.), ३
,, ,, १० बु.	,, २४	,, ६	उ.फा.	,,	,,	,,	॥। ऽ बु.ऽ गु.।ऽ।।।	ल. गोधू. (बुध का पादवेध नहीं है।),
,, ,, ११ गु.	,, २५	,, ७	उ.फा.	कन्या	,,	,,	॥।ऽ बु. ऽ गु.ऽनृ.ऽ ।।।	ल.गोधू., (बुध का पादवेध नहीं है),
,, ,, ११ गु.	,, २५	,, ७	ह.	,,	,,	,,	ऽ र. ऽ। ऽ शु.ऽ शु. ॥।॥	ल.९,१०,(शु. दा.),१२ (२८।२२ तक) (चं.दा), (मकर लग्न अत्यावश्यकता में), (शुक्रपाद वेध नहीं है।)
,, ,, १२ शु.	,, २६	,, ८	ह.	,,	,,	,,	ऽर.ऽ।ऽशु.ऽशु.ऽचौ. ॥॥	ल.गोधू, ९ (२३।३१ तक), (वृष और मिथुन लग्न में शुक्र का पादवेध है),
,, ,, १२ शु.	,, २६	,, ८	चि.	,,	,,	,,	।॥ऽ गु ऽ बु.ऽ चौ ॥॥	ल.१० (२४।४३ बाद) (शु.दा.),१२(चं.दा.), गुरु का पादवेघ नहीं है।
,, ,, १३ श.	,, २७	,, ९	चि.	कन्या,तुला	,,	,,	॥।ऽगु.ऽ बु.ऽ चौ.।॥।	ल. ९,१० (शु. दा.),(मकर लग्न अत्यावश्यकता में),(वृष और मिथुन लग्न में गुरु का पादवेध है।)
ज्ये. कृ. १मं.	,, ३०	,, १२	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥॥ ऽर.मं. ।ऽऽ।।	ल.९,१० (२४।१३ तक)(शु.दा.), (२४।१३ बाद, मृत्युबाण है),
,, ,, ४ शु.	ज्ये. २	,, १५	मूल	धनु	वृष	,,	॥॥॥ ऽ ॥ ऽ	दि.ल. ३,(चं.दा.)
,, ,, ७ चं.	,, ५	,, १८	धनि.	मकर,कुंभ	,,	,,	ऽ शु. ॥॥॥ ऽ।।	ल.गोधू ,९, १२
,, ,, ८ मं.	,, ६	,, १९	धनि	कुंभ	,,	,,	ऽ शु. ॥॥ ऽ नृ.। ऽ॥	दि.ल. ३,
,, ,, १० गु.	,, ८	,, २१	उ.भा.	मीन	,,	,,	।॥॥ ऽ चौ. ऽऽ ॥	ल. गोधू,९,१०(शु.दा.) (मकर लग्न अत्यावश्यकता में),
,, ,, ११ शु.	,, ९	,, २२	उ.भा.	,,	,,	,,	॥।॥ ऽ चौ. ऽऽ॥	दि.ल. ,३(८।४३ तक),
ज्ये. शु. १ मं.	,, १३	,, २६	मृग.	वृष	,,	मीन	॥॥। ऽ अ. ॥।।	ल. १०,१२
,, ,, २ बु.	,, १४	,, २७	मृग.	वृष/मिथुन	,,	,,	॥।॥ऽ अ. ॥॥	दि.ल.३,४
,, ,, ७ चं.	,, १९	जून १	मघा	सिंह	,,	,,	॥ ऽ रा. ॥। ऽऽ॥	दि.ल.३,४
,, ,, ९ बु.	,, २१	,, ३	उ.फा.	सिंह,कन्या	,,	,,	॥॥॥ऽ ।॥	दि.ल. ३,४, गोधू. (मकर और मीन लग्न में मृत्युबाण है।),
,, ,, १२ श.	,, २४	,, ६	चि.	तुला	,,	,,	।ऽ।ऽ गु. ॥ ऽ ।॥	दि.ल.३,४ (९।२४ तक), (गुरु का पादवेध नहीं है)
,, ,, १३ चं.	,, २६	,, ८	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥। ऽ शु ।ऽ चौ. ऽ।॥	ल.१०,१२ (शुक्र का पादवेध नहीं है),
,, ,, १५ बु.	,, २८	,, १०	मूल	धनु	,,	,,	॥।ऽ र. बु.। ऽऽ॥	ल. गोधू.,१०,१२
आषा. कृ. १ गु.	,, २९	,, ११	मूल	,,	,,	,,	॥॥ऽर. बु. ऽरो. ऽऽ॥	दि. ल.३ (चं.दा.)
,, ,, ८ बु.	आषा.३	,, १७	उ.भा.	मीन	मिथुन	,,	ऽशु. ॥।। ऽ अ.ऽऽ ॥	ल. गोधू. , १०
,, ,, ९ गु.	,, ४	,, १८	उ.भा.	,,	,,	,,	ऽ शु. ॥॥ ऽअ.ऽऽ॥	दि. ल. ४,
,, ,, ९ गु.	,, ४	,, १८	रे.	,,	,,	,,	ऽबु. ॥॥॥ ऽ॥	ल. गोधू ., १०,
,, ,, १० शु.	,, ५	,, १९	रे.	,,	,,	,,	ऽबु. ॥॥॥ऽ॥	दि.ल. ४,
आषा. शु. ४ र.	,, १४	,, २८	मघा	सिंह	,,	,,	॥ऽरा. ॥।ऽऽ॥	दि.ल. ४,६ (गु.दा.), गोधू.,
,, ,, ६ मं.	,, १६	,, ३०	उ.फा.	कन्या	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ॥	ल. १२ (शु.चं.दा.),२(रा.दा.)
,, ,, ७ बु.	,, १७	जुला.१	उ.फा.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ. ऽऽ॥	दि.ल. ४,
आषा. शु. ८ गु.	आषा.१८	जुला.२	चि.	कन्या	मिथुन	मीन	॥।॥। ऽ ॥।	ल. गोधू .,१२ (शु.चं.दा.),२ (रा.दा.),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6, (अभिजित्) पंचकूला - 134 109

समयशुद्धि -

गुरु अस्त-इसवर्ष (२०५५ वि.) में गुरु अस्त नहीं होगा।

शुक्र अस्त-इसवर्ष कार्तिक कृष्ण द्वितीया बुधवार २२आश्वि. (७ अक्तू. '९८) को शुक्र पूर्व में अस्त होकर मार्ग. शुक्ल १० रवि., १४ मार्गशीर्ष (२९ नवं '९८) को पश्चिम में उदित होगा। शुक्र का वार्धक्य-आश्विन शुक्ल १३ रवि, १९ आश्विन (४ अक्तू. '९८)को प्रारंभ होगा, और मार्ग. शु.१४ बुध, १७ मार्ग. (२ दिसं. '९८) को शुक्रबाल्य समाप्त होगा। इस प्रकार शुक्रास्त के कारण आश्वि.शु.१३ रवि, १९ आश्वि. (४ अक्तू '९८) से मार्ग. शु. १४ बुध, १७ मार्ग. (२ दिसं' ९८) तक विवाहादि मंगल कार्य नहीं होगें।

ग्रहणवेध-इसवर्ष २२ अग. '९८ को सूर्यग्रहण होगा, जो जम्मू-काश्मीर तथा पंजाब, हि.प्र. के कुछ स्थानों को छोड़कर भारत के शेष सभी प्रदेशों में खण्डग्रास के रूप में सूर्योदय के समय कुछ देर के लिए दिखाई देगा। जिन स्थानों पर यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा। उन स्थानों पर २३से २५ अगस्त '९८ वाले विवाह मुहूर्त ग्रहणवेध (ग्रहण शूल)के कारण त्याज्य होंगे,-यह ज्योतिषियों को ध्यान में रखना चाहिए।

अक्षांश भेद से भारत के सभी स्थलों पर शुक्र का अस्त- उदय

अक्षांश	+१०°	+२०°	+३०°	+ ३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	४ अक्तू.	६ अक्तू.	७ अक्तू.	७ अक्तू.
शुक्र पश्चिम में उदय	२५ नवं.	२७ नवं.	२९ नवं.	१ दिसं.

ध्यान रहे - यहाँ नीचे दिये गये विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु -शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई है । अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तो का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है ।

मुहूर्तो में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैंडर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तो में स्वीकार करें ।

यहां मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित - प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तो का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

यहां दिये गये मुहुर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि , अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र - शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए है, उन मुहूर्तो को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान दें-यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक है । जो मुहूर्त काल(लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है , वहां अग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्त्ती)समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
वैशा. कृ.५ शु.	वैशा.५	अप्रै. १७	मूल	धनु	मेष	कुम्भ	ऽ रा. ॥॥।ऽऽ।ऽ	ल. गोधू., (मकर लग्न में दग्धा का परिहार नहीं है।)
,, ,, ७ र.	,, ७	,, १९	उ.षा.	धनु,मकर	,,	,,	ऽशु. ।॥॥ऽऽ॥	दि. ल.३ (चं. दा.),गोधू. ९ (शु.दा.), १२,
,, ,, ८ चं.	,, ८	,, २०	उ.षा.	मकर	,,	,,	ऽशु. ॥॥ऽचौऽऽ॥	दि. ल.२ (७।५२ तक)(श.रा.दा.)
,, ,, ८ चं	,, ८	,, २०	श्रव.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ॥	ल. गोधू.,९ (शु.दा.),१२,
,, ,, ९ मं.	,, ९	,, २१	श्रव.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ॥	दि.ल.२(७। २३ तक)(श.रा.दा.),
,, ,, ९ मं.	,, ९	,, २१	ध.	,,	,,	,,	॥॥॥ऽ॥	दि. ल.२ (८। ३५ बाद) (श.रा. दा.),गोधू.,
वैशा. शु. २ मं.	,, १६	,, २८	रो.	वृष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥।ऽ॥।	ल. १०, (शु.दा.),१२, (मकर लग्न अत्यावश्यकता में)
,, ,, ३ बु.	,, १७	,, २९	रो.	,,	,,	,,	ऽ मं. ।॥॥ऽ।।।	दि.ल.३ (९। ११ तक)
,, ,, ५ गु.	,, १८	,, ३०	मृग.	मिथुन	,,	,,	॥॥। ऽ चौ. ।।॥	दि.ल. २ (श.रा.दा.),
,, ,, ९ चं.	,, २२	मई ४	मघा.	सिंह	,,	,,	॥॥। ऽ अ.ऽ ।॥	ल. गोधू.,९,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरु राशि		
वैशा. शु. ९ मं.	वैशा २३	मई ५	मघा.	सिंह	मेष	कुम्भ	॥ऽ रा.।। ऽ अ.ऽ॥।	दि.ल. २ (श.रा.दा.), ३
,, ,, १० बु.	,, २४	,, ६	उ.फा.	,,	,,	,,	॥। ऽ बु.ऽ गु. ।ऽ।।।	ल. गोधू. (बुध का पादवेध नहीं है।),
,, ,, ११ गु.	,, २५	,, ७	उ.फा.	कन्या	,,	,,	॥।ऽ बु. ऽ गु.ऽनृ.ऽ ।।।	ल.गोधू., (बुध का पादवेध नहीं है),
,, ,, ११ गु.	,, २५	,, ७	ह.	,,	,,	,,	ऽ र. ऽ। ऽ शु.ऽ शु. ॥।॥	ल.९,१०,(शु. दा.),१२ (२८।२२ तक) (चं.दा), (मकर लग्न अत्यावश्यकता में), (शुक्रपाद वेध नहीं है।)
,, ,, १२ शु.	,, २६	,, ८	ह.	,,	,,	,,	ऽर.ऽ।ऽशु.ऽशु.ऽचौ. ॥॥	ल.गोधू, ९ (२३। ३१ तक), (वृष और मिथुन लग्न में शुक्र का पादवेध है),
,, ,, १२ शु.	,, २६	,, ८	चि.	,,	,,	,,	।॥ऽ गु ऽ बु.ऽ चौ ॥॥	ल.१० (२४। ४३ बाद) (शु.दा.),१२(चं.दा.), गुरु का पादवेध नहीं है।
,, ,, १३ श.	,, २७	,, ९	चि.	कन्या,तुला	,,	,,	॥।ऽगु.ऽ बु.ऽ चौ.।॥।	ल. ९,१० (शु. दा.),(मकर लग्न अत्यावश्यकता में),(वृष और मिथुन लग्न में गुरु का पादवेध है।)
ज्ये. कृ. १मं.	,, ३०	,, १२	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥॥ ऽर.मं. ।ऽऽ।।	ल.९,१० (२४। १३ तक)(शु.दा.), (२४। १३ बाद, मृत्युबाण है),
,, ,, ४ शु.	ज्ये. २	,, १५	मूल	धनु	वृष	,,	॥॥ ऽ ॥ ऽ	दि.ल. ३,(चं.दा.)
,, ,, ७ चं.	,, ५	,, १८	धनि.	मकर,कुंभ	,,	,,	ऽ शु. ॥॥ ऽ।।	ल.गोधू ,९, १२
,, ,, ८ मं.	,, ६	,, १९	धनि	कुंभ	,,	,,	ऽ शु. ॥॥ ऽ नृ. । ऽ॥	दि.ल. ३,
,, ,, १० गु.	,, ८	,, २१	उ.भा.	मीन	,,	,,	।॥॥ ऽ चौ. ऽऽ ॥	ल. गोधू,९,१०(शु.दा.) (मकर लग्न अत्यावश्यकता में),
,, ,, ११ शु.	,, ९	,, २२	उ.भा.	,,	,,	,,	॥।॥ ऽ चौ. ऽऽ॥	दि.ल. ,३(८। ४३ तक),
ज्ये. शु. १ मं.	,, १३	,, २६	मृग.	वृष	,,	मीन	॥॥। ऽ अ. ॥।।	ल. १०,१२
,, ,, २ बु.	,, १४	,, २७	मृग.	वृष/मिथुन	,,	,,	॥।॥ऽ अ. ॥॥	दि.ल.३,४
,, ,, ७ चं.	,, १९	जून १	मघा	सिंह	,,	,,	॥ ऽ रा. ॥। ऽऽ॥	दि.ल.३,४
,, ,, ९ बु.	,, २१	,, ३	उ.फा.	सिंह,कन्या	,,	,,	॥॥ऽ ।॥	दि.ल. ३,४, गोधू. (मकर और मीन लग्न में मृत्युबाण है।),
,, ,, १२ श.	,, २४	,, ६	चि.	तुला	,,	,,	।ऽ ।ऽ गु. ॥ ऽ ।॥	दि.ल.३,४ (९। २४ तक), (गुरु का पादवेध नहीं है)
,, ,, १३ चं.	,, २६	,, ८	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥। ऽ शु ।ऽ चौ. ऽ।॥	ल.१०,१२ (शुक्र का पादवेध नहीं है),
,, ,, १५ बु.	,, २८	,, १०	मूल	धनु	,,	,,	॥।ऽ र. बु. । ऽऽ॥	ल. गोधू.,१०,१२
आषा. कृ. १ गु.	,, २९	,, ११	मूल	,,	,,	,,	॥॥ऽर. बु. ऽरो. ऽऽ॥	दि. ल.३ (चं.दा.)
,, ,, ८ बु.	आषा.३	,, १७	उ.भा.	मीन	मिथुन	,,	ऽशु. ॥।। ऽ अ.ऽऽ ॥	ल. गोधू. , १०
,, ,, ९ गु.	,, ४	,, १८	उ.भा.	,,	,,	,,	ऽ शु. ॥॥ ऽअ.ऽऽ॥	दि. ल. ४,
,, ,, ९ गु.	,, ४	,, १८	रे.	,,	,,	,,	ऽबु. ॥॥ ऽ॥	ल. गोधू ., १०,
,, ,, १० शु.	,, ५	,, १९	रे.	,,	,,	,,	ऽबु. ॥॥।ऽ॥	दि.ल. ४,
आषा. शु. ४ र.	,, १४	,, २८	मघा	सिंह	,,	,,	॥ऽरा. ॥।ऽऽ॥	दि.ल. ४,६ (गु.दा.), गोधू.,
,, ,, ६ मं.	,, १६	,, ३०	उ.फा.	कन्या	,,	,,	।ऽ॥। ऽचौ.ऽऽ॥	ल. १२ (शु.चं.दा.),२(रा.दा.)
,, ,, ७ बु.	,, १७	जुला.१	उ.फा.	,,	,,	,,	।ऽ॥। ऽचौ. ऽऽ॥	दि.ल. ४,
आषा. शु. ८ गु.	आषा.१८	जुला.२	चि.	कन्या	मिथुन	मीन	॥।॥। ऽ ॥।	ल. गोधू .,१२ (शु.चं.दा.),२ (रा.दा.),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९७ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
आषा. शु. ९ शु.	आषा.१९	जुला.३	चि.	तुला	मिथुन	मीन	॥॥। ऽ रो. ॥॥	दि.ल. ४,६ (गु.मं.दा.),
,, ,, १२ चं.	,, २२	,, ६	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥॥।ऽअ.ऽ।॥	दि.ल. ४(७।४१बाद),६(मं.गु.दा.),गोधू ,१२(शु.दा.),(७।४१ तक मृत्युबाण है),
श्राव. कृ. २ श.	,, २७	,, ११	धनि	मकर	,,	,,	॥। ऽबु.ऽबु. ॥।॥	ल. २ (२६।३५ बाद), (रा.दा.), (बुध का पादवेध नहीं है),
,, ,, ३ र.	,, २८	,, १२	धनि	मकर. कुंभ	मिथुन	मीन	॥। ऽबु.ऽ बु.ऽ रो. ॥॥	दि.ल. ४ (६।३९ तक), (चं.दा),१२ (शु.दा.)(गोधूलि में बुध का पादवेध है),
,, ,, ११ र.	श्राव.४	,, १९	रो.	वृष	कर्क	,,	ऽ गु. ऽ॥। अ. ।ऽ॥	ल .गोधू. , १२
,, ,, १२ चं.	,, ५	,, २०	रो.	,,	,,	,,	ऽ गु. ॥॥। ऽऽ॥	दि.ल. ६ (मं.गु..दा.),
,, ,, १२ चं.	,, ५	,, २०	मृग.	,,	,,	,,	॥॥॥। ऽ॥	ल. गोधू. , १२ (२३।०२ तक),
श्राव. शु. ३ र.	,, ११	,, २६	मघा.	सिंह	,,	,,	।ऽऽ बु.रा. ॥।ऽ॥।	दि.ल.६(मं.गु.),
,, ,, ५ मं.	,, १३	,, २८	उ.फा.	कन्या	,,	,,	॥॥।ऽ अ. ऽऽ॥	ल गोधू.,(१९।१३तक),
,, ,, ५ मं.	,, १३	,, २८	ह.	,,	,,	,,	॥।ऽ गु. ऽगु. ऽअ. ॥।ऽ	ल.२ (रा.दा.),(गुरु का पादवेध नहीं है),
,, ,, ६ बु.	,, १४	,, २९	चि.	,,	,,	,,	॥॥।। ऽऽ॥	ल. २ (रा.दा.),
,, ,, ७ गु.	,, १५	,, ३०	चि.	तुला	,,	,,	॥॥। ऽ नृ. ऽऽ॥	ल. गोधू ,
,, ,, ९ र.	,, १८	अग. २	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥॥। ऽ चौ. ।ऽ॥	दि.ल. ६, (मं.गु.दा.),गोधू , १२, २ (रा.चं.दा.),
,, ,, १३ गु.	,, २२	,, ६	उ.षा.	मकर	,,	,,	॥।। ऽ मं.शु.ऽ अ.ऽ॥।	ल. १२,२ (रा.दा.),
,, ,, १४ शु.	,, २३	,, ७	उ.षा.	,,	,,	,,	।॥। ऽ मं.शु.ऽ अ. ऽ॥।	दि.ल. ६(९।२० तक), (मं.गु.दा.),
भाद्र. कृ. ४ मं.	,, २७	,, ११	उ.भा.	मीन	,,	,,	।॥॥ ऽ चौ ऽऽ॥	दि.ल. ६ (गु.चं.दा.),८,गोधू. ,३(२६।५४ तक),
,, ,, ५ बु.	,, २८	,, १२	रे.	,,	,,	,,	॥॥।॥ ऽ॥	दि. ल. ६ (चं.गु.दा.),८ (१३।२४ बाद), गोधू ,
,, ,, १० चं.	भाद्र. २	,, १७	मृग.	मिथुन	सिंह	,,	। ऽ॥॥।ऽ॥	दि.ल.६ (८।५५ बाद) (गु.दा.), गोधू .
* भाद्र. शु. १ र.	,, ८	,, २३	उ.फा.	सिंह	,,	,,	॥॥ऽ गु. ऽ चौ. ऽ।॥	ल. ३ (२५।४३ बाद)
* ,, ,, २ चं.	,, ९	,, २४	उ.फा.	सिंह, कन्या	,,	,,	॥॥ऽ गु. ऽ चौ.ऽ।॥	दि.ल. ६ (८।२० तक)(गु.दा.),८ ,१२ (चं.दा.),३,
* ,, ३ मं.	,, १०	,, २५	ह.	कन्या	,,	,,	।ऽ।॥ ऽरो ॥॥	दि.ल. ८, १२ (चं.दा),३ (२५।५५ तक),
,, ,, ४ बु.	,, ११	,, २६	चि.	कन्या, तुला	,,	,,	॥। ऽ गु.. ॥ ऽऽ॥	ल. १२, (२०।२७ तक)(चं.दा),३ (गुरु पादवेध नहीं है),
,, ,, ५ गु.	,, १२	,, २७	चि.	तुला	,,	,,	॥। ऽ गु. ॥ ऽऽ।।	दि.ल. ६ (८।४४ तक)(गु.दा.),(गुरु पादवेध नहीं है)
,, ,, ९ चं.	,, १६	,, ३१	मूल	धनु	,,	,,	॥॥॥ ऽ॥ ऽ	ल. १२ (२०।७बाद),३(चं..दा.)
,, ,, १० मं.	,, १७	सितं. १	मूल	,,	,,	,,	॥॥। ऽ चौ. ऽ॥ ऽ	दि.ल. ६, (गु.दा.),८ गोधू , १२ (२०।१० तक)
,, ,, ११ बु.	,, १८	,, २	उ.षा.	,,	,,	,,	॥॥॥ऽ।॥	ल. ३(२४।४६ बाद) (चं.शु.दा.),
,, ,, १२ गु.	,, १९	,, ३	उ.षा	मकर	,,	,,	॥॥। ऽ रो. ऽ॥।	दि.ल. ६,(गु.दा.),८,९ , गोधू., १२ (२०।२४ तक),
,, ,, १३ शु.	,, २०	,, ४	धनि.	कुंभ	,,	,,	॥॥॥॥	ल. २ (रा.श.दा.), ३ (शु.दा.),
,, ,, १४ श.	,, २१	,, ५	धनि	,,	,,	,,	॥॥॥॥	दि.ल.८,९ (कन्या लग्न निर्बल है),
आश्वि.शु. १ चं.	आश्वि. ६	,, २१	ह.	कन्या	कन्या	कुम्भ	॥।॥ ऽनृ. ॥॥	ल. ३ (२४।४१बाद)(शु.दा.),
,, ,, २ मं.	,, ७	,, २२	ह.	,,	,,	,,	॥॥॥॥	दि.ल. ८,(१२।४३ तक),
,, ,, २ मं.	,, ७	,, २२	चि.	,,	,,	,,	।॥ ऽ गु. ।। ऽ॥।	दि.ल. ९ (१३।५५ बाद), गोधू., (वृष और मिथुन लग्न में गुरु का पादवेध है),

* जहाँ २२ अगस्त' ९८ वाला सूर्यग्रहण दिखाई देगा, वहाँ इन विवाह मुहूर्त्तों में विवाह नहीं हो सकता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

* जहाँ २२ अगस्त '९८ वाली सूर्यग्रहण दिखाई देगा, वहाँ इन विवाह मुहूर्त्तों में विवाह नहीं हो सकता।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९८ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि		
आश्वि.शु. ३ बु.	आश्वि.८	सितं. २३	चि.	तुला	कन्या	कुम्भ	॥। ऽ गु. ।ऽ रो ऽ ।॥	दि.ल. ८,९, (गुरु का पादवेध नहीं),
,, ,, ४ शु.	,, १०	,, २५	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	॥॥॥॥॥॥	ल. ३ (२२।५३ बाद)(शु.दा.),
,, ,, ५ श.	,, ११	,, २६	अनु.	,,	,,	,,	॥॥॥॥॥॥	दि.ल. ९ , गोधू. , २ (चं.श.रा.दा.),३(२४।२६ तक)(शु.दा.),
,, ,, ७ चं.	,, १३	,, २८	मूल.	धनु	कन्या	कुम्भ	॥॥ऽ अ.ऽऽ॥	दि.ल. ८ (मं.दा.),
,, ,, ९ बु.	,, १५	,, ३०	उ.षा.	धनु ,मकर	,,	,,	॥।।ऽ नृ.ऽ॥।	दि.ल. ८ (मं.दा.),९ (१३।३ बाद), गोधू ,२ (रा.श.दा.)
मार्ग. शु. १५ गु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	रो.	वृष	वृश्चिक	,,	॥॥ ऽ बु. । ऽऽ॥	दि.ल. १०(१०।३८ बाद), (अत्यावश्यकता में)
पौष कृ. १ शु.	,, १९	,, ४	मृग.	वृष,मिथुन	,,	,,	।ऽ॥ ऽ र.ऽ रो. ।ऽ॥	दि.ल. १०,गोधू., (मकर लग्न अत्यावश्यकता में).
,, ,, ८ शु.	,, २६	,, ११	उ.फा.	सिंह,कन्या	,,	,,	॥॥ऽ गु. ।ऽऽ॥	दि. ल. ९ (मं.दा.),गोधू. ,
,, ,, ९ श.	,, २७	,, १२	ह.	कन्या	,,	,,	॥ऽमं. ॥ ऽरो।ऽ॥	दि.ल.९ (मं.दा.),गोधू. ,
,, ,, १० र.	,, २८	,, १३	चि.	,,	,,	,,	॥।ऽगु. ॥ऽऽ॥	ल. गोधू. ,(गुरु का पादवेध नहीं है),
माघ शु. १ चं.	माघ ५	जन. १८	श्रव.	मकर	मकर	मीन	॥।॥ऽनृ.ऽ॥।	ल. ६ (गु.दा.),८ (शु.दा.),९
,, ,, ५ शु.	,, ९	,, २२	उ.भा.	मीन	,,	,,	॥॥।ऽरो.ऽ॥।	दि.ल.११,(९।१ बाद),गोधू,६ (गु.चं.दा.),८ (शु.दा.),९(कुंभ लग्न अत्यावश्यकता में)
,, ,, ६ श.	,, १०	,, २३	रे.	,,	,,	,,	॥॥।ऽरो. ।ऽ॥	दि.ल.११ ,गोधू. ,८,९(शु.दा.),(कुंभ लग्न अत्यावश्यकता में),
,, ,, ९ मं.	,, १३	,, २६	रो.	वृष	,,	,,	॥।ऽबु. ॥।ऽ॥	ल.८ (२६।२६ बाद) (चं.दा.), (बुध का पादवेध नहीं है),
,, ,, ११ बु.	,, १४	,, २७	रो.	,,	,,	,,	॥।ऽबु . ।ऽ नृ. ।ऽ॥	दि.ल. ११ (गोधू. में बुध पादवेध है),
फाल्गु. कृ.३ बु.	,, २१	फर. ३	उ.फा.	सिंह,कन्या	,,	,,	॥॥ऽ अ. ।ऽ॥	ल. ८, ९ (शु.दा.),
,, ,, ४ गु.	,, २२	,, ४	उ.फा.	कन्या	,,	,,	॥॥॥ऽ॥	दि.ल. २ (श.दा.), गोधू .,
,, ,, ४ गु.	,, २२	,, ४	ह.	,,	,,	,,	॥। ऽ .गु. ऽ गु. ।ऽऽ॥	ल.८,९ (शु.दा.), (गुरु का पादवेध नहीं है),
,, ,, ५ शु.	,, २३	,, ५	ह.	,,	,,	,,	॥। ऽ गु.ऽ गु.ऽ नृ.ऽऽ॥	दि.ल.२(श.दा.), गोधू. , (गुरु का पादवेध नहीं है),
,, ,, ९ मं.	,, २७	,, ९	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	ऽ मं. बु.रा. ॥॥ ऽ रो. ।ऽ॥	ल. गोधू. ,९ (२९।२ तक), (शु.दा.), (वृष में क्रान्ति साम्य),
,, ,, ९ बु.	,, २८	,, १०	अनु.	,,	,,	,,	ऽ मं.बु.रा. ॥॥॥ ऽ ॥	दि.ल.११ (८।३८ बाद),
फाल्गु.शु. २ गु.	फाल्गु. ७	,, १८	उ.भा.	मीन	कुम्भ	,,	॥ऽ गु. ॥॥॥।	ल. ८, ९,
,, ,, ४ शु.	,, ८	,, १९	उ.भा.	,,	,,	,,	॥ऽगु. ॥ऽ चौ. ॥। ऽ	दि.ल. २ (श.दा.),३ (१३।७ तक),
,, ,, ४ शु.	,, ८	,, १९	रे.	,,	,,	,,	।ऽ॥।ऽचौ.ऽऽ।ऽ	दि.ल. ३ (१४।१९ बाद),९ (२८।१७ बाद),
,, ,, ५ श.	,, ९	,, २०	रे.	,,	,,	,,	॥॥॥॥॥॥	दि.ल. २ (११।२८ तक) (श.दा.),
चैत्र कृ.१ बु.	,, २०	मार्च ३	उ.फा.	सिंह,कन्या	,,	,,	॥।ऽ शु. ॥॥॥	दि.ल.२(११।१४बाद)(श.दा.),गोधू.,८ (२५।५ तक),(२५।५बाद शुक्र पादवेध है)
,, ,, ६ चं.	,, २५	,, ८	अनु.	वृश्चिक	,,	,,	ऽ चं.मं.रा.ऽ ॥॥॥॥	ल. गोधू.
,, ,, ७ मं.	,, २६	,, ९	अनु.	,,	,,	,,	ऽ चं.मं.रा.ऽ ॥।ऽ चौ. ॥॥	दि.ल.३ (१२।५१ बाद), गोधू. ,
,, ,, ८ बु.	,, २७	,, १०	मूल	धनु	,,	,,	॥॥॥।ऽ॥	ल. ८,
,, ,, ९ गु.	,, २८	,, ११	मूल	,,	,,	,,	॥॥।ऽ रो. ।ऽ॥	दि.ल. ३(१२।५२ तक) (चं.दा.),

सं. २०५६ वि. में गुरु-शुक्रास्त आदि :- सं. २०५६वि. में गुरु लगभग २२ मार्च से २२ अप्रै.' ९९ तक और शुक्र लगभग १० अग. से २६ अग.' ९९ तक अस्त रहेगा। इसवर्ष ज्येष्ठ अधिक मास होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सं. २०५५ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०५५ वि. में कुल कितने विवाह-मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल- शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक'' दे रहे हैं। संवत् २०५५ के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पचांग में पहले दिये गए है । किस किस महीने की किस- किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते है, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिये गये ''त्रिबल- शुद्धि कोष्ठक'' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह मुहूर्त किन- किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है । इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इसवर्ष किन- किन तारीखों को हो सकता है । वर के लिए ''सूर्य की पूजा '' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिये गये हैं। लड़का - लड़की की राशियों वाले कालमों में जो जो तारीखें समानरूप से मिलती हों उन तारीखों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है । जैसे - मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह सं.२०५५ वि. में मई के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है - यह मालूम करना है । नीचे ''त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक '' देखें - लड़के वाले कालम में मिथुन के आगे मई की केवल ४,५,६,९,१२ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मेष के आगे मई की ४,५,६,७,८,९,१५,१८,१९,२१,२२,२६,२७ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि मई में मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह मई की केवल ४,५,६,९ तारीखों को ही हो सकता है , क्योंकि मई की केवल यही तारीखें दोनों वर-कन्या की राशियों (मिथुन-मेष) में एकसी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह - मूहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ - अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्र निर्देशानुसार नेष्ट न मान कर पूज्य माना गया है ।

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५५ वि.) (२८ मार्च'९८ से १७ मार्च '९९ ई. तक)

[कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. हैं ।]

नाम या जन्म राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रै.१७,१९,२०.२१,२८,२९,३०,मई४,५,६,७,८,९,१५,१८,१९,२१,२२,२६,२७ जून१,३.६,१०,११,१७,१८,१९,२८,३०जुला. १, २, ३, ११, १२, अग, १७, २३, २४, २५, २६.२७,३१.सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२८,३०, जन. १८,२२,२३,२६,२७, फर.३.४,५,१८,१९,२०,मार्च. ३,१०,११,	१३ अप्रै. से १३ जून १६ अग. से१५ सितं. १६ अक्तू. से १४ नवं.	अप्रै.१७,१९.२०,२१,२८,२९,३०,मई४,५,६,७,८,९,१५,१८,१९.२१,२२,२६,२७, जून १, ३, ६, १०,११,१७,१८.१९,२८,३०,जुला.१,२,३,११,१२,१९,२०,२६,२८,२९,३०अग,६, ७, ११,१२, १७, २३,२४,२५,२६,२७,३१, सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२८,३०, दिसं.३,४,११,१२,१३, जन. १८, २२,२३,२६,२७, फर.३,४,५,१८,१९,२०,मार्च. ३,१०,११,	२६ मई से ९ सितं.तक और १३ जन.बाद,
वृष	मई .१८, १९, २१. २२. २६, २७, जून ३(८।२० बाद),६, ८, १७, १८,१९,३० जुला.१,२, ३. ६, ११.१२ १९,२०, २८, २९,३०, अग.२. ६, ७, ११,१२, सितं. २९, २२,२३,२५,२६,३० (१३।०३ बाद),दिसं. ३,४,११,(१०(०२ बाद)१२,१३, जन.१८,२२,२३ , २६, २७, फर.३(२७।४० बाद),४, ५,९,१०,१८,१९,२०मार्च. ३(१२। २० बाद),८,९	१४ मई से १५जुला. १६सित. से १६अक्तू. १५नवं. से १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर.	अप्रै.१९ (१४।५७ बाद),२०,२१,२८,२९,३०, मई.७,८,९,१२,१८,१९,२१,२२,२६,२७,जून ३ (८।२०बाद),६,८,१७,१८,१९,३०,जुला.१,२,३,६,११,१२,१९,२०,२८,२९,३०, अग.२,६,७,११,१२,१७,२४ (८।२० बाद),२५,२६,२७,सितं.३,४,५,२१,२२,२३,२५,२६,३० (१३। ३बाद),दिसं.३,४,११(१०।२बाद),१२,१३,जन.१८,२२,२३,२६,२७,फर.३(२७।४०बाद), ४, ५,९,१०,१८,१९,२०, मार्च ३ (१२।२० बाद),८,९	२५ मई तक और१०सितं. से१२जन. तक
मिथुन	अप्रै.१७, १९,(१४।५७ तक),२८,२९,३०,मई.४,५,६,९,(१४।१२ बाद),१२, जून.१७,१८,१९,२८,जुला.३,६,१२,(१४।९बाद),१९,२०,२६,३०, अग.२, ११, १२, १७, २३, २४(८।२० तक),२६ (२०।२७ बाद),२७,३१,सितं.१,२,४,५, दिसं.३,४,११ (१०।२ तक),फर.१८,१९,२०, मार्च ३ (१२।२० तक)८,९,१०,११	१४ जून से १५ अग. १६ अक्तू.से १४ नवं. १२ फर.से १३मार्च.	अप्रै.१७,१९,(१४।५७ तक), २८,२९,३० मई ४,५,६,९ (१४।१२ बाद), १२, १५, १८(२६।४१बाद), १९, २१, २२, २६, २७, जून१, ३(८।२०तक), ६, ८, १०, ११. १७,१८,१९,२८ जुला.३, ६, १२ (१४।९ बाद), १९, २०, २६, ३०, अग.२, ११, १२, १७,२३,२४(८।२०तक),२६ (२०।२७ बाद), २७, ३१, सितं.१, २, ४, ५, २३, २५, २६,२८,३० (१३।३ तक),दिसं.३,४,११ (१०।२ तक), जन.२२, २३, २६, २७, फर.३ (२७।४०तक),९,१०,१८,१९,२०मार्च ३(१२।२०तक), ८,९,१०,११	२६ मई से ९ सितं. तक और १३ जन. बाद
कर्क	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०, मई ४,५,६,७,८,९ (१४।१२ तक)१२,१५,१८, (२६।४१ तक), २१, २२, २६, २७, जून.१, ३, ८, १०, ११, जुला.१९, २०,२६, २८, २९, अग.२, ६, ७, ११,१२,१७,२३,२४,२५,२६ (२०।२७ तक),३१, सितं.१,२,३,२१,२२,२५,२६,२८,३०, दिसं.३, ४, ११, १२, १३, जन.१८, २२, २३,२६,२७,फर.३,४,५,९,१२	१६जुला.से १५ सितं. १५नवं.से १४ दिसं. १३जन से १२ फर.	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०,मई ४,५,६,७,८,९(१४।१२ तक),१२,१५,१८ (२६।४१ तक),२१,२२,२६,२७,जून १,३,८,१०,११,१७,१८,१९,२८,३०,जुला.१, २,६,११,१२ (१४।९तक),१९,२०,२६,२८,२९,अग.२,६,७,११,१२,१७,२३,२४,२५,२६(२०।२७ तक),३१, सितं.१,२,३,२१,२२,२५,२६,२८,३०, दिसं.३, ४, ११, १२, १३, जन.१८, २२, २३, २६, २७, फर.३, ४, ५, ९, १०, १८, १९, २०, मार्च ३,८,९,१०,११	२५ मई तक और १० सितं. से१२ जन.तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. २०५५ वि.) (२८ मार्च '९८ से १७ मार्च '९९ ई. तक)

नाम या जन्म राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
सिंह	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०,मई ४,५,६,७,८,९,१५,१८,१९,२६,२७,जून.१,३,६,१०,११,२८,३०,जुला.१,२,३,११,१२,अग.१७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२८,३०,जन.१८,२६,२७,फर ३,४,५,मार्च ३, १०,११	१३ अप्रै. से १३ मई १६ अग.से १६अक्तू. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०, मई ४,५,६,७,८,९,१५,१८,१९,२६,२७,जून १,३,६,१०,११,२८,३०, जुला.१,२,३,११,१२,१९,२०, २६,२८, २९,३०, अग.६,७,१७,२३,२४,२५, २६,२७,३१,सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२८,३०, दिसं.३,४,११,१२,१३,जन.१८,२६,२७, फर ३,४,५,मार्च ३,१०,११	२६ मई से ९ सितं.तक और १३ जन. बाद
कन्या	मई.,१८,१९,२१,२२, २६,२७, जून.,१,३,६,८,१७,१८,१९,२८,३०,जुला. १,२,३,६,११, १२, १९, २०, २६, २८, २९, ३०, अग. २,६, ७, ११, १२, सितं.२१, २२, २३, २५, २६, ३० (१३।३ बाद),दिसं.३, ४, ११, १२, १३, जन.१८, २२, २३,२६,२७,फर ३, ४, ५, ९, १०,१८,१९,२० मार्च ३,८,९	१४ मई से १३ जून. १६ सितं. से १४ नवं. १३ जन. से १२ फर.	अप्रै.१९ (१४। ५७ बाद),२०,२१,२८,२९,३०,मई ४,५,६,७,८,९,१२, १८,१९,२१,२२,२६,२७,जून१,३,६,८,१७,१८,१९,२८,३०,जुला.१,२, ३,६,११,१२,१९,२०,२६,२८,२९,३०,अग.२,६,७,११,१२,१७, २३, २४,२५,२६, २७, सितं.३,४,५,२१,२२,२३,२५,२६,३०(१३।३ बाद),दिसं.३,४,११,१२,१३,जन. १८,२२,२३,२६,२७, फर.३,४, ५,९,१ ०, १८,१९,२०,मार्च ३,८,९	२५ मई तक और १० सितं. से १२ जन. तक
तुला	अप्रै.१७,१९(१४।५७तक),३०, मई ४,५,६,७,८,९,१२,जून १७,१८,१९,२८,३०, जुला.१,२,३,६,१२ (१४।९ बाद),२६,२८,२९,३०, अग.२,११,१२, १७,२३, २४, २५,२६,२७,३१,सितं.१,२,४,५,दिसं. ४(१७।१बाद),११,१२,१३, फर१८,१९, २० मार्च ३,८,९,१०,११	१४ अप्रै. से १३ मई १४ जून से १५ जुला. १६ अक्तू. से १४ दिसं. १२ फर से १३ मार्च	अप्रै.१७,१९ (१४।५७ तक),३०, मई ४,५,६,७,८,९,१२,१५,१८ (२६।४१ बाद)१९,२१,२२,२७ (९।९ बाद),जून१,३,६,८, १०, ११, १७, १८,१९,२८,३०, जुला.१,२,३,६,१२(१४।९बाद),२६,२८,२९, ३०,अग.२, ११,१२,१७,२३,२४, २५,२६,२७,३१, सितं.१,२,४, ५,२१, २२,२३,२५,२६,२८,३०(१३।३तक), दिसं. ४ (१७।१ बाद),११, १२, १३,जन.२२,२३,फर.३,४,५,९,१०,१८,१९,२०,मार्च ३,८,९,१०,११	२६ मई से ९ सित. तक और १३ जन. तक
वृश्चिक	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,९,१२,१५,१८(२६।४१तक),२१, २२,२६,२७ (९।९तक),जून१,३,६,८,१०,११,जुला.१९,२०,२६,२८,२९,३०, अग.२,६,७,११,१२,२३,२४,२५,२६,२७,३१,सितं.१,२,३,२१,२२,२३,२५,२६, २८,३०,दिसं.३,४(१७।१तक),११,१२,१३,जन.१८,२२,२३,२६,२७,फर३,४,५,९,१०	१४ मई से १३ जून १६ जुला.से१५ अग. १५ नवं. से १५ दिसं.	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,९,१२,१५,१८ (२६।४१ तक),२१,२२,२६,२७ (९।९ तक),जून.१,३,६,८,१०,११,१७,१८,१९,२८,३०, जुला.१,२,३,६,११,१२,(१४।९ तक),१९,२०,२६,२८,२९,३०,अग.२,६,७,११, १२,२३,२४,२५,२६,२७,३१, सितं.१,२,३,२१,२२,२३,२५,२६,२८,३०, दिसं.३,४ (१७।१ तक),११,१२,१३, जन.१८,२२,२३,२६,२७, फर.३,४,५,९,१०, १८,१९,२०, मार्च ३,८,९,१०,११	२५ मई तक और १० सितं. से १२ जन. तक
धनु	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०, मई ४,५,६,७,८,९,१२, १५,१८,१९,२६, २७, जून.१, ३, ६,८,१०,११,२८,३०, जुला.१,२,३,६,११,१२,अग.१७,२३, २४, २५, २६, २७,३१, सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२५,२६,२८,३०, जन.१८,२६,२७, फर.३,४,५,९,१०,मार्च ३,८,९,१०,११	१३ अप्रै. से १३ मई. १४ जून से १५ जुला. १६ अग.से १५ सितं. १३ जन. से १२ फर.	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०, मई ४,५,६,७,८,९,१२,१५,१८,१९,२६,२७, जून.१,३,६,८,१०,११,२८,३०,जुला.१,२,३,६,११,१२,१९,२०,२६,२८,२९,३०,अग.२, ६,७,१७,२३,२४,२५,२६,२७,३१, सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२३,२५,२६,२८,३०, दिसं.३,४,११,१२,१३, जन.१८,२६,२७, फर.३,४,५,९,१०, मार्च ३,८,९,१०,११	पूरा वर्ष
मकर	मई १५,१८,१९,२१,२२,२६,२७,जून ३(८।२० बाद),६,८,१०,११,१७,१८,१९, ३०,जुला.१,२,३,६,११,१२,१९,२०,२८,२९,३०,अग.२,६,७,११,१२,सितं.२१,२२, २३,२५,२६,२८,३०,दिसं.३,४,११(१०।२ बाद),१२,१३,जन.१८,२२,२३,२६, २७, फर३ (२७।४० बाद),४,५,९,१०,१८,१९,२०,मार्च ३(१२।२० बाद), ८,९,१०,११	१४ मई से १३ जून १६ जुला.से १५ अग. १६ सितं. १५ अक्तू. १३ जन. से १३ मार्च	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९,३०,मई ७,८,९,१२,१५,१८,१९,२१,२२,२६,२७,जून.३(८।२० बाद),६,८,१०,११,१७,१८,१९,३०,जुला.१,२,३,६,११,१२,१९,२०,२८, २९,३०, अग.२,६,७, ११,१२,१७,२४(८।२०बाद),२५,२६,२७,३१,सितं.१,२,३, ४,५,२१,२२,२३,२५,२६, २८,३०, दिसं.३,४,११ (१०।२ बाद),१२,१३, जन. १८,२२,२३,२६,२७, फर.३(२७।४०बाद), ४,५, ९,१०,१८,१९,२०,मार्च ३(१२।२० बाद),८,९,१०,११	२६ मई से ९ सितं. तक और १३ जन. बाद
कुम्भ	अप्रै.१७,१९,२०,२१,३०,मई ४,५,६,९ (१४।१२बाद),१२,जून.१७,१८,१९,२८, जुला.३,६,११,१२,२६,३०,अग. २,६,७,११,१२,१७,२३,२४ (८।२०तक),२६ (२०।२७ बाद),२७,३१, सितं.१,२,३,४,५, दिसं.४(१७।१ बाद),११(१०।२ तक) फर१८, १९,२०, मार्च ३ (१२।२० तक),८,९,१०,११	१४ जून से १५ जुला. १६ अग. से१५ सितं १६ अक्तू से १४ नवं. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रै.१७,१९,२०,२१,३०,मई ४,५,६,९ (१४।१२,बाद),१२,१५,१८,१९,२१,२२,२७ (९।९बाद),जून१,३(८।२०तक),६,८,१०,११,१७,१८,१९,२८,जुला.३,६,११,१२,२६,३०, अग. २,६,७,११,१२,१७,२३,२४ (८।२०तक),२६(२०।२७ बाद),२७,३१,सितं.१,२, ३,४,५,२३,२५,२६,२८,३०, दिसं.४ (१७।१बाद),११(१०।२ तक),जन.१८,२२,२३, फर.३ (२७।४० तक),९,१०,१८,१९,२०,मार्च ३ (१२।२० तक),८,९,१०,११	२५ मई तक और १० सितं. से १२ जन. तक
मीन	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९ मई ४,५,६,७,८,९ (१४।१२ तक),१२,१५, १८,१९,२१,२२,२६,२७,(९।९तक),जून १,३,८,१०,११,जुला.१९,२०, २६, २८,२९, अग.२,६,७,११,१२,२३,२४,२५,२६ (२०।२७तक),३१, सितं. १,२,३,४,५, २१,२२, २५, २६, २८,३०, दिसं.३,४ (१७।१ तक), ११,१२, १३, जन.१८,२२,२३,२६,२७, फर. ३,४,५ ९,१०	१४ अप्रै. से १३ मई १६ जुला. से १५ अग. १६ सितं से १६ अक्तू. १५ नवं. से १४ दिसं.	अप्रै.१७,१९,२०,२१,२८,२९, मई ४,५,६,७,८,९(१४।१२, तक), १२, १५, १८, १९, २१,२२,२६,२७ (९।९ तक),जून १,३,८,१०,११,१७,१८,१९,२८,३०, जुला.१, २, ६,११,१२,१९,२०,२६,२८,२९,अग.२,६,७,१०,१२,२३,२४,२५,२६ (२०।२७तक), ३१,सितं.१,२,३,४,५,२१,२२,२५, २६,२८,३०,दिसं.३,४ (१७।०१तक), ११, १२, १३, जन.१८,२२,२३,२६,२७, फर.३,४,५,९, १०,१८,१९,२०, मार्च ३,८,९,१०,११	पूरा वर्ष

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (संवत् २०५५ वि.)

प्रतिवर्ष हमारे कार्यालय में ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र हमें उपलब्ध होते हैं, जिनसे वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर उनमें विवाह-लग्न लगाए होते हैं । इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं । विश्वास है, यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ होगा और वे इससे स्वयं यह भली भांति जान सकेंगे कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्र विरुद्ध क्यों है । यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाह नक्षत्र होते हुए भी वहां विवाह नहीं किया जा सकता । जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूर ग्रहवेध आदि से रहित होने से विवाह नक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन रहा हो, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है । ध्यान रहे - यहाँ जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है ।

तिथि-वार	तारीख (१९९८ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष	तिथि-वार	तारीख (१९९८ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष	तिथि-वार	तारीख (१९९८ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से वैशा. कृ. १ र, (१२अप्रै.'९८ ई.) तक सूर्य मीनस्थ				ज्ये.शु. १२ श.	जून ६	स्वा.	केतुवेध	श्राव.कृ. ८ शु.	सितं.१७	अश्वि.	शनियुति
वैशा.कृ.१ चं.	अप्रै. १	स्वा.	संक्रान्ति, केतुवेध	" " १२ र.	" ७	स्वा.	केतुवेध	श्राव.शु. २ श.	" २५	मघा	लग्नाभाव
" " २ मं.	" १४	अनु.	भद्रा, व्यतिपात	" " १४ मं.	" ९	अनु.	शुक्र, पादवेध	" " ४ चं.	" २७	उ.फा	मृत्युबाण
" " ३ बु.	" १५	अनु.	मृत्यु बाण	आषा.कृ.२ शु.	" १२	उ.षा.	सूर्यवेध	" " ६ बु.	"२९	ह.	गुरु पादवेध
" " ६ श.	" १८	मूल	लग्नाभाव	" " ३ श.	" १३	उ.षा.	सूर्यवेध	" " ७ गु.	" ३०	स्वा.	केतुवेध
" " १०बु.	" २२	धनि.	भद्रा	" " ३ श.	" १३	श्र.	राहुवेध	" " ८ शु.	" ३१	स्वा.	केतुवेध
" " ११गु.	" २३	उ.भा.	लग्नाभाव	" " ४ र.	" १४	श्र.	मासान्त, राहुवेध	" " १०चं.	अग.३	अनु.	लग्नाभाव
वैशा.शु. ३ बु.	" २९	मृग.	लग्नाभाव	" " ४ र.	" १४	धनि.	मासान्त	" " ११ मं.	" ४	मू.	वैधृति, भौमवेध
" " १३ श.	मई ९	स्वा.	केतुवेध	" " ५चं.	" १५	धनि.	संक्रान्ति	" " १२ बु.	" ५	मू.	भौमवेध
" " १४ र.	" १०	स्वा.	केतुवेध	" " १० शु.	" १९	अश्वि.	शनियुति	" " १४ शु.	" ७	श्रव.	राहुवेध
" " १५ चं.	" ११	स्वा.	नक्षत्रान्त, व्यतीपात, भद्रा	" " ११श.	" २०	अश्वि.	शनियुति	" " १५ श.	" ८	श्रव.	राहुवेध
ज्ये.कृ. २ बु.	" १३	अनु	मासान्त	आषा.शु. ५ चं.	" २९	मघा	लग्नाभाव	" " १५ श.	" ८	ध.	सूर्यवेध
" " ३ गु.	" १४	मूल	संक्रान्ति	" " ७ बु.	जुला.१	ह.	परिघार्ध, भद्रा,	भाद्र.कृ.२ र.	" ९	ध.	सूर्यवेध
" " ५ श.	" १६	उ.षा.	मृत्युबाण	" " ८ गु.	" २	ह.	लग्नाभाव	" " ४ मं.	" ११	रे.	लग्नाभाव
" " ६ र.	" १७	उ.षा.	लग्नाभाव	" " ९ शु.	" ३	स्वा.	केतुवेध	" " ५ बु.	" १२	अश्वि	भुजंगपात, शनियुति
" " ६ र.	" १७	श्र.	राहुवेध	" " १० श.	" ४	स्वा.	केतुवेध	" " ६ गु.	" १३	अश्वि.	भुजंगपात, शनियुत्ति
" " ७ चं.	" १८	श्र.	राहुवेध	" " ११ र.	" ५	अनु.	मृत्युबाण	" " ८ श.	" १५	रो.	मासान्त
" " ११शु.	" २२	रे.	शुक्रयुति	" " १३ मं.	" ७	मूल	सूर्यवेध,	" " ९ रवि.	" १६	रो.	संक्रान्ति
" " १२ श.	" २३	रे.	लग्नाभाव, शुक्रयुति	" " १४ बु.	" ८	मूल	सूर्यवेध	" " ९ र.	" १६	मृग	संक्रान्ति
" " १२ श.	" २३	अश्वि.	शनियुति	" " १५ गु.	" ९	उ.षा.	वैधृति	भाद्र.शु.२ चं.	" २४	ह.	लग्नाभाव
ज्ये.शु. १ मं.	" २६	रो.	क्षीण चन्द्र,	श्राव.कृ. १ शु.	" १०	उ.षा.	शुक्र पादवेध	" " ४ बु.	" २६	ह.	नक्षत्रान्त, भद्रा
" " ६ र.	" ३१	मघा	लग्नाभाव	" " १ शु.	" १०	श्र.	राहुवेध	" " ५ गु	" २७	स्वा.	केतुवेध
" " ८ मं.	जून २	उ.फा.	लग्नाभाव	" " २ श.	" ११	श्र.	राहुवेध	" " ६ शु.	" २८	स्वा.	केतुवेध,
" " ९ बु.	" ३	ह.	लग्नाभाव	" " ५ मं.	" १४	उ.भा	मृत्युबाण	" " ७ श.	" २९	अनु.	लग्नाभाव
" " १० गु.	" ४	ह.	मृत्युबाण	" " ६ बु	" १५	उ.भा.	मासान्त	" " ८ र.	अग.३०	अनु.	वैधृति
" " ११ शु.	" ५	ह.	व्यतीपात	" " ६ बु.	" १५	रेव.	संक्रान्ति	" " १२गु.	सितं .३	श्रव.	राहुवेध
" " ११ शु.	" ५	चि.	लग्नाभाव,	" " ७ गु.	" १६	अश्वि.	संक्रान्ति, शनियुति	" " १३शु.	" ४	श्रव.	राहुवेध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (संवत् २०५५ वि.)

तिथि-वार	तारीख (१९९८ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राद्धपक्ष ७ से २० सितं.'९८ तक			
आश्वि.शु. १चं.	सितं.२१	उ.फा	क्षीणचन्द्र
" " ३ बु.	" २३	स्वा.	मिथुन में चन्द्रपादवेध
" " ४ गु.	" २४	स्वा.	वैधृति
" " ६ र.	" २७	मू.	लग्नाभाव
" " १० गु.	अक्तू.१	उ.षा.	नक्षत्रान्त
" " १० गु.	" १	श्रव.	भौम-राहुवेध
" " ११ शु.	" २	श्रव.	भौमराहुवेध
" " ११ शु.	" २	ध.	केतुयुति
शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ = ४ अक्तू'९८ से, शुक्रास्त= ७ अक्तू.से २८नवं'९८ तक। शुक्रबाल्य समाप्त=२ दिसं.'९८			
मार्ग.शु.१५ गु.	दिसं.३	मृग.	लग्नाभाव
पौष कृ.५ मं.	" ८	मघा	वैधृति
" " ६ बु.	" ९	मघा	लग्नाभाव
" " ७ गु.	" १०	उ.फा.	लग्नाभाव
" " ८ शु.	" ११	ह.	लग्नाभाव

तिथि-वार	तारीख (१९९८-९९ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष
पौष कृ.१०र.	दिसं. १३	ह.	भद्रा,
" " ११ चं.	" १४	चि.	मासान्त,
" " ११ चं.	" १४	स्वा	मासान्त
धनु:स्थ सूर्य १५ दिसं. ९८ से १३ जन. ९९ तक			
माघ.कृ.१२गु.	जन. १४	मू.	संक्रान्ति,क्षीणचन्द्र
माघ शु.१ चं.	" १८	उ.षा.	क्षीणचन्द्र, सूर्ययुति
" " २ मं.	" १९	श्रव.	लग्नाभाव
" " २ मं.	" १९	ध.	राहुवेध,शुक्र,केतु युत्ति
" " ३ बु.	" २०	ध.	राहुवेध शुक्र,केतु युत्ति
" " ६ श.	" २३	उ.भा.	नक्षत्रान्त
" " ६ श.	" २३	अश्वि.	शनियुत्ति
" " ७ र.	" २४	अश्वि.	शनियुति
" " ११ बु.	" २७	मृग.	लग्नाभाव
" " १२ गु.	" २८	मृग.	कुंभ में क्रान्तिसाम्य
फाल्गु.कृ.१चं.	फर.१	मघा	सूर्यवेध
" " २ मं.	" २	मघा	सूर्यवेध
" " ५ शु.	" ५	चित्रा	भुजंगपात
" " ६ श.	" ६	चित्रा	भुजंगपात

तिथि-वार	तारीख (१९९८ ई.)	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु.कृ.६श.	फर.६	स्वा.	भौमयुत्ति
" " ७ र.	" ७	स्वा.	भौमयुत्ति
" " १०गु.	" ११	मू.	मासान्त
" " ११ शु.	" १२	मू.	संक्रान्ति
" " १२ श.	" १३	उ.षा.	क्षीणचन्द्र
फाल्गु.शु.५ श	" २०	अश्वि.	शनियुति
" " ६ र.	" २१	अश्वि.	शनियुति
होलाष्टक = २३ फर. से २ मार्च' ९९ तक			
चैत्र कृ. २ गु.	मार्च ४	उ.फा.	नक्षत्रान्त
" " २ गु.	" ४	ह.	भुजंगपात
" " ३ शु.	" ५	ह.	भुजंगपात
" " ३ शु.	" ५	चि.	सूर्यवेध
" " "४श.	" ६	चि.	सूर्यवेध
" " ४ श.	" ६	स्वा.	भौमयुति
" " ५ र.	" ७	स्वा.	भौमयुति
" " १० शु.	" १२	उ.षा.	लग्नाभाव
" " ११ श.	" १३	श्रव.	मासान्त
मीनस्थ सूर्य=१४ मार्च' ९९से			

विवाह मुहूर्त्तों के शोधन में वेध, युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ-चन्द्र, भौम-शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं वहां उन मुहूर्त्तों को शुद्ध मान लिया जाता है और वहां लग्न लगा दिए जाते हैं । इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं :-

वेध परिहार-सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूर ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेध पद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेध दोष से मुक्त रहते हैं। पादवेध पद्धति में वेधक सौम्य ग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में है तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। **युति दोष का परिहार**-नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष तो सामान्य माना जाता है,लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष)या मित्र राशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। **कर्त्तरी दोष का परिहार** - मूहूर्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु ,शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरी दोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रु राशि या अपनी नीच राशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी कर्त्तरी दोष नहीं रहता। यदि मूहूर्त लग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरी दोष निष्प्रभाव हो जाता है। और ऐसा कर्त्तरी दोष विवाह मुहूर्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र कर्त्तरी दोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर इन्हीं योगों से देखना चाहिए। **दग्धा तिथि का परिहार**-मुहूर्त के लग्न से सप्तम रहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है। इस परिहार की स्थिति में दग्धा तिथि में विवाह लग्न शुद्ध माना जाता है। **षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार**-नीच राशि (वृश्चिक)में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छटे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता । यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता । **अष्टमस्थ मंगल का परिहार**- मंगल अस्त (अदृश्य)हो या वह नीच राशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हों तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी दोषकारक नहीं होता । यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। **षठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार**- शुक्र यदि नीच राशि (कन्या) अथवा शत्रु राशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है-मार्तण्ड पंचाग में दिए जाने वाले मुहूर्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुण्डनादि के अन्य मुहूर्त्त (सं. २०५५ वि.) (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

मुण्डन मुहूर्त्त (१९९८ ई.)

तिथि - वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैटा.)
वैशा.कृ.४ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १६	ज्ये.	११।५७बाद
" " १० बु.	" १०	" २२	शत.	९।४२ बाद
वैशा.शु. ५ गु.	" १८	" ३०	मृ.	९।०७ तक
" " १२ शु.	" २६	मई ८	ह.	१३।१६ बाद
ज्ये. कृ. ७ चं.	ज्ये. ५	" १८	श्रव.	११।११ से १३।४५ तक
" " ७ चं.	" ५	" १८	ध.	१४।५७ बाद
" " ११ शु.	" ९	" २२	रे	९।५५ से १४।०७ तक
ज्ये. शु. २ बु.	" १४	" २७	मृग.	
" " १० गु.	" २२	जून ४	ह.	१२।०५ तक,
आषा. कृ.१० शु.	आषा. ५	" १९	रे	११।३३ तक,
पौष शु. ५ बु.	पौष ९	दिसं.२३	धनि.	
" " १०चं.	" १४	" २८	अश्वि.	
(१९९९ ई.)				
माघ कृ. ३ चं.	" २१	जन. ४	पुष्य	९।०४तक
" " ९ चं.	" २८	" ११	स्वा.	११।३७बाद
फाल्गु. कृ. ५शु.	माघ २३	फर. ५	ह.	
फाल्गु.शु.१बुध.	फाल्गु. ६	" १७	शत.	१०।३९ से १५।५५ तक

मुण्डन में विशेष-किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवीमन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (१९९८ ई.)

चै. शु. ३ चं.	चैत्र १७	मार्च ३०	अश्वि.	६।४९ तक.
वैशा. शु. ६ शु.	वैशा. १९	मई १	आर्द्रा	८।३३ तक
" " १२ शु.	" २६	" ८	ह.	१३।१६ तक
ज्ये.कृ.११ शु.	ज्ये.९	" २२	रे	९।५५बाद
ज्ये.शु. ३ गु.	" १५	" २८	आर्द्रा	१४।०३ तक
" " १० गु.	"२२	जून ४	ह.	१२।०५ तक
" ११ शु.	" २३	" ५	चि.	१३।०८ से १४।२४ तक
आषा.कृ.१०शु.	आषा.५	" १९	रे	११।३३ तक
पौष शु. १०चं.	पौष १४	दिसं २८	अश्वि.	
सन् १९९९ई.				
माघ.कृ.३चं.	पौष. २१	जन. ४	पुष्य	९।४ तक,
" " ९ चं.	" २८	" ११	स्वा.	११।३७ बाद
फाल्गु.कृ. ५शु.	माघ २३	फर. ५	ह.	
" " ९ बु.	" २८	" १०	अनु.	९।०५ से ११।१ तक

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (१९९९ ई.)

तिथि- वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैटा.)
चैत्र.कृ. २ गु.	फाल्गु.२१	मार्च ४	ह.	७।२८ बाद,
" " ३शु.	" २२	" ५	चि.	१५।४८ बाद,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

चैत्र. शु. ६ गु.	चैत्र २०	अप्रै. २	मृग.	१४।४९ तक
" " १३ गु.	" २७	" ९	पू.फा.	११।०४ तक
वैशा.शु. ५ गु.	वैशा.१८	" ३०	मृग.	९।०७ तक
" " ५ गु.	" १८	" ३०	आर्द्रा	१०।१९ बाद
" " ६ शु.	" १९	मई १	आर्द्रा	८।३३तक
" " १२ शु.	" २६	" ८	ह.	
ज्ये. कृ. १० गु.	ज्ये. ८	" २१	पू.भा.	६।१० तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	" १५	" २८	आर्द्रा	१४।०३ तक
" " ४ शु.	" १६	" २९	पुन.	१६।४१ से १७।४७ तक
" " ६ र.	" १८	" ३१	आश्ले.	९।५५ तक, १३।३१ बाद
" " १० गु.	" २२	जून ४	ह.	१२।०५ तक,
" " ११ शु.	" २३	" ५	चि.	१३।०८ से १४।२४तक
" " १२ र.	" २५	" ७	स्वा.	१२।०४ तक,
आषा.कृ. १ गु.	" २९	" ११	मू.	१०।१४ से १८।३० तक
" " २ शु.	" ३०	" १२	पू.षा.	
पौष शु. ६ गु.	पौष १०	दिसं. २४	शत.	
(सन् ११९९ ई.)				
माघ कृ. ६ गु.	पौष २४	जन. ७	पू.फा.	१०।४४ तक
" " १३ शु.	माघ २	" १५	मू.	
माघ शु. ५ शु.	" ९	" २२	पू.भा.	७।४९ तक,
" " १२ गु.	" १५	" २८	मृग.	१४।३८ से १६।११ तक,
" " १३ शु.	" १६	" २९	आर्द्रा	१४।२७ बाद,
फाल्गु.कृ. ५ शु.	" २३	फर. ५	ह.	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्त

बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवानेके लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन, आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन मुहूर्त्त सन् (१९९८ ई.)

चैत्र.शु. ६ गु.	चैत्र.२०	अप्रै. २	मृग.	
वैशा.शु. ५ गु.	वैशा.१८	" ३०	मृ.	९।०७ तक
" " ६ शु.	" १९	मई १	पुन.	९।४५ बाद
ज्ये.शु. १०गु.	ज्ये.२२	जून ४	ह.	१२।०५ तक

उपनयन मुहूर्त्त (सन् १९९९ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैटा.)
माघ.कृ. ३ चं.	पौष २१	जन.४	पुष्य	९।०४ तक,
माघ.शु. ५शु.	माघ.९	" २२	उ.भा.	९।०१बाद
चैत्र.कृ. १बु.	फाल्गु.२०	मार्च ३	उ.फा.	९।१४तक

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं.मि. को स्थानीय सूर्योदय काल में जोड़ने पर "स्पष्ट दिनार्ध" होता है, दिनमान का ३० वां भाग मुहुर्त्तार्ध कहलाता है। मुहुर्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहुर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारंभ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो तब अभिजित् मुहूर्त्त को प्रयोग में लाना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

वैशा.शु. ३ बु.	वैशा.१७	अप्रै. २९	रो.	७।१८ तक
" " ५ गु.	" १८	" ३०	मृग.	९।०७ तक,
" ११ गु.	" २५	मई ७	उ.फा.	२०।४० से २०।२५तक
" " १२ शु.	" २६	" ८	ह.	
मार्ग. शु. १५ गु.	मार्ग. १८	दिसं ३	रो.	१०।३८ से ११।३७ तक,
पौष.कृ. १शु.	" १९	" ४	मृग.	
" " ४ चं.	" २२	" ७	पुष्य	१०।२७ बाद,
सन् १९९९ ई.				
फाल्गु.शु. १बु.	फाल्गु.६	फर.१७	शत.	१५।५५ तक,
" " २गु.	" ७	" १८	उ.भा.	१५।५० बाद,
चैत्र.कृ. १ बु.	" २०	मार्च ३	उ.फा.	९।१४ तक,११।१४ बाद,
" " २ गु.	" २१	" ४	ह.	७।२८ बाद,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधु का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (१९९८ ई.)

श्राव.कृ. २ श.	आषा.२७	जुला. ११	श्रव.	
श्राव. शु.१०चं.	श्राव.१९	अग.३	अनु.	८।३५ तक,
मार्ग.शु.१५ गु.	मार्ग .१८	दिसं. ३	रो.	१०।३८ बाद,
पौष कृ. १ शु.	मार्ग. १९	दिसं. ४	मृग.	
पौष शु.१३ गु.	पौष.१७	दिसं. ३१	रो.	१३।५८ तक.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नूतन ग्रह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ट	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टै.टा.)
ज्ये. कृ. ११शु	ज्ये. ९	मई २२	रे	९।५५से १४।०७ तक,
ज्ये.शु. १० गु	ज्ये. २२	जून ४	ह.	१२।०५ तक,
सन् १९९९ ई.				
माघ कृ १३शु.	माघ २	जन. १५	मू.	१९।५२ तक,
माघ शु १३शु.	माघ १६	जन. २९	पुन.	२१।५७ से २४।३९ तक,
फाल्गु.शु.९बु.	फाल्गु.१३	फर. २४	मृग.	१७।१८ से २८।१९ तक,

पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ट	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टै.टा.)
वैशा.कृ. ५शु.	वैशा. ५	अप्रै.२७	मू.	१३।१४ बाद,
" "१०बु.	" १०	" २२	शत.	९।४२ बाद,
वैशा. शु.५ गु	" १८	" ३०	मृग.	९।०७ तक
" " ६ शु.	" १९	मई. १	पुन:	९।४५से२६।२७ तक,
" "१२ शु.	" २६	" ८	ह.	१३।१६ से २३।३१ तक
ज्ये. कृ..७ चं.	ज्ये. ५	" १८	श्रव.	११।११ से १३।४५ तक
" " ७चं.	" ५	" १८	ध.	१४। ५७ से २२।४१ तक
" "११शु.	" ९	" २२	रे	९।५५से १४।०७तक
ज्ये. शु २ बु.	" १४	" २७	मृग.	१६।४२ तक, १८।४२ से १९।७ तक
" " ४ शु.	" १६	" २९	पुन.	१६।४१से १७।४७ तक
" " ४ शु.	" १६	मई २९	पुष्य	१८।५९ बाद,
" "१० गु	" २२	जून ४	ह.	१२।०५ तक,
" "११ शु.	" २३	" ५	चि.	१३।०८ से १४।२४ तक,
श्राव.कृ.४ चं.	आषा.२९	जुला.१३	शत.	१६।६ से २३।२८ तक,
" "१२ चं.	श्राव. ५	" २०	मृ.	२३।२ बाद,
श्राव. शु.६बु.	" १४	" २९	ह.	२२।४ तक,
" " ६ बु.	" १४	" २९	चि.	२३।१६ बाद,
" " ७ गु	" १५	जुला. ३०	चि.	२५।३ तक,
" "७ गु	" १५	" ३०	स्वा.	२६।१५ से २८।२५ तक
" "१० चं.	" १९	अग. ३	अनु	८।३५ तक,
कार्ति.कृ.२बु.	आश्वि.२२	अक्तू.७	अश्वि	१५।३४ तक,
" "१०बु	" २९	" १४	पुष्य	७।२१ तक,
कार्ति. शु १बु.	कार्ति.५	" २१	स्वा.	१८।११ से २४।५५ तक
" "३ शु.	" ७	" २३	अनु	२३।०३ तक,
" "६चं.	" १०	" २६	मू.	११।२२ तक,
" "१०शु	" १४	" ३०	ध.	१४।०९ तक,
" "१०शु.	" १४	" ३०	शत.	१५।२१ बाद,
" "१३ चं.	" १७	नवं. २	रे	९।५७ से १८।२९ तक
मार्ग.कृ. ६ चं.	" २४	" ९	पुन.	१३।४७ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सन् १९९८ ई.

तिथि-वार	प्रविष्ट	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टै.टा.)
मार्ग कृ. ६ चं	कार्ति. २४	नवं. ९	पुष्य	१४।५९ से १८।०४ तक
मार्ग.शु ६ बु.	मार्ग.१०	" २५	श्र.	२१।०९ तक,
" " ६ बु.	" १०	" २५	ध.	२२।२१ बाद
" "७ गु.	" ११	" २६	ध.	(१०।६६ तक,१४।२२ से१८।१३ तक,
(सन्१९९९ ई.)				
माघ.कृ.३ चं.	पौष २१	जन. ४	पुष्य	९।०४तक
" " ७शु.	" २५	" ८	ह.	१७।४७ बाद,
" "१३शु.	माघ २	" १५	मू.	१९।५२ तक,
माघ.शु १ चं.	" ५	" १८	श्रव.	२१।१४बाद
" " ३ बु.	" ७	" २०	शत.	१७।० से १९।५८ तक,
" "१३शु.	" १६	" २९	पुन.	२१।५७से२४।३९तक,
फाल्गु.कृ.४ गु	" २२	फर ४	ह.	२२।५२ बाद,
" " ५ शु.	" २३	" ५	ह.	२३।४९ तक,
" " ५ शु	" २३	" ५	चि.	२५।१ से २६।१० तक, २८।१० बाद
" "९ बु.	" २८	" १०	अनु	९।५ से ११।१ तक,
फाल्गु.शु १बु.	फाल्गु.६	" १५	शत.	१०।३९ से १५।५५ तक
" "४ शु.	" ८	" १९	रे.	२८।१७ बाद
" "९ बु.	" १३	" २४	मृग.	१७।१८ से २८।१९तक,

नोट- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांस्फर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुरानेमकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन ग्रह प्रवेश मुहूर्त है। इन मुहर्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठ मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ट	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
चैत्र.शु. ५ बु.	चैत्र. १९	अप्रै. १	रो.	
" " ६ गु.	" २०	" २	मृग.	
वैशा.कृ .७ र.	वैशा. ७	" १९	उ.षा.	८।५४ बाद
" " ८ चं.	" ८	" २०	श्रव.	९।४ बाद
" "१३शु.	" १२	" २४	उ.भा.	८।५५ तक,
वैशा. शु.५ गु.	" १८	" ३०	मृग.	९।७ तक,
" " ६ गु	" १९	मई .१	पुन.	९। ४५ बाद
ज्ये. कृ.६ चं.	ज्ये. ४	" १५	उ.षा.	
" " ११शु	" ९	" २५	उ.भा.	८।४३ तक,
" " ११शु	" ९	" २५	रे	९।५५ बाद

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सन् १९९८ ई.

तिथि-वार	प्रविष्ट	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टै.टा.)
ज्ये.शु. २ बु.	ज्ये. १४	मई २७	मृग.	
" " १०गु.	" २२	जून ४	ह.	१०।५ तक,
आषा.कृ.१०शु.	आषा. ५	" १९	रे	११।३३ तक
पौष शु. ६ शु.	पौष १०	दिसं.२४	शत.	
" "१३ गु.	" १७	" ३१	रो.	
(सन् १९९९ ई.)				
माघ.कृ. ३ चं.	पौष २१	जन. ४	पुष्य	९।४ तक,
माघ.शु. ५ शु	माघ ९	" २२	उ.भा.	९।०१ बाद,
" "१५ र	" १८	" ३१	पुष्य	१०।१७ बाद,

तामस देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् १९९८ ई.)

(श्री भैरव, काली नृसिंह आदि के लिए)

आषा. कृ. १३ चं.	आषा ८	जून २२	रो.	११।१३ बाद,
आषा. शु. १ गु.	" ११	" २५	पुन.	
" " २ शु.	" १२	" २६	पुष्य	
" " ७ बु.	" १३	जुला. १	उ.फा.	११।२ तक,
मार्ग. शु १५ गु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	रो.	१०।३८ बाद,
पौष कृ. १ शु	" १९	" ४	मृग.	
" " ८ शु.	" २६	" ११	उ.फा.	
पौष शु. ३ चं.	पौष ७	" २१	उ.षा.	

श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् १९९८ ई.)

आषा. कृ. ३ श.	ज्ये ३१	जून१३		९।५३ बाद,
सन् १९९९ ई.				
माघ कृ. ४ मं.	पौष २२	जन. ५		
फालगु. कृ ४ गु.	माघ २२	फर. ४		

श्री दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त सन् १९९८ ई.

चैत्र शु. ९ र.	चैत्र २३	अप्रै. ५	
वैशा. शु. ९ चं.	वैशा २२	मई ४	
ज्ये. शु. ९ बु.	ज्ये. २१	जून ३	
आषा कृ. १ गु.	" २९	" ११	मूल
सन् १९९९ ई.			
माघ. कृ. १३ शु	माघ २	जन. १५	मूल
माघ. शु. ८ चं.	" १२	" २५	११।४१ बाद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् १९९८ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ठ	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल भा.स्टै.टा.)
चैत्र. शु. ७ शु.	चैत्र. २१	अप्रै.३	आर्द्रा	
वैशा. शु. ५ गु.	वैशा. १८	" ३०	आर्द्रा	१०।१९ बाद,
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. १५	मई.२८	आर्द्रा	
सन् १९९९ ई.				
पौष. शु. १५ श.	पौष १९	जन.२	आर्द्रा	
माघ. कृ. १३ शु.	माघ २	" १५		
चैत्र.कृ. १४ मं.	चैत्र ३	मार्च १६		

श्री विष्णु-राम-कृष्ण प्रतिष्ठा मुहूर्त (सन् १९९८ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ठ	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
चैत्र. शु. १२ बु.	चैत्र. २६	अप्रै. ८	पू.फा.	९।१९ बाद,
वैशा. शु. १२ शु.	वैशा.२६	मई ८	ह.	
ज्ये. शु. १२ श.	ज्ये. २४	जून ६	चित्रा	९।२४ तक
" शु. १२ श.	" २४	" ६	स्वा.	१०।३६ बाद
पौष. शु. १२ बु.	पौष. १६	दिसं.३०	कृति.	

श्री गौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सन् १९९८ ई.

तिथि-वार	प्रविष्ठ	तारीख	शुद्ध काल
चैत्र शु. ३ चं.	चैत्र १७	मार्च ३०	११।१० बाद,
वैशा. शु. ३ बु.	वैशा.१७	अप्रै. २९	९।११ तक
ज्ये. शु. ३ गु.	ज्ये. १५	मई `२८	
सन् १९९९ ई.			
फाल्गु. शु. २ गु.	फाल्गु. ७	फर. १८	

देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्तों के बारे में कुछ स्पष्टीकरण

श्री विष्णु,राम,कृष्ण,शिव,गणेश,गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त "सात्त्विक देव प्रतिष्ठा" वाले मुहूर्तों में हो सकती हैं, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त काल बताए गये हैं, जिनका निर्देश हमने यहाँ अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए, कि 'सात्त्विक देव प्रतिष्ठा' वाले मुहूर्त श्री विष्णु,राम,कृष्ण,गणेश,शिव,सरस्वती आदि सभी सत्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं,जबकि श्री गणेश,दुर्गा,गौरी,शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामूहूर्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व)ही की जाती है।

ध्यान दें-गौरी, गणेश,दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मूहूर्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया,कृष्ण चतुर्थी,शुक्ल नवमी और कृष्ण चर्तुदशी तिथियां शुभ मानी गई हैं तदनुसार ही यहां इनके मूहूर्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है,नक्षत्रों का नहीं। हाँ , जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मूहूर्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है।

दशावतार प्रतिष्ठा

श्री राम,कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी-अपनी अवतार तिथियों के दिन भी पूर्वाह्न काल में बिना पंचाग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु शुक्रास्तकाल में पड़े तब तो उस दिन मूर्त्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए ।

विपणि दुकान खोलने के मुहूर्त्त(१९९८ई.)

तिथि-वार	प्रविष्ठ	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल भा.स्टै.टा.)
चैत्र. शु. २ र.	चैत्र. १६	मार्च२९	रे	९।३९ तक
" " ५ बु.	" १९	अप्रै. १	रो	
" " ६ गु.	" २०	" २	मृग.	१४।४९ बाद
" " ९ र.	" २३	" ५	पुष्य	१४।३५बाद,
" " १३ गु	" २७	" ९	उ.फा.	१२।१६बाद,
वैशा. कृ. ७ र.	वैशा. ७	" १९	उ.षा	८।५४ से १३।३७ तक,
" " १३ शु	" १२	" २४	उ.भा.	८।५५ तक
वैशा. शु ३ बु.	" १७	" २९	रो.	७।१८ तक
" " ५ गु	" १८	" ३०	मृग.	९।०७ तक
" " ७ श.	" २०	मई २	पुष्य	१०।३ बाद
" " ११ गु.	" २५	" ७	उ.फा.	१०।४०बाद
" " १२ शु	" २६	" ८	ह.	१३।१६ तक
" " १३ श.	" २७	" ९	चि.	१५।४६ तक
ज्ये. कृ. ५ श.	ज्ये. ३	" १६	उ.षा.	१४।३३ बाद
" " ११ शु	ज्ये. ९	" २२	रे.	१४।७ बाद
" " १२ श.	" १०	" २३	अश्वि.	७।३८ बाद
ज्ये. शु २ बु	" १४	" २७	मृग.	
" " ५ श.	" १७	" ३०	पुष्य	१६।२५ तक
" " १० गु.	" २२	जून ४	ह.	१२।०५ तक
" " १२ श.	" २४	" ६	चि.	९।२४ तक

विपणि दुकान खोलने के मुहूर्त्त

तिथि-वार	प्रविष्ठ	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल भा.स्टै.टा.)
आषा. कृ. १० शु	आषा. ५	जून १९	रे	११।३३ तक
आषा. शु. २ शु	" १२	" २६	पुष्य	
" " ७ बु.	" १७	जुला.१	उ.फा.	११।२ तक
" " १२ चं.	" २२	" ६	अनु.	
श्राव. कृ. १२ चं.	श्राव. ५	" २०	मृ.	१५।५ बाद
श्राव. शु ७ गु.	श्राव. १५	" ३०	चि.	
" " ९ र.	" १८	अग.२	अनु.	८।३९ बाद
" " १० चं.	" १९	" ३	अनु.	८ ।३५ तक
भाद्र. कृ. ५ बु.	" २८	अग.१२	रे	११।३४ तक, १३।३४ बाद
भाद्र. शु ४ बु.	भाद्र. ११	" २६	चि.	१४।३५ बाद
" " ५ गु.	" १२	" २७	चि.	८ ।४४ तक
" " ७ श.	" १४	" २९	अनु.	१५।४६ से १८।९तक
" " १२ गु.	" १९	सितं. ३	उ.षा.	
आश्वि.शु. ३ बु.	आश्वि. ८	" २३	चि.	१५।४२ तक
" " ५ श.	" ११	" २६	अनु	१०।२५ तक
" " ९ बु.	" १५	" ३०	उ.षा.	१५।१९ बाद
पौष. कृ. ४ चं	मार्ग. २२	दिसं.७	पुष्य	१०।२७बाद,
" " ९ श.	मार्ग. २७	" १२	ह.	१४।२९ बाद
" शु ३ चं.	पौष ७	" २१	उ.षा.	१६ ।३६ तक
" " १०चं.	" १४	" २८	अश्वि.	
सन् १९९९ ई.				
माघ कृ. ३ चं.	पौष २१	जन. ४	पुष्य	९।४ तक
माघ शु ५ शु	माघ. ९	" २२	उ.भा.	९।१ से १७।२३ तक
" " ७ र.	" ११	" २४	अश्वि.	१३।४७ तक,
" " १२ गु.	" १५	" २८	मृग.	१४।३८ से १६।११ तक,
फाल्गु. कृ. ५ शु	" २३	फर. ५	ह.	
" " ९ बु.	" २८	" १०	अनु.	९।५ से ११।१ तक,
फाल्गु. कृ. १२श.	फाल्गु. २	" १३	उ.षा.	१७।५० बाद
फाल्गु. शु. २ गु.	" ७	" १८	उ.भा.	१५।५० बाद
" " ५ श.	" ९	" २०	रे	११।२८ तक,
चैत्र कृ. १ बु.	" २०	मार्च. ३	उ.फा.	१३।६ बाद
" " २ गु	" २१	" ४	ह	७।२८ से ८।५५ तक
				११।१९ बाद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०५५ वि.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
२९ मार्च	१०	५१	३० मार्च	सू.	उ.
३१ मार्च	सू.	उ.	२ अप्रै.	सू.	उ.
५ अप्रै.	सू.	उ.	६ "	६	२२
१५ "	सू.	उ.	१६ "	४	५९
१९ "	८	५४	२० "	सू.	उ.
२६ "	सू.	उ.	२६ "	१८	५७
२८ "	"	"	३० "	सू.	उ.
१ मई	९	४५	२ मई	"	"
३ "	सू.	उ.	३ "	११	११
१३ "	"	"	१३ "	१०	४५
१७ "	"	"	१८ "	१४	५७
२६ "	०	८	२६ "	सू.	उ.
२७ "	सू.	उ.	२७ "	२०	१९
२८ "	१९	१७	२९ "	१८	५९
६ जून	१०	३६	७ जून	सू.	उ.
१८ "	१६	४०	१९ "	१५	१
२२ "	९	१७	२३ "	सू.	उ.
२४ "	सू.	उ.	२४ "	६	०
२५ "	"	"	२६ "	सू.	उ.
१ जुला.	१२	१८	२ जुला.	"	"
४ "	सू.	उ.	४ "	२१	१
६ "	"	"	७ "	१	११
११ "	"	"	१२ "	२	३५
१४ "	२३	२५	१५ "	सू.	उ.
१६ "	सू.	उ.	१७ "	"	"
१७ "	"	"	१८ "	१९	१०
२० "	"	"	२१ "	सू.	उ.
२३ "	"	"	२४ "	"	"
३ अग.	"	"	३ अग.	९	४७
७ "	११	४४	८ "	सू.	उ.
८ "	सू.	उ.	८ "	१०	४६
१० "	५	५८	११ "	४	६
१३ "	सू.	उ.	१४ "	०	३५
(१५ "	२१	५०	१६ "	सू.उ.)श.	

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
(१७ अग.	सू.	उ.	१७ अग.	२०	१९)चं.
(२० "	"	"	२० "	२०	५८) गु.
२४ "	१	४३	२४ "	सू.	उ.
३ सितं.	सू.	उ.	३ सितं.	२०	४०
८ "	"	"	८ "	१२	१८
१० "	"	"	१० "	७	२६
१२ "	"	"	१३ "	२	२५
२० "	८	३४	२१ "	सू.	उ.
२८ "	३	५९	२८ "	"	"
२ अक्तू.	सू.	उ.	२ अक्तू.	६	५४
५ "	१	३०	५ "	सू.	उ.
(१० "	सू.	उ.	१० "	९	३०)र.
१६ "	१२	५	१७ "	सू.	उ.
१८ "	सू.	उ.	१८ "	१७	१५
(१८ "	१७	१५	१९ "	सू.	उ.)र.
२२ "	५	३	२२ "	"	"
२५ "	१०	२५	२६ "	"	"
१ नवं.	१२	२०	[illegible] नवं.	"	"
(३ "	७	३	[illegible] "	३	५५)मं.
९ "	१४	५९	१० "	सू.	उ.
१३ "	सू.	उ.	१३ "	२०	२६
(१५ "	"	"	१६ "	२	१०)र.
१९ "	११	२	२० "	सू.	उ.
२२ "	सू.	उ.	२२ "	१८	१७
२९ "	"	"	२९ "	१९	३८
१ दिसं.	"	"	१ दिसं.	१४	५०
२ "	११	५९	२ "	सू.	उ.
७ "	०	३१	७ "	"	"
७ "	सू.	उ.	८ "	०	०
(१३ "	"	"	१३ "	८	५५)र.
१६ "	१७	३८	१७ "	सू.	उ.
१७ "	सू.	उ.	१७ "	२०	११
२१ "	६	२६	२१ "	सू.	उ.
२२ "	२	५९	२२ "	"	"

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
२८ दिसं.	१	१६	२८ दिसं.	सू.	उ.
२९ "	२१	२३	३० "	"	"
३० "	सू.	उ.	३१ "	"	"
सन् १९९९ ई.					
३ जन.	११	१०	४ जन.	सू.	उ.
१३ "	सू.	उ.	१४ "	३	५०
१७ "	९	०	१८ "	सू.	उ.
१८ "	९	४६	१९ "	"	"
२४ "	सू.	उ.	२५ "	५	३२
२६ "	"	"	२७ "	२	२६
२७ "	"	"	२८ "	सू.	उ.
२९ "	२१	५७	३० "	"	"
३१ "	सू.	उ.	३१ "	२०	९
७ फर.	३	३७	७ फर.	सू.	उ.
१० "	सू.	उ.	१० "	१२	१३
१४ "	"	"	१४ "	१८	२९
१५ "	"	"	१५ "	१८	३२
१९ "	१४	१९	२० "	सू.	उ.
२१ "	सू.	उ.	२१ "	११	०
२३ "	"	"	२३ "	७	५४
२४ "	"	"	२५ "	५	३१
२६ "	४	४३	२६ "	सू.	उ.
२६ "	सू.	उ.	२७ "	४	१३
६ मार्च	११	५३	७ मार्च	सू.	उ.
८ "	१७	३३	९ "	"	"
१४ "	४	९	१४ "	"	"

रवियोग (सं. २०५५)

प्रारम्भ	घं.	मि.	समाप्त	घं.	मि.
३१ मार्च	५	३०	१ अप्रै.	३	३०
२ अप्रै.	२	९	३ "	१	३३
५ "	२	४२	६ "	४	२२
६ "	४	२२	७ "	६	३७
९ "	१२	१६	१० "	१५	२२
१८ "	८	८	१९ "	८	५४

रवियोग (सं. २०५५)

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
२९ अप्रै.	११	३९	३० अप्रै.	१०	१९
१ मई	९	४५	२ मई	१०	३
४ "	१३	५	५ "	१५	३५
५ "	१५	३५	६ "	१८	३०
९ "	०	४३	१० "	३	४०
१७ "	१४	५९	१८ "	१४	५७
२८ "	१९	१७	२९ "	१८	५९
३० "	१९	३१	३१ "	२०	५२
३ जून	२	३५	४ जून	४	३४
४ "	४	३४	५ "	७	३८
७ "	१३	१६	८ "	९	४
१५ "	१९	५४	१६ "	१९	८
२७ "	४	४१	२८ "	५	३७
२९ "	७	१७	३० "	९	३३
२ जुला.	१५	१८	३ जुला.	१८	१५
३ "	१८	१५	४ "	२१	१
८ "	२	२७	९ "	१	११
१४ "	२३	२५	१५ "	२२	४
२६ "	१५	५०	२७ "	१७	५३
२८ "	२०	२५	२९ "	२३	१६
१ अग.	५	८	२ अग.	७	४३
३ "	६	४	३ "	९	४७
३ "	९	४७	४ "	११	१५
६ "	१२	११	७ "	११	४४
१३ "	२	१७	१४ "	१	३५
२५ "	४	११	२६ "	६	५८
२७ "	९	५६	२८ "	१२	५७
३० "	१८	१३	३० "	२३	४२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि योग सं. २०५५ वि. (भा.स्टै.टा.)

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
३१ अग.	२०	७	१ सितं.	२१	२२
१ सितं.	२१	२२	२ "	२१	५१
४ "	२०	४०	५ "	१९	७
११ "	५	२०	१२ "	३	३९
२३ "	१६	५३	२४ "	१९	५४
२५ "	२२	५३	२७ "	१	३८
२७ "	९	४	२८ "	३	५९
३० "	६	५७	२ अक्तू.	६	५४
४ अक्तू.	३	५३	५ "	१	३०
१० "	९	३०	१० "	२२	१०
११ "	८	१०	१२ "	७	३४
२३ "	५	३	२४ "	७	५२
२४ "	८	३७	२५ "	१०	२५
२६ "	१२	३६	२७ "	१४	१९
२९ "	१५	४५	३१ "	१४	११
२ नवं.	९	५७	३ नवं.	७	२
९ "	१४	५९	१० "	१५	१३
२२ "	१८	१७	२३ "	२०	६
२४ "	२१	२९	२५ "	२२	२१
२७ "	२२	१७	२९ "	१९	३८
१ दिसं.	१४	५०	२ दिसं.	११	५९
२ "	११	५९	३ "	९	४
९ "	०	२०	१० "	१	३०
२२ "	२	४९	२३ "	३	४७
२४ "	४	१०	२५ "	४	८
२७ "	२	४०	२८ "	२३	२९
२९ "	८	२५	२९ "	२१	२३
३१ "	१६	४८	१ज.१९९९	१४	३५
१९९९ ई.					
७ जन.	११	५६	८ जन.	१३	५६
२० "	१०	४	२१ "	९	४१
२२ "	९	१	२३ "	८	४
२६ "	४	२	२८ "	०	५०
२९ "	२१	५७	३० "	२०	५१

प्रारम्भ १९९९ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९९ ई.	घं.	मि.
६ फर.	१	१	६ फर.	५	५७
७ "	३	३७	८ "	६	३०
१८ "	१५	५०	१९ "	१४	१९
१९ "	२०	३३	२० "	१२	४०
२१ "	११	०	२२ "	९	२३
२५ "	६	३६	२६ "	४	५३
२८ "	४	३	१ मार्च	४	१५
८ मार्च	१७	३३	९ "	२०	३३

सिद्धि योग सं. २०५५ वि. १९९८ ई.

प्रारम्भ	घं.	मि.	समाप्त	घं.	मि.
२० अप्रै.	९	४	२१ अप्रै.	सू.	उ.
१० मई	३	४०	१० मई	"	"
१८ "	सू.	उ.	१८ "	१४	५७
२८ "	१९	१७	२९ "	सू.	उ.
९ जून	१०	३६	७ जून	"	"
२५ "	सू.	उ.	२६ "	४	२९
४ जुला.	"	"	४ जुला.	२१	१
१४ "	२३	२५	१५ "	सू.	उ.
२३ "	सू.	उ.	२३ "	१३	११
११ अग.	५	५८	१२ अग.	४	६
८ सितं.	सू.	उ.	८ सितं.	१२	१८
२७ "	३	५९	२८ "	सू.	उ.
१६ अक्तू.	१२	५	१७ अक्तू.	"	"
२५ "	१०	२५	२६ "	सू.	उ.
५ नवं.	०	४५	५ नवं.	"	"
१३ "	सू.	उ.	१३ "	२०	२६
२२ "	"	"	२२ "	१८	१७
२ दिसं.	११	५९	३ दिसं.	सू.	उ.
२२ "	२	५९	२२ "	"	"
३० "	सू.	उ.	३० "	१९	६
सन् १९९९ ई.					
१८ जन.	९	४६	१९ जन.	सू.	उ.
७ फर.	३	३७	७ फर.	"	"
१५ "	सू.	उ.	१५ "	१८	३२
२६ "	४	४३	२६ "	सू.	उ.
६ मार्च	११	५३	७ मार्च	"	"

अथ द्विपुष्कर योग (सं. २०५५वि.)

प्रारम्भ १९९८ ई.	घं.	मि.	समाप्त १९९८ ई.	घं.	मि.
६ जून	सू.	उ.	६ जून	१०	३६
९ अग.	"	"	९ अग.	९	२५
२२ सितं.	१३	५५	२३ सितं.	३	३
११ अक्तू.	६	२८	१६ अक्तू.	८	१०
सन् १९९९ ई.					
१९ जन.	१०	७	२० जन.	२०	४८

त्रिपुष्कर योग सन् १९९८ ई.

प्रारम्भ	घं.	मि.	समाप्त	घं.	मि.
१४ अप्रै.	सू.	उ.	१४ अप्रै.	८	३०
१९ "	८	५४	१९ "	१३	३७
२८ "	सू.	उ.	२८ "	१०	११
२ मई.	"	"	२ मई	१०	३
१६ जून	१९	८	१७ जून	सू.	उ.
२१ जून	११	१४	२१ "	१६	५०
३० "	९	३३	१ जुला.	सू.	उ.
५ जुला.	१९	५०	५ "	२३	२२
२९ अग.	सू.	उ.	२९ अग.	१५	४६
२७ "	१४	१९	२८ "	५	९
१ नवं.	सू.	उ.	१ नवं.	१२	२०
६ दिसं.	१	४९	६ दिसं.	सू.	उ.
२१ "	१	४९	२१ "	६	३६
सन् १९९९ ई.					
३० जन.	सू.	उ.	३० जन.	११	१०

अमृतसिद्धि योग (सं. २०५५ वि.)

प्रारम्भ	घं.	मि.	समाप्त	घं. मि.
(१५ अग.	२१	५०	१६ अग.	सू. उ.)श.
(१७ "	सू.	उ.	१७ "	२०।१९)चं.
(२० "	"	"	२० "	२०।५८) गु
(१० अक्तू.	"	"	१० अक्तू.	९।३०) श.
(१८ "	१७	१५	१९ "	सू.उ.) र.
(३ नवं.	७	३	४ नवं.	३।५५)मं.
(१५ "	सू.	उ.	१६ "	२।१०) र
(१३ दिसं.	"	"	१३ दिसं.	८।४५) र.

श्री मार्त्तण्ड पंचांग (सं. २०५४) में त्रुटिसंशोधन

श्री मार्त्तण्ड पंचांग (सं. २०५४) की कुछ प्रतियों में कुछ मुद्रण अशुद्धियां रह गई थीं, पाठकों को इन्हें नीचे लिखें अनुसार ठीक कर लेना चाहिए :

पृष्ठ	कालम	पंक्ति आदि	अशुद्ध	शुद्ध
५४	१	कोष्ठक (१) में, जन्म राशि ४,गोचर सूर्य की राशि ३	श.९	अ ९
५४	२	कोष्ठक (२) में, जन्म राशि ८,गोचर चन्द्र की राशि ५	श २	श११
५५	१	कोष्ठक (३) में, जन्म राशि ५,गोचर मं. श.रा. के. की राशि २	अ ११	अ
५५	१	कोष्ठक (५) में, जन्म राशि १,गोचर गुरु की राशि ३	श ७	अ ७
६५	२	पंक्ति ४	गोचर चन्द्र २।५।७।९।११ वीं राशियों में हों तो वे शुभ - - -	गोचर चन्द्र १।३।६।७।१०।११वीं और गोचर गुरु २।५।७।९।११वीं राशियों में हों तो वे शुभ - - -

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ वर्षों से अप्राप्य अब फोटोस्टेट रूप में उपलब्ध किए जा सकते हैं।

जातक तत्व-पं. श्रीनिवास महादेव पाठक (रतलाम) 480.00
(संस्कृत-हिन्दी)
(125 वर्ष पूर्व रतलाम से प्रकाशित ज्योतिष शास्त्र में चुने हुए योगों का महत्वपूर्ण ग्रंथ)

हर्षल एवं नेपच्यून-पं. श्री निवास महादेव पाठक (रतलाम) 180.00
(हर्षल एवं नेपच्यून नाम के नवीन ग्रहों का फल विचार)
(अपने विषय पर प्राचीन एवं दुर्लभ एकमात्र उत्तम पुस्तक सरल हिन्दी में)

सन्तति समय विचार-पं. श्रीनिवास महादेव पाठक (रतलाम) 180.00
(शास्त्रीय पद्धति से सन्तति समय जानने की उत्तम पुस्तक)

सामुद्रिक दीपिका-तीन खण्डों में (सरल हिन्दी) -पं. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी 750.00 सम्पूर्ण
हस्तरेखा, शरीर लक्षण, हस्तचिन्ह, हाथ से जन्मपत्री बनाना इत्यादि।
इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे विषय जो अन्यत्र कहीं नहीं।
सामुद्रिक शास्त्र पर सर्वांगपूर्ण ग्रंथ, पृष्ठ 900 बड़ा साईज, पक्की जिल्द

श्री रणवीर ज्योर्तिमहानिबन्ध - भाषा टीका 1800.00
125 वर्ष पूर्व जम्मू-कश्मीर में फलित ज्योतिष के प्रमुख ज्योतिषियों एवं विद्वानों द्वारा लिखा गया एवं श्रेष्ठ माना गया।
फलित ज्योतिष का अप्राप्य, दुर्लभ एवं बहुप्रशंसित ग्रंथ।
पक्की जिल्द, बड़ा साईज, पृष्ठ 700, श्लोक 4500

त्रैलोक्य प्रकाश-संस्कृत हिन्दी 290.00
लगभग 250 पृष्ठों की 1150 श्लोकों से सुसज्जित फलित ज्योतिष की अनुपम पुस्तक

गदतिमिर भास्कर 1600.00
आयुर्वेद पर लगभग 150 वर्ष प्राचीन सरल हिन्दी भाषा में वृहद विशाल ग्रंथ पृष्ठ लगभग 1200

श्री भृगुसंहिता पत्रिका के कायदे का नमूना 1800.00
(लगभग 178 वर्ष प्राचीन व दुर्लभ ग्रंथ संस्कृत में) पृष्ठ लगभग 800

लाल किताब (सम्पूर्ण) 1500.00
उर्दू भाषा की 1200 पृष्ठों की प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक का हूबहू सरल हिन्दी अनुवाद (9×14 इंच साइज में हिन्दी भाषा में - तीन खण्डों में)
यह अनोखी पुस्तक बहुत से आश्चर्यजनक ज्योतिष नियमों एवं विचित्र ज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। यह शान्ति के लिए सरल, व्यवहार में आ सकने वाले अचूक टोटके व उपाय जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से व सस्ते खर्चे में कर सकता है। साथ ही जन्मकुंडली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि इत्यादि। इसमें वर्ष कुंडली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी विधि बताई गई है जिससे 10 मिनट में किसी भी वर्ष की कुंडली और फलित निकाला जा सकता है।

उर्दू की फोटोस्टेट प्रति ज्यों की त्यों भी उपलब्ध की जा सकती है 1500.00

नोट: अन्य दुर्लभ व प्राचीन ग्रंथ के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

पता:

के. के. गोयल एण्ड कम्पनी

214, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 फोन : 3253604

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता
(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में दस खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगुसंहिता के फुलस्केप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज़) मूल्य 4800/-

* कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।
* डाक व्यय अलग 100/- रुपया।

अधिक जानकारी के लिए लिखें।

* इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क बनाए रखें।
* हिन्दी एवं अंग्रेजी पुस्तकों की विस्तृत सूची-पत्र अलग से मंगवायें।

व्यापारिक तेजी मंदी संबंधी उत्तम पुस्तकें

वायदे और तैयारी दोनों काम में सहायक

व्यापार चिन्तामणि

लेखक-पं. गंगा प्रसाद ज्योतिषचार्य 200/-

जिसमें सोना, चांदी, रुई, ग्वार, मटर, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, शेयर, तांबा, लोहा, घी, गेहूँ, और बारदाना आदि के सदैव के लिए तेजी-मंदी के शास्त्रीय नियम व कुछ उपाय और अपने तमाम जीवन के अनुभव सरल भाषा में लिखे गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक टकेवार तेजी-मंदी निकालने की विधि, कुछ विशेष व्यक्तियों के इस लाइन पर अनुभव, लक्ष्मी प्राप्ति और परेशानी दूर करने के लिए कुछ अनुभूत योग, यंत्र-मंत्र, जप और सिद्धियाँ इत्यादि का विस्तृत उल्लेख है।

तेजी मंदी की अन्य अनुपम पुस्तकें

आधुनिक तेजी मंदी का विधान 125/-

अंशात्मक 2772 दृष्टि योगों का विश्लेषण (हमेशा काम देने वाली तेजी मंदी की उत्तम पुस्तक)

- **अनुभव योग माला** (इसमें तेजी मंदी के अचूक चांस दिए गए हैं) 240/-
- **सर्वतोभद्र चक्र एवं सर्वतोभद्र चक्र की कुंजी और वाणिज्य सर्वस्व** 260/-
  -लेखक पंड्या मोतीलाल नागर
- Commercial Ever Ready Numerology 80/-
  (Best Application of Numbers to Forecasting Market Prices)
- Perpetual Merket Forecast & Business Astrology 80/-
  Besides, Books by B.V. Raman Bangalore, K.S. Krishnamurti Madras, By Foreign Scholars, Ephemeris by N.C. Lahiri Calcutta can also be had from :

पता:

के. के. गोयल एण्ड कम्पनी
214, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 फोन : 3253604

K. K. GOYAL & CO.
214, DARIBA KALAN, DELHI-110006, PH.: 3253604

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गीता ज्ञान पर एक अनुपम पुस्तक

श्रीमद्भगवद्गीता : आधुनिक व्याख्या

व्याख्याकार : दयानंद वर्मा

गीता के मर्म को समझना कठिन माना जाता है। इसका कारण यह है कि गीता के मूल पाठ में प्रकृति, पुरुष, सत् असत्, माया, ब्रह्म, काम आदि जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन शब्दों के अर्थ आज बदल गए हैं, इस कठिनाई को समझते हुए व्याख्याकार ने श्लोकों का शब्दार्थ देने की बजाय आज की सरल हिन्दी में उन शब्दों की विस्तार से व्याख्या दी है, जिससे गीता के मर्म तक पहुंचना सुगम हो गया है।

गीता की इस व्याख्या पर विद्वानों के मत

. . . गीता पर असंख्य टीकाएं हो चुकी हैं, उनमें से अधिकतर में बाहरी विस्तार है। वर्मा जी की व्याख्या में अभिप्राय को समझने की कोशिश है। इस स्तुति योग्य प्रयास की प्रशंसा की जानी चाहिए।

—कृष्णमुनि प्रभाकर

पीठासीन : श्री सांवलि मूर्ति मंदिर, दिल्ली

. . . गीता का पाठ मैं बचपन से करती आयी हूँ किन्तु इस पुस्तक का पाठ करते समय मुझे अनुभव हुआ है कि गीता मेरी समझ में पहले की अपेक्षा अधिक आने लगी है . . .

— आशारानी

लेखिका एवं पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

. . . गोस्वामी तुलसीदास ने वाल्मीकि रचित आदि-काव्य रामायण को जन-भाषा में लिखकर रामकथा को जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयत्न किया था, वैसा ही कार्य दयानंद वर्मा ने श्रीमद्भगवद्गीता पर अपनी व्याख्या लिख कर किया है।

— वेद प्रकाश वैदिक, पत्रकार, दिल्ली

गीता की इस व्याख्या को पढ़ते हुए आप अनुभव करेंगे कि आपके मन में छिपे हुए आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर आपको सहज में मिलते जा रहे हैं और आपके सामने सुख, शांति और मुक्ति का मार्ग स्पष्ट होता जा रहा है।

सामान्य सजिल्द संस्करण का मूल्य 100/- रु. तथा मोटे अक्षरों के विशिष्ट संस्करण का मूल्य 295/- रु.।

इंस्टीच्यूट ऑफ पामिस्ट्री

की हस्तरेखाओं के विषय में दो वैज्ञानिक पुस्तकें

पामिस्ट्री के गूढ़ रहस्य

- 'पामिस्ट्री के गूढ़ रहस्य' हिन्दी में पहली पुस्तक है, जिसमें इस विद्या को इतने स्पष्ट और सुबोध रूप से समझाया गया है कि इस विद्या से अनजान व्यक्ति भी हस्तरेखा विद्या को अच्छी तरह समझ सकता है।
- इस पुस्तक में हस्तरेखाओं द्वारा भूत, वर्तमान और भविष्य बताने के साथ रेखाएं बनने का सिद्धांत भी दिया गया है।
- सैकड़ों चित्रों से भरी यह पुस्तक पढ़ कर आप यह विद्या भली-भांति सीख कर धन-लाभ कर सकते हैं अथवा अपने मित्रों, संबंधियों की हस्तरेखाएं पढ़कर लोकप्रियता प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य : 135 रुपये

पामिस्ट्री के अनुभूत प्रयोग

- आप हस्तरेखा विद्या के क्षेत्र में नितांत नये जिज्ञासु हों अथवा आपने इस विद्या का गहरा अध्ययन किया हुआ हो, दोनों दशाओं में आप इस पुस्तक में कुछ न कुछ नवीनता पाएंगे।
- इस पुस्तक में २० जोड़े हाथों में प्रिंट (Hand Print) छापे गये हैं, जिनसे आप क्रास, स्टार, वर्ग, त्रिकोण, द्वीप, यव, मत्स्य आदि हथेली के चिह्नों को वास्तविक रूप में देख और पहचान सकते हैं। साथ ही इस पुस्तक में इन हैंड-प्रिंट्स का विस्तृत पठन (Hand Reading) देकर इस विद्या का व्यावहारिक ज्ञान दिया गया है।
- दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने के अनेक प्रकार के परीक्षित उपाय, यथा मंत्र, रत्न आदि का विवरण देकर पुस्तक को हर प्रकार से संपूर्ण बनाया गया है। साथ ही लेखक ने अपने हाथों के अलग-अलग आयु के हैंड-प्रिंट छाप कर यह प्रत्यक्ष उदाहरण दिया है कि उपाय बरतने से रेखाएं बदल सकती है।

मूल्य 135 रुपये

प्राप्ति स्थान : **माईंड एंड बाडी रिसर्च सैंटर,** डब्ल्यू-21, ग्रेटर कैलाश पार्ट- I, नई दिल्ली - 110 048

नोट : वी. पी. नहीं भेजी जाती। एडवांस मूल्य प्राप्त होने पर पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक से भेजी जाती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

प्रत्येक का मूल्य ५०/-रु.

अंकों में छिपा भविष्य
भाग्य त्रिवेणी
भाव मंजरी
प्रसव चिंतामणी
दाम्पत्य सुख
दैवज्ञ बल्लभा
प्रश्न विद्या
जातकालंकार
सर्वदेव प्रतिष्ठा
नष्ट जातकम्
महामृत्युंजय
मूक प्रश्न विचार
दशाफल रहस्य
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर
नक्षत्र फल दर्पण
हस्त संजीवन
अंक विद्या रहस्य
नास्त्रेदाम की भविष्यवाणियां
हस्त रेखाएं बोलती है
आपकी राशि भविष्य की झांकी
पूजा भास्कर (विशालमणिकृत)
षोड्श संस्कार पद्धति (")
पितृकर्म पद्धति (विशालमणिकृत)
पूजा भास्कर गुटका (भा.टी.)
शांति पद्धति
ज्योतिष भास्कर

प्रत्येक का मूल्य ३०/- रु.

भावदीपिका
केरलीय ज्योतिष
चंद्रकला नाड़ी
वर्षफल विचार
भुवनदीपक
ज्योतिष सर्वसंग्रह
नितक्रम पद्धति
यंत्र शक्ति (२ भाग) प्रत्येक
भावार्थ रत्नाकर
चुने हुए ज्योतिष योग
फलित सूत्र
महिलाएं और ज्योतिष
लघु पराशरी
षट् पंचाशिका
गोचर विचार
प्रश्न दर्पण
गणेश सिद्धि
शरीर लक्षण विज्ञान
तंत्र शक्ति
महिलाएं और ज्योतिष
अनिष्ट ग्रह कारण और निवारण
रत्न परिचय

प्रत्येक का मूल्य १००/- रु.

मानसागरी
रत्न प्रदीप
बृहज्ज्योतिष सार
ताजिक नीलकंठी
दुर्गार्चन पद्धति
कर्मकांड भास्कर
उत्तरकालामृत
भृगु संहिता
हस्त रेखाओं का गहन अध्ययन

प्रत्येक का मूल्य १२५/- रु.

जातक तत्त्व (भा.टी.)
जैमिनी सूत्रम् सम्पूर्ण
रुद्रयामल तंत्र
जातक भूषण (भा.टी.)

प्रत्येक का मूल्य २००/- रु.

व्यापार रत्न
बृहज्जातकम्
फल दीपिका (अंग्रेजी में)
बृहत्पराशर होराशास्त्र (दो भाग) प्रत्येक
प्रश्न मार्ग (२ भाग) प्रत्येक
ज्योतिष सर्वस्व
रसराज महोदधि
यज्ञ मंत्र संग्रह

प्रत्येक का मूल्य ३००/- रु.

वृद्ध यवन जातकम् (२ भाग) प्रत्येक
आयुर्निर्णय
अष्टक वर्ग महानिबन्ध

धार्मिक पुस्तकें

श्रीमद्भागवद्गीता (हिन्दी)	३०/
श्रीदुर्गासप्तशती (हिन्दी)	२५/-
श्रीदुर्गासप्तशती (भा.टी.)	२५/-
रामायण गुटका मूल	३०/-
बारह महीने के व्रत-त्यौहार	२५/-
एकादशी माहात्म्य	१६/-
माघ माहात्म्य	१६/-
वैशाख माहात्म्य	१६/-
कार्तिक माहात्म्य	१६/-
पुरुषोत्तम माहात्मय	१६/-
भा.टी. माहात्म्य प्रत्येक	३०/-
प्रेम सागर	४०/-
महाभारत	४०/-
राधेश्याम रामायण	४०/-
श्रीगोपालसहस्रनाम (भा.टी.)	१५/-
श्रीविष्णुसहस्रनाम (भा.टी.)	१५/-
बाल्मीकि रामायण	६०/-
भक्ति सागर	२५/-
गरुड़ पुराण	२०/-
सत्यनारायण कथा (भा.टी.)	१२/-
आरती रंगीन	२५/-
सप्तवार कथा	१०/-
रामायण तुलसीकृत	२०१/-

जन्म एवं लग्न पत्रिका

प्रति सैकड़ा

कुंडली (पूरा छपा)	७५/-
गणेश चित्र सहित	७५/-
केवल बार्डर छापा	७५/-
समाप्ति लम्बा फार्म	७५/-
सप्तवर्गीय प्रत्येक	१२/-
षट्वर्गीय प्रत्येक	१०/-
टेवा फार्म पुस्तकाकार	१७५/-
लग्न फार्म	१५०/-

पं० रामस्वरूपकृत पुस्तकें

प्रत्येक का मूल्य २०/- रु.

विवाह पद्धति
हवन पद्धति
यज्ञोपवीत पद्धति
मूल शांति
एकादशादि सपिण्डी
श्राद्ध पद्धति
पंचक शांति

नोट:- डाक व्यय अलग। कृपया पुस्तक की कीमत की आधी रकम पहले भेजें। पुस्तक की पूरी कीमत भेजने पर डाक व्यय आधा। सूची पत्र मंगाने के लिए ३/- रुपये की डाक टिकट भेजें।

विशेष- ग्रह शांति एवं मनोकामना सिद्धि के लिए बड़े साईज में ताम्र यंत्र उपलब्ध हैं। प्रत्येक का मूल्य २५०/- मय डाक खर्च

वी.पी. द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता:- **रुचिका पब्लिकेशन्स**

७/६४११, देवनगर, आर्य समाज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली- ५ ☎ ५७२१५४६, ५७२१४०३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection